

उनसे दूर कर देंगे । और अवश्य उन्हें उनके उत्तम कर्मों के अनुसार प्रतिफल देंगे जो वे किया करते थे । 8।

और हमने मनुष्य को पक्की नसीहत की कि अपने माता-पिता से सद्-व्यवहार करे । और (कहा कि) यदि वे तुझ से झगड़ें कि तू मेरा साझीदार ठहराए, जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं, तो फिर उन दोनों की आज्ञा का पालन न कर । मेरी ही ओर तुम्हारा लौट कर आना है । फिर मैं तुम्हें उन बातों से सूचित करूँगा जो तुम करते थे । 9।

और वे लोग जो ईमान लाए और पुण्य कर्म किए हम उन्हें अवश्य पुण्यवान व्यक्तियों में सम्मिलित करेंगे । 10।

और लोगों में से ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम अल्लाह पर ईमान ले आए । परन्तु जब उन्हें अल्लाह के मार्ग में दुःख दिया जाता है तो वे लोगों की परीक्षा को अल्लाह के अज़ाब की भाँति समझ लेते हैं । और यदि तेरे रब्ब की ओर से कोई सहायता आई तो वे अवश्य कहेंगे कि हम तो निःसन्देह तुम लोगों के साथ थे । क्या अल्लाह सबसे बड़ कर उसे नहीं जानता जो समस्त लोकों (में बसने वालों) के दिलों में है । 11।

और अल्लाह निःसन्देह मोमिनों को भी पहचान लेगा और मुनाफ़िकों को भी पहचान लेगा । 12।

और इनकार करने वालों ने ईमान लाने वालों से कहा कि हमारे पथ का

لُكْفِرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٨﴾

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا وَإِنْ جَاهَدَاكَ لِتُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَبِئْتُكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصَّالِحِينَ ﴿١٠﴾

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ فَإِذَا أُوذِيَ فِي اللَّهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللَّهِ وَلَئِنْ جَاءَ نَصْرٌ مِنْ رَبِّكَ لَيَقُولُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ أُولَئِكَ اللَّهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِي صُدُورِ الْعَالَمِينَ ﴿١١﴾

وَلَيَعْلَمَنَّ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنَافِقِينَ ﴿١٢﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا اتَّبِعُوا

अनुसरण करो और हम तुम्हारे दोषों को (स्वयं) उठा लेंगे । हालाँकि वे उनके दोषों में से कुछ भी उठाने वाले नहीं होंगे । निःसन्देह वे झूठे हैं। 13।

और वे अवश्य अपने बोझ उठाएँगे और अपने बोझों के अतिरिक्त कुछ और बोझ भी (उठाएँगे) । और क़यामत के दिन वे अवश्य उसके सम्बन्ध में पूछे जाएँगे जो वे झूठ घड़ा करते थे । 14।

(सूकू 1/13)

और निःसन्देह हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा था । अतः वह उनमें नौ सौ पचास वर्ष रहा । फिर उनको तूफ़ान ने आ पकड़ा और वे अत्याचार करने वाले थे । 15।*

अतः हमने उसको और (उसके साथ) नौका में सवार होने वालों को मुक्ति प्रदान की और उस (नौका) को समस्त लोकों के लिए एक चिह्न बना दिया । 16।

और इब्राहीम (को भी भेजा था) । जब उसने अपनी जाति से कहा कि अल्लाह की उपासना करो और उसी का तक्रवा धारण करो । यह तुम्हारे लिए उत्तम है । (बेहतर होता) यदि तुम ज्ञान रखते । 17।

निःसन्देह तुम अल्लाह को छोड़ कर केवल मूर्तियों की उपासना करते हो और झूठ गढ़ते हो । निःसन्देह वे लोग

سَبِيلَنَا وَلَنَحْمِلَ خَطِيئَتَكُمْ وَمَا هُمْ بِحَمِلِينَ مِنْ خَطِيئَتِهِمْ مِنْ شَيْءٍ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

وَلِيَحْمِلَنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ ۚ وَلَيَسْئَلَنَّ يَوْمَ الْقِيَمَةِ عَمَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ فَلَبِثَ فِيهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِينَ عَامًا ۖ فَأَخَذَهُمُ الطُّوفَانُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝

فَأَنْجَيْنَاهُ وَأَصْحَابَ السَّفِينَةِ وَجَعَلْنَاهَا آيَةً لِلْعَالَمِينَ ۝

وَإِبْرَاهِيمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ ۖ ذَلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ۝

إِنَّمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا وَتَخْلُقُونَ إِفْكًا ۚ إِنَّ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِنْ

* हज़रत नूह अलै. की आयु जो 950 वर्ष वर्णन की गई है इससे अभिप्राय भौतिक आयु नहीं बल्कि आपकी शरीयत (धर्म-विधान) की आयु है ।

जिनकी तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते हो तुम्हारे लिए किसी जीविका का सामर्थ्य नहीं रखते । अतः अल्लाह के निकट से ही जीविका चाहो और उसकी उपासना करो और उसका कृतज्ञ बनो । उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे ।118।

और यदि तुम झुठलाओ तो तुम से पहले भी कई जातियाँ झुठला चुकी हैं । और रसूल पर खुला-खुला संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त कुछ ज़िम्मेदारी नहीं ।119।

क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह किस प्रकार उत्पत्ति का आरम्भ करता है और फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है? निःसन्देह यह अल्लाह के लिए सरल है ।120।

तू कह दे कि धरती में भ्रमण करो फिर ध्यान दो कि कैसे उसने सृष्टि का आरम्भ किया । फिर अल्लाह उसे परकालीन उत्थान के रूप में उठाएगा । निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।121।

वह जिसे चाहता है अज़ाब देता है और जिस पर चाहे कृपा करता है । और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे ।122।

और न तुम धरती में (अल्लाह को) विवश करने वाले हो और न आकाश में । और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई मित्र है न कोई सहायक ।123।

(रकू 2/14)

دُونِ اللَّهِ لَا يَمْلِكُونَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوا
عِنْدَ اللَّهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهُ
إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٨﴾

وَأَنْ تَكْذِبُوا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّنْ
قَبْلِكُمْ ۖ وَمَا عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ
الْمُبِينُ ﴿١٩﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللَّهُ الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيدُهُ ۖ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٢٠﴾

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ
بَدَأَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللَّهُ يُنشِئُ النَّشْأَةَ الْآخِرَةَ
إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢١﴾

يُعَذِّبُ مَن يَشَاءُ وَيَرْحَمُ مَن يَشَاءُ
وَإِلَيْهِ تُقْلَبُونَ ﴿٢٢﴾

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ
مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٢٣﴾

और वे लोग जिन्होंने अल्लाह की आयतों का और उससे मिलने का इनकार किया, यही लोग हैं जो मेरी दया से निराश हो चुके हैं। और यही लोग हैं जिनके लिए दुःखदायक अज़ाब (निश्चित) है। 124।

अतः उसकी जाति का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि उन्होंने कहा, इसे बध कर दो अथवा जला दो। फिर अल्लाह ने उसे आग से मुक्ति प्रदान की। निःसन्देह इसमें उन लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं जो ईमान लाते हैं। 125।

और उसने कहा, तुम तो सांसारिक जीवन में परस्पर प्रेम के कारण अल्लाह को छोड़ कर केवल मूर्तियों को पकड़े बैठे हो। फिर क़यामत के दिन तुम में से कुछ, कुछ का इनकार करेंगे और कुछ, कुछ पर ला'नत डालेंगे। और तुम्हारा ठिकाना आग होगा और तुम्हारे कोई सहायक नहीं होंगे। 126।

अतः लूत उस (अर्थात् इब्राहीम) पर ईमान ले आया और उसने कहा कि निःसन्देह मैं अपने रब्ब की ओर हिजरत करके जाने वाला हूँ। निःसन्देह वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है। 127।

और हमने उसे (अर्थात् इब्राहीम को) इसहाक़ और याकूब प्रदान किए। और उसकी संतान में भी नुबुव्वत और पुस्तक (के पुरस्कार) रख दिए। और

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَلِقَائِهِ
أُولَٰئِكَ يَكْسُوهُمْ مِنْ رَحْمَتِي وَأُولَٰئِكَ لَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ١٢٤

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ
قَالُوا اقْتُلُوهُ أَوْ حَرِّقُوهُ فَأَنْجَاهُ اللَّهُ
مِنَ النَّارِ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ
لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ١٢٥

وَقَالَ إِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْثَانًا
مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ثُمَّ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُم بِبَعْضٍ وَيَلْعَنُ
بَعْضُكُم بَعْضًا وَمَأْوَاكُمُ النَّارُ وَمَا
لَكُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ١٢٦

فَأَمِنَ لَهُ لُوطٌ ۖ وَقَالَ إِنِّي مُهَاجِرٌ
إِلَىٰ رَبِّي ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ١٢٧

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي
دُرِّيَّتِهِ الثُّبُوتَ وَالْكِتَابَ وَآتَيْنَاهُ أَجْرَهُ فِي

उसे हमने उसका प्रतिफल संसार में भी दिया और परलोक में तो निःसन्देह वह सदाचारियों में गिना जाएगा ।28।

और लूत को भी (भेजा) जब उसने अपनी जाति से कहा कि तुम निःसन्देह निर्लज्जता की ओर (दौड़े) आते हो । समस्त जगत में कभी कोई इसमें तुम से आगे नहीं बढ़ सका ।29।

क्या तुम (कामवासना के साथ) पुरुषों की ओर आते हो और रास्ते में लूटमार करते हो । और अपनी बैठकों में अत्यन्त अप्रिय बातें करते हो । अतः उसकी जाति का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि उन्होंने कहा, यदि तू सच्चों में से है तो हमारे पास अल्लाह का अज़ाब ले आ ।30।

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! इन उपद्रव करने वाले लोगों के विरुद्ध मेरी सहायता कर ।31। (सू 3/15)

और जब हमारे दूत इब्राहीम के पास शुभ-समाचार लेकर आए, उन्होंने यह भी कहा कि निःसन्देह हम (लूत की) इस बस्ती के रहने वालों को तबाह करने वाले हैं । निःसन्देह इसके निवासी अत्याचारी लोग हैं ।32।*

उसने कहा कि उसमें तो लूत भी है । उन्होंने (उत्तर में) कहा कि हम खूब जानते हैं कि उसमें कौन है । हम

الدُّنْيَا وَإِنَّهُ فِي الْآخِرَةِ لَمِنَ الصَّالِحِينَ ﴿٢٨﴾

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ
الْفَاحِشَةَ مِمَّا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ
الْعَالَمِينَ ﴿٢٩﴾

إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ
السَّبِيلَ ۖ وَتَأْتُونَ فِي نَادِيَكُمُ الْمُنْكَرَ ۖ
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتِنَا
بِعَذَابِ اللَّهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ﴿٣٠﴾

قَالَ رَبِّ انصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ
الْمُفْسِدِينَ ﴿٣١﴾

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى
قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلَ هَذِهِ الْقَرْيَةِ
إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظَالِمِينَ ﴿٣٢﴾

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ
بِمَنْ فِيهَا لَنَنْجِيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۚ

* हज़रत लूत अलै. की जाति को तबाह करने के लिए जो फ़रिश्ते आए थे वे उससे पहले हज़रत इब्राहीम अलै. के समक्ष प्रकट हुए थे और हज़रत इब्राहीम अलै. चूँकि कोमल-हृदयी थे इस कारण उन्होंने उस जाति को क्षमा करने के लिए अल्लाह तआला से बहुत आग्रह किया ।

निःसन्देह उसे और उसके समस्त घर वालों को बचा लेंगे सिवाए उसकी पत्नी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है ।33।
और जब हमारे दूत लूत के पास आए तो वह उनके कारण अप्रसन्न हुआ और मन ही मन में उनसे बहुत घुटन अनुभव की तो उन्होंने कहा कि डर नहीं और कोई शोक न कर । हम निःसन्देह तुझे और तेरे सब घर वालों को बचा लेंगे, सिवाए तेरी पत्नी के, वह पीछे रह जाने वालों में से है ।34।

निःसन्देह हम इस बस्ती के रहने वालों पर आकाश से एक अज़ाब उतारने वाले हैं क्योंकि वे दुराचार करते हैं ।35।

और निःसन्देह हमने उसमें उन लोगों के लिए केवल एक उज्ज्वल चिह्न शेष छोड़ा जो बुद्धि से काम लेते हैं ।36।

और (हमने) मद्यन (जाति) की ओर उनके भाई शुऐब को (भेजा) । तो उसने कहा कि हे मेरी जाति ! अल्लाह की उपासना करो और अन्तिम दिन की आशा रखो और धरती में उपद्रवी बन कर अशांति न फैलाओ ।37।

अतः (जब) उन्होंने उसको झुठला दिया तो उन्हें एक भूकम्प ने आ पकड़ा । अतः वे ऐसे हो गये कि मानों अपने घरों में घुटनों के बल गिरे हुए थे ।38।

और आद और समूद (जाति) को भी (हमने भूकम्पों से तबाह कर दिया) । और तुम पर यह बात उनके निवास स्थलों (के खण्डहरों) से खूब खुल चुकी

كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۝

وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ ۖ إِنَّا مُنْجُونَكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا أَمْرًا تَكُ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ۝

إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلَىٰ أَهْلِ هَذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْرًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝
وَلَقَدْ تَرَكْنَا مِنْهَا آيَةً بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ ۖ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْآخِرَ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝

فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثَمِينَ ۝

وَعَادًا وَثَمُودًا وَقَدْ تَبَيَّنَ لَكُم مِّنْ مَّسْكِنِهِمْ ۖ وَرِثِينَ لَهُمُ الشَّيْطَانُ

है । और शैतान ने उन्हें उनके कर्मों को अच्छा बना कर दिखाया और उसने उन्हें (सीधे) मार्ग से रोक दिया । हालाँकि वे अच्छा भला देख रहे थे । 139।

और क़ारून और फिरऔन और हामान को भी (हमने उनकी पथभ्रष्टता का दण्ड दिया) । और मूसा उनके पास निःसन्देह खुले-खुले चिह्न ला चुका था और फिर भी उन्होंने धरती में अहंकार किया और वे (हमारी पकड़ से) आगे निकल जाने वाले बन न सके । 140।

अतः हमने प्रत्येक को उसके पाप के कारण पकड़ लिया । फिर उनमें ऐसा गिरोह भी था जिन पर हमने कंकर बरसाने वाला एक अंधड़ भेजा । और उनमें ऐसा गिरोह भी था जिसको एक भयानक गरज ने पकड़ लिया । और उनमें से ऐसा गिरोह भी था जिसे हमने धरती में धंसा दिया । और उन में से ऐसा भी एक गिरोह था जिसे हमने डुबो दिया । और अल्लाह ऐसा नहीं कि उन पर अत्याचार करता परन्तु वे स्वयं ही अपने ऊपर अत्याचार करने वाले थे । 141।*

उन लोगों का उदाहरण जिन्होंने अल्लाह को छोड़ कर दूसरों को मित्र

أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّمَهُمُ عَنِ السَّبِيلِ وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۝

وَقَارُونُ وَفِرْعَوْنُ وَهَامَانَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مُوسَىٰ بِالْبَيِّنَاتِ فَأَسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سَابِقِينَ ۝

فَكَلَّا أَخَذْنَا بِذَنبِهِ ۖ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ۖ وَمِنْهُمْ مَّنْ أَغْرَقْنَا ۖ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُظْلِمَهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

مَثَلِ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ

* नबियों की विरोधी जातियों के अन्त का विवरण इस आयत में मिलता है कि किस-किस साधन से वे नष्ट की गईं । कुछ पर बहुत कंकर बरसाने वाली आंधी चली जिनसे वे नष्ट हो गईं । कुछ को भयंकर गरज ने आ पकड़ा । कुछ भूकम्पों के परिणामस्वरूप धरती में गाड़ दी गईं और कुछ डुबो दी गईं । साधारणतः यही चार साधन हैं जो नबियों के विरोधियों को तबाह करने के लिए प्रयोग होते रहे हैं ।

बनाया, मकड़ी की भाँति है । उसने भी एक घर बनाया और समस्त घरों में निःसन्देह मकड़ी ही का घर सर्वाधिक कमज़ोर होता है । काश वे यह जानते । 42।

निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक उस वस्तु को जानता है जिसे वे उसके सिवा पुकारते हैं । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 43।

और ये उदाहरण हैं जो हम लोगों के समक्ष वर्णन करते हैं परन्तु बुद्धिमानों के अतिरिक्त इनको कोई नहीं समझता । 44।

अल्लाह ने आसमानों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया है । निःसन्देह इसमें मोमिनों के लिए एक बहुत बड़ा चिह्न है । 45। (रुकू 4/16)

كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتٍ إِتَّخَذَتْ بَيْتًا وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوتِ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٤٢﴾

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٤٣﴾

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ وَمَا يَعْقِلُهَا إِلَّا الْعُلَمَاءُ ﴿٤٤﴾

خَلَقَ اللَّهُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٤٥﴾

पुस्तक में से जो तेरी ओर वहइ किया जाता है, तू (उसे) पढ़ कर सुना और नमाज़ को कायम कर । निःसन्देह नमाज़ निर्लज्जता और प्रत्येक अप्रिय बात से रोकती है । और अल्लाह का स्मरण निःसन्देह समस्त (स्मरणों) से श्रेष्ठ है । और अल्लाह जानता है जो तुम करते हो । 146।

और अहले किताब से बहस न करो परन्तु उस (दलील) के साथ जो उत्तम हो । सिवाय उन के जिन्होंने अत्याचार किया और (उनसे) कहो कि हम उस पर ईमान ले आए हैं जो हमारी ओर उतारा गया और उस पर (भी) जो तुम्हारी ओर उतारा गया । और हमारा उपास्य और तुम्हारा उपास्य एक ही है और हम उसी के आज्ञाकारी हैं । 147।

और इसी प्रकार हमने तेरी ओर पुस्तक उतारी । अतः वे लोग जिनको हमने पुस्तक दी है, वे उस पर ईमान लाते हैं और इन (अहले किताब) में से भी (ऐसा गिरोह) है जो उस पर ईमान लाता है । और हमारी आयतों का इनकार काफ़िरों के सिवा कोई नहीं करता । 148।

और तू इससे पहले कोई पुस्तक नहीं पढ़ता था और न तू अपने दाहिने हाथ से उसे लिखता था । यदि ऐसा होता तो झुठलाने वाले (तेरे बारे में) अवश्य शंका में पड़ जाते । 149।

أَتْلُ مَا أُوحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ ۖ إِنَّ الصَّلَاةَ تَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ ۚ وَلَذِكْرُ اللَّهِ أَكْبَرُ ۗ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُونَ ﴿٤٦﴾

وَلَا تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ ۚ إِلَّا الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْهُمْ وَقُولُوا آمَنَّا بِالَّذِي أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَأُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَالْهُدَىٰ وَاللَّهُكُمْ وَاحِدٌ وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٤٧﴾

وَكَذَلِكَ أُنْزِلْنَا إِلَيْكَ الْكِتَابَ ۖ فَالَّذِينَ آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمِنْ هَؤُلَاءِ مَنْ يُؤْمِنُ بِهِ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِالْآيَةِ إِلَّا الْكَافِرُونَ ﴿٤٨﴾

وَمَا كُنْتَ تَتْلُو مِنْ قَبْلِهِ مِنْ كِتَابٍ وَلَا تَخُطُّهُ بِيَمِينِكَ إِذًا لَا زِتَابَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٤٩﴾

बल्कि ये वे खुली-खुली आयतें हैं जो उनके सीनों में (दर्ज) हैं जिनको ज्ञान दिया गया । और हमारी आयतों का इनकार अत्याचारियों के अतिरिक्त और कोई नहीं करता ।50।

और वे कहते हैं, क्यों न उस पर उसके रब्ब की ओर से चिह्न उतारे गए । तू कह दे कि चिह्न तो केवल अल्लाह के निकट हैं । और मैं तो केवल एक खुला-खुला सतर्क करने वाला हूँ ।51।

क्या (यही) उनके लिए पर्याप्त नहीं कि हमने तुझ पर एक पुस्तक उतारी है जो उन के समक्ष पढ़ी जाती है । और निःसन्देह इस में ईमान लाने वाले लोगों के लिए एक बड़ी कृपा भी है और बहुत बड़ा उपदेश भी ।52। (रुकू 5)

तू कह दे कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह साक्षी के रूप में पर्याप्त है । वह जानता है जो आसमानों और धरती में है । और वे लोग जो असत्य पर ईमान ले आए और अल्लाह का इनकार कर दिया यही वे लोग हैं जो हानि उठाने वाले हैं ।53।

और वे तुझ से शीघ्र अज़ाब लाने की माँग करते हैं । और यदि निश्चित अवधि तय न होती तो अवश्य उनके पास अज़ाब आ जाता । और वह उनके पास निःसन्देह (इस प्रकार) अचानक आएगा कि वे (उसको) समझ नहीं सकेंगे ।54।

वे तुझ से अज़ाब को माँगने में जल्दी करते हैं । जबकि नरक काफ़िरों को अवश्य घेर लेने वाला है ।55।

بَلْ هُوَ آيَاتٌ بَيِّنَاتٌ فِي صُدُورِ الَّذِينَ
أُوتُوا الْعِلْمَ ۚ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا
الظَّالِمُونَ ۝

وَقَالُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ
قُلْ إِنَّمَا الْآيَاتُ عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَإِنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ
مُبِينٌ ۝

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ
يَتْلَى عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَرَحْمَةً وَذِكْرَى
لِقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ۝

قُلْ كَفَى بِاللَّهِ بَيِّنًا وَبَيْنَكُمْ شَهِيدًا
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَالَّذِينَ
آمَنُوا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوا بِاللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ
هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَلَوْلَا أَجَلٌ
مُسَمًّى لَجَاءَهُمُ الْعَذَابُ ۚ وَلَيَأْتِيَنَّهُمْ
بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

يَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ ۚ وَإِنَّ جَهَنَّمَ
لَمُحِيطَةٌ بِالْكَافِرِينَ ۝

जिस दिन अज़ाब ऊपर से भी और उनके पाँव के नीचे से भी उनको ढाँप लेगा । और (अल्लाह) कहेगा कि जो कुछ तुम किया करते थे उसे चखो । 56।

हे मेरे भक्तो जो ईमान लाए हो ! मेरी धरती निश्चित रूप से विस्तृत है । अतः केवल मेरी ही उपासना करो । 57।

प्रत्येक जान मृत्यु का स्वाद चखने वाली है । फिर हमारी ही ओर तुम लौटाए जाओगे । 58।

और वे लोग जो ईमान लाए और पुण्य कर्म किए हम उनको स्वर्ग में अवश्य ऐसे अटारियों में स्थान प्रदान करेंगे जिनके दामन में नहरें बहती होंगी । वे सदा उनमें रहेंगे । कर्म करने वालों का क्या ही उत्तम प्रतिफल है । 59।

(ये वे लोग हैं) जिन्होंने धैर्य किया और अपने ربब पर भरोसा करते रहे । 60।

और कितने ही धरती पर चलने वाले जीवधारी हैं कि वे अपनी जीविका उठाए नहीं फिरते । अल्लाह ही है जो उन्हें और तुम्हें भी जीविका प्रदान करता है । और वह खूब सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 61।

और यदि तू उनसे पूछे कि किसने आसमानों और धरती को उत्पन्न किया और सूर्य एवं चन्द्रमा को सेवा में लगा दिया ? तो वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने। तो फिर (वे) किस ओर उल्टे फिराए जाते हैं ? । 62।

يَوْمَ يَغْشَاهُمْ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُولُ دُوِقُوا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٦﴾

يُعْبَادِي الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ أَرْضِي وَاسِعَةٌ ﴿٥٧﴾
فَيَا أَيُّهَا الْعِبَادُونَ ﴿٥٧﴾

كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٥٨﴾

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا نِعَمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ ﴿٥٩﴾

الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٦٠﴾
وَكَأَيِّنْ مِنْ ذَا بَعَةٍ لَا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۗ اللَّهُ يَرْزُقُهَا إِيَّاهُمْ وَلَهُ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٦١﴾

وَلَيْسَ سَاءَتْهُمْ مِمَّنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُولَنَّ اللَّهُ ۖ فَاٰتٰی يُؤْفَكُوْنَ ﴿٦٢﴾

अल्लाह ही है जो अपने भक्तों में से जिसके लिए चाहता है जीविका को बढ़ा देता है और उसके लिए (जीविका) तंग भी कर देता है । निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु को खूब जानने वाला है । 63।

और यदि तू उनसे पूछे कि किसने आसमान से पानी उतारा ? फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवित कर दिया ? तो वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने । तू कह, समस्त स्तुति अल्लाह ही के लिए हैं । परन्तु अधिकतर उनमें से बुद्धि नहीं रखते । 64।

(स्कू $\frac{6}{2}$)

और यह सांसारिक जीवन लापरवाही और खेल-तमाशे के अतिरिक्त कुछ नहीं । और निःसन्देह परलोक का घर ही वास्तविक जीवन है । काश कि वे जानते । 65।

अतः जब वे नौका में सवार होते हैं तो वे अल्लाह के लिए अपनी श्रद्धा को विशिष्ट करते हुए उसी को पुकारते हैं । फिर जब वह उन्हें स्थल भाग की ओर बचा कर ले जाता है तो सहसा वे शिर्क करने लगते हैं । 66।

ताकि जो कुछ हम ने उन्हें प्रदान किया है वे उसकी कृतघ्नता करें और ताकि वे कुछ अस्थायी लाभ उठा लें । फिर वे शीघ्र ही (इसका परिणाम) जान लेंगे । 67।

क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने एक शांतिपूर्ण हरम (अर्थात् मक्का क्षेत्र)

اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۖ إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٦٣﴾

وَلَيْسَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لِيَقُولَنَّ اللَّهُ ۖ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۖ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٤﴾

وَمَا هَذِهِ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا إِلَّا لَهُمْ وَلِئِبٍ ۖ وَإِنَّ الدَّارَ الْآخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٦٥﴾

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلِكِ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّيْنَاهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ﴿٦٦﴾

لِيَكْفُرُوا بِمَا آتَيْنَاهُمْ ۖ وَلِيَسْتَمْتَعُوا ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٦٧﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا مِمَّا

बनाया है । जबकि उनके इर्द-गिर्द से लोग उचक लिए जाते हैं । तो फिर क्या वे झूठ पर ईमान लाएंगे और अल्लाह की नेमत का इनकार कर देंगे ? 168।

और उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर एक बड़ा झूठ गढ़े अथवा सत्य को झुठला दे जब वह उसके पास आए । क्या काफिरों के लिए नरक में ठिकाना नहीं ? 169।

और वे लोग जो हमारे बारे में प्रयत्न करते हैं हम अवश्य उन्हें अपनी राहों की ओर मार्गदर्शित करेंगे । और निःसन्देह अल्लाह उपकार करने वालों के साथ है 170। (रुकू $\frac{7}{3}$)

وَيُتَخَذَفُ النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ^ط
أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَةِ اللَّهِ
يَكْفُرُونَ^{١٦٨}

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ
كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ^ط أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ
مَثْوًى لِلْكَافِرِينَ^{١٦٩}

وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَهُمْ صُبُلَنَا^ط
وَإِنَّ اللَّهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ^{١٧٠}

ع
ف

30- सूर: अर-रूम

यह मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 61 आयतें हैं ।

इस सूर: का आरंभ भी खण्डाक्षर **अलिफ़-लाम-मीम** से हुआ है । **अलिफ़-लाम-मीम** खण्डाक्षरों से आरम्भ होने वाली सूरतों में यह उल्लेख है कि अल्लाह तआला सबसे अधिक जानता है कि क्या हुआ और क्या होने वाला है ।

इससे पूर्ववर्ती सूर: के अंत पर यह दावा था कि अल्लाह तआला निःसन्देह उपकार करने वालों के साथ है । और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे बड़े उपकार करने वाले थे । अतः आपको और भी विजयों का शुभ-समाचार दिया गया जिनका वर्णन इस सूर: में अनेक स्थान पर मिलता है । सबसे पहले भविष्यवाणी के रंग में यह वर्णन किया गया कि ईरान के मुश्रिकों को रोम की ईसाई सरकार के विरुद्ध (जो एकेश्वरवादी होने का दावा तो करते थे) थोड़े से क्षेत्र पर विजय प्राप्त हुई तो उससे मुश्रिकों ने यह शकुन निकाला कि वे अल्लाह तआला के साथ स्वयं को जोड़ने वालों पर अंतिम विजय भी प्राप्त कर लेंगे । इस सूर: में यह घोषणा की गई है कि ऐसा कदापि नहीं होगा । रोमवासी निश्चित रूप से अपने खोए हुए भू-भाग को ईरान के मुश्रिकों से दोबारा छुड़वा लेंगे और इस पर मुसलमान यह आशा रखते हुए खुशियाँ मनाएँगे कि अब अल्लाह ने चाहा तो मुसलमानों को भी मुश्रिकों पर भारी विजय प्राप्त होगी ।

यह भविष्यवाणी उन दिनों की है जब मुसलमान बहुत कमज़ोर थे और कोई उनकी विजय का दावा नहीं कर सकता था । इस प्रकरण में यह भविष्यवाणी भी इस विजय के वादे में निहित थी कि मुसलमानों को मुश्रिकों की वैभवशाली साम्राज्य अर्थात् ईरान की सत्ता पर भी विजय प्राप्त होगी । अतः बिल्कुल ऐसा ही हुआ । इतने स्पष्ट प्रमाण को देखते हुए भी लोग अल्लाह तआला का इनकार करते चले जाते हैं । अतः उनको एक बार फिर इस वास्तविकता की ओर ध्यान दिलाया गया कि क्या वे धरती और आकाश अथवा स्वयं अपने आप पर ध्यान नहीं देते ताकि उनको अल्लाह तआला की सत्ता के प्रमाण स्वयं अपने अन्दर और धरती व आकाश के क्षितिजों में दिखाई देने लगे । इसी प्रकार उनका ध्यान पहली जातियों के अवशेषों की ओर आकर्षित करवाया गया कि यदि ये काफ़िर अपनी अवस्था से अनजान हैं तो फिर पहली जातियों के परिणाम को देख लें । सांसारिक दृष्टि से वे कितनी बलवान जातियाँ थीं और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में उपस्थित जातियों से कहीं अधिक उन्होंने धरती को आबाद किया परन्तु जब उनके पास रसूल आए और उन्होंने इनकार कर दिया तो उनकी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिला दी गई ।

इसके पश्चात् विभिन्न उदाहरणों के द्वारा यह विषय लगातार जारी है कि जिधर भी तुम नज़र दौड़ाओगे उधर तुम्हें जीवन के पश्चात् मृत्यु और मृत्यु के पश्चात जीवन का विषय व्याप्त दिखाई देगा । परन्तु खेद है कि मनुष्य इस पर विचार नहीं करता कि इस सारी व्यवस्था का अन्तिम लक्ष्य यह तो नहीं हो सकता कि मनुष्य को बार-बार इसी संसार के लिए जीवित किया जाए । अन्तिम जीवन वही होगा जिसमें उसे हिसाब देने के लिए अल्लाह के समक्ष उपस्थित किया जाएगा ।

अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक बार फिर इस बात की नसीहत की गई है कि तू धैर्य से काम ले । अल्लाह का वादा निस्सन्देह सत्य है और वे लोग जो विश्वास नहीं करते, तुझे अपनी आस्था से उखाड़ न सकें । यहाँ धैर्य से काम लेने का अर्थ यह है कि नेकियों से चिमटे रहो और किसी क़ीमत पर भी सत्य को न छोड़ो ।



سُورَةُ الرُّومِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ إِحْدَى وَسِتُّونَ آيَةً وَسِتَّةَ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 11।

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला हूँ 12।

रोम वासी पराजित किए गए 13।

निकट वर्ती धरती में और वे पराजित होने के पश्चात फिर अवश्य विजयी होंगे 14।

तीन से नौ वर्ष की अवधि तक । आदेश अल्लाह ही का (चलता) है, पहले भी और बाद में भी । और उस दिन मोमिन (भी अपनी विजयों से) बहुत खुश होंगे 15।

(जो) अल्लाह की सहायता से (होंगी) वह जिसकी चाहता है सहायता करता है और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 16।

(यह) अल्लाह का वादा (है और) अल्लाह अपने वादे नहीं तोड़ता । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते 17।*

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْمَلِكِ ②

عَلَبَتِ الرُّومُ ③

فِي أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِنْ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُونَ ④

فِي بَضْعِ سِنِينَ ⑤ اللَّهُ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْ بَعْدُ وَيَوْمَئِذٍ يَفْرَحُ الْمُؤْمِنُونَ ⑥

يَنْصُرُ اللَّهُ ⑦ يَنْصُرُ مَنْ يَشَاءُ ⑧ وَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ⑨

وَعَدَ اللَّهُ ⑩ لَا يَخْلِفُ اللَّهُ وَعْدَهُ وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ⑪

* आयात 3 से 7 : सूर: अर-रूम की इन आरम्भिक आयतों में रोमन साम्राज्य का अग्नि उपासक ईरानी साम्राज्य के साथ युद्ध में निकट की धरती में पराजित होने का उल्लेख है । परन्तु साथ ही यह भविष्यवाणी की गई है कि दोबारा उन को ईरान पर विजयी किया जाएगा और ऐसा नौ वर्षों के अन्दर-अन्दर होगा । यह भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई की एक बड़ी दलील है कि अवश्य सर्वज्ञ अल्लाह ने ही आपको यह सूचना दी थी ।

फिर इन्हीं आयतों में अन्ततोगत्वा मुसलमानों की विजय प्राप्ति की भविष्यवाणी भी है जो इसी प्रकार बड़ी शान से पूरी हुई । यह विजय भी कुछ वर्षों के अन्दर बद्र-युद्ध के समय प्राप्त हुई ।

वे सांसारिक जीवन के ज़ाहिरी (रूप) को जानते हैं और परलोक के बारे में वे असावधान हैं ।8।

क्या उन्होंने अपने दिलों में विचार नहीं किया (कि) अल्लाह ने आसमानों और धरती को और जो कुछ उन दोनों के मध्य है सत्य के साथ और एक निश्चित अवधि के लिए पैदा किया है । और निःसन्देह लोगों में से अधिकतर अपने रब्ब की भेंट से अवश्य इनकार करने वाले हैं ।9।

और क्या उन्होंने धरती में भ्रमण नहीं किया ताकि वे विचार कर सकते कि उन लोगों का अंत कैसा हुआ जो उनसे पहले थे । वे उनसे अधिक शक्तिशाली थे और उन्होंने धरती को फाड़ा और उसे उससे अधिक आबाद किया था जैसा इन्होंने उसे आबाद किया है । और उनके पास भी उनके रसूल खुल-खुले चिह्न लेकर आए थे । अतः अल्लाह ऐसा नहीं कि उन पर अत्याचार करता बल्कि वे स्वयं अपनी जानों पर अत्याचार करते थे ।10।

फिर वे लोग जिन्होंने बुराई की, उनका बहुत बुरा अन्त हुआ क्योंकि वे अल्लाह की आयतों को झुठलाते थे और उनसे उपहास करते थे ।11।

(रूकू 1/4)

अल्लाह सृष्टि का आरंभ करता है फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है । फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे ।12।

يَعْلَمُونَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَهُمْ عَنِ الْآخِرَةِ هُمْ غَفْلُونَ ﴿٨﴾

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوا فِي أَنفُسِهِمْ ۚ مَا خَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ لَكَفِرُونَ ﴿٩﴾

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوهَا أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوهَا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ ۚ فَمَا كَانَ اللَّهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلَكِن كَانُوا أَنفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١٠﴾

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ آسَاءُوا السُّوْأَىٰ أَن كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَكَانُوا بِهَا يَسْتَهْزِءُونَ ﴿١١﴾

اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿١٢﴾

और जिस दिन क़यामत प्रकट होगी अपराधी निराश हो जाएँगे 113।

और उनके (कल्पित) साझीदारों (अर्थात् उपास्यों) में से उनके लिए कोई सिफ़ारिश करने वाले नहीं होंगे और वे अपने (बनाए हुए) साझीदारों का (स्वयं ही) इनकार करने वाले होंगे 114।

और जिस दिन क़यामत प्रकट होगी उस दिन (लोग) अलग-अलग बिखर जाएँगे 115।

अतः वे लोग जो ईमान लाए और पुण्य कर्म किए, एक बाग़ में उन्हें प्रसन्नता के साधन उपलब्ध किए जाएँगे 116।

और वे लोग जिन्होंने इन्कार किया और हमारी आयतों को और परलोक की भेंट को झुठलाया। अतः यही वे लोग हैं जो अज़ाब में उपस्थित किए जाएँगे 117।

अतः अल्लाह (प्रत्येक अवस्था में) पवित्र है। उस समय भी जब तुम सायंकाल में प्रविष्ट होते हो और उस समय भी जब तुम प्रातःकाल (में प्रवेश) करते हो 118।

और आसमानों में भी और धरती में भी, और रात को भी और उस समय भी जब तुम दोपहर गुज़ारते हो, समस्त स्तुति उसी के लिए है 119।

वह निर्जीव से सजीव को निकालता है और सजीव से निर्जीव को निकालता है और धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ
الْمُجْرِمُونَ ١٣

وَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ مِنْ شُرَكَائِهِمْ شُفَعَاءُ
وَكَانُوا بِشُرَكَائِهِمْ كُفَرِينَ ١٤

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُومِذِّيتَفَرَّقُونَ ١٥

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَهُمْ
فِي رَوْضَةٍ يُحْبَرُونَ ١٦

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا وَلِقَائِ
الْآخِرَةِ فَأُولَئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُونَ ١٧

فَسَبِّحْ لِلَّهِ حِينَ تُمْسُونَ وَحِينَ
تُصْبِحُونَ ١٨

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا
وَحِينَ تَظْهَرُونَ ١٩

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ
مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ٢٠

जीवित कर देता है और इसी प्रकार तुम भी निकाले जाओगे ।20। (रूकू $\frac{2}{5}$)

और उसके चिह्नों में से (एक चिह्न यह भी) है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया । फिर (मानो) सहसा तुम मनुष्य बन कर फैलते चले गए ।21।

और उसके चिह्नों में से (यह चिह्न भी) है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारे ही वर्ग में से जोड़े बनाए ताकि तुम सन्तुष्टि (प्राप्त करने) के लिए उनकी ओर जाओ और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया पैदा कर दिया । निःसन्देह इसमें ऐसे लोगों के लिए जो सोच-विचार करते हैं बहुत से चिह्न हैं ।22।

और उसके चिह्नों में से आसमानों और धरती की उत्पत्ति है । और तुम्हारी भाषाओं और रंगों के भेद भी । निःसन्देह इसमें ज्ञानियों के लिए बहुत से चिह्न हैं ।23।*

और उसके चिह्नों में से तुम्हारा रात को और दिन को सोना और तुम्हारा उसकी कृपा का तलाश करना भी है । निःसन्देह इसमें उन लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं जो (बात) सुनते हैं ।24।

और उसके चिह्नों में से है कि वह तुम्हें भय और आशा की अवस्था में बिजली दिखाता है और बादलों से

وَكَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَا أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُونَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِتَسْكُنُوا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَوَدَّةً وَرَحْمَةً ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافَ أَلْسِنَتِكُمْ وَالْوُأْنَانِكُمْ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْعَالَمِينَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَاؤُكُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَسْمَعُونَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَيُخْجِي بِهِ الْأَرْضَ

* इस आयत में यह भी संकेत है कि आरम्भ में एक ही भाषा थी जो ईश्वरीय भाषा थी । फिर मानव जाति के विभिन्न क्षेत्रों में फैल जाने के फलस्वरूप क्षेत्रीय परिवर्तनों के साथ-साथ भाषा भी परिवर्तित होती रही । इसी प्रकार आरम्भ में सब मनुष्यों का रंग भी एक ही था फिर वह भी उष्ण, शीत और शीतोष्ण क्षेत्रों के अनुसार परिवर्तित होता रहा ।

पानी उतारता है । फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवित कर देता है । निःसन्देह इसमें बुद्धि रखने वालों के लिए बहुत से चिह्न हैं । 125।

और उसके चिह्नों में से (यह भी) है कि आसमान और धरती उसके आदेश के साथ कायम हैं । फिर जब वह तुम्हें धरती से एक आवाज़ देगा तो सहसा तुम निकल खड़े होगे । 126।

और उसी का है जो आसमानों और धरती में है । सब उसी के आज्ञाकारी हैं । 127।

और वही है जो सृष्टि का आरम्भ करता है फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है और उस के लिए यह बहुत सरल है । और आसमानों और धरती में उसका उदाहरण सर्वोपरि है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील عَزَّ وَجَلَّ है । 128। (रूकू $\frac{3}{6}$)

वह तुम्हारे लिए तुम्हारा अपना ही उदाहरण देता है । क्या उन लोगों में से जो तुम्हारे अधीन हैं ऐसे भी हैं जो उस जीविका में साझीदार बनें हों जो हमने तुम्हें प्रदान की है । फिर तुम उसमें एक समान हो जाओ (और) उनसे उसी प्रकार डरो जैसे तुम अपनी से डरते हो ? इसी प्रकार हम उन लोगों के लिए आयतें खूब खोल-खोल कर वर्णन करते हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं । 129।

بَعْدَ مَوْتِهَا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ١٢٥

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ تَقُومَ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهِ ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً مِّنَ الْأَرْضِ إِذَا أَنْتُمْ تَخْرُجُونَ ١٢٦

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ كُلٌّ لَهُ قَانِتُونَ ١٢٧

وَهُوَ الَّذِي يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلَىٰ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ١٢٨

ضَرَبَ لَكُم مَّثَلًا مِّنْ أَنْفُسِكُمْ هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَاءَ فِي مَا رَزَقْنَكُمْ فَأَنْتُمْ فِيهِ سَوَاءٌ تَخَافُونَهُمْ كَخِيفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ كَذَلِكَ نُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ١٢٩

वास्तविकता यह है कि वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया उन्होंने बिना किसी ज्ञान के अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया । अतः कौन उसे हिदायत दे सकता है जिसे अल्लाह ने पथभ्रष्ट ठहरा दिया । और उन (जैसों) के कोई सहायक नहीं होंगे ।30।

अतः (अल्लाह की ओर) सदा झुकाव रखते हुए अपना ध्यान धर्म पर केन्द्रित रख । यह अल्लाह की प्रकृति है जिस के अनुरूप उसने मनुष्यों की सृष्टि की। अल्लाह की सृष्टि में कोई परिवर्तन नहीं । यह क़ायम रखने और क़ायम रहने वाला धर्म है परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।31।*

सदा उसी की ओर झुकते हुए (चलो) और उसका तक्रवा धारण करो और नमाज़ को क़ायम करो और मुश्रिकों में से न बनो ।32।

(अर्थात्) उनमें से (न बनो) जिन्होंने अपने धर्म को विभाजित कर दिया और वे सम्प्रदायों (में बट चुके) थे । प्रत्येक सम्प्रदाय (वाले) जो उनके पास था उस पर इतरा रहे थे ।33।

और जब लोगों को कोई कष्ट पहुँचे तो वे अपने रब्ब को उसके समक्ष विनम्रतापूर्वक झुकते हुए पुकारते हैं ।

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَهْوَاءَهُمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ فَمَنْ يَهْدِي مَنْ أَضَلَّ اللَّهُ
وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ③

فَاقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا فِطْرَتِ
اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا لَا تَبْدِيلَ
لِخَلْقِ اللَّهِ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ③

مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ③

مِّنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِيْنَهُمْ وَكَانُوا شِيعًا
كُلٌّ حِزْبٍ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ③

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ

* अर्थात् अल्लाह तआला ने भक्तों को प्रकृति के अनुरूप पैदा किया है और प्रत्येक मनुष्य इसी एक धर्म पर पैदा होता है । अर्थात् पवित्र, स्वच्छ प्रकृति लेकर । बाद में बड़े होकर विभिन्न प्रभावों के परिणामस्वरूप वह भटक जाता है । इस आयत के अनुसार चाहे हिन्दू, ईसाई, यहूदी अथवा मुश्रिक का बच्चा हो जन्म लेते समय निष्पाप ही होता है ।

फिर जब वह उन्हें अपनी ओर से कृपा (का स्वाद) चखाता है तो सहसा उनमें से एक गिरोह (वाले) अपने रब का साझीदार ठहराने लगते हैं। 134।

ताकि जो हमने उन्हें प्रदान किया है वे उसकी कृतघ्नता करें। अतः अस्थायी लाभ उठा लो, शीघ्र तुम (इसका परिणाम) जान लोगे। 135।

क्या हमने उन पर कोई भारी दलील उतारी है फिर वह उनसे उसके बारे में वार्तालाप करती है जो वे उस (अल्लाह) का साझीदार ठहराते हैं? 136।

और जब हम लोगों को कोई कृपा (का स्वाद) चखाते हैं तो उस पर वे इतराने लगते हैं। और यदि उन्हें कोई बुराई पहुँच जाए जो (स्वयं) उनके हाथों ने आगे भेजी हो तो वे सहसा निराश हो जाते हैं। 137।

क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है जीविका को बढ़ा देता है और तंग भी करता है। निःसन्देह इसमें ईमान लाने वाले लोगों के लिए बहुत से चिह्न हैं। 138।

अतः अपने निकट सम्बन्धियों को और निर्धन को और यात्री को उसका अधिकार दो। यह बात उन लोगों के लिए अच्छी है जो अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हैं। और यही वे लोग हैं जो सफल होने वाले हैं। 139।

مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا اَذَاقَهُمْ مِنْهُ رَحْمَةً
اِذَا فَرِيقٌ مِنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۝۱

لِيَكْفُرُوا بِمَا اٰتَيْنَهُمْ ۖ فَتَمْتَعُوا^١
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝۲

اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا
كَانُوْا بِهِ يُشْرِكُوْنَ ۝۳

وَ اِذَا اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ
تُصْبَهُمْ سَيِّئَةٌۭ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ
اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ۝۴

اَوْ لَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ
يُّؤْمِنُوْنَ ۝۵

قَالَ ذٰلِكَ قُرْۢبٰى حَقُّهُ وَالْمُسْكِيْنَ وَاَبْنِ
السَّبِيْلِ ۚ ذٰلِكَ خَيْرٌۭ لِّلَّذِيْنَ يَّرِيْدُوْنَ
وَجْهَ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝۶

और जो तुम ब्याज के रूप में देते हो ताकि लोगों के धन में मिल कर वह बढ़ने लगे तो अल्लाह के निकट वह नहीं बढ़ता। और अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हुए तुम जो कुछ ज़कात देते हो तो यही वे लोग हैं जो (उसे) बढ़ाने वाले हैं। 140।

अल्लाह वह है जिसने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हें जीविका प्रदान की। फिर वह तुम्हें मारेगा और वही तुम्हें फिर जीवित करेगा। क्या तुम्हारे उपास्यों में से भी कोई है जो इन बातों में से कुछ करता हो? वह बहुत पवित्र है और उससे बहुत ऊँचा है जो वे शिर्क करते हैं। 141।

(सूकू 4/7)

लोगों ने जो अपने हाथों बुराइयाँ कमाई उनके परिणामस्वरूप स्थल भाग में भी और जल भाग में भी उपद्रव छा गया ताकि वह उन्हें उनके कुछ कर्मों का प्रतिफल चखाए। ताकि संभवतः वे लौटें। 142।

तू कह दे कि धरती में खूब भ्रमण करो और ध्यान दो कि पहले लोगों का कैसा अंत हुआ। उनमें से अधिकतर मुश्रिक थे। 143।

अतः तू अपना ध्यान मज़बूत और कायम रहने वाले धर्म की ओर केन्द्रित रख। इससे पूर्व कि वह दिन आ जाए जिसका किसी रूप में टलना अल्लाह की ओर से संभव न होगा। उस दिन वे तितर-बितर हो जाएंगे। 144।

وَمَا آتَيْتُمْ مِّنْ رَبَّالَّذِينَ فِي أَمْوَالِ
النَّاسِ فَلَا يَرَبُّوْا عِنْدَ اللَّهِ ۚ وَمَا آتَيْتُمْ
مِّنْ زَكَاةٍ تُرِيدُونَ وَجْهَ اللَّهِ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْمُضْعِفُونَ ۝

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ
يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيكُمْ ۖ هَلْ مِنْ
شُرَكَائِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ دُونِكُمْ مِّنْ
شَيْءٍ ۖ سُبْحٰنَهُ وَتَعَالٰی عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ
أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيقَهُمْ بَعْضَ الَّذِي
عَمِلُوا ۖ أَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلُ ۚ
كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِينَ ۝

فَاقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّينِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ
يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ يَوْمَئِذٍ
يَصْدَعُونَ ۝

जो इनकार करे उसका इनकार उसी पर पड़ेगा । और जो नेक कर्म करे तो वे (लोग) अपनी ही भलाई की तैयारी करते हैं । 145।

ताकि वह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक कर्म किए अपनी कृपा से प्रतिफल प्रदान करे । निःसन्देह वह काफ़िरों को पसन्द नहीं करता । 146।

और उसके चिह्नों में से (यह भी) है कि वह शुभ-समाचार देती हुई हवाओं को भेजता है और (ऐसा वह इस लिए करता है) ताकि वह तुम्हें अपनी कृपा में से कुछ चखाए । और नौकाएँ उसके आदेश से चलने लगेँ और ताकि तुम उसकी कृपा की खोज करो । और ऐसा हो कि संभवतः तुम कृतज्ञ बन जाओ । 147।

और निःसन्देह हमने तुझ से पहले कई रसूलों को उनकी जातियों की ओर भेजा। अतः वे उनके पास खुले-खुले चिह्न ले कर आए तो हमने उनसे जिन्होंने अपराध किया प्रतिशोध लिया । और हम पर मोमिनों की सहायता करना अनिवार्य ठहरता था । 148।

अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। फिर वे बादल को उठाती हैं । फिर वह उसे आसमान में जैसे चाहे फैला देता है और फिर वह उसे विभिन्न टुकड़ों में परिवर्तित कर देता है । फिर तू देखता है कि उसके बीच में से बारिश निकलती है। फिर जब वह अपने भक्तों में से जिसको चाहे यह (भलाई)

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۖ وَمَنْ عَمِلْ صَالِحًا فَلَا نَفْسَهُ يَمْهَدُونَ ﴿١٤٥﴾

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْ فَضْلِهِ ۗ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ﴿١٤٦﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْ يُرْسِلَ الرِّيَّاحَ مُبَشِّرَاتٍ وَلِيَذِيقَكُمْ مِنْ رَحْمَتِهِ وَلِتَجْرِيَ الْفُلُكُ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿١٤٧﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِينَ أَجْرَمُوا ۖ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٤٨﴾

اللَّهُ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيَّاحَ فَتُبْرِسُ حَابًا فَيَبْسُطُهُ فِي السَّمَاءِ كَيْفَ يَشَاءُ وَيَجْعَلُهُ كِسْفًا فَنَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلَالِهِ ۚ فَإِذَا أَصَابَ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ

पहुँचाता है तो तुरंत वे खुशियाँ मनाने लगते हैं। 149।

हालाँकि इससे पूर्व कि वह (पानी) उन पर उतारा जाता, वे उसके आने से निराश हो चुके थे। 150।*

अतः तू अल्लाह की कृपा के चिह्नों पर दृष्टि डाल। कैसे वह धरती को उसके मरने के पश्चात जीवित करता है। निःसन्देह वही है जो मुर्दों को जीवित करने वाला है। और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे, स्थायी सामर्थ्य रखता है। 151।**

और यदि हम कोई ऐसी हवा भेजें जिसके परिणामस्वरूप वे उस (हरियाली) को पीला होता हुआ देखें तो उसके पश्चात वे अवश्य कृतघ्नता करने लगेंगे। 152।

अतः तू निःसन्देह मुर्दों को नहीं सुना सकता। और न बहरों को (अपनी) बात सुना सकता है जब वे पीठ फेरते हुए चले जाएँ। 153।

और न तू अन्धों को उनके भटक जाने के पश्चात् मार्ग दिखा सकता है। तू केवल उसे सुना सकता है जो हमारी आयतों पर ईमान ले आए। अतः वही आज्ञाकारी लोग हैं। 154। (रकू 5/8)

إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ٤٩

وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلِ أَنْ يُنْزَلَ عَلَيْهِمْ مَنَّ قَبْلَهُ لَمُبْلِسِينَ ٥٠

فَانْظُرْ إِلَىٰ أَثَرِ رَحْمَةِ اللَّهِ كَيْفَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ لَمُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ٥١

وَلَيْبُ أَرْسَلْنَا رِيحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا ٥٢
تَظُنُّوْا مِنْ بَعْدِهِمْ يَكْفُرُونَ ٥٣

فَإِنَّكَ لَا تَسْمِعُ الْمَوْتَىٰ وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَاءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِينَ ٥٤

وَمَا أَنْتَ بِهَادِ الْعُمْيِ عَنْ صَلَاتِهِمْ ۖ إِنَّ تَسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا فَهُمْ مُسْلِمُونَ ٥٥

* अरबी शब्द क़बिलही के इस अर्थ के लिए देखें - अल-मुन्जिद और अल मु'जमुल वसीत।

** आयत सं. 49 से 51 : यहाँ समुद्र से स्वच्छ पानी के वाष्प के रूप में उठने और फिर ऊँचे पर्वतों से टकरा कर स्वच्छ जल के रूप में निचली धरती की ओर बहने का वर्णन है जिससे धरती जीवित होती है। यदि अल्लाह तआला की ओर से इस प्रकार की व्यवस्था जारी नहीं की जाती तो धरती पर किसी प्रकार के जीवन के चिह्नों का पाया जाना असंभव था।

अल्लाह वह है जिसने तुम्हें एक दुर्बल (अवस्था) से पैदा किया। फिर दुर्बलता के पश्चात् (उसने) शक्ति प्रदान की। फिर शक्ति के पश्चात् (पुनः) दुर्बलता और वृद्धावस्था पैदा कर दी। वह जो चाहता है पैदा करता है। और वह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) स्थायी सामर्थ्य रखने वाला है। 155।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَشَيْبَةً يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْقَدِيرُ ٥٥

और जिस दिन क़यामत प्रकट होगी अपराधी लोग क़समें खाएंगे कि (संसार में) वे एक घड़ी से अधिक नहीं रहे। इसी प्रकार वे (पहले भी) भटका दिए जाते थे। 156।

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُونَ مَا لَبِئُوا غَيْرَ سَاعَةٍ كَذَلِكَ كَانُوا يُؤْفَكُونَ ٥٦

और जिन लोगों को ज्ञान और ईमान दिया गया, कहेंगे कि निःसन्देह तुम अल्लाह की पुस्तक के अनुसार पुनरुत्थान के दिन तक रहे हो। और यही है पुनरुत्थान का दिन। परन्तु तुम ज्ञान नहीं रखते। 157।

وَقَالَ الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيمَانَ لَقَدْ لَبِئْتُمْ فِي كِتَابِ اللَّهِ إِلَى يَوْمِ الْبَعْثِ فَهَذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلَكُمْ كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ٥٧

अतः उस दिन जिन लोगों ने अत्याचार किया उनको उनकी क्षमायाचना कोई लाभ नहीं देगी। और न ही उनसे बहाना स्वीकार किया जाएगा। 158।

فَيَوْمَئِذٍ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَعذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ٥٨

और निःसन्देह हमने मनुष्यों के लिए इस कुरआन में प्रत्येक प्रकार के उदाहरण वर्णन कर दिए हैं। और यदि तू उनके पास कोई चिह्न ले कर आए तो जिन लोगों ने इनकार किया, निःसन्देह वे कहेंगे कि तुम (लोग) तो केवल झुठे हो। 159।

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِآيَةٍ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ٥٩

इसी प्रकार अल्लाह उन लोगों के दिलों पर मुहर लगा देता है जो ज्ञान नहीं रखते ।60।

كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝۱۰

अतः धैर्य धर । अल्लाह का वादा निःसन्देह सच्चा है । और वे लोग जो विश्वास नहीं रखते वे कदापि तुझे महत्वहीन न समझें ।61। (स्कू $\frac{6}{9}$)

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَلَا يَسْتَخِفُّكَ الَّذِينَ لَا يُوقِنُونَ ۝۱۱

31- सूर: लुक़मान

यह मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 35 आयतें हैं ।

इस सूर: का आरम्भ भी **अलिफ़-लाम-मीम** से होता है और इन खण्डाक्षरों से आरम्भ होने वाली सबसे पहली सूर: अल बकर: के विषयवस्तुओं की इस में नये ढंग से पुनरावृत्ति की गई है । **अल किताब** (अर्थात् एक विशेष पुस्तक) के अवतरण का जिस प्रकार सूर: अल्-बकर: के आरम्भ में वर्णन है इस सूर: के आरम्भ में भी उस पुस्तक में निहित अल्लाह तआला की ओर से उतरने वाली हिदायत का वर्णन है । परन्तु यहाँ इस विषयवस्तु को इस पहलू से बहुत आगे बढ़ा दिया गया है कि वहाँ तक़वा के आरम्भिक भाव के अनुसार इस पुस्तक ने उन लोगों के लिए हिदायत बनना था जो सत्य को सत्य कहने का सहास रखते हों । परन्तु यहाँ इस पुस्तक से उनको हिदायत प्रदान करने का दावा किया गया है जो तक़वा के दर्जा में बहुत आगे बढ़ कर **मुहसिन** (परोपकारी) बन चुके हों । इससे आगे हिदायत के जितने भी अनगिनत पड़ाव हैं हिदायत का यह अक्षय स्रोत उनको भी सींचता रहेगा ।

इस सूर: में एक बार फिर इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि अल्लाह तआला की बहुत सी शक्तियाँ हैं जिनको तुम अपनी आँखों से देख नहीं सकते । जैसा कि गुह्रत्वाकर्षण शक्ति । तो फिर खाली आँखों से इन शक्तियों के उत्पन्न करने वाले को कैसे देख सकोगे ?

हज़रत लुक़मान अलै. लोगों में बड़े विवेकशील प्रसिद्ध थे । इस सूर: में **अलिफ़-लाम-मीम** शब्द के पश्चात् **अल किताब** के साथ **अल हकीम** शब्द है जिस से ज्ञात होता है कि अब विवेकशील लुक़मान के हवाले से विवेकपूर्ण बातों को विभिन्न चरणों में वर्णन किया जाएगा । उनकी विवेकपूर्ण बातों में से सबसे बड़ी बात यह है कि उन्होंने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा कि वह कभी अल्लाह के साथ किसी को समकक्ष न ठहराए । फिर इस सूर: में माता पिता के साथ सद्-व्यवहार करने की शिक्षा दी गई है । क्योंकि वे बच्चों के पैदा होने का एक प्रत्यक्ष माध्यम बनने के कारण प्रतिबिम्ब स्वरूप रब्ब से समानता रखते हैं । इसके पश्चात् यह ताकीद की गई कि यदि शिर्क के मामूली से मामूली विचार भी तुम्हारे दिल में उत्पन्न हुए तो उस सर्वज्ञ और तत्त्वज्ञ अल्लाह को उनका ज्ञान हो जाएगा जो धरती और चट्टानों में छिपे हुए राई के बराबर दानों का भी ज्ञान रखता है और खबीर (अर्थात् खूब जानकार) भी है । यहाँ शब्द खबीर से इस ओर संकेत है कि वह उनके भविष्य की भी खबर रखता है कि उनका अन्त कैसा होगा ।

इसके पश्चात् नमाज़ को क़ायम करने का वह प्रमुख्य आदेश दिया गया है जो

सूरः अल् बक्ररः के आदेशों में से सबसे पहला आदेश है । मोमिन के जीवन का आधार पूर्णतया नमाज़ के क़ायम करने पर ही है । और सत्कर्म करने और असत्कर्म से रुकने का सामर्थ्य नमाज़ को क़ायम करने के परिणाम स्वरूप ही मिलता है । परन्तु मनुष्य की यह अवस्था है कि उसे नेकी करने का सामर्थ्य अल्लाह ही की ओर से मिलता है । फिर भी वह दूसरे मनुष्यों पर छोटी-छोटी बड़ाइयों के कारण अहंकार से अपने गाल फुलाने लगता है । अतः उसको विनम्रता की शिक्षा दी गई कि धरती में विनम्रता के साथ चलो और अपनी आवाज़ को भी धीमा रखो ।

इसके पश्चात् मनुष्य को कृतज्ञता प्रकट करने की ओर ध्यान दिलाया गया है जो इस सूरः में सर्वाधिक महत्व रखता है । बार-बार हज़रत लुक़मान अलै. अपने पुत्र को कृतज्ञ बनने का उपदेश करते हैं । अतः हज़रत लुक़मान अलै. को जो तत्त्वज्ञान प्रदान हुआ उसका केन्द्रबिन्दु **अल्लाह की कृतज्ञता** है जिससे उनके उपदेश का आरम्भ होता है ।

अल्लाह तआला की नेमतों का तो कोई अंत ही नहीं, जिसने धरती और आकाश और उसमें छिपी समस्त शक्तियों को मनुष्य के विकास के लिए सेवा पर लगा दिया । यहाँ तक कि ब्रह्माण्ड के छोर पर स्थित गेलेक्सीज़ (आकाश गंगाएँ) भी मनुष्य में छिपी शक्तियों पर कुछ न कुछ प्रभाव अवश्य डाल रही हैं । परन्तु फिर भी लोगों में से ऐसे भी हैं जो इस ब्रह्माण्ड के बारे में कोई ज्ञान नहीं रखते । अपनी अज्ञानता के बावजूद बढ़-बढ़ कर अल्लाह तआला पर बातें बनाते हैं । उनके पास न कोई हिदायत है और न कोई उज्ज्वल पुस्तक है जिसमें शिर्क की शिक्षा दी गई हो ।

यहाँ पर **उज्ज्वल पुस्तक** कह कर इस भ्रांति का निराकरण कर दिया गया कि मूर्तिपूजक अपनी बिगड़ी हुई आस्था को प्रमाणित करने में कुछ पुस्तकें प्रस्तुत करते हैं जैसा कि वेदों का हवाला दिया जाता है । परन्तु वेद तो कोई भी उज्ज्वल प्रमाण नहीं रखते बल्कि और भी अधिक अन्धकारों की ओर मनुष्य को धकेल देते हैं ।

ब्रह्माण्ड में अल्लाह तआला की विवेकशीलता और कुदरत के जो रहस्य फैले पड़े हैं उन को कोई लिपिबद्ध नहीं कर सकता । यहाँ तक कि समस्त समुद्र यदि स्याही बन जाएँ और सारे वृक्ष लेखनी बन जाएँ तो समुद्र शुष्क हो जाएँगे और लेखनी समाप्त हो जाएँगी परन्तु अल्लाह तआला के रहस्यों का वर्णन अभी बचा रहेगा ।

इसके पश्चात एक ऐसी आयत (संख्या 29) आती है जो मनुष्य जन्म के रहस्यों पर से अद्भुत रंग में पर्दा उठाती है । मनुष्य को बताया गया है कि यदि वह माँ की कोख में बनने वाले भ्रूण पर विचार करे कि वह उत्पत्ति के किन-किन पड़ावों में से गुज़रता है तो उसे अपने जन्म के आरम्भ के रहस्यों का कुछ ज्ञान हो सकता है । अतः वैज्ञानिक

विश्वसनीय ढंग से यह वर्णन करते हैं कि गर्भ के आरम्भ से लेकर भ्रूण की परिपक्वता तक उसमें वह सारे परिवर्तन होते रहते हैं जो जीवन के आरम्भ से लेकर विकास के सारे चरणों की पुनरावृत्ति करते हैं। यह एक बहुत ही विस्तृत और गहरा विषयवस्तु है जिस पर सभी जानकार वैज्ञानिक सहमत हैं। अल्लाह ने कहा कि यह तुम्हारा पहला जन्म है। जिस प्रकार एक तुच्छ कीड़े से उन्नति करते हुए तुम मानवीय योग्यताओं की चरम सीमा तक पहुँचे। इसी प्रकार तुम अपने नए जन्म में क्रियामत तक इतनी उन्नति कर चुके होगे कि उस पूर्णांग आकृति के समक्ष मनुष्य की वही हैसियत होगी जैसे मनुष्य के मुकाबले पर उस तुच्छ कीट की थी जिससे जीवन का आरम्भ किया गया।

इस सूरः का अंत इस घोषणा पर हुआ है कि वह घड़ी जिसका उल्लेख किया गया है कि जब मनुष्य मृतावस्था से उस पूर्णविस्था रूप में दोबारा उठाया जाएगा, जिसका ज्ञान केवल अल्लाह ही को है, वह कब और कैसे होगी। और इसी प्रकरण में उन दूसरी बातों का भी वर्णन किया गया जिनका केवल अल्लाह तआला को ही ज्ञान है और मनुष्य को इस ज्ञान में से कुछ भी प्राप्त नहीं। वह बातें ये हैं कि आकाश से जल कब और कैसे बरसेगा और माताओं के कोख में क्या चीज़ है जो पल रही है। और मनुष्य आने वाले कल में क्या कमाएगा और धरती में उसकी मृत्यु किस स्थान पर होगी।

यहाँ एक सन्देह का निराकरण आवश्यक है। आज कल के विकसित युग में यह दावा किया जा रहा है कि नए उपकरणों की सहायता से ज्ञात हो सकता है कि माँ के पेट में क्या है। यहाँ तक कि अब यह भी ज्ञात हो सकता है कि वह माँ के पेट में पलने वाला बच्चा स्वस्थ है या जन्मजात रोगी है। लड़का है अथवा लड़की। परन्तु सटीकता के इस दावा के बावजूद वे कदापि विश्वास पूर्वक नहीं कह सकते कि माँ के पेट में पलने वाला बच्चा अपंग है या नहीं। केवल एक भारी संभावना की बात करते हैं। इस प्रकार उनकी यह भविष्यवाणी भी कई बार ग़लत प्रमाणित हुई है कि पैदा होने वाला बच्चा बेटा है या बेटी। कई बार लोगों के देखने में यह बात आ रही है कि प्रसूति-विज्ञान के जानकार एक बच्चे के जन्मजात दोष का बड़े विश्वासपूर्वक वर्णन करते हैं परन्तु जब बच्चा पैदा होता है तो उस दोष से रहित होता है। इसी प्रकार कई बार बड़े विश्वास के साथ कहा जाता कि लड़की पैदा होगी परन्तु लड़का पैदा हो जाता है। इसी प्रकार लड़के का दावा किया जाता है और लड़की पैदा होती है। यह बात आए दिन देखने में आती है।



سُورَةُ لُقْمَانَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسٌ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعَةٌ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला हूँ ।।।

ये ज्ञानपरक पुस्तक की आयतें हैं ।।।

सत्कर्म करने वालों के लिए हिदायत और करुणा हैं ।।।

वे लोग जो नमाज़ को कायम करते हैं और ज़कात देते हैं और वे परलोक पर भी अवश्य विश्वास रखते हैं ।।।

यही वे लोग हैं जो अपने रब्ब की ओर से हिदायत पर (स्थित) हैं । और यही वे लोग हैं जो सफल होने वाले हैं ।।।

और लोगों में से ऐसे भी हैं जो व्यर्थ बात का सौदा करते हैं ताकि बिना किसी ज्ञान के अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) पथभ्रष्ट कर दें । और उसे हास्यास्पद बना लें । यही वे लोग हैं जिनके लिए अपमानित कर देने वाला अज़ाब (निश्चित) है ।।।

और जब उस पर हमारी आयतों का पाठ किया जाता है तो वह अहंकार करते हुए पीठ फेर लेता है । मानो उसने उन्हें सुना ही न हो । जैसे उसके दोनों कानों में (बहरा कर देने वाला) एक बोझ हो । अतः उसे

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ ②

هُدًى وَرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِينَ ③

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَيُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ ④

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ⑤

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَشْتَرِي لَهْوَ الْحَدِيثِ لِيُضِلَّ عَن سَبِيلِ اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ⑥
وَيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ⑦ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ⑧

وَإِذَا تُلِيٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا وَلِيٰ مُسْتَكْبِرًا ⑨
كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا كَأَن فِيّٰ أُذُنَيْهِ وَقْرًا ⑩

पीड़ाजनक अज़ाब का शुभ-समाचार दे दे । 8।

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए नेमत वाले स्वर्ग हैं । 9।

वे सदा उनमें रहेंगे । (यह) अल्लाह का सच्चा वादा है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 10।

उसने आसमानों को बिना ऐसे स्तम्भों के बनाया जिन्हें तुम देख सको और धरती में पर्वत बनाए ताकि तुम्हें खुराक उपलब्ध करें और उसमें प्रत्येक प्रकार के चलने वाले प्राणी उत्पन्न किए । और आसमान से हमने पानी उतारा और इस (धरती) में प्रत्येक प्रकार के उत्तम जोड़े उगाए । 11।

यह है अल्लाह की सृष्टि । अतः मुझे दिखाओ कि वह है क्या जिसे उसके सिवा दूसरों ने उत्पन्न किया है ? वास्तविकता यह है कि अत्याचार करने वाले खुली-खुली पथभ्रष्टता में हैं । 12।

(रकू 1/10)

और निःसन्देह हमने लुक़मान को तत्त्वज्ञान प्रदान किया था (यह कहते हुए) कि अल्लाह का कृतज्ञता प्रकट कर और जो भी कृतज्ञता प्रकट करे तो वह केवल स्वयं की भलाई के लिए ही कृतज्ञता प्रकट करता है । और जो कृतघ्नता करे तो निःसन्देह अल्लाह निस्पृह है (और) बहुत स्तुति योग्य है । 13।

فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ⑧

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ جَنَّاتُ النَّعِيمِ ⑨

خَالِدِينَ فِيهَا وَعَدَ اللَّهُ حَقًّا وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ⑩

خَلَقَ السَّمَوَاتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَالْأُفُقِ فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيهَا مِنْ كُلِّ دَابَّةٍ ⑪ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ⑫

هَذَا خَلْقُ اللَّهِ فَأَرُونِي مَاذَا خَلَقَ الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ⑬ بَلِ الظَّالِمُونَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ⑭

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنْ اشْكُرْ لِلَّهِ ⑮ وَمَنْ يَشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهِ ⑯ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ⑰

और जब लुक़मान ने अपने पुत्र से कहा, जब वह उसे नसीहत कर रहा था कि हे मेरे प्यारे पुत्र ! अल्लाह के साथ (किसी को) साझीदार न बना । निःसन्देह शिर्क एक बहुत बड़ा अत्याचार है ।।14।

और हमने मनुष्य को उसके माता-पिता के पक्ष में पक्की नसीहत की । उसकी माँ ने उसे कमज़ोरी पर कमज़ोरी (की अवस्था) में उठाए रखा । और उसका दूध छुड़ाना दो वर्षों में (पूर्ण) हुआ । (उसे हमने यह पक्की नसीहत की) कि मेरी कृतज्ञता प्रकट कर और अपने माता-पिता की भी । मेरी ओर ही (तुम्हें) लौट कर आना है ।।15।

और यदि वे दोनों भी तुझ से झगड़ा करें कि तू मेरा साझीदार ठहरा जिसका तुझे कोई ज्ञान नहीं तो उन दोनों की आज्ञा का पालन न कर । और उन दोनों के साथ सांसारिक रीति के अनुसार मेलजोल जारी रख । और उस के मार्ग का अनुसरण कर जो मेरी ओर झुका । फिर मेरी ओर ही तुम्हारा लौट कर आना है । फिर मैं तुम्हें उससे अवगत कराऊँगा जो तुम करते रहे हो ।।16।

हे मेरे प्यारे पुत्र ! निःसन्देह यदि राई के दाने के समान भी कोई वस्तु हो, फिर वह किसी चट्टान में (दबी हुई) हो अथवा आसमानों या धरती में कहीं भी हो, अल्लाह उसे अवश्य ले आएगा ।

وَإِذْ قَالَ نُحْمُسُ لِابْنِهِ وَهُوَ يَعِظُهُ
يُبَيِّنُ لَا تُشْرِكْ بِاللَّهِ إِنَّ الشِّرْكَ
لُظْلُمٌ عَظِيمٌ ۝

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ
وَهُنَّ عَلَى وَهْنٍ وَفِصْلُهُ فِي عَامَيْنِ
أَنِ اشْكُرْ لِي وَلِوَالِدَيْكَ إِلَى الْمَصِيرِ ۝

وَإِنْ جَاهَدَكَ عَلَى أَنْ تُشْرِكَ بِي مَا لَيْسَ
لَكَ بِهِ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبُهُمَا
فِي الدُّنْيَا مَعْرُوفًا ۚ وَاتَّبِعْ سَبِيلَ مَنْ
أَنَابَ إِلَيَّ ۚ ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ
فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

يُبَيِّنُ إِنَّهَا إِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ
مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِي صَخْرَةٍ أَوْ فِي
السَّمُوتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللَّهُ ۚ

निःसन्देह अल्लाह बहुत सूक्ष्मद्रष्टा
(और) ख़बर रखने वाला है ।17।

हे मेरे प्यारे पुत्र ! नमाज़ को कायम कर
और अच्छी बातों का आदेश दे और
अप्रिय बातों से मना कर और उस
(विपत्ति) पर धैर्य धर जो तुझे पहुँचे ।
निःसन्देह यह बहुत महत्वपूर्ण बातों में
से है ।18।

और (अहंकार पूर्वक) लोगों के लिए
अपने गाल न फुला । और धरती में यूँ ही
अकड़ते हुए न फिर । अल्लाह किसी
अहंकारी (और) घमण्ड करने वाले को
पसन्द नहीं करता ।19।

और अपनी चाल को संतुलित कर और
अपनी आवाज़ को धीमा रख ।
निःसन्देह सब से बुरी आवाज़ गधे की
आवाज़ है ।20। (स्कू 2/11)

क्या तुमने ध्यान नहीं दिया कि जो भी
आसमानों और धरती में है (उसे)
अल्लाह ने तुम्हारे लिए सेवा पर लगा
दिया है । और उसने अपनी नेमतें तुम
पर प्रकट रूप में और अप्रकट रूप में भी
पूरी की । और मनुष्यों में से ऐसे भी हैं
जो अल्लाह के विषय में बिना किसी
ज्ञान या हिदायत अथवा उज्ज्वल पुस्तक
के झगड़ते हैं ।21।

और जब उनसे कहा जाता है कि
उसका अनुसरण करो जो अल्लाह ने
उतारा है तो कहते हैं कि इसके बदले
हम तो उसका अनुसरण करेंगे जिस पर

إِنَّ اللَّهَ لَطِيفٌ خَبِيرٌ ۝

يُنَبِّئُ أَقِمِ الصَّلَاةَ وَامْرُءًا مَعْرُوفًا
وَأَنَّهُ عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَصِيرٌ عَلَى مَا
أَصَابَكَ ۖ إِنَّ ذَلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ۝

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ
فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ
كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝

وَاقْصِدْ فِي مَشْيِكَ وَاعْصُصْ
مِنْ صَوْتِكَ ۖ إِنَّ أَنْكَرَ الْأَصْوَاتِ
لَصَوْتُ الْحَمِيرِ ۝

أَلَمْ تَرَوْا أَنَّ اللَّهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي
السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَسْبَغَ عَلَيْكُمْ
نِعَمَهُ ظَاهِرَةً وَبَاطِنَةً ۖ وَمِنَ النَّاسِ
مَنْ يُجَادِلُ فِي اللَّهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَلَا هُدًى
وَلَا كِتَابٍ مُبِينٍ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّبِعُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ قَالُوا بَلْ
نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ آبَاءَنَا ۖ أَوَلَوْ كَانَ

हमने अपने पूर्वजों को पाया । क्या इस पर भी (वे ऐसा करेंगे) यदि शैतान उन्हें भड़कती हुई अग्नि के अज़ाब की ओर बुलाए ? 122।

और जो भी अपना सारा ध्यान अल्लाह की ओर फेर दे और वह उपकार करने वाला हो तो उसने निःसन्देह एक मज़बूत कड़े को पकड़ लिया । और मामले अन्ततः अल्लाह ही की ओर (लौटते) हैं 123।

और जो इनकार करे तो उसका इनकार करना तुझे दुःख में न डाल दे । हमारी ओर ही उनका लौट कर आना है । अतः हम उन्हें बताएँगे कि वे क्या करते रहे हैं। निःसन्देह अल्लाह सीनों की बातों का खूब ज्ञान रखने वाला है 124।

हम उन्हें थोड़ा सा अस्थायी लाभ पहुँचाएँगे । फिर उन्हें एक अत्यन्त कठोर अज़ाब की ओर विवश करके ले जाएँगे 125।

और यदि तू उनसे पूछे कि किसने आसमानों और धरती को पैदा किया है? तो वे अवश्य कहेंगे : अल्लाह ने । तू कह दे कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है । परन्तु उनमें से अधिकतर ज्ञान नहीं रखते 126।

अल्लाह ही का है जो आसमानों में है और धरती में है । निःसन्देह अल्लाह ही निस्पृह (और) प्रशंसा का पात्र है 127।

और धरती में जितने वृक्ष हैं यदि सब लेखनी बन जाएँ और समुद्र (स्याही बन

الشَّيْطَانُ يَدْعُوهُمْ إِلَىٰ عَذَابِ السَّعِيرِ ٢٢

وَمَنْ يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدْ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۖ وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ ٢٣

وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنكَ كُفْرُهُ ۖ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُم بِمَا عَمِلُوا ۗ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ٢٤

نُمَتِّعُهُمْ قَلِيلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ إِلَىٰ عَذَابٍ غَلِيظٍ ٢٥

وَلَيْسَ سَائَتُهُمْ مِّنْ خَلْقِ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ لِيَقُولَنَّ اللَّهُ ۖ قُلِ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ٢٦

لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ٢٧

وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ

जाए और) इसके अतिरिक्त सात समुद्र भी उसकी सहायता करें तब भी अल्लाह के वाक्य समाप्त नहीं होंगे। निःसन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है। 128।

तुम्हारा जन्म और तुम्हारा दोबारा उठाया जाना केवल एक जीव (के जन्म और उठाए जाने) के समान है। निःसन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है। 129।

क्या तूने ध्यान नहीं दिया कि अल्लाह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है और उसने सूर्य और चन्द्रमा को सेवा पर लगा दिया है। हर कोई अपनी निर्धारित अवधि की ओर अग्रसर है। और (याद रखो) कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है। 130।

यह इस कारण है कि निःसन्देह अल्लाह ही है जो सत्य है और जिसे वे उसके सिवा पुकारते हैं वह असत्य है। और अल्लाह ही बहुत ऊँची शान वाला (और) बहुत बड़ा है। 131। (रूकू- $\frac{3}{12}$)

क्या तूने ध्यान नहीं दिया कि समुद्र में नौकाएँ अल्लाह की नेमत के साथ चलती हैं ताकि वह अपने चिह्नों में से तुम्हें कुछ दिखाए। इसमें निःसन्देह प्रत्येक बहुत धैर्यशील (और) बहुत कृतज्ञ के लिए चिह्न हैं। 132।

और जब उन्हें लहर छावों की भाँति ढाँप लेती है, वे (अपनी) आस्था को अल्लाह

أَقْلَامُ وَالْبَحْرِ يَمْدُهُ مِنْ بَعْدِهِمْ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمَتُ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

مَا خَلَقَكُمْ وَلَا يَعْثُبُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَاحِدَةٍ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُولِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى وَأَنَّ اللَّهَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللَّهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِي فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللَّهِ لِيُرِيَكُمْ مِنْ آيَاتِهِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَوَجُّ الْظُلْلِ دَعَا اللَّهَ

के लिए विशुद्ध करते हुए उसे पुकारते हैं। फिर जब वह उन्हें बचाकर स्थल भाग की ओर ले जाता है तो उनमें से कुछ (ऐसे भी होते) हैं जो मध्यमार्ग अपनाने वाले हैं। और हमारी चिह्नों का इनकार केवल वही करता है जो खूब धोखेबाज़ (और) बड़ा कृतघ्न है। 33।*

हे लोगो ! अपने रब्ब का तक्रवा धारण करो और उस दिन से डरो जिस दिन पिता अपने पुत्र के काम नहीं आएगा, न पुत्र अपने पिता के कुछ काम आएगा। निःसन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। अतः तुम्हें सांसारिक जीवन कदापि धोखे में न डाले। और तुम्हें अल्लाह के विषय में धोखेबाज़ (शैतान) कदापि धोखा न दे सके। 34।

निःसन्देह अल्लाह ही है जिसके पास क़यामत का ज्ञान है। और वह बारिश को उतारता है। और जानता है कि गर्भाशयों में क्या है। और कोई जीवधारी नहीं जानता कि वह कल क्या कमाएगा। और कोई जीवधारी नहीं जानता कि किस धरती में वह मरेगा। निःसन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) सदा अवगत रहने वाला है। 35। (रुकू 4/13)

مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّيْنَاهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ وَمَا يَجْحَدُ بِآيَاتِنَا إِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُورٍ ۝

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمُ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَلَا مَوْلُودٌ هُوَ جَازِعٌ عَنْ وَالِدِهِ شَيْئًا إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُم بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۝

إِنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا وَمَا تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝

* इस आयत में मनुष्यस्वभाव का यह महत्वपूर्ण विषय उल्लेख हुआ है कि जब समुद्र के तूफान में फंस जायें तो चाहे नास्तिक हों अथवा अनेकेश्वरवादी, उस समय सब एक अल्लाह (आराध्य) ही को पुकारते हैं। और जब वह उन्हें बचा लेता है तो फिर वे अपनी पहली अवस्था की ओर लौट जाते हैं। ऐसे तूफानों में फंसे हुए जिन लोगों का यहाँ वर्णन है उनमें मध्यमार्ग अपनाने वाले अपवाद हैं। वे स्थल भाग पर पहुँच कर भी अल्लाह को नहीं भुलाते।

32- सूरः अस-सज्दः

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 31 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ पर खण्डाक्षर **अलिफ़-लाम-मीम** (अर्थात् मैं अल्लाह खूब जानने वाला हूँ) पिछली सूरः की अन्तिम आयतों से इस सूरः के सम्बन्ध को स्पष्ट कर रहे हैं । पिछली सूरः की अन्तिम आयतों में यह उल्लेख किया गया था कि बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनका ज्ञान सिवाए अल्लाह के किसी की नहीं और मैं अल्लाह खूब जानने वाला हूँ के दावे में बिल्कुल वही बात दोहराई गई है ।

इसके पश्चात् धरती और आकाश के रहस्यों का एक बार फिर वर्णन किया गया है जिनको अल्लाह तआला के अतिरिक्त कोई नहीं जानता । फिर एक ऐसी आयत है जो आश्चर्यजनक रूप में ब्रह्माण्ड की आयु का राज़ खोल रही है । अल्लाह तआला का कथन है कि अल्लाह का एक दिन तुम्हारी गणनानुसार एक हज़ार वर्ष के समान है । मनुष्य की गणना के अनुसार यदि एक वर्ष के दिनों को एक हज़ार वर्षों से गुणा किया जाए तो जो आंकड़ा बनता है इस पवित्र आयत में उसका वर्णन मौजूद है । एक और आयत (सूरः अल मआरिज आयत : 5) में अल्लाह तआला ने कहा है कि अल्लाह का दिन पचास हज़ार वर्ष के समान है । अतः इस दिन को यदि एक हज़ार वर्ष वाले दिन के साथ गणितीय आधार पर गुणा किया जाए तो लगभग बीस अरब वर्ष बनते हैं । और वैज्ञानिकों के मतानुसार भी इस ब्रह्माण्ड की आयु अठारह से बीस अरब वर्ष तक है । इसी आधार पर अल्लाह तआला ने एक बार फिर घोषणा की है कि अदृश्य और दृश्य विषय का ज्ञान रखने वाला वही अल्लाह है जिसने प्रत्येक वस्तु की सर्वोत्तम ढंग से उत्पत्ति की है । आश्चर्यजनक बात यह है कि यह सारी उत्पत्ति साधारण मिट्टी से की गई । इसके पश्चात् फिर उत्पत्ति के अन्य चरणों का उल्लेख हुआ है जिनमें से भ्रूण को माँ की कोख में गुज़रना पड़ता है ।

इसके पश्चात् फिर दोबारा जी उठने पर लोगों की शंका का उल्लेख करके एक नई बात वर्णन की गई कि प्रत्येक मनुष्य का मलकुल मौत (मृत्यु का फ़रिश्ता) अलग है जो उसके रोगों और सूक्ष्म शारीरिक दोषों का ज्ञान रखते हुए बिल्कुल सही निर्णय करता है कि इसकी जान कब ली जानी चाहिए ? यहाँ फिर पिछली सूरः की अन्तिम आयत वाली विषयवस्तु को ही एक नए रंग में वर्णन कर दिया गया है ।

इस सूरः के अन्तिम रकू में हज़रत मूसा अलै. के प्रसंग के साथ एक बार फिर **अलिफ़-लाम-मीम** वाली विषयवस्तु की पुनरावृत्ति करते हुए यह कहा गया कि उस (अल्लाह) की भेंट के विषय में संदेह में न पड़ । कुछ व्याख्याकारों के अनुसार यहाँ

अल्लाह तआला से भेंट करने का वर्णन नहीं है बल्कि हज़रत मूसा अलै. से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भेंट का वर्णन है । यदि यह अर्थ मान भी लिए जाएँ तो ज़ाहिर है कि यह वह भेंट नहीं जो क़यामत के दिन सब नबियों से होगी बल्कि यहाँ पर विशेष रूप से उस भेंट का वर्णन है जो मे'राज के समय हज़रत मूसा अलै. से हज़रत मुहम्मद सल्ल. की हुई और नमाज़ों के बारे में हज़रत मूसा अलै. ने एक परामर्श दिया जिसका विवरण मे'राज वाली घटना में उल्लेख है ।

इस सूर: की अन्तिम आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शत्रुओं और कष्ट देने वालों से विमुख हो जाने का आदेश दिया गया है ।



سُورَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ إِحْدَى وَثَلَاثُونَ آيَةً وَثَلَاثَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

अनल्लाहु आ'लमु : मैं अल्लाह सबसे अधिक जानने वाला हूँ ।।।

सर्वथा सम्पूर्ण ग्रंथ का उतारा जाना, इसमें कोई संदेह नहीं कि, समस्त लोकों के रब्ब की ओर से है ।।।

क्या वे कहते हैं कि उसने उसे असत्य रूप से गढ़ लिया है ? बल्कि वह तो तेरे रब्ब की ओर से सत्य है । ताकि तू ऐसे लोगों को सतर्क करे जिन की ओर तुझ से पूर्व कोई सतर्ककारी नहीं आया । हो सकता है कि वे हिदायत पाएँ ।।।

अल्लाह वह है जिसने आसमानों और धरती को और जो कुछ उन दोनों के मध्य है छः युगों में पैदा किया । फिर वह अर्श पर आसीन हुआ । उसे छोड़ कर न तुम्हारा कोई मित्र है न कोई सिफारिश करने वाला । फिर क्या तुम सीख नहीं लेते ? ।।।

वह (अपने) निर्णय को योजना के साथ आकाश से धरती की ओर उतारता है । फिर वह एक ऐसे दिन में उसकी ओर उठता है जो तुम्हारी गणना के अनुसार एक हजार वर्ष के समान होता है ।।।

यह वह है जो अदृश्य और दृश्य को जानने वाला है, जो पूर्ण प्रभुत्व

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْمَلِكِ

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنْ رَبِّ الْعَالَمِينَ ②

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ لَتُنذِرَنَّهُمْ مَّا آتَاهُمْ مِنْ نَذِيرٍ مِنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ③

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ ④ مَا لَكُمْ مِنْ دُونِهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا شَفِيعٍ ⑤ أَفَلَا تَتَذَكَّرُونَ ⑥

يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ أَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ ⑦

ذَلِكَ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ

वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 17।

वही जिसने प्रत्येक वस्तु को जिसे उसने पैदा किया, बहुत अच्छा बनाया और उसने मनुष्य की उत्पत्ति का आरम्भ गीली मिट्टी से किया 18।

फिर उसने उसकी नस्ल को एक तुच्छ जल के निचोड़ से तैयार किया 19।

फिर उसने उसे ठीक-ठाक किया और उसमें अपनी रूह फूँकी और तुम्हारे लिए उसने कान और आँखें और दिल बनाए । बहुत थोड़ा है जो तुम कृतज्ञता प्रकट करते हो 110।

और वे कहते हैं कि क्या जब हम धरती में लुप्त हो जाएँगे तो क्या फिर भी हम अवश्य एक नई उत्पत्ति में (डाले) जाएँगे । वास्तविकता यह है कि वे तो अपने रब्ब की भेंट से ही इनकार करने वाले हैं 111।

तू कह दे कि मृत्यु का वह फ़रिश्ता जो तुम पर नियुक्त किया गया है तुम्हें मृत्यु देगा । फिर तुम अपने रब्ब की ओर लौटाए जाओगे 112। (रुकू 1/4)

और यदि तू देख ले जब अपराधी अपने रब्ब के समक्ष अपने शीश झुकाए हुए होंगे (और कहेंगे) हे हमारे रब्ब ! हमने देखा और सुन लिया । अतः हमें लौटा दे ताकि हम नेक कर्म करें । हम अवश्य विश्वास करने वाले (सिद्ध) होंगे 113।

और यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को उसके (उपयुक्त) हिदायत प्रदान

الرَّحِيمُ ٧

الَّذِي أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهُ وَبَدَأَ خَلْقَ
الْإِنْسَانِ مِنْ طِينٍ ٨

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهُ مِنْ سُلَالَةٍ مِّنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ٩
ثُمَّ سَوَّاهُ وَنَفَخَ فِيهِ مِنْ رُّوحِهِ وَجَعَلَ
لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ قَلِيلًا
مَّا تَشْكُرُونَ ١٠

وَقَالُوا إِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِي
خَلْقٍ جَدِيدٍ ١١ بَلْ هُمْ بِلِقَائِ رَبِّهِمْ
كَفِرُونَ ١٢

قُلْ يَتَوَفَّكُم مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِي وُكِّلَ
بِكُمْ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ١٣

وَلَوْ تَرَىٰ إِذِ الْمُجْرِمُونَ نَاكِسُوا
رُءُوسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ رَبَّنَا أَبْصَرْنَا
وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا
مُقْتَنُونَ ١٤

وَلَوْ شِئْنَا لَآتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدًى وَلَكِنْ

कर देते परन्तु मेरी ओर से आदेश लागू हो चुका है कि मैं नरक को अवश्य सब जिनों और मनुष्यों से भर दूँगा ॥14॥

अतः (अज़ाब) को इस कारण चखो कि तुम अपने आज के दिन की भेंट को भुला बैठे थे । निःसन्देह हमने (भी) तुम्हें भुला दिया है । इसके अतिरिक्त जो तुम किया करते थे उसके कारण स्थायी अज़ाब को चखो ॥15॥

निःसन्देह हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं जिनको जब उन (आयतों) के द्वारा उपदेश दिया जाता है तो वे सज्दः करते हुए गिर जाते हैं । और अपने रब्ब की स्तुति के साथ (उसका) गुणगान करते हैं और वे अहंकार नहीं करते ॥16॥

उनके पहलू बिस्तरों से अलग हो जाते हैं (जबकि) वे अपने रब्ब को भय और लालसा की अवस्था में पुकार रहे होते हैं। और जो कुछ हमने उनको प्रदान किया वे उसमें से खर्च करते हैं ॥17॥

अतः कोई जीवधारी नहीं जानता कि जो कुछ वे किया करते थे, उसके प्रतिफल के रूप में उनके लिए आँखों की ठंडक स्वरूप क्या कुछ छिपा कर रखा गया है ॥18॥

अतः क्या जो मोमिन हो उस जैसा हो सकता है जो दुराचारी हो ? वे कभी एक समान नहीं हो सकते ॥19॥

जहाँ तक उनका सम्बन्ध है, जो ईमान लाए और नेक कर्म किए तो जो वे किया

حَقُّ الْقَوْلِ مِنِّي لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ
وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝۱۴

فَذُوقُوا بِمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَذَا
إِنَّا نَسِينَاكُمْ وَذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا
كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝۱۵

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِآيَاتِنَا الَّذِينَ إِذَا ذُكِّرُوا بِهَا
خَرُّوا سُجَّدًا وَسَبَّحُوا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ
لَا يَسْتَكْبِرُونَ ۝۱۶

تَتَجَافَى جُنُوبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُونَ
رَبَّهُمْ خَوْفًا وَطَمَعًا ۝ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ
يُنْفِقُونَ ۝۱۷

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم مِّنْ
قُرَّةِ أَعْيُنٍ ۚ جَزَاءُِ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝۱۸

أَفَمَن كَانَ مُؤْمِنًا كَمَن كَانَ فَاسِقًا
لَّا يَسْتَوُونَ ۝۱۹

أَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

करते थे उसके कारण उनके लिए (उनकी शान के अनुरूप) आतिथ्य स्वरूप ठहरने के उद्यान होंगे। 120।

और जहाँ तक उन लोगों का सम्बन्ध है जिन्होंने अवज्ञा की तो उनका ठिकाना आग है। जब कभी वे इरादा करेंगे कि उससे निकल जाएँ तो उसी में लौटा दिए जाएँगे। और उनसे कहा जाएगा कि उस अग्नि के अज़ाब को चखो जिसे तुम झुठलाया करते थे। 121।

और हम निःसन्देह उन्हें बड़े अज़ाब से पहले छोटे अज़ाब में से कुछ चखाएँगे ताकि हो सके तो वे (हिदायत की ओर) लौट आएँ। 122।

और उससे बड़ा अत्याचारी कौन हो सकता है जो अपने रब्ब की आयतों के द्वारा अच्छी प्रकार से उपदेशित किया जाए, फिर भी (वह) उनसे मुख मोड़ ले? निःसन्देह हम अपराधियों से प्रतिशोध लेने वाले हैं। 123। (रुकू 2/15)

और निःसन्देह हमने मूसा को भी पुस्तक प्रदान की। अतः तू उस (अर्थात् अल्लाह) की भेंट के विषय में शंका में न रह। और उसको हमने बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया था। 124।*

فَلَهُمْ جَنَّاتُ الْمَأْوَىٰ نُزُلًا بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٠﴾

وَأَمَّا الَّذِينَ فَسَقُوا فَمَأْوَاهُمُ النَّارُ ۖ كُلَّمَا أَرَادُوا أَنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا أُعِيدُوا فِيهَا وَقِيلَ لَهُمْ ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿١٢١﴾

وَلَنَذِيْقَنَّاهُمْ مِنَ الْعَذَابِ الْأَدْنَىٰ دُونَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿١٢٢﴾

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ۚ إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ ﴿١٢٣﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَلَا تَكُنْ فِي مِرْيَةٍ مِنْ لِقَائِهِ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ﴿١٢٤﴾

* इस आयत का एक अर्थ यह बनता है कि हज़रत मूसा अलै. के साथ भेंट करने के विषय में शंका में न रह। सम्भवतः इसमें मे'राज की उस घटना की ओर संकेत है जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत मूसा अलै. से मिले और फिर बार-बार मिलने का अवसर मिला। यहाँ हज़रत मूसा अलै. के प्रसंग में अल्लाह से मिलने का उल्लेख इस लिए किया गया है कि जैसे हज़रत मूसा अलै. को तूर पर्वत पर अल्लाह तआला से भेंट करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उससे कई गुना अधिक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला का दर्शन प्राप्त हुआ।

अतः जब उन्होंने धैर्य से काम लिया तो उनमें से हमने ऐसे इमाम बनाए जो हमारे आदेश से हिदायत देते थे । और वे हमारे चिह्नों पर विश्वास रखते थे । 125।

निःसन्देह तेरा रब्ब ही क़यामत के दिन उनके मध्य उन बातों का फ़ैसला करेगा जिनमें वे मतभेद किया करते थे । 126।

अतः क्या इस बात ने उन्हें हिदायत नहीं दी कि हमने उनसे पहले कितनी ही जातियाँ तबाह कर दीं जिनके (छोड़े हुए) घरों में वे चलते फिरते हैं । निःसन्देह इसमें बहुत से चिह्न हैं । फिर क्या वे सुनते नहीं ? । 127।

क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम बंजर धरती की ओर पानी को बहाए लिए आते हैं । फिर उस (पानी) के द्वारा हरियाली उत्पन्न करते हैं जिससे उनके पशु भी और वे स्वयं भी खाते हैं । फिर क्या वे देखते नहीं ? । 128।

और वे पूछते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह विजय कब मिलेगी ? । 129।

तू कह दे कि जिन लोगों ने इनकार किया विजय के दिन उनका इमान लाना उनको कोई लाभ न देगा और न वे छूट दिए जाएंगे । 130।

अतः उनसे मुँह मोड़ ले और (अल्लाह के निर्णय की) प्रतीक्षा कर । निःसन्देह वे भी किसी प्रतीक्षा में बैठे हैं । 131।

(रकू 3/16)

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ آيَمَةً يَهْدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا ۖ وَكَانُوا بِالْبَيِّنَاتِ يُوقِنُونَ ﴿٢٥﴾

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُم يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٢٦﴾

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْقُرُونِ يَمْشُونَ فِي مَسْجِنِهِمْ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ ۖ أَفَلَا يَسْمَعُونَ ﴿٢٧﴾

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوقُ الْمَاءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهِ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ۖ أَفَلَا يُبْصِرُونَ ﴿٢٨﴾

وَيَقُولُونَ مَتَى هَذَا الْفَتْحُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٢٩﴾

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِينَ كَفَرُوا إِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٣٠﴾

فَاعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرِ إِلَهُم مُّنتَظَرُونَ ﴿٣١﴾

3/16

33- सूर: अल-अहज़ाब

यह सूर: मदीना में अवतरित हुई है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 74 आयतें हैं ।

पिछली सूर: की अन्तिम आयत की विषयवस्तु को इस सूर: के आरम्भ में ही प्रस्तुत किया गया है अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आदेश दिया गया है कि काफ़िर और मुनाफ़िक़ तुझे अपनने धर्म से हटाने की चेष्टा करेंगे । तू उनसे मुँह मोड़ ले और उन की बात न मान तथा जो कुछ तेरी ओर वहड़ की जाती है उसका अनुसरण कर ।

आयत संख्या 5 में यह स्थायी सिद्धान्त वर्णन कर दिया गया कि मनुष्य एक ही समय में दो भिन्न-भिन्न सत्ता के साथ एक जैसा प्रेम नहीं कर सकता । इस में इस ओर संकेत है कि हे नबी ! तेरे दिल में अल्लाह तआला का प्रेम ही अधिक बसा है और दुनिया में जिन से तू प्रेम करता है वह केवल अल्लाह के प्रेम के कारण ही करता है । अतएव वह हदीस इस विषयवस्तु को स्पष्ट कर रही है जिस में कहा गया है कि यदि तू अल्लाह के प्रेम के कारण अपनी पत्नी के मुँह में एक निवाला भी डाले तो यह भी अल्लाह की उपासना होगी ।

इसके बाद अरब वासियों की उस कु-रीति का उल्लेख है जो अपने मुँह से अपनी पत्नियों को माँ कह दिया करते थे । इस कु-रीति का उच्छेद करते हुए ध्यान दिलाया गया है कि माँ और बेटे का सम्बन्ध तो अल्लाह के बनाये विधान के अनुसार ही होता है, तुम अपने मुँह से इस सम्बन्ध को कैसे बदल सकते हो । इसी प्रकार यदि किसी को बेटा कह कर पुकारा जाए तो वह बेटा नहीं बन सकता । बेटा वही है जो खूनी रिश्ते में बेटा हो । बेटा कह कर पुकारना प्यार को प्रकट करना मात्र है इससे अधिक कुछ नहीं ।

फिर इसी विषयवस्तु की पुनरावृत्ति करते हुए कहा कि दिलों में एक ही **औला** अर्थात् सर्वाधिक प्रेमपात्र होता है । जहाँ तक मोमिनों का सम्बन्ध है तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे **औला** होने चाहिएँ । इसके बाद क्रमशः अन्य निकट सम्बन्धियों का वर्णन है कि तुमसे निकटता की दृष्टि से वे एक दूसरे से ऊपर हैं ।

इसी सूर: में आयत **खातमुन्नबिय्यीन** भी है । तत्त्वज्ञान से वञ्चित कुछ विद्वान इस का यह अर्थ करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन अर्थों में अन्तिम नबी हैं कि आप सल्ल. के बाद कभी किसी प्रकार का कोई नबी नहीं आएगा । यहाँ इस गलत विचारधारा का खण्डन किया गया और उस **प्रतिज्ञा** का उल्लेख किया गया जो प्रत्येक नबी से ली जाती रही है कि यदि तुम्हारे बाद कोई ऐसा नबी आये जो तुम्हारी बातों की पुष्टि करता हो तो तुम्हारी उम्मत का दायित्व है कि वह उस नबी का

इनकार करने की बजाय उसका समर्थन करने वाली सिद्ध हो । इस सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्ल. के बारे में कहा गया **व मिन् क** अर्थात् हम ने तुझ से भी यह प्रतिज्ञा ली है । अतः यदि कोई इस शर्त के साथ नुबुव्वत का दावा करने वाला हो जो शत प्रतिशत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आज्ञाकारी हो तथा मुहम्मदी अनुकम्पा के द्वारा ही नुबुव्वत का पुरस्कार उसने पाया हो और वह आप सल्ल. की शिक्षा को ही बिना किसी परिवर्तन के पेश करने वाला हो एवं उसी के लिए जिहाद कर रहा हो, तो फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के लिए न केवल उसका विरोध करना हराम है अपितु उसकी सहायता करना अनिवार्य है ।

इसके बाद अहज़ाब (अर्थात् समूह) के मौलिक अर्थ को ध्यान में रखते हुए इस प्रकरण में खंदक के युद्ध का उल्लेख किया गया है, जिस में सारे अरब के समूह मदीना पर आक्रमण करने के लिए उमड़ पड़े थे और देखने में उनसे बचाव का कोई उपाय दिख नहीं रहा था । उस समय अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए यह चमत्कार दिखाया कि एक भयानक आँधी के द्वारा आप सल्ल. की सहायता की, जिस ने काफ़िरों की आँखों को अंधा कर दिया और वे अफरा-तफरी में भाग खड़े हुए और बहुत सी सवारी के जानवर जो बंधे हुए थे उनको खोलने तक का उन्हें समय नहीं मिला । अतः अपनी सवारी के जानवरों सहित वे अनेक साज़ो-सामान पीछे छोड़ गये, और वह खुराक की भारी कमी जिस से मुसलमान दो चार थे इस घटना के कारण वह दूर हो गई ।

इस घटना से पूर्व मदीना वासियों की जो अवस्था थी उसका भी वर्णन किया गया है कि इतनी भयानक मुसीबत और तबाही उन्हें दिखाई दे रही थी कि भय के कारण उन की आँखें पथरा गई थीं और मुनाफ़िक़ मदीना के मुसलमानों से कह रहे थे कि अब तुम्हारे लिए कोई आश्रयस्थल नहीं रहा । उस समय मोमिनो ने उन्हें यह उत्तर दिया कि हमारा ईमान तो पहले से भी अधिक मज़बूत हो गया है, क्योंकि अरब समूहों के इस भयानक आक्रमण की तो हमें इससे पहले ही सूचना दे दी गई थी । उनका इशारा सूरः अल्-क्रमर की ओर था जिसमें यह आयत आती है कि **इस विशाल जन-समूह को अवश्य पराजित किया जाएगा और वे पीठ फेर जाएँगे** (आयत सं. 46) । अतएव इस युद्ध में मोमिनो ने अपने वचन को पूरा कर दिखाया । उनमें कुछ ऐसे लोग भी थे जो उस समय साथ शामिल नहीं थे परन्तु प्रतीक्षा कर रहे थे कि काश उनको भी अहज़ाब युद्ध में शामिल होने वाले हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा की भाँति दृढ़ता दिखाने और कुर्बानियाँ करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता ।

इस सूरः की आयत संख्या 38 में अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम को अपने मुँह बोले बेटे की तलाक़शुदा पत्नी के साथ निकाह करने का आदेश दिया है। यह आदेश हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर बहुत नागवार गुज़र रहा था और इस पर मुनाफ़िक़ लोग आपत्ति कर सकते थे, उसका भी कुछ भय था। इसलिए इस शादी के लिए आप सल्ल. बड़े असमंजस में पड़ गये थे। परन्तु अल्लाह के आदेश का पालन करना बहरहाल आवश्यक था।

इस के बाद एक ऐसी आयत (संख्या 41) है जिसे इस सूरः का उत्कर्ष कहना चाहिए और इसका संबंध हज़रत ज़ैद रज़ि. की घटना से भी है। यह सार्वजनिक घोषणा की गई कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वास्तव में न तो ज़ैद रज़ि. के पिता थे और न तुम जैसे लोगों के पिता हैं बल्कि वे तो **खातमुन्नबियीन** (नबियों के मुहर) हैं। अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबियों का आध्यात्मिक पितृत्व पद प्रदान किया गया। विषयवस्तु की वर्णन शैली से तो यही अर्थ निकलता है। परन्तु **खातमुन्नबियीन** के और बहुत से अर्थ हैं जो सबके सब इस कुरआनी आयत के अभिप्रेत हैं और प्रत्येक अर्थ की दृष्टि से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम **खातमुन्नबियीन** सिद्ध होते हैं। उदाहरण स्वरूप **खातम** शब्द का एक अर्थ **मुसद्दिक़** (सत्यापक) भी है। समस्त धर्म-विधानों में से केवल एक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का धर्म-विधान (शरीअत) ही है जिसमें पिछले प्रत्येक युग के नबियों का सत्यापन किया गया है। दुनिया की कोई धार्मिक पुस्तक इस शान की आयत प्रस्तुत नहीं कर सकती।

इसके बाद की आयत हज़रत ज़करिया अलै. की उस दुआ की याद दिलाती है जिस में उन्हें पुत्र-प्राप्ति की खुशख़बरी देने के बाद अल्लाह तआला ने उन पर वहइ की कि सुबह और शाम अल्लाह तआला का गुणगान करो।

इसके बाद आयत संख्या 46-47 में हज़रत मुहम्मद सल्ल. के **शाहिद**, **मुबशिशर** और **नज़ीर** (गवाह, शुभसमाचार दाता और सतर्ककारी) होने का उल्लेख कर दिया गया। आप सल्ल. अपने से पूर्व महान नबी मूसा अलै. की सच्चाई के गवाह थे और अपने बाद आने वाले अपने दास (इमाम महदी) की सच्चाई के भी गवाह थे। आप सल्ल. की शान की उपमा सूर्य से दी गई है जो समग्र जगत को प्रकाशित करता है तथा चन्द्रमा भी उसी से प्रकाश पाता है। अतः यह नियत है कि जब रात का अंधकार छा चुका हो तब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रकाश ही को कोई चन्द्रमा फिर मानव समाज तक पहुँचाए। अतः इस में यह भविष्यवाणी है कि भविष्य के अंधकार पूर्ण युगों में ऐसा अवश्य होगा।

इसके बाद मोमिनों को तक्रवा के नियम सिखाए गये हैं और हज़रत मुहम्मद

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जो उच्च महिमा वर्णन की गई थी, उस को दृष्टि में रखते हुए उन पर अनिवार्य कर दिया गया है कि वे अत्यन्त शिष्टाचार पूर्वक काम लें। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कई अवसर पर अपने प्रियजनों और सहाबियों को अपने घर में भोजन करने का निमंत्रण देते थे। इन आयतों में सहाबियों को नसीहत की गई है कि जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा निमंत्रण दें तो उसे साधारण निमंत्रण विचार करके समय से पूर्व उन के घर पहुँच कर भोजन पकने की प्रतीक्षा में न बैठो। बल्कि जब भोजन तैयार हो और तुम्हें बुलाया जाए तभी जाया करो और भोजन के पश्चात अनुमति प्राप्त करके वापस अपने घरों को जाओ। यदि भोजन के बीच तुम्हें किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो पर्दे के पीछे से **उम्महातुल मुमेनीन** (अर्थात् मोमिनों की माताओं, हज़रत मुहम्मद सल्ल. की पत्नियों) को सूचित करो। यहाँ पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पत्नियों को अन्य मुसलमान स्त्रियों की तुलना में पवित्रता अपनाने की अधिक ताक़ीद की गई है। क्योंकि उनकी मर्यादानुकूल यह आवश्यक है कि उनके कारण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मामूली सी आरोप की बात भी न सुननी पड़े।

जिस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुनाफ़िक़ लोग मिथ्यारोप के द्वारा कष्ट पहुँचाते थे उसी प्रकार हज़रत मूसा अलै. को भी मिथ्यारोप के द्वारा कष्ट पहुँचाया गया था। इस सूरः के अन्त पर इस बात को दोहराया गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. को उन से पूर्व के प्रतापी नबी हज़रत मूसा अलै. से अधिकतापूर्वक समानताएँ हैं। जिस प्रकार मूसा अलै. को बताया गया था कि अल्लाह के निकट वे सम्मानित चहेते हैं इसी प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तसल्ली दी गई कि इन मिथ्यारोपों के कारण तुझे कोई हानि नहीं होगी। क्योंकि तू अल्लाह तआला के निकट इहलोक और परलोक में चहेता है।

इस सूरः की अन्तिम दो आयतों में एक बार फिर हज़रत मूसा अलै. की ओर इशारा करते हुए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कहा गया कि अमानत (अर्थात् पवित्र कुरआन) का जो बोझ तुझ पर डाला गया वह मूसा अलै. पर डाले जाने वाले अमानत के बोझ से बहुत भारी है। पहाड़ भी इसके प्रताप से टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं, परन्तु तू इस अमानत के बोझ को उठाने के लिए आगे बढ़ा, जिसके फलस्वरूप तुझे अपने आप पर अत्यधिक अत्याचार करना पड़ा। परन्तु तूने इसके परिणाम की कोई परवाह नहीं की।

سُورَةُ الْأَحْزَابِ مَدْيَنَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ أَرْبَعٌ وَسَعُونَ آيَةً وَتِسْعَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 11।

हे नबी ! अल्लाह का तक्वा धारण कर और काफ़िरो और मुनाफ़िकों की बात न मान । निःसन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है 12।

और उसका अनुसरण कर जो तेरी ओर तेरे रब्ब की ओर से वहइ किया जाता है। जो तुम करते हो निःसन्देह अल्लाह उसको भली-भाँति जानता है 13।

और अल्लाह पर भरोसा कर और अल्लाह ही कार्यसाधक के रूप में पर्याप्त है 14।

अल्लाह ने किसी मनुष्य के सीने में दो दिल नहीं बनाए । इसी प्रकार उसने तुम्हारी उन पत्नियों को जिन्हें तुम माँ कह कर अपने ऊपर हराम कर लेते हो तुम्हारी माँ नहीं बनाया । न ही तुम्हारे मुँह बोले (पुत्रों) को तुम्हारे पुत्र बनाया है। यह केवल तुम्हारे मुँह की बातें हैं । और अल्लाह सच्ची (बात) वर्णन करता है और वही है जो (सीधे) मार्ग की ओर हिदायत देता है 15।

उनको उनके पिताओं के नाम के साथ पुकारा करो, यह अल्लाह के निकट अधिक न्यायपूर्ण है । और यदि तुम उनके

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللَّهَ وَلَا تُطِعِ الْكَافِرِينَ
وَالْمُنَافِقِينَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ②

وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ ③ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ④

وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ⑤ وَكَفَىٰ بِاللَّهِ وَكِيلًا ⑥

مَا جَعَلَ اللَّهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهِ ⑦
وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمْ الَّتِي تُظَاهَرُونَ
مِنْهُنَّ أُمَّهَاتِكُمْ ⑧ وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَاءَكُمْ
أَبْنَاءَكُمْ ⑨ ذِكُّكُمْ قَوْلُكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ ⑩
وَاللَّهُ يَقُولُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ ⑪

أَدْعُوهُمْ لِأَبَائِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ ⑫
فَإِنْ لَّمْ تَعْلَمُوا آبَاءَهُمْ فَاخْوَانُكُمْ فِي

पिताओं को न जानते हो तो फिर वे धार्मिक मामलों में तुम्हारे भाई और तुम्हारे मित्र हैं। और इस विषय में जो तुम ग़लती कर चुके हो उसका तुम पर कोई पाप नहीं। हाँ जो तुम्हारे दिलों ने जान-बूझ कर कमाया वह (पाप) है। और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 16। नबी मोमिनों पर उनकी अपनी जानों से भी अधिक हक़ रखता है और उसकी पत्नियाँ उनकी माताएँ हैं। और जहाँ तक रक्त संबंधियों की बात है तो अल्लाह की पुस्तक में (उल्लेखित आदेशानुसार) उनमें से कुछ दूसरे मोमिनों और मुहाजिरों की अपेक्षा एक-दूसरे से अधिक प्राथमिकता रखते हैं। सिवाए इसके कि तुम अपने मित्रों से (उपकार स्वरूप) कोई अच्छा बर्ताव करो। यह सब बातें पुस्तक में लिखी हुई मौजूद हैं। 17।

और जब हमने नबियों से उनकी प्रतिज्ञा और तुझ से भी और नूह से और इब्राहीम और मूसा और मरियम के पुत्र ईसा से। और हमने उनसे बहुत दृढ़ प्रतिज्ञा ली थी। 18।

ताकि वह सच्चों से उनकी सच्चाई के संबंध में प्रश्न करे। और काफ़िरों के लिए उसने पीड़ाजनक अज़ाब तैयार किया है। 19। (स्कू $\frac{1}{17}$)

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो, जब

الدِّينِ وَمَوَالِيكُمْ ۖ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ
فِيمَا أَخْطَأْتُم بِهِ ۚ وَلَكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ
قُلُوبُكُمْ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

النَّبِيِّ أَوْلَىٰ بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ
وَأَزْوَاجُهُ أُمَّهَاتُهُمْ ۚ وَأُولُوا الْأَرْحَامِ
بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ فِي كِتَابِ اللَّهِ مِنَ
الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُهَاجِرِينَ إِلَّا أَنْ تَفْعَلُوا
إِلَىٰ أَوْلِيَّائِكُمْ مَعْرُوفًا ۚ كَانَ ذَلِكَ
فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۝

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ وَمِنْكَ
وَمِنْ نُوحٍ وَإِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰ
ابْنِ مَرْيَمَ ۚ وَأَخَذْنَا مِنْهُم مِّيثَاقًا غَلِيظًا ۝
لَيَسْئَلَنَّ الصّٰدِقِينَ عَنْ صَدَقِهِمْ ۚ وَاعْدِّ
لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ

तुम्हारे पास सेनाएँ आई थीं तो हमने उनके विरुद्ध एक हवा भेजी और ऐसी सेनाएँ भेजीं जिनको तुम देख नहीं रहे थे। और जो तुम करते हो निःसन्देह अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है 110।

जब वे तुम्हारे पास तुम्हारे ऊपर की ओर से भी और तुम्हारे नीचे की ओर से भी चढ़ आए और जब आँखें पथरा गई और दिल (उछलते हुए) हंसलियों तक जा पहुँचे और तुम लोग अल्लाह पर भाँति-भाँति की धारणा कर रहे थे 111।

वहाँ मोमिन परीक्षा में डाले गए और कठिन (परीक्षा के) झटके दिए गए 112।

और जब मुनाफ़िकों ने और उन लोगों ने जिन के दिलों में रोग था, कहा कि अल्लाह और उसके रसूल ने हम से धोखे के अतिरिक्त कोई वादा नहीं किया 113।

और जब उनमें से एक गिरोह ने कहा, हे यस्त्रिब (मदीना) वासियो ! तुम्हारे टिके रहने का कोई अवसर नहीं रहा अतः वापस चले जाओ । और उनमें से एक समूह ने नबी से यह कहते हुए आज्ञा माँगनी शुरू की कि निःसन्देह हमारे घर असुरक्षित हैं । हालांकि वे असुरक्षित नहीं थे । वे केवल भागने का इरादा किए हुए थे 114।*

عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَكَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ⑩

إِذْ جَاءَ وَكُفُّوا مِنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّونَ بِاللَّهِ الظُّنُونًا ⑪

هَٰذَاكَ ابْتَلَى الْمُؤْمِنُونَ وَزَلْزَلُوا زَلْزَالًا شَدِيدًا ⑫

وَإِذْ يَقُولُ الْمُنَافِقُونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ إِلَّا غُرُورًا ⑬

وَإِذْ قَالَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ يَا أَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوا وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيقٌ مِنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُولُونَ إِنَّ بُيُوتَنَا عَوْرَةٌ ⑭ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ إِنَّ يُرِيدُونَ إِلَّا فِرَارًا ⑮

* अरबी शब्द और: का अर्थ जानने के लिए देखें अरबी शब्दकोश अल-मुफरदात लि गरीबिल कुरआन ।

और यदि उन पर उस (बस्ती) की प्रत्येक ओर से चढ़ाई कर दी जाती, फिर उनसे उपद्रव करने को कहा जाता तो वे अवश्य उसे करते । और उस पर मामूली समय के अतिरिक्त अधिक विलम्ब न करते । 115।

हालाँकि इससे पूर्व निःसन्देह वे अल्लाह से प्रतिज्ञा कर चुके थे कि वे पीठें नहीं दिखाएंगे । और अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा अवश्य पूछी जाएगी । 116।

तू कह दे कि यदि तुम मृत्यु से अथवा वध किये जाने से भागोगे तो भागना तुम्हें कदापि लाभ नहीं देगा । और इस दशा में तुम्हें अल्पमात्र के अतिरिक्त कुछ भी लाभ नहीं मिलेगा । 117।

तू पूछ कि कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है यदि वह तुम्हें कोई कष्ट पहुँचाने का इरादा करे या तुम्हारे हक में दया का फैसला करे ? और वे अपने लिए अल्लाह के अतिरिक्त न कोई संरक्षक पाएँगे और न कोई सहायक । 118।

अल्लाह तुम में से उनको भली-भाँति जानता है जो (जिहाद से) रोकने वाले हैं । और अपने भाइयों को कहते हैं कि हमारी ओर आ जाओ । और वे लड़ाई के लिए बहुत कम आते हैं । 119।

तुम्हारे विरुद्ध बहुत कंजूसी से काम लेते हैं । अतः जब कोई भय (का अवसर) आता है तू उन्हें देखेगा कि वे

وَلَوْ دَخَلَتْ عَلَيْهِمْ مِنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ
سُيِّلُوا الْفِتْنَةَ لَا تَوَّهَا وَمَا تَلَبَّثُوا بِهَا
إِلَّا يَسِيرًا ۝

وَلَقَدْ كَانُوا عَاهِدُوا اللَّهَ مِنْ قَبْلُ
لَا يُؤْتُونَ الْأَدْبَارَ ۖ وَكَانَ عَهْدُ اللَّهِ
مَسْئُولًا ۝

قُلْ لَنْ يَنْفَعَكُمْ الْفِرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ
مِنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذَا لَا تَمْتَعُونَ
إِلَّا قَلِيلًا ۝

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِي يَعْصِمُكُمْ مِنَ اللَّهِ
إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ۖ
وَلَا يَجِدُونَ لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلِيًّا
وَلَا نَصِيرًا ۝

قَدْ يَعْلَمُ اللَّهُ الْمُعَوِّقِينَ مِنْكُمْ وَالْقَائِلِينَ
لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ۚ وَلَا يَأْتُونَ
الْبَاسَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَإِذَا جَاءَ الْخَوْفُ
رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ تَدُورُ أَعْيُنُهُمْ

तेरी ओर इस प्रकार देखते हैं कि उनकी आँखें उस व्यक्ति की भाँति (भय से) घूम रही होती हैं जिस पर मृत्यु की बेहोशी छा गई हो। अतः जब भय जाता रहता है तो भलाई के बारे में कंजूसी करते हुए वे (अपनी) तेज़ ज़बानों से तुम्हें दुःख पहुँचाते हैं। ये वे लोग हैं जो (वास्तव में) ईमान नहीं लाए। अतः अल्लाह ने उनके कर्म नष्ट कर दिए और यह बात अल्लाह के लिए बहुत सरल है। 120।

वे धारणा करते हैं कि सेनाएँ अभी तक नहीं गईं। और यदि सेनाएँ (वापस) आजाएँ तो वे (पछतावा करते हुए) चाहेंगे कि काश वे वीरान स्थलों में बददुओं के बीच रहते होते (और) तुम्हारे बारे में जानकारी प्राप्त कर रहे होते। और यदि वे तुम्हारे बीच होते भी तो बहुत कम ही युद्ध करते। 121। (सू. 2/18)

निःसन्देह तुम में से प्रत्येक व्यक्ति जो अल्लाह और परलोक के दिन की आशा रखता है और अल्लाह को बहुत याद करता है, उस के लिए अल्लाह के रसूल में उत्तम आदर्श है। 122।

और जब मोमिनों ने सेनाओं को देखा तो उन्होंने कहा, यही तो है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था। और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा था और इस (घटना) ने उनको ईमान और आज्ञापालन में ही आगे बढ़ाया। 123।

كَالَّذِي يُعْشَىٰ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۖ فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوكُمْ بِالنِّسَةِ حِدَادٍ ۖ أَشْحَةً عَلَى الْخَيْرِ ۖ أُولَٰئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوا ۖ فَأَخْطَأَ اللَّهُ أَعْمَالَهُمْ ۖ وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا ۝

يَحْسَبُونَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوا ۖ وَإِنِّيَأْتِ الْأَحْزَابُ يَوْدُوْا لَوْ أَنَّهُمْ بَادُوا فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُونَ عَنْ أَنْبَائِكُمْ ۖ وَلَوْ كَانُوا فِيكُمْ مَا قَتَلُوا إِلَّا قَلِيلًا ۝

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللَّهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَن كَانَ يَرْجُوا اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ وَذَكَرَ اللَّهَ كَثِيرًا ۝

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُونَ الْأَحْزَابَ قَالُوا هَٰذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَصَدَقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۖ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا ۝

मोमिनों में ऐसे पुरुष हैं जिन्होंने जिस बात पर अल्लाह से प्रण किया था उसे सच्चा कर दिखाया। अतः उनमें से वह भी है जिसने अपनी मन्नत को पुरा कर दिया। और उनमें से वह भी है जो अभी प्रतीक्षा कर रहा है। और उन्होंने कदापि (अपने आचरण में) कोई परिवर्तन नहीं किया। 124।

(यह इस कारण है) ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का प्रतिफल दे और मुनाफ़ि़कों को यदि चाहे तो अज़ाब दे अथवा प्रायश्चित्त को स्वीकार करते हुए उन पर झुके। निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 125।

और जिन्होंने इनकार किया अल्लाह ने उन लोगों को उनके क्रोध सहित इस प्रकार लौटा दिया कि वे कोई भलाई प्राप्त न कर सके। और युद्ध में अल्लाह मोमिनों के पक्ष में पर्याप्त हो गया। और अल्लाह बहुत शक्तिशाली और पूर्ण प्रभुत्व वाला है। 126।

और अहले किताब में से जिन्होंने उनकी सहायता की थी उसने उन लोगों को उनके दुर्गों से नीचे उतार दिया और उनके दिलों में रोब डाल दिया। उनमें से एक गिरोह की तुम हत्या कर रहे थे और एक गिरोह को बन्दी बना रहे थे। 127।*

مِنَ الْمُؤْمِنِينَ رِجَالٌ صَدَقُوا مَا عَاهَدُوا
اللَّهُ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوا
تَبْدِيلًا ۝

لِيَجْزِيَ اللَّهُ الصَّادِقِينَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ
الْمُنَافِقِينَ إِنْ شَاءَ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ ۚ إِنَّ
اللَّهَ كَانَ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

وَرَدَّ اللَّهُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَأْلُوا
خَيْرًا ۚ وَكَفَىٰ اللَّهُ الْمُؤْمِنِينَ الْقِتَالَ
وَكَانَ اللَّهُ قَوِيًّا عَزِيزًا ۝

وَأَنْزَلَ الَّذِينَ ظَاهَرُوهُمْ مِّنْ
أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ صَاحِبِهِمْ وَقَدْ
فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيقًا تَقْتُلُونَ
وَتَأْسِرُونَ فَرِيقًا ۝

* इसमें अहज़ाब युद्ध के समय धोखाबाज़ी करने वाले यहूदियों का उल्लेख है। यद्यपि उन्होंने बहुत मज़बूत प्रतिरक्षात्मक दुर्ग बनाए हुए थे परन्तु जब अल्लाह तआला ने उन पर मोमिनों को विजयी→

और तुम्हें उनकी धरती और उनके मकानों और उनके धन का उत्तराधिकारी बना दिया और ऐसी धरती का भी जिसे तुमने (उस समय तक) पैरों तले रौंदा नहीं था । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है। 28।*

(स्कू 3/19)

हे नबी ! अपनी पत्नियों से कह दे, कि यदि तुम संसार का जीवन और उसकी सुन्दरता को चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें आर्थिक लाभ पहुँचाऊँ । और उत्तम ढंग से तुम्हें विदा करूँ । 29।

और यदि तुम अल्लाह को और उसके रसूल को और परलोक के घर को चाहती हो तो निःसन्देह अल्लाह ने तुम में से अच्छे कर्म करने वालियों के लिए बहुत बड़ा प्रतिफल तैयार किया है । 30।

हे नबी की पत्नियो ! जो भी तुम में से खुली-खुली अश्लीलता में पड़ेगी उसके लिए अज़ाब को दोगुना बढ़ा दिया जाएगा और यह बात अल्लाह के लिए सरल है । 31।

وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَّمْ تَطَّوُّهَا^ط
وَكَانَ اللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا^ع

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِأَزْوَاجِكَ إِن كُنْتُنَّ
تَرُدْنَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزَيَّنْتَهَا فَتَعَالَيْنَ
أَمْ تَحْكُنَّ وَأَسْرَحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا^{٢٩}
وَإِن كُنْتُنَّ تَرُدْنَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَالَّذَارِ
الْآخِرَةَ فَإِنَّ اللَّهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنَاتِ مِنْكُنَّ
أَجْرًا عَظِيمًا^{٣٠}

يُنْسَاءُ النَّبِيُّ مَنْ يَّاتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ
مُّبِينَةٍ يُضَعَّفُ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ^ط
وَكَانَ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرًا^{٣١}

← बनाने का निर्णय कर लिया तो वे दुर्ग उनके कुछ काम न आए बल्कि वे स्वयं अपने हाथों से उनको ध्वस्त करने लगे ।

* इसमें ऐसे इलाकों पर विजय पाने की भविष्यवाणी है जहाँ अभी तक मुसलमानों को पैर रखने का अवसर नहीं मिला । वास्तव में इसमें भविष्यवाणियों का एक लम्बा क्रम है ।

और तुम में से जो अल्लाह और उसके
रसूल का आज्ञापालन करेगी और
पुण्यकर्म करेगी हम उसे उसका
प्रतिफल दो बार देंगे । और उसके लिए
हमने बहुत सम्मानजनक जीविका
तैयार की है । 132।

हे नबी की पत्नियों ! तुम कदापि
साधारण स्त्रियों जैसी नहीं हो बशर्ते कि
तुम तक़्वा धारण करो । अतः हाव भाव
के साथ बात न किया करो अन्यथा वह
व्यक्ति जिस के मन में रोग है,
(अनुचित) लालसा करने लगेगा । और
अच्छी बात कहा करो । 133।

और अपने घरों में ही रहा करो और
बीती हुई अज्ञानता-युगीन शृंगार की
भाँति शृंगार को प्रदर्शित न किया करो ।
और नमाज़ को कायम करो और ज़कात
अदा करो और अल्लाह और उसके रसूल
का आज्ञापालन करो । हे (नबी) के घर
वालो ! निःसन्देह अल्लाह चाहता है कि
तुम से प्रत्येक प्रकार की गंदगी को दूर
कर दे और तुम्हें अच्छी प्रकार से पवित्र
कर दे । 134।

और अल्लाह की आयतों और विवेकपूर्ण
बातों को याद रखो जिनकी तुम्हारे घरों
में चर्चा की जाती है । निःसन्देह अल्लाह
अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी (और) ज्ञान रखने
वाला है । 135। (रकू 4)

निःसन्देह मुसलमान पुरुष और
मुसलमान स्त्रियाँ और मोमिन पुरुष और
मोमिन स्त्रियाँ और आज्ञाकारी पुरुष

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُمْ لِلَّهِ وَرَسُولِهِ
وَتَعْمَلْ صَالِحًا ثَوْتَهَا أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ
وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ رِزْقًا كَرِيمًا ۝

يُنْسَاءَ النَّبِيِّ نِسْتَنْ كَا حِدٍ مِنَ النِّسَاءِ إِنْ
اتَّقَيْتُمْ فَلَا تَخْصَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ
الَّذِي فِي قَلْبِهِ مَرَضٌ وَقُلْنَ قَوْلًا مَعْرُوفًا ۝

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ
الْبَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ وَأَقِمْنَ الصَّلَاةَ وَآتِينَ
الزَّكَاةَ وَاطْعَنَ اللَّهُ وَرَسُولَهُ إِنَّمَا يُرِيدُ
اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ
وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا ۝

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلَىٰ فِي بُيُوتِكُنَّ مِنْ آيَاتِ اللَّهِ
وَالْحِكْمَةِ ۝ إِنَّ اللَّهَ كَانَ لَطِيفًا خَبِيرًا ۝

إِنَّ الْمُسْلِمِينَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالْمُؤْمِنِينَ
وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْقَنَاتِينَ وَالْقَنَاتِ

और आज्ञाकारिणी स्त्रियाँ और सत्यवादी पुरुष और सत्यवादिनी स्त्रियाँ और धैर्यशील पुरुष और धैर्यशीला स्त्रियाँ और विनम्रता अपनाने वाले पुरुष और विनम्रता अपनाने वाली स्त्रियाँ और दान करने वाले पुरुष और दान करने वाली स्त्रियाँ और रोज़ा रखने वाले पुरुष और रोज़ा रखने वाली स्त्रियाँ और अपने गुप्तांगों की सुरक्षा करने वाले पुरुष और स्त्रियाँ और अल्लाह को अधिकता से याद करने वाले पुरुष और अधिकता से याद करने वाली स्त्रियाँ, अल्लाह ने इन सब के लिए क्षमादान और महान प्रतिफल तैयार किए हुए हैं। 136।

और किसी मोमिन पुरुष और किसी मोमिन स्त्री के लिए उचित नहीं कि जब अल्लाह और उसके रसूल किसी बात का निर्णय कर दें तो अपने मामले में उनको (स्वयं) निर्णय करने का अधिकार शेष रहे और जो अल्लाह और उसके रसूल की अवमानना करे वह बहुत खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ता है। 137।

और जब तू उसे, जिसको अल्लाह ने पुरस्कृत किया और तूने भी उसे पुरस्कृत किया, कह रहा था कि अपनी पत्नी को रोके रख (अर्थात् तलाक़ न दे) और अल्लाह का तक्रवा धारण कर। और तू अपने मन में वह बात छुपा रहा था जिसे अल्लाह प्रकट करने वाला था। और तू लोगों से भयभीत था जबकि अल्लाह इस बात का अधिक अधिकार रखता है कि

وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصّٰاِئِمِيْنَ وَالصّٰاِئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَالذّٰكِرٰتِ ۙ اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضٰى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهُ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيْرَةُ مِنْ اَمْرِهُمْ ۗ وَمَنْ يَعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ۝

وَ اِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْۤ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۗ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَاهُ ۗ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا

तू उससे भय करे। अतः जब ज़ैद ने उस (स्त्री) के विषय में अपनी इच्छा पूरी कर ली (और उसे तलाक़ दे दी), हमने उसे तुझ से ब्याह दिया ताकि मोमिनों पर अपने मुँह बोले बेटों की पत्नियों के विषय में कोई उलझन और दुविधा न रहे, जब वे (अर्थात् मुँह बोले बेटे) उनसे अपनी आवश्यकता पूरी कर चुके हों (अर्थात् उन्हें तलाक़ दे चुके हों)। और अल्लाह का निर्णय हर हाल में पूरा हो कर रहने वाला है। 138।

अल्लाह ने नबी के लिए जो अनिवार्य कर दिया है, उस के विषय में उस पर कोई उलझन नहीं होनी चाहिए। अल्लाह के उस नियम के रूप में जो पहले लोगों में भी जारी किया गया। और अल्लाह का निर्णय एक जचे-तुले अंदाज़ में हुआ करता है। 139।

(यह अल्लाह का नियम उन लोगों के पक्ष में बीत चुका है) जो अल्लाह के संदेश को पहुँचाया करते थे और उससे डरते रहते थे और अल्लाह के सिवा किसी और से नहीं डरते थे। और अल्लाह हिसाब लेने की दृष्टि से बहुत पर्याप्त है। 140।

मुहम्मद तुम्हारे (जैसे) पुरुषों में से किसी का पिता नहीं बल्कि वह अल्लाह का रसूल है और सब नबियों का खातम (अर्थात् मुहर) है। और अल्लाह प्रत्येक विषय का ख़ूब ज्ञान रखने वाला है। 141। (स्कू 5/2)

رَوَّجْنَهَا لِكَيْ لَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ
حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا
مِنْهُنَّ وَطَرًا ۖ وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ مَفْعُولًا ۝

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ
اللَّهُ لَهُ ۖ سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ
وَكَانَ أَمْرُ اللَّهِ قَدَرًا مَّقْدُورًا ۝

الَّذِينَ يُبَلِّغُونَ رِسَالَاتِ اللَّهِ وَيَخْشَوْنَهُ
وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللَّهَ ۖ وَكَفَى بِاللَّهِ
حَسِيبًا ۝

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِنْ رِجَالِكُمْ
وَلَكِنْ رَسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۖ
وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो !
अल्लाह का अधिकतापूर्वक स्मरण
किया करो ।42।

और प्रातः भी और सायं भी उसका
गुणगान करो ।43।

वही है जो तुम पर कृपा भेजता है और
उसके फ़रिश्ते भी, ताकि वह तुम्हें
अन्धकारों से प्रकाश की ओर ले जाए ।
और वह मोमिनों के हक़ में बार-बार
कृपा करने वाला है ।44।

जिस दिन वे उससे मिलेंगे उनका
अभिवादन सलाम होगा । और उस
(अल्लाह) ने उनके लिए बहुत सम्मान-
जनक प्रतिफल तैयार कर रखा है ।45।

हे नबी ! निःसन्देह हमने तुझे एक
गवाह और एक शुभ-समाचार दाता
और एक सतर्ककारी के रूप में भेजा
है ।46।

और अल्लाह की ओर उसके आदेश से
बुलाने वाले और एक प्रकाशकर सूर्य के
रूप में ।47।

और मोमिनों को शुभ-समाचार दे दे कि
(यह) उनके लिए अल्लाह की ओर से
बहुत बड़ी कृपा है ।48।

और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात न
मान और उनके कष्ट पहुँचाने की ओर
ध्यान न दे । और अल्लाह पर भरोसा कर
और अल्लाह ही कार्यसाधक के रूप में
पर्याप्त है ।49।

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम
मोमिन स्त्रियों से निकाह करो फिर

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا اللَّهَ ذِكْرًا
كَثِيرًا ۝

وَسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

هُوَ الَّذِي يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلَائِكَتُهُ
لِيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۚ وَكَانَ
بِالْمُؤْمِنِينَ رَحِيمًا ۝

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهُ سَلَامٌ ۗ وَآعَدَ
لَهُمْ أَجْرًا كَرِيمًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا
وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

وَدَاعِيًا إِلَى اللَّهِ بِآذِنِهِ وَسِرَاجًا مُنِيرًا ۝

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ بِأَنَّ لَهُم مِّنَ اللَّهِ
فَضْلًا كَبِيرًا ۝

وَلَا تُطِيعِ الْكُفْرَيْنِ وَالْمُنَافِقِينَ وَدَعْ
أَذْنَهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ وَكَفَى بِاللَّهِ
وَكِيلًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنَاتِ

उनको छूने से पूर्व ही उन्हें तलाक़ दे दो तो उनके ऊपर तुम्हारी ओर से कोई इद्दत नहीं जिसकी तुम गिनती रखो । अतः उन्हें कुछ धन दो और उन्हें अच्छे ढंग से विदा करो । 50।

हे नबी ! निःसन्देह हमने तेरे लिए तेरी वह पत्नियाँ वैध ठहरा दी हैं जिनके महर तू उन्हें दे चुका है और वे स्त्रियाँ भी जो तेरे अधीन हैं । अर्थात् जो अल्लाह ने तुझे गनीमत के रूप में प्रदान की हैं । और तेरे चाचा की पुत्रियाँ और तेरी बुआओं की पुत्रियाँ और तेरे मामुओं की पुत्रियाँ और तेरी मौसियों की पुत्रियाँ जिन्होंने तेरे साथ हिजरत की है । और प्रत्येक मोमिन स्त्री यदि वह अपने आप को नबी के लिए समर्पित कर दे, इस शर्त के साथ कि नबी उससे निकाह करना पसंद करे । (यह आदेश) मोमिनों से हट कर केवल तेरे लिए है । हमने उन की पत्नियों के बारे में और उनके अधीनस्थ स्त्रियों के बारे में जो उन पर अनिवार्य किया है उसका हमें ज्ञान है । (यह स्पष्ट किया जा रहा है) ताकि (उनके बारे में) तुझ पर कोई तंगी न रहे । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाले है । 51।

तू उनमें से जिन्हें चाहे छोड़ दे और जिन्हें चाहे अपने पास रख । और जिन्हें तू छोड़ चुका है उनमें से किसी को यदि फिर (वापस लेना) चाहे तो तुझ पर

ثُمَّ طَلَّقْتُمُوهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمْسُوهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُونَهَا فَمَعَهُنَّ وَسِرَّوَهُنَّ سَرَاحًا جَمِيلًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَاجَكَ الَّتِي أَتَيْتَ أَجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ خَلَّتِكَ الَّتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَامْرَأَةً مُؤْمِنَةً إِنْ وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ النَّبِيُّ أَنْ يَسْتَنْكِحَهَا خَالِصَةً لَكَ مِنْ دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۖ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِي أَزْوَاجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

تُرْجَى مَنْ تَشَاءُ مِنْهُنَّ وَتُؤَيَّ إِلَيْكَ مَنْ تَشَاءُ ۖ وَمِنْ ابْتِغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ

कोई पाप नहीं। यह इस बात के बहुत निकट है कि उनकी आँखें ठण्डी हों और वे शोक में न पड़ें और वे सब उस पर संतुष्ट हो जाएँ जो तू उन्हें दे। और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) बहुत सहनशील है। 52।

इसके पश्चात तेरे लिए (और) स्त्रियाँ वैध नहीं और न यह वैध है कि इन (पत्नियों) को बदल कर तू और पत्नियाँ कर ले चाहे उनकी सुन्दरता तुझे कितना ही पसन्द क्यों न आए। परन्तु जो तेरे अधीन हैं वे अपवाद हैं। और अल्लाह हर बात का निरीक्षक है। 53।

(रुकू 6/3)

हे वे लोगों जो ईमान लाए हो ! नबी के घरों में प्रवेश न किया करो, सिवाए इसके कि तुम्हें भोजन करने का निमंत्रण दिया जाए। परन्तु इस प्रकार नहीं कि उसके पकने की प्रतीक्षा करते रहो। परन्तु (भोजन तैयार होने पर) जब तुम्हें बुलाया जाए तो प्रवेश करो और जब तुम भोजन कर चुको तो वहाँ से चले जाओ और वहाँ (बैठे) बातों में न लगे रहो। यह (बात) निःसन्देह नबी के लिए कष्टदायक है परन्तु वह तुम से (इसको कहने से) झिझकता है परन्तु अल्लाह सच बात से नहीं झिझकता। और यदि तुम उन (अर्थात् नबी की पत्नियों) से कोई वस्तु माँगो तो पर्दे के पीछे से माँगा करो। यह तुम्हारे और

فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ تَقَرَّ
أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَ وَيَرْضَيْنَ
بِمَا آتَيْتَهُنَّ كُلَّهُنَّ ۚ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا
فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا ۝

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَاءُ مِنْ بَعْدُ وَلَا أَنْ تَبَدِّلَ
بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ
إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ رَقِيبًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ
إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَى طَعَامٍ غَيْرٍ
نُظْرَيْنَ إِلَيْهِ ۚ وَلَكِنْ إِذَا دُعِيتُمْ
فَادْخُلُوا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوا وَلَا
مُسْتَأْنَسِينَ لِحَدِيثٍ ۚ إِنَّ ذِكْرَكُمْ كَانَ
يُؤْذَى النَّبِيِّ فَيَسْتَحْي مِنْكُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا
يَسْتَحْي مِنَ الْحَقِّ ۚ وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ
مَتَاعًا فَسْأَلُوهُنَّ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ ۚ

उनके दिलों के लिए अधिक पवित्र (अचारण शैली) है। और तुम्हारे लिए उचित नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को दुःख पहुँचाओ। और न ही यह वैध है कि उसके पश्चात कभी उसकी पत्नियों (में से किसी) से विवाह करो। निःसन्देह अल्लाह के निकट यह बहुत गम्भीर बात है। 154।

यदि तुम कोई बात प्रकट करो अथवा उसे छिपाओ तो निःसन्देह अल्लाह हर एक बात का खूब ज्ञान रखने वाला है। 155।

इन (नबी की पत्नियों) पर अपने पिताओं के समक्ष आने में कोई पाप नहीं न अपने पुत्रों के, न अपने भाइयों के, न अपने भतीजों के, न अपने भाँजों के, न अपनी (जैसी मोमिन) स्त्रियों के, न ही उनके (समक्ष आने में कोई पाप है) जो उनके अधीन हैं। और (हे नबी की पत्नियो!) अल्लाह का तक्रवा धारण करो। निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु का निरीक्षक है। 156।

निःसन्देह अल्लाह और उसके फ़रिश्ते (इस) नबी पर कृपा भेजते हैं। हे वे लोगो जो ईमान लाए हो! तुम भी उस पर दरूद और बहुत-बहुत सलाम भेजो। 157।*

ذِكْمُ أَطْهَرُ لِقُلُوبِكُمْ وَقُلُوبِهِنَّ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوا رَسُولَ اللَّهِ وَلَا أَنْ تَنْكِحُوا أَزْوَاجَهُ مِنْ بَعْدِهِ أَبَدًا إِنَّ ذِكْمَكُمْ كَانَ عِنْدَ اللَّهِ عَظِيمًا ۝

إِنْ تُبْدُوا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوهُ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا ۝

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِي آبَائِهِنَّ وَلَا أَبْنَائِهِنَّ وَلَا إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَبْنَاءَ إِخْوَانِهِنَّ وَلَا أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَائِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ وَاتَّقِينَ اللَّهَ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدًا ۝

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ۝

* हज़रत मसीह मौरूद अलै. इस पवित्र आयत के बारे में फ़रमति हैं :-

“इस आयत से स्पष्ट होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कर्म ऐसे थे कि अल्लाह तआला ने उनकी प्रशंसा अथवा गुणों को सीमाबद्ध करने के लिए किसी शब्द को विशेष नहीं किया। शब्द तो मिल सकते थे परन्तु स्वयं उल्लेख नहीं किया। अर्थात् आप सल्ल. के सत्कर्मों की प्रशंसा असीमित थी। इस प्रकार की आयत किसी और नबी की शान में प्रयोग नहीं की। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आत्मा में वह सत्य और निष्ठा थी कि आप सल्ल. के→

निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूल को कष्ट पहुँचाते हैं, अल्लाह ने उन पर इह लोक में भी और परलोक में भी ला'नत डाली है। और उसने उनके लिए अपमान जनक अज़ाब तैयार किया है। 158।

और वे लोग जो मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को बिना उस (अपराध) के जो उन्होंने किया हो कष्ट पहुँचाते हैं तो (मानो) उन्होंने एक बड़े दोषारोपण और खुल्लम-खुल्ला पाप का बोझ (अपने ऊपर) उठा लिया। 159।

(रुकू $\frac{7}{4}$)

हे नबी ! तू अपनी पत्नियों और अपनी बेटियों और मोमिनों की स्त्रियों से कह दे कि वे अपनी चादरों को अपने ऊपर झुका दिया करें। यह इस बात के अधिक निकट है कि वे पहचानी जायँ और उन्हें कष्ट न दिया जाए। और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 160।*

यदि मुनाफ़िक़ और वे लोग जिनके दिलों में रोग है और वे लोग जो मदीना में झूठी ख़बरें उड़ाते फिरते हैं, (इससे) नहीं रुकेंगे तो हम अवश्य तुझे (उनके बुरे अन्त के लिए) उनके पीछे लगा देंगे।

إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِينًا ۝

وَالَّذِينَ يُؤْذُونَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بَغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوا فَقَدْ احْتَمَلُوا بُهْتَانًا وَإِثْمًا مُّبِينًا ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَاءِ الْمُؤْمِنِينَ يُدْنِينَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيبِهِنَّ ۖ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰ أَنْ يُعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ۝

لَيْسَ لَّهُمْ يَنْتَهَ الْمُتَفَقُّونَ وَالَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ وَالْمُرْجِفُونَ فِي الْمَدِينَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُونَكَ فِيهَا

*कर्म अल्लाह की दृष्टि में इतने प्रिय थे कि अल्लाह तआला ने सदा के लिए यह आदेश दिया कि भविष्य में लोग कृतज्ञता स्वरूप दरूद भेजें।” (मल्फूज़ात हज़रत मसीह मौऊद अलै. प्रथम भाग, पृष्ठ 24, रब्बा प्रकाशन)

* इस आयत में पर्दे का जो आदेश दिया गया है इससे मालूम होता है कि पर्दे के द्वारा ग़ैर मुस्लिम स्त्रियों की तुलना में मुसलमान स्त्रियों की एक पहचान रखी गई है। अन्यथा यहूदी शरारत से कह सकते थे कि हमें पता नहीं था कि यह मुसलमान स्त्री है इस लिए हमने इसे छेड़ दिया।

फिर वे इस (शहर) में तेरे पड़ोस में थोड़े समय से अधिक नहीं ठहर सकेंगे। 161।

(ये) धुतकारे हुए, जहाँ कहीं भी पाएँ जाएँ पकड़ लिए जाएँ और अच्छी प्रकार से बंध किए जाएँ। 162।*

(यह) अल्लाह का नियम उन लोगों के साथ भी था जो पहले गुजर चुके हैं। और तू अल्लाह के नियम में कदापि कोई परितर्वर्तन नहीं पाएगा। 163।

लोग तुझ से निश्चित घड़ी के विषय में पूछते हैं। तू कह दे कि उसका ज्ञान केवल अल्लाह के पास है। और तुझे क्या पता कि सम्भवतः (वह) घड़ी निकट ही हो! 164।

निःसन्देह अल्लाह ने काफ़िरों पर ला'नत डाली है और उनके लिए भड़कती हुई अग्नि तैयार की है। 165।

उसमें वे दीर्घ अवधि तक रहने वाले होंगे। न (उसमें अपने लिए) वे कोई संरक्षक पाएँगे और न कोई सहायक। 166।

जिस दिन उनके चेहरे नरक में औंधे किए जाएँगे वे कहेंगे काश! हम अल्लाह का आज्ञापालन करते और रसूल का आज्ञापालन करते। 167।

और वे कहेंगे हे हमारे रब! निःसन्देह हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का

إِلَّا قَلِيلًا ۝

مَلْعُونِينَ ۝ أَيَّمَا تُقَفُّوْا أَخَذُوا وَقَتَّوْا ۝
تَقْتِيلًا ۝

سُنَّةَ اللَّهِ فِي الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۝
وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۖ قُلْ إِنَّمَا
عِلْمُهَا عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ
السَّاعَةَ تَكُونُ قَرِيبًا ۝

إِنَّ اللَّهَ لَعَنَ الْكُفْرَيْنَ ۖ وَأَعَدَّ لَهُمْ
سَعِيرًا ۝

خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۖ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلَا
نَصِيرًا ۝

يَوْمَ تَقْلُبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ
يَلَيْتَنَا أَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولَ ۝

وَقَالُوا رَبَّنَا إِنَّا أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَاءَنَا

* आयत 61-62 इन आयतों में मुनाफ़िकों और यहूदियों में से उन उपद्रवियों का उल्लेख है जो मदीना में मुसलमानों के विरुद्ध झूठी मनगढ़ंत बातें फैलाते रहते थे। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अल्लाह ने वादा किया है कि तू उन पर विजयी होगा और वे तेरे नगर को छोड़ कर चले जाएँगे। उस समय ये अल्लाह की ला'नत से ग्रसित होंगे और ऐसे हालात होंगे कि जहाँ कहीं भी वे पाए जाएँ उनकी पकड़-धकड़ करना और उनका बंध करना उचित होगा।

आज्ञापालन किया था । अतः उन्होंने हमें पथभ्रष्ट कर दिया । 68।

हे हमारे रब्ब ! उन्हें दुगना अज़ाब दे और उन पर बहुत बड़ी ला'नत डाल । 69। (रुकू 8/5)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! उन लोगों की भाँति न बनो जिन्होंने मूसा को दुःख पहुँचाया । फिर जो उन्होंने कहा उससे अल्लाह ने उसे बरी कर दिया और अल्लाह के निकट वह सम्माननीय था । 70।

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का तक्रवा धारण करो और साफ़-सीधी बात किया करो । 71।

वह तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्मों का सुधार कर देगा और तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा । और जो भी अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करे तो निःसन्देह उसने एक बड़ी सफलता को प्राप्त कर लिया । 72।

निःसन्देह हमने अमानत को आसमानों और धरती और पर्वतों के समक्ष रखा, तो उन्होंने उसे उठाने से इनकार कर दिया और उससे डर गए जबकि सर्वगुण सम्पन्न मानव ने उसे उठा लिया । निःसन्देह वह (अपने आप पर) बहुत अत्याचार करने वाला (और इस उत्तरदायित्व के परिणाम से) बिल्कुल परवाह न करने वाला था । 73।*

فَاضْلُونا السَّيِّلا ۝

رَبَّنَا اَتِهِمْ ضَعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ
وَالْعُنْهُمْ لَعْنًا كَبِيرًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ
أَذُوا مُوسَىٰ فَبرَّاهُ اللَّهُ مِمَّا قَالُوا ۚ وَكَانَ
عِنْدَ اللَّهِ وَجِيهاً ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلًا
سَدِيدًا ۝

يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوبَكُمْ ۚ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيمًا ۝

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا
وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۚ إِنَّهُ
كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ۝

* इस पवित्र आयत में अन्य समस्त नबियों पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बड़ाई का वर्णन है । क्योंकि कुरआनी शिक्षा स्वरूप जो अमानत अवतरित की जानी थी हज़रत→

ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ पुरुषों और मुनाफ़िक़ स्त्रियों तथा मुश्रिक़ पुरुषों और मुश्रिक़ स्त्रियों को अज़ाब दे । और मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों पर प्रायश्चित स्वीकार करते हुए झुके । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 174। (रुकू 9/6)

لَيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ
وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ اللَّهُ
عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ
غَفُورًا رَحِيمًا ۝

✦ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहले किसी नबी को यह सामर्थ्य नहीं था कि इस अमानत का बोझ उठा सके । अतः अमानत से अभिप्राय पवित्र कुरआन है । अरबी वाक्य ज़लूमन जहूलन् (स्वयं पर अत्याचार करने वाला और परिणाम से बेपरवाह) का कुछ व्याख्याकार बिल्कुल गलत अनुवाद करते हैं । ज़लूमन से अभिप्राय किसी अन्य पर नहीं बल्कि स्वयं अपनी जान पर अत्याचार करने वाला है जिसने इतना बड़ा बोझ उठा लिया । और जहूलन से अभिप्राय बहुत बड़ा अज्ञानी नहीं, बल्कि इसका वास्तविक अर्थ यह है कि जिसने इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी संभाली और फिर इसके परिणाम से बे-परवाह हो गया । अतः हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर जितने भी अत्याचार हुए हैं कुरआन के अवतरण के पश्चात ही आरम्भ हुए हैं ।

34- सूरः सबा

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 55 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ इस आयत से होता है कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों का स्वामी है और धरती भी उसी की स्तुति के गीत गाती है । और परलोक में भी उसी की स्तुति के गीत गाए जाएंगे । यहाँ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर स्पष्ट संकेत है कि आपके युग में आपके सच्चे सेवक धरती और आकाश को अल्लाह की स्तुति और उसके गुणगान से भर देंगे ।

इसके पश्चात् पर्वतों की व्याख्या करते हुए यह भी बताया गया है कि पर्वतों से अभिप्राय कठिन परिश्रमी पर्वतीय जातियाँ भी होती हैं जैसा कि हज़रत दाऊद अलै. के लिए प्रत्यक्ष रूप में पहाड़ों को काम पर नहीं लगाया गया बल्कि पहाड़ों पर बसने वाली परिश्रमी जातियों को सेवा में लगा दिया गया था । अतः पिछली सूरः के अंत पर जिन पर्वतों का उल्लेख है उनकी व्याख्या यहाँ कर दी गई ।

इस वर्णन के पश्चात् वे **जिन्न** जो हज़रत दाऊद और हज़रत सुलैमान अलै. के लिए सेवा पर लगाए गए थे और उनसे वह बहुत भारी काम लिया करते थे, उनकी व्याख्या की गई कि ये **जिन्न** मनुष्य रूपी जिन्न थे । ऐसे जिन्न नहीं थे जिनको साधारणतः आग के शोलों से बना हुआ समझा जाता है । आग तो पानी में प्रवेश करते ही भस्म हो जाती है परन्तु इन जिन्नों के बारे में कुरआन में दूसरे स्थल पर कहा गया है कि ये जिन्न जंजीरों से बंधे हुए थे । हालाँकि आग के जिन्न तो जंजीरों से बंधे नहीं जा सकते । और वे समुद्र में डुबकी लगा कर मोती निकालने का काम करते थे । हालाँकि आग के बने हुए जिन्न तो समुद्र में डुबकी नहीं मार सकते । ये सारी बातें दाऊद अलै. के वंशज के लिए कृतज्ञता प्रकट करना आवश्यक बनाती थीं । अतः हज़रत सुलैमान अलै. ने जो शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से मूलतः दाऊद के वंशज थे, इस कृतज्ञता का हक्क अदा किया । परन्तु जब हज़रत सुलैमान अलै. को यह सूचना दी गई कि उनका पुत्र जो उनके पश्चात् सिंहासन पर आसीन होगा एक ऐसे शरीर की भाँति होगा जिसमें कोई आध्यात्मिक जीवन नहीं होगा । तो उस समय उन्होंने यह दुआ की कि हे अल्लाह ! इस दशा में उस समय इस शासन को समाप्त कर दे । मुझे इस भौतिक साम्राज्य से कोई मतलब नहीं । अतः बिल्कुल ऐसा ही हुआ । हज़रत सुलैमान अलै. के पश्चात् जब उनका पुत्र उनका उत्तराधिकारी हुआ तो धीरे-धीरे इन्हीं पर्वतीय जातियों ने यह जानकर कि एक बुद्धिहीन व्यक्ति उन पर शासन कर रहा है उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया और हज़रत सुलैमान अलै. का भौतिक साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया ।

जब बड़े-बड़े साम्राज्य टूटा करते हैं तो उस साम्राज्य के नागरिक परस्पर प्रेम के कारण यह दुआ करने के स्थान पर कि हे अल्लाह ! हमें एक दूसरे के निकट रख, वे इसके विपरीत घृणावश एक दूसरे से दूर हटने की दुआएं करते हैं । तो ऐसी दशा में वे किस्सा-कहानी स्वरूप बना दिए जाते हैं । और अल्लाह के क्रोध की चक्की तले पीसे जाते हैं । और फिर उनकी बस्तियों में इतनी दूरी डाल दी जाती है कि उनके बीच एक अद्भुत वीरानी का दृश्य दिखाई देता है जिसमें झाऊ आदि झाड़ियाँ उगती हैं । हालांकि इससे पूर्व उनको वैभवपूर्ण बाग़ान और खेतियाँ प्रदान की गई थीं ।

पिछली सूरः के अन्त पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिस धैर्य की शिक्षा दी गई थी अब फिर उसी की पुनरावृत्ति की गई है कि तू प्रत्येक दशा में धैर्य करता चला जा । फिर एक बहुत बड़ी खुशख़बरी देकर आप सल्ल. के दिल को दृढ़ता प्रदान की गई कि पहले के बड़े बड़े साम्राज्य तो छोटी-छोटी जातियों की भाँति हैं परन्तु तुझे अल्लाह तआला ने समस्त संसार की आध्यात्मिक राजसत्ता प्रदान की है ।

इसके बाद विरोधियों को दुआ के द्वारा अल्लाह तआला से निर्णय चाहने की ओर प्रेरित किया गया है कि वे अकेले-अकेले अथवा दो-दो होकर अल्लाह के समक्ष खड़े होकर दुआएं करें और फिर विचार करें कि ज्ञान और बुद्धि का यह राजकुमार जिसको कुरआन प्रदान किया गया है कदापि पागल नहीं है ।

फिर फ़र्माया, तू इस बात पर विचार कर कि जब वे अत्यन्त बेचैन होंगे और वह बेचैनी दूर होने वाली नहीं होगी तो वे निकट के स्थान से पकड़े जाएंगे । निकट का स्थान तो प्राणस्नायु है । अर्थात् उनकी जान के अन्दर से उनको कठोर अज़ाब में डाला जाएगा । अगली आयत में दूर के मकान से इस ओर संकेत मिलता है कि ऐसे लोगों के लिए प्रायश्चित्त करना बहुत दूर की बात है । जब अपने साथ घटने वाली घटनाओं पर भी उनको प्रायश्चित्त करने की प्रेरणा नहीं मिली तो अल्लाह की पकड़ के भय से, जिसे वे बहुत दूर देख रहे हैं उन्हें सम्यक् रूप से प्रायश्चित्त करने का सामर्थ्य कैसे मिल सकता है। ऐसे इनकार करने वालों और उनकी अनुचित इच्छाओं की प्राप्ति के बीच सदैव एक रोक डाल दी जाती है । जैसा कि उनसे पूर्व युगीन इनकार करने वालों के साथ होता रहा है परन्तु वे अभागे सदा शंकाओं में ही पड़े रहते हैं ।



سُورَةُ سَبَا مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَ سِتَّةٌ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 11।

समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है । जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है और जो धरती में है । और परलोक में भी सारी की सारी प्रशंसा उसी की होगी और वह बहुत विवेकशील (और) सदा खबर रखता है 12।

वह जानता है जो धरती में प्रविष्ट होता है और जो उससे निकलता है और जो आकाश से उतरता है और जो उसमें चढ़ जाता है । और वह बार-बार दया करने वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है 13।

जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं, निर्धारित घड़ी हम पर नहीं आएगी । तू कह दे, क्यों नहीं ? मेरे रब्ब की कसम ! जो अदृश्य विषय का ज्ञाता है, वह (घड़ी) अवश्य तुम पर आएगी । उस (अर्थात् मेरे रब्ब) से आसमानों और धरती में कण भर भी अथवा उससे छोटी और न उससे बड़ी कोई वस्तु छिपी नहीं रहती, परन्तु वह एक सुस्पष्ट पुस्तक में (लिपिबद्ध) है 14।

ताकि वह उन लोगों को प्रतिफल दे जो ईमान लाए और नेक कर्म किये । यही वे

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْآخِرَةِ
وَهُوَ الْحَكِيمُ الْخَبِيرُ ①

يَعْلَمُ مَا يَلْجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا
وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيهَا
وَهُوَ الرَّحِيمُ الْغَفُورُ ②

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَأْتِينَا السَّاعَةُ
قُلْ بَلَىٰ وَرَبِّي لَتَأْتِيَنَّكُمْ ۚ عِلْمُ الْغَيْبِ
لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمُوتِ
وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَا أَصْغَرُ مِنْ ذَلِكَ
وَلَا أَكْبَرُ إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ③

لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ④

लोग हैं कि उनके लिए क्षमादान और सम्मानजनक जीविका है ।5।

और वे लोग जो हमारे चिह्नों के विषय में (हमें) असमर्थ करने का प्रयत्न करते हुए दौड़े फिरते हैं, यही वे लोग हैं जिनके लिए दिल दहला देने वाले अज़ाब में से एक पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।6।

और वे लोग जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है वे देख लेंगे कि जो कुछ तेरी ओर तेरे रब्ब की ओर से उतारा गया है वही सत्य है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाले, प्रशंसा के योग्य (अल्लाह) के मार्ग की ओर मार्गप्रदर्शन करता है ।7।

और जिन लोगों ने इनकार किया वे कहते हैं कि क्या हम तुम्हें एक ऐसे व्यक्ति की सूचना दें जो तुम्हें बताएगा कि जब तुम (मरने के बाद) पूर्णतया चूर्ण-विचूर्ण कर दिये जाओगे तो फिर तुम अवश्य एक नवीन उत्पत्ति के रूप में (प्रविष्ट) किए जाओगे ।8।

क्या उसने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है अथवा उसे पागलपन हो गया है ? नहीं, वास्तविकता यह है कि वे लोग जो परलोक पर ईमान नहीं लाते अज़ाब में पड़े हैं । और बहुत दूर की पथभ्रष्टता में (पड़कर भटक रहे) हैं ।9।

क्या उन्होंने आकाश और धरती (में प्रकट होने वाले चिह्नों) की ओर नहीं देखा जो उनके समक्ष हैं अथवा उनसे पहले गुज़र चुके हैं । यदि हम चाहें तो उन्हें धरती में धंसा दें अथवा उनपर

أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ⑤

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعْجِزِينَ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجْزٍ أَلِيمٌ ⑥

وَيَرَى الَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ الَّذِي أُنزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ هُوَ الْحَقُّ وَيَهْدِي إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ⑦

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلَىٰ رَجُلٍ يُنَبِّئُكُمْ إِذَا مُرِّقْتُمْ كُلَّ مُمَرِّقٍ ⑧
إِن كُمْ لَنِفَىٰ خَلْقٍ جَدِيدٍ ⑨

أَفَتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَمْ بِهِ جِنَّةٌ بَلِ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالصَّلٰلِ الْبَعِيدِ ⑩

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ⑪
إِن نَّشَأْ نُخَسِّفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطَ

आकाश का कोई टुकड़ा गिरा दें ।
निःसन्देह इसमें हर उस भक्त के लिए
जो झुकने वाला है, एक बहुत बड़ा चिह्न
है ॥10॥ (रुकू 1/)

और निःसन्देह हमने दाऊद को अपनी
ओर से एक बड़ी कृपा प्रदान की थी ।
(जब यह आदेश दिया कि) हे पर्वतो !
इसके साथ झुक जाओ और हे पक्षियो !
तुम भी । और हमने उसके लिए लोहे को
नरम कर दिया ॥11॥

(और दाऊद से कहा) कि तू शरीर को
पूर्ण रूप से ढाँपने वाले कवच बना और
(उनके) घेरे तंग रख । और तुम सब
पुण्यकर्म करो । निःसन्देह जो कुछ तुम
करते हो मैं उस पर गहन दृष्टि रखने
वाला हूँ ॥12॥*

और (हमने) सुलैमान के लिए हवा (को
काम पर लगा दिया) । उसकी
प्रातःकालीन यात्रा महीने भर (की
यात्रा) के बराबर थी और सांयकालीन
यात्रा भी महीने भर (की यात्रा) के
बराबर थी । और हमने उसके लिए तांबे
का स्रोत बहा दिया । और जिल्लों

عَلَيْهِمْ كَسَفًا مِّنَ السَّمَاءِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ
لَآيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِنَّا فَضْلًا ۚ يُجِبَالٌ أَوِيٌّ
مَّعَهُ وَالطَّيْرَ ۚ وَآلَنَّا لَهُ الْحَدِيدَ ۝

أَنِ اْعْمَلْ سَبِغَةً وَاقْدِرْ فِي السَّرْدِ
وَاعْمَلُوا صَالِحًا ۚ إِنِّي بِمَا تَعْمَلُونَ
بَصِيرٌ ۝

وَأَسْلَمْنَا مَنَ الرِّيحِ غَدُوَهَا شَهْرًا
وَرَوَّاحُهَا شَهْرًا ۚ وَأَسْلَمْنَا لَهُ عَيْنَ
الْقَطْرِ ۚ وَمِنَ الْجِنِّ مَن يَعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ

* आयत 11-12 : इन आयतों में पर्वतों को सेवाधीन करने से अभिप्राय वे परिश्रमी पहाड़ी जातियाँ हैं जिन पर हज़रत दाऊद अलै. को विजय प्राप्त हुई और उसके परिणाम स्वरूप उन्होंने बहुत भारी भरकम काम आप के लिए किया । पक्षियों से अभिप्राय सम्भवतः वे नेक मनुष्य हैं जो आप पर ईमान लाए । उन्हें आध्यात्मिक रूप में पक्षी कहा गया है ।

एक और वरदान आप को यह प्रदान किया गया कि आपको लोहा पिघलाने और उससे लाभजनक कार्य साधने की कला प्रदान की गई । युद्ध में लोहे के छल्लों से निर्मित कवच आप ही के समय से प्रचलित हुए हैं । हज़रत दाऊद अलै. को यह भी निर्देश दिया गया था कि कवच बड़े घेरों वाले न हों बल्कि छोटे-छोटे घेरों वाले हों । यदि उन के युग से पहले लौह-कवच बनाए भी जाते थे तो ये विशेष तंग घेरों वाले कवचों का निर्माण तो केवल हज़रत दाऊद अलै. के युग से ही आरम्भ हुआ था ।

(अर्थात् कठोर परिश्रमी पहाड़ी जातियों) में से कुछ को (सेवाधीन कर दिया) जो उसके सामने उसके रब्ब की आदेश से परिश्रम पूर्वक काम करते थे । और उनमें से जो भी हमारी आज्ञा का उल्लंघन करेगा उसे हम धधकती हुई अग्नि का अज़ाब चखाएँगे ॥13॥*

वह जो चाहता था वे उसके लिए बनाते थे (अर्थात्) बड़े-बड़े दुर्ग और मूर्तियाँ और तालाबों की भाँति बड़े-बड़े परात और एक ही जगह पड़ी रहने वाली (भारी) देंगे । हे दाऊद के वंशज ! (अल्लाह की) कृतज्ञता प्रकट करते हुए (कृतज्ञता की मर्यादानुरूप) काम करो । और मेरे भक्तों में से थोड़े हैं जो (वास्तव में) कृतज्ञता प्रकट करने वाले हैं ॥14॥

بِأَذْنِ رَبِّهِ ۖ وَمَنْ يَزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا
نَذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ۝

يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُ مِنْ مَحَارِبٍ
وَتَمَازِيلٍ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ
رُسِيَّتٍ ۖ إِعْمَلُوا آلَ دَاوُدَ شُكْرًا
وَقَلِيلٌ مِنَ عِبَادِيَ الشَّكُورُ ۝

* आयत संख्या 13-14 : हवाओं को हज़रत सुलैमान अलै. के अधीन करने का यह अर्थ नहीं है कि आपने कोई उड़न-खटोला अविष्कार किया था, जैसा कि कुछ व्याख्याकार यह कथा वर्णन करते हैं। बल्कि वस्तुतः यहाँ समुद्र के तट पर चलने वाली तेज़ हवाओं का वर्णन है जो एक महीने के पश्चात दिशा बदल लेती थीं । उन हवाओं की शक्ति से बादबानी जहाज़ों का तेज़ी से चलना और फिर वापिस लौटना ही इस आयत का अभिप्राय है ।

हज़रत दाऊद अलै. को लोहे पर प्रभुत्व प्रदान किया गया था । जबकि हज़रत सुलैमान अलै. को एक उच्च कोटि की धातु अर्थात् तांबे के खान खोदने और उसको विभिन्न प्रकार से प्रयोग करने की कला सिखाई गई । जिन जिनों का यहाँ उल्लेख है उनका इससे पहले हज़रत दाऊद अलै. के प्रकरण में भी उल्लेख हो चुका है । इससे कठोर परिश्रमी पहाड़ी जातियाँ भाव हैं । अगली आयत में यह वर्णन है कि ये इतने बड़े-बड़े श्रमसाध्य काम करते थे जो साधारण उन्नतिशील जातियों के लिए संभव न थे । इसकी व्याख्या करते हुए पहले बड़े-बड़े दुर्गों का वर्णन है फिर मूर्तियों का । फिर तालाबों की भाँति बड़े बड़े परातों और इतनी भारी और बड़ी-बड़ी देगों का उल्लेख है जो एक ही स्थान पर पड़ी रहती थीं । और उनको बार-बार एक स्थान से दूसरे स्थान पर हटाना सरल नहीं होता । इन देगों में सम्भवतः आपकी विशाल सेना के लिए भोजन तैयार होता होगा ।

इन नेमतों का वर्णन करने के पश्चात् हज़रत दाऊद अलै. को ही नहीं बल्कि आपके वंशज को भी कृतज्ञ होने की ताकीद की गयी है । अर्थात् जब तक कृतज्ञ रहोगे ये नेमतें छीनी नहीं जाएंगी । फिर हज़रत सुलैमान अलै. के पुत्र के समय में ये नेमतें समाप्त होती गई । क्योंकि उसमें कोई आध्यात्मिकता और प्रशासनिक योग्यता नहीं थी ।

अतः जब हमने उस पर मृत्यु का निर्णय लागू कर दिया तो उसकी मृत्यु पर एक धरती के कीड़े (अर्थात् उसके अवज्ञाकारी पुत्र) के अतिरिक्त किसी ने उनको सूचित नहीं किया जो उस (के साम्राज्य) की लाठी को खा रहा था। फिर जब वह (शासन तन्त्र) ध्वस्त हो गया तब जन्न (अर्थात् पहाड़ी जातियों) पर यह बात खुल गई कि यदि वे अदृश्य विषय का ज्ञान रखते तो इस अपमानजनक अज्ञाब में न पड़े रहते ॥15॥

निःसन्देह सबा (जाति) के लिए भी उनके निवास स्थल में एक बड़ा चिह्न था। (जिसके) दाँए और बाएँ दो बाग थे। (हे सबा की जाति!) अपने रब्ब की प्रदत्त जीविका में से खाओ और उसकी कृतज्ञता प्रकट करो। (सबा का केन्द्र) एक बहुत अच्छा नगर था और (उस नगर का) एक बहुत क्षमा करने वाला रब्ब था ॥16॥

फिर उन्होंने मुँह मोड़ लिया तो हमने उन पर टूटे हुए बाँध से (लहरें मारती हुई) बाढ़ भेजी। और हमने उनके लिए उनके दोनों बागानों को दो ऐसे बागों में परिवर्तित कर दिया जो दोनों ही स्वादहीन फल और झाउ के पौधों वाले तथा कुछ थोड़ी सी बेरियों वाले थे ॥17॥

यह प्रतिफल हमने उनको इस कारण दिया कि उन्होंने कृतघ्नता की। और क्या अत्यन्त कृतघ्न के अतिरिक्त हम किसी को भी (ऐसा) प्रतिफल देते हैं? ॥18॥

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَىٰ مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَأَتَهُ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجَبُّ أَنْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوا فِي الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝١٥

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكِنِهِمْ آيَةٌ ۚ جَنَّتِ عَنْ يَمِينٍ وَشِمَالٍ ۚ كُلُوا مِنْ رِزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوا لَهُ ۚ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَرَبُّ غَفُورٌ ۝١٦

فَاعْرِضُوا ۚ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنَاهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِیْ أُكُلٍ خَمْطٍ وَأَثَلٍ ۚ وَشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيلٍ ۝١٧

ذَٰلِكَ جَزَآئُهُمْ بِمَا كَفَرُوا ۗ وَهَلْ نُجَازِي إِلَّا الْكَفُورَ ۝١٨

और हमने उनके और उन बस्तियों के मध्य जिनमें हमने बरकत डाली थी पृथक दिखाई देने वाली बस्तियाँ बनाई थीं । और उनके मध्य (सरलता पूर्वक) चलना फिरना सम्भव बना दिया था । (उद्देश्य यह था कि) उनमें तुम रातों को और दिनों को निश्चित होकर चलते फिरते रहो । 119।

फिर (जब वे कृतघ्न हो गए तो) उन्होंने कहा, हे हमारे रब्ब ! हमारी यात्राओं की दूरी बढ़ा दे । और उन्होंने स्वयं अपने आप पर अत्याचार किया । तब हमने उनको कथा-कहानी बना दिया और उन्हें नष्ट-भ्रष्ट कर दिया । निःसन्देह इसमें प्रत्येक बहुत धैर्य करने वाले (और) बहुत कृतज्ञता प्रकट करने वाले के लिए चिह्न हैं । 120।

और निःसन्देह इब्लीस ने उनके विरुद्ध अपना विचार सच्चा कर दिखाया । अतः उन्होंने उसका अनुसरण किया सिवाए मोमिनों में से एक गिरोह के । 121।

और उसे उन पर कोई प्रभुत्व प्राप्त नहीं था । परन्तु हम यह चाहते थे कि जो परलोक पर ईमान लाता है उसे उससे अलग कर दें जो उस के बारे में शंका में (पड़ा) है । और तेरा रब्ब प्रत्येक विषय का निरीक्षक है । 122। (रुकू - 2/8)

तू कह दे कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने अल्लाह के सिवा (कुछ) समझ रखा है। वे तो आसमानों और धरती में से

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا قُرَى ظَاهِرَةً وَقَدَّرْنَا فِيهَا السَّيْرَ^ط
سَيْرُوا فِيهَا لِيَالِي وَأَيَّامًا آمِنِينَ^{١٩}

فَقَالُوا رَبَّنَا بَدَبِئِنَّا أَضَلَّ سَبِيلَنَا وَمَا نَرَى
أَنْفُسَهُمْ فَعَلْنَاهُمْ أَحَادِيثَ وَمَزَّقْنَاهُمْ
كُلَّ مُمَزَّقٍ^ط إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُورٍ^{٢٠}

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ
فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ^{٢١}

وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ
مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي
شَكٍّ^ط وَرَبُّكَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيطٌ^{٢٢}

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ^ع

एक कण के समान भी किसी वस्तु के स्वामी नहीं । और न ही उन दोनों में उनका कोई भाग है । और उनमें से कोई भी उस (अर्थात अल्लाह) का सहायक नहीं । 123।

और उसके समक्ष किसी के पक्ष में सिफ़ारिश काम नहीं आएगी सिवाए उसके, जिसके लिए उसने आज्ञा दी हो । यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाएगी तो वे (अपनी सिफ़ारिश करने वालों से) पूछेंगे (अभी) तुम्हारे रब्ब ने क्या कहा था ? वे कहेंगे : सत्य (कहा था) । और वह बहुत ऊँची शान वाला (और) बहुत बड़ा है । 124।

तू (काफ़िरों से) पूछ कि कौन है जो तुम्हें आसमानों और धरती में से जीविका प्रदान करता है ? (स्वयं ही) कह दे कि अल्लाह और (यह भी कह दे कि) निःसन्देह हम या तुम हिदायत पर हैं अथवा खुली-खुली पथभ्रष्टता में । 125।

तू कह दे कि तुम उन अपराधों के बारे में नहीं पूछे जाओगे जो हम ने किये । और न ही हम उसके बारे में पूछे जाएंगे जो तुम करते हो । 126।

तू कह दे कि हमारा रब्ब हमें एकत्रित करेगा । फिर हमारे बीच सत्य के साथ निर्णय करेगा । और वह बहुत स्पष्ट निर्णय करने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 127।

لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِنْ شِرْكٍَ وَوَالَهُ مِنْهُمْ مَنْ ظَاهِرٌ ۝

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهُ ۖ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا الْحَقُّ ۖ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

قُلْ لَا تَسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نَسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبَّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ۖ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ۝

तू कह दे कि मुझे वह दिखाओ तो सही जिन्हें तुमने साझीदारों के रूप में उसके साथ मिला दिया है । ऐसा कदापि नहीं बल्कि वही अल्लाह है जो पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।28।

और हमने तुझे सब लोगों के लिए शुभ संदेश वाहक और सतर्ककारी बनाकर ही भेजा है परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते ।29।

और वे कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब (पूरा) होगा ? ।30।

तू कह दे कि तुम्हारे लिए एक (निर्धारित) दिन का वादा है जिससे तुम एक क्षण भी न पीछे रह सकते हो और न आगे बढ़ सकते हो ।31। (रुकू- $\frac{3}{9}$)

और उन लोगों ने कहा जिन्होंने इनकार किया कि हम कदापि इस कुरआन पर ईमान नहीं लाएंगे और न उन (भविष्यवाणियों) पर जो उसके सामने हैं । काश ! तू देख सकता कि जब अत्याचारी लोग अपने रब्ब के समक्ष ठहराए गए होंगे । उनमें से कुछ-कुछ (दूसरों) की ओर बात लौटा रहे होंगे । जिन्हें दुर्बल बना दिया गया था वे उनसे जिन्होंने अहंकार किया, कहेंगे कि यदि तुम न होते तो हम अवश्य मोमिन हो जाते ।32।

जिन लोगों ने अहंकार किया वे उनसे जो दुर्बल बना दिए गए थे कहेंगे : क्या हमने तुम्हें हिदायत से जब वह तुम्हारे पास

قُلْ أَرُونِي الَّذِينَ أَحَقُّكُمْ بِهِ شُرَكَاءَ
كَلَّا بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا
وَنَذِيرًا وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَيَقُولُونَ مَتَى هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ۝

قُلْ لَّكُمْ مِيعَادٌ يَوْمٍ لَا تَسْتَخِرُونَ عَنْهُ
سَاعَةً وَلَا تَسْتَقْدِمُونَ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ نُؤْمِنَ بِهَٰذَا
الْقُرْآنِ وَلَا بِالَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَلَوْ تَرَى
إِذِ الظَّالِمُونَ مَوْقُوفُونَ عِندَ رَبِّهِمْ
يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلَىٰ بَعْضٍ الْقَوْلَ يَقُولُ
الَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِّلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا
لَوْلَا أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِينَ ۝

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا لِّلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا
أَنَحْنُ صَدَدٌ لَّكُمْ عَنِ الْهَدَىٰ بَعْدَ إِذْ

आई, रोका था ? (नहीं) बल्कि तुम स्वयं ही अपराधी थे । 33।

और वे लोग जो दुर्बल बना दिए गए थे, उन अहंकारियों से कहेंगे, वस्तुतः यह तो रात-दिन किया जाने वाला एक छल था । जब तुम हमें इस बात का आदेश देते थे कि हम अल्लाह का इनकार कर दें और उसके साझीदार ठहराएँ । और वे अपने पश्चाताप को छिपाते फिरेंगे जब अज़ाब को देखेंगे और हम उन लोगों की गर्दनो में तौक़ डालेंगे जिन्होंने इनकार किया । क्या जो वे किया करते थे उसके अतिरिक्त भी कोई प्रतिफल दिए जाएँगे ? । 34।

और हमने जब कभी किसी बस्ती में कोई सतर्ककारी भेजा तो उसके संपन्न लोगों ने कहा कि जिस संदेश के साथ तुम भेजे गए हो हम उसका पुरज़ोर इनकार करने वाले हैं । 35।

और उन्होंने कहा, हम धन और संतान में बहुत अधिक हैं और हमें अज़ाब नहीं दिया जाएगा । 36।

तू कह दे, निःसन्देह मेरा रब्ब जिसके लिए चाहता है जीविका को विस्तृत कर देता है और तंग भी करता है । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते । 37।

(सूकू 4/10)

और तुम्हारे धन और तुम्हारी संतान ऐसी वस्तु नहीं जो तुम्हें हमारे समक्ष निकटता के पद तक ला सकें । सिवाए उसके जो ईमान लाया और नेक कर्म

جَاءَكُمْ بَلٌّ كُنْتُمْ مُّجْرِمِينَ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ اسْتَضَعُّوا لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا بَلٌّ مَكْرٌ اَيْلٍ وَالتَّهَارِ اِذْ تَأْمُرُونَنَا اَنْ نَّكْفِرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهُ اَنْدَادًا ۚ وَاَسْرُوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوْا الْعَذَابَ ۚ وَجَعَلْنَا الْاَغْلَلَ فِيْ اَعْنَاقِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ هَلْ يُجْرُونَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝

وَمَا اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَا ۙ اِنَّا بِمَا اُرْسِلْتُمْ بِهِ كٰفِرُوْنَ ۝

وَقَالُوْا اِنْحَنُ اَكْثَرُ اَمْوَالٍ وَّاَوَّلَادًا ۚ وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ۝

قُلْ اِنَّ رَّبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝

وَمَا اَمْوَالُكُمْ وَلَا اَوْلَادُكُمْ بِآتِيْ تَقْرِيبِكُمْ عِنْدَنَا رُلْفٰی اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ

करता रहा । अतः यही वे लोग हैं जिनको उनके कर्मों के बदले जो वे करते थे दोहरा प्रतिफल दिया जाएगा । और वे अट्टालिकाओं में शांतिपूर्वक रहने वाले हैं । 138।

और वे लोग जो हमारे चिह्नों को असमर्थ करने का प्रयत्न करते हुए दौड़े फिरते हैं, यही लोग अज़ाब में डाले जाने वाले हैं । 139।

तू कह दे कि निःसन्देह मेरा रब अपने भक्तों में से जिसके लिए चाहे जीविका को विस्तृत कर देता है । और (कभी) उसके लिए (जीविका) को संकुचित भी करता है । और जो चीज़ भी तुम खर्च करते हो तो वही है जो उसका प्रतिफल देता है । और वह जीविका प्रदान करने वालों में सर्वश्रेष्ठ है । 140।

और जिस दिन वह उन सब को एकत्रित करेगा फिर फ़रिश्तों से पूछेगा, क्या ये लोग तुम्हारी ही उपासना किया करते थे ? । 141।

वे कहेंगे, पवित्र है तू । उनके बदले तू हमारा मित्र है । बल्कि वे तो जिल्लों की उपासना किया करते थे (और) इनमें से अधिकतर उन्हीं पर ईमान लाने वाले थे । 142।*

صَالِحًا فَأُولَٰئِكَ لَهُمْ جَزَاءُ الضَّعِيفِ
بِمَاعْمِلُواوَهُمْ فِي الْغُرَفِ اٰمِنُوْنَ ۝۳۸

وَالَّذِينَ يَسْعَوْنَ فِيْ اٰيَاتِنَا مُعْجِزِيْنَ اُولَٰئِكَ
فِي الْعَذَابِ مُخَضَّرُوْنَ ۝۳۹

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَاءُ مِنْ
عِبَادِهِ وَيَقْدِرُ لَهُ ۖ وَمَا تَنْفَقُ مِنْ شَيْءٍ
فَهُوَ يَخْلُقُهُ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرَّزٰقِيْنَ ۝۴۰

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ يَقُوْلُ
لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِهٰٓؤُلَآءِ اَيَّاكُمْ كَانُوْا
يَعْبُدُوْنَ ۝۴۱

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيْنَا مِنْ دُوْنِهِمْ
بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْاِجْنَءَ اَكْثَرُهُمْ
بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ ۝۴۲

* आयत संख्या 41-42 इन आयतों में उन मुश्रिकों का वर्णन है जो वस्तुतः अपने बड़े-बड़े सरदारों को उपास्य बना बैठे थे । यहाँ जिल्ल से अभिप्राय यही सरदार हैं । मुश्रिक लोग कुछ फ़रिश्तों के नाम भी लिया करते हैं कि वे उनकी उपासना करते हैं । यह फ़रिश्तों पर केवल मिथ्यारोप है और फ़रिश्ते क़यामत के दिन इन बातों से स्वयं के पवित्र होने की घोषणा करेंगे ।

अतः आज तुम में से कोई किसी अन्य को किसी प्रकार के लाभ पहुँचाने पर समर्थ होगा न हानि पहुँचाने का । और हम उन लोगों से जिन्होंने अत्याचार किया, कहेंगे, इस अग्नि के अज़ाब को चखो जिसको तुम झुठलाया करते थे । 43।

और जब उन के समक्ष हमारी स्पष्ट आयतें पढ़ी जाती हैं, वे कहते हैं कि यह केवल एक साधारण व्यक्ति है जो तुम्हें उससे रोकना चाहता है जिसकी तुम्हारे पूर्वज उपासना किया करते थे । और वे कहते हैं यह एक बड़े झूठ के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है जो गढ़ लिया गया है । और उन लोगों ने जिन्होंने सत्य का इनकार किया जब वह उनके पास आया, कहा कि यह एक खुला-खुला जादू के अतिरिक्त कुछ नहीं । 44।

और हमने उन्हें कोई पुस्तकें नहीं दी जिन्हें वे पढ़ते और उनका उपदेश देते । और न ही तुझ से पहले हमने उनकी ओर कोई सतर्ककारी भेजा । 45।

और उन लोगों ने भी झुठला दिया था जो उनसे पहले थे । और ये तो उसके दसवें भाग को भी नहीं पहुँचे जो हमने उन लोगों को प्रदान किया था । अतः उन्होंने (भी जब) मेरे रसूलों को झुठलाया तो कैसी (कठोर) थी मेरी पकड़ ! 46। (रकू 5/11)

तू कह दे कि मैं केवल तुम्हें एक बात की नसीहत करता हूँ कि तुम दो दो और एक एक करके अल्लाह के लिए खड़े हो जाओ।

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا ۖ وَنَقُولُ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ النَّارِ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ٤٣

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالُوا مَا هَذَا إِلَّا رَجُلٌ يُرِيدُ أَنْ يَصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُكُمْ ۖ وَقَالُوا مَا هَذَا إِلَّا أَفْكٌ مُّفْتَرًى ۚ وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ٤٤

وَمَا آتَيْنَهُمْ مِنْ كُتُبٍ يَدْرُسُونَهَا وَمَا أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَذِيرٍ ٤٥

وَكَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَمَا بَلَغُوا مَعْشَارَ مَا آتَيْنَهُمْ فَكَذَّبُوا رُسُلِي ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ٤٦

قُلْ إِنَّمَا أَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ أَنْ تَقُومُوا لِلَّهِ مَشْئِئًا وَّفَرَادًى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوا ۚ مَا

फिर खूब विचार करो । तुम्हारे साथी को कोई पागलपन नहीं । वह तो केवल एक कठोर अज़ाब से पूर्व तुम्हें सतर्क करने वाला (बन कर आया) है । 147।

तू कह दे, जो भी मैं तुम से बदला माँगता हूँ वह तुम्हारे ही लिए है । मेरा बदला तो अल्लाह के सिवा किसी पर नहीं । और वह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है । 148।

तू कह दे कि निःसन्देह मेरा रब्ब सत्य के द्वारा (झूठ पर) प्रहार करता है । (वह) अदृश्य विषयों का बहुत जानने वाला (है) । 149।

तू कह दे कि सत्य आ चुका है और मिथ्या न तो (कुछ) आरम्भ कर सकता है और न (उसे) दोहरा सकता है । 150।

तू कह दे कि यदि मैं पथभ्रष्ट हो जाऊँ तो मैं स्वयं अपने (हित के) विरुद्ध पथभ्रष्ट हूँगा । और यदि मैं हिदायत पा जाऊँ तो (ऐसा केवल) इस लिए (होगा) कि मेरा रब्ब मेरी ओर वह्द करता है । निःसन्देह वह बहुत सुनने वाला (और) निकट रहने वाला है । 151।

और काश ! तू देख सके जब वे अत्यन्त घबराहट का आभास करेंगे और (उसका) समाप्त होना किसी प्रकार संभव न होगा और वे समीप के स्थान से (अर्थात् शीघ्रता पूर्वक) पकड़े जाएंगे । 152।

और वे कहेंगे, हम उस पर ईमान ले आए परन्तु एक दूर के स्थान से उनका (ईमान

بَصَاحِبِكُمْ مِنْ جَنَّةٍ ۚ إِنَّ هُوَ إِلَّا نَذِيرٌ
لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۝

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۚ إِنَّ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
شَهِيدٌ ۝

قُلْ إِنَّ رَبِّي يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَامُ
الْغُيُوبِ ۝

قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِيُ الْبَاطِلُ
وَمَا يُعِيدُ ۝

قُلْ إِنْ صَلَّيْتُ فَأِنَّمَا أَضِلُّ عَلَى
نَفْسِي ۚ وَإِنْ اهْتَدَيْتُ فِيمَا يُوحَىٰ
إِلَىٰ رَبِّي ۚ إِنَّهُ سَمِيعٌ قَرِيبٌ ۝

وَلَوْ تَرَىٰ إِذْ فَرَغُوا فَلَافُوتَ وَأَخِذُوا
مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ۝

وَقَالُوا آمَنَّا بِهِ ۚ وَإِنَّا لَهُمُ التَّنَاسُ

को) पकड़ लेना कैसे सम्भव हो सकता है ।53।

हालाँकि वे इससे पूर्व उसका इनकार कर चुके थे । और वे एक दूर के स्थान से अदृश्य (विषयों) में अटकल पच्चू के तीर चलाएँगे ।54।

और उनके और जो वे चाहेंगे उसके बीच एक रोक डाल दी जाएगी जैसा कि उससे पहले उनके जैसे लोगों के साथ किया गया । निःसन्देह वे सदा एक बेचैन कर देने वाली शंका में पड़े रहे ।55।

(सू 6/12)

مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝

وَقَدْ كَفَرُوا بِهِ مِنْ قَبْلُ وَيَقْذِفُونَ
بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيدٍ ۝

وَحِيلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُونَ كَمَا
فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِنْ قَبْلُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا
فِي شَكٍّ مُرِيبٍ ۝

ع
۱۲

35- सूरः फ़ातिर

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 46 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ भी इससे पूर्ववर्ती सूरः की भाँति अल्हम्दु शब्द से हुआ है । पिछली सूरः में धरती व आकाश पर अल्लाह तआला की बादशाही और समस्त ब्रह्माण्ड का अल्लाह तआला की स्तुति में लीन रहने का वर्णन है । अल्लाह तआला ने जब धरती और आकाश को पहली बार उत्पन्न किया तो इस पर हमें उसकी स्तुति करने का आदेश दिया गया है । क्योंकि धरती और आकाश को आरम्भ में उत्पन्न करना उद्देश्यहीन नहीं हो सकता । यहाँ धरती और आकाश के अस्तित्व से पूर्व एक सृष्टिकर्ता रब्ब की कृपा का उल्लेख किया गया है ।

आयत सं. 2 में उन फ़रिश्तों का वर्णन है जो दो-दो और तीन-तीन तथा चार-चार पंख रखते हैं । इससे कदापि यह तात्पर्य नहीं कि फ़रिश्तों के भौतिक पंख भी होते हैं । बल्कि यहाँ पदार्थ के चार मौलिक रासायनिक संयोजन का वर्णन है जिसके परिणाम स्वरूप समस्त रासायनिक चमत्कार प्रकट होते हैं । विशेषकर आस्तिक वैज्ञानिक इस ओर हमारा ध्यान खींचते हैं कि कार्बन के चार रासायनिक संयोजन का अन्य पदार्थों के साथ रासायनिक प्रतिक्रिया के परिणाम-स्वरूप वह जीवन अस्तित्व में आया है जिसे वैज्ञानिक Carbon based life (कार्बन आधारित जीवन) कहते हैं । पवित्र कुरआन की इस आयत में यह वर्णन कर दिया गया कि इससे अधिक पंख वाले फ़रिश्ते भी हैं । जिनको तुम अब तक नहीं जानते और उनके प्रभाव से बहुत से महत्वपूर्ण रासायनिक परिवर्तन होंगे, जिनकी इस समय मनुष्य कल्पना भी नहीं कर सकता ।

इस सूरः में एक बार फिर दो ऐसे समुद्रों का वर्णन किया गया है जिनमें से एक का पानी खारा और एक का मीठा है । परन्तु अल्लाह तआला की आश्चर्यजनक उत्पत्ति है कि खारे पानी में पलने वाले जीवों का माँस भी मीठा ही रहता है और मीठे पानी में पलने वाले जीवों का माँस भी मीठा ही होता है । यह कैसे संभव हुआ कि खारा जल लगातार पीने वाली मछलियों का माँस उस जल के खारे प्रभावों से पूर्णतया मुक्त है ।

इसके पश्चात ऐसी आयतें (सं. 17, 18) आती हैं जो मानवजाति को सावधान कर रही हैं कि यदि तुमने अल्लाह तआला की नेमतों पर कृतज्ञता प्रकट नहीं की और उसके इनकार पर डटे रहे तो यदि अल्लाह चाहे तो तुम्हें धरती पर से समाप्त कर दे और तुम्हारे स्थान पर एक और सृष्टि को ले आए और ऐसा करना अल्लाह के सामर्थ्य से बाहर नहीं है ।

इसके पश्चात फिर मनुष्य को ध्यान दिलाया गया कि धरती पर जीवन का प्रत्येक

रूप आकाश से बरसने वाले जल पर ही निर्भर है। इस जल से विभिन्न प्रकार के फल उगते हैं। उनके रंग भिन्न-भिन्न हैं। यह रंगों की विभिन्नता इस बात की ओर संकेत करती है कि जिस प्रकार एक ही रंग की मिट्टी से उत्पन्न फलों के तुम विभिन्न रंग देखते हो, इसी प्रकार यद्यपि मनुष्य एक ही आदम की संतान हैं परन्तु उनके रंग भी भिन्न-भिन्न हैं और उनकी भाषाएँ भी भिन्न भिन्न हैं। हालाँकि उनकी भाषाएँ एक ही भाषा से निकलीं और अब उनके मध्य कोई भी समानता दिखाई नहीं देती सिवाए उन सूक्ष्मदर्शियों के जिनको अल्लाह तआला ज्ञान प्रदान करे।

ये लोग जो अल्लाह का साझीदार ठहराते हैं, धरती में उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के प्रसंग से तो उसका कोई साझीदार ठहरा नहीं सकते। तो क्या फिर उनकी कल्पना उन आसमानों में अल्लाह के साझीदार ठहराती है जिन आसमानों का उनको कुछ भी ज्ञान नहीं।

इसके पश्चात मानव-जाति को सावधान किया गया है कि धरती और आकाश अपने आप अपनी धुरियों पर स्थित नहीं हैं बल्कि यदि अल्लाह तआला की शक्ति के हाथ उनको लगातार थामे न रखें और यदि एक बार ये अपनी धुरियों से हट जाएँ तो धरती और आकाश में महाप्रलय आ जाएगा और कभी फिर दोबारा आकाशीय पिण्ड किसी धुरी पर स्थित नहीं हो सकेंगे।



سُورَةُ فَاطِرٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَخَمْسَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

सम्पूर्ण स्तुति अल्लाह ही के लिए है जो आसमानों और धरती का पैदा करने वाला है । फ़रिश्तों को दो-दो, तीन-तीन और चार-चार पंखों (अर्थात् शक्तियों) वाले दूत बनाने वाला । वह सृष्टि में जो चाहता है बढ़ोत्तरी करता है । निःसन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।।2।

अल्लाह मनुष्यों के लिए जो कृपा जारी कर दे उसे कोई रोकने वाला नहीं । और जिस वस्तु को वह रोक दे उसे उसके (रोकने) के पश्चात कोई जारी करने वाला नहीं और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।।3।

हे लोगो ! अपने ऊपर अल्लाह की नेमत को याद करो । क्या अल्लाह के सिवा भी कोई स्रष्टा है जो तुम्हें आकाश और धरती से जीविका प्रदान करता है ? उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । अतः तुम कहाँ उल्टे फिराए जाते हो ।।4।

और यदि वे तुझे झुठला दें तो तुझ से पहले भी कई रसूल झुठलाए गए । और अल्लाह ही की ओर सब मामले लौटाए जाएंगे ।।5।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
جَاعِلِ الْمَلَكَةِ رُسُلًا أُولَى أَجْنَحَةٍ
مَّثْنَى وَثُلثَ وَرُبْعٍ ۚ يَزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا
يَشَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ②

مَا يَفْتَحِ اللَّهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَحْمَةٍ فَلَا
مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ فَلَا مُرْسِلَ لَهُ
مِنْ بَعْدِهِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ
هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنْ
السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ قَالُوا
تُؤْفِكُونَ ④

وَإِنْ يَكْذِبُواكَ فَتَكْذِبْتَ رُسُلًا ۚ مِنْ
قَبْلِكَ ۚ وَالِلَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ⑤

हे लोगो ! अल्लाह का वादा निःसन्देह सच्चा है । अतः तुम्हें सांसारिक जीवन कदापि किसी धोखे में न डाले और अल्लाह के विषय में तुम्हें बड़ा धोखेबाज़ (अर्थात् शैतान) कदापि धोखा न दे सके । 16।

निःसन्देह शैतान तुम्हारा शत्रु है । अतः उसे शत्रु ही बनाए रखो । वह अपने गिरोह को केवल इस उद्देश्य से बुलाता है ताकि वे धधकती हुई अग्नि में पड़ने वालों में से हो जाएँ । 17।

जिन लोगों ने इनकार किया उनके लिए कठोर अज़ाब है । और जो लोग ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए क्षमादान है और बहुत बड़ा प्रतिफल है । 18। (रुकू 1/3)

अतः क्या जिसे उसका कु-कर्म सुन्दर करके दिखाया जाए और वह उसे सुन्दर देखने लगे (उससे अधिक धोखा खाया हुआ और कौन होगा ?) अतः निःसन्देह अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है । अतः तेरा दिल उन पर पछतावा करते-करते (बैठ) न जाये । निःसन्देह अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वे करते हैं । 19।

और अल्लाह वह है जिसने हवाओं को भेजा । अतः वे बादलों को उठाती हैं । फिर हम उसे एक मृत बस्ती की ओर हाँक ले जाते हैं फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृतावस्था के पश्चात जीवित

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيَاةُ الدُّنْيَا ۖ وَلَا يَغُرَّنَّكُمُ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ①

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوهُ عَدُوًّا ۚ إِنَّمَا يَدْعُوا حِزْبَهُ لِيَكُونُوا مِنْ أَصْحَابِ السَّعِيرِ ②

الَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ③

أَفَمَنْ زُيِّنَ لَهُ سُوءُ عَمَلِهِ فَرَاهُ حَسَنًا ۚ فَإِنَّ اللَّهَ يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ فَلَا تَذْهَبُ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسْرَتٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَصْنَعُونَ ④

وَاللَّهُ الَّذِي أَرْسَلَ الرِّيحَ فَتُثِيرُ سَحَابًا ۖ فَسُقْنَاهُ إِلَى بَلَدٍ مَمْنُونٍ ۖ فَاحْيَيْنَا بِهِ

कर देते हैं । इसी प्रकार दोबारा जी उठना है । 110।

जो भी सम्मान का इच्छुक है तो अल्लाह ही के अधीन सब सम्मान है । उसी की ओर पवित्र बात उठती है और उसे नेक कर्म ऊँचाई की ओर ले जाता है और वे लोग जो बुरी योजनाएँ बनाते हैं उनके लिए कठोर अज़ाब (निश्चित) है और उनकी योजना अवश्य व्यर्थ जाएगी । 111।*

और अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया । फिर वीर्य से, फिर तुम्हें जोड़े बनाया । और कोई स्त्री गर्भवती नहीं होती और न ही वह बच्चा जनती है परन्तु उस के ज्ञान के अनुसार । और कोई वृद्ध (मनुष्य) दीर्घायु नहीं पाता और न उसकी आयु से कुछ कम किया जाता है, परन्तु वह (एक) ग्रंथ में मौजूद है । निःसन्देह यह (बात) अल्लाह के लिए सरल है । 112।

और दो समुद्र एक ही जैसे नहीं हो सकते। यह अत्यन्त मीठे पानी वाला है । इसका पीना स्वादिष्ट और रुचिकर है और यह (दूसरा) खूब नमकीन (और) खारा है और तुम इन सभी से ताज़ा माँस खाते हो और सौन्दर्य के वे सामान निकालते हो जिन्हें तुम पहनते हो और तू उसमें नौकाओं को देखेगा कि वे

الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ كَذَلِكَ النُّشُورُ ۝
مَنْ كَانَ يَرْيِدُ الْغُرَّةَ فَلِلَّهِ الْغُرَّةُ جَمِيعًا ۚ
إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ
الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ۚ وَالَّذِينَ يَمْكُرُونَ
السَّيِّئَاتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۖ وَمَكْرُ
أُولَئِكَ هُوَ يُنْزَرُ ۝

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُطْفَةٍ ثُمَّ
جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ۚ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَى
وَلَا تَضَعُ إِلَّا يَعْلَمُهُ ۚ وَمَا يَعْمَرُ مِنْ
مُعَمَّرٍ وَلَا يُنْقِصُ مِنْ عُمُرٍ إِلَّا
فِي كِتَابٍ ۚ إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرَانِ ۚ هَذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ
سَائِغٌ شَرَابُهُ وَهَذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۚ وَمِنْ
كُلِّ تَاكُلُونَ لَحْمًا طَرِيًّا وَتَسْتَخْرِجُونَ
حَلِيَةً تَلْبَسُونَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيهِ

* कुछ लोग दुनिया के बड़े लोगों से मेल-मिलाप रखने में अपना सम्मान समझते हैं । परन्तु मोमिनों को यह विश्वास दिलाया गया है कि सम्मान अल्लाह ही की ओर से प्रदान होता है और विरोधी उनको दुनिया में अपमानित करने का जो भी प्रयास करेगा वे व्यर्थ जाएगा ।

(पानी को) चीरते हुए चलती हैं (यह व्यवस्था इस लिए है) ताकि तुम उसकी कृपा में से कुछ ढूँढो और तुम कृतज्ञता प्रकट करो 113।

वह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है और उसने सूर्य और चन्द्रमा को सेवा में लगा दिया है। प्रत्येक अपने निर्धारित समय की ओर चल रहा है। यह है अल्लाह, तुम्हारा रबब। उसी की बादशाहत है। और जिन लोगों को तुम उसके सिवा पुकारते हो वे खजूर की गुठली की झिल्ली के भी स्वामी नहीं 114।

यदि तुम उन्हें पुकारो तो वे तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे और यदि सुन भी लें तो तुम्हें उत्तर नहीं देंगे। और क्रयामत के दिन तुम्हारे उपास्य ठहराने का इनकार कर देंगे। और तुझे एक महान सूचना देने वाले की भाँति कोई और सतर्क नहीं 115। (रुकू 2/14)

हे लोगो ! तुम ही हो जो अल्लाह पर निर्भर हो और अल्लाह निःस्पृह (और) समस्त प्रकार की स्तुति का स्वामी है 116।

यदि वह चाहे तो तुम्हें ले जाए और एक नई सृष्टि ले आए 117।

और यह अल्लाह के लिए कदापि कठिन नहीं 118।

और कोई बोझ उठाने वाली (जान) किसी दूसरी का बोझ नहीं उठाएगी। और यदि कोई बोझ से लदी हुई अपने

مَوَاحِرٍ لِّتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑩

يُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُؤَلِّجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ۚ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۚ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ مَا يَمْلِكُونَ مِنْ قِطْمِيرٍ ⑪

إِنْ تَدْعُوهُمْ لَا يَسْمَعُوا دَعَاءَكُمْ وَلَوْ سَمِعُوا مَا اسْتَجَابُوا لَكُمْ ۖ وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكْفُرُونَ بَشِرِكُمْ ۖ وَلَا يَنْتِفِكُ مِثْلُ خَيْرٍ ⑫

يَا أَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ⑬

إِنْ يَشَاءُ يُدْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ⑭ وَمَا ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ بِعَزِيزٍ ⑮

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَى ۚ وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَآ لَا يَحْمِلْ مِنْهُ شَيْءٌ

बोझ की ओर बुलाएगी तो उस (के बोझ में) से कुछ भी न उठाया जाएगा चाहे वह निकट संबंधी ही क्यों न हो । तू केवल उन लोगों को सतर्क कर सकता है जो अपने रब से उसके अदृश्य होने पर भी भयभीत रहते हैं । और नमाज़ को क़ायम करते हैं । और जो भी पवित्रता धारण करे तो अपनी ही जान के लिए पवित्रता धारण करता है । और अल्लाह की ओर ही अन्तिम ठिकाना है । 119।

और अंधा और आँखों वाला एक जैसे नहीं होते । 120।

और न अन्धकार और आलोक । 121।

और न छाया और धूप । 122।

इसी प्रकार जीवित और मृत भी बराबर नहीं होते । निःसन्देह अल्लाह जिसे चाहता है सुनाता है । और जो क़ब्रों में पड़े हैं तू उन्हें कदापि नहीं सुना सकता । 123।

तू तो केवल एक सावधान करने वाला है । 124।

निःसन्देह हमने तुझे सत्य के साथ शुभ-समाचार दाता और सतर्ककारी बना कर भेजा है । और कोई समुदाय (ऐसा) नहीं जिसकी ओर कोई सतर्ककारी न आया हो । 125।

और यदि वे तुझे झुठला दें तो निःसन्देह जो लोग उनसे पहले थे वे भी झुठला

وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ إِنَّمَا تُنذِرُ الَّذِينَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۖ
وَمَنْ تَزَكَّىٰ فَإِنَّمَا يَتَزَكَّىٰ لِنَفْسِهِ ۖ
وَإِلَى اللَّهِ الْمَصِيرُ ۝

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ ۝

وَلَا الظُّلُمَاتُ وَلَا النُّورُ ۝

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُورُ ۝

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَاءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ۚ إِنَّ
اللَّهَ يُسْمِعُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَا أَنْتَ بِمُسْمِعٍ
مَّن فِي الْقُبُورِ ۝

إِنْ أَنْتَ إِلَّا نَذِيرٌ ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ بِالْحَقِّ بَشِيرًا وَنَذِيرًا ۚ وَإِنْ
مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيهَا نَذِيرٌ ۝

وَإِنْ يُكَذِّبُوكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ

चुके हैं । उनके पास भी उनके रसूल स्पष्ट चिह्न और अलग-अलग ग्रन्थ तथा उज्ज्वल पुस्तक लेकर आए थे ।26।

फिर जिन्होंने इनकार किया, मैंने उन्हें पकड़ लिया । अतः कैसा कठोर थी मेरी पकड़ ! 127। (रुकू 3/5)

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से पानी उतारता है । फिर हम भाँति-भाँति के फल उससे पैदा करते हैं जिनके रंग भिन्न भिन्न हैं । और पहाड़ों में कुछ सफेद टुकड़े हैं और कुछ लाल हैं । उनके रंग भिन्न-भिन्न हैं और (उनमें) काले स्याह रंगों वाले भी हैं ।28।

और इसी प्रकार लोगों में और धरती पर चलने फिरने वाले प्राणियों में और चौपायों में से ऐसे हैं कि प्रत्येक के रंग भिन्न-भिन्न हैं । निःसन्देह अल्लाह के भक्तों में से वे ही उससे डरते हैं जो ज्ञान रखने वाले हैं । निःसन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है ।29।

निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह की पुस्तक को पढ़ते हैं और नमाज़ को कायम करते हैं । और जो हमने उनको प्रदान किया है उसमें से गुप्त रूप से भी खर्च करते हैं और व्यक्त रूप से भी । वे ऐसे व्यापार की आशा लगाए हुए हैं जो कभी नष्ट नहीं होगा ।30।

ताकि वह उनको उनके प्रतिफल (उनके सामर्थ्य के अनुसार) भरपूर दे बल्कि अपनी कृपा से उन्हें उससे भी अधिक

مِنْ قَبْلِهِمْ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ
وَبِالْزُبُرِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ۝

ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيرِ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَأَخْرَجْنَا بِهِ ثَمَرَاتٍ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا
وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بَيَضٌ وَحُمْرٌ
مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيبُ سُودٌ ۝

وَمِنَ النَّاسِ وَالْدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ
مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَلِكَ ۚ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ
مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ
غَفُورٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَتْلُونَ كِتَابَ اللَّهِ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَآتَوْا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا
وَعَلَانِيَةً يَرْجُونَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُورَ ۚ

لِيُؤْفِقَهُمْ أَجُورَهُمْ وَيَزِيدَهُمْ مِنْ

बढ़ाए। निःसन्देह वह क्षमा करने वाला (और) अत्यन्त गुणग्राही है। 131।

और जो हमने तेरी ओर पुस्तक में से वहइ किया है वही सत्य है। (वह) उसकी पुष्टि करने वाला है जो उसके सामने है। निःसन्देह अल्लाह अपने भक्तों से सदा अवगत रहने वाला (और उन पर) गहन दृष्टि रखने वाला है। 132।

फिर हमने अपने भक्तों में से जिन्हें चुन लिया उन्हें पुस्तक का उत्तराधिकारी बना दिया। अतः उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो अपनी जान के पक्ष में अत्याचारी हैं और ऐसे भी हैं जो मध्यमार्गी हैं और उनमें ऐसे भी हैं जो नेकियों में अल्लाह की आज्ञा से आगे बढ़ जाने वाले हैं। यही है जो बहुत बड़ी कृपा है। 133।*

चिरस्थायी स्वर्ग हैं जिनमें वे प्रविष्ट होंगे। वे उनमें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और उनमें उनका वस्त्र रेशम होगा। 134।

और वे कहेंगे कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिसने हम से शोक दूर कर दिया। निःसन्देह हमारा रब्ब बहुत ही क्षमा करने वाला (और) गुणग्राही है। 135।

जिसने अपनी कृपा से हमें एक विशेष दर्जा वाले घर में उतारा है। इसमें हमें न

فَضْلِهِ ۚ إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝

وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ مِنَ الْكِتَابِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ بِعِبَادِهِ لَخَبِيرٌ بَصِيرٌ ۝

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتَابَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ۖ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۖ وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۖ وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرَاتِ ۖ بإِذْنِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝

جَنَّتْ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ۝

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزْنَ ۚ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝

الَّذِي أَحَلَّنَا دَارَ الْمَقَامَةِ مِنْ فَضْلِهِ ۚ

* यहाँ मोमिनों की क्रमशः तीन अवस्थाओं का वर्णन है। एक वे जिन में पाप की गंदगी होती है और वे ज़ोर-ज़बरदस्ती से अपनी तामसिक प्रवृत्ति को अल्लाह तआला के मार्ग की ओर मोड़ते हैं। दूसरे वे जो मध्यमार्गी हैं। और तीसरे वे जो पुण्य कर्म में सबसे आगे बढ़ने वाले हैं।

कोई कठिनाई पहुँचेगी और न कोई थकावट छुएगी ।36।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनके लिए नरक की आग है । न तो उनका फ़ैसला निपटाया जाएगा कि वे मर जाएँ । और न ही उस (अग्नि) के अज़ाब में उनसे कमी की जाएगी । इसी प्रकार हम प्रत्येक कृतघ्न को प्रतिफल दिया करते हैं ।37।

और वे उसमें चीख रहे होंगे, हे हमारे रब्ब ! हमें निकाल ले । हम नेक-कर्म करेंगे जो हम किया करते थे वे उनसे भिन्न होंगे । क्या हमने तुम्हें इतनी आयु नहीं दी थी कि जिसमें कोई उपदेश ग्रहण करने वाला उपदेश ग्रहण कर सके ? इसी प्रकार तुम्हारे पास एक सतर्क करने वाला भी आया था । अतः (अपने अत्याचार का प्रतिफल) चखो और अत्याचार करने वालों के पक्ष में कोई सहायक नहीं ।38। (रूकू 4/16)

अल्लाह निःसन्देह आकाशों और धरती के अदृश्य को जानने वाला है। वह निःसन्देह उसका ज्ञान रखता है जो कुछ सीनों में है ।39।

वही है जिसने तुम्हें धरती में उत्तराधिकारी बनाया । अतः जो इनकार करे उसका इनकार उसी पर पड़ेगा । और काफ़िरों को उनका कुफ़्र उनके रब्ब के निकट सिवाए (उसकी) नाराज़गी के किसी चीज़ में नहीं बढ़ाता । और

لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَلَا يَمَسُّنَا فِيهَا لُغُوبٌ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ لَا يُقْضَىٰ عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِنْ عَذَابِهَا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كٰفُوْرٍ ۝

وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا رَبَّنَا اٰخْرِجْنَا نَعْمَلْ صٰلِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلْ ۚ اَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرْ فِيْهِ مَن تَذَكَّرْ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ۚ فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۝

اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذٰتِ الصُّدُوْرِ ۝

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلَآِٔفَ فِي الْاَرْضِ ۚ فَمَن كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهُ ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكَافِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهٖمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ

काफ़िरों को उनका कुफ़्र घाटे के अतिरिक्त और किसी चीज़ में नहीं बढ़ाता। 40।

तू पूछ, क्या तुमने अपने वे (काल्पनिक) साझीदार देखे हैं जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो? मुझे दिखाओ तो सही कि उन्होंने धरती में से क्या पैदा किया है अथवा उनके लिए (केवल) आसमानों में साझीदारी है। या क्या हमने उन्हें कोई पुस्तक दी थी, फिर वे उसके आधार पर एक स्पष्ट तर्क पर स्थित हैं? नहीं, बल्कि अत्याचारियों में से उनके कुछ, कुछ दूसरों से केवल धोखे का वादा करते हैं। 41।

निःसन्देह अल्लाह आकाशों और धरती को रोके हुए है कि वे टल न जायँ। और यदि वे दोनों (एक बार) टल गए तो उसके पश्चात कोई नहीं जो फिर उन्हें थाम सके। निःसन्देह वह बहुत सहनशील (और) बहुत क्षमा करने वाला है। 42।

और उन्होंने अल्लाह की पक्की क़समें खाई कि यदि उनके पास कोई सतर्ककारी आया तो अवश्य वे प्रत्येक समुदाय से बढ़ कर हिदायत पा जाएँगे। अतः जब उनके पास कोई सतर्ककारी आया तो (उसका आना) उन्हें घृणा के अतिरिक्त किसी चीज़ में न बढ़ा सका। 43।

(उनके) धरती में अहंकार करने और बुरी योजना बनाने के कारण से (ऐसा

وَلَا يَزِيدُ الْكَافِرِينَ كُفْرَهُمْ إِلَّا خَسَارًا ①

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَاءَ كُمُ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَا ذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمَوَاتِ أَمْ آتَيْنَهُمْ كِتَابًا فَهُمْ عَلَى بَيِّنَةٍ مِنْهُ ۚ بَلْ إِنْ يَعِدُ الظَّالِمُونَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا إِلَّا غُرُورًا ②

إِنَّ اللَّهَ يُمِسِّكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُولَا وَلَئِنْ زَالَتَا إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِنْ بَعْدِهِ ۚ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ③

وَأَقْسَمُوا بِاللَّهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَهُمْ نَذِيرٌ لَيَكُونُنَّ أَهْلَى مِنْ أَحَدَى الْأُمَمِ ۖ فَلَمَّا جَاءَهُمْ نَذِيرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُورًا ④

اسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ⑤

हुआ) । और बुरी योजना केवल योजना बनाने वाले को ही घेरती है । अतः क्या वे पहले लोगों (पर जारी होने वाले अल्लाह) के विधान के सिवा कुछ और की प्रतीक्षा कर रहे हैं ? अतः तू कदापि अल्लाह के विधान में कोई परिवर्तन नहीं पाएगा तथा तू कदापि अल्लाह के विधान को टलते हुए नहीं पाएगा । 44।

क्या उन्होंने धरती में भ्रमण नहीं किया कि वे देख लेते कि उन लोगों का क्या अन्त हुआ जो उनसे पहले थे ? हालांकि वे शक्ति में उनसे बढ़ कर थे । और अल्लाह ऐसा नहीं कि आकाशों अथवा धरती में कोई चीज़ भी उसे विवश कर सके । निःसन्देह वह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) सामर्थ्य रखने वाला है । 45।

और यदि अल्लाह लोगों की उसके परिणाम स्वरूप धर-पकड़ करता जो उन्होंने कमाया, तो इस (धरती) की पीठ पर कोई चलने फिरने वाला प्राणी बाक़ी न छोड़ता । परन्तु वह उनको (अन्तिम) निर्धारित समय तक ढील देता है । फिर जब उनका (निर्धारित) समय आ जाएगा तो (खूब ख़ुल जाएगा कि) निःसन्देह अल्लाह अपने भक्तों पर गहन दृष्टि रखने वाला है । 46।* (रुकू 5/17)

* इस आयत में पाप को तो मनुष्य की ओर संबंधित किया गया परन्तु इसके परिणाम में पशुओं के विनाश का वर्णन किया गया !? जिसका यह अर्थ नहीं कि करे कोई और भरे कोई । बल्कि वास्तविकता यह है कि पशुओं के विनाश की स्थिति में यह दण्ड वस्तुतः मनुष्यों को ही मिलता है क्योंकि मनुष्य जीवन पशुओं पर निर्भर है । यदि पशु समाप्त हो जाएं तो मनुष्यों का जीवित रहना संभव नहीं । यहाँ अरबी शब्द दाब्बतुन से अभिप्राय धरती पर चलने फिरने और रेंगने वाले प्रत्येक प्रकार के जीव हैं ।

وَلَا يَحِيقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهِ ۚ
فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِينَ ۚ
فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۚ
وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللَّهِ تَحْوِيلًا ۝

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَكَانُوا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۚ وَمَا كَانَ اللَّهُ
لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا
فِي الْأَرْضِ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيمًا قَدِيرًا ۝

وَلَوْ يَوَّاخِذُ اللَّهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوا مَا
تَرَكَ عَلَى ظُهُرِهَا مِنْ دَابَّةٍ وَلَكِنْ
يُؤَخِّرُهُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَإِذَا جَاءَ
أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللَّهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيرًا ۝

36- सूर: यासीन

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 84 आयतें हैं ।

पिछली सूर: के अन्त पर काफ़ि़रों की उस दृढ़ प्रतिज्ञा का वर्णन किया गया है कि यदि उनके पास कोई सतर्ककारी आता तो वे पूर्ववर्ती सभी धर्मानुयायियों से बढ़ कर उसकी लाई हुई हिदायत पर ईमान ले आते । सूर: यासीन की प्रारम्भिक आयतों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करते हुए अल्लाह तआला कहता है कि तुझे हमने एक ऐसी जाति की ओर भेजा है जिसके पूर्वजों के निकट एक लम्बे समय से कोई सतर्ककारी नहीं आया था । परन्तु इस पर भी उनमें से अधिकतर के सम्बन्ध में अल्लाह तआला का यह कथन सत्य सिद्ध हुआ कि वे ईमान नहीं लाएँगे । अतः पिछली सूर: के अन्त पर काफ़ि़रों का यह दावा कि उनके पास यदि कोई सतर्ककारी आता तो वे अवश्य ईमान ले आते, इस सूर: में उसका खण्डन कर दिया गया है ।

इसके पश्चात नबियों के शत्रुओं का एक उदाहरण वर्णन किया गया है कि वास्तव में उनका अहंकार ही है जो उनको हिदायत स्वीकार करने से वंचित रखता है । जैसे किसी व्यक्ति की गर्दन में तौक़ डाला हुआ हो तो उसकी गर्दन अकड़ी रहती है ऐसे ही एक अहंकारी की गर्दन अकड़ी रहती है । अतः ईमान लाने का सौभाग्य केवल उनको प्राप्त होता है जिनके अंदर कोई अहंकार नहीं पाया जाता ।

आयत सं. 14 से जो वर्णन आरम्भ होता है व्याख्याकारों ने इसके सम्बन्ध में अनेकों कल्पनाएँ की हैं । परन्तु इसके सम्बन्ध में हज़रत हकीम मौलाना नूरुद्दीन ख़लीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक व्याख्या की है जो मन को भाती है और वह यह है कि पहले दो नबी तो हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम थे । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनका समर्थन करके उनको सम्मान दिया । परन्तु काफ़ि़रों के लगातार इनकार करने के पश्चात एक दूर की बस्ती से एक चौथा व्यक्ति उठा जिसने काफ़ि़रों को सावधान किया कि वह महान व्यक्ति जो तुम्हारे लिए हिदायत के असंख्य साधन उपलब्ध करता है और तुम से कोई बदला माँगता नहीं, उस पर ईमान ले आओ ।

कुरआन के अवतरण के समय तो अरब वासियों की जानकारी के अनुसार वनस्पतियों में नर और मादा के रूप में केवल खजूरों के जोड़े हुआ करते थे । और किसी की कल्पना में भी नहीं आ सकता था कि अल्लाह तआला ने न केवल प्रत्येक प्रकार के फलों के पौधों को जोड़ा-जोड़ा बनाया है बल्कि आयत सं. 37 यह दावा करती है कि

ब्रह्माण्ड की हर चीज़ जोड़ा-जोड़ा है। आज के विज्ञान ने इसी वास्तविकता पर से पर्दा उठाया है। यहाँ तक कि पदार्थ तथा अणु और परमाणु के कणों के भी जोड़े-जोड़े हैं। अतः जोड़ों का यह विषय एक असीमित विषय है। एकेश्वरवाद को समझने के लिए इस विषय को समझना आवश्यक है। केवल ब्रह्माण्ड का स्रष्टा ही है जिस को जोड़े की आवश्यकता नहीं, अन्यथा समस्त सृष्टि को जोड़े की आवश्यकता है।

इसके बाद एक आयत में पुनर्जीवन का विषय नए सिरे से वर्णन करते हुए उन मुर्दों को जो परकालीन उत्थान के समय उठाए जाएंगे, इस प्रकार आश्चर्य प्रकट करते हुए दिखाया गया है, जब वे कहेंगे कि वह कौन है जिसने हमें दोबारा जीवित कर दिया है। इसके उत्तर में कहा गया कि अल्लाह के समस्त रसूल सच ही कहा करते थे।

आयत सं. 81 में हरे वृक्ष से आग निकालने का जो अर्थ वर्णन किया गया है इससे लोग समझते हैं कि हरा वृक्ष जब शुष्क हो जाता है तो फिर उससे अग्नि उत्पन्न होती है। यह विषय अपने स्थान पर ठीक है। परन्तु वास्तव में हरे वृक्षों से भी जबकि वे हरे-भरे हों अग्नि पैदा हो सकती है और होती रहती है। अतः वनस्पति-विज्ञान के विशेषज्ञ बताते हैं कि चीड़ के वृक्षों के पत्ते जब तेज़ हवाओं के कारण एक दूसरे से टकराते हैं तो इस प्रकार लगातार टकराने से उनमें आग लग जाती है और बहुत बड़े-बड़े जंगल इस आग के कारण नष्ट हो जाते हैं।

इस सूरः की अन्तिम आयत भी परकालीन उत्थान के वर्णन पर समाप्त होती है जिसमें यह घोषणा की गई है कि ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु का स्वामी अल्लाह ही है। और उसी की ओर हे मानव समाज ! तुम लौटाए जाओगे।



سُورَةُ يَاسِينَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ أَرْبَعٌ وَثَمَانُونَ آيَةً وَخَمْسَةٌ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

या सय्यिदु : हे सरदार ! ।।2।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَاسِينَ ②

गूढ़ ज्ञान-पूर्ण कुरआन की क़सम ।3।

وَالْقُرْآنِ الْحَكِيمِ ③

(कि) निःसन्देह तू रसूलों में से है ।4।

إِنَّكَ لِمِنَ الْمُرْسَلِينَ ④

सन्मार्ग पर (अग्रसर है) ।5।

عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ⑤

(यह) पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) बार-बार दया करने वाले (अल्लाह) की ओर से अवतरित (है) ।6।

تَنْزِيلَ الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ⑥

ताकि तू ऐसे लोगों को सतर्क करे जिनके पूर्वज सतर्क नहीं किये गए । अतः वे असावधान पड़े हैं ।7।

لِتُنذِرَ قَوْمًا مَّا أُنْذِرَ آبَاؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُونَ ⑦

निःसन्देह उनमें से अधिकांश पर (अल्लाह का) कथन सत्य सिद्ध हो गया है । अतः वे ईमान नहीं लाएंगे ।8।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلَى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ⑧

निःसन्देह हमने उनकी गर्दनो में तौक डाल दिए हैं और वे ठुडियों तक पहुँचे हुए हैं । इस कारण वे सिर ऊँचा उठाए हुए हैं ।9।

إِنَّا جَعَلْنَا فِيْ أَعْنَاقِهِمْ أَغْلًا فَبِهِى إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُونَ ⑨

और हमने उनके सामने भी एक रोक बना दी है और उनके पीछे भी एक रोक बना दी है । और उन पर पर्दा

وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ

डाल दिया है इस कारण वे देख नहीं सकते 110।*

और चाहे तू उन्हें सतर्क करे अथवा न करे उन के लिए बराबर है, वे ईमान नहीं लाएंगे 111।

तू केवल उसे सतर्क कर सकता है जो उपदेश का अनुसरण करता है और रहमान (अल्लाह) से एकान्त में भी डरता है। अतः उसे एक बड़ी क्षमादान और सम्मानजनक प्रतिफल का शुभ-समाचार दे दे 112।

निःसन्देह हम हैं जो मुर्दों को जीवित करते हैं और हम उसे लिख लेते हैं जो वे आगे भेजते हैं और उनके चिह्नों को भी। और प्रत्येक वस्तु को हमने एक प्रमुख राजमार्ग में (धरती के नीचे) सुरक्षित कर रखा है 113। (रकू 1/8)

और उनके सामने (एक विशेष) बस्ती वासियों को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर। जब उस (बस्ती) में (अल्लाह की ओर से) रसूल आए 114।

जब हमने उनकी ओर दो (रसूल) भेजे तो उन्होंने दोनों को झुठला दिया। अतः हमने तीसरे के द्वारा (उन्हें) दृढ़ता प्रदान की। फिर उन्होंने कहा, निःसन्देह हम तुम्हारी ओर भेजे गए हैं 115।

उन्होंने (अर्थात् बस्ती वासियों ने) कहा, तुम हमारे जैसे मनुष्य के

خَلْفَهُمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ 110

وَسَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أُنذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ 111

إِنَّمَا تُنذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمَنَ بِالْغَيْبِ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَأَجْرٍ كَرِيمٍ 112

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي الْمَوْتَى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوا وَآثَارَهُمْ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ 113

وَأُصْرِبَ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ 114

إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ 115

قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ

* आयत सं. 9-10 : काफ़िरों के गर्दनो पर यूँ तो कोई तौक़ नहीं होते और सब काफ़िर अंधे भी नहीं होते। अवश्य ये आलंकारिक वर्णन है अर्थात् पुण्यकर्मों से रोकने वाले तौक़ उनकी गर्दनो में पड़े हुए हैं और वे अंतर्दृष्टि से वंचित हैं।

अतिरिक्त कुछ नहीं और रहमान ने कोई चीज़ नहीं उतारी। तुम तो केवल झूठ बोलते हो 116।

उन्होंने कहा, हमारा रब्ब जानता है कि निःसन्देह हम तुम्हारी ओर भेजे गए हैं 117।

और हम पर खोल-खोल कर बात पहुँचाने के अतिरिक्त कोई उत्तरदायित्व नहीं 118।

उन्होंने कहा, हम निःसन्देह तुमसे अपशकुन लेते हैं। यदि तुम न रुके तो हम अवश्य तुम्हें संगसार कर देंगे और अवश्य हमारी ओर से तुम्हें पीड़ाजनक अज़ाब पहुँचेगा 119।

उन्होंने कहा, तुम्हारा अपशकुन तो तुम्हारे ही साथ है। क्या यदि तुम्हें भली-भाँति उपदेश दे दिया जाए (तो फिर भी इनकार कर दोगे ?) वास्तविकता यह है कि तुम तो सीमा लांघ जाने वाले लोग हो 120।

और नगर के दूर के किनारे से एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया। उसने कहा, हे मेरी जाति ! (इन) भेजे हुआँ का आज्ञापालन करो 121।

इनका आज्ञापालन करो जो तुमसे कोई प्रतिफल नहीं माँगते और वे हिदायत पा चुके हैं 122।

الرَّحْمَنِ مِنْ شَيْءٍ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا
تَكْذِبُونَ ①

قَالُوا رَبَّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ②

وَمَاعَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَّ الْمُبِينُ ③

قَالُوا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ لَئِنْ لَمْ تَنْتَهُوا
لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِنَّا عَذَابٌ
أَلِيمٌ ④

قَالُوا طَائِرُكُمْ مَعَكُمْ أَإِنْ
ذُكِّرْتُمْ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ⑤

وَجَاءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَسْعَى قَالَ
يَقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِينَ ⑥

اتَّبِعُوا مَنْ لَا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَهُمْ
مُهْتَدُونَ ⑦

और मुझे (भला) क्या हुआ है कि मैं उसकी उपासना न करूँ जिसने मुझे पैदा किया और उसी की ओर तुम (भी) लौटाए जाओगे ।23।

क्या मैं उसको छोड़ कर ऐसे उपास्य अपना लूँ कि यदि रहमान (अल्लाह) मुझे कोई दुःख पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आएगी और न वे मुझे छुड़ा सकेंगे ।24।

निःसन्देह ऐसी अवस्था में तुरन्त ही मैं खुली-खुली पथभ्रष्टता में (पड़) जाऊँगा ।25।

निःसन्देह मैं तुम्हारे रबब पर ईमान लाया हूँ । अतः मेरी सुनो ।26।

(उसे) कहा गया कि स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा । उसने कहा, काश मेरी जाति जानती ! ।27।

जो मेरे रबब ने मुझ से क्षमापूर्ण व्यवहार किया और मुझे सम्माननीय लोगों में सम्मिलित कर दिया ।28।

और उसके पश्चात् हमने उसकी जाति के विरुद्ध आकाश से कोई सेना नहीं उतारी और न ही हम उतारने वाले थे ।29।

वह तो केवल एक भयानक ध्वनि थी, अतः सहसा वे बुझ (कर राख हो) गए ।30।

खेद है भक्तों पर ! जब भी उनके पास कोई रसूल आता तो वे उससे उपहास करने लगते हैं ।31।

क्या उन्होंने नहीं देखा कि कितनी ही पीढ़ियाँ हमने उनसे पूर्व नष्ट कर दीं ।

وَمَا لِي لَا أَعْبُدَ الَّذِي فَطَرَنِي وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ﴿٢٣﴾

أَتَأْخُذُ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِذَا يُرِيدُ
الرَّحْمَنُ بِضُرٍّ لَا تُغْنِي عَنْهُمْ
شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُنْقِذُونِ ﴿٢٤﴾

إِنِّي إِذَا لَفِيَ ضَلَالٍ مُّبِينٍ ﴿٢٥﴾

إِنِّي آمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُونِ ﴿٢٦﴾

قِيلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۖ قَالَ يَلَيْتَ قَوْمِي
يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

بِمَا غَفَرَ لِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ
الْمُكْرَمِينَ ﴿٢٨﴾

وَمَا أَنْزَلْنَا عَلَى قَوْمِهِ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ جُنْدٍ
مِّنَ السَّمَاءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِينَ ﴿٢٩﴾

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ
حَمِيدُونَ ﴿٣٠﴾

يَحْسِرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَأْتِيهِمْ مِّنْ
رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣١﴾

أَلَمْ يَرَوْا كَمَا أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ

निःसन्देह वे उनकी ओर लौट कर नहीं आएंगी ।32।

और हमारे समक्ष वे सब के सब अवश्य पेश किए जाने वाले हैं ।33।*

(रूकू 2)

और उनके लिए मृत धरती एक चिह्न है। हमने उसे जीवित किया और उससे (भाँति-भाँति के) अनाज उगाये । अतः उसी में से वे खाते हैं ।34।

और हमने उसमें खजूरों और अंगूरों के बाग बनाए और हमने उसमें जलस्रोत फाड़ निकाले ।35।

ताकि वे उस (अर्थात् अल्लाह) के (दिये हुए) फलों में से खायें और उसे भी खायें जो उनके हाथों ने कमाया है । अतः क्या वे कृतज्ञता प्रकट नहीं करेंगे ? ।36।

पवित्र है वह जिसने प्रत्येक प्रकार के जोड़े पैदा किए, उसमें से भी जो धरती उगाती है और स्वयं उनकी जानों में से भी और उन चीज़ों में से भी जिनका वे कोई ज्ञान नहीं रखते ।37।

और उनके लिए रात्रि भी एक चिह्न है । उससे हम दिन को खींच निकालते हैं । फिर सहसा वे पुनः अंधकारों में डूब जाते हैं ।38।

और सूर्य (सदा) अपने निश्चित पड़ाव की ओर अग्रसर है । यह पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) ज्ञान रखने वाले (अल्लाह) का (निश्चित किया हुआ) विधान है ।39।

الْقُرُونِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُونَ ۝

وَأَن كُلَّ لَمَّا جُمِعَ لَدَيْنَا مُحْضَرُونَ ۝

وَآيَةٌ لَهُمُ الْأَرْضُ الْمَيِّتَةُ أَحْيَيْنَاهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُونَ ۝

وَجَعَلْنَا فِيهَا جَنَّاتٍ مِّنْ نَّخِيلٍ وَأَعْنَابٍ وَفَجَّرْنَا فِيهَا مِنَ الْعُيُونِ ۝

لِيَأْكُلُوا مِنْ ثَمَرِهِ وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيهِمْ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝

سُبْحَانَ الَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُثْبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُونَ ۝

وَآيَةٌ لَهُمُ اللَّيْلُ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُظْلِمُونَ ۝

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذَلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝

और चन्द्रमा के लिए भी हमने पड़ाव निश्चित कर दिए हैं। यहाँ तक कि वह खजूर की पुरानी शाख की भाँति बन जाता है। 140।

सूर्य के वश में नहीं कि चन्द्रमा को पकड़ सके और न ही रात दिन से आगे बढ़ सकती है और सब के सब (अपनी-अपनी) धुरियों पर अग्रसर हैं। 141।*

और उनके लिए यह भी एक चिह्न है कि हमने उनकी संतान को एक भरी हुई नौका में सवार किया। 142।

और हम उनके लिए वैसे ही और (साधन) बनाएँगे जिन पर वे सवार हुआ करेंगे। 143।

और यदि हम चाहें तो उन्हें डुबो दें। फिर उनका कोई फ़रियाद सुनने वाला नहीं होगा और न वे बचाए जाएँगे। 144।

सिवाए हमारी ओर से कृपा के रूप में और एक समय तक अस्थायी लाभ पाने के उद्देश्य से। 145।

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنَاهُ مَنَازِلَ حَتَّىٰ عَادَ
كَالْعُرْجُونِ الْقَدِيمِ ۝

لَا الشَّمْسُ يَنْبَغِي لَهَا أَنْ تُدْرِكَ
الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ
فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ۝

وَآيَةٌ لَهُمْ أَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلِّ
الْمَشْحُونِ ۝

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِنْ مِثْلِهِ مَا يَرْكَبُونَ ۝

وَإِنْ نَشَأْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيخَ لَهُمْ
وَلَا هُمْ يُنْقَذُونَ ۝

إِلَّا لِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمَتَاعًا إِلَىٰ حِينٍ ۝

* आयत संख्या 39 से 41 : इन आयतों में आकाशीय पिण्डों के संबंध में ऐसी बातें वर्णन की गई हैं जिन तक अरब के एक निरक्षर की कल्पना भी नहीं पहुँच सकती थी। सूर्य और चन्द्रमा का परस्पर न मिल सकना तो प्रतिदिन देखने में आता है। परन्तु चन्द्रमा छोटा क्यों हो जाता है और फिर छोटे से बड़ा भी होता रहता है। यह उसकी परिक्रमा से संबंध रखता है। फिर यह बात वर्णन की है कि सूर्य भी एक निश्चित घड़ी की ओर गति कर रहा है। इसका एक अर्थ तो यह है कि सूर्य भी एक समय अपनी निश्चित आयु को पहुँच कर समाप्त हो जाएगा। और एक अर्थ जो आजकल अन्तरिक्ष विशेषज्ञों ने ज्ञात किया है, वह यह है कि सूर्य अपने सारे ग्रहों के साथ एक दिशा की ओर गति कर रहा है। इसका अर्थ यह है कि समस्त ब्रह्माण्ड सामूहिक रूप से गति कर रहा है। अन्यथा एक ग्रह का दूसरे से टकराव हो जाना चाहिए था। पूरा ब्रह्माण्ड गतिशील होने पर भी इन आकाशीय पिण्डों की पारस्परिक दूरियाँ उतनी ही रहती हैं। यह अन्तरिक्ष विशेषज्ञों के नवीन आविष्कारों में से है जिससे यह भी प्रमाणित होता है कि कोई और अज्ञात ब्रह्माण्ड भी है जिसके गुरुत्वाकर्षण से यह ब्रह्माण्ड उसकी ओर अग्रसर है।

और जब उन्हें कहा जाता है कि उन विषयों में तक्रवा धारण करो जो तुम्हारे सामने हैं और उन (विषयों) में भी जो तुम्हारे पीछे हैं ताकि तुम पर कृपा की जाये (तो वे ध्यान नहीं देते) ।46।

और उनके पास उनके रब्ब के चिह्नों में से जब भी कोई चिह्न आता तो वे उससे विमुख होने वाले होते हैं ।47।

और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो जीविका तुम्हें प्रदान की है उसमें से खर्च करो तो वे लोग जिन्होंने इनकार किया, उन लोगों से जो ईमान लाए हैं, कहते हैं क्या हम उन्हें खिलाएँ जिनको यदि अल्लाह चाहता तो स्वयं खिलाता ? तुम तो केवल एक खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े हुए हो ।48।

और वे पूछते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा ? ।49।

वे एक भयानक ध्वनि के सिवा किसी चीज़ की प्रतीक्षा नहीं कर रहे हैं जो उन्हें (उस समय) आ पकड़ेगी जब वे झगड़ रहे होंगे ।50।

फिर वे वसीयत करने का भी सामर्थ्य नहीं पाएँगे और न अपने घर वालों की ओर लौट सकेंगे ।51। (रुकू $\frac{3}{2}$)

और बिगुल फूँका जाएगा तो सहसा वे कब्रों में से निकल कर अपने रब्ब की ओर दौड़ने लगेंगे ।52।

वे कहेंगे, हाय ! किसने हमें हमारे विश्रामस्थल से उठाया । यही तो है

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اتَّقُوا مَا بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٤٦﴾

وَمَا تَأْتِيهِمْ مِنْ آيَةٍ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٤٧﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ انْفِقُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ ۖ قَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا انْطَعِمُوا ۖ مَنْ تَوَيْسَاءُ اللَّهِ اطْعَمَهُ ۖ إِنَّ أَنْتُمْ إِلَّا فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٤٨﴾

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٤٩﴾

مَا يَنْظُرُونَ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً تَأْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُونَ ﴿٥٠﴾

فَلَا يَسْتَطِيعُونَ تَوْصِيَةً وَلَا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ يَرْجِعُونَ ﴿٥١﴾

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ۖ فَإِذَا هُمْ مِنَ الْأَجْدَاثِ إِلَىٰ رَبِّهِمْ يَنْسِلُونَ ﴿٥٢﴾

قَالُوا يَا وَيْلَنَا مَن بَحْثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۚ هَذَا الَّذِي كُنَّا نَسْتَكْبِرُ عَنْهُ ۚ

जिसका रहमान (अल्लाह) ने वादा किया था और रसूल सच ही कहते थे ।53।

यह केवल एक ही भयानक ध्वनि होगी । फिर सहसा वे सब के सब हमारे सामने उपस्थित कर दिए जाएंगे ।54।

अतः आज के दिन किसी जान पर कुछ अत्याचार नहीं किया जाएगा और जो तुम किया करते थे तुम्हें केवल उसी का प्रतिफल दिया जायेगा ।55।

निःसन्देह स्वर्ग निवासी आज के दिन विभिन्न प्रकार की दिलचस्पियों से आनन्दित हो रहे होंगे ।56।

वे और उनके साथी छा्यों में पलंगों पर तकिए लगाए होंगे ।57।

उनके लिए उसमें फल होगा और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वे माँगेंगे ।58।

बार-बार दया करने वाले रब्ब की ओर से 'सलाम' कहा जाएगा ।59।

और हे अपराधियो ! आज के दिन बिल्कुल अलग हो जाओ ।60।

हे आदम की संतान ! क्या मैंने तुम्हें पक्का आदेश नहीं दिया था कि तुम शैतान की उपासना न करो । निःसन्देह वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु है ।61।

और यह कि तुम मेरी उपासना करो । यह सीधा मार्ग है ।62।

परन्तु उसने निःसन्देह तुम में से एक बड़े समूह को पथभ्रष्ट कर दिया ।

مَا وَعَدَ الرَّحْمَنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُونَ ﴿٥٣﴾

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُونَ ﴿٥٤﴾

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٥٥﴾

إِنَّ أَصْحَابَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغْلٍ فُكَّهُونَ ﴿٥٦﴾

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِي ظِلِّ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَكِئُونَ ﴿٥٧﴾

لَهُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ وَلَهُمْ مَّا يَدْعُونَ ﴿٥٨﴾

سَلَامٌ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ ﴿٥٩﴾

وَأَمَّا زُورَ الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٦٠﴾

أَلَمْ أَعْهِدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا الشَّيْطَانَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٦١﴾

وَأَنِ اعْبُدُونِي ۚ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦٢﴾

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا ۖ أَفَلَمْ

अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते थे ? 163।

यही वह नरक है जिसका तुम को वादा दिया जाता था 164।

आज इसमें प्रविष्ट हो जाओ क्योंकि तुम इनकार किया करते थे 165।

आज के दिन हम उनके मुँहों पर मुहर लगा देंगे और उनके हाथ हम से वार्तालाप करेंगे और उनके पाँव उसकी गवाही देंगे जो वे कमाया करते थे 166।*

और यदि हम चाहते तो उनकी आँखों को अवश्य विकृत कर देते । फिर वे रास्ते पर आगे बढ़ते परन्तु वे (उसे) देख कैसे सकते थे ? 167।

और यदि हम चाहते तो उन्हें उनके ठिकानों पर ही मिटा डालते । फिर न वे चलने का सामर्थ्य रखते और न लौट सकते 168। (स्कू $\frac{4}{3}$)

और जिसे हम लम्बी आयु देते हैं उसको शारीरिक शक्तियों की दृष्टि से कम करते चले जाते हैं । अतः क्या वे बुद्धि से काम नहीं लेते ? 169।

और हमने उसे कविता कहना नहीं सिखाया और न ही ऐसा उसके लिए

تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿١٣﴾

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿١٤﴾

إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿١٥﴾

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١٦﴾

وَلَوْ نَشَاءُ لَطَمَسْنَا عَلَىٰ أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنَّى يُبْصِرُونَ ﴿١٧﴾

وَلَوْ نَشَاءُ لَمَسَخْنَاهُمْ عَلَىٰ مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿١٨﴾

وَمَنْ تَعْمِرْهُ نَتَكْسِئْهُ فِي الْخَلْقِ ۚ أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿١٩﴾

وَمَا عَلَّمْنَاهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ ۚ

* क़यामत के दिन मनुष्य की जो पूछ-ताछ होगी वह केवल फ़रिश्तों की गवाही के अनुसार नहीं होगी बल्कि प्रत्येक मनुष्य के शरीर के अंग भी अपने अपराधों को स्वीकार (Confession) करेंगे । इसमें ग़ालिब की इस काव्यकल्पना का भी उत्तर आ गया :-

पकड़े जाते हैं फ़रिश्तों के लिखे पर नाहक

आदमी कोई हमारा दमे तहरीर भी था ?

उस दिन मनुष्य स्वयं अपराध स्वीकार कर रहा होगा । पवित्र कुरआन की न्यायिक व्यवस्था बहुत मज़बूत है । गवाहियाँ भी होंगी और पाप-स्वीकरण भी होंगे ।

शोभनीय था । यह तो केवल एक उपदेश है और सुस्पष्ट कुरआन है । 70।

ताकि वह उसे सतर्क करे जो जीवित हो और काफ़िरोँ पर आदेश सत्य सिद्ध हो जाए । 71।

क्या उन्होंने नहीं देखा कि जो हमारी शक्ति ने बनाया, उसमें से हमने उनके लिए पशु पैदा किए । फिर वे उनके स्वामी बन गए हैं । 72।

और हमने उन्हें (अर्थात् पशुओं को) उनके अधीन कर दिया । अतः उन ही में से उनकी सवारियाँ हैं । और उन्हीं में से (कुछ को) वे खाते हैं । 73।

और उनके लिए उनमें बहुत से लाभ हैं और पेय पदार्थ भी । अतः क्या वे कृतज्ञता प्रकट नहीं करेंगे ? । 74।

और उन्होंने अल्लाह के सिवा उपास्य अपना रखे हैं । संभवतः उन्हें (उनकी ओर से) सहायता मिले । 75।

वे उनकी सहायता करने का कोई सामर्थ्य नहीं रखेंगे जबकि वे तो उनके विरुद्ध (गवाही देने के लिए) उपस्थित की गई सेनाएँ होंगी । 76।

अतः तुझे उनकी बात शोक में न डाले । निःसन्देह हम जानते हैं जो वे छिपाते हैं और जो वे प्रकट करते हैं । 77।

क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया तो फिर यह कौन सी क्रांति आ गई कि वह एक खुला-खुला झगड़ालू बन गया । 78।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُّبِينٌ ۝

يُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقُّ الْقَوْلُ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مِلْكُونَ ۝

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ۝

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ۝

وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ إِلَهَةً لَعَلَّهُمْ يُبْصِرُونَ ۝

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ ۖ وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ مُّحْضَرُونَ ۝

فَلَا يَحْزُنُكَ قَوْلُهُمْ ۚ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۝

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِنْ نُطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ۝

और हम पर बातें बनाने लगा और अपनी उत्पत्ति को भूल गया । कहने लगा, कौन है जो हड्डियों को जीवित करेगा जबकि वह गल सड़ चुकी होंगी ? 179।

तू कह दे, उन्हें वह जीवित करेगा जिसने उन्हें पहली बार उत्पन्न किया था । और वह प्रत्येक प्रकार की सृष्टि का भली-भाँति ज्ञान रखने वाला है 180।

वह जिसने हरे-भरे वृक्षों से तुम्हारे लिए आग बना दी । फिर तुम उन्हीं में से कुछ को जलाने लगे 181।

क्या वह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया है इस बात पर समर्थ नहीं कि उन जैसे (और) पैदा कर दे ? क्यों नहीं । जबकि वह तो बहुत महान स्रष्टा (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है 182।

उसका केवल यह आदेश पर्याप्त है, जब वह किसी चीज़ का इरादा करे तो वह उसे कहता है 'हो जा' फिर वह होने लगती है और हो कर रहती है 183।

अतः पवित्र है वह जिसके हाथ में हर चीज़ की बादशाहत है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे 184।

(रकू - $\frac{5}{4}$)

وَصَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ
مَنْ يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ۝٧٩

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنْشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ
وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ۝٨٠

الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ
نَارًا فَإِذَا أَنْتُمْ مِّنْهُ تُوقَدُونَ ۝٨١

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ
بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ ۚ بَلَىٰ ۚ
وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ۝٨٢

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ
كُنْ فَيَكُونُ ۝٨٣

فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ
وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝٨٤

ع

37- सूरः अस-साफ़फ़ात

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 183 आयतें हैं ।

इससे पहले कि सूरः अस-साफ़फ़ात की प्रारम्भिक आयतों की व्याख्या की जाए यह वर्णन करना आवश्यक है कि इन आयतों में यह बताया गया है कि इनमें उल्लेखित भविष्यवाणियाँ जब पूरी होंगी तो यह भी अवश्य सिद्ध हो जाएगा कि जिस पुनर्जीवन की बड़े ज़ोर के साथ घोषणा की गई है वह भी अवश्य हो कर रहेगा । जैसे कि आयत सं. 12 में अल्लाह तआला कहता है कि तू उनसे पूछ कि क्या तुम अपनी सृष्टि में अधिक शक्तिशाली हो अथवा वे जिनकी अल्लाह तआला ने सृष्टि की है । इस प्रश्न के पश्चात जो बात काफ़िरों को चकित करने वाली है, यह घोषणा की गई है कि स्रष्टा की दृष्टि से निःसन्देह अल्लाह तआला तुम्हारी सृजन शक्ति से बहुत ऊँचा स्थान रखता है और इस बात पर समर्थ है कि जब तुम मर कर मिट्टी हो जाओगे तो फिर तुम्हें वह नए सिरे से जीवित कर दे । और साथ यह चेतावनी भी है कि जब तुम दोबारा जीवित किए जाओगे तो तुम अपमानित भी किए जाओगे । अर्थात् वे लोग जो अपनी सृष्टि के बारे में ऊँचे-ऊँचे दावे किया करते थे उन पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि उनकी सृष्टि का तो कोई महत्व ही नहीं और सर्वश्रेष्ठ स्रष्टा केवल अल्लाह तआला ही है ।

अब हम प्रारम्भिक आयतों की ओर फिर ध्यान देते हैं । आयत **वस्साफ़फ़ाति सफ़फ़न** (क्रमानुसार पंक्तिबद्ध सेनाओं की सौगंध) में वस्तुतः उन लड़ाकू विमानों की खबर दी गई है जिन्हें मनुष्य बनाएगा और वे पंक्तिबद्ध हो कर शत्रुओं पर आक्रमण करेंगे और बार-बार उनको सावधान करेंगे और ऐसे परचे प्रचुर मात्रा में उन पर गिराएँगे जिनमें उनके लिए यह संदेश होगा कि अपनी गर्दन हमारे समक्ष झुका दो अन्यथा तुम तबाह कर दिए जाओगे ।

इसके पश्चात् अल्लाह तआला कहता है कि उनकी क्या हैसियत है कि वे अपनी ज़ाहिरी शक्ति के द्वारा अपने ईश्वरत्व का दावा करें । वस्तुतः अल्लाह एक ही है ।

फिर कहा कि वह पूर्वी दिशाओं का रब्ब है । यह आयत भी एक भविष्यवाणी का रंग रखती है अन्यथा उस युग में तो कई पूर्वी दिशाओं की कोई कल्पना ही नहीं थी जो वर्तमान युग में पैदा हुई है । यह वह समय होगा जब मनुष्य विभिन्न प्रकार के नवीन अविष्कारों के द्वारा जो बहुत ऊँची उड़ान भरने के सामर्थ्य रखते होंगे जैसे कि रॉकेट इत्यादि के द्वारा प्रयत्न करेगा कि मला-ए-आ'ला (अर्थात् फ़रिशतों) के रहस्य को ज्ञात करे, जिस प्रकार वर्तमान युग में प्रयास हो रहे हैं । परन्तु प्रत्येक ओर से उन पर पथराव होगा । अर्थात् वे आकाशीय पिण्डों से बरसने वाले अत्यन्त भयानक पत्थरों का निशाना

बनाए जाएंगे और सिवाए इसके कि वे निकट के आकाश के कुछ रहस्य जान लें वे अपने प्रयास में सफल नहीं होंगे । ये वे विषय हैं जिन पर वर्तमान युग और इस के नए अविष्कार साक्षी हैं कि बिल्कुल यही कुछ हो रहा है ।

इस सूरः के आरम्भ में चूँकि युद्धों का वर्णन है जो सांसारिक विजय प्राप्ति के लिए अनेक जातियों के बीच लड़े जाएंगे । इस लिए इस प्रकरण में हज़रत मुहम्मद सल्ल. और उनके सहाबियों के उस युद्ध का भी वर्णन किया गया जो केवल अल्लाह के लिए लड़ा गया था, और जिसमें दूसरों के रक्त बहाने के लिए तलवार नहीं उठाई गई थी । बल्कि कुर्बानियों की भाँति सहाबियों का समूह को ज़िबह किया जाना था और इस विषय का सम्बन्ध हज़रत इब्राहीम अलै. की उस कुर्बानी से था जिसमें वह अपने पुत्र को ज़िबह करने के लिए तत्पर हो गये थे । व्याख्याकारों का यह विचार कि कोई मेढ़ा झाड़ी में फँस गया था और हज़रत इस्माईल अलै. को इस महान ज़िबह के बदले में छोड़ दिया गया था, यह बड़ा बोदा विचार है जिसका न कुरआन में वर्णन है, न हदीस में । हज़रत इस्माईल अलै. के बदले एक मेढ़ा कैसे महान हो सकता है ? वस्तुतः हज़रत इस्माईल को इस लिए जीवित रखा गया ताकि संसार उस महान ज़िबह के दृश्य को देख ले जो हज़रत मुहम्मद सल्ल. के समय में घटित हुआ ।

सूरः अस्-साफ़ात के संदर्भ से जहाँ इससे पूर्व बहुत से पंक्तिबद्ध आक्रमणकारियों का वर्णन हुआ है, इस सूरः के अन्त पर पवित्र कुरआन यह वर्णन करता है कि वास्तविक पंक्तिबद्ध सेनाएँ तो हमारी हैं । इसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पंक्तिबद्ध सेनाओं का भी वर्णन कर दिया गया और उन फ़रिश्तों का भी जो आप सल्ल. के समर्थन के लिए पंक्तिबद्ध रूप में आकाश से उतारे गए । जिसका अन्तिम परिणाम यही होना था कि देखने में ये शक्तिहीन पंक्तिबद्ध युद्ध करने वाले, जिनका शत्रु उनसे बहुत अधिक शक्तिशाली था पराजित हो जाते, परन्तु अल्लाह की नियति भारी पड़ी और अल्लाह और अल्लाह वाले ही विजयी हुए ।



سُورَةُ الصَّافَّاتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ مِائَةٌ وَثَلَاثٌ وَثَمَانُونَ آيَةً وَخَمْسَةٌ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 11।

क्रमानुसार पंक्तिबद्ध होने वाली (सेनाओं) की सौगन्ध 12।

फिर उनकी, जो ललकारते हुए डपट ने वालियाँ हैं 13।

फिर (अल्लाह को) बहुत याद करने वालियों की 14।

निःसन्देह तुम्हारा उपास्य एक ही है 15।

अकाशों का भी (वह) रबब है और धरती का भी और उसका भी जो उन दोनों के बीच है । और समस्त पूर्वी दिशाओं का रबब है 16।

निःसन्देह हमने निकट के आकाश को सितारों के द्वारा एक शोभा प्रदान की 17।

और (यह) प्रत्येक धुतकारे हुए शैतान से सुरक्षा स्वरूप है 18।

वे मला-ए-आ'ला (अर्थात फ़रिश्तों) की बातें नहीं सुन सकेंगे और प्रत्येक ओर से पथराव किए जाएंगे 19।*

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ﴿١﴾

وَالصَّافَّاتِ صَفًّا ۖ ﴿٢﴾

فَالزُّجَرِ زَجْرًا ۖ ﴿٣﴾

فَالثَّلِيثِ ذِكْرًا ۖ ﴿٤﴾

إِنَّ إِلَهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۖ ﴿٥﴾

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا

وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۖ ﴿٦﴾

إِنَّا زَيْنًا السَّمَاءِ الدُّنْيَا بِزِينَةِ

الْكَوَاكِبِ ۖ ﴿٧﴾

وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَارِدٍ ۖ ﴿٨﴾

لَا يَسْمَعُونَ إِلَى الْمَلَأِ الْأَعْلَى

وَيُقَذَّفُونَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۖ ﴿٩﴾

* आयत सं. 7 से 9 :- इन आयतों में ब्रह्माण्ड की प्रत्यक्ष व्यवस्था का भी वर्णन है कि किस प्रकार धरती का वायुमण्डल धरती पर सदा बरसने वाले उल्का पिण्डों को वायुमण्डल में ही जला कर भस्म कर देता है और उसके जलने से पीछे की ओर एक अग्निशिखा दूर तक लपकती हुई प्रतीत होती है । इसी प्रकार यह भी कहा गया कि एक समय आएगा जब मनुष्य ब्रह्माण्ड की खबरों को प्राप्त करने का प्रयास करेगा जिसकी कोई कल्पना भी उस युग में नहीं हो सकती थी । परन्तु सुरक्षित राकेटों→

इस अवस्था में कि (वे) धिक्कारे हुए हैं और उनके लिए चिमट जाने वाला अज़ाब (निश्चित) है ।10।

सिवाय उसके जो कोई एक-आध बात उचक ले तो उसका भी एक प्रज्वलित अग्निशिखा पीछा करेगी ।11।

अतः तू उनसे पूछ क्या सृष्टि करने की दृष्टि से वे अधिक सबल हैं अथवा वे जिन्हें हमने पैदा किया (सृष्टि के रूप में अधिक शक्तिशाली हैं) ? निःसन्देह हमने उन्हें एक चिमट जाने वाली मिट्टी से पैदा किया ।12।

वास्तविकता यह है कि तू तो (सृष्टि पर) आश्चर्य चकित हो उठा है जबकि वे खिल्ली उड़ाते हैं ।13।

और जब उन्हें उपदेश दिया जाता है तो वे उपदेश ग्रहण नहीं करते ।14।

और जब भी वे कोई चिह्न देखें तो उपहास करने लगते हैं ।15।

और कहते हैं यह तो केवल एक खुला-खुला जादू है ।16।

क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी और हड्डियाँ हो जाएँगे तो क्या हम अवश्य उठाए जाने वाले हैं ? ।17।

और क्या हमारे पिछले पूर्वज भी ।18।

دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝۱۰

إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شَهَابٌ ثَاقِبٌ ۝۱۱

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنْ خَلَقْنَا ۖ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَّازِبٍ ۝۱۲

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُونَ ۝۱۳

وَإِذَا ذُكِّرُوا لَا يَذْكُرُونَ ۝۱۴

وَإِذَا رَأَوْا آيَةً يَسْتَسْخِرُونَ ۝۱۵

وَقَالُوا إِن هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝۱۶

ءِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا ۖ ءَأَنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝۱۷

أَوَابَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝۱۸

५-में यात्रा करने वाले उन मनुष्यों पर प्रत्येक ओर से पथराव किया जाएगा और वे निचले आकाश से आगे नहीं बढ़ सकते । केवल निकट के आकाश तक पहुँचने में किसी सीमा तक सफल हो सकते हैं । आध्यात्मिक दृष्टि से इस से अभिप्राय बुरे विचार के साथ बहइ का पीछा करने वाले और अनुमान लगाने वाले मनुष्य रूपी शैतान हैं । शैतान तो बहइ के अवतरण के निकट तक भी नहीं पहुँच सकता परन्तु मनुष्य रूपी शैतान जैसे सामरी था, कुछ अनुमान लगा सका कि बहइ के कारण लोगों पर क्यों रोब पड़ता है ।

तू कह दे, हाँ ! इस अवस्था में कि तुम
अपमानित होंगे ।19।

अतः निःसन्देह यह एक ही डपट होगी ।
तो सहसा वे देखते रह जाएँगे ।20।

और वे कहेंगे, हाय हमारा सर्वनाश ! यह
तो प्रतिफल का दिन है ।21।

यह (वह) निर्णय का दिन है जिसे तुम
झुठलाया करते थे ।22। (रुकू $\frac{1}{5}$)

उन लोगों को इकट्ठा करो जिन्होंने
अत्याचार किया और उनके साथियों को
भी । और उनको भी जिनकी वे उपासना
किया करते थे, ।23।

अल्लाह के सिवा । अतः उन्हें नरक के
मार्ग पर डाल दो ।24।

और उन्हें थोड़ा ठहराओ, निःसन्देह वे
पूछे जाने वाले हैं ।25।

(अब) तुम्हें क्या हो गया है कि
(आज) तुम एक दूसरे की सहायता
नहीं करते ।26।

बल्कि वे तो आज (प्रत्येक अपराध) को
स्वीकार करने वाले हैं ।27।

और उनमें से कुछ-कुछ की ओर प्रश्न
करते हुए ध्यान देंगे ।28।

वे कहेंगे कि निःसन्देह तुम दाहिनी ओर
से (अर्थात् धर्म की आड़ में हमें भटकाने
के लिए) हमारे पास आया करते थे ।29।

वे (उत्तर में) कहेंगे कि तुम भी तो किसी
प्रकार ईमान लाने वाले नहीं थे ।30।

قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُونَ ﴿١٩﴾

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ فَإِذَا
هُمْ يَنْظُرُونَ ﴿٢٠﴾

وَقَالُوا يَوَيْلَنَا هَذَا يَوْمُ الدِّينِ ﴿٢١﴾

هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ
تُكَذِّبُونَ ﴿٢٢﴾

أَحْشَرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوا وَأَزْوَاجَهُمْ
وَمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ ﴿٢٣﴾

مِنْ دُونِ اللَّهِ فَاهْدُوهُمْ إِلَى صِرَاطِ
الْجَحِيمِ ﴿٢٤﴾

وَقِفُّهُمْ إِنَّهُمْ مَسْئُولُونَ ﴿٢٥﴾

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُونَ ﴿٢٦﴾

بَلْ هُمْ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُونَ ﴿٢٧﴾

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٢٨﴾

قَالُوا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُونَنَا عَنِ الْيَمِينِ ﴿٢٩﴾

قَالُوا بَلْ لَمْ تَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ﴿٣٠﴾

हमें तो तुम पर किसी प्रकार की दृढ़ तर्क की दृष्टि से बढ़ोत्तरी प्राप्त नहीं थी । बल्कि तुम स्वयं ही सीमा का उल्लंघन करने वाले लोग थे । 131।

अतः हम पर हमारे रब्ब का कथन सत्य सिद्ध हो गया । हम निःसन्देह (अज़ाब का स्वाद) चखने वाले हैं । 132।

अतः हमने तुम्हें पथभ्रष्ट किया । निःसन्देह हम स्वयं भी पथभ्रष्ट थे । 133।
निःसन्देह वे (सब) उस दिन अज़ाब में बराबर भागीदार होंगे । 134।

निःसन्देह हम अपराधियों से ऐसा ही व्यवहार करते हैं । 135।

निःसन्देह वे ऐसे थे, कि जब उन्हें कहा जाता था कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं तो वे अहंकार करते थे । 136।

और कहते थे क्या हम एक पागल कवि के लिए अपने उपास्यों को छोड़ देंगे ? । 137।

वास्तविकता यह है कि वह (नबी) तो सत्य लेकर आया था और सब रसूलों का सत्यापन करता था । 138।

निःसन्देह तुम पीड़ाजनक अज़ाब अवश्य चखने वाले हो । 139।

और जो तुम किया करते थे उसी का प्रतिफल तुम्हें दिया जा रहा है । 140।

अल्लाह के निष्ठावान भक्तों का मामला भिन्न है । 141।

यही वे लोग हैं जिनके लिए जानी-पहचानी जीविका (निश्चित) है । 142।

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطٰنٍ ۚ
بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ۝

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَا ۖ اِنَّآ لَذٰۤىۤقُوْنَ ۝

فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ۝

فَاِنَّهُمْ يَوْمَۤمِۤذٍ فِى الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ۝

اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝

اِنَّهُمْ كَانُوْۤا اِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ ۙ
يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝

وَيَقُولُوْنَ اِنَّا لَتَارِكُوْۤا آلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ
مَّجْنُوْنٍ ۝

بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝

اِنَّكُمْ لَذٰۤىۤقُوْا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ۝

وَمَا تَجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝

اُوْلٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ۝

भाँति-भाँति के फल । इस अवस्था में
कि वे खूब सम्मान दिए जाएँगे ।43।
नेमतों वाले बागों में ।44।

فَوَاكِهَ ۚ وَهُمْ مُكْرَمُونَ ﴿٤٣﴾

فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ﴿٤٤﴾

तख्तों पर आमने-सामने बैठे हुए
होंगे ।45।

عَلَى سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ ﴿٤٥﴾

उन के समक्ष जलस्रोतों के बहते जल से
भरे कटोरे परोसे जाएँगे ।46।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِينٍ ﴿٤٦﴾

अत्यन्त स्वच्छ, पीने वालों के लिए
पूर्णतः स्वादिष्ट (होंगे) ।47।

بَيَّضَاءَ لَّدَٰءِ لِلْأَشْرَبِينَ ﴿٤٧﴾

उन (पेय पदार्थों) में न कोई नशा
होगा और न वे उनके प्रभाव से बुद्धि
खो बैठेंगे ।48।

لَا فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُونَ ﴿٤٨﴾

और उनके पास नीची दृष्टि रखने
वाली, बड़ी आँखों वाली (कुंवारी
कन्याएँ) होंगी ।49।

وَعِنْدَهُمْ قَصْرِاتُ الطَّرْفِ عِينٌ ﴿٤٩﴾

(वे दमक रही होंगी) मानो वे ढाँप कर
रखे हुए अंडे हैं ।50।*

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُونٌ ﴿٥٠﴾

तो उनमें से कुछ, कुछ दूसरों से प्रश्न
करते हुए ध्यान देंगे ।51।

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ﴿٥١﴾

उनमें से एक कहने वाला कहेगा,
निःसन्देह मेरा एक साथी हुआ करता
था ।52।

قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّي كَانَ لِي قَرِينٌ ﴿٥٢﴾

वह कहा करता था, क्या तुम (इस बात
की) पुष्टि करने वाले हो ? ।53।

يَقُولُ أَتَيْتَكَ لِمَنِ الْمُصَدِّقِينَ ﴿٥٣﴾

कि क्या जब हम मर जाएँगे और मिट्टी हो
जाएँगे और हड्डियाँ रह जाएँगे तो क्या हमें
फिर भी प्रतिफल दिया जाएगा ? ।54।

إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا
إِنَّا لَمَدِينُونَ ﴿٥٤﴾

* आयत सं. 49 से 50 : ये अवश्य उपमाएँ हैं अन्यथा अप्सराओं के संबंध में यह कहना कि मानो वे ढके हुए अंडे हैं यूँ तो कोई अर्थ नहीं रखता । जिस प्रकार ढके हुए अंडे साफ़ और स्वच्छ होते हैं इसी प्रकार उनके आध्यात्मिक साथी भी अंतःकरण की दृष्टि से पवित्र एवं स्वच्छ होंगे ।

वह कहेगा, क्या तुम झांक कर देख सकते हो ? 155।

अतः उसने झांक कर देखा तो उस (साथी) को नरक के बीचों-बीच पाया 156।

उसने कहा, अल्लाह की सौगन्ध ! सम्भव था कि तू मुझे भी तबाह कर देता 157।

और यदि मेरे रब की नेमत न होती तो मैं अवश्य पेश किए जाने वालों में से होता 158।

अतः क्या हम मरने वाले नहीं थे ? 159।

सिवाए हमारी पहली मृत्यु के और हमें कदापि अज़ाब नहीं दिया जाएगा 160।

निःसन्देह यही (ईमान लाने वाले की) एक बहुत बड़ी सफलता है 161।

अतः चाहिए कि ऐसे ही स्थान (की प्राप्ति) के लिए सब कर्म करने वाले कर्म करें 162।

क्या आतिथ्य स्वरूप यह उत्तम है अथवा थूहर का पौधा 163।

निःसन्देह हमने उसे अत्याचारियों के लिए परीक्षा (स्वरूप) बनाया है 164।

निःसन्देह यह एक पौधा है जो नरक की गहराई में उगता है 165।

उसकी कलियाँ ऐसी हैं जैसे शैतानों के सिर 166।

قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُّظْلِعُونَ ⑤

فَاطْلَعَ قَرَاهُ فِي سَوَاءِ الْجَحِيمِ ⑥

قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَ تُثْرِدِينِ ⑦

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّي لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِينَ ⑧

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِينَ ⑨

إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُعَدِّيْنَ ⑩

إِنَّ هَٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ⑪

لِمِثْلِ هَٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعَامِلُونَ ⑫

أَذَلِكْ حَيْرٌ نُّزَلًا أَمْ شَجَرَةُ الزُّقُومِ ⑬

إِنَّا جَعَلْنَاهَا فِتْنَةً لِلظَّالِمِينَ ⑭

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِي أَصْلِ الْجَحِيمِ ⑮

طَلْعُهَا كَأَنَّهُ رُءُوسُ الشَّيَاطِينِ ⑯

अतः निःसन्देह वे उसी में से खाने वाले हैं । फिर उसी से पेट भरने वाले हैं । 167।

फिर निःसन्देह उनके लिए उस (खाने) के पश्चात अत्यन्त गर्म पानी मिला हुआ पेय होगा । 168।

फिर निःसन्देह नरक की ओर उनको लौट कर जाना होगा । 169।

निःसन्देह उन्होंने अपने पूर्वजों को पथभ्रष्ट पाया था । 170।

अतः उन्हीं के पदचिह्नों पर वे भी दौड़ाए जा रहे हैं । 171।

और निःसन्देह उनसे पूर्व पहली जातियों में से भी अधिकतर (लोग) पथभ्रष्ट हो चुके थे । 172।

जबकि निश्चित रूप से हम उनमें सतर्ककारी भेज चुके थे । 173।

अतः देख कि सतर्क किये जाने वालों का अंत कैसा हुआ । 174।

सिवाए अल्लाह के द्वारा विशिष्ट किये गये भक्तों के । 175। (रुकू $\frac{2}{6}$)

और निःसन्देह हमें नूह ने पुकारा तो (देखो) हम कैसा अच्छा उत्तर देने वाले हैं । 176।

और हमने उसको और उसके परिवार को बड़ी बेचैनी से मुक्ति प्रदान की । 177।

और हमने उसकी संतान को ही शेष रहने वाला बना दिया । 178।

और हमने बाद में आने वालों में उसका सु-स्मरण शेष रखा । 179।

فَالَهُمْ لَآكِلُونَ مِنْهَا فَمَآئُونَ
مِنْهَا الْبُطُونَ ﴿١٧﴾

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا شَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ ﴿١٨﴾

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَا إِلَى الْجَحِيمِ ﴿١٩﴾

إِنَّهُمْ أَفْقُوا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ ﴿٢٠﴾

فَهُمْ عَلَىٰ أَثَرِهِمْ يُهْرَعُونَ ﴿٢١﴾

وَلَقَدْ ضَلَّٰ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ ﴿٢٢﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِمْ مُّنْذِرِينَ ﴿٢٣﴾

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ﴿٢٤﴾

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ﴿٢٥﴾

وَلَقَدْ نَادَيْنَا نُوْحًا فَلْنَعْمَ الْمُجِيبُونَ ﴿٢٦﴾

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ
الْعَظِيمِ ﴿٢٧﴾

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ ﴿٢٨﴾

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿٢٩﴾

सलाम हो नूह पर समस्त लोकों में ।80।

سَلَّمَ عَلَى نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ ①

निःसन्देह हम इसी प्रकार अच्छे काम करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ।81।

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ②

निःसन्देह वह हमारे मोमिन भक्तों में से था ।82।

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ③

फिर दूसरों को हमने डुबो दिया ।83।

ثُمَّ أَعْرَفْنَا الْأَخْرِينَ ④

और निःसन्देह उसी के समूह में से इब्राहीम भी था ।84।

وَالَّذِينَ

وَأَنَّ مِنْ شَيْعَتِهِ لِإِبْرَاهِيمَ ⑤

(याद कर) जब वह अपने रब के समक्ष निष्कपट हृदय लेकर उपस्थित हुआ ।85।

إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ ⑥

(फिर) जब उसने अपने पिता से और उसकी जाति से कहा, वह है क्या जिसकी आप उपासना करते हो ? ।86।

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ ⑦

क्या अल्लाह के सिवा आप संपूर्ण मिथ्या (अर्थात) दूसरे उपास्य चाहते हो ? ।87।

أَفَبِكَا إِلَهَةٍ دُونَ اللَّهِ تَرِيدُونَ ⑧

अतः आपने समस्त लोकों के रब को क्या समझ रखा है ।88।

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ⑨

फिर उसने सितारों पर एक दृष्टि डाली ।89।

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ ⑩

और कहा, निःसन्देह मैं तो विरक्त हो गया हूँ ।90।

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ ⑪

अतः वे उससे पीठ फेरते हुए चले गए ।91।

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ ⑫

फिर उसने नज़र बचा कर उनके उपास्यों की ओर ध्यान दिया । फिर पूछा, क्या

فَرَاغَ إِلَى إِلَهِتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ⑬

तुम भोजन करते नहीं ? 192।*

तुम्हें क्या हुआ क्या है कि तुम बोलते नहीं ? 193।

फिर उसने दाहिने हाथ से एक गहरी चोट लगाते हुए उनके विरुद्ध गुप्त कार्यवाही की 194।

फिर वे (लोग) उसकी ओर दौड़ते हुए आए 195।

उसने (उन से) कहा, क्या तुम उनकी उपासना करते हो जिनको तुम (स्वयं) तराशते हो ? 196।

हालाँकि अल्लाह ने तुम्हें और उसे भी पैदा किया है जो तुम बनाते हो 197।

उन्होंने कहा, उस (इब्राहीम) के लिए एक चिता बनाओ, फिर उसे धधकती हुई अग्नि में झोंक दो 198।

अतः उन्होंने उसके संबंध में एक (अत्याचार पूर्ण) षड्यन्त्र किया तो हमने उन्हें खूब अपमानित कर दिया 199।

और उसने कहा, निःसन्देह मैं अपने रब की ओर जाने वाला हूँ। वह अवश्य मेरा मार्गदर्शन करेगा 1100।

हे मेरे रब ! मुझे सदाचारियों में से (उत्तराधिकारी) प्रदान कर 1101।

अतः हमने उसे एक सहनशील पुत्र का शुभ-समाचार दिया 1102।

مَا لَكُمْ لَا تَنْطُقُونَ ①७

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ ①८

فَأَقْبَلُوا إِلَيْهِ يَزْفُونَ ①९

قَالَ اتَّعْبُدُونَ مَا تَنْجِتُونَ ②०

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ ②१

قَالُوا ابْنُوا لَهُ بُيُوتًا فَأَلْقُوهُ فِي الْجَحِيمِ ②२

فَأَرَادُوا بِهِ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْأَسْفَلِينَ ②३

وَقَالَ إِنِّي ذَاهِبٌ إِلَىٰ رَبِّي سَيَهْدِينِ ②४

رَبِّ هَبْ لِي مِنَ الصَّالِحِينَ ②५

فَبَشَّرْنَاهُ بِغُلَامٍ حَلِيمٍ ②६

* आयत सं. 88 से 92 : यहाँ अरबी शब्द **सक्कीम** से अभिप्राय रोगी नहीं है क्योंकि इसके पश्चात इतना बड़ा काम अर्थात् उनके मूर्तियों को तोड़ना रोगी व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं होता। **सक्कीम** शब्द का एक अर्थ विरक्त होना भी है। हज़रत इब्राहीम अलै. ने यह कहा था कि मैं तुम से और तुम्हारी मूर्तियों से विरक्त हूँ। इसके पश्चात आपने उन मूर्तियों के तोड़ने का मन बनाया।

अतः जब वह (पुत्र) उसके साथ दौड़ने-फिरने की आयु को पहुँचा (तो) उसने कहा, हे मेरे प्रिय पुत्र ! निःसन्देह मैं निद्रावस्था में देखा करता हूँ कि मैं तुझे ज़िबह कर रहा हूँ । अतः विचार कर तेरी क्या राय है ? उसने कहा, हे मेरे पिता ! वही करें जो आपको आदेश दिया जाता है। निःसन्देह यदि अल्लाह चाहेगा तो मुझे आप धैर्य धरने वालों में से पाएँगे ॥103॥*

जब वे दोनों सहमत हो गए और उस (पिता) ने उस (पुत्र) को माथे के बल लिटा दिया ॥104॥

तब हमने उसे पुकारा कि हे इब्राहीम ! ॥105॥

निश्चित रूप से तू अपना स्वप्न पूरा कर चुका है । निःसन्देह इसी प्रकार हम नेकी करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ॥106॥

निःसन्देह यह एक बड़ी खुली-खुली परीक्षा थी ॥107॥

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَبْنَىٰٓ اِنِّىٓ
اَرٰى فِى الْمَنَامِ اِنِّىٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ
مَاذَا تَرٰى ۖ قَالَ يَٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ
سَتَجِدُنِىٓ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝۳۷

فَلَمَّا اَسْلَمَا وَتَلَّ لِلْجَبِيْنِ ۝۳۸

وَنَادٰىهُ اَنْ يَّآٰبُرْهِيْمُ ۝۳۹

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى
الْمُحْسِنِيْنَ ۝۴۰

اِنَّ هٰذَا لَهٗوَ الْبَلٰٓءِ الْمُبِيْنِ ۝۴۱

* इस आयत में हज़रत इब्राहीम अलै. के अपने पुत्र इस्माईल को प्रत्यक्ष रूप से ज़िबह करने के लिए तैयार होने की घटना का उल्लेख किया गया है । हज़रत इब्राहीम अलै. ने एक बार स्वप्न नहीं देखा था बल्कि बार-बार स्वप्न देखा करते थे कि मैं अपने पुत्र को ज़िबह कर रहा हूँ । परन्तु प्रत्यक्ष रूप से ज़िबह करने का अर्थ आप के विचार में आने के बावजूद आपने उस समय तक अपने पुत्र की जान लेने की इच्छा व्यक्त नहीं की जब तक कि वह स्वयं अपनी इच्छा से इसके लिए तैयार नहीं हुआ । जैसा कि उपरोक्त आयत में उल्लेख है कि जब वह दौड़ने भागने की आयु को पहुँचा और अपने पिता के साथ भारी काम करने लगा । परन्तु इस स्वप्न का अर्थ यह था कि इस्माईल अलै. को निर्जल चटियल घाटी में छोड़ दिया जाए । अतः अल्लाह तआला ने इस स्वप्न को प्रत्यक्ष रूप से पूरा करने से हज़रत इब्राहीम अलै. को रोके रखा और फिर बता दिया कि तू पहले ही इस स्वप्न को पूरा कर चुका है ।

और हमने एक ज़िब्हे-अज़ीम (महान बलिदान) के बदले उसे बचा लिया 1108।*

और हमने बाद में आने वालों में उस के शुभ-स्मरण को शेष रखा 1109।

इब्राहीम पर सलाम हो 1110।

इसी प्रकार हम नेकी करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं 1111।

निःसन्देह वह हमारे मोमिन भक्तों में से था 1112।

और हमने उसे इसहाक़ का नबी के रूप में शुभ समाचार दिया जो सदाचारियों में से था 1113।

और उस पर और इसहाक़ पर हमने बरकत भेजी । और उन दोनों की संतान में परोपकार करने वाले भी थे और अपने ऊपर खुल्लम-खुल्ला अत्याचार करने वाले भी थे 1114। (रकू 3/7)

और निःसन्देह हमने मूसा और हारून पर भी कृपा की थी 1115।

और उन दोनों को और उनकी जाति को हमने बहुत बड़ी बेचैनी से मुक्ति प्रदान की थी 1116।

और हमने उनकी सहायता की । अतः वे ही विजयी होने वाले बने 1117।

और हमने उन दोनों को एक सुस्पष्ट करने वाली पुस्तक प्रदान की 1118।

وَفَدَيْنَاهُ بِذَبْحٍ عَظِيمٍ ۝

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝

سَلَّمَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ۝

كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَبَشَّرْنَاهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ ۝

وَبَارَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلَىٰ إِسْحَاقَ ۖ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَظَالِمٌ لِّنَفْسِهِ ۝

وَلَقَدْ مَنَّا عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝

وَنَجَّيْنَاهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ ۝

وَنَصَرْنَاهُمْ فَكَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ۝

وَآتَيْنَاهُمَا الْكِتَابَ الْمُسْتَبِينَ ۝

* ज़िब्हे-अज़ीम से अभिप्राय अल्लाह के मार्ग में कुर्बान होने वाले सब नबियों में श्रेष्ठ अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं । जिनका आगमन हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बच जाने के कारण ही संभव था ।

और दोनों को हमने सीधे मार्ग पर चलाया था ।।119।

और हमने बाद में आने वालों में उन दोनों के सु-स्मरण को शेष रखा ।।120।

सलाम हो मूसा और हारून पर ।।121।

निःसन्देह हम इसी प्रकार परोपकार करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ।।122।

निःसन्देह वे दोनों हमारे मोमिन भक्तों में से थे ।।123।

और निःसन्देह इलियास भी रसूलों में से था ।।124।

जब उसने अपनी जाति से कहा, क्या तुम तक्वा धारण नहीं करोगे ? ।।125।

क्या तुम बअल* को पुकारते हो और सर्वश्रेष्ठ पैदा करने वाले को छोड़ देते हो ? ।।126।

अल्लाह को, जो तुम्हारा भी रब्ब है और तुम्हारे पूर्वजों का भी ।।127।

अतः उन्होंने उसको झुठला दिया । और निःसन्देह वे पेश किए जाने वाले हैं ।।128।

सिवाए अल्लाह के निर्वाचित भक्तों के ।।129।

और हमने पीछे आने वालों में उसके सु-स्मरण को शेष रखा ।।130।

सलाम हो इल्यासीन पर ।।131।**

وَهَدَيْنَاهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ۝١١٩

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْآخِرِينَ ۝١٢٠

سَلِّمُ عَلَىٰ مُوسَىٰ وَهَارُونَ ۝١٢١

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝١٢٢

إِنَّهُمْ مِّنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝١٢٣

وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝١٢٤

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ ۝١٢٥

أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ۝١٢٦

اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ۝١٢٧

فَكَذَّبُوهُ فَأْتَهُم مُّحْضَرُونَ ۝١٢٨

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ ۝١٢٩

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ۝١٣٠

سَلِّمُ عَلَىٰ إِبْلِيسَ ۝١٣١

* बअल - वह मूर्ति जिसकी इस्लाम से पूर्व अरबवासी पूजा करते थे ।

** इस आयत में इल्यास के बदले इल्यासीन कहा गया है । व्याख्याकार इसका एक अर्थ तो यह किया करते हैं कि तीन इल्यास थे । क्योंकि तीन से कम की संख्या पर इल्यासीन शब्द बहुवचन के रूप में→

निःसन्देह हम इसी प्रकार परोपकार करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं 1132।

निःसन्देह वह हमारे मोमिन भक्तों में से था 1133।

और लूत भी अवश्य रसूलों में से था 1134।

जब हमने उसे और उसके सारे परिवार को मुक्ति प्रदान की 1135।

सिवाए पीछे रह जाने वालों में (सम्मिलित) एक बुढ़िया के 1136।

फिर हमने दूसरों को तबाह कर दिया 1137।

और निःसन्देह तुम सुबह को उन (की कब्रों) पर से गुज़रते हो 1138।

और रात को भी । अतः क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते ? 1139। (रकू $\frac{4}{8}$)

और निःसन्देह यूनस (भी) रसूलों में से था 1140।

जब वह (सवार होने के लिए) भरी हुई नौका की ओर भागते हुए गया 1141।

फिर उसने कुरआ (पर्ची) निकाला तो वह बाहर धकेल दिए जाने वालों में से बन गया 1142।

फिर मछली ने उसे निगल लिया । जबकि वह (अपने आप को) कोस रहा था 1143।

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ۝

وَإِنَّ لُوطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

إِذْ نَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۝

إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ۝

ثُمَّ دَمَرْنَا الْأَخْرِينَ ۝

وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّونَ عَلَيْهِمْ مُصْحِحِينَ ۝

وَبِأَيْلٍ ۝ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلِ الْمَشْحُونِ ۝

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۝

فَاتَّقَمَتِ الْحَوْتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۝

← प्रयुक्त नहीं हो सकता । परन्तु इब्रानी भाषा शैली में एकवचन के लिए भी सम्मान देने के उद्देश्य से बहुवचन का रूप प्रयोग किया जाता है । जैसा कि उनकी ग्रन्थों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नाम मुहम्मद के बदले 'मुहम्मदीम' लिखा हुआ है । क्योंकि एलिया (इल्यास) ने भी असाधारण कुर्बानी दी थी । इस लिए उन के नाम का भी बहुवचन के रूप में उल्लेख किया गया ।

अतः यदि वह (अल्लाह की) स्तुति करने वालों में से न होता ॥144॥

तो अवश्य वह उसके पेट में उस दिन तक रहता जब वे (लोग) उठाए जाएंगे ॥145॥

अतः हमने उसे एक खुले मैदान में उछाल फेंका जबकि वह अत्यन्त बीमार था ॥146॥

और हमने उसे ढांपने के लिए एक कद्दू जैसी लता उगा दी ॥147॥

और हमने उसे एक लाख (लोगों) की ओर भेजा बल्कि वे (संख्या में) बढ़ रहे थे ॥148॥

अतः वे ईमान ले आए और हमने उन्हें एक अवधि तक कुछ लाभ पहुंचाया ॥149॥

अतः तू उनसे पूछ क्या तेरे रब्ब के लिए तो पुत्रियाँ हैं और उनके लिए पुत्र हैं ? ॥150॥

या फिर हमने फ़रिश्तों को स्त्रियाँ बनाया है, और वे इस पर साक्षी हैं ? ॥151॥

सावधान ! निःसन्देह वे अपनी ओर से झूठ गढ़ते हुए (यह) कहते हैं ॥152॥

(कि) अल्लाह ने पुत्र पैदा किया है । और निःसन्देह ये झूठे लोग हैं ॥153॥

क्या उसने पुत्रों पर पुत्रियों को प्रधानता दी है ? ॥154॥

तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे निर्णय करते हो ? ॥155॥

अतः क्या तुम उपदेश ग्रहण नहीं करते ? ॥156॥

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسِيحِينَ ۝

لَلْبَيْتِ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝

فَنَبَذْنَاهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيمٌ ۝

وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَقْطِينٍ ۝

وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ۝

فَأَمْنُوا فَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۝

فَأَسْأَلْتَهُمُ الْبَنَاتُ وَالَهُمُ الْبَنُونَ ۝

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلَائِكَةَ إِنَاثًا وَهُمْ شَاهِدُونَ ۝

أَلَا إِلَهُهُمْ مِّنْ أَفْكَهٍ يُقُولُونَ ۝

وَلَدَ اللَّهُ ۚ وَإِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ۝

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِينَ ۝

مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝

أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝

अथवा तुम्हारे पास कोई अकाट्य
(और) स्पष्ट तर्क है ? 1157।

अतः यदि तुम सच्चे हो तो अपनी
पुस्तक लाओ 1158।

और उन्होंने उसके और जिनों के मध्य
एक संबंध गढ़ लिया । हालांकि
निःसन्देह जिन्न जानते हैं कि वे भी
अवश्य पेश किए जाने वाले हैं 1159।

पवित्र है अल्लाह उससे जो वे वर्णन
करते हैं 1160।

अल्लाह के चुने हुए भक्त (इन बातों से)
भिन्न हैं 1161।

अतः निःसन्देह तुम और वे जिनकी तुम
उपासना करते हो 1162।

तुम उसके विरुद्ध (किसी को) पथभ्रष्ट
नहीं कर सकोगे 1163।

सिवाए उसके जिसने नरक में प्रविष्ट
होना ही है 1164।

और (फ़रिश्ते कहेंगे कि) हम में से
प्रत्येक के लिए एक निर्धारित स्थान
निश्चित है 1165।

और निःसन्देह हम पंक्तिबद्ध हैं 1166।

और निःसन्देह हम स्तुति कर रहे
हैं 1167।

और वे (काफ़िर) तो कहा करते
थे, 1168।

यदि हमारे पास पहले लोगों का कोई
अनुस्मरण (पहुँचा) होता 1169।

तो निःसन्देह हम अल्लाह के चुने हुए
भक्त हो जाते 1170।

أَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِينٌۙ

فَأْتُوا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَۙ

وَجَعَلُوْا بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ نَسْبًاۚ وَلَقَدْ
عَلِمْتَ الْجَنَّةَ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَۙ

سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَۙ

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَۙ

فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَۙ

مَا اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَۙ

اِلَّا اَمِّنْهُوَ صٰلِ الْجَحِيْمِۙ

وَمَا مِمَّاۤ اِلَّا لَهُ مَقٰمٌ مَّعْلُوْمٌۙ

وَ اِنَّا لَنَحْنُ الصّٰفُّوْنَۙ

وَ اِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَۙ

وَ اِنْ كَاٰنُوْا لَيَقُوْلُوْنَۙ

لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَۙ

لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَۙ

अतः (अब जबकि) उन्होंने उस (अर्थात् अल्लाह) का इनकार कर दिया तो अवश्य वे (उसका परिणाम) जान लेंगे 1171।

और निःसन्देह हमारे भेजे हुए भक्तों के पक्ष में हमारा (यह) आदेश बीत चुका है 1172।

(कि) निःसन्देह वे ही हैं जिन्हें सहायता प्रदान की जाएगी 1173।

और निःसन्देह हमारी सेना ही अवश्य विजयी होने वाली है 1174।

अतः उनसे कुछ समय तक विमुख रह 1175।

और उन्हें देखता रह । फिर वे भी शीघ्र ही देख लेंगे 1176।

फिर क्या वे हमारे अज़ाब की मांग में जल्दी करते हैं ? 1177।

अतः जब वह उनके आंगन में उतरेगा तो सतर्क किये जाने वालों की सुबह बहुत बुरी होगी 1178।

और कुछ देर के लिए उनसे विमुख हो जा 1179।

और देख ! फिर वे भी अवश्य देख लेंगे 1180।

तेरा रब्ब, सम्पूर्ण सम्मान का स्वामी पवित्र है उससे जो वे वर्णन करते हैं 1181।

और सलाम हो सब रसूलों पर 1182।

और समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है जो समस्त लोकों का रब्ब है 1183।

(रुकू 5/9)

فَكَفَرُوا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿١٧١﴾

وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِجَبَادِنَا
الْمُرْسَلِينَ ﴿١٧٢﴾

إِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُورُونَ ﴿١٧٣﴾

وَإِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغَالِبُونَ ﴿١٧٤﴾

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٥﴾

وَأَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصَرُونَ ﴿١٧٦﴾

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿١٧٧﴾

فَإِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَاءَ صَبَاحُ
الْمُنْذَرِينَ ﴿١٧٨﴾

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتَّىٰ حِينٍ ﴿١٧٩﴾

وَأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصَرُونَ ﴿١٨٠﴾

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ﴿١٨١﴾

وَسَلَّمَ عَلَى الْمُرْسَلِينَ ﴿١٨٢﴾

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٨٣﴾

ع १

38- सूरः साद

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 89 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ भी खण्डाक्षरों में से एक अक्षर **साद** से किया गया है । व्याख्याकार इसकी एक व्याख्या यह करते हैं कि **साद** से तात्पर्य **सत्यवादी** है । अर्थात् वह अल्लाह जिसकी बातें अवश्य पूरी हो कर रहेंगी । और कुरआन को जो महान उपदेशों पर आधारित है, इस बात पर साक्षी ठहराया गया है कि इस कुरआन का इनकार केवल झूठी प्रतिष्ठा के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाले विरोध के कारण है ।

इसी सूरः में हज़रत दाऊद अलै. के कश्फ (दिव्य-दर्शन) का दृश्य प्रस्तुत किया गया है जिससे मनुष्य प्रवृत्ति की लालसा दिखाई पड़ती है कि यदि उसे निनान्वे प्रतिशत भाग पर भी प्रभुत्व मिल जाए तो फिर वह शत-प्रतिशत पर प्रभुत्व पाने की इच्छा करता है। और दुर्बलों और निर्धनों के लिए एक प्रतिशत भी नहीं छोड़ता । पिछली सूरः में जो बड़ी-बड़ी शक्तियों के युद्धों का वर्णन मिलता है उनका भी केवल यही उद्देश्य है कि समस्त निर्धन देशों से शासनतन्त्र के समस्त अधिकार छीन लें और किसी अन्य की भागीदारी के बिना समग्र संसार पर शासन करें । दूसरे शब्दों में यह ईश्वरत्व का दावा है। इसके पश्चात मानव जाति को हज़रत दाऊद अलै. के हवाले से यह उपदेश दिया गया है कि परस्पर झगड़ों का निर्णय न्याय के साथ करना चाहिए, अत्याचार और बल प्रयोग से नहीं ।

इसी सूरः में हज़रत सुलैमान अलै. से सम्बंधित यह वर्णन मिलता है कि आप को घोड़ों से बहुत प्रेम था । इस बात की अशुद्ध व्याख्या करते हुए कुछ विद्वान यह वर्णन करते हैं कि एक बार वह घोड़ों को थपकियाँ दे रहे थे और उनकी टांगों पर हाथ फेर रहे थे कि नमाज़ का समय निकल गया । इस पर हज़रत सुलैमान ने अपनी इस लापरवाही का क्रोध उन निरीह घोड़ों पर उतारा और उनको वध करने का आदेश दिया । परन्तु इस अत्यन्त हास्यास्पद व्याख्या को वह आयत पूर्णतया झुठला रही है जिसमें हज़रत सुलैमान अलै. कहते हैं कि उनको मेरी ओर वापस ले आओ । इससे पता चलता है कि नबियों को अल्लाह तआला के लिए जिहाद करने के लिए जो सवारियाँ प्रदान होती हैं वे उनसे बहुत प्रेम करते हैं और बार-बार उनको देखना चाहते हैं । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी कहा है कि मेरी उम्मत के लिए ऐसे घोड़ों के मस्तकों में क्रयामत तक के लिए बरकत रख दी गई है जो जिहाद के लिए तैयार किए जाते हैं ।

इस सूरः में हज़रत अय्यूब अलै. को एक महान धैर्यवान नबी के रूप में उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया गया है और वह वास्तविकताएँ प्रस्तुत की गई हैं जो बाइबिल में कई प्रकार की अद्भुत कथाओं के रूप में मिलती हैं ।

سُورَةُ صَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعٌ وَثَمَانُونَ آيَةً وَخَمْسَةٌ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

सादिकुल कौलि : सत्यवादी । उपदेश से परिपूर्ण कुरआन की कसम! ।2।

वास्तविकता यह है कि वे लोग जिन्होंने इनकार किया (झूठे) सम्मान और विरोध में (पड़े) हैं ।3।

उनसे पूर्व कितनी ही जातियाँ हमने तबाह कर दीं । अतः उन्होंने (सहायता के लिए) पुकारा जबकि मुक्ति का कोई मार्ग शेष न था ।4।

और उन्होंने आश्चर्य किया कि उनके पास उन्हीं में से कोई सतर्ककारी आया । और काफ़िरो ने कहा, यह अत्यन्त झूठा जादूगर है ।5।

क्या इसने बहुत से उपास्यों को एक ही उपास्य बना लिया है । निःसन्देह यह (बात) तो बड़ी विचित्र है ।6।

और उनमें से बड़े लोग (यह कहते हुए) चले गए कि जाओ और अपने ही उपास्यों पर धैर्य करो । निःसन्देह यह एक ऐसी बात है जिसका (किसी विशेष उद्देश्य से) इरादा किया गया है ।7।

हमने तो ऐसी बात किसी आने वाले धर्म (के बारे) में भी नहीं सुनी । यह मनगढ़ंत बात के अतिरिक्त कुछ नहीं ।8।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

ص وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ ①

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ①

كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ فَنَادَوا
وَلَاتِ حِينَ مَنَاصٍ ①

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ
وَقَالَ الْكُفَرُؤْنَ هَذَا سِحْرٌ كَذَابٌ ①

أَجْعَلِ الْآلِهَةَ إِلَهًا وَاحِدًا إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجَابٌ ①

وَانْطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوا
وَاصْبِرُوا عَلَى آلِهَتِكُمْ إِنَّ هَذَا
لَشَيْءٌ يُرَادُ ①

مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْمِلَّةِ الْآخِرَةِ إِنْ هَذَا إِلَّا اخْتِلَاقٌ ①

क्या हम में से इसी पर अनुस्मारक-ग्रन्थ उतारा गया है ? वास्तविकता यह है कि वे मेरे उपदेश के बारे में ही शंका में पड़े हैं (और) वास्तविकता यह है कि अभी उन्होंने मेरा अज़ाब नहीं चखा ।9।

क्या उनके पास तेरे पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) महादानी रबब की कृपा के खज़ाने हैं ? ।10।

अथवा क्या उन्हें आसमानों और धरती का तथा जो उन दोनों के मध्य है (उसका) राजत्व प्राप्त है ? अतः वे सब उपाय कर डालें ।11।

(यह भी) सैन्य समूहों में से एक समूह (है) जो वहाँ पराजित किया जाने वाला है ।12।

इनसे पहले (भी) नूह की जाति ने और आद (जाति) ने और खूंटों वाले फ़िरऔन ने झुठला दिया था ।13।

और समूद (जाति) ने भी और लूत की जाति ने भी और घने वृक्ष वालों ने भी । यही हैं वे सैन्य समूह (जिनका वर्णन गुज़रा है) ।14।

(इनमें से) प्रत्येक ने रसूलों को झुठलाया। अतः (उन पर) मेरा दण्ड अनिवार्य हो गया ।15। (रुकू 1/10)

और ये लोग एक भयानक गूँज के अतिरिक्त किसी चीज़ की प्रतीक्षा नहीं कर रहे जिसमें कोई अंतराल नहीं होगा ।16।

और उन्होंने कहा, हे हमारे रबब ! हमें हमारा भाग हिसाब-किताब के दिन से पूर्व ही शीघ्र दे दे ।17।

ءَأُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ۚ بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ مِنْ ذِكْرِي ۚ بَلْ لَمَّا يَدُوقُوا عَذَابِ ۙ

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۙ

أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۚ فَلْيَرْتَقُوا فِي الْأَسْبَابِ ۙ

جُنْدٌ مِمَّا هُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ ۙ

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَ عَادٌ وَفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ ۙ

وَتَمُودُ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ لَيْكَةِ ۚ أُولَٰئِكَ الْأَحْزَابُ ۙ

إِنْ كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۙ

وَمَا يَنْظُرُ هَؤُلَاءِ إِلَّا صَيْحَةً وَاحِدَةً مِّمَّا هُمْ قَوَّاقٍ ۙ

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِطْنَآ قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ ۙ

जो वे कहते हैं उस पर धैर्य धर । और हमारे भक्त दाऊद को याद कर जो बहुत शक्तिशाली था । निःसन्देह वह विनम्रता पूर्वक बार-बार झुकने वाला था ।।18।

निःसन्देह हमने उसके साथ पहाड़ों को सेवाधीन कर दिया । वे ढलती हुई शाम और फूटती हुई सुबह के समय स्तुति करते थे ।।19।

और इकट्ठे किए हुए पक्षियों को भी (उसके लिए सेवाधीन कर दिया था) । सब उस (अर्थात् रब्ब) के समक्ष झुकने वाले थे ।।20।

और उसके राज्य को हमने दृढ़ कर दिया और उसे बुद्धिमानी और निर्णायक वाक्शक्ति प्रदान की ।।21।

और क्या तेरे पास झगड़ने वालों का समाचार पहुँचा है, जब उन्होंने महल के प्राचीर को फलाँगा ? ।।22।

जब वे दाऊद के सामने आए तो वह उनके कारण अत्यन्त घबराया । उन्होंने कहा, कोई भय न कर । (हम) दो झगड़ने वाले (हैं) । हम में से एक दूसरे पर अत्याचार कर रहा है । अतः हमारे बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर और कोई अत्याचार न कर । और हमें सीधे-मार्ग की ओर रहनुमाई कर ।।23।

निःसन्देह यह मेरा भाई है । इसकी निनान्वे दुन्बियाँ हैं और मेरी केवल एक दुन्बी है । फिर भी यह कहता है कि उसे भी मेरी संपत्ति में सम्मिलित कर दे ।

إصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَادْكُرْ عَبْدَنَا دَاوُدَ ذَا الْأَيْدِ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝۱۸

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعِشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ۝۱۹

وَالطَّيْرَ مُحْشُورَةً كُلٌّ لَهُ أَوَّابٌ ۝۲۰

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَأَتَيْنَهُ الْحِكْمَةَ وَفُضِّلَ الْخِطَابِ ۝۲۱

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَضِمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ ۝۲۲

إِذْ دَخَلُوا عَلَى دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَخَفْ خَصِمٌ بَغِي بَعْضُنَا عَلَى بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَا إِلَى سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۝۲۳

إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْجَةً وَلِيَ نَعْجَةً وَاحِدَةً فَقَالَ أَكْفَلْنِيهَا

और बहस करने में मुझ पर भारी पड़ता है । 124।

उस ने कहा, उसने तेरी एक दुंबी अपनी दुन्वियों में सम्मिलित करने की माँग करके निःसन्देह तुझ पर अत्याचार किया है । और निःसन्देह बहुत से भागीदार (ऐसे) हैं कि उनमें से कुछ, कुछ अन्यो पर अत्याचार करते हैं । सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक कर्म किए और ऐसे लोग बहुत थोड़े हैं । और दाऊद ने समझ लिया कि हमने उसकी परीक्षा ली थी । अतः उसने अपने रब्ब से क्षमा याचना की और वह विनम्रता पूर्वक गिर पड़ा और प्रायश्चित्त किया । 125।

अतः हमने उसका यह (दोष) क्षमा कर दिया । और निःसन्देह उसे हमारे हाँ एक निकटता और उत्तम स्थान प्राप्त था । 126।

हे दाऊद ! निःसन्देह हमने तुझे धरती में उत्तराधिकारी बनाया है । अतः लोगों के बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर और मनोवेग के झुकाव का अनुसरण न कर अन्यथा वह (झुकाव) तुझे अल्लाह के मार्ग से भटका देगा । निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह के मार्ग से भटक जाते हैं उनके लिए कठोर अज़ाब (निश्चित) है । क्यों कि वे हिसाब का दिन भूल गए थे । 127।

(स्कू 2/11)

और हमने आकाश और धरती को और जो कुछ उनके मध्य है उद्देश्यहीन पैदा

وَعَزَّنِي فِي الْخِطَابِ ①

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلَى نِعَاجِهِ ② وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَقَلِيلٌ مَا هُمْ ③ وَظَنَّ دَاوُدُ أَنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا وَأَنَابَ ④

فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكَ ⑤ وَإِنَّ لَهُ عِندَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ ⑥

يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ⑦ إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نَسُوا يَوْمَ الْحِسَابِ ⑧

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا

नहीं किया। यह उन लोगों की केवल धारणा मात्र है जिन्होंने इनकार किया। अतः जिन्होंने इनकार किया अग्नि (के अज़ाब के) द्वारा उनका विनाश हो। 128। क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक-कर्म किए वैसा ही ठहरा देंगे जैसे धरती में उपद्रव करने वाले हैं? अथवा क्या हम तक्रवा धारण करने वालों को दुराचारियों के समान समझ लेंगे? 129।

महान पुस्तक, जिसे हमने तेरी ओर उतारा, बरकत दी गई है। ताकि ये (लोग) उसकी आयतों पर चिन्तन करें और ताकि बुद्धिमान उपदेश प्राप्त करें। 130।

और हमने दाऊद को सुलैमान प्रदान किया। (वह) क्या ही अच्छा भक्त था। निःसन्देह वह बार-बार विनम्रतापूर्वक झुकने वाला था। 131।

जब साँय काल उसके सामने तीव्र गति से दौड़ने वाले घोड़े लाए गए। 132।

तो उसने कहा, निःसन्देह मैं अपने रब्ब की याद के कारण धन से प्रेम करता हूँ। यहाँ तक कि वे ओट में चले गए। 133।

(उसने कहा) उन्हें दोबारा मेरे सामने लाओ। अतः वह (उनकी) पिंडलियों और गर्दनो पर (प्रेम से) हाथ फेरने लगा। 134।*

بَاطِلًا ۚ ذَٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ فَوَيْلٌ
لِّلَّذِينَ كَفَرُوا مِنَ النَّارِ ۖ ﴿٢٨﴾

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
كَالْمُفْسِدِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ أَمْ نَجْعَلُ
الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ۚ ﴿٢٩﴾

كِتَابٍ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِّيَدَّبَّرُوا
آيَاتِهِ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۖ ﴿٣٠﴾

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمَانَ ۖ نِعْمَ الْعَبْدُ
إِنَّهُ أَوَابٌ ۖ ﴿٣١﴾

إِذْ عَرَضَ عَلَيْهِ بِالْعِشِيِّ الصِّفَتِ
الْجِيَادِ ۖ ﴿٣٢﴾

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ
ذِكْرِ رَبِّي ۖ حَتَّى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۖ ﴿٣٣﴾

رُدُّوهَا عَلَيَّ ۖ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ
وَالْأَعْنَاقِ ۖ ﴿٣٤﴾

* आयत सं. 32 से 34 : इससे अधिकतर व्याख्याकार यह अर्थ निकालते हैं कि हज़रत सुलैमान अलै.
को अपने घोड़ों से इतना प्रेम था कि उनको देखने में खोकर आप की नमाज़ छूट गई। अतः इस→

और निःसन्देह हमने सुलैमान की परीक्षा ली और हमने उस (के राज्य) के सिंहासन पर (बुद्धि व समझ विहीन) एक शरीर को रख दिया । तब वह (अल्लाह ही की ओर) झुका । 135।*

(और) कहा हे मेरे रब्ब ! मुझे क्षमा कर दे और मुझे एक ऐसा राज्य प्रदान कर कि मेरे पश्चात उस पर कोई और न जचे । निःसन्देह तू ही अपार दानशील है । 136।**

अतः हमने उसके लिए हवा को भी सेवाधीन कर दिया जो उसके आदेश पर धीमी गति से जिधर वह (ले) जाना चाहता था, चलती थी । 137।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ جَسَداً ثُمَّ أَنَابَ ﴿٣٥﴾

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِّنْ بَعْدِي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٦﴾

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ﴿٣٧﴾

← क्रोध में उन्होंने उन सब की कूँचे काट डाली और गर्दनों को शरीर से पृथक कर दिया । यह अत्यन्त मूर्खतापूर्ण व्याख्या है जिसे पवित्र कुरआन से जोड़ना वास्तव में उसका अपमान है । यदि नमाज़ छूट गई थी तो फिर पहले नमाज़ पढ़ने का उल्लेख आना चाहिए था । घोड़ों को देखने का काम तो उन्होंने अपनी इच्छा से किया था । घोड़ों बेचारों का क्या अपराध था कि उनका वध किया जाता । वास्तविकता यह है कि चूँकि अल्लाह तआला के लिए जिहाद करने के उद्देश्य से ये घोड़े रखे गये थे इस कारण उनसे प्रेम को प्रकट करने के लिए उन्होंने उनकी पिंडलियों और जाँघों पर हाथ फेरा, जैसा कि आजकल भी घोड़ों से प्रेम करने वाला यही व्यवहार करता है ।

* इस आयत का अर्थ यह है कि उनका उत्तराधिकारी न आध्यात्मिक गुण रखता था न ही शासन चलाने की योग्यता रखता था । इसलिए एक बेकार शरीर की भाँति था । और हमने उसके सिंहासन पर एक शरीर को रख दिया से अभिप्राय उसका सिंहासन पर विराजमान होना है । इस आयत के अर्थ के साथ भी कुछ विद्वानों ने बहुत ही अन्याय किया है और हज़रत सुलैमान अलै. को मानो दुराचारी तक घोषित किया है । उनके कथनानुसार एक सुन्दर स्त्री को जो उन की पत्नी नहीं थी, वह उस सिंहासन पर विराजमान हुई । और उन्होंने उससे दुष्कर्म का मन बना लिया, फिर ध्यान आया कि यह तो अल्लाह की ओर से मेरे लिए एक परीक्षा थी । अतः यह कहानी उस कहानी से मिलती जुलती है जो हज़रत यूसुफ़ अलै. के बारे में भी व्याख्याकारों ने घड़ी हुई है ।

** इस आयत में पिछली सारी आयतों का अन्तिम परिणाम निकाल दिया गया है । जब सुलैमान अलै. को ज्ञात हुआ कि उन का पुत्र न आध्यात्मिक ज्ञान रखता है और न शासन के योग्य है तो उन्होंने स्वयं उसके विरुद्ध दुआ की । और अल्लाह तआला से प्रार्थना की, कि मेरे पश्चात फिर इतना बड़ा सम्राज्य किसी और को न मिले । अतः इतिहास से प्रमाणित है कि हज़रत सुलैमान अलै. के पश्चात वह साम्राज्य उत्तरोत्तर पतनोन्मुखी होता गया ।

और शैतानों को भी । (अर्थात्)
निर्माण-कला के हर माहिर और
गोताखोर को ।38।

और (कुछ) दूसरों को भी जिन्हें जंजीरों
में जकड़ा गया था ।39।

यह हमारा अपार दान है । अतः (चाहे)
उपकार पूर्ण व्यवहार कर अथवा रोके
रख ।40।

और निःसन्देह उसे हमारे हाँ एक
निकटता और उत्तम स्थान प्राप्त
था ।41। (रुकू 3/12)

और हमारे भक्त अय्यूब को भी याद कर
जब उसने अपने रब्ब को पुकारा कि
निःसन्देह मुझे शैतान ने बहुत दुःख और
कष्ट दिया है ।42।

(हमने उसे कहा) अपनी सवारी को
एड़ लगा । यह (निकट ही) नहाने
और पीने के लिए ठंडा पानी
है ।43।

और फिर हमने उसे उसके परिवार
और उनके अतिरिक्त उन जैसे और
भी अपनी कृपा स्वरूप प्रदान कर
दिए । और (यह) बुद्धिमानों के लिए
एक शिक्षाप्रद अनुस्मरण के रूप में
(है) ।44।

और (उससे कहा कि) सूखी और हरी
टहनियों का गुच्छा अपने हाथ में ले और
उसी से प्रहार कर । और (अपनी)
कसम को झूठी न होने के । निःसन्देह
हमने उसे बहुत धैर्य धरने वाला पाया ।
(वह) क्या ही अच्छा भक्त था ।

وَالشَّيْطَانِ كُلِّ بَنَاءٍ وَغَوَاصٍ ۝

وَأَخْرَيْنَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝

هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَّآبٍ ۝

وَإِذْ كُرِعَ عَبْدُنَا أَيُّوبُ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي
مَسْنِي الشَّيْطَانُ يَصْصِبُ وَعَذَابٍ ۝

أَرْكُضْ بِرَجْلِكَ هَذَا مَغْتَسلُ بَارِدٍ
وَشَرَابٍ ۝

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ
رَحْمَةً مِّمَّا وَذَكَّرَىٰ لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِعْفًا فَاصْرِبْ بِهِ وَلَا
تَحْنُتْ ۖ إِنَّا وَجَدْنَاهُ صَابِرًا نِّعْمَ الْعَبْدُ ۝

निःसन्देह वह बार-बार विनम्रतापूर्वक झुकने वाला था ।45।*

और याद कर हमारे भक्त इब्राहीम और इसहाक और याकूब को जो बहुत शक्तिशाली और दूरदर्शी थे।46।

निःसन्देह हमने उन्हें विशेष रूप से परकालीन घर के स्मरण करने के कारण चुन लिया ।47।

और निःसन्देह वे हमारे निकट अवश्य चुने हुए (और) बहुत से गुणों वाले लोगों में से थे ।48।

और इस्माईल को भी याद कर और अल्यसब् को और जुल किफल को । और वे सब श्रेष्ठ लोगों में से थे ।49।

यह एक महान अनुस्मरण है और निःसन्देह मुत्तकियों के लिए बहुत अच्छा ठिकाना होगा ।50।

إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ أُولِي الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ۝

إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ذَكَرْنَاهُ الدَّارِ ۝

وَأَنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنِ الْأَخْيَارِ ۝

وَاذْكُرْ إسماعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِنَ الْأَخْيَارِ ۝

هَذَا ذِكْرٌ وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَآبٍ ۝

* आयत सं. 42 से 45 : हज़रत अय्यूब अलै. को शैतान ने जो दुःख पहुँचाया था वह बहुत ही पीड़ादायक था । बाइबिल के अनुसार उनको बहुत ही भयंकर चर्म-रोग लग गया था जिसके कारण घर वाले भी घृणा करते हुए उनको कूड़े के ढेर पर छोड़ गए थे । पवित्र कुरआन ने ऐसा कोई वर्णन नहीं किया ।

कुरआन के अनुसार हज़रत अय्यूब अलै. को अल्लाह तआला ने शाखों वाली एक टहनी से अपनी सवारी को हाँकने का आदेश दिया और निर्देश दिया कि अपनी क्रसम को न तोड़ । इसके बारे में यह विचित्र कहानी वर्णन की जाती है कि यहाँ पर सवारी से अभिप्राय घोड़ी नहीं बल्कि पत्नी है । उन्होंने अपनी पत्नी को सौ लाठी मारने की क्रसम खाई थी । इस कारण अल्लाह तआला ने कहा कि झाड़ू से मार लो । उसमें सौ तिनके होते होंगे तो क्रसम पूरी हो जाएगी । परन्तु यह कहानी बिल्कुल काल्पनिक है । जिन नबियों की पत्नियों ने उनसे विद्रोह किया था उनमें हज़रत अय्यूब अलै. की पत्नी का कहीं उल्लेख नहीं मिलता । अतः अरबी शब्द “ज़िग्सन्” (सूखी और हरी शाखों के गुच्छे) से सवारी को हाँकने का आदेश है, जो उनको उस पानी तक पहुँचा देगी जिसके प्रयोग से उन को आरोग्य लाभ होगा । अल्लाह तआला ने जब हज़रत अय्यूब अलै. को आरोग्य प्रदान कर दिया तो न केवल उन की देख-भाल के लिए उनको घर वाले प्रदान किए बल्कि उन जैसे सर्वस्व न्योछावर करने वाला एक समुदाय भी प्रदान कर दिया गया ।

अर्थात् स्थायी बागान होंगे । उनके लिए द्वार भली-भाँति खुले रखे जाएंगे। 51।

उनमें वे तकियों पर टेक लगाए हुए होंगे (और) वहाँ अधिकतापूर्वक भाँति-भाँति के फल और पेय पदार्थ मांग रहे होंगे। 52।

और उनके पास (लाजवंती) नीची दृष्टि रखने वाली हमजोलियाँ होंगी। 53।*

यह है वह, जिसका हिसाब-किताब के दिन के लिए तुम्हें वादा दिया जाता है। 54।

निःसन्देह यह हमारी (ओर से) जीविका है । इसका समाप्त हो जाना संभव नहीं। 55।

यही होगा । और निःसन्देह विद्रोहियों के लिए अवश्य सबसे बुरा लौटने का स्थान है। 56।

(अर्थात्) नरक । वे उसमें प्रविष्ट होंगे । अतः क्या ही बुरा बिछौना है। 57।

यह अवश्य होगा । अतः वे उसे चखें (अर्थात्) खौलता हुआ और बर्फीला पानी। 58।

और उससे मिलती जुलती और भी वस्तुएँ होंगी। 59।

यह वह समूह है जो तुम्हारे साथ (उसमें) प्रविष्ट होने वाला है । उनके लिए कोई अभिवादन नहीं । निःसन्देह वे अग्नि में प्रविष्ट होने वाले हैं। 60।

جَنَّتْ عَدْنٍ مُّقْتَحَةً لَهُمُ الْأَبْوَابُ ۝٥١

مُتَكِّينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ
كَثِيرَةٍ وَشَرَابٍ ۝٥٢

وَعِنْدَهُمْ قِصِرَاتُ الطَّرَفِ أَتْرَابٌ ۝٥٣

هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝٥٤

إِنَّ هَذَا لِرِزْقِنَا مَا لَهُ مِنْ تَفَادٍ ۝٥٥

هَذَا وَإِنَّ لِلطَّغْيِينِ لَشَرَّ مَا بٍ ۝٥٦

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَيُسَّ الْمِهَادُ ۝٥٧

هَذَا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَعَسَاقٌ ۝٥٨

وَأَخْرَمِنْ شَكْلَةٍ أَرْوَاجٌ ۝٥٩

هَذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَعَكُمْ لَا مَرْحَبًا
بِهِمْ إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ ۝٦٠

* उनके पास नीची दृष्टि रखने वाली कुवाँरी कन्यायें होंगी । यह भी एक उपमा है जिससे उनकी विनम्रता और लज्जाशीलता अभिप्रेत है ।

वे (ला'नत डालने वाले गिरोह से) कहेंगे, बल्कि तुम ही (ला'नत किये गये) हो। तुम्हारे लिए कोई अभिवादन नहीं। तुम ही हो जिन्होंने हमारे लिए यह कुछ आगे भेजा है। अतः क्या ही बुरा ठहरने का स्थान है। 161।

वे कहेंगे, हे हमारे रब्ब ! जिसने हमारे लिए यह आगे भेजा उसे अग्नि में दोहरा अज़ाब दे। 162।

और वे कहेंगे, हमें क्या हुआ है कि हम उन लोगों को नहीं देख रहे जिन्हें हम दुष्टों में गिना करते थे। 163।

क्या हमने उन्हें तुच्छ समझ रखा था अथवा उन (की पहचान) से हमारी नज़रें चूक गईं ? 164।

निःसन्देह यह अग्नि (में पड़ने) वालों का परस्पर झगड़ना सत्य है। 165।

(स्कू 4/13)

तू कह दे, मैं तो केवल एक सतर्क करने वाला हूँ। और अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं जो अकेला (और) पराक्रमी है। 166।

आकाशों और धरती का रब्ब और उसका जो उन दोनों के मध्य है। पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है। 167।

तू कह दे, यह एक बहुत बड़ा समाचार है। 168।

तुम इससे विमुख हो रहे हो। 169।

قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ قَبْلَ لَمَرْجَبًا بِكُمْ أَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوهُ لَنَا فَبِئْسَ الْقَرَارُ ①

قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هَذَا فَرِذْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ②

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَى رَجَاءً لَا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِنَ الْأَشْرَارِ ③

أَتَّخَذْنَاهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمْ الْأَبْصَارُ ④

إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُّمُ أَهْلِ النَّارِ ⑤

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنْذِرٌ وَمَا مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ⑥

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ⑦

قُلْ هُوَ نَبَوُّ عَظِيمٌ ⑧

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ⑨

मुझे फ़रिश्तों का कोई ज्ञान नहीं था जब वे बहस कर रहे थे ।70।

مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَأِ الْأَعْلَى
إِذْ يَخْتَصِمُونَ ﴿٧٠﴾

मुझे तो केवल यह वहइ की जाती है कि मैं एक खुला-खुला सतर्क करने वाला हूँ ।71।

إِنْ يُوحَىٰ إِلَىٰ إِلَّا أَنَّمَا أَنَا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ﴿٧١﴾

जब तेरे रब्ब ने फ़रिश्तों से कहा, निःसन्देह मैं मिट्टी से मनुष्य पैदा करने वाला हूँ ।72।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا
مِّنْ طِينٍ ﴿٧٢﴾

अतः जब मैं उसे ठीक-ठाक कर लूँ और उसमें अपनी रूह में से कुछ फूँक दूँ तो उसके सामने सजदः करते हुए गिर पड़ो ।73।

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي
فَقَعُوا لَهُ سَجْدِينَ ﴿٧٣﴾

इस पर सब के सब फ़रिश्तों ने सजदः किया ।74।

فَسَجَدَ الْمَلِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ﴿٧٤﴾

सिवाय इब्लीस के । उसने अहंकार किया और वह था ही क़ाफ़ि़रों में से ।75।

إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ
الْكَافِرِينَ ﴿٧٥﴾

उस (अल्लाह) ने कहा हे इब्लीस ! तुझे किस चीज़ ने उसे सजदः करने से मना किया जिसे मैंने अपनी (कुदरत के) दोनों हाथों से सृजित किया था ? क्या तूने अहंकार किया है अथवा तू बहुत ऊँचे लोगों में से है ? ।76।

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا
خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۖ اسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ
الْعَالِينَ ﴿٧٦﴾

उसने कहा, मैं उससे श्रेष्ठ हूँ । तूने मुझे अग्नि से पैदा किया और उसे मिट्टी से पैदा किया ।77।

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ ۖ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ
وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ﴿٧٧﴾

उसने कहा, फिर यहाँ से निकल जा । निःसन्देह तू धिक्कारा हुआ है ।78।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٧٨﴾

और निःसन्देह तुझ पर प्रतिफल दिवस तक मेरी ला'नत पड़ेगी ।79।

وَأَنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٧٩﴾

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! इस परिस्थिति में मुझे उस दिन तक ढील दे दे जिस दिन (लोग) उठाए जाएंगे । 80।

उसने कहा, निःसन्देह तू ढील दिए जाने वालों में से है । 81।

एक निश्चित समय के दिन तक । 82।

उसने कहा, तो फिर तेरी प्रतिष्ठा की कसम ! मैं अवश्य उन सब को पथभ्रष्ट करूँगा । 83।

सिवाए उनमें से तेरे उन भक्तों के जो (तेरे) चुने हुए होंगे । 84।*

उसने कहा, अतः सच तो यह है और मैं अवश्य सच ही कहता हूँ । 85।

मैं नरक को अवश्य तुझ से और उन सबसे भर दूँगा जो उनमें से तेरा अनुसरण करेंगे । 86।

तू कह दे कि इस (बात) पर मैं तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता । और न ही मैं दिखावा करने वालों में से हूँ । 87।

यह तो समस्त लोकों के लिए एक महान उपदेश के अतिरिक्त कछ नहीं । 88।

और कुछ समय के पश्चात तुम लोग उसकी वास्तविकता को अवश्य जान लोगे । 89। (रुकू 5/14)

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٨٠﴾

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٨١﴾

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٨٢﴾

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَا غُورَ يَتَّهُمُ أَجْمَعِينَ ﴿٨٣﴾

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ ﴿٨٤﴾

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقُّ أَقُولُ ﴿٨٥﴾

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَتَّبَعُ مِنْهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٨٦﴾

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٨٧﴾

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ﴿٨٨﴾

وَلِتَعْلَمَنَّ بِمَا بَعْدَ حِينٍ ﴿٨٩﴾

* आयत सं. 83-84 : शैतान को जब अल्लाह तआला ने धुतकार दिया तो उसने अपनी ढिठाई में अल्लाह तआला से छूट माँगी कि जिन भक्तों को तूने मुझ पर प्रधानता दी है यदि मुझे छूट मिले तो उनको मैं प्रत्येक प्रकार का धोखा देकर तुझ से छीन लूँगा और वे तेरे बदले मेरी उपासना करेंगे । सिवाए तेरे उन भक्तों के जो तेरे लिए विशिष्ट हो चुके हों । उन पर मेरा कोई अधिकार नहीं चलेगा ।

39- सूर: अज़-जुमर

यह मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 76 आयतें हैं ।

इससे पहली सूर: के अंत में धर्म को अल्लाह के लिए विशेष करने वाले ऐसे भक्तों का विवरण है जिन्होंने शैतान की उपासना का इनकार किया और पूर्णरूपेण अल्लाह तआला की उपासना करने में शीश झुकाए रखा । इस सूर: के आरम्भ ही में यह घोषणा की गई है कि हे रसूल ! धर्म को अल्लाह के लिए विशेष करते हुए उसी की उपासना कर । निःसन्देह अल्लाह तआला विशुद्ध धर्म को ही स्वीकार करता है । इसके बाद मुश्रिकों के एक तर्क का खण्डन किया गया है । वे मुर्तिपूजा के पक्ष में यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि ये कृत्रिम उपास्य हमें अल्लाह से निकट करने का माध्यम बनते हैं । अल्लाह ने कहा, कदापि ऐसा नहीं । बल्कि माध्यम तो वही बनेगा जिसका धर्म हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की भांति विशुद्ध है और इसमें शिरक का किंचिन्मात्र अंश भी नहीं है ।

इसके पश्चात इस वास्तविकता को दोहराया गया है कि मनुष्य जीवन का आरम्भ एक ही जान से हुआ था । फिर जब मनुष्य माँ के गर्भ में भ्रूण के रूप में विकास के पड़ाव तय करने लगा तो वह भ्रूण तीन अन्धेरों में छिपा हुआ था । पहला अन्धेरा माँ के पेट का अन्धेरा है जिसने गर्भाशय को ढांका हुआ है । दूसरा अन्धेरा स्वयं गर्भाशय का अन्धेरा है, जिसमें भ्रूण पलता है और तीसरा अन्धेरा जरायु (Placenta) का अंधेरा है जो माँ के गर्भाशय के अंदर भ्रूण को समेटे हुए होता है ।

फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह घोषणा करने का आदेश दिया गया है कि मुझे तो यही आदेश दिया गया है कि मैं उपासना को उसी के लिए विशेष कर दूँ । उसके पश्चात आदेश दिया गया है कि तू कह दे कि अल्लाह ही है जिसके लिए मैं अपने धर्म को विशुद्ध करते हुए उपासना करता रहूँगा । तुम अपनी जगह उसके सिवा जिसकी चाहे उपासना करते फिरो । फिर आप सल्ल. को यह कहा गया कि उनको बता दे कि यदि वे ऐसा करेंगे तो यह बहुत घाटे वाला सौदा होगा क्योंकि वे अपने आप को भी और अपनी आगे आने वाली पीढ़ियों को भी इस कुटिलता के द्वारा पथभ्रष्ट करने का कारण बनेंगे । इसके पश्चात यह प्रश्न उठाया गया है कि क्या वह व्यक्ति जिसका सीना अल्लाह तआला ने अपनी याद के लिए खोल दिया हो अथवा दूसरे शब्दों में जिसे पूर्ण विश्वास प्रदान कर दिया गया हो । इसके उत्तर का यूँ तो स्पष्टतः उल्लेख नहीं परन्तु इस प्रश्न में ही निहित है और वह यह है कि ऐसे व्यक्ति से उत्तम और कोई नहीं हो सकता । अतः बहुत ही अभागे हैं वे लोग जो अपने रब्ब का स्मरण करने से लापरवाह रहते हैं ।

इस सूर: की आयत सं. 24 में यह घोषणा की गई है कि अल्लाह तुझ से एक बहुत

ही मनमोहक बात वर्णन करता है जो यह है कि अल्लाह ने तुझ पर एक बार-बार पढ़ी जाने वाली पुस्तक उतारी है जिसमें कुछ ऐसी आयतें भी हैं जिनके अर्थ अस्पष्ट हैं और वे जोड़ा-जोड़ा हैं । परन्तु उनकी व्याख्या स्वरूप बिल्कुल उनसे मिलती जुलती और भी आयतें उपस्थित हैं जो सत्य की खोज करने वालों को अस्पष्ट आयतों को समझने का सामर्थ्य प्रदान करेंगी । यह वही विषय है जो **कुछ-कुछ की व्याख्या करती हैं** उक्ति के अनुरूप है । एक दूसरे स्थान पर कहा कि जो ज्ञान में पैठ रखते हैं उनके लिए तो कोई आयत भी अस्पष्ट नहीं रहती ।

इस सूरः में वह आयत भी है जो हज़रत मसीह मौऊद अलै. को वहइ हुई थी और हुज़ूर अलै. ने एक अंगूठी तैयार करवा कर उसके नगीने में उसे खुदवा लिया था । अर्थात् **अलै सल्लाहु बिकाफ़िन अब्दहू** (क्या अल्लाह अपने भक्त के लिए पर्याप्त नहीं) इसी कारण अहमदी ऐसी अंगूठियाँ मंगलमय जानकर और शुभ-शकुन के रूप में अपनी उंगलियों में पहनते हैं ।

इस सूरः की आयत सं. 43 में एक बड़े रहस्य पर से पर्दा उठाया गया है कि नींद भी एक प्रकार की मृत्यु है जिसमें आत्मा या चेतनशक्ति बार-बार डूबती है । फिर अल्लाह तआला ने ऐसी व्यवस्था जारी कर दी है कि ठीक निर्धारित समय पर दिमाग की तह से टकरा कर फिर वापस उभर आती है । वैज्ञानिकों ने इस पर खोज की है और बताया है कि यह प्रक्रिया निर्धारित समय में एक सोए हुए व्यक्ति से बार-बार पेश आती रहती है । इस निश्चित समय को एक आणविक घड़ी से भी नापा जा सकता है और इस अवधि में किसी प्रकार का कोई अंतर दिखाई नहीं देगा । फिर जब अल्लाह तआला उस जान को डूबने के पश्चात दोबारा वापस नहीं भेजता तो इसी का नाम मृत्यु है ।

क्योंकि यहाँ अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित होने का और इस संसार से सदा की जुदाई का वर्णन आ रहा है इस कारण वे जो जवाबदेही का भय रखते हैं उनको यह शुभ-समाचार भी दे दिया गया है कि अल्लाह तआला प्रत्येक प्रकार के पापों को क्षमा करने का सामर्थ्य रखता है । क्योंकि वह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार दया करने वाला है । अतः अल्लाह के समक्ष झुको और उसी के सुपुर्द हो जाओ इस से पूर्व कि वह अज़ाब तुम्हें आ पकड़े । और फिर प्रायश्चित्त करने से पूर्व तुम्हारी मृत्यु हो जाए और मनुष्य पश्चाताप करते हुए यह कहे कि काश ! मैं अल्लाह तआला के पहलू में अर्थात् उसकी दृष्टि के सामने इतने पाप करने की धृष्टता न करता ।

इस सूरः का नाम **अज़-ज़ुमर** है और अंत पर दो आयतों में **जुमर** (समूहों) को दो भागों में विभाजित किया गया है । एक वे हैं जो समूहबद्ध रूप में नरक की ओर ले जाए जाएंगे और एक वे जो समूहबद्ध रूप में स्वर्ग की ओर ले जाए जाएंगे ।

سُورَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتٌّ وَ سَبْعُونَ آيَةً وَ ثَمَانِيَةٌ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

इस सम्पूर्ण ग्रन्थ का अवतरण पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) परम विवेकशील अल्लाह की ओर से हुआ है ।2।

निःसन्देह हमने तेरी ओर (इस) पुस्तक को सत्य के साथ उतारा है । अतः अल्लाह के लिए धर्म को विशिष्ट करते हुए उसी की उपासना कर ।3।

सावधान ! विशुद्ध धर्म ही अल्लाह की प्रतिष्ठानुकूल है । और वे लोग जो उस के सिवा (दूसरों को) मित्र बना लिए हैं (कहते हैं कि) हम केवल इस उद्देश्य के लिए ही उनकी उपासना करते कि वे हमें अल्लाह के निकट करते हुए निकटता के ऊँचे स्थान तक पहुँचा दें । निःसन्देह अल्लाह उनके मध्य उसका निर्णय करेगा जिसमें वे मतभेद किया करते थे । अल्लाह कदापि उसे हिदायत नहीं देता जो झूठा (और) बड़ा कृतघ्न हो ।4।

यदि अल्लाह चाहता कि वह कोई पुत्र अपनाए तो उसी में से जो उसने पैदा किया है, जिसे चाहता अपना लेता । वह बहुत पवित्र है । वही अल्लाह अकेला (और) प्रभुत्वशाली है ।5।

उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया है । वह दिन पर रात

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ②

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ بِالْحَقِّ فَاغْبِ اللَّهُ مُخْلِصًا لِلدِّينِ ③

إِلَّا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَاصُّ ④ وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَى ⑤ إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ⑥ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَذِبٌ كَفَّارٌ ⑦

لَوْ أَرَادَ اللَّهُ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا لَأَصْطَفَى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ لَسُبْحَنَهُ ⑧ هُوَ اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ⑨

خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ⑩ يَكُونُ

का खोल चढ़ा देता है और रात पर दिन का खोल चढ़ा देता है । और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा को सेवाधीन किया। प्रत्येक अपने निश्चित समय की ओर गतिशील है । सावधान वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है । 16।

उसने तुम्हें एक जान से पैदा किया । फिर उसी में से उस ने उसका जोड़ा बनाया । और उसने तुम्हारे लिए पशुओं में से आठ जोड़े उतारे । वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेटों में तीन अन्धेरों में एक उत्पत्ति के पश्चात दूसरी उत्पत्ति में परिवर्तित करते हुए पैदा करता है । यह है अल्लाह, तुम्हारा रबब । उसी का साम्राज्य है, उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । अतः तुम कहाँ उल्टे फिराए जाते हो ? 17।*

यदि तुम इनकार करो तो निःसन्देह अल्लाह तुम से बे-परवाह है और वह अपने भक्तों के लिए कुफ़्र को पसन्द नहीं करता । और यदि तुम कृतज्ञता प्रकट

أَيَّلَ عَلَى النَّهَارِ وَيَكْوِرُ النَّهَارَ عَلَى الْإِيلِ
وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ يَجْرِي
لِأَجَلٍ مُّسَيَّ ۖ أَلَا هُوَ الْعَزِيزُ
الْغَفَّارُ ①

خَلَقَكُمْ مِنْ نَفْسٍ وَاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا
زَوْجَهَا وَانزَلَ لَكُمْ مِنَ الْأَنْعَامِ ثَمَنِيَّةَ
أَزْوَاجٍ ۖ يَخْلُقُكُمْ فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ
خَلْقًا مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِي ظُلُمٍ ثَلَاثٍ ۖ
ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا
هُوَ ۚ فَآلَىٰ تَصْرَفُونَ ⑦

إِنْ تَكْفُرُوا فَإِنَّ اللَّهَ غَنَىٰ عَنْكُمْ ۖ وَلَا
يَرْضَىٰ لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَإِنْ تَشْكُرُوا

* अरबी शब्द अन ज़ ल यद्यपि उतारने का अर्थ देता है परन्तु यहाँ इन असाधारण लाभदायक वस्तुओं को पैदा करने के अर्थों में प्रयुक्त हुआ है । न कि सशरीर आकाश से उतारने के अर्थों में । समग्र जगत को ज्ञात है कि पशु आकाश से बारिश की भाँति नहीं गिरा करते । इसके बावजूद उनके लिए नुज़ूल (उतारने) का शब्द इस लिए प्रयुक्त किया गया है कि वे मानव जाति के लिए अनगिनत लाभ रखते हैं । यही शब्द नुज़ूल हज़रत ईसा अलै. के दोबारा आगमन के लिए प्रयुक्त हुआ है । परन्तु सबसे बढ़कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के संबंध में भी नुज़ूल शब्द का प्रयोग हुआ है जैसा कि फर्माया क़द अन ज़लल्लाहु इलैकुम ज़िक्रर्सूलन (तुम्हारी ओर अल्लाह ने एक उपदेशक रसूल उतारा है ।) (सूर: अत्-तलाक़, आयत 11-12) सभी उलेमा स्वीकार करते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सशरीर आकाश से नहीं उतरे थे । उनको चाहिए कि हज़रत ईसा अलै. के उतरने के संबंध में भी अपनी मान्यताओं पर पुनर्विचार करें ।

करो तो वह इसे तुम्हारे लिए पसन्द करता है । और कोई बोझ उठाने वाली किसी दूसरी का बोझ नहीं उठाएगी । फिर तुम सब को अपने रब्ब की ओर लौटना है । अतः वह तुम्हें उन कर्मों से सूचित करेगा जो तुम किया करते थे । निःसन्देह वह सीनों के रहस्यों को भली-भाँति जानता है । 18।

और जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचता है तो वह अपने रब्ब को उसकी ओर झुकते हुए पुकारता है । फिर जब वह उसे अपनी ओर से कोई नेमत प्रदान करता है तो वह उस बात को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले दुआ किया करता था । और वह अल्लाह के साझीदार ठहराने लगता है ताकि उसके मार्ग से (लोगों को) पथभ्रष्ट कर दे । तू कह दे कि अपने कुफ़्र से कुछ थोड़ा सा अस्थायी लाभ उठा ले निःसन्देह तू अग्नि में पड़ने वालों में से है । 19।

क्या वह जो रात की घड़ियों में उपासना करने वाला है (कभी) सजदः की अवस्था में, और (कभी) खड़े होने की अवस्था में, परलोक के प्रति डरता है और अपने रब्ब की कृपा की आशा रखता है (ज्ञानी व्यक्ति नहीं होता ?) तू पूछ कि क्या वे लोग जो ज्ञान रखते हैं और वे जो ज्ञान नहीं रखते, समान हो सकते हैं? निःसन्देह बुद्धिमान ही उपदेश प्राप्त करते हैं । 10। (रुकू 1/15)

يَرْضَاهُ لَكُمْ ۖ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ
أُخْرَى ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ مَرْجِعُكُمْ
فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ
بِدَاتِ الصُّدُورِ ۝

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهُ مُنِيبًا
إِلَيْهِ ۖ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهُ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ
يَدْعُو إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلَّهِ أَنْدَادًا
لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ
قَلِيلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۝

أَمِنْ هَؤُلَاءِ الَّذِينَ أَنَاءَ الْأَلِيلِ سَاجِدًا وَقَائِمًا
يَحْذَرُ الْآخِرَةَ ۖ وَيَرْجُوا رَحْمَةَ رَبِّهِ ۖ
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِينَ يَعْلَمُونَ وَالَّذِينَ
لَا يَعْلَمُونَ ۚ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولَٰئِ
الَّذِينَ

तू कह दे कि हे मेरे भक्तो जो ईमान लाए हो ! अपने रब्ब का तक्रवा धारण करो । उन लोगों के लिए जो उपकार करते हैं, इस संसार में भी भलाई होगी और अल्लाह की धरती विस्तृत है । निःसन्देह धैर्य करने वालों को ही बिना हिसाब के उनका भरपूर प्रतिफल दिया जाएगा ।।11।

तू कह दे कि मुझे तो आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह की उपासना उसी के लिए धर्म के प्रति निष्ठावान होकर करूँ ।।12।

और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं सब आज्ञाकारियों में से प्रथम हो जाऊँ ।।13।

तू कह दे कि यदि मैं अपने रब्ब की अवज्ञा करूँ तो निःसन्देह एक बहुत बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ ।।14।

तू कह दे कि मैं अल्लाह ही की उपासना करता हूँ उसी के लिए अपने धर्म के प्रति निष्ठावान होते हुए ।।15।

अतः तुम उसे छोड़ कर जिस की चाहो उपासना करते फिरो । तू कह दे कि निःसन्देह वास्तविक घाटा पाने वाले वे हैं जिन्होंने अपनी जानों और अपने परिजनो को क़यामत के दिन घाटे में डाला । सावधान ! यही बहुत खुला-खुला घाटा है ।।16।

उनके लिए उनके ऊपर से अग्नि की छाया होंगी और नीचे भी छाया होंगी । (अर्थात् अग्नि उनको प्रत्येक ओर से अपनी लपेट में ले लेगी) यह वह बात है

قُلْ لِعِبَادِ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا رَبَّكُمْ
لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ
وَأَرْضُ اللَّهِ وَاسِعَةٌ إِنَّمَا يُوَفَّى
الصَّابِرُونَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

قُلْ إِنِّي أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ مُخْلِصًا
لَهُ الدِّينَ ۝

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُونَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِينَ ۝

قُلْ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝

قُلِ اللَّهُ أَعْبُدْ مُخْلِصًا لَهُ دِينِي ۝

فَاعْبُدُوا مَا شِئْتُمْ مِنْ دُونِهِ قُلْ إِنَّ
الْخَسِرِينَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ
وَأَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ أَلَا ذَلِكَ هُوَ
الْخُسْرَانُ الْمُبِينُ ۝

لَهُمْ مِنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِنَ النَّارِ وَمِنْ
تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ذَلِكَ يُخَوِّفُ اللَّهَ بِهِ

जिससे अल्लाह अपने भक्तों को डराता है । अतः हे मेरे भक्तजनो ! मेरा ही तक्रवा धारण करो । 17।

और वे लोग जो मूर्तियों की उपासना करने से बचे और अल्लाह की ओर झुके उनके लिए बड़ा शुभ-समाचार है। अतः मेरे भक्तों को शुभ-समाचार दे दे । 18।

वे लोग जो बात को सुनते हैं तो उसमें से बेहतरीन (बात) का पालन करते हैं। यही वे लोग हैं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी और यही वे लोग हैं जो बुद्धिमान हैं । 19।

अतः क्या वह जिस पर अज़ाब का आदेश सिद्ध हो गया (बच सकता है ?) क्या तू उसे भी छुड़ा सकता है जो पूर्णतया अग्नि में (पड़ा) है ? । 20।

परन्तु वे लोग जो अपने रब्ब का तक्रवा धारण करते हैं उनके लिए अटारियाँ हैं जिनके ऊपर और अटारियाँ बनाई गई होंगी । उनके दामन में नहरें बहेँगी । (यह) अल्लाह ने वादा किया है । अल्लाह वादों को टाला नहीं करता । 21।

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से जल उतारा फिर उसे धरती में स्रोतों के रूप में जारी कर दिया । फिर वह उससे खेती निकालता है । उसके रंग भिन्न-भिन्न होते हैं । फिर वह शुष्क हो जाती है (अर्थात् पक कर अथवा बिना पके) । फिर तू उसे पीला होता हुआ

عِبَادَهُ ۖ يُعْبَادُ فَاتَّقُونَ ۝

وَالَّذِينَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوتَ أَنْ يَعْبُدُوهَا
وَأَنَابُوا إِلَى اللَّهِ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ ۖ فَبَشِّرْ
عِبَادِ ۝

الَّذِينَ يَسْمَعُونَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُونَ
أَحْسَنَهُ ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ هَدَاهُمُ اللَّهُ
وَأُولَٰئِكَ هُمُ أُولُو الْأَلْبَابِ ۝

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ۖ أَفَأَنْتَ
تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ۚ

لَكِنَّ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ
فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ ۖ وَعَدَ اللَّهُ ۚ لَا يُخْلِفُ اللَّهُ
الْمِيعَادَ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً
فَسَلَكَهُ يَابِيعٌ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهِ
زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ ثُمَّ يَهِيَجُ فَتَرَهُ

देखता है । फिर वह उसे चूर-चूर कर देता है । निःसन्देह इसमें बुद्धिमानों के लिए एक बड़ी शिक्षा है । 122।

(रुकू 2/16)

अतः क्या वह जिसका सीना अल्लाह इस्लाम के लिए खोल दे, फिर वह अपने रब्ब की ओर से एक प्रकाश पर (भी) क़ायम हो (वह अल्लाह के स्मरण से वंचित लोगों की भाँति हो सकता है ?) अतः सर्वनाश हो उनका जिनके दिल अल्लाह के स्मरण से (वंचित रहते हुए) कठोर हैं । यही वे लोग हैं जो खुली-खुली पथभ्रष्टता में हैं । 123।

अल्लाह ने सर्वश्रेष्ठ वर्णन एक मिलती-जुलती (और) बार-बार दोहराई जाने वाली पुस्तक के रूप में उतारा है । जिससे उन लोगों की त्वचाएँ जो अपने रब्ब का भय रखते हैं, कांपने लगती हैं । फिर उनकी त्वचाएँ और उनके दिल अल्लाह के स्मरण की ओर (झुकते हुए) नरम पड़ जाते हैं । यह अल्लाह की हिदायत है, वह इसके द्वारा जिसे चाहता है हिदायत देता है । और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं । 124।

अतः क्या वह जो क़यामत के दिन कठोर अज़ाब से बचने के लिए अपने चेहरे को ही ढाल बनाएगा (बच सकता है ?) और अत्याचारियों से कहा जाएगा कि चखो, जो तुम कमाया करते थे । 125।

مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهُ حُطَامًا ۚ إِنَّ فِي
ذَلِكَ لَذِكْرَىٰ لَأُولِي الْأَبْصَارِ ۝

أَفَمَنْ شَرَحَ اللَّهُ صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ
عَلَىٰ نُورٍ مِّنْ رَبِّهِ ۖ فَوَيْلٌ لِلْقَاسِيَةِ
قُلُوبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ أُولَٰئِكَ فِي
ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝

اللَّهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابًا مُّتَشَابِهًا
مَّثَانِيَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُودُ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ
رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِينُ جُلُودُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ
إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ ذَٰلِكَ هُدَى اللَّهِ يَهْدِي
بِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَمَن يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِنْ هَادٍ ۝

أَفَمَنْ يَتَّقِ بِوَجْهِهِ سُوءَ الْعَذَابِ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ ۖ وَقِيلَ لِلظَّالِمِينَ ذُوقُوا مَا كُنتُمْ
تَكْسِبُونَ ۝

उनसे पहले भी लोगों ने झुठलाया था तो उन्हें अज़ाब ने उस दिशा से आ पकड़ा जिस (दिशा) की वे कोई कल्पना भी नहीं कर सकते थे। 126।

अतः अल्लाह ने उन्हें इस संसार के जीवन में भी अपमान का स्वाद चखाया, जबकि परलोक का अज़ाब बहुत बढ़ कर है। काश ! वे जानते। 127।

और निःसन्देह हमने इस कुरआन में लोगों के लिए प्रत्येक प्रकार का उदाहरण वर्णन कर दिया है ताकि वे उपदेश प्राप्त करें। 128।

एक अत्यन्त सरल और शुद्ध भाषा सम्पन्न कुरआन जिसमें कोई कुटिलता नहीं, ताकि वे तक्रवा धारण करें। 129।

अल्लाह एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण वर्णन करता है जिसके कई स्वामी हों जो परस्पर एक दूसरे के विरोधी हों। और एक ऐसे व्यक्ति का भी (उदाहरण वर्णन करता है) जो पूर्णतया एक ही व्यक्ति का हो। क्या वे दोनों अपनी परिस्थिति की दृष्टि से एक समान हो सकते हैं ? समस्त स्तुति अल्लाह ही की है। (परन्तु) वास्तविकता यह है कि उनमें से अधिकतर नहीं जानते। 130।

निःसन्देह तू भी मरने वाला है और वे भी मरने वाले हैं। 131।

निःसन्देह फिर तुम क़ायामत के दिन अपने रब्ब के समक्ष एक दूसरे से बहस करोगे। 132। (रुकू 3/17)

كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَآتَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٢٦﴾

فَإِذَا قَهَّمُ اللَّهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ أَكْبَرُ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

وَلَقَدْ صَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٨﴾

قُرْآنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِي عِوَجٍ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٩﴾

صَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا رَجُلًا فِيهِ شُرَكَاءُ مُتَشَكِّسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِرَجُلٍ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٣٠﴾

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُمْ مَيِّتُونَ ﴿٣١﴾

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ ﴿٣٢﴾

अतः उससे अधिक अत्याचारी कौन हो सकता है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े और सच्चाई को झुठला दे, जब वह उसके पास आए। क्या नरक में काफ़िरों के लिए ठिकाना नहीं है ? 133।

और वह व्यक्ति जो सच्चाई लेकर आए और (वह जो) उस (सच्चाई) की पुष्टि करे, यही वे लोग हैं जो मुत्तकी हैं 134।

उनके लिए उनके रब्ब के पास वह कुछ होगा जो वे चाहेंगे। यह होगा पुण्य-कर्म करने वालों का प्रतिफल 135।

ताकि जो बुरे कर्म उन्होंने किए (उनके दुष्प्रभाव) अल्लाह उनसे दूर कर दे। और जो अच्छे कर्म वे किया करते थे, उनके अनुसार उन्हें उनका प्रतिफल प्रदान करे 136।

क्या अल्लाह अपने भक्त के लिए पर्याप्त नहीं ? और वे तुझे उनसे डराते हैं, जो उस के सिवा हैं। और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसके लिए कोई हिदायत देने वाला नहीं 137।

और जिसे अल्लाह हिदायत दे दे तो उसे कोई पथभ्रष्ट करने वाला नहीं। क्या अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) प्रतिशोध लेने वाला नहीं है ? 138।

और यदि तू उनसे पूछे कि आकाशों और धरती को किसने पैदा किया तो वे अवश्य कहेंगे, अल्लाह ने। तू उनसे कह दे कि सोचो तो सही यदि अल्लाह मुझे कोई हानि पहुँचाना चाहे तो क्या जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللَّهِ ۖ
وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۗ أَلَيْسَ
فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ۝

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ
أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ۝

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ
جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ۝

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا
وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِي
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۚ وَيُخَوِّفُونَكَ
بِالَّذِينَ مِنْ دُونِهِ ۚ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ
فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ۝

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ مُّضِلٍّ ۚ أَلَيْسَ
اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انْتِقَامٍ ۝

وَلَيْسَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضَ لِيَقُولَنَّ اللَّهُ ۚ قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَا
تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللَّهُ

हो, वे उसके (द्वारा उत्पन्न) हानि को दूर कर सकते हैं ? अथवा यदि वह मेरे पक्ष में दया करने का इरादा करे तो क्या वे उसकी दया को रोक सकते हैं ? तू कह दे कि मेरे लिए अल्लाह पर्याप्त है । उसी पर सब भरोसा करने वाले भरोसा करते हैं । 139।

तू कह दे कि हे मेरी जाति ! तुमने अपने स्थान पर जो करना है करते फिरो, मैं भी (अपने स्थान पर) करता रहूँगा । अतः तुम शीघ्र ही जान लोगे । 140।

(कि) किस तक वह अज़ाब आ पहुँचता है जो उसे अपमानित कर दे । और कौन है जिस पर आकर ठहर जाने वाला अज़ाब उतरता है । 141।

निःसन्देह हमने लोगों के लाभ के लिए तुझ पर सत्य के साथ पुस्तक उतारी है । अतः जो कोई हिदायत पाता है तो (वह) अपनी ही जान के हित के लिए हिदायत पाता है । और जो कोई पथभ्रष्ट होता है तो वह (अपनी जान) के विरुद्ध पथभ्रष्ट होता है । तू उन पर दारोगा नहीं है । 142। (स्कू $\frac{4}{1}$)

अल्लाह जानों को उनकी मृत्यु के समय कब्ज़ कर लेता है । और जो मरी नहीं होतीं (उन्हें) उनकी नींद की अवस्था में (कब्ज़ करता है ।) अतः जिसके लिए मृत्यु का निर्णय कर देता है उसे रोक रखता है और अन्य को एक निर्धारित समय तक के लिए (वापस) भेज देता है । निःसन्देह इसमें

بُضِرَ هَلْ هُنَّ كَشِفَتْ ضِرَّةَ أَوْ أَرَادُنِي
بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٌ رَحْمَتِهِ ۖ قُلْ
حَسْبِيَ اللَّهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝^{٣٩}

قُلْ يَقَوْمِ اعْمَلُوا عَلَىٰ مَكَانَتِكُمْ إِنِّي
عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۝^{٤٠}

مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ
عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۝^{٤١}

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ
فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَلِنَفْسِهِ ۚ وَمَنْ ضَلَّٰ فَلِنَآءِ
يُضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ۝^{٤٢}

اللَّهُ يَتَوَفَّى الْأَنفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي
لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ الَّتِي
قَضَىٰ عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرَىٰ
إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَيَّ ۖ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ

चिन्तन-मनन करने वालों के लिए बहुत से चिह्न हैं ।43।

क्या उन्होंने अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध कोई सिफ़ारिश अपना रखे हैं ? तू कह दे कि क्या इस पर भी कि वे किसी वस्तु के स्वामी नहीं हैं और न ही कोई बुद्धि रखते हैं ? ।44।

तू कह दे सिफ़ारिश (का मामला) पूर्णतया अल्लाह ही के अधिकार में है । आकाशों और धरती का सम्राज्य उसी का है । फिर उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे ।45।

और जब अकेले अल्लाह का वर्णन किया जाए तो उन लोगों के दिल जो परलोक पर ईमान नहीं रखते, बुरा मानते हैं । और जब उसे छोड़ कर दूसरों का वर्णन किया जाए तो वे बहुत प्रसन्न होते हैं ।46।

तू कह दे, हे अल्लाह ! आकाशों और धरती के पैदा करने वाले ! परोक्ष और प्रत्यक्ष को जानने वाले ! तू ही अपने भक्तों के बीच (प्रत्येक) उस मामले में निर्णय करेगा जिसमें वे मतभेद करते हैं ।47।

और जो कुछ धरती में है यदि वह सब का सब उनका होता जिन्होंने अत्याचार किया और वैसा ही और भी (होता) तब भी अवश्य वे उसे क़यामत के दिन भयानक अज़ाब से बचने के लिए मुक्तिमूल्य स्वरूप दे देते । और उनके लिए अल्लाह की ओर से वह (कुछ)

لَقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٤٣﴾

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَوْ
لَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٤٤﴾

قُلْ لِلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۚ لَهُ مَلَكُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ ثُمَّ إِلَيْهِ
تُرْجَعُونَ ﴿٤٥﴾

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ
الَّذِينَ لَا يَوْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۚ وَإِذَا ذُكِرَ
الَّذِينَ مِنْ دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٤٦﴾

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
عِلْمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ
عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٤٧﴾

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ
جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَا فِتْنَةً لَهُمْ مِنْ سُوءِ
الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ وَبَدَّ اللَّهُ مِنَ اللَّهِ

प्रकट होगा जिसकी वे कल्पना नहीं किया करते थे ।48।

और जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयाँ उनके लिए प्रकट होंगी । और उन्हें वह घेर लेगा जिस की वे खिल्ली उड़ाया करते थे ।49।

अतः जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचता है तो (वह) हमें पुकारता है । फिर जब हम उसे अपनी ओर से कोई नेमत प्रदान करते हैं तो वह कहता है कि यह मुझे केवल एक ज्ञान के आधार पर दिया गया है । वास्तव में यह तो एक बड़ी परीक्षा है । परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते ।50।

निःसन्देह उन लोगों ने जो उनसे पहले थे, यही बात कही थी । अतः जो वे कमाते थे (वह) उनके किसी काम न आ सका ।51।

अतः जो उन्होंने कमाया उन्हें उसकी बुराइयाँ ही पहुँची । और इन लोगों में से जिन्होंने अत्याचार किया इनको भी उनके कर्मों के बुरे-परिणाम अवश्य पहुँचेंगे और वे (अल्लाह को) असमर्थ नहीं कर सकेंगे ।52।

क्या उन्हें ज्ञान नहीं हुआ कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है जीविका विस्तृत कर देता है और संकुचित भी करता है । निःसन्देह उन लोगों के लिए बड़े चिह्न हैं जो ईमान लाते हैं ।53। (रुकू ५/२)

तू कह दे, हे मेरे भक्तो ! जिन्होंने अपनी जानों पर अत्याचार किया है

مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿٤٨﴾

وَبَدَّالَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ

مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٤٩﴾

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا

خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ

عَلَىٰ عِلْمٍ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَكِن

أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٠﴾

قَدْ قَالُوا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ

عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٥١﴾

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَالَّذِينَ

ظَلَمُوا مِنْ هَٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ

مَا كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿٥٢﴾

أَوَلَمْ يَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ

لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ

لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٥٣﴾

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِينَ أَسْرَفُوا عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ

अल्लाह की दया से निराश न हो । निःसन्देह अल्लाह समस्त पापों को क्षमा कर सकता है । निःसन्देह वही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है । 154।

और अपने रब्ब की ओर झुको और उसके आज्ञाकारी हो जाओ । इसके पूर्व कि तुम तक एक अज़ाब आ जाए। फिर तुम्हें कोई सहायता नहीं दी जाएगी । 155।

और तुम्हारी ओर तुम्हारे रब्ब की ओर से जो उतारा गया है उसके उत्कृष्ट भाग का अनुसरण करो । इसके पूर्व कि सहसा तुम्हें अज़ाब आ पकड़े जबकि तुम्हें (उसकी) समझ न आ सके । 156।

ऐसा न हो कि कोई व्यक्ति यह कहे : हाय खेद मुझ पर ! उस लापरवाही के कारण जो मैं अल्लाह के पहलू में (अर्थात् उसकी दृष्टि के समक्ष) करता रहा । और मैं तो केवल उपहास करने वालों में से था । 157।

अथवा यह कहे कि यदि अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं अवश्य मुत्तकियों में से हो जाता । 158।

अथवा जब वह अज़ाब को देखे तो यह कहे, काश ! एक बार मेरे लिए लौट कर जाना संभव होता तो मैं अवश्य नेकी करने वालों में से हो जाता । 159।

क्यों नहीं, निःसन्देह तेरे पास मेरे चिह्न आए और तूने उनको झुठला दिया

لَا تَقْنَطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ جَمِيعًا ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَفُورُ الرَّحِيمُ ﴿٥٤﴾

وَأَنِيبُوا إِلَىٰ رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوا لَهُ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنصِرُونَ ﴿٥٥﴾

وَاتَّبِعُوا أَحْسَنَ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ﴿٥٦﴾

أَنْ تَقُولَ نَفْسٌ يُحْصِرُنِي عَلَىٰ مَا فَرَّطْتُ فِي جَنْبِ اللَّهِ وَإِنْ كُنْتُ لَمِنَ السَّخِرِينَ ﴿٥٧﴾

أَوْ تَقُولَ لَوْ أَنَّ اللَّهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٥٨﴾

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَىٰ الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٩﴾

بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا

और अहंकार किया और तू काफ़िरो में से था 160।

और क़यामत के दिन तू उन लोगों को देखेगा जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला । उनके चेहरे काले होंगे । क्या नरक में अहंकार करने वालों के लिए ठिकाना नहीं ? 161।

और अल्लाह उन लोगों को जिन्होंने तक्रवा धारण किया, उनकी सफलता के साथ मुक्ति प्रदान करेगा । उन्हें कोई कष्ट नहीं पहुँचेगा और न वे शोकग्रस्त होंगे 162।

अल्लाह प्रत्येक वस्तु का पैदा करने वाला है और वह प्रत्येक वस्तु पर निरीक्षक है 163।

आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी की हैं । और वे लोग जिन्होंने अल्लाह के चिह्नों का इनकार किया वही हैं जो घाटा पाने वाले हैं 164। (रकू 6/3)

तू कह दे, हे अज्ञानियो ! क्या तुम मुझे आदेश देते हो कि मैं अल्लाह के सिवा दूसरों की उपासना करूँ ? 165।

और निःसन्देह तेरी ओर और उनकी ओर भी जो तुझ से पहले थे, वहइ की जा चुकी है कि यदि तूने शिर्क किया तो अवश्य तेरा कर्म नष्ट हो जाएगा । और अवश्य तू घाटा पाने वालों में से हो जाएगा 166।

बल्कि अल्लाह ही की उपासना कर और कृतज्ञों में से हो जा 167।

وَأَسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ ⑩

وَيَوْمَ الْقِيَمَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا
عَلَى اللَّهِ وَجُوهَهُمْ مُسْوَدَّةٌ ⑪ أَلَيْسَ
فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِينَ ⑫

وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ
لَا يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ⑬

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ
وَكَيْلٌ ⑭

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ⑮
وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ
الْخَسِرُونَ ⑯

قُلْ أَفَعَيَّرَ اللَّهُ تَأْمُرُونِي أَعْبُدُ أَيُّهَا
الْجَاهِلُونَ ⑰

وَلَقَدْ أَوْحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ أَشْرَكَتَ لَيَجْبَطَنَّ عَمَلُكَ
وَلَتَكُونَ مِنَ الْخَسِرِينَ ⑱

بَلِ اللَّهِ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ ⑲

और उन्होंने अल्लाह का मान नहीं किया जैसा कि उसके मान का अधिकार था । और क़यामत के दिन धरती सब की सब उसी के अधीन होगी । और आकाश उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे । वह पवित्र है और बहुत ऊँचा है उससे जो वे शिर्क करते हैं । 68।*

और बिगुल में फूँका जाएगा तो जो कोई आसमानों में है और जो कोई धरती में है मूर्च्छित होकर गिर पड़ेगा । सिवाए उसके जिसे अल्लाह चाहे । फिर उसमें दोबारा फूँका जाएगा तो सहसा वे खड़े हुए देख रहे होंगे । 69।

और धरती अपने रब की ज्योति से चमक उठेगी और कर्म-पत्र (सामने) रख दिया जाएगा और सब नबियों और गवाही देने वालों को लाया जाएगा । और उनके बीच सत्य के साथ निर्णय कर दिया जाएगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा । 70।

और प्रत्येक जान को जो उसने कर्म किया उसका पूरा-पूरा बदला दिया जाएगा । और वह (अल्लाह) सबसे अधिक जानता है जो वे करते हैं । 71।

(रुकू 7/4)

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ
جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَالسَّمُوتُ
مَطْوِيَّتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَهِ وَتَعْلَىٰ عَمَّا
يُشْرِكُونَ ﴿٦٨﴾

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي
السَّمُوتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ
اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَىٰ فَإِذَا هُمْ
قِيَامٌ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٦٩﴾

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ
الْكِتَابُ وَجَاءَتْ سَاجِدًا لِلَّهِ وَالشُّهَدَاءُ
وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا
يُظْلَمُونَ ﴿٧٠﴾

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ
بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿٧١﴾

- * इस आयत में क़यामत का जो चित्रण किया गया है कि : (1) क़यामत के दिन धरती पूर्णतया अल्लाह तआला के अधीन होगी और (2) समस्त आकाश अर्थात् समस्त ब्रह्माण्ड उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे । दाहिने हाथ से अभिप्राय शक्ति का हाथ है न कि भौतिक रूप से दाहिना हाथ । और लिपटे जाने का जो वर्णन मिलता है यह वर्तमान युग में वैज्ञानिक दृष्टिकोणों से पूर्णतया प्रमाणित होता है । अर्थात् धरती और आकाश एक विनाश के ब्लैकहोल (Black Hole) में इस प्रकार प्रविष्ट कर दिए जाएँगे जैसे वे लपेटे जा चुके हों । दूसरी कई आयतों में अधिक स्पष्ट रूप से बताया गया है कि लपेटने के उदाहरण से क्या अभिप्राय है ।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया गिरोह के गिरोह नरक की ओर हाँके जाएंगे। यहाँ तक कि जब वे उसके पास आ जाएंगे उसके द्वार खोल दिए जाएंगे। और उसके दारोगे उनसे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए थे जो तुम पर तुम्हारे रब्ब की आयतों का पाठ करते थे और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की भेंट से डराया करते थे ? वे कहेंगे, क्यों नहीं। परन्तु अज़ाब का आदेश काफ़िरोँ पर निःसन्देह सत्य सिद्ध हो गया। 172।

कहा जाएगा कि नरक के द्वारों में प्रविष्ट हो जाओ। (तुम) उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हो। अतः अहंकार करने वालों का क्या ही बुरा ठिकाना है। 173।

और वे लोग जिन्होंने अपने रब्ब का तक्रवा धारण किया वे भी गिरोह के गिरोह स्वर्ग की ओर ले जाए जाएंगे। यहाँ तक कि जब वे उस तक पहुँचेंगे और उसके द्वार खोल दिए जाएंगे, तब उसके दारोगे उनसे कहेंगे, तुम पर सलामती हो। तुम बहुत अच्छी दशा को पहुँचे। अतः इसमें सदा रहने वाले बन कर प्रविष्ट हो जाओ। 174।

और वे कहेंगे, समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जिस ने अपना वादा हमसे पूरा कर दिखाया। और हमें (इस प्रतिश्रुत) धरती का उत्तराधिकारी बना दिया। स्वर्ग में जहाँ चाहें हम स्थान

وَسَيُقَالُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُرًّا
حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا فَتُحْتَابُ أَبْوَابُهَا
وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ
مِّنْكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ آيَاتِ رَبِّكُمْ
وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَاءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا قَالُوا
بَلَىٰ وَلَكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى
الْكَافِرِينَ ﴿٧٧﴾

قِيلَ ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا
فَبِئْسَ مَثْوَىٰ الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٨﴾

وَسَيُقَالُ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَىٰ الْجَنَّةِ
زُرًّا حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ
أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ
عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ ﴿٧٩﴾

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ
وَأَوْثَرَنَا الْأَرْضَ نَتَّبِعُوهُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ

बना सकते हैं । अतः कर्म करने वालों का प्रतिफल कितना उत्तम है । 75।

और तू फ़रिश्तों को देखेगा कि अर्श के वातावरण को घेरे में लिए हुए होंगे । वे अपने रब्ब की स्तुति के साथ गुणगान कर रहे होंगे । और उनके बीच सत्य के साथ निर्णय किया जाएगा और कहा जाएगा कि समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो समस्त लोकों का रब्ब है । 76।

(रुकू $\frac{8}{5}$)

نَشَاءُ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَمِلِينَ ﴿٧٥﴾

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ

الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَقُضِيَ

بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ

الْعَالَمِينَ ﴿٧٦﴾

﴿٧٥﴾

40- सूरः अल-मु'मिन

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 86 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ हा मीम खण्डाक्षरों से होता है और इस सूरः के पश्चात छः सूरतों का आरम्भ भी इन्हीं खण्डाक्षरों से होता है । अर्थात् इसके समेत कुल सात सूरः हैं जिनका आरम्भ हा मीम से होता है । अल्लाह अधिक जानता है कि इन सूरतों का सूरः अल-फ़ातिहः की सात आयतों से कोई सम्बन्ध है तो क्या है ।

पिछली सूरः में मनुष्य को उपदेश दिया गया था कि अल्लाह की दया से निराश नहीं होना चाहिए । वास्तव में निराशा इब्लीस की विशेषता है । और जो सच्चे दिल से अल्लाह की कृपा पर भरोसा करेगा और अपने पापों का सच्चे मन से प्रायश्चित्त करेगा तो अल्लाह तआला सब पाप क्षमा करने का सामर्थ्य रखता है ।

इसी प्रकार पिछली सूरः में फ़रिश्तों के बारे में वर्णन था कि वे अर्श के वातावरण को घेरे में लिए हुए हैं । परन्तु इस सूरः में और अधिक यह कहा गया कि तुम्हारी क्षमा का सम्बन्ध फ़रिश्तों की दुआओं से भी है, जिन्होंने अल्लाह के अर्श को उठाया हुआ है । अल्लाह तआला तो कोई भौतिक वस्तु नहीं है कि वह किसी सिंहासन पर बैठा हुआ हो और उसे फ़रिश्तों ने उठाया हुआ हो । अल्लाह तो प्रत्येक स्थान में उपस्थित है और उसने ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु को उठाया हुआ है । इस लिए यहाँ पर उसके अनुपमेय गुणों का वर्णन है और अर्श से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का निर्मल हृदय है जो अल्लाह का सिंहासन है और उनके दिल को शक्ति प्रदान करने के लिए फ़रिश्ते उसे चारों ओर से घेरे रहते हैं और अल्लाह तआला के पापी भक्तों के लिए भी दुआएँ करते हैं । इसके अतिरिक्त उनकी सन्तान के लिए भी दुआएँ करते हैं । अतः मुझे विश्वास है कि इससे अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल के अर्श से उठने वाली वह दुआएँ हैं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क्रियामत तक आने वाले नेक भक्तों और उनकी संतान के लिए की हैं ।

इसी सूरः में एक ऐसे राजकुमार का वर्णन मिलता है जो हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आया था पर उसे छिपाता था । परन्तु जब फ़िराऊन ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के वध करने का इरादा किया और उस राजकुमार के सामने मूसा की हत्या के लिए षड्यन्त्र रचे गये तो वह उस समय उसको प्रकट करने से रुक न सका और अपनी जाति को सावधान किया कि यदि मूसा झूठा है तो उसे छोड़ दो । झूठे स्वयं तबाह हो जाया करते हैं । परन्तु यदि वह सच्चा हुआ तो फिर जिन बातों से वह तुम्हें सतर्क करता है उनमें से कुछ अवश्य तुम्हें आ घेरेंगी ।

यहाँ पर लोगों को सदा के लिए यह उपदेश दिया गया है कि नुबुव्वत का दावा करने वालों का मामला अल्लाह पर छोड़ दिया करो । यदि वे झूठे हैं तो अल्लाह स्वयं उनको तबाह करेगा । परन्तु यदि वे सच्चे निकले और तुमने उनका इनकार कर दिया तो तुम उनके द्वारा दी गई अज़ाब की चेतावनियों में से कुछ को अपने विरुद्ध अवश्य पूरी होते देखोगे । चूँकि इन आयतों का सम्बन्ध हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पश्चात् नुबुव्वत का दावा करने वालों से भी है, इस लिए ऐसे दावेदारों का इतिहास बताता है कि बिल्कुल इसी प्रकार उनके साथ घटित हुआ । सारे झूठे नबी तबाह कर दिए गए और उनका नामो-निशान भी इतिहास में नहीं मिलता ।

इस प्रसंग में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बारे में भी लोगों के इस दावे का उल्लेख है कि उन के बाद कोई नबी नहीं आएगा । यदि यह बात सच्ची होती तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आगमन हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पश्चात कैसे होता ? अतः यह केवल उन लोगों के दावे हैं जिनको अल्लाह के विधान का कुछ भी ज्ञान नहीं । सब कुछ बन्द हो सकता है परन्तु अल्लाह की कृपाओं का मार्ग कदापि बन्द नहीं हो सकता । अल्लाह झूठों को तबाह करता है इस प्रसंग में यह भी चेतावनी दी गई कि वह सच्चों की अवश्य सहायता करता है । इसलिए जो चाहे ज़ोर लगा लो, तुम अल्लाह तआला के सच्चे नबियों को कभी भी असफल नहीं कर सकोगे ।

आयत सं. 66 में धर्म को विशिष्ट करने का फिर से विशेष आदेश दिया गया है कि जीवित अल्लाह के सिवा और कोई उपास्य नहीं । अतः उसी के लिए धर्म को विशिष्ट करते हुए उसे पुकारो ।





अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।11।

हमीदुन् मजीदुन् : अर्थात प्रशंसा योग्य, अति गौरवशाली ।2।

इस पुस्तक का उतारा जाना पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) सर्वज्ञ अल्लाह की ओर से है ।3।

जो पापों को क्षमा करने वाला और प्रायश्चित्त स्वीकार करने वाला, पकड़ करने में कठोर और परम दानशील है । उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । उसी की ओर लौट कर जाना है ।4।

अल्लाह के चिह्नों के बारे में उन लोगों के अतिरिक्त कोई झगड़ा नहीं करता जिन्होंने इनकार किया । अतः उनका खुला-खुला देश में फिरना तुझे किसी धोखे में न डाले ।5।

उनसे पहले नूह की जाति ने भी झुठलाया था और उनके पश्चात् विभिन्न समूहों ने भी । और प्रत्येक जाति ने अपने रसूल के सम्बन्ध में यह दृढ़ संकल्प किया था कि वे उसे पकड़ लें और उन्होंने झूठ के सहारे झगड़ा किया ताकि उसके द्वारा सत्य को झुठला दें । तब मैंने उन्हें पकड़ लिया । अतः (देखो) मेरा दण्ड कैसा था ।6।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حَمْدٌ

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ①

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ① لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ إِلَيْهِ الْمَصِيرُ ①

مَا يُجَادِلُ فِي آيَاتِ اللَّهِ إِلَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَلَا يَغْرُرُكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ ①

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَالْأَحْزَابُ مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍ بِرَسُولِهِمْ لِيَأْخُذُوهُ وَجَدُوا بِإِبْرَاهِيمَ لِيُدْخِلُوهُ فِي الْحَقِّ فَأَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ①

और इसी प्रकार तेरे रब्ब का यह आदेश उन लोगों के विरुद्ध जिन्होंने इनकार किया, अवश्य पूरा उतरता है कि वे आग में पड़ने वाले हैं। 17।

वे जो अर्श को उठाए हुए हैं और वे जो उसके आस-पास हैं, वे अपने रब्ब की प्रशंसा के साथ गुणगान करते हैं और उस पर ईमान लाते हैं और उन लोगों के लिए क्षमा मांगते हैं, जो ईमान लाए। हे हमारे रब्ब ! तू हर चीज़ पर दया और ज्ञान के साथ छाया हुआ है। अतः वे लोग जिन्होंने प्रायश्चित्त किया और तेरे मार्ग का अनुसरण किया उनको क्षमा कर दे और उनको नरक के अज़ाब से बचा। 18।

और हे हमारे रब्ब ! उन्हें और उनके पूर्वज और उनके साथियों और उनकी संतान में से जो नेकी को अपनाने वाले हैं, उन सब को स्थायी स्वर्गों में प्रविष्ट कर दे जिनका तूने उनसे वादा कर रखा है। निःसन्देह तू ही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है। 19।

और उन्हें बुराइयों से बचा। और जिसे तूने उस दिन बुराइयों (के परिणामों) से बचाया तो निःसन्देह तूने उस पर बहुत कृपा की और यही बहुत बड़ी सफलता है। 10। (रुकू 1/6)

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया उन्हें पुकारा जाएगा कि अल्लाह की नाराज़गी तुम्हारी पारस्परिक नाराज़गियों के मुकाबले पर अधिक बड़ी

وَكَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ كَفَرُوا إِنَّهُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتٍ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

وَقِهِمُ السَّيِّئَاتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّئَاتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهُ ۖ وَذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا يُبَادُونَ لَمَقَّتْ اللَّهُ أَكْبَرُ مِنْ مَقَّتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ

थी, जिस समय तुम ईमान की ओर बुलाए जाते थे फिर भी इनकार कर देते थे ।111।

वे कहेंगे, हे हमारे रब्ब ! तूने हमें दो बार मृत्यु दी और दो ही बार जीवन प्रदान किया । अतः हम अपने पापों का स्वीकार करते हैं । तो क्या (इससे बच) निकलने का कोई मार्ग है ? ।12।*

तुम्हारी यह दशा इस लिए हुई है कि जब भी अकेले अल्लाह को पुकारा जाता था तुम उसका इनकार कर देते थे । और यदि उसका साझीदार ठहराया जाता था तो तुम मान लेते थे । अतः निर्णय का अधिकार अल्लाह ही को है जो सर्वोच्च (और) सर्वश्रेष्ठ है ।13।

वही है जो तुम्हें अपने चिह्न दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से जीविका उतारता है । और वही उपदेश प्राप्त करता है जो झुकाता है ।14।

अतः अल्लाह के लिए आज्ञाकारिता को विशुद्ध करते हुए उसी को पुकारो चाहे काफ़िर नापसंद करें ।15।

वह ऊँचे दर्जों वाला, अर्श का स्वामी है । अपने भक्तों में से जिस पर चाहे अपने आदेश से रूह को उतारता है ताकि वह साक्षातकार के दिन से डराए ।16।

إِلَى الْإِيمَانِ فَتُكْفَرُونَ ⑪

قَالُوا رَبَّنَا آمَنَّا أَشْتَتِينَ وَاحْيَيْنَا
أَشْتَتِينَ فَأَعْتَرَفْنَا بِذُنُوبِنَا فَهَلْ إِلَى
خُرُوجٍ مِّن سَبِيلٍ ⑫

ذَلِكُمْ بِأَنَّهُ إِذَا دُعِيَ اللَّهُ وَحْدَهُ
كَفَرْتُمْ ⑬ وَإِنْ يُشْرَكَ بِهِ تُؤْمِنُوا ⑭
فَالْحُكْمُ لِلَّهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيرِ ⑮

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ آيَاتِهِ وَيُنَزِّل لَكُمْ
مِّنَ السَّمَاءِ رِزْقًا وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا
مَنْ يُنِيبُ ⑯

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ
الْكَافِرُونَ ⑰

رَفِيعِ الدَّرَجَاتِ ذُو الْعَرْشِ ⑱ يُلْقِي
الرُّوحَ مِنْ أَمْرِهِ عَلَى مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ
لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ⑲

* प्रत्यक्ष रूप में तो एक ही बार मनुष्य मरता है, हाँ उसका दो बार जीवित होना समझ में आ जाता है। एक यह जीवन और एक परकालीन जीवन । आयत तूने हमें दो बार मृत्यु दी में पहली मृत्यु से अभिप्राय पूर्णरूपेण अनस्तित्वता है । अर्थात् तूने हमें पहली बार अनस्तित्व से अस्तित्व में लाया ।

जिस दिन वे निकल खड़े होंगे । उनकी कोई बात अल्लाह से छिपी न होगी । आज के दिन साम्राज्य किसका है ? अल्लाह ही का है जो अकेला (और) परम पराक्रमी है । 117।

आज प्रत्येक जान को उसका प्रतिफल दिया जाएगा जो उसने कमाया । आज कोई अत्याचार नहीं होगा । निःसन्देह अल्लाह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है । 118।

और उन्हें समीप आ जाने वाली पकड़ के दिन से डरा जब दिल शोक और भय से गले तक आ पहुँचेंगे । अत्याचारियों के लिए न कोई घनिष्ट मित्र होगा और न कोई ऐसा सिफ़ारिश करने वाला जिसकी बात मानी जाए । 119।

वह आँखों की ख़यानत को भी जानता है और उसे भी (जानता है) जो सीने छिपाते हैं । 120।

और अल्लाह सत्य के साथ निर्णय करता है और जिन को वे लोग उसके सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज़ का भी निर्णय नहीं करते । निःसन्देह अल्लाह ही है जो बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है । 121। (रूकू 2)

क्या उन्होंने धरती में भ्रमण नहीं किया कि वे देख लेते कि उन लोगों का अन्त कैसा हुआ जो उन से पहले थे ? वे उनसे शक्ति में और धरती में (अपनी) छाप छोड़ने की दृष्टि से उनसे अधिक सशक्त थे । अतः अल्लाह ने उनको भी

يَوْمَ هُمْ بَرْزُورٌ ۚ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝

الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۖ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْأَرْفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كُضْمِينَ ۖ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٌ يُطَاعُ ۝

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ۝

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ

उनके पापों के कारण पकड़ लिया ।
और उन्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई
न था ।22।

यह इस कारण हुआ कि उनके पास
उनके रसूल स्पष्ट चिह्न लेकर आते रहे
फिर भी उन्होंने इनकार कर दिया ।
अतः अल्लाह ने उनको पकड़ लिया ।
निःसन्देह वह बहुत शक्तिशाली (और)
दण्ड देने में कठोर है ।23।

और निःसन्देह हमने मूसा को भी अपने
चिह्नों और सुस्पष्ट प्रबल प्रमाण के साथ
भेजा था ।24।

फ़िरऔन और हामान और क़ारून की
ओर । फिर उन्होंने कहा, यह तो जादूगर
(और) बहुत झूठा है ।25।

अतः जब वह (मूसा) हमारी ओर से
सत्य लेकर उनके पास आया तो उन्होंने
कहा, उन लोगों के पुत्रों का वध करो
जो उसके साथ ईमान लाए और उनकी
स्त्रियों को जीवित रखो । और काफ़िरों
की योजना विफल होने के अतिरिक्त
कोई महत्व नहीं रखती ।26।

और फ़िरऔन ने कहा, मुझे तनिक
छोड़ो कि मैं मूसा का वध करूँ और वह
अपने रबब को पुकारे । निःसन्देह मैं
डरता हूँ कि वह तुम्हारा धर्म परिवर्तित
कर देगा अथवा धरती में फ़साद फैला
देगा ।27।

और मूसा ने कहा, निःसन्देह मैं अपने
रबब और तुम्हारे रबब की शरण में
आता हूँ प्रत्येक ऐसे अहंकारी से जो

بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنَ اللَّهِ
مِنْ وَّاقٍ ۝۲۲

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ
قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ ۝۲۳

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَنٍ
مُّبِينٍ ۝۲۴

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا
سِحْرٌ كَذَّابٌ ۝۲۵

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا
اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ
وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ
الْكَاذِبِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۝۲۶

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُونِي أَقْتُلْ مُوسَىٰ
وَلْيَدْعُ رَبَّهُ ۚ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُبَدِّلَ
دِينَكُمْ أَوْ أَنْ يُظْهِرَ فِي الْأَرْضِ
الْفُسَادَ ۝۲۷

وَقَالَ مُوسَىٰ إِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ

हिसाब-किताब के दिन पर ईमान नहीं रखता 128। (रुकू 3/8)

और फिरऔन की संतान में से एक मोमिन पुरुष ने जो अपने ईमान को छिपाए हुए था कहा, कि क्या तुम केवल इस लिए एक व्यक्ति का वध करोगे कि वह कहता है कि मेरा रब्ब अल्लाह है । और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब्ब की ओर से स्पष्ट चिह्न लेकर आया है । यदि वह झूठा निकला तो निःसन्देह उसका झूठ उसी पर पड़ेगा । और यदि वह सच्चा हुआ तो जिन बातों से वह तुम्हें डराता है उनमें से कुछ अवश्य तुम्हें आ पकड़ेंगी। निःसन्देह अल्लाह उसे हिदायत नहीं दिया करता जो सीमा से बढ़ा हुआ (और) अत्यन्त झूठा हो 129।*

हे मेरी जाति ! आज तो तुम्हारा साम्राज्य इस अवस्था में है कि तुम धरती पर विजय प्राप्त करते जा रहे हो । परन्तु अल्लाह के अज़ाब की पकड़ से कौन हमारी सहायता करेगा यदि वह हम तक आ पहुँचे ? फिरऔन ने कहा, मैं जो

مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝٤٠

وَقَالَ رَجُلٌ مُُّؤْمِنٌ مِّنْ آلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ إِيمَانَهُ أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ وَقَدْ جَاءَكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ مِنْ رَبِّكُمْ ۖ وَإِنَّ يَكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهُ ۖ وَإِنَّ يَكُ صَادِقًا يُصِيبْكُمْ بَعْضُ الَّذِي يَعِدُكُمْ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَابٌ ۝٤١

يَقُومُ لَكُمْ الْمَلِكُ الْيَوْمَ ظَهْرِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَمَنْ يَنْصُرُنَا مِنْ بَأْسِ اللَّهِ إِنْ جَاءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ مَا أُرِيكُمْ إِلَّا

- * जिस मोमिन पुरुष का इस आयत में वर्णन है वह फिरऔन के निकट-सम्बन्धियों तथा बड़े सरदारों में से था । और हज़रत आसिया की भाँति वह भी हज़रत मूसा अलै. पर ईमान ले आया था । परन्तु अपना ईमान गुप्त रखा हुआ था । इस आयत से पता चलता है कि जब फिरऔन और उसके सरदार हज़रत मूसा के वध का निर्णय कर रहे थे तो उस समय उसने अपने इस गुप्त ईमान को प्रकट कर दिया । और उनको समझाया कि वे अपनी इस हरकत से रुक जाएँ और यह तर्क दिया कि यदि वह झूठा है तो झूठे का झूठ केवल उसी पर पड़ा करता है । जिस पर उसने झूठ बाँधा है वह आप ही उसे पकड़ेगा । परन्तु यदि वह सच्चा निकला तो ऐसी विपत्तियाँ जिनकी वह भविष्यवाणी करता है उनमें से कुछ अवश्य तुम्हारे पीछे लग जाएँगी यहाँ तक कि तुम तबाह कर दिए जाओगे । सच्चे नबियों की सदा से यह एक पहचान है । और जिन लोगों की ओर नबी भेजे जाते हैं उनके लिए भी एक स्थायी उपदेश है ।

कुछ समझता हूँ ऐसा ही तुम्हें समझा रहा हूँ । और मैं हिदायत के पथ के अतिरिक्त किसी दूसरी ओर तुम्हारा मार्गदर्शन नहीं करता ।30।

और उसने जो ईमान लाया था कहा : हे मेरी जाति ! निःसन्देह मैं तुम पर (बीती हुई) जातियों के युग जैसा युग आने से डरता हूँ ।31।

नूह की जाति की डगर जैसा युग तथा आद और समूद जैसा एवं उन लोगों जैसा जो उनके पश्चात आए । और अल्लाह भक्तों पर अत्याचार का कोई इरादा नहीं रखता ।32।

और हे मेरी जाति ! मैं तुम पर ऐसा समय आने से डरता हूँ जब ऊँची आवाज़ से एक दूसरे को पुकारा जाएगा ।33।

जिस दिन तुम पीठ फेर कर भाग खड़े होगे । तुम्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई नहीं होगा । और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे फिर उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं होता ।34।

और निःसन्देह तुम्हारे पास इससे पूर्व यूसुफ़ भी सुस्पष्ट चिह्न ले कर आ चुका है । परन्तु तुम उस के विषय में सदैव शंका में रहे हो जो वह तुम्हारे पास लाया । यहाँ तक कि जब वह मर गया तो तुम कहने लगे कि अब इसके पश्चात अल्लाह कदापि कोई रसूल नहीं भेजेगा । इसी प्रकार अल्लाह सीमा से बढ़ने वाले (और) शंकाओं में पड़े रहने वाले को पथभ्रष्ट ठहराता है ।35।

مَا أَرَىٰ وَمَا أَهْدِيكُمْ إِلَّا سَبِيلَ
الرَّشَادِ ۝۳۰

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَوْمَ يَقُومِ إِلَىٰ أَخَافُ
عَلَيْكُمْ مِثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ ۝۳۱

مِثْلَ دَابِ قَوْمِ نُوحٍ وَعَادٍ وَثَمُودَ
وَالَّذِينَ مِنْ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللَّهُ يُرِيدُ
ظُلْمًا لِلْعِبَادِ ۝۳۲

وَيَقُومِ إِلَىٰ أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ
التَّنَادِ ۝۳۳

يَوْمَ تَوْتُونَ مَدِيرِينَ ۚ مَا لَكُمْ مِنَ اللَّهِ
مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ
هَادٍ ۝۳۴

وَلَقَدْ جَاءَكُمْ يُوسُفُ مِنْ قَبْلِ الْبَيِّنَاتِ
فَمَا زِلْتُمْ فِي شَكٍّ مِمَّا جَاءَكُمْ بِهِ ۚ حَتَّىٰ
إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَبْعَثَ اللَّهُ مِنْ بَعْدِهِ
رَسُولًا ۚ كَذَلِكَ يَضِلُّ اللَّهُ مَنْ هُوَ
مُسْرِفٌ مُرْتَابٍ ۝۳۵

उन लोगों को, जो अल्लाह की आयतों के बारे में बिना किसी प्रबल प्रमाण के जो उनके पास आया हो, झगड़ते हैं। अल्लाह के निकट यह बहुत बड़ा पाप है और उनके निकट भी जो ईमान लाए हैं। इसी प्रकार अल्लाह प्रत्येक अहंकारी (और) निर्दयी के दिल पर मुहर लगा देता है। 136।

और फिरऔन ने कहा, हे हामान ! मेरे लिए महल बना ताकि मैं उन रास्तों तक जा पहुँचूँ। 137।

जो आकाश के रास्ते हैं ताकि मैं मूसा के उपास्य को झांक कर देखूँ। परन्तु वास्तव में मैं तो उसे झूठा समझता हूँ। और इसी प्रकार फिरऔन के लिए उसके कुकर्म सुन्दर करके दिखाए गए। और वह (सीधे) रास्ते से रोक दिया गया। और फिरऔन की योजना असफलता में डूबने के अतिरिक्त कुछ भी न थी। 138।

(रुकू 4/9)

और वह व्यक्ति जो ईमान लाया था उसने कहा, हे मेरी जाति ! मेरा अनुसरण करो मैं तुम्हें हिदायत का मार्ग दिखाऊँगा। 139।

हे मेरी जाति ! यह सांसारिक जीवन तो केवल अस्थायी सामान है। और निःसन्देह परलोक ही है जो ठहरने के योग्य स्थान है। 140।

जो भी बुराई करेगा उसे उसी के समान दण्ड दिया जाएगा। और पुरुष और स्त्री में से जो भी नेकी करेगा और वह मोमिन

الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ
سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ
وَعِنْدَ الَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ يَطْبَعُ اللَّهُ
عَلَى كُلِّ قَلْبٍ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝

وَقَالَ فِرْعَوْنُ لِيَهَامُنُ ابْنُ إِسْرَافِيلَ
تَلْعَلِي أَبْلَغُ الْأَسْبَابَ ۝

أَسْبَابَ السَّمَوَاتِ فَاصْلَحْ إِلَى اللَّهِ
مُوسَى وَإِنِّي لَا ظَنُّهُ كَاذِبًا ۝ وَكَذَلِكَ
رُفِئَ لِفِرْعَوْنَ سُوءُ عَمَلِهِ وَصُدَّ عَنِ
السَّبِيلِ ۝ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا
فِي تَبَابٍ ۝

وَقَالَ الَّذِي آمَنَ يَقَوْمِ اتَّبِعُونِ أَهْدِيكُمْ
سَبِيلَ الرَّشَادِ ۝

يَقَوْمِ إِنَّمَا هِيَ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَإِنَّ
الْآخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزَى إِلَّا مِثْلَهَا
وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنْثَى وَهُوَ

होगा, तो यही वे लोग हैं जो स्वर्ग में प्रविष्ट होंगे । उसमें उन्हें बेहिसाब जीविका प्रदान की जाएगी । 41।

और हे मेरी जाति ! मुझे क्या हुआ है कि मैं तुम्हें मुक्ति की ओर बुलाता हूँ जबकि तुम मुझे अग्नि की ओर बुला रहे हो । 42।

तुम मुझे (इसलिए) बुला रहे हो कि मैं अल्लाह का इनकार कर दूँ और उसका साझीदार उसे ठहराऊँ जिसका मुझे कोई ज्ञान नहीं । और मैं पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) अपार क्षमा करने वाले की ओर बुलाता हूँ । 43।

इसमें कोई संदेह नहीं कि जिसकी ओर तुम मुझे बुलाते हो उसे पुकारने का कोई औचित्य न इहलोक में है और न परलोक में । और निःसन्देह हमारा लौट कर जाना तो अल्लाह की ओर है । और निःसन्देह सीमा से बढ़ने वाले ही अग्नि वाले होंगे । 44।

अतः तुम अवश्य उन बातों को याद करोगे जो मैं तुमसे कहता हूँ । और मैं अपना मामला अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ। निःसन्देह अल्लाह अपने भक्तों पर गहन दृष्टि रखने वाला है । 45।

अतः अल्लाह ने उसे उनके षड्यन्त्रों के दुष्परिणामों से बचा लिया । और फ़िरऔन के वंशज को बहुत बुरे अज़ाब ने घेर लिया । 46।

अग्नि, जिस के समक्ष वे सुबह और शाम पेश किए जाते हैं । और जिस दिन

مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُونَ فِيهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

وَيَقُومُ مَالٍ أَدْعُوكُمْ إِلَى النَّجْوَةِ وَتَدْعُونَنِي إِلَى النَّارِ ۝

تَدْعُونَنِي لَا كُفْرَ بِاللَّهِ وَأُشْرِكَ بِهِ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَأَنَا أَدْعُوكُمْ إِلَى الْعَزِيزِ الْغَفَّارِ ۝

لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُونَنِي إِلَيْهِ لَيْسَ لَهُ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْآخِرَةِ وَأَنَا مَرْدَنَّا إِلَى اللَّهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِينَ هُمْ أَصْحَابُ النَّارِ ۝

فَسَتَذْكُرُونَ مَا أَقُولَ لَكُمْ ۖ وَأَفْوُصُ أَمْرِي إِلَى اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ ۝

فَوَقَّهَ اللَّهُ سَيِّئَاتِ مَا مَكَرُوا وَحَاقَ بِالْفِرْعَوْنَ سُوءُ الْعَذَابِ ۝

النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا

क्रयामत घटित होगी (कहा जाएगा कि) फिरऔन के वंशज को कठोरतम अज़ाब में झोंक दो ।47।

और जब वे अग्नि में पड़े झगड़ रहे होंगे तो दुर्बल लोग अहंकार करने वालों से कहेंगे, हम निःसन्देह तुम्हारे अनुयायी थे। अतः क्या तुम अग्नि का कोई अंश हम से दूर कर सकते हो ? ।48।

जिन लोगों ने अहंकार किया वे कहेंगे, निःसन्देह हम सब के सब इसमें हैं । निःसन्देह अल्लाह भक्तों के मध्य निर्णय कर चुका है ।49।

और वे लोग जो अग्नि में होंगे, नरक के दारोगाओं से कहेंगे कि अपने रब्ब से दुआ करो कि हमसे किसी दिन तो कुछ अज़ाब हल्का कर दे ।50।

वे कहेंगे, तो फिर क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल स्पष्ट चिह्नों के साथ नहीं आते रहे ? वे कहेंगे, हाँ ! क्यों नहीं । वे उत्तर देंगे कि दुआ करो । परन्तु काफ़िरों की दुआ व्यर्थ जाने के अतिरिक्त कोई महत्व नहीं रखती ।51।

(स्कू 5/10)

निःसन्देह हम अपने रसूलों की और उनकी जो ईमान लाए, इस संसार के जीवन में भी सहायता करेंगे और उस दिन भी जब गवाह खड़े होंगे ।52।*

وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ ۖ اَدْخِلُوا آلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ ۖ ﴿٤٧﴾

وَإِذْ يَتَحَايَجُونَ فِي النَّارِ فَيَقُولُ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا ۖ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّعْتَدُونَ عَنَّا نَصِيبًا مِّنَ النَّارِ ۖ ﴿٤٨﴾

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُلٌّ فِيهَا إِنَّ اللَّهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۖ ﴿٤٩﴾

وَقَالَ الَّذِينَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ۖ ﴿٥٠﴾

قَالُوا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيكُمُ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنَاتِ ۖ قَالُوا بَلَىٰ ۖ قَالُوا فَادْعُوا ۚ وَمَا دَعُوا الْكُفْرَيْنَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۚ ﴿٥١﴾

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِينَ آمَنُوا فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُومُ الْأَشْهَادُ ۖ ﴿٥٢﴾

* अल्लाह तआला अपने नबियों को निश्चित रूप से अपनी ओर से सहायता प्रदान करता है । आयतांश उस दिन भी जब गवाह खड़े होंगे से अभिप्राय क्रयामत अर्थात् निर्णय का दिन है । जिस दिन अपराधियों के विरुद्ध असंख्य अकाट्य प्रमाण प्रस्तुत किए जाएंगे ।

जिस दिन अत्याचारियों को उनकी क्षमा-याचना कोई लाभ नहीं देगी। और उनके लिए ला'नत होगी और उनका बहुत बुरा घर होगा। 153।

और निःसन्देह हमने मूसा को हिदायत प्रदान की और बनी-इस्राईल को पुस्तक का उत्तराधिकारी बना दिया। 154।

जो बुद्धिमानों के लिए हिदायत थी और उपदेश भी। 155।

अतः धैर्य धर। निःसन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। और अपनी भूल-चूक के सम्बन्ध में क्षमायाचना कर। और अपने रब्ब की स्तुति करने के साथ शाम को और सुबह को भी (उसका) गुणगान कर। 156।*

निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह की आयतों के बारे में ऐसी किसी ठोस दलील के बिना झगड़ते हैं जो उनके पास आई हो, उनके दिलों में ऐसी बड़ाई के अतिरिक्त कुछ नहीं जिसे वे कभी भी प्राप्त नहीं कर सकेंगे। अतः अल्लाह की शरण मांग। निःसन्देह वही बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है। 157।

निःसन्देह आकाशों और धरती की उत्पत्ति मनुष्य की उत्पत्ति से बहुत बढ़ कर है। परन्तु अधिकतर लोग जानते नहीं। 158।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظَّالِمِينَ مَعَذَرَتُهُمْ وَلَهُمُ
الْعَذَابُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۝

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْهُدَى وَأَوْرَثْنَا
بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ ۝

هُدًى وَذِكْرَى لِأُولِي الْأَلْبَابِ ۝

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ
لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعِشِيِّ
وَالْإِبْكَارِ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ
سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۚ إِن فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا
كِبَرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِيهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ
هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

لَخَلْقُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ
خَلْقِ النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

* हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में “जम्बुन” शब्द प्रयुक्त किया गया है इससे भूल-चूक अभिप्राय है, न कि कोई पाप।

और अंधा और देखने वाला समान नहीं हो सकते । इसी प्रकार वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए वे और बुराई करने वाले एक समान नहीं हो सकते । बहुत कम है जो तुम उपदेश ग्रहण करते हो । 159।

निःसन्देह निर्धारित घड़ी अवश्य आकर रहेगी । इसमें कोई संदेह नहीं परन्तु अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते । 160।

और तुम्हारे रब्ब ने कहा, मुझे पुकारो मैं तुम्हें उत्तर दूँगा । निःसन्देह वे लोग जो मेरी उपासना करने से अपने आप को ऊँचा समझते हैं (वे) अवश्य नरक में अपमानित होकर प्रविष्ट होंगे । 161।

(सूकू 6/11)

अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए रात को बनाया ताकि तुम उसमें आराम पाओ और दिन को दिखाने वाला बनाया । निःसन्देह अल्लाह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है । परन्तु अधिकतर मनुष्य कृतज्ञता प्रकट नहीं करते । 162।

यह है अल्लाह, तुम्हारा रब्ब, प्रत्येक वस्तु का सृष्टिकर्ता । उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । फिर तुम किधर बहकाए जाते हो ? । 163।

इसी प्रकार वे लोग बहकाए जाते हैं जो अल्लाह की आयतों का इनकार करते हैं । 164।

अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए धरती को ठहरने का स्थान बनाया । और

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا
الْمُصِىءُ ۚ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ۝

إِنَّ السَّاعَةَ لَا تِيَّةٌ لَا رَيْبَ فِيهَا وَلَكِنَّ
أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

وَقَالَ رَبُّكُمْ ادْعُونِي أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ
إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي
سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دُخْرَيْنَ ۖ

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ آيَاتٍ لِّتَسْكُنُوا فِيهِ
وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى
النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُونَ ۝

ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۚ
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَآلَىٰ تُوَفَّقُونَ ۝

كَذَلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ
يَجْحَدُونَ ۝

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمْ الْأَرْضَ قَرَارًا

आकाश को (तुम्हारे) जीवन का आधार बनाया । और उसने तुम्हें आकृति प्रदान की और तुम्हारी आकृतियों को बहुत अच्छा बनाया । और तुम्हें पवित्र वस्तुओं में से जीविका प्रदान किया । यह है अल्लाह, तुम्हारा रब्ब । अतः एक वही अल्लाह बरकत वाला सिद्ध हुआ जो समस्त लोकों का रब्ब है । 65।

वही जीवित है । उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । अतः उसी के लिए धर्म को विशिष्ट करते हुए उसे पुकारो । समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो समस्त लोकों का रब्ब है । 66।

तू कह दे कि निःसन्देह मुझे मना किया गया है कि मैं उनकी उपासना करूँ जिनको तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो । जबकि मेरे पास मेरे रब्ब की ओर से स्पष्ट चिह्न आ चुके हैं । और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं समस्त लोकों के रब्ब का पूर्ण आज्ञाकारी हो जाऊँ । 67।

वही है जिसने (पहली बार) तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर रक्त के थक्के से, फिर तुम्हें शिशु के रूप में बाहर निकालता है । और फिर यह सामर्थ्य प्रदान करता है कि तुम अपनी परिपक्व आयु को पहुँचो ताकि फिर यह संभावना हो कि तुम बूढ़े हो जाओ । और ताकि तुम अन्तिम निर्धारित समय तक पहुँच जाओ । हाँ कुछ तुम में से ऐसे भी हैं जिन्हें पहले

وَالسَّمَاءِ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ
صُورَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الصَّيِّبِ ۚ
ذِكْرُ اللَّهِ رَبِّكُمْ ۚ فَتَبَرَّكَ اللَّهُ رَبُّ
الْعَالَمِينَ ⑩

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ
مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ الْحَمْدُ لِلَّهِ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ⑪

قُلْ إِنِّي نُهَيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ
مِنْ دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِي الْبَيِّنَاتُ
مِنْ رَبِّي ۚ وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ
لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ⑫

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ
نُطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلاً
ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا
شُيُوخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَنْ يُتَوَفَّى مِنْ قَبْلُ
وَلِتَبْلُغُوا أَجَلاً مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ

ही मृत्यु दे दी जाती है और (यह व्यवस्था इस कारण है) ताकि तुम बुद्धि से काम लो ।68।

वही है जो जीवित करता है और मारता है । अतः जब वह किसी बात का निर्णय कर लेता है तो केवल उसे यह कहता है कि “हो जा” तो वह होने लगती है और होकर रहती है ।69। (रूकू 7/12)

क्या तुने ऐसे लोग नहीं देखे जो अल्लाह के चिह्नों के सम्बन्ध में तर्क-वितर्क करते हैं ? वे कहाँ फिराए जा रहे हैं ? ।70।

वे लोग जिन्होंने पुस्तक का और उन बातों का इनकार कर दिया जिनके साथ हम अपने रसूल भेजते रहे । अतः वे शीघ्र जान लेंगे ।71।

जब तौक़ उनकी गर्दनो में होंगे और जंजीरें भी, (जिनसे) वे घसीटे जाएंगे ।72।

खौलते हुए पानी में, उसके पश्चात वे अग्नि में झोंक दिए जाएंगे ।73।

फिर उनसे पूछा जाएगा, कहाँ हैं वे जिनको तुम उपास्य ठहराया करते थे ।74।

अल्लाह के सिवा ? वे कहेंगे हमसे वे गुम हो गए हैं । बल्कि हम तो इससे पहले किसी चीज़ को भी नहीं पुकारते थे। इसी प्रकार अल्लाह काफ़िरों को पथभ्रष्ट ठहराता है ।75।

यह इस लिए है कि तुम धरती में अनुचित रूप से खुशियाँ मनाया करते

تَعْقِلُونَ ۝

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ فَإِذَا قُضِيَ أَمْرٌ فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنِّي يُصْرِفُونَ ۝

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

إِذَا الْأَغْصَلُ فِي آعْنَاقِهِمْ وَالسَّلْسِلُ يُسْحَبُونَ ۝

فِي الْحَمِيمِ ۖ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ۝

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ۝

مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُوا مِنْ قَبْلُ شَيْئًا ۚ كَذَلِكَ يَضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ۝

ذَلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ

थे। और इसलिए (भी) कि तुम इतराते फिरते थे। 176।

नरक के द्वारों में प्रविष्ट हो जाओ। (तुम) इसमें एक लम्बे समय तक रहने वाले हो। अतः अहंकार करने वालों का ठिकाना बहुत बुरा है। 177।

अतः तू धैर्य धर। निःसन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। हम चाहें तो तुझे उस चेतावनी में से कुछ दिखा दें जिससे हम उन्हें डराया करते थे अथवा तुझे मृत्यु दे दें। तो हर हाल में वे हमारी ओर ही लौटाए जाएंगे। 178।

और निःसन्देह हमने तुझ से पहले भी रसूल भेजे थे। कुछ उनमें से ऐसे थे जिनका वर्णन हमने तुझ से कर दिया है और कुछ उनमें से ऐसे थे जिनका हमने तुझसे वर्णन नहीं किया। और किसी रसूल के लिए संभव नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बिना कोई चिह्न ले आए। अतः जब अल्लाह का आदेश आ जाएगा तो सत्य के साथ निर्णय कर दिया जाएगा। और उस समय झुठलाने वाले घाटा उठाएंगे। 179।* (स्कू $\frac{8}{13}$)

अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए चौपाय बनाए ताकि तुम उनमें से

بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿٧٦﴾

أَدْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَلِدِينَ فِيهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿٧٧﴾

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّا يَرْجِعُونَ ﴿٧٨﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۚ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿٧٩﴾

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا

* इस आयत में पहली उल्लेखनीय बात यह है कि असंख्य नबियों में से केवल कुछ का वर्णन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा किया गया है। परन्तु नबियों की कुल संख्या यह नहीं है। प्रत्येक प्रकार के नबियों में से ये कुछ नमूने के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। और इन सब के सामूहिक नमूने के रूप में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वर्णन है। पवित्र कुरआन में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समेत कुल पच्चीस नबियों का वर्णन है जैसा कि बाइबिल के नये-नियम की पुस्तक 'प्रकाशितवाक्य' अध्याय-4 की भविष्यवाणी में वर्णन किया गया था।

कुछ पर सवारी करो और उन्हीं में से कुछ को तुम भोजन के लिए प्रयोग में लाते हो ।80।

और तुम्हारे लिए उनमें बहुत से लाभ हैं । और यह कि तुम उन पर सवार हो कर अपनी उस मनोरथ को प्राप्त करो जो तुम्हारे सीनों में है । और उन पर तथा नौकाओं पर तुम सवार किये जाते हो ।81।

और तुम्हें वह अपने चिह्न दिखाता है । अतः अल्लाह के किन-किन चिह्नों का तुम इनकार करोगे ? ।82।

अतः क्या उन्होंने धरती पर भ्रमण नहीं किया कि वे देख लेते कि उन लोगों का अंत कैसा हुआ जो उनसे पहले थे ? वे उनसे संख्या में अधिक थे और शक्ति में भी । तथा धरती में (बड़ाई के) चिह्न छोड़ने की दृष्टि से भी अधिक सशक्त थे। फिर भी जो वे कमाया करते थे, वह उनके कुछ काम न आए ।83।

अतः जब उनके पास उनके रसूल स्पष्ट चिह्न लेकर आए तो वे उसी ज्ञान पर खुश रहे जो उनके पास था । और उनको उसी बात ने घेर लिया जिससे वे उपहास किया करते थे ।84।

अतः जब उन्होंने हमारा अज़ाब देखा तो कहा, हम अल्लाह पर जो अद्वितीय है ईमान ले आए हैं और उन सब बातों का इनकार करते हैं । जिनसे हम उसका साझीदार ठहराया करते थे ।85।

مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿٨٠﴾

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً
فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ
تَحْمَلُونَ ﴿٨١﴾

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ ۚ فَآيَىٰ آيَاتِ اللَّهِ
تُنْكِرُونَ ﴿٨٢﴾

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ
كَانُوا أَكْثَرُ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَأَثَارًا
فِي الْأَرْضِ فَمَا أَعْنَىٰ عَنْهُمْ مَّا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٣﴾

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا
بِمَا عِنْدَهُمْ مِنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا
كَانُوا بِسِتْهَرِءُونَ ﴿٨٤﴾

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ
وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ ﴿٨٥﴾

अतः उनका ईमान उस समय उन्हें कुछ लाभ न दे सका जब उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया। अल्लाह के उस नियम के अनुसार जो उसके भक्तों के सम्बन्ध में बीत चुका है और उस समय काफ़िरो ने बड़ा घाटा उठाया। 86। (रुकू 9/14)

فَلَمْ يَكُنْ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا
بِأَسْنَانِ سُنَّتِ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي
عِبَادِهِ ۚ وَخَسِرَ هَٰلِكَ الْكَافِرُونَ ۝ ٨٦

41- सूरः हा मीम अस-सज्दः

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 55 आयतें हैं ।

सूरः अल मु'मिन के पश्चात सूरः हा मीम अस सज्दः आती है जिसका आरम्भ हा मीम खण्डाक्षरों से ही किया गया है ।

इस सूरः के आरम्भ ही में यह दावा किया गया है कि कुरआन एक ऐसी सरल और शुद्ध भाषा में अवतरित हुआ है जिसने विषयवस्तुओं को खोल-खोल कर वर्णन किया है। परन्तु इसके उत्तर में इनकार करने वाले कहते हैं कि हमारे दिल पर्दे में हैं । हमारे कानों में बहरापन है और तुम्हारे और हमारे बीच एक ओट है । और रसूल को सम्बोधित कर के यह चुनौति देते हैं कि तू भले ही जो चाहता है करता रह, हम भी एक संकल्प लेकर अपने कामों में व्यस्त हैं । यहाँ यह नहीं सोचना चाहिए कि नबियों को शत्रु खुली छुट्टी दे देता है कि जो चाहें करें बल्कि इसका तात्पर्य यह है कि तू अपने स्थान पर काम कर और हम इन कामों को असफल बनाने का सदा प्रयत्न करते रहेंगे ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसका यह उत्तर सिखाया गया कि तू उनसे कह दे कि यद्यपि मैं तुम्हारे जैसा ही मनुष्य हूँ परन्तु मुझ पर जो वहड़ उतरी है उसके परिणाम स्वरूप तुम्हारे और मेरे बीच धरती और आकाश के समान अन्तर पड़ चुका है ।

इस सूरः में कुछ ऐसी आयतें हैं जिन्हें ना समझने के कारण कुछ लोग उन पर आपत्ति करते हैं । उदाहरणतः आयत सं. 11 से 13 के विषय में वे समझते हैं कि सृष्टि के आरम्भ में सारा ब्रह्माण्ड एक धुंध की भाँति वातावरण में फैल गया था, उसी का वर्णन किया जा रहा है हालाँकि धरती की उत्पत्ति तो उसके बहुत बाद हुई है ।

वास्तव में यहाँ यह विषय वर्णन हो रहा है कि धरती में खुराक की जो व्यवस्था है उसे चार युगों में संपूर्ण किया गया है । और पर्वतों की उत्पत्ति ने इसमें प्रमुख भूमिका निभाई है । फिर इसके पश्चात यह कहा गया कि इसके ऊपर का आकाश एक धुँए के रूप में था । यह धुँआ वास्तव में ऐसे वाष्पकणों के रूप में था जो धरती के निकटवर्ती सात आकाशों से भी बहुत ऊँचा था और बार-बार जब वह वाष्पकण धरती पर बरसते थे तो गर्मी की अधिकता के कारण फिर धुआँ बनकर आकाश की ऊँचाइयों में उठ जाते थे । एक बहुत लम्बे समय तक धरती की यही अवस्था रही । और अन्ततः वह पानी धरती पर बरस कर समुद्रों के रूप में धरती में फैल गया जहाँ से वाष्पकणों के रूप में उठ कर पर्वतों से टकरा कर फिर वापिस धरती पर बरसने लगा । इसके बाद दो युगों में धरती के निकटवर्ती सप्त आकाश संपूर्ण किए गए । और आकाश की प्रत्येक परत को मानो

निश्चित आदेश दे दिया गया कि तुमने यह कार्य करना है । आज वैज्ञानिक धरती के आस-पास सात परतों में बंटे हुए आकाश का वर्णन करते हैं । तो उसकी प्रत्येक परत की एक निश्चित कार्य का वर्णन करते हैं जिसके बिना धरती पर मनुष्य का जीवन संभव नहीं था । आकाश की ये सारी परतें धरती और धरती वासियों की सुरक्षा पर ही लगी हुई हैं ।

जिस दृढ़ता की हज़रत मुहम्मद सल्ल. को शिक्षा दी गई इसकी व्याख्या और फिर उसके महान प्रतिफल का दो भागों में वर्णन है । पहले भाग में तो समस्त मोमिनों को यह शुभ-समाचार दिया गया है कि यदि वे शत्रु के अत्याचारों के विरुद्ध दृढ़ता दिखाएँगे तो अल्लाह तआला ऐसे फ़रिश्ते उन पर उतारेगा जो उनके दिल की ढाढ़स बंधाएँगे और उनसे वार्तालाप करते हुए उन्हें सांत्वना देंगे कि हम इस संसार में भी तुम्हारे साथ हैं और परलोक में भी तुम्हारे साथ होंगे ।

इसके पश्चात उन आयतों में जिनका आरम्भ **और बात कहने में उससे श्रेष्ठ कौन है जो अल्लाह की ओर बुलाये** से होता है, इस विषय को और आगे बढ़ाते हुए कहा कि यदि दृढ़ता के साथ अपनी सुरक्षा के अतिरिक्त अल्लाह पर भरोसा करते हुए तुम उनको धैर्य और बुद्धिमानी पूर्वक संदेश पहुँचाने में सुस्ती नहीं करोगे तो वे जो तुम्हारी जान के प्यासे शत्रु हैं वे एक समय तुम पर जान न्योछावर करने वाले मित्र बन जाएँगे । परन्तु यह चमत्कार सबसे शानदार रूप में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पूरा हुआ जो सब धैर्य धरने वालों से अधिक धैर्य धरने वाले थे । और आप सल्ल. को धैर्य धरने की एक महान शक्ति प्रदान की गई थी और वास्तव में आप सल्ल. के जीवन में ही आप के जानी दुश्मन बहुसंख्या में आप पर जान न्योछावर करने वाले मित्रों में परिवर्तित हो गए ।

इस सूरः के अन्त पर यह वर्णन किया गया है कि हम उन लोगों को जो अल्लाह से भेंट करने के इनकारी हैं, बहुत से चिह्न दिखाएँगे जिनका सम्बन्ध क्षितिजों पर प्रकट होने वाले चिह्नों से भी होगा । और उस आश्चर्यजनक जीवन व्यवस्था से भी होगा जो अल्लाह तआला ने उनके शरीरों के अन्दर रचा है । अतः जिनको क्षितिजों पर और अपने अन्तर में दृष्टि डालने का सौभाग्य मिलेगा, उनकी यही घोषणा होगी कि हे हमारे रब्ब ! तू ने इस (ब्रह्माण्ड) को व्यर्थ उत्पन्न नहीं किया । तू पवित्र है । अतः हमें आग के अज़ाब से बचा ।



سُورَةُ حَمِّ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَسِتَّةٌ رُكُوعَاتٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।11।

हमीदुन मजीदुन : स्तुति के योग्य और अति गौरवशाली ।2।

इसका अवतरण अनन्त कृपा करने वाले (और) बार-बार दया करने वाले (अल्लाह) की ओर से है ।3।

यह एक ऐसी पुस्तक है जिसकी आयतें एक ऐसे कुरआन के रूप में है जो अत्यन्त सरल और शुद्ध भाषा संपन्न है, उन लोगों के लाभार्थ खोल-खोलकर वर्णन कर दी गई हैं जो ज्ञान रखते हैं ।4।

शुभ-समाचार दाता और सतर्ककारी के रूप में । अतः उनमें से अधिकतर ने मुख मोड़ लिया और वे सुनते नहीं ।5।

और उन्होंने कहा कि जिन बातों की ओर तू हमें बुलाता है उनसे हमारे दिल पर्दों में हैं । और हमारे कानों में एक बहरापन है और हमारे और तुम्हारे बीच एक ओट है । अतः तू जो चाहे कर, निःसन्देह हम भी कुछ करने वाले हैं ।6।

तू कह दे, मैं केवल तुम्हारी भाँति एक मनुष्य हूँ । मेरी ओर वहइ की जाती है कि तुम्हारा उपास्य केवल एक उपास्य है।

अतः उसके समक्ष दृढ़तापूर्वक खड़े हो जाओ और उससे क्षमा याचना करो । और शिर्क करने वालों का सर्वनाश हो ।7।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حَمْدٌ ②

تَنْزِيلٌ مِنَ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ③

كِتَابٌ فُصِّلَتْ آيَاتُهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ④

بَشِيرًا وَنَذِيرًا ⑤ فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ ⑥

وَقَالُوا أَأُفْلِحُ بِإِذْنِ مَا تَدْعُونَا إِلَيْهِ وَفِي آذَانِنَا وَقْرٌ وَمِنْ بَيْنِنَا وَبَيْنَكَ حِجَابٌ فَاغْمَلْ إِنَّا نَحْنُ غَمْلُونَ ⑦

قُلْ إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوحَى إِلَيَّ أَنَّمَا إِلَهُكُمُ اللَّهُ وَاحِدٌ فَاسْتَقِيمُوا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوا ⑧ وَوَيْلٌ لِلْمُشْرِكِينَ ⑨

जो ज़कात नहीं देते और वही हैं जो परलोक का इनकार करने वाले हैं ।8।

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए अक्षय प्रतिफल है ।9। (रूकू $\frac{1}{15}$)

तू कह दे, क्या तुम उसका इनकार करते हो जिसने धरती को दो युगों में पैदा किया और तुम उसके साझीदार ठहराते हो ? यह वही है समस्त लोकों का रब्ब ।10।

और उसने उसके ऊँचे क्षेत्रों में पर्वत बनाए और उनमें उसने बरकत रख दी । और उन में उन्हीं से उत्पन्न होने वाले खाने-पीने के सामान चार युगों में इस प्रकार सुव्यवस्थित किये कि वे (सब आवश्यकता पूर्ति की) चाहत रखने वालों के लिए समान हैं ।11।

फिर उसने आकाश की ओर ध्यान दिया और वह (आकाश) धुआँ-धुआँ था । और उस (अल्लाह) ने उससे और धरती से कहा कि तुम दोनों इच्छापूर्वक अथवा अनिच्छापूर्वक चले आओ । उन दोनों ने कहा, हम इच्छापूर्वक उपस्थित हैं ।12।

अतः उसने उनको दो युगों में सात आकाशों के रूप में विभाजित कर दिया । और प्रत्येक आकाश के नियम उसमें वहड़ किये । और हमने संसार के (समीपवर्ती) आकाश को दीपमालाओं और सुरक्षा के सामानों के साथ सुशोभित किया । यह पूर्ण

الَّذِينَ لَا يُؤْتُونَ الزَّكَاةَ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَفَرُونَ ⑧

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ⑨

قُلْ أَنتُمْ كُفْرُوكُمْ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَنْدَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ⑩

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبَرَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ ۖ سَوَاءٌ لِّلسَّائِلِينَ ⑪

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ۖ قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ⑫

فَقَضَاهُنَّ سَبْعَ سَمَوَاتٍ فِي يَوْمَيْنِ وَأَوْحَىٰ فِي كُلِّ سَمَاءٍ أَمْرَهَا ۚ وَزَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ ۚ وَحِفْظًا ۚ ذَٰلِكَ

प्रभुत्व वाले (और) सर्वज्ञ (अल्लाह) का विधान है ।13।

अतः यदि वे मुख मोड़ लें तो तू कह दे मैं तुम्हें आद और समूद (जाति) को दिये गये अज़ाब के समान अज़ाब से डराता हूँ ।14।

जब उनके पास उनके सामने भी और उनसे पूर्ववर्ती युगों में भी रसूल (यह कहते हुए) आते रहे कि अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो । उन्होंने कहा, यदि हमारा रब्ब चाहता तो अवश्य फ़रिश्ते उतार देता । अतः जिस संदेश के साथ तुम भेजे गए हो, निःसन्देह हम उसका इनकार करने वाले हैं ।15।

फिर रहे आद (जाति के लोग), तो उन्होंने धरती में अनुचित रूप से अहंकार किया और कहा, हमसे बढ़कर शक्तिशाली कौन है ? क्या उन्होंने देखा नहीं कि अल्लाह जिसने उन्हें पैदा किया उनसे बहुत अधिक शक्तिशाली है ? और वे निरन्तर हमारे चिह्नों का इनकार करते रहे ।16।

अतः हमने बड़े अशुभ दिनों में उन पर एक तेज़ आँधी चलाई ताकि हम उन्हें (इस) सांसारिक जीवन में अपमान रूपी अज़ाब चखाएँ । और निःसन्देह परलोक का अज़ाब अधिक अपमानजनक है । और उन्हें सहायता नहीं दी जाएगी ।17।

और जहाँ तक समूद (जाति) का सम्बन्ध है तो हमने उनका भी मार्गदर्शन किया । परन्तु उन्होंने अन्धेपन को पसन्द

تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ ۝

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صُحُفَةً
مِّثْلَ صُحُفَةِ عَادٍ وَثَمُودَ ۝

إِذْ جَاءَتْهُمْ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ
وَمِنْ خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۖ
قَالُوا لَوْ شَاءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلَائِكَةً فَأِنَّا
بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ كَافِرُونَ ۝

فَأَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَقَالُوا مَنْ أَشَدُّ مَقَوتَةً ۖ أَوَلَمْ
يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ
مِنْهُمْ قُوَّةً ۖ وَكَانُوا بِلِقَائِنَا يُجَادُونَ ۝

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي
أَيَّامٍ نَحْسَاتٍ لِنَبْلِيَهُمْ عَذَابَ
الْآخِرَةِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَلَعَذَابُ
الْآخِرَةِ أَخْرَىٰ وَهُمْ لَا يُنصَرُونَ ۝

وَأَمَّا ثَمُودُ فَهَدَيْنَاهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعِصْيَ

करते हुए (उसे) हिदायत पर प्राथमिकता दी । अतः उन्हें अपमानजनक अज़ाब के रूप में बिजली ने उस कमाई के कारण पकड़ लिया जो वे किया करते थे । 118।

और जो ईमान लाए और तक्वा से काम लेते रहे, हमने उन्हें मुक्ति प्रदान की । 119। (रकू- $\frac{2}{16}$)

और जिस दिन अल्लाह के शत्रुओं को अग्नि की ओर घेर कर ले जाया जाएगा और वे समूहों में विभाजित किए जाएंगे । 120।

यहाँ तक कि जब वे उस (अग्नि) तक पहुँचेंगे उनके कान और उनकी आँखें और उनके चमड़े उनके विरुद्ध गवाही देंगे कि वे कैसे कैसे कर्म किया करते थे । 121।

और वे अपने चमड़ों से कहेंगे, तुमने क्यों हमारे विरुद्ध गवाही दी ? वे उत्तर देंगे कि अल्लाह ने हमें बोलने की शक्ति दी, जिसने प्रत्येक वस्तु को वाक्शक्ति प्रदान की है । और वही है जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे । 122।

और तुम (इस बात से) छिप नहीं सकते थे कि तुम्हारे विरुद्ध तुम्हारी श्रवण-शक्ति गवाही दे । और न तुम्हारी दृष्टि-शक्ति और न तुम्हारे चमड़े (गवाही दें) । परन्तु तुम यह धारणा कर बैठे थे कि अल्लाह को

عَلَى الْهَدَىٰ فَاِذْ هُمْ ضَعُفَةُ الْعَذَابِ
الْهُونَ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝

وَنَجَّيْنَا الَّذِينَ اٰمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ۝

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَاءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ
يُوزَعُونَ ۝

حَتّٰى اِذَا مَا جَآءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ
سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَاَجُلُودُهُمْ بِمَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

وَقَالُوا الْيَوْمَ لِمَ شَهِدْتُمْ عَلَيْنَا
قَالُوا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِىْ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ
وَ هُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَ اِلَيْهِ
تَرْجَعُونَ ۝

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَرْشِدُونَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ
سَمْعُكُمْ وَلَا اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ
وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنْ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا

तुम्हारे बहुत से कर्मों का ज्ञान ही नहीं 123।*

और तुम्हारी वह धारणा जो तुम अपने रब्ब के विषय में किया करते थे, उसने तुम्हें नष्ट कर दिया और तुम हानि उठाने वालों में से हो गए 124।

अतः यदि वे धैर्य धरें तो उनका ठिकाना अग्नि है। और यदि वे सफाई पेश करें तो उनकी सफाई स्वीकृत नहीं की जाएगी 125।

और हमने उनके लिए कुछ साथी नियुक्त कर दिए। अतः उन्होंने उनके लिए उसे खूब सजा कर प्रस्तुत किया जो उनके सामने था, अथवा (जो) उनसे पहले था। अतः उन पर वही आदेश सत्य सिद्ध हो गया जो उन जातियों पर सिद्ध हुआ था जो उनसे पूर्व जिनों और मनुष्यों में से बीत चुकी थीं। निःसन्देह वे लोग घाटा पाने वालों में से थे 126।

(रुकू 3/17)

और जिन्होंने इनकार किया उन लोगों ने कहा कि इस कुरआन पर कान न धरो और उसके पाठ करने के समय

مِمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٢٣﴾

وَذُرِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِي ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ

أَرَدَكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٤﴾

فَإِنْ يَصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَهُمْ وَإِنْ

يَسْتَعِثُّوا فَمَا هُمْ مِنَ الْمُعْتَصِينَ ﴿٢٥﴾

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَاءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَا بَيْنَ

أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ

الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ

الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ﴿٢٦﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا هَذَا

- * आयत सं. 21 से 23 : इन आयतों में क़यामत के दिन अपराधियों के विरुद्ध जिन गवाहियों का वर्णन किया गया है उनमें सर्वप्रथम आश्चर्यजनक गवाही त्वचा की गवाही है। उस युग में तो त्वचा की गवाही समझ में नहीं आ सकती थी परन्तु वर्तमान युग में प्राणी-विज्ञान के जानकारों ने निश्चित रूप से सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य की बाह्य और आन्तरिक बनावट को सबसे अधिक त्वचा की प्रत्येक कोशिका में अंकित कर दी गई है। यहाँ तक कि यदि करोड़ों वर्ष पहले का कोई प्राणी इस प्रकार धरती में दबा हो कि उसकी त्वचा की कोशिकायें सुरक्षित हों तो उनमें से केवल एक कोशिका से ही बिल्कुल वैसे ही प्राणी की नए सिरे से उत्पत्ति की जा सकती है। आनुवंशिकी इंजीनियरिंग (Genetic Engineering) के द्वारा त्वचा की कोशिकाओं से भेड़ों अथवा मनुष्यों की उत्पत्ति क्रिया भी इसी कुरआनी गवाही को प्रमाणित करती है।

शोर किया करो ताकि तुम विजयी हो जाओ ।27।

अतः हम निःसन्देह उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया कठोर अज़ाब का स्वाद चखाएंगे और उन्हें उनके कुकर्मों का अवश्य प्रतिफल देंगे ।28।

यह हो कर रहने वाली बात है कि अल्लाह के शत्रुओं का प्रतिफल अग्नि है। उनके लिए उसमें देर तक रहने का घर है । यह प्रतिफल है उस (बात) का जो हमारी आयतों का जानबूझ कर इनकार किया करते थे ।29।

और जिन लोगों ने इनकार किया वे कहेंगे कि हे हमारे रब ! हमें जन्न और मनुष्य में से वे दोनों दिखा जिन्होंने हमें पथभ्रष्ट किया । इस लिए कि हम उन्हें अपने पैरों के नीचे कुचल डालें ताकि वे घोर अपमानित हो जाएँ ।30।

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने कहा कि अल्लाह हमारा रब है, फिर (इस पर) अडिग रहे, उन पर बार-बार फ़रिश्ते (यह कहते हुए) उतरते हैं कि भय न करो और शोक न करो और उस स्वर्ग (के मिलने) से प्रसन्न हो जाओ जिसका तुम्हें वचन दिया जाता है ।31।

हम इस सांसारिक जीवन में भी तुम्हारे साथी हैं और परलोक में भी। और उसमें तुम्हारे लिए वह सब कुछ होगा जिसकी तुम्हारे मन इच्छा करते हैं । और उसमें तुम्हारे लिए

الْقُرْآنِ وَالْغَوَافِيهِ لَعَلَّكُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٧﴾

فَلَنَذِقَنَ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا ۖ
وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَشْوَأَ الَّذِي كَانُوا
يَعْمَلُونَ ﴿٢٨﴾

ذَلِكَ جَزَاءُ أَعْدَاءِ اللَّهِ النَّارِ ۖ لَهُمْ فِيهَا
دَارُ الْخُلْدِ ۖ جَزَاءُ ۖ بِمَا كَانُوا بِآيَاتِنَا
يَجْحَدُونَ ﴿٢٩﴾

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذِينَ
أَصْلَلْنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلُهُمَا
تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونُوا مِنَ الْآسْفِلِينَ ﴿٣٠﴾

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبَّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَفَامُوا
تَنْزِيلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا
تَحْزَنُوا وَابْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ
تُوْعَدُونَ ﴿٣١﴾

نَحْنُ أَوْلَىٰ بِكُومُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي
الْآخِرَةِ ۖ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهَى

वह सब कुछ होगा जो तुम मांगा करते हो ।32।*

यह बहुत क्षमा करने वाले (और) बार-बार दया करने वाले (अल्लाह) की ओर से आतिथ्य स्वरूप है ।33। (हूकू 4/18) और बात कहने में उससे उत्तम कौन हो सकता है जो अल्लाह की ओर बुलाए और नेक कर्म करे और कहे कि निःसन्देह मैं पूर्ण आज्ञाकारियों में से हूँ ।34।

न अच्छाई बुराई के समान हो सकती है और न बुराई अच्छाई के (समान) । ऐसी बात से निवारण कर कि जो सर्वोत्तम हो । तब ऐसा व्यक्ति जिसके और तेरे बीच शत्रुता थी मानो वह सहसा एक प्राण न्योछावर करने वाला मित्र बन जाएगा ।35।

और यह दर्जा केवल उन्हीं लोगों को ही प्रदान किया जाता है जिन्होंने धैर्य धारण किया । और यह दर्जा केवल उसे ही प्रदान किया जाता है जो बड़े भाग्य वाला हो ।36।

और यदि तुझे शैतान की ओर से कोई बहका देने वाली बात पहुँचे तो अल्लाह की शरण मांग । निःसन्देह वही बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।37।

أَنفُسِكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدْعُونَ ﴿٣١﴾

ع 18

نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ﴿٣٢﴾

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٣﴾

وَلَا تَسْتَوِ الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۚ ادْفَعْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِي بَيْنَكَ وَبَيْنَهُ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهُ وَلِيٌّ حَمِيمٌ ﴿٣٤﴾

وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا ۚ وَمَا يُلْقِيهَا إِلَّا ذُوحَضٍ عَظِيمٍ ﴿٣٥﴾

وَأَمَّا يَنْزِعُكَ مِنَ الشَّيْطَانِ نُزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ﴿٣٦﴾

* आयत सं. 31, 32 : इन आयतों में वहइ के सदा जारी रहने का वर्णन है । जो उन लोगों पर उतारी जाएगी जो अल्लाह तआला के लिए वृद्धता अपनाएँ और परीक्षाओं में अडिग रहें । जो फ़रिश्ते उन पर उतरेंगे वे उनसे कहेंगे कि हम इस संसार में भी तुम्हारे साथ हैं और अगले संसार में भी तुम्हारे साथ रहेंगे । और तुम्हारी सब शुभ कामनाएँ पूरी की जाएँगी ।

और उसके चिह्नों में से रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा हैं। न सूर्य को सजद: करो और न चन्द्रमा को। और अल्लाह को सजद: करो जिसने उन्हें पैदा किया यदि तुम केवल उसी की उपासना करते हो। 138।

अतः यदि वे अहंकार करें तो (जान लें कि) वे लोग जो तेरे रब्ब के समक्ष रहते हैं, रात और दिन उसकी स्तुति करते हैं और वे थकते नहीं। 139।

और उसके चिह्नों में से यह भी है कि तू धरती को गिरी हुई अवस्था में देखता है। फिर जब हम उस पर पानी उतारते हैं तो वह (उपज की दृष्टि से) सक्रिय हो जाती है और फूलने लगती है। निःसन्देह वह जिसने उसे जीवित किया अवश्य मुर्दों को जीवित करने वाला है। निःसन्देह वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है। 140।*

निःसन्देह वे लोग जो हमारी आयतों के बारे में कुटिलता अपनाते हैं, हम से छिपे नहीं रहते। अतः क्या वह जो अग्नि में डाला जाएगा बेहतर है अथवा वह जो क़यामत के दिन शांति की अवस्था में आएगा? तुम जो चाहो

وَمِنْ آيَاتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ لَا تَسْجُدُوا لِلشَّمْسِ وَلَا
لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوا لِلَّهِ الَّذِي خَلَقَهُنَّ
إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝

فَإِنْ اسْتَكْبَرُوا فَالَّذِينَ عِنْدَ رَبِّكَ
يَسْتَبْخِرُونَ لَهُ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا
يَسْمُونَ ۝

وَمِنْ آيَاتِهِ أَنْتَ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً
فَإِذَا أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَاءَ اهْتَزَّتْ
وَرَبَّتْ ۖ إِنَّ اللَّهَ الَّذِي أَحْيَاهَا لَمُخِي
الْمُوتَى ۖ إِنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يُلْحِدُونَ فِي آيَاتِنَا لَا يَخْفَوْنَ
عَلَيْنَا ۖ أَفَمَنْ يُلْقَى فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمْ مَنْ
يَأْتِيَ آمِنَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ ۖ اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ ۚ

* यहाँ आकाश से पानी बरसने के पश्चात मृत धरती के जीवित होने का वर्णन है। अतः मृत्यु के पश्चात का जीवन भी इसी विषयवस्तु से सम्बन्ध रखता है। पुनरुत्थान तो सब का होगा परन्तु वास्तविक आध्यात्मिक जीवन उनको मिलेगा जो आकाशीय (आध्यात्मिक) जल के उतरने पर उससे लाभ उठाते हैं। अर्थात् नबियों को स्वीकार करते और उनकी शिक्षा का पालन करते हैं। आकाशीय जल धरती में भी तो प्रत्येक स्थान पर बरसता है परन्तु शुष्क चट्टानों और बंजर धरतियों को कोई लाभ नहीं पहुँचाता। केवल उस धरती को जीवित करता है जिसमें जीवन शक्ति हो।

करते फिरो, निःसन्देह जो कुछ भी तुम करते हो वह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है ।41।

निःसन्देह वे लोग (दण्ड भोग करेंगे) जिन्होंने उपदेश का (तब) इनकार कर दिया जब वह उनके पास आया । हालाँकि वह एक बड़ी प्रभुत्व वाली और सम्माननीय पुस्तक के रूप में था ।42।

झूठ उस तक न सामने से पहुँच सकता है और न उसके पीछे से । परम विवेकशील, बहुत स्तुति योग्य (अल्लाह) की ओर से उसका अवतरण हुआ है ।43।

तुझे केवल वही कहा जाता है जो तुझ से पूर्ववर्ती रसूलों से कहा गया । निःसन्देह तेरा रब्ब बहुत क्षमा करने वाला और पीड़ाजनक अज़ाब देने वाला है ।44।

और यदि हमने उसे अजमी (अर्थात् अस्पष्ट भाषा युक्त) कुरआन बनाया होता तो वे अवश्य कहते कि क्यों न इसकी आयतें खुली-खुली (अर्थात् समझ आने योग्य) बनाई गई ? क्या अजमी और अरबी (समान हो सकते हैं?) तू कह दे कि वह तो उन लोगों के लिए जो ईमान लाये हैं हिदायत और आरोग्य कारी है । और वे लोग जो ईमान नहीं लाते उनके कानों में बहरापन है जिसके परिणाम स्वरूप वह उन पर अस्पष्ट है । और यही वे लोग हैं जिन्हें एक दूर के स्थान से बुलाया जाता है ।45। (रुकू 5/19)

إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَاءَهُمْ ۖ وَإِنَّهُ لَكِتَابٌ عَزِيزٌ ۝

لَا يَأْتِيهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهِ ۖ تَنْزِيلٌ مِنْ حَكِيمٍ حَمِيدٍ ۝

مَا يَقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ۖ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ ۖ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ۝

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا عَجَمِيًّا لَقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَعَجَبٌ وَعَرَبِيٌّ ۚ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشَفَاءٌ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُولَٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَكَانٍ بَعِيدٍ ۝

और निःसन्देह हमने मूसा को भी पुस्तक प्रदान की थी । फिर उसमें मतभेद किया गया । और यदि तेरे रब्ब की ओर से आदेश जारी न हो चुका होता तो अवश्य उनके बीच निर्णय कर दिया जाता । और निःसन्देह वे उसके बारे में एक बेचैन कर देने वाली शंका में पड़े हैं । 46। जो भी नेक कर्म करे तो अपनी ही जान के लिए ऐसा करता है । और जो कोई बुराई करे तो उसी के विरुद्ध करता है । और तेरा रब्ब निरीह भक्तों पर लेश मात्र भी अत्याचार करने वाला नहीं । 47।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ^ط
وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ^ط وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ^{٤٦}

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ وَمَنْ أَسَاءَ
فَعَلَيْهَا^ط وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَالَمِينَ^{٤٧}

निश्चित घड़ी का ज्ञान उसी की ओर लौटाया जाता है। और कई प्रकार के फल अपने आवरणों से नहीं निकलते, न ही कोई मादा गर्भवती होती है और न बच्चा जनती है परन्तु उस (अल्लाह) को ज्ञात होता है। और याद करो उस दिन को जब वह ऊँची आवाज़ में उनसे पूछेगा कि मेरे साक्षीदार कहाँ हैं? तो वे कहेंगे, हम तुझे सूचित करते हैं कि हम में से कोई भी (इस बात का) साक्षी नहीं। 148।

और वह उनसे खो जाएगा जिसे वे उससे पहले पुकारा करते थे। और वे समझ जाएंगे कि उनके लिए भागने का कोई स्थान नहीं है। 149।

मनुष्य भलाई माँगने से थकता नहीं और यदि उसे कष्ट पहुँचे तो बहुत निराश (और) हताश हो जाता है। 150।

और उसे कोई कष्ट पहुँचने के पश्चात यदि हम उसे अपनी कोई कृपा चखाएँ तो वह अवश्य कहता है, यह मेरे लिए है और मैं नहीं समझता कि निश्चित घड़ी आ जाएगी। और यदि मैं अपने रब की ओर लौटाया भी गया तो निःसन्देह मेरे लिए उसके पास उच्च कोटि की भलाई होगी। अतः उन लोगों को जिन्होंने इनकार किया, हम उन बातों से अवश्य सूचित करेंगे जो वे किया करते थे। और हम उन्हें अवश्य कठोर अज़ाब का स्वाद चखाएँगे। 151।

और जब हम मनुष्य को पुरस्कृत करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है और कन्नी

إِلَيْهِ يَرْدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرَاتٍ مِنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِيَ قَالُوا أَدْذُكَ مَا مِمَّا مِنْ شَهِيدٍ ۝

وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُوا مَا لَهُمْ مِنْ مَّحِيصٍ ۝

لَا يَسْتَمُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِنْ مَسَّهُ الشَّرُّ فَيَوْسُقْ قَنُوطٌ ۝

وَلَيْسَ أَذْقُهُ رَحْمَةً مِّمَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَاءٍ مَسَّتْهُ لِيَقُولَنَّ هَذَا لِي وَمَا أَطْلُ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَيْنَ رُجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْنَىٰ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝

وَإِذَا أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ

काटते हुए दूर हट जाता है । और जब उसे कष्ट पहुँचे तो लम्बी चौड़ी दुआ करने वाला बन जाता है । 52।

तू कह दे बताओ तो सही कि यदि वह अल्लाह की ओर से हो और फिर भी तुम उसका इनकार कर बैठे हो तो उससे अधिक पथभ्रष्ट और कौन हो सकता है जो परले दर्जे के विरोध करने में लगा हो ? । 53।

अतः हम अवश्य उन्हें क्षितिज में भी और उनकी जानों के अन्दर भी अपने चिह्न दिखाएँगे यहाँ तक कि उन पर खूब खुल जाए कि वह सत्य है । क्या तेरे रब्ब के लिए यह पर्याप्त नहीं कि वह प्रत्येक वस्तु पर निरीक्षक है ? । 54।

सावधान ! वे अपने रब्ब की भेंट के बारे में शंका में पड़े हैं । सावधान ! निःसन्देह वह हर चीज़ को घेरे हुए है । 55।

(रुकू $\frac{6}{1}$)

وَنَا بِجَانِبِهِ ۖ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَدُؤُ
دُعَاءٍ عَرِيضٍ ۝

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهِ مِنْ أَصْلٍ مِمَّنْ هُوَ فِي
شِقَاقٍ بَعِيدٍ ۝

سَرُّهُمْ أَيْتَابِي الْأَفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ
حَتَّى يَتَبَيَّنَ لَهُمُ اللَّهُ الْحَقُّ ۖ أَوَلَمْ يَكْفِ
بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

أَلَا إِنَّهُمْ فِي مَرِيَّةٍ مِّنْ لِّقَاءِ رَبِّهِمْ ۖ
أَلَا إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيطٌ ۝

42- सूरः अश-शूरा

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 54 आयतें हैं ।

पिछली सूरः की अन्तिम आयतों में एक तो यह चेतावनी दी गई थी कि जब नुबुव्वत की नेमत उतरती है तो लोग इसको स्वीकार करने से विमुख हो जाते हैं । परन्तु इसके परिणाम स्वरूप जब उनको कष्ट पहुँचता है तो फिर लम्बी चौड़ी दुआएँ करते हैं कि वह कष्ट टल जाए । अतः उनको चेतावनी दी गई है कि अल्लाह तआला उनको अपने वह चिह्न भी दिखाएगा जो क्षितिजों पर प्रकट होते हैं तथा जो प्रकृति विधान के महान द्योतक हैं । और वह चिह्न भी दिखाएगा जो प्रत्येक मनुष्य के भीतर अल्लाह तआला की सत्ता की गवाही देने के लिए विद्यमान हैं ।

इस सूरः में खण्डाक्षरों के पश्चात कहा गया है कि जिस प्रकार इससे पहले वहइ की गई और उसे पहले लोगों ने अनदेखा कर दिया, इसी प्रकार अब तुझ पर भी वहइ उतारी जा रही है जो एक महान नेमत है । परन्तु सांसारिक लोग इस आकाशीय नेमत को स्वीकार नहीं करेंगे क्योंकि उनको केवल संसार की नेमतों की लालसा होती है ।

इसके पश्चात आयत संख्या 8 में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को समस्त जगत के लिए सतर्ककारी घोषित किया गया है । क्योंकि समस्त बस्तियों की जननी अर्थात् मक्का, जिसे अल्लाह ने सब दुनिया का केन्द्र निश्चित किया है । यदि उसे सतर्क किया जाए तो मानो समस्त संसार को सतर्क किया गया । और **वमन हौलहा** (जो उसके चारों ओर हैं) के शब्दों में तो मानो समस्त जगत की बस्तियाँ समाहित हो जाती हैं । फिर **यौमुल जम्ड़** (इकट्ठे होने के दिन) का वर्णन भी कर दिया गया कि जिस प्रकार मक्का को समस्त मानव जाति के एकत्रित होने का स्थान बताया गया इसी प्रकार एक एकत्रिकरण परलोक में भी होगा जिसमें समस्त मानव जाति को एकत्रित किया जाएगा ।

अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के द्वारा समस्त मानव जाति को एक बनाने का प्रयास किया गया । परन्तु इसके बावजूद अल्लाह तआला जानता है कि दुनिया वाले इस नेमत का अनादर करके पहले की भाँति परस्पर बंटें रहेंगे । क्योंकि अल्लाह तआला किसी को ज़बरदस्ती करके हिदायत पर इकट्ठा नहीं करता । अन्यथा समस्त मानवजाति को एक ही धर्म का अनुयायी बना देता ।

इसके पश्चात पिछले नबियों पर वहइ के उतरने का यही उद्देश्य वर्णन किया गया कि वे लोगों को एकताबद्ध करें । परन्तु जब भी वे आए दुर्भाग्य से लोग इस नेमत का इनकार करके और भी अधिक फूट का शिकार हो गए । उन के मतभेद का मूल कारण यह वर्णन किया गया है कि वास्तव में वे एक दूसरे से द्वेष रखते थे । अतः प्रश्न यह है कि

उनका इस प्रकार लगातार अवज्ञा करने पर भी क्यों झगड़े का निपटारा नहीं किया जाता? इसका उत्तर यह दिया जा रहा है कि जब तक धरती पर मनुष्यों की परीक्षा का क्रम निश्चित है, उससे पूर्व उनका झगड़ा यहाँ निपटाया नहीं जाएगा। यद्यपि सामयिक रूप से प्रत्येक जाति का झगड़ा उसकी निर्धारित घड़ी के अन्दर तय किया गया। परन्तु उसके पश्चात एक और जाति और फिर एक और जाति संसार में आती चली गई और कुल मिला कर मनुष्य का झगड़ा अन्तिम निश्चित घड़ी के समय तय किया जाएगा।

इसके पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ताक़ीद की गई है कि इनकार करने वालों के मतभेदों और अवज्ञाओं पर किसी प्रकार असमंजस में पड़ने की आवश्यकता नहीं। जब अल्लाह निर्णय करेगा कि उनको इकट्ठा किया जाए तो अवश्य इकट्ठा कर देगा। इस एकत्रिकरण की एक महान भविष्यवाणी सूर: अल-जुमुअ: में भी है।

इस सूर: की आयत सं. 24 का शीया व्याख्याकार विषयवस्तु की वर्णन शैली से हट कर एक क़ूरता पूर्ण अनुवाद करते हैं। उनके अनुसार मानो हज़रत मुहम्मद सल्ल. को यह कहने का आदेश दिया जा रहा है कि लोगो ! मैं तुम से कोई प्रतिफल नहीं माँगता। परन्तु मेरे निकट सम्बन्धियों को इसके बदले में प्रतिफल दो। इस आयत का कदापि यह अर्थ नहीं हो सकता। क्योंकि अपने सगे सम्बन्धियों के लिए प्रतिफल माँगना वास्तव में अपने लिए ही प्रतिफल माँगना होता है। इसका वास्तविक भावार्थ यह है कि मैं तो तुम से अपने लिए और अपने सगे सम्बन्धियों के लिए भी कोई प्रतिफल नहीं माँगता। जैसा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्पष्ट रूप से कहा कि मेरे सगे सम्बन्धियों और आगे उनकी संतान को कभी दान न दिया जाए। परन्तु तुम अपने सगे-सम्बन्धियों की अनदेखा न करो, उनकी आवश्यकताओं पर व्यय करना तुम्हारा कर्तव्य है।

यह जो विषयवस्तु छेड़ा गया था कि निर्धनों और अभावग्रस्तों पर व्यय करो, विशेषकर अपने सगे-सम्बन्धियों पर। इस पर प्रश्न उठता है कि अल्लाह तआला क्यों उन्हें सीधे-सीधे स्वयं ही प्रदान कर नहीं देता? इसका उत्तर यह दिया गया है कि जीविका के विस्तृत अथवा संकुचित होने का विषय अन्य कारणों से सम्बन्ध रखता है। कई बार लोग जीविका में बढ़ोत्तरी के द्वारा परीक्षा में डाले जाते हैं और कई बार जीविका में तंगी के द्वारा परीक्षा में डाले जाते हैं। जो बढ़ोत्तरी के द्वारा परीक्षा में डाले जाते हैं उन्हीं का वर्णन पहले हुआ है कि वे जीविका में बढ़ोत्तरी होने पर भी दुर्बलों का, यहाँ तक कि सगे सम्बन्धियों का भी ध्यान नहीं रखते। इसके पश्चात आयत सं. 30 एक आश्चर्यजनक विषय को उजागर कर रही है जिसकी कल्पना भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग के किसी मनुष्य को नहीं हो सकती थी। उस युग में तो आकाशों को प्लास्टिक की परतों की भाँति सात परतों पर आधारित समझा जाता था जिसमें चन्द्रमा,

सितारे इस प्रकार जड़े हुए हैं जिस प्रकार कपड़ों में मोती टांके जाते हैं। कौन कह सकता था कि धरती की भांति वहाँ भी चलने फिरने वाली सृष्टि विद्यमान है। न केवल आकाशों में ऐसी सृष्टि की ठोस रूप से सूचना दी गई बल्कि एकत्रिकरण के अर्थ को यह कह कर आकाश तक पहुँचा दिया गया कि धरती पर बसने वाली सृष्टि और यह आकाश पर बसने वाली सृष्टि एक दिन अवश्य एकत्रित कर दी जाएगी। यह **एकत्रिकरण** भौतिक रूप से होगा अथवा संचार प्रणाली के माध्यम से होगा इसका ज्ञान तो अल्लाह ही को है। परन्तु आज वैज्ञानिक इस प्रयास में हैं कि किसी प्रकार आकाश पर बसने वाली सृष्टि के साथ उनका कोई संपर्क स्थापित हो जाए। मानो वे यह सोचने पर विवश हो गए हैं कि धरती के अतिरिक्त अन्य आकाशीय पिण्डों पर भी चलने-फिरने वाली सृष्टि विद्यमान होगी।

इसी सूरः में जिसका शीर्षक **शूरा** (अर्थात् विचार-विमर्श) है एक और एकत्रिकरण का भी वर्णन कर दिया गया। अर्थात् मुसलमानों का यह सिद्धान्त निरूपित कर दिया गया कि जब कभी महत्वपूर्ण विषयों से उनका सामना हो तो वे एकत्रित हो कर उन पर चिन्तन-मनन किया करें।

इस सूरः में एक और छोटी सी आयत सं. 41 कुरआन की शिक्षा को पहले की समस्त शिक्षाओं पर श्रेष्ठ सिद्ध करती है। कहा जा रहा है कि यदि कोई मनुष्य किसी प्रकार के अत्याचार का शिकार हो तो उसी सीमा तक उसे प्रतिशोध लेने का अधिकार है जिस सीमा तक अत्याचार किया गया हो, न कि प्रतिशोध के आवेग में आकर स्वयं अत्याचारी बन जाए। परन्तु यह अत्योत्तम है कि ऐसी क्षमा से काम ले जिसके परिणाम स्वरूप सुधार हो। कई बार क्षमा के परिणामस्वरूप लोग और भी अधिक बुराई करने में निडर हो जाते हैं। अतः ऐसी क्षमा की अनुमति नहीं है बल्कि इस प्रकार की क्षमा करने का आदेश है जो परिस्थिति के सुधार का कारण बने।

आयत सं. 52 में **वह्द** की विभिन्न प्रकारों का वर्णन है। जो यह है कि मनुष्य से अल्लाह तआला केवल वह्द के माध्यम से ही वार्तालाप करता है। कई बार यह वह्द ओट के पीछे से होती है अर्थात् बोलने वाला दिखाई नहीं देता। परन्तु मनुष्य का मन उसे स्पष्ट रूप से प्राप्त करता है। और कई बार एक फ़रिश्ते के रूप में अल्लाह का दूत उस के समक्ष उतरता है और वह जो वह्द उस पर करता है वह पूर्णरूप से वैसा ही है जिसका अल्लाह ने उसे आदेश दिया होता है। फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमने भी इसी प्रकार तुझ पर वह्द उतारी और अपने आदेश से तुझे एक जीवनदायिनी वाणी प्रदान की। इस सूरः की अन्तिम आयतों में एक बार फिर इस विषय को दोहराया गया है कि धरती और आकाश और जो कुछ उनके बीच है, सब अल्लाह ही की मिल्कीयत है और अल्लाह ही की ओर समस्त विषय लौटाए जाने वाले हैं।

سُورَةُ الشُّورَى مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ أَرْبَعٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَخَمْسَةٌ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।11।

हमीदुन् मजीदुन् : स्तुति योग्य, अति गौरवशाली ।2।

अलीमुन समीउन क़दीरुन : बहुत जानने वाला, बहुत सुनने वाला, सर्वशक्तिमान ।3।

इसी प्रकार पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील अल्लाह तेरी ओर वहइ करता है और उनकी ओर भी करता रहा है जो तुझ से पहले थे ।4।

उसी का है जो आसमानों में है और जो धरती में है और वह बहुत ऊँचे पद वाला (और) महान है ।5।

संभव है कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़े और फ़रिश्ते अपने रबब की स्तुति के साथ (उसका) गुणगान कर रहे हों । और वे उनके लिए जो धरती में हैं, क्षमा माँग रहे हों । सावधान ! निःसन्देह अल्लाह ही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।6।*

और उन पर भी अल्लाह ही निरीक्षक है जिन्होंने उसके सिवा मित्र बना रखे हैं । जबकि तू उन पर दारोगा नहीं ।7।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حَمْدٌ ②

عَسَقٌ ③

كَذَلِكَ يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ④

لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ⑤ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ⑥

تَكَادُ السَّمُوتُ يَفْقَطَرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلَائِكَةُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ⑦ أَلَا إِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑧

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيفٌ عَلَيْهِمْ ⑨ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ ⑩

* संसार वासियों पर जब आकाश से बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ पड़ती हैं उस समय अल्लाह के पवित्र भक्तों के लिए आकाश के फ़रिश्ते भी क्षमायाचना करते हैं । फ़रिश्ते अपने आप में तो निर्दोष होते हैं । परन्तु अल्लाह के भक्तों के लिये क्षमायाचना करते हैं ।

और इसी प्रकार हमने तेरी ओर अरबी कुरआन वहइ किया ताकि तू बस्तियों की जननी (अर्थात मक्का) को और जो उसके चारों ओर हैं सतर्क करे। और तू ऐसे एकत्रिकरण के दिन से सतर्क करे जिसमें कोई संदेह नहीं। एक समूह स्वर्ग में होगा तो एक समूह धधकती हुई अग्नि में। 18।

और यदि अल्लाह चाहता तो उन्हें एक ही समुदाय बना देता। परन्तु वह जिसे चाहता है अपनी दया में प्रविष्ट करता है। और जहाँ तक अत्याचारियों का सम्बन्ध है तो उनके लिए न कोई मित्र है और न कोई सहायक। 19।

क्या उन्होंने उसके सिवा मित्र बना रखे हैं? अतः अल्लाह ही है जो सर्वोत्तम मित्र है और वही है जो मुर्दों को जीवित करता है। और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है। 10। (सू 1/2)

और जिस विषय में भी तुम मतभेद करो तो उसका निर्णय अल्लाह ही के हाथ में है। यह है अल्लाह, जो मेरा रब्ब है। उसी पर मैं भरोसा करता हूँ और उसी की ओर मैं झुकता हूँ। 11।

वह आकाशों और धरती को अनस्तित्व से अस्तित्व में लाने वाला है। उसने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोड़े बनाए और चौपायों के भी जोड़े (बनाए)। वह उसमें तुम्हारी बढ़ोत्तरी करता है। उस जैसा कोई नहीं। वह

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا
تَنْذِرُ أُمَّ الْقُرَى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرُ
يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ
وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ⑧

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً
وَلَكِنْ يَدْخُلُ مِنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ
وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُمْ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ⑨

أَمْ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۚ قَالَ اللَّهُ
هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَى وَهُوَ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑩

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ
إِلَى اللَّهِ ۚ ذَلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ
وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ⑪

فَاطِرُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ جَعَلَ لَكُمْ
مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ
أَزْوَاجًا يَذُرُّكُمْ فِيهِ لَيْسَ كَمِثْلِهِ

बहुत सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है ।12।*

आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी के अधीन हैं । वह जीविका को जिसके लिए चाहे वृद्धि करता है और घटा भी देता है। निःसन्देह वह प्रत्येक विषय का भली-भाँति ज्ञान रखने वाला है ।13।

उसने तुम्हारे लिए धर्म में से वही आदेश दिये हैं जिनका उसने नूह को भी ताकीद के साथ आदेश दिया था, और जो हमने तेरी ओर वहइ किया है और जिसका हमने इब्राहीम और मूसा और ईसा को भी ताकीदी आदेश दिया था, वह यही था कि तुम धर्म को दृढ़ता पूर्वक स्थापित करो और इस विषय में कोई मतभेद न करो । मुश्रिकों पर वह बात बहुत भारी है जिसकी ओर तू उन्हें बुलाता है । अल्लाह जिसे चाहता है अपने लिए चुन लेता है और अपनी ओर उसे हिदायत देता है जो (उसकी ओर) झुकता है ।14।

और जबकि उनके पास ज्ञान आ चुका था उन्होंने एक दूसरे के विरुद्ध विद्रोह करते हुए मतभेद किया । और यदि तेरे

شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وَصَّى بِهِ نُوحًا
وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ
إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى وَعِيسَى أَنْ أَقِيمُوا
الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ ۚ كَبُرَ عَلَى
الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ ۚ اللَّهُ
يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ
مَنْ يُنِيبُ ۝

وَمَا تَفَرَّقُوا إِلَّا مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ
الْعِلْمُ بِغَيَابَتِهِمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ

- * हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में लोगों को पशुओं के जोड़ा-जोड़ा होने का तो ज्ञान था और वृक्षों में से कुछ के जोड़ा-जोड़ा होने का भी ज्ञान था । परन्तु यह ज्ञान नहीं था कि हर चीज़ को अल्लाह तआला ने जोड़ा-जोड़ा उत्पन्न किया है । इस युग में तो यह प्रमाणित हो चुका है कि पदार्थ का प्रत्येक कण तक जोड़ा-जोड़ा है । दूसरे, इस आयत में मनुष्य को उगाने का वर्णन है, जिससे प्रतीत होता है कि जीवन का आरम्भ वनस्पति से हुआ था और यह बिल्कुल ठीक है । यहाँ अरबी शब्द ज़रअ (बढ़ोत्तरी करना) प्रयोग किया गया है । दूसरी आयतों में यह विषय अधिक विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है । उदाहरणतः हम ने तुम्हें धरती से वनस्पति की भाँति उगाया। (सूर: नूह : 18) अर्थात् मनुष्य की अभिवृद्धि वनस्पति की भाँति हुई है ।

रब्ब का यह आदेश निश्चित अवधि तक के लिए जारी न हो चुका होता तो अवश्य उनके बीच निर्णय कर दिया जा चुका होता । और निःसन्देह वे लोग जिन्हें उनके पश्चात पुस्तक का उत्तराधिकारी बनाया गया, उसके बारे में एक बेचैन कर देने वाली शंका में पड़े हुए हैं 115।

अतः इसी आधार पर चाहिए कि तू उन्हें (अल्लाह की ओर) बुलाए । और दृढ़ता पूर्वक अपने सिद्धान्त पर डट जा जैसे तुझे आदेश दिया जाता है और उनकी इच्छाओं का अनुसरण न कर । और कह दे कि मैं उस पर ईमान ला चुका हूँ जो पुस्तक ही की बातों में से अल्लाह ने उतारा है । और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं तुम्हारे बीच न्यायपूर्ण (व्यवहार) करूँ । अल्लाह ही हमारा रब्ब और तुम्हारा भी रब्ब है । हमारे लिए हमारे कर्म और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म हैं । हमारे और तुम्हारे बीच कोई झगड़ा (काम) नहीं (आ सकता) । अल्लाह हमें इकट्ठा करेगा और उसी की ओर लौट कर जाना है 116।

और वे लोग जो अल्लाह के बारे में इसके बाद भी झगड़ते हैं कि उसे स्वीकार कर लिया गया है । उनका तर्क उनके रब्ब के समक्ष झूठा है । और उन पर ही प्रकोप होगा और उनके लिए कठोर अज़ाब (निश्चित) है 117।

مَنْ رَّبِّكَ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى تَقْضَىٰ
بَيْنَهُمْ ۖ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكُتُبَ مِنْ
بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّمَّنْهُ مُرِيبٌ ۝

فَلِذَلِكَ فَادْعُ ۖ وَاسْتَقِمْ كَمَا أُمِرْتَ ۖ
وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَهُمْ ۖ وَقُلْ آمَنْتُ بِمَا
أَنْزَلَ اللَّهُ مِنْ كِتَابٍ ۖ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ
بَيْنَكُمْ ۖ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۖ لَنَا أَعْمَالُنَا
وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۖ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكُمْ ۖ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۖ وَإِلَيْهِ
الْمَصِيرُ ۝

وَالَّذِينَ يُحَاجُّونَ فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ
مَا اسْتُجِيبَ لَهُ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ
رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيدٌ ۝

अल्लाह वह है जिसने सत्य के साथ पुस्तक और तुला को उतारा । और तुझे क्या मालूम कि सम्भवतः वह घड़ी नितक हो ।118।

उसके शीघ्र प्रकट होने की मांग वही करते हैं जो उस पर ईमान नहीं लाते । और वे लोग जो ईमान लाए उससे डरते हैं और जानते हैं कि वह सत्य है । सावधान ! निःसन्देह वे जो निश्चित घड़ी के विषय में झगड़ते हैं परले दर्जे की पथभ्रष्टता में पड़े हैं ।119।

अल्लाह अपने भक्तों के साथ नम्रता पूर्ण व्यवहार करने वाला है । वह जिसे चाहता है जीविका प्रदान करता है । और वही बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है ।20। (रकू - 2/3)

जो परलोक की खेती पसन्द करता है, हम उसके लिए उस की खेती में बढ़ोत्तरी कर देते हैं । और जो संसार की खेती चाहता है हम उसी में से उसे इस प्रकार देते हैं कि परलोक में उसके लिए कोई भाग नहीं होगा ।21।

क्या उनके समर्थक ऐसे उपास्य हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसे धार्मिक आदेश जारी किए जिनका अल्लाह ने कोई आदेश नहीं दिया था ? और यदि निर्णय की विधि का आदेश मौजूद न होता तो उनके बीच मामला तुरन्त निपटा दिया जाता । और निःसन्देह अत्याचारियों के लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।22।

اللَّهُ الَّذِي أَنْزَلَ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ وَالْمِيزَانَ ۚ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيبٌ ﴿١٨﴾

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِهَا ۚ وَالَّذِينَ آمَنُوا مُشْفِقُونَ مِنْهَا ۚ وَيَعْلَمُونَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۚ أَلَا إِنَّ الَّذِينَ يُمَارُونَ فِي السَّاعَةِ لَفِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ﴿١٩﴾

اللَّهُ لَطِيفٌ بِعِبَادِهِ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ﴿٢٠﴾

مَنْ كَانَ يَرْيِدُ حَرْثَ الْآخِرَةِ نَزِدْ لَهُ فِي حَرْثِهِ ۚ وَمَنْ كَانَ يَرْيِدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهِ مِنْهَا وَمَا لَهُ فِي الْآخِرَةِ مِنْ لَشْيَبٍ ﴿٢١﴾

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ شَرَعُوا لَهُمْ مِنَ الدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنْ بِهِ اللَّهُ ۚ وَلَوْ لَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَفُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٢٢﴾

तू अत्याचारियों को उस कमाई के परिणाम स्वरूप डरता हुआ देखेगा जो उन्होंने कमाया । हालांकि वह तो उनके साथ होकर रहने वाला है । और जो लोग ईमान लाए और नेक कर्म किए वे स्वर्गों के बागों में होंगे । उन्हें उनके रब्ब के समक्ष वह (कुछ) मिलेगा जो वे चाहा करते थे । यही है वह जो महान कृपा है । 123।

यह वही है जिसका अल्लाह अपने उन भक्तों को शुभ-समाचार देता रहा है, जो ईमान लाए और नेक कर्म किए । तू कह दे, मैं इस पर तुमसे कोई प्रतिफल नहीं मांगता, हाँ तुम परस्पर निकट सम्बन्धियों की भाँति प्रेम उत्पन्न करो । और जो किसी (विलुप्त) नेकी को उजागर करता है, हम उसमें उसके लिए और अधिक सुन्दरता उत्पन्न कर देंगे । निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बहुत ही कृतज्ञता स्वीकार करने वाला है । 124।

क्या वे कहते हैं कि उसने अल्लाह पर झूठ घड़ लिया है ? अतः यदि अल्लाह चाहता तो तेरे दिल पर मुहर लगा देता । और मिथ्या को अल्लाह मिटा दिया करता है । और सत्य को अपने वाक्यों से सिद्ध कर देता है । निःसन्देह वह सीनों की बातों को खूब जानने वाला है । 125।

और वही है जो अपने भक्तों की ओर से प्रायश्चित्त स्वीकार करता है और

تَرَى الظَّالِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا
وَهُوَ وَاَقْعُ بِهِمْ ۖ وَالَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّٰلِحٰتِ فِي رَوْضَةٍ اَلْبَتَّ ۚ لَهُمْ مَا
يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ
الْكَبِيْرُ ۝۲۳

ذٰلِكَ الَّذِي يَبَشِّرُ اللّٰهَ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
وَعَمِلُوا الصَّٰلِحٰتِ ۚ قُلْ لَا اَسْأَلُكُمْ
عَلَيْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ۚ وَمَنْ
يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُ فِيْهَا حُسْنًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝۲۴

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ۚ
فَاِنْ يَّشَآءِ اللّٰهُ يَخْتَمْ عَلٰى قَلْبِكَ ۚ وَيَمْحُ
اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقِّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهِ ۚ
اِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذٰتِ الصُّوْرِ ۝۲۵

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ

बुराईयों को क्षमा करता है। और (उसे) जानता है जो तुम करते हो। 126।

और वह उनकी दुआएँ स्वीकार करता है जो ईमान लाए और नेक कर्म किए। और अपनी कृपा से उन्हें बढ़ा देता है। जबकि काफ़िरों के लिए तो अत्यन्त कठोर अज़ाब (निश्चित) है। 127।

और यदि अल्लाह अपने भक्तों के लिए जीविका को विस्तृत कर देता तो वे धरती में अवश्य विद्रोह पूर्ण व्यवहार करते। परन्तु वह एक अनुमान के अनुसार जो चाहता है उतारता है। निःसन्देह वह अपने भक्तों के बारे में सदा अवगत (और उन पर) गहन दृष्टि रखने वाला है। 128।*

और वही है जो वर्षा को उनके निराश हो जाने के पश्चात उतारता है। और अपनी दया को फैला देता है। और वही है जो कार्यसाधक (और) स्तुति योग्य है। 129।

और आकाशों और धरती की उत्पत्ति और जो उसने उन दोनों के बीच चलने फिरने वाले प्राणी फैला दिए हैं, (ये) उसके चिह्नों में से हैं। और वह जब चाहेगा उन्हें इकट्ठा करने पर पूरा समर्थ है। 130। (रुकू 3/4)

وَيَعْفُوا عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿١٢٦﴾

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُمْ مِنْ فَضْلِهِ ۚ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ ﴿١٢٧﴾

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَعَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَكِنْ يُنْزِلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ ﴿١٢٨﴾

وَهُوَ الَّذِي يُنْزِلُ الْغَيْثَ مِنْ بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهُ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ ﴿١٢٩﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا مِنْ دَابَّةٍ ۚ وَهُوَ عَلَىٰ جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَاءُ قَدِيرٌ ﴿١٣٠﴾

* यदि अल्लाह चाहता तो जीविका में बढ़ोत्तरी पैदा कर देता और कोई निर्धन नहीं रहता। परन्तु जीविका का विभाजन कर के कुछ को अधिक और कुछ को कम प्रदान कर दिया। ये दोनों ही स्थितियाँ उनके लिए परीक्षा का कारण हैं। कुछ भक्त जीविका की अधिकता के कारण भटक जाते हैं और कुछ दरिद्रता के कारण। जैसा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कादल फ़क़्रु ऐं यकू न कुफ़्रन् अर्थात् संभव है कि दरिद्रता कुफ़्र तक पहुँचा दे। अतः इसमें साम्यवादी व्यवस्था की ओर भी संकेत मिलता है कि दरिद्रता अन्ततः अल्लाह तआला के इनकार का कारण बनेगी।

और तुम्हें जो विपत्ति पहुँचती है तो वह तुम्हारे अपने हाथों की कमाई के कारण से है। जबकि वह (अल्लाह) बहुत सी बातों को क्षमा करता है। 131।

और तुम (अल्लाह को) धरती में असमर्थ करने वाले नहीं बन सकते। और अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई संरक्षक और सहायक नहीं। 132।

और उसके चिह्नों में से समुद्र में चलने वाली पर्वतों जैसी (ऊँची) नौकाएँ हैं। 133।

यदि वह चाहे तो हवा को स्थिर कर दे। फिर वे उस (समुद्र) के तल पर खड़ी की खड़ी रह जाएँ। निःसन्देह इस बात में प्रत्येक धैर्यवान और बहुत कृतज्ञता अपनाने वाले के लिए चिह्न हैं। 134।*

अथवा उन (नौकाओं) को उन के (सवारों) की कमाई के कारण जो वे करते रहे, विनष्ट कर दे। और बहुत सी बातों को वह क्षमा करता है। 135।

और ताकि वे लोग जान लें जो हमारी आयतों के बारे में झगड़ते हैं (कि) उनके लिए भागने का कोई स्थान नहीं। 136।

अतः जो भी तुम्हें दिया गया है वह सांसारिक जीवन का अस्थायी सामान है। और जो अल्लाह के पास है वह अच्छा

وَمَا أَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ
أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ﴿٣١﴾

وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ وَمَا
لَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿٣٢﴾

وَمِنْ آيَاتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ﴿٣٣﴾

إِنْ يَشَاءُ يُسْكِنِ الرِّيحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ
عَلَى ظَهْرِهِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ
شَكُورٍ ﴿٣٤﴾

أَوْ يُوقِفْهُمْ بِمَا كَسَبُوا وَيَعْفُ عَنْ
كَثِيرٍ ﴿٣٥﴾

وَيَعْلَمُ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِنَا مَا لَهُمْ
مِّنْ مَّحِيصٍ ﴿٣٦﴾

فَمَا أَوْتِيتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ لِلَّذِينَ

* आयत सं. 33-34 : यहाँ अल्लाह तआला के चिह्नों में से ऐसे बड़े-बड़े समुद्री जहाजों का उल्लेख है जो पर्वतों के समान ऊँचे होंगे। स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में तो साधारण पाल वाली नौकाएँ चला करती थीं। इस लिए अवश्य यह आगे के लिए भविष्यवाणी थी जो आज के युग में पूरी हो चुकी है।

और उन लोगों के लिए सब से अधिक बाकी रहने वाला है जो ईमान लाए और अपने रब्ब पर भरोसा करते हैं। 137।

और जो बड़े पापों और अश्लीलता की बातों से बचते हैं और जब वे क्रोधित हों तो क्षमा करते हैं। 138।

और जो अपने रब्ब के आदेश को करते हैं। और नमाज़ को क़ायम करते हैं और उनका मामला परस्पर विचार-विमर्श से तय होता है। और (वे) उसमें से जो हमने उन्हें प्रदान किया, खर्च करते हैं। 139।

और वे, जिन पर जब अत्याचार होता है तो वे प्रतिशोध लेते हैं। 140।

और बुराई का बदला, की जाने वाली बुराई के समान होता है। अतः जो कोई क्षमा करे, इस शर्त के साथ कि वह सुधार करने वाला हो तो उसका प्रतिफल अल्लाह पर है। निःसन्देह वह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता। 141।

और जो कोई अपने ऊपर अत्याचार होने के पश्चात प्रतिशोध लेता है तो यही वे लोग हैं जिन पर कोई आरोप नहीं। 142।

आरोप तो केवल उन पर है जो लोगों पर अत्याचार करते हैं और अनुचित ढंग से धरती में उद्गण्डता पूर्वक काम लेते हैं। यही वे लोग हैं जिनके लिए पीड़ादायक अज़ाब (निश्चित) है। 143।

أَمْنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٣٧﴾

وَالَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ
وَالْفَوَاحِشَ وَإِذَا مَا غَضِبُوا هُمْ
يَغْفِرُونَ ﴿٣٨﴾

وَالَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ وَأَقَامُوا
الصَّلَاةَ وَأَمْرُهُمْ شُورَىٰ بَيْنَهُمْ
وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ﴿٣٩﴾

وَالَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُونَ ﴿٤٠﴾
وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا
وَأَصْلَحَ فَاجْزِهِ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ
الظَّالِمِينَ ﴿٤١﴾

وَلَمَنْ اتَّصَرَ بِعَدُوِّ ظَلَمِهِ فَأُولَٰئِكَ
مَاعْلَيْهِمْ مِنْ سَبِيلٍ ﴿٤٢﴾

إِنَّمَا السَّبِيلُ عَلَى الَّذِينَ يَظْلِمُونَ النَّاسَ
وَيَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۚ
أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٤٣﴾

और जो धैर्य धरे और क्षमा कर दे तो निःसन्देह यह साहस पूर्ण बातों में से है 144। (रुकू 4)

और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसके लिए इसके बाद कोई सहायक नहीं। और तू अत्याचारियों को देखेगा कि जब वे अज़ाब का सामना करेंगे तो कहेंगे कि क्या (इसके) टाले जाने का कोई रास्ता है ? 145।

और तू उन्हें देखेगा कि वे उस (अज़ाब) के सामने अपमान के कारण अत्यन्त दयनीय अवस्था में पेश किये जाएंगे। वे नीची नज़रों से (उसे) देख रहे होंगे। और वे लोग जो ईमान लाए, कहेंगे कि निःसन्देह घाटा पाने वाले तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने परिवार को क़यामत के दिन घाटे में डाला। सावधान ! निःसन्देह अत्याचार करने वाले एक स्थायी अज़ाब में पड़े होंगे 146। और उनके कोई मित्र नहीं होंगे जो अल्लाह के सिवा उनकी सहायता करें। और जिसे अल्लाह पथभ्रष्ट ठहरा दे तो उसके लिए कोई रास्ता नहीं रहेगा 147।

अपने रब्ब के आदेश को स्वीकार करो। इससे पूर्व कि वह दिन आ जाए जिसका टलना अल्लाह की ओर से किसी भी प्रकार सम्भव न होगा। तुम्हारे लिए उस दिन कोई शरण नहीं है। और तुम्हारे लिए इनकार का कोई स्थान नहीं होगा 148।

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ إِنَّ ذَلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ ٤٤

وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ وَلِيٍّ مِنْ بَعْدِهِ ٤٥ وَتَرَى الظَّالِمِينَ لَمَّا رَأَوْا الْعَذَابَ يَقُولُونَ هَلْ إِلَىٰ مَرَدٍّ مِنْ سَبِيلٍ ٤٦

وَتَرَاهُمْ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا خَشِيعِينَ مِنَ الدُّلِّ يَنْظُرُونَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ٤٧ وَقَالَ الَّذِينَ آمَنُوا إِنَّ الْخُسْرَيْنَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيَهُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ٤٨ أَلَا إِنَّ الظَّالِمِينَ فِي عَذَابٍ مُّقِيمٍ ٤٩

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِنْ أَوْلِيَاءَ يَنْصُرُونَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ ٥٠ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ سَبِيلٍ ٥١

اسْتَجِيبُوا لِلرَّبِّ كُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ٥٢ مَا لَكُمْ مِنْ مَلْجَا يَوْمَذِي وَمَا لَكُمْ مِنْ نَكِيرٍ ٥٣

अतः यदि वे मुंह फेर लें तो हमने तुझे उनपर निरीक्षक बना कर नहीं भेजा । संदेश पहुँचाने के अतिरिक्त तेरा और कोई कर्तव्य नहीं । और निःसन्देह जब हम अपनी ओर से मनुष्य को कोई दया चखाते हैं तो वह इससे प्रसन्न हो जाता है । और यदि उन्हें स्वयं अपने हाथों की भेजी हुई (कमाई के कारण) कोई बुराई पहुँचती है तो निःसन्देह मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न सिद्ध होता है । 49।

आकाशों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही का है । वह जो चाहता है पैदा करता है । जिसे चाहता है लड़कियाँ प्रदान करता है और जिसे चाहता है लड़के प्रदान करता है । 50।

या कभी उन्हें परस्पर मिला-जुला देता है । कुछ नर और कुछ मादा । इसी प्रकार जिसे चाहे उसे बाँझ बना देता है । निःसन्देह वह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) स्थायी सामर्थ्य रखने वाला है । 51।

और किसी मनुष्य के लिए यह संभव नहीं कि अल्लाह उससे वार्तालाप करे परन्तु वहइ के माध्यम से । अथवा पर्दे के पीछे से अथवा कोई संदेशवाहक भेजे जो उसके आदेश से उसकी इच्छानुसार वहइ करे । निःसन्देह वह बहुत ऊँची शान वाला (और) परम विवेकशील है । 52।

और इसी प्रकार हमने तेरी ओर अपने आदेश से एक जीवनदायिनी वाणी वहइ किया । तू जानता न था कि पुस्तक क्या

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ
حَفِظًا ۖ إِنَّ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاغُ ۖ وَإِنَّا إِذَا
أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَفَرِحَ بِهَا ۚ وَإِنْ
تُصِيبُهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ
الْإِنْسَانَ كَفُورٌ ۝٤٩

لِلَّهِ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ يَخْلُقُ
مَا يَشَاءُ ۖ يَهَبُ لِمَنْ يَشَاءُ إِنَاءً ۖ وَيَهَبُ
لِمَنْ يَشَاءُ الذُّكُورَ ۝٥٠

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَاءً ۖ وَيَجْعَلُ
مَنْ يَشَاءُ عَاقِبَةً ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝٥١

وَمَا كَانَ لِشَيْءٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا
أَوْ مِنْ وَرَائِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا
فَيُوحِي بِلَاذِنِهِ مَا يَشَاءُ ۖ إِنَّهُ عَلِيمٌ
حَكِيمٌ ۝٥٢

وَكَذَلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ
أَمْرِنَا ۖ مَا كُنْتَ تَدْرِي مَا الْكِتَابُ وَلَا

है और ईमान क्या है परन्तु हम ही ने उसे नूर बनाया जिस के द्वारा हम अपने भक्तों में से जिसे चाहते हैं हिदायत देते हैं । और निःसन्देह तू सन्मार्ग की ओर चलाता है ।53।

उस अल्लाह के मार्ग की ओर जिसका वह सब कुछ है जो आकाशों में है और जो धरती में है । सावधान ! अल्लाह ही की ओर सब मामले लौटते हैं ।54।

(रुकू 5/6)

الْإِيمَانُ وَلَكِنْ جَعَلْنَاهُ نُورًا نَهْدِي بِهِ
مَنْ نَشَاءُ مِنْ عِبَادِنَا وَإِنَّكَ لَتَهْدِي
إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ٥٣

صِرَاطِ اللَّهِ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمُوتِ
وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ أَلَا إِلَى اللَّهِ تَصِيرُ
الْأُمُورُ ٥٤

ع

43- सूरः अज़-जुख़रुफ़

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 90 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ ही में अरबी शब्द **उम्म** (अर्थात जननी, मूल) का बार-बार उल्लेख किया गया है । पिछली सूरः में **उम्मुल-कुरा** अर्थात बस्तियों की जननी का वर्णन था कि मक्का सब बस्तियों की जननी है और इस सूरः में **उम्मुल-किताब** अर्थात सूरः अल-फ़ातिहः का वर्णन है जो इस परम पवित्र वाणी की जननी (मूल) का स्थान रखती है । अर्थात सारे कुरआन के विषयवस्तु इसमें इस प्रकार समेट दिए गए हैं जैसे माँ के गर्भ में इस बात की व्यवस्था होती है कि मनुष्य को जन्म से पूर्व उन समस्त गुणों से सुसज्जित कर दिया जाए जो उसके लिए निश्चित हैं ।

फिर कहा गया कि जब तुम समुद्री पथ से अथवा धरती के पथ से यात्रा करते हो, तो याद कर लिया करो कि अल्लाह ही है जिसने समुद्र में चलने वाली नौकाओं को अथवा धरती में चलने वाले पशुओं को, जिन पर तुम सवारी करते हो, तुम्हारे लिए सेवाधीन कर दिया है । और तुम में से बहुत से ऐसे होंगे जो दुर्घटनाओं का शिकार हो कर उन गंतव्य स्थल को नहीं पा सकेंगे जिनके लिए वे रवाना हुए थे । परन्तु याद रखना कि अन्तिम गंतव्य स्थल वही है जिस में तुम अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने वाले हो ।

इस सूरः की प्रारम्भिक आयतें तो अहले-किताब का वर्णन करती हैं और बाद में आने वाली आयतें मुश्रिकों का । अतएव उसके पश्चात वे नबी जो विशेषकर मुश्रिक जातियों की ओर भेजे गये थे, उनका और उनके इनकार के परिणामों का वर्णन है जो इनकार करने वालों को भुगतने पड़े ।

अल्लाह तआला इससे पूर्व समस्त मानवजाति को एक हाथ पर एकत्रित करने का वर्णन कर रहा है । और कहता है कि यदि हमने ऐसा करना होता तो संसार के मोह में पड़े हुए इन लोगों को एकत्रित करने का केवल एक उपाय यह हो सकता था कि उनके घरों को सोने चाँदी और दूसरी नेमतों से भर देते । परन्तु यह तो केवल एक ऐसी भौतिक सुख-सुविधा का साधन होता जिसकी कोई भी वास्तविकता नहीं है । और केवल संसार की कुछ दिनों की अस्थायी धन-सम्पत्ति उनको मिलती । परन्तु परलोक तो केवल मुत्तकियों ही को प्राप्त हुआ करता है ।

इस स्थान पर हिदायत पर लोगों के एकत्रित न होने का एक कारण यह भी वर्णन किया गया कि उनके साथी नास्तिक होते हैं । और उनके प्रभाव से वे भी नास्तिकता का शिकार हो जाते हैं । परन्तु क़यामत के दिन उनमें से प्रत्येक व्यक्ति जिसके बुरे साथी ने उस पर दुष्प्रभाव डाला हो, अपने उस बुरे साथी को सम्बोधित करते हुए इस खेद को

प्रकट करेगा कि काश ! मेरे और तुम्हारे बीच पूर्व और पश्चिम के समान दूरी होती तो मैं इस बुरे अन्त को न पहुँचता ।

इस सूरः में एक और बहुत महत्वपूर्ण आयत हज़रत मसीह अलै. के उतरने की प्रक्रिया पर से पर्दा उठा रही है, जिसमें वर्णन किया गया है कि हज़रत मसीह तो एक उदाहरण स्वरूप थे । मुश्रिकों के सामने जब हज़रत मसीह अलै. का वर्णन किया जाता था तो वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित होकर यह कहते थे कि यदि ग़ैरुल्लाह (अल्लाह के सिवा किसी अन्य) को ही उपास्य के रूप में स्वीकार करना है तो दूसरी जाति के ग़ैरुल्लाह को स्वीकार करने के बदले अपनी जाति के ही ग़ैरुल्लाह को क्यों स्वीकार नहीं कर लेते । वे इस बात को नहीं समझते थे कि मसीह अल्लाह नहीं थे बल्कि वह अल्लाह के एक पुरस्कृत भक्त थे । और उनके लिए केवल एक उदाहरण स्वरूप थे, जिनसे बहुत सारी शिक्षा प्राप्त की जा सकती थी ।

फिर इसी सूरः में यह भविष्यवाणी कर दी गई है कि भविष्य में भी उदाहरण के रूप में मसीह उतरेगा जो इस बात का चिह्न होगा कि महान क्रान्ति की घड़ी आ गई है ।

इस सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उस महानता का वर्णन कर दिया गया है कि आप सल्ल. अल्लाह तआला की सबसे बढ़ कर उपासना करने वाले हैं । यदि वास्तव में अल्लाह तआला का कोई पुत्र होता तो आप सल्ल. कदापि उसकी उपासना करने से विमुख न होते । अतः आप सल्ल. का अल्लाह तआला के किसी काल्पनिक पुत्र की उपासना से इनकार करना स्पष्ट रूप से यह प्रमाणित करता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस पूर्ण विश्वास पर अटल थे कि अल्लाह तआला का कोई पुत्र नहीं है ।



سُورَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تِسْعُونَ آيَةً وَسَبْعَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

हमीदुन मजीदुन : स्तुति योग्य, अति गौरवशाली ।2।

खोल कर वर्णन करने वाली पुस्तक की कसम ।3।

निःसन्देह हमने इसे सरल और शुद्ध भाषा सम्पन्न कुरआन बनाया ताकि तुम समझो ।4।

और निःसन्देह यह (कुरआन) मूल पुस्तक में है (और) हमारे निकट अवश्य बहुत ऊँची शान वाला (और) तत्त्वज्ञान पूर्ण है ।5।

क्या हम तुम्हें उपदेश देने से केवल इस लिए रुक जाएँगे कि तुम सीमा से बढ़े हुए लोग हो ? ।6।

और कितने ही नबी हमने पहले लोगों में भेजे थे ।7।

और जो भी नबी उनके पास आता था, उसके साथ वे उपहास किया करते थे ।8।

अतः हमने उनसे भी अधिक पकड़ रखने वालों को नष्ट कर दिया । और पहलों का उदाहरण बीत चुका है ।9।

और तू यदि उनसे पूछे कि कौन है जिसने आकाशों और धरती को पैदा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حَمْدٌ ②

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ③

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ

إِنَّا جَعَلْنَاهُ قُرْءَانًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ④

وَإِنَّهُ فِي أُمِّ الْكِتَابِ لَدَيْنَا لَعَلٌّ ⑤ حَكِيمٌ ⑥

أَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِينَ ⑦

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَبِيِّ فِي الْأَوَّلِينَ ⑧

وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ⑨

فَأَهْلَكْنَا أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَمَضَىٰ مَثَلُ الْأَوَّلِينَ ⑩

وَلَيْسَ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمَوَاتِ

किया ? तो वे अवश्य कहेंगे कि उन्हें पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) सर्वज्ञ (अल्लाह) ने पैदा किया है 110।

जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना बनाया और तुम्हारे लिए उसमें रास्ते बनाए ताकि तुम हिदायत पाओ 111।

और वह जिसने अनुमान के अनुसार आकाश से जल उतारा । फिर उससे हमने एक मृत धरती को जीवित कर दिया । उसी प्रकार तुम निकाले जाओगे 112।

और वह जिसने प्रत्येक प्रकार के जोड़े बनाए और तुम्हारे लिए नाना प्रकार की नौकाएँ और चौपाये बनाए जिन पर तुम सवारी करते हो 113।

ताकि तुम उनकी पीठों पर जम कर बैठ सको । फिर जब तुम उन पर भली-भाँति बैठ जाओ तो अपने रबब की नेमत का बखान करो और कहो, पवित्र है वह जिसने इसे हमारे लिए सेवाधीन किया अन्यथा हम इसे अधीन करने का सामर्थ्य नहीं रखते थे 114।

और निःसन्देह हम अपने रबब की ओर लौट कर जाने वाले हैं 115।

और उन्होंने उसके भक्तों में से कुछ को उसका अंश घोषित कर दिया । निःसन्देह मनुष्य खुला-खुला कृतघ्न है 116। (स्कू 1/7)

क्या वह जो पैदा करता है उसमें से उसने बस पुत्रियाँ ही अपना लीं हैं और तुम्हें पुत्रों के लिए चुन लिया ? 117।

وَالْأَرْضُ لَيَقُولُنَّ خَلَقْنَهُنَّ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ۝

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ ۚ فَأَنشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَيْتًا ۚ كَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ۝

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ۝

لِتَسْتَوُوا عَلَى ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ۝

وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ۝

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ۝

أَمْ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُمْ بِالْبَنِينَ ۝

और जब उनमें से किसी को इस का शुभ-समाचार दिया जाता है जिसे वह रहमान के सम्बन्ध में एक श्रेष्ठ उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करता है तो उसका मुँह काला पड़ जाता है जबकि वह गहरे शोक को सहन करने का प्रयास कर रहा होता है ।118।

और क्या वह जो आभूषणों में पाली जाती हो और वह झगड़े के समय स्पष्ट बात (तक) न कर सके (तुम उसे अल्लाह के भाग में डालते हो ?) ।119।

और उन्होंने फ़रिश्तों को जो रहमान के भक्त हैं स्त्रियाँ (अर्थात् मूर्तियाँ) बना रखा है । क्या वे उनकी उत्पत्ति पर गवाह हैं ? निःसन्देह उनकी गवाही लिखी जाएगी और वे पूछे जाएँगे ।20।

और वे कहते हैं यदि रहमान चाहता तो हम उनकी पूजा न करते । उन्हें इस बात का कुछ भी ज्ञान नहीं, वे तो केवल अटकल-पच्चू से काम लेते हैं ।21।

क्या हमने इससे पहले उन्हें कोई पुस्तक दी थी जिससे वे दृढ़ता पूर्वक चिमटे हुए हैं ? ।22।

बल्कि वे तो कहते हैं कि हमने अपने पूर्वजों को एक मत पर पाया और हम निःसन्देह उन्हीं के पदचिह्नों पर (चल कर) हिदायत पाने वाले हैं ।23।

और इसी प्रकार हमने तुझसे पहले जब भी किसी बस्ती में कोई सतर्ककारी

وَإِذَا بَشَّرَ أَحَدَهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَنِ مَثَلًا ظَلَ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ۝۱۸

أَوْ مَنْ يُنشِئُوا فِي الْحَلِيَِّةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ۝۱۹

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَنِ إِنَّا أَشْهَدُوا خَلْقَهُمْ ۖ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ۝۲۰

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ ۖ مَا لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝۲۱

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ۝۲۲

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّهْتَدُونَ ۝۲۳

وَكَذَلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ

भेजा तो उसके संपन्न लोगों ने कहा कि निःसन्देह हमने अपने पूर्वजों को एक विशेष मत पर पाया । और निःसन्देह हम उन्हीं के पदचिह्नों पर चलने वाले हैं ।24।

उसने कहा, क्या तब भी कि मैं उससे बेहतर चीज़ ले आऊँ जिस पर तुमने अपने पूर्वजों को पाया ? उन्होंने कहा, निःसन्देह हम उन बातों का इनकार करते हैं जिनके साथ तुम भेजे गए हो ।25।

तब हमने उनसे प्रतिशोध लिया । अतः देख कि झुठलाने वालों का क्या परिणाम निकला ? ।26। (रकू $\frac{2}{8}$)

और (याद करो) जब इब्राहीम ने अपने पिता से और अपनी जाति से कहा कि निःसन्देह मैं उससे बहुत विरक्त हूँ जिसकी तुम उपासना करते हो ।27।

परन्तु वह जिसने मुझे पैदा किया, अतः वही है जो मुझे अवश्य हिदायत देगा ।28। और उसने इस (बात) को उसके बाद आने वाली पीढ़ियों में एक बाक़ी रहने वाला वृहद् चिह्न बना दिया ताकि वे लौट आयें ।29।

वास्तविकता यह है कि मैंने उनको और उनके पूर्वजों को अस्थायी सुविधाएँ दीं, यहाँ तक कि उनके पास सत्य और खोल-खोल कर वर्णन करने वाला रसूल आ गया ।30।

और जब अन्ततः उनके पास सत्य आ गया तो उन्होंने कहा, यह जादू है और

مَنْ يَذَّيَّرْ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا
آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ
مُقْتَدُونَ ﴿٢٤﴾

قُلْ أَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِأَهْدَىٰ مِمَّا وَجَدْتُمْ
عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُمْ
بِهِ كَافِرُونَ ﴿٢٥﴾

فَأَتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَنْظُرْ كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٦﴾

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي
بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿٢٧﴾

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ ﴿٢٨﴾

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿٢٩﴾

بَلْ مَثَعْتَ هَؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ
جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُّبِينٌ ﴿٣٠﴾

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَذَا سِحْرٌ

निःसन्देह हम इसका इन्कार करने वाले हैं 131।

और उन्होंने कहा, क्यों न यह कुरआन दोनों प्रसिद्ध बस्तियों के किसी बड़े व्यक्ति पर उतारा गया ? 132।

क्या वे हैं जो तेरे रब्ब की कृपा को विभाजित करेंगे ? हम ही हैं जिस ने उनके रोज़गार के सामान उनके बीच इस सांसारिक जीवन में बाँटे हैं । और उनमें से कुछ लोगों को कुछ दूसरों पर हमने पद के अनुसार श्रेष्ठता प्रदान की है ताकि उनमें से कुछ, कुछ को वश में कर लें । और तेरे रब्ब की कृपा उससे उत्तम है जो वे इकट्ठा करते हैं 133।

और यदि यह सम्भावना न होती कि सब लोग एक ही मत के हो जाएँगे तो हम अवश्य उनके लिए, जो रहमान (अल्लाह) का इन्कार करते हैं, उनके घरों की छतों को चाँदी का बना देते और (इसी प्रकार) सीढ़ियों को भी, जिन पर वे चढ़ते हैं 134।

और उनके घरों के द्वारों को भी और उन आसनों को भी (चाँदी के बना देते) जिन पर वे टेक लगाते हैं 135।

और ठाठ-बाट प्रदान करते । परन्तु यह सब कुछ तो निश्चित रूप से केवल सांसारिक जीवन का सामान है । और परलोक तेरे रब्ब के निकट मुत्तकियों के लिए होगा 136। (रुकू- $\frac{3}{9}$)

और जो रहमान के स्मरण से विमुख हो हम उसके लिए एक शैतान नियुक्त कर

وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ ﴿٣١﴾

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَذَا الْقُرْآنُ عَلَى رَجُلٍ
مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ ﴿٣٢﴾

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۚ نَحْنُ
قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ
الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ
دَرَجَاتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُم بَعْضًا سَخِرِيًّا ۖ
وَرَحِمْتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ﴿٣٣﴾

وَلَوْلَا أَن يَكُونَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً
لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِالرَّحْمَنِ لِيُؤْتِيَهُمْ
سُقْفًا مِّنْ فِصَّةٍ وَ مَعَارِجَ عَلَيْهَا
يُطْهَرُونَ ﴿٣٤﴾

وَلِيُؤْتِيَهُمْ آبَوابًا وَ سُرُرًا عَلَيْهَا
يَتَّكِنُونَ ﴿٣٥﴾

وَزُخْرَفًا ۚ وَإِنَّ كُلَّ ذَلِكَ لَمَّا مَتَاعُ
الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَالْآخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ
لِلْمُتَّقِينَ ﴿٣٦﴾

وَمَنْ يَعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمَنِ نُقَيِّضْ لَهُ

देते हैं । अतः वह उसका साथी बन जाता है । 137।

और निःसन्देह वे उन्हें सन्मार्ग से भटका देते हैं जबकि वे समझ रहे होते हैं कि वे हिदायत पा चुके हैं । 138।

यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आएगा तो (अपने साथी को सम्बोधित करते हुए) कहेगा काश ! मेरे और तेरे बीच पूर्व और पश्चिम के समान दूरी होती । अतः वह क्या ही बुरा साथी सिद्ध होगा । 139।

और आज तुम्हें जबकि तुम अत्याचार कर चुके हो, यह बात कुछ लाभ नहीं देगी । क्योंकि तुम सब अज़ाब में साझीदार हो । 140।

अतः क्या तू बहरों को सुना सकता है अथवा अंधों को राह दिखा सकता है और उसे भी जो खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ा हो ? । 141।

अतः यदि हम तुझे ले भी जाएँ तो उनसे हम अवश्य प्रतिशोध लेने वाले हैं । 142।

अथवा तुझे अवश्य वह दिखा देंगे जिसका हम उनसे वादा कर चुके हैं ।

अतः निःसन्देह हम उन पर पूर्णरूप से सामर्थ्य रखते हैं । 143।

अतः जो कुछ तेरी ओर वहड़ किया जाता है उसे दृढ़ता पूर्वक पकड़ ले ।

निःसन्देह तू सीधे रास्ते पर है । 144।

और निश्चित रूप से यह तेरे लिए और तेरी जाति के लिए भी एक महान

شَيْطَانًا فَهُوَ لَهُ قَرِينٌ ۝٣٧

وَأَنَّهُمْ لَيَصْدُونَهُمْ عَنِ السَّبِيلِ
وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُونَ ۝٣٨

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَنَا قَالَ لَئِيتَ بَيْنِي وَبَيْنَكَ
بَعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَيَنسُ الْقَرِينُ ۝٣٩

وَلَنْ يَنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذْ ظَلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِي
الْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ ۝٤٠

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْى
وَمَنْ كَانَ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝٤١

فَإِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُمْ
مُنتَقِمُونَ ۝٤٢

أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِمْ
مُقْتَدِرُونَ ۝٤٣

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ ۚ إِنَّكَ
عَلَىٰ صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝٤٤

وَأَنَّهُ لَذِكْرُكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ

अनुस्मरण है और तुम अवश्य पूछे जाओगे ।45।

और उनसे पूछ जिन्हें हमने तुझसे पहले अपने रसूल बनाकर भेजा कि क्या हमने रहमान के सिवा कोई उपास्य बनाए थे जिनकी उपासना की जाती थी ? ।46।

(रुकू 4/10)

और निःसन्देह हमने मूसा को फिरऔन और उसके सरदारों की ओर अपने चिह्नों के साथ भेजा । अतः उसने कहा, निःसन्देह मैं समस्त लोकों के रब्ब का रसूल हूँ ।47।

अतः जब वह उनके पास हमारे चिह्नों को लेकर आया तो वे झट-पट उनकी खिल्ली उड़ाने लगे ।48।

और हम उन्हें जो भी (स्पष्ट) चिह्न दिखाते थे वह अपने जैसे पहले चिह्न से बढ़ कर होता था । और हमने उन्हें अज़ाब के द्वारा पकड़ा ताकि वे लौट आयें ।49।

और उन्होंने कहा, हे जादूगर ! हमारे लिए अपने रब्ब से वह माँग जिसका उसने तुझ से वादा कर रखा है । निःसन्देह हम हिदायत पाने वाले बन जाएंगे ।50।

अतः जब हमने उनसे अज़ाब को दूर कर दिया तो तुरन्त वे वचन-भंग करने लगे ।51।

और फिरऔन ने अपनी जाति में घोषणा की (और) कहा, हे मेरी जाति ! क्या मिस्र देश और ये सब नहरें भी जो मेरे

تَسْأَلُونَ ﴿٤٥﴾

وَسَأَلْنَا مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مَنْ رُسُلِنَا
أَجَعَلْنَا مِنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِلَهًا
يُعْبَدُونَ ﴿٤٦﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ
فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ
رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٤٧﴾

فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِآيَاتِنَا إِذَا هُمْ مِنْهَا
يَصْحَكُونَ ﴿٤٨﴾

وَمَا نُرِيهِمْ مِنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ
أَحْتِهَا ۖ وَآخَذْنَاهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُونَ ﴿٤٩﴾

وَقَالُوا يَا أَيُّهُ الشَّجَرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا
عَهِدَ عِنْدَكَ ۖ إِنَّا لَمُهْتَدُونَ ﴿٥٠﴾

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ
يَنْكُثُونَ ﴿٥١﴾

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يُقَوْمُ
أَلَيْسَ لِي مُلْكٌ مِصْرَ وَهَذِهِ الْأَنْهَارُ

अधीन बहती हैं मेरी नहीं ? अतः क्या तुम ज्ञान प्राप्त नहीं करते ? 152।

वास्तविकता यह है कि मैं उस व्यक्ति से बेहतर हूँ जो बिल्कुल तुच्छ है । और विचार की अभिव्यक्ति का भी सामर्थ्य नहीं रखता । 153।

अतः क्यों उस पर सोने के कंगन नहीं उतारे गए अथवा उसके साथ समूहबद्ध रूप में फ़रिश्ते नहीं आए ? 154।

अतः उसने अपनी जाति को कोई महत्व नहीं दिया और वे उसका आज्ञापालन करने लगे । निःसन्देह वे दुराचारी लोग थे । 155।

अतः जब उन्होंने हमें क्रोध दिलाया हमने उनसे प्रतिशोध लिया । और उन सबको (दल-बल सहित) डुबो दिया । 156।

अतः हमने उन्हें अतीत की कहानी और बाद में आने वालों के लिए शिक्षा का साधन बना दिया । 157। (रूकू 5/11)

और जब मरियम के पुत्र को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया जाता है तो सहसा तेरी जाति इस पर शोर मचाने लगती है । 158।

और वे कहते हैं : क्या हमारे उपास्य उत्तम हैं अथवा वह ? वे तुझ से यह बात केवल झगड़े के उद्देश्य से करते हैं बल्कि वे अत्यन्त झगड़ालू लोग हैं । 159।

वह तो केवल एक भक्त था जिस को हमने पुरस्कृत किया और उसे बनी-

تَجَرِي مِنْ تَحْتِي ۚ أَفَلَا تُبْصِرُونَ ۝

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مِثْلُ وَلَا يَكَادُ يُبَيِّنُ ۝

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ
أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ۝

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا
قَوْمًا فَاسِقِينَ ۝

فَلَمَّا أَسْفَوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ
أَجْمَعِينَ ۝

فَجَعَلْنَاهُمْ سَلَفًا وَمَثَلًا لِّلْآخِرِينَ ۝

وَلَمَّا ضَرَبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ
مِنْهُ يُصِدُّونَ ۝

وَقَالُوا ۚ إِلَهَتَنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوهُ
لَكَ إِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُونَ ۝

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنَاهُ

इसाईल के लिए एक (अनुकरणीय)
आदर्श बना दिया ।60।

और यदि हम चाहते तो तुम्हीं में से
फ़रिश्ते बनाते जो धरती में प्रतिनिधित्व
करते ।61।

और वह तो निःसन्देह क्रांति की घड़ी की
पहचान होगा । अतः तुम उस (घड़ी)
पर कदापि कोई संदेह न करो और मेरा
अनुसरण करो । यह सीधा मार्ग है ।62।

और शैतान तुम्हें कदापि न रोक सके ।
निःसन्देह वह तुम्हारा खुला-खुला शत्रु
है ।63।

और जब ईसा खुले-खुले चिह्नों के साथ
आ गया तो उसने कहा, निःसन्देह मैं
तुम्हारे पास तत्त्वज्ञान लाया हूँ । और
इस कारण आया हूँ कि तुम्हारे सामने
कुछ वह बातें खोल कर वर्णन करूँ
जिनमें तुम मतभेद करते हो । अतः
अल्लाह का तक्वा धारण करो और मेरा
आज्ञापालन करो ।64।

निःसन्देह अल्लाह ही है जो मेरा भी रब्ब
है और तुम्हारा भी रब्ब है । अतः उसकी
उपासना करो । यह सीधा मार्ग है ।65।

फिर उनके अंदर ही से समूहों ने मतभेद
किया । अतः जिन लोगों ने अत्याचार
किया कष्टदायक दिन के अज़ाब स्वरूप
उनका सर्वनाश हो ।66।

क्या वे उसके सिवा कुछ और की
प्रतीक्षा कर रहे हैं कि (क़यामत की)
घड़ी उनके पास सहसा इस प्रकार आ
जाए कि उन्हें पता भी न चले ।67।

مَثَلًا لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ

وَلَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَلَائِكَةً فِي
الْأَرْضِ يَخْلُقُونَ ۖ

وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا
وَاتَّبِعُونِ ۚ هَذَا صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۖ

وَلَا يَصُدُّكُمْ الشَّيْطَانُ إِنَّهُ لَكُمْ
عَدُوٌّ مُبِينٌ ۖ

وَلَمَّا جَاءَ عِيسَى بِالْبَيِّنَاتِ قَالَ قَدْ
جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلَا بَيِّنَ لَكُمْ بَعْضُ
الَّذِي تَخْتَلَفُونَ فِيهِ ۚ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۖ

إِنَّ اللَّهَ هُوَ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوهُ ۚ هَذَا
صِرَاطٌ مُسْتَقِيمٌ ۖ

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ
لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ ۖ

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ
بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۖ

उस दिन कई घनिष्ट मित्र एक दूसरे के शत्रु हो जाएंगे सिवाए मुत्तकियों के 168। (रुकू 6/12)

(अल्लाह कहेगा) हे मेरे भक्तो ! आज तुम पर न कोई भय होगा और न तुम शोकग्रस्त होगे 169।

वे लोग जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और आज्ञाकारी बने रहे 170।

तुम और तुम्हारे साथी इस अवस्था में स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओ कि तुम्हें बहुत प्रसन्न किया जाएगा 171।

उन पर सोने के थालों और प्यालों के दौर चलाए जाएंगे । और उसमें उनके लिए वह सब कुछ होगा जिसकी उनके मन इच्छा करेंगे और जिस से आँखें तृप्त होंगी। और तुम उसमें सदा रहने वाले हो 172।

और यह वह स्वर्ग है जिसके तुम उन कर्मों के कारण जो तुम करते रहे हो, उत्तराधिकारी बनाए गए हो 173।

तुम्हारे लिए उसमें प्रचुर मात्रा में फल होंगे, जिनमें से तुम खाओगे 174।

निःसन्देह अपराध करने वाले नरक के अज़ाब में लम्बे समय तक रहने वाले हैं 175।

वह (अज़ाब) उनसे कम नहीं किया जाएगा और वे उसमें निराश होकर पड़े होंगे 176।

और हमने उन पर अत्याचार नहीं किया बल्कि वे स्वयं ही अत्याचार करने वाले थे 177।

الْأَخِلَاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ ١٦٨

لِعِبَادٍ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ الْيَوْمَ وَلَا أَنْتُمْ تَحْزَنُونَ ١٦٩

الَّذِينَ آمَنُوا بِالْآيَاتِ وَكَانُوا مُسْلِمِينَ ١٧٠

أَدْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ ١٧١

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصَفَافٍ مِنْ ذَهَبٍ وَكَؤَابٍ ۚ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۚ وَأَنْتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ١٧٢

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ١٧٣

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِنْهَا تَأْكُلُونَ ١٧٤

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابٍ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ ١٧٥

لَا يُفْتَرُّ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيهِ مُبْلِسُونَ ١٧٦

وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا هُمُ الظَّالِمِينَ ١٧٧

और वे पुकारेंगे कि हे मालिक ! तेरा रब्ब हमें मृत्यु ही दे दे । वह कहेगा, तुम निश्चित रूप से यहीं ठहरने वाले हो । 178।

निःसन्देह हम तुम्हारे पास सत्य के साथ आए थे परन्तु तुम में से अधिकतर सत्य को नापसन्द करने वाले थे । 179।

क्या उन्होंने कुछ करने का निर्णय कर लिया है ? तो अवश्य हमने भी कुछ करने का निर्णय कर लिया है । 180।

क्या वे यह धारणा करते हैं कि हम उनके भेद और गुप्त परामर्शों को नहीं सुनते ? क्यों नहीं ! हमारे दूत उनके पास ही लिख भी रहे होते हैं । 181।

तू कह दे कि यदि रहमान का कोई पुत्र होता तो मैं (उसकी) उपासना करने वालों में सबसे पहला होता । 182।

पवित्र है आकाशों और धरती का रब्ब अर्श का रब्ब उससे जो वे वर्णन करते हैं । 183।

अतः उन्हें छोड़ दे कि वे व्यर्थ बातें करते और खेलते रहें । यहाँ तक कि वे अपने उस दिन को देख लें जिसका उनसे वादा किया जाता है । 184।

और वही है जो आकाश में उपास्य है और धरती में भी उपास्य है । और वही परम विवेकशील (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है । 185।

और एक ही बरकत वाला सिद्ध हुआ जिसके लिए आकाशों और धरती का

وَنَادُوا إِلِمْلِكُ لِيَقْضَ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ
إِنَّكُمْ مُرْكُتُونَ ۝^{٧٨}

لَقَدْ جِئْتَكُمْ بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَكُمْ
لِلْحَقِّ كُرْهُونَ ۝^{٧٩}

أَمْ أَبْرَمُوا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُونَ ۝^{٨٠}

أَمْ يَحْسَبُونَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ
وَنَجْوَاهُمْ ۖ بَلَىٰ وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ
يَكْتُبُونَ ۝^{٨١}

قُلْ إِن كَانَ لِلرَّحْمَنِ وَلَدٌ ۖ فَأَنَا أَوَّلُ
الْعَبِيدِينَ ۝^{٨٢}

سُبْحَنَ رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُونَ ۝^{٨٣}

فَذَرَهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ ۝^{٨٤}

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَهٌ وَفِي الْأَرْضِ
إِلَهٌ ۖ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ۝^{٨٥}

وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ

और जो कुछ उनके मध्य है, साम्राज्य है। और उसके पास उस विशेष घड़ी का ज्ञान है और उसी की ओर तुम लौटाए जाओगे। 186।

और वे लोग, जिन्हें वे उसके सिवा पुकारते हैं, सिफ़ारिश का कोई अधिकार नहीं रखते, सिवाए उन लोगों के जो सच्ची बात की गवाही देते हैं और वे ज्ञान रखते हैं। 187।

और यदि तू उनसे पूछे कि उन्हें किसने पैदा किया है ? तो वे अवश्य कहेंगे अल्लाह ने। फिर वे किस ओर बहकाये जाते हैं ? 188।

और उसके यह कहने के समय को याद करो कि हे मेरे रब्ब ! ये लोग कदापि ईमान नहीं लाएंगे। 189।

अतः तू उनको क्षमा कर और कह : “सलाम” । अतः शीघ्र ही वे जान लेंगे। 190। (स्कू 7/13)

وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿٨٦﴾

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٨٧﴾

وَلَيْنِ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ فَأَلَّى يُؤْفَكُونَ ﴿٨٨﴾

وَقِيلَ لَهُ يَرْبِّ إِنَّ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿٨٩﴾

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٠﴾

44- सूरः अद-दुःखान

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 60 आयतें हैं ।

सूरः अद-दुःखान का आरम्भिक विषयवस्तु पवित्र कुरआन की एक छोटी सी सूरः **अल-क्रद्र** के विषयवस्तु की ओर संकेत कर रहा है । जो इन आरम्भिक आयतों से स्पष्ट है, कि हमने इस पुस्तक को एक ऐसी अंधेरी रात में उतारा है जो बहुत मंगलमयी थी । क्योंकि इस अंधकार के पश्चात सदा के आलोक फूटने वाले थे । उस रात प्रत्येक तत्त्वपूर्ण विषय का निर्णय किया जाएगा ।

पिछली सूरः के अन्त पर यह विषय वर्णन किया गया था कि विरोधियों को व्यर्थ बातों और खेल-तमाशा में भटकने दे और उनसे विमुख हो जा । वह समय निकट है जब स्पष्ट रूप से सत्य और असत्य में पार्थक्य कर दिया जाएगा । अतः इस सूरः की आरम्भिक आयतों में इस बात का उल्लेख कर दिया गया है ।

इस सूरः का नाम **दुःखान** (अर्थात् धुआँ) रखने का एक बड़ा कारण यह है कि जिन अंधकारों के वे शिकार हैं उनके पश्चात तो कृपा का कोई सवेरा नहीं होगा अपितु वे अंधेरे उनके लिए धुएँ की भाँति उनके अज्ञाब को बढ़ाने का कारण बनेंगे । यहाँ धुआँ का तात्पर्य आणविक धुएँ की ओर भी संकेत हो सकता है, जिस की छाया के नीचे कोई चीज़ भी सुरक्षित नहीं रह सकती बल्कि विभिन्न प्रकार के विनाशों का शिकार हो जाती है ।

अतएव आधुनिक वैज्ञानिकों की ओर से यह चेतावनी है कि आणविक धुएँ की छाया के नीचे प्रत्येक प्रकार का जीवन मिट जाएगा । यहाँ तक कि धरती के अन्दर दबे हुए कीटाणु भी नष्ट हो जाएँगे । अल्लाह तआला फ़र्माता है कि जब ऐसा होगा तब ये सब अल्लाह तआला से गुहार लगाएँगे कि हे अल्लाह ! इस अत्यन्त पीड़ादायक अज्ञाब को हमसे टाल दे । यहाँ यह भविष्यवाणी भी कर दी कि इस प्रकार का अज्ञाब ठहर-ठहर कर आएगा । अर्थात् एक विश्वयुद्ध की विनाशलीलाओं के पश्चात् कुछ समय ढील दी जाएगी, उसके पश्चात फिर अगला विश्वयुद्ध नए विनाशों को लेकर आएगा ।

सूरः अद-दुःखान के सम्बन्ध में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बता दिया गया था कि इसकी भविष्यवाणियों के प्रकटन का समय **दज्जाल** के प्रकट होने से सम्बन्ध रखता है ।



سُورَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّونَ آيَةً وَثَلَاثَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

हमीदुन् मजीदुन् : स्तुति योग्य, अति गौरवशाली ।2।

क़सम है उस पुस्तक की जो खुली और सुस्पष्ट है ।3।

निःसन्देह हमने इसे एक बड़ी मंगलमयी रात्रि में उतारा है । हम हर हाल में सतर्क करने वाले थे ।4।

इस (रात्रि) में प्रत्येक तत्त्वपूर्ण विषय का निर्णय किया जाता है ।5।

एक ऐसे विषय के रूप में जो हमारी ओर से है । निःसन्देह हम ही रसूल भेजने वाले हैं ।6।

कृपा स्वरूप तेरे रब्ब की ओर से । निःसन्देह वही बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।7।

(जो) आकाशों और धरती के रब्ब की ओर से और (जो उसका भी रब्ब है) जो उन दोनों के बीच है । यदि तुम विश्वास करने वाले हो ।8।

उसके सिवा कोई उपास्य नहीं । वही जीवित करता है और मारता भी है । (वह) तुम्हारा भी रब्ब है और तुम्हारे पूर्वजों का भी रब्ब है ।9।

वास्तविकता यह है कि वे तो एक शंका में पड़े खेल में लगे हुए हैं ।10।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حَمْدٌ ②

وَالْكِتَابِ الْمُبِينِ ③

مَعَالِيقِ
الْقُرْآنِ

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةٍ مُبَارَكَةٍ إِنَّا كُنَّا مُنْذِرِينَ ④

فِيهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيمٍ ⑤

أَمْراً مِنْ عِنْدِنَا إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِينَ ⑥

رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ⑦ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ⑧

رَبِّ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ⑨ إِنَّ كُنْتُمْ مُّوقِنِينَ ⑩

لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ آبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ⑪

بَلْ هُمْ فِي شَكٍّ يَلْعَبُونَ ⑫

अतः प्रतीक्षा कर उस दिन की जब आकाश एक स्पष्ट धुआँ लाएगा ।111।

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَاءُ بِدُخَانٍ مُّبِينٍ ۝

जो लोगों को ढाँप लेगा । यह एक बहुत पीड़ाजनक अज़ाब होगा ।12।

يُعْشى النَّاسُ ۖ هَذَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

हे हमारे रब्ब ! हमसे यह अज़ाब दूर कर दे। अवश्य हम ईमान ले आएँगे ।13।

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُونَ ۝

उनके लिए उपदेश प्राप्ति अब कहाँ संभव ? जबकि उनके पास एक सुस्पष्ट तर्कों वाला रसूल आ चुका था ।14।

أَنَّى لَهُمُ الذِّكْرَى وَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مُّبِينٌ ۝

फिर भी वे उससे विमुख हुए और कहा, (यह तो) सिखाया पढ़ाया हुआ (बल्कि) पागल है ।15।

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوا مُعَلَّمٌ مَّجْنُونٌ ۝

निःसन्देह हम अज़ाब को थोड़ी देर के लिए दूर कर देंगे । तुम अवश्य (इन्हीं बातों को) दोहराने वाले हो ।16।

إِنَّا كَاشِفُو الْعَذَابِ قَلِيلًا إِنَّكُمْ عَائِدُونَ ۝

जिस दिन हम बड़ी कठोरता पूर्वक (तुम पर) हाथ डालेंगे । निश्चित रूप से हम प्रतिशोध लेने वाले हैं ।17।

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرَى ۚ إِنَّا مُنتَقِمُونَ ۝

और निःसन्देह हम उनसे पहले फिरऔन की जाति की भी परीक्षा ले चुके हैं जब उनके पास एक सम्मानित रसूल आया था ।18।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاءَهُمْ رَسُولٌ كَرِيمٌ ۝

(यह कहते हुए) कि अल्लाह के भक्तों को मेरे हवाले कर दो । निःसन्देह मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय रसूल हूँ ।19।

أَن أَدِّىَ إِلَىٰ عِبَادِ اللَّهِ ۖ إِنِّي لَكُم رَسُولٌ أَمِينٌ ۝

और अल्लाह के विरुद्ध उदण्डता न करो । निःसन्देह मैं तुम्हारे पास एक सुस्पष्ट (और) प्रबल तर्क लाने वाला हूँ ।20।

وَأَنْ لَا تَعْلُوا عَلَى اللَّهِ ۚ إِنِّي آتِيكُم بِسُلْطَنِ مُّبِينٍ ۝

और निःसन्देह मैं अपने रब्ब और तुम्हारे रब्ब की (इस बात से) शरण में आता हूँ कि तुम मुझे संगसार न कर दो ।21।

और यदि तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझे अकेला छोड़ दो ।22।

अतः उसने अपने रब्ब को पुकारा कि ये अपराधी लोग हैं ।23।

अतः (अल्लाह ने कहा) तू मेरे भक्तों को साथ लेकर रात्रि के समय प्रस्थान कर । अवश्य तुम्हारा पीछा किया जाएगा ।24।

और समुद्र को (इस अवस्था में) छोड़ दे कि वह शांत हो । निःसन्देह वह एक ऐसी सेना है जो डुबो दी जाएगी ।25।

कितने ही बाग़ान और जलस्रोत हैं जो वे (पीछे) छोड़े ।26।

और खेतियाँ और प्रतिष्ठा युक्त स्थान भी ।27।

और (ऐसी) सुख-समृद्धि जिसमें वे मज़े उड़ाया करते थे ।28।

इसी प्रकार हुआ । और हमने एक दूसरी जाति को इस (नेमत) का उत्तराधिकारी बना दिया ।29।

अतः उन पर आकाश और धरती नहीं रोए और उन्हें ढील नहीं दी गई ।30।

(स्कू 1/4)

और निःसन्देह हमने बनी-इस्राईल को एक अपमानजनक अज़ाब से मुक्ति प्रदान की ।31।

وَإِنِّي عُذْتُ بِرَبِّي وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُونِ ۝

وَإِنْ لَّمْ تُوْمِنُوا لِي فَأَعْتَزِلُونِ ۝

فَدَعَا رَبَّهُ أَتِ هَؤُلَاءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُونَ ۝

فَأَسْرِ بِعَبَادِي لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبِعُونَ ۝

وَأَتْرِكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ۖ إِنَّهُمْ جُندٌ مُّغْرَقُونَ ۝

كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَبْتٍ وَعُيُونٍ ۝

وَزُرُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ۝

وَنَعْمَةٍ كَانُوا فِيهَا فَاكِهِينَ ۝

كَذَلِكَ ۖ وَأَوْرَثْنَاهَا قَوْمًا آخَرِينَ ۝

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنْظَرِينَ ۝

وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِينِ ۝

जो फिरऔन की ओर से था । निःसन्देह वह सीमा का उल्लंघन करने वालों में से एक बहुत उद्वण्डी व्यक्ति था । 32।

और निःसन्देह हमने उनको किसी ज्ञान के कारण समस्त जगत पर वरीयता प्रदान की थी । 33।

और हमने उन्हें कुछ चिह्न प्रदान किए, जिनमें खुली-खुली परीक्षा थी । 34।

निःसन्देह ये लोग कहते हैं : 35।

हमारी इस पहली मृत्यु के अतिरिक्त और कोई मृत्यु नहीं और हम उठाए जाने वाले नहीं । 36।

अतः हमारे पूर्वजों को तो वापस लाओ, यदि तुम सच्चे हो ? 37।

क्या ये लोग उत्तम हैं अथवा तुब्बा की जाति और वे लोग जो उनसे पहले थे ? हमने उनको विनष्ट कर दिया ।

निःसन्देह वे (सब) अपराधी थे । 38।

और हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके बीच है, यूँ ही खेल-खेलते हुए पैदा नहीं किया । 39।

हमने उनको सत्य के साथ ही पैदा किया । परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते । 40।

निःसन्देह निर्णय का दिन उन सब के लिए एक निर्धारित समय है । 41।

जिस दिन कोई मित्र किसी मित्र के कुछ काम नहीं आएगा । और न ही उनकी सहायता की जाएगी । 42।

مِنْ فِرْعَوْنَ ۚ إِنَّهُ كَانَ عَلِيًّا
مِّنَ الْمُسْرِفِينَ ۝

وَلَقَدْ اخْتَرْنَاهُمْ عَلَىٰ عِلْمٍ عَلَی
الْعَالَمِينَ ۝

وَاتَيْنَاهُمْ مِّنَ الْآيَاتِ مَا فِيهِ بَلَاءٌ مُّبِينٌ ۝

إِنَّ هَؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ۝

إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ
بِمُتَشْرِقِينَ ۝

فَأْتُوا بِآبَاءِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۚ وَالَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ أَهْلَكْنَاهُمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا

مُجْرِمِينَ ۝

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَا لِعِبَادٍ ۝

مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُونَ ۝

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ۝

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلَىٰ عَنْ مَوْلَىٰ شَيْئًا وَلَا
هُمْ يُنصَرُونَ ۝

सिवाए उसके जिस पर अल्लाह ने दया की। निःसन्देह वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 143। (स्कू 2/15)

إِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللَّهُ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ٤٣

निःसन्देह थूहर का पौधा। 144।

إِنَّ شَجَرَتَ الزُّقُومِ ٤٤

पापी का भोजन है। 145।

طَعَامُ الْآثِمِينَ ٤٥

(वह) पिघले हुए ताँबे की भाँति है। (जो) पेटों में खौलता है। 146।

كَأَلْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ ٤٦

गर्म पानी के खौलने की भाँति। 147।

كَغَلِي الْحَمِيمِ ٤٧

उस (पापी) को पकड़ो और फिर घसीटते हुए नरक के बीच में ले जाओ। 148।

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَى سَوَاءِ الْجَحِيمِ ٤٨

फिर उसके सिर पर अज़ाब स्वरूप खौलता हुए कुछ पानी उड़ेलो। 149।

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ ٤٩

(उसे कहा जाएगा) चख। निःसन्देह तू बहुत बुजुर्ग (और) सम्मान वाला (बनता) था। 150।

ذُقْ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ ٥٠

निःसन्देह यही है वह, जिसके विषय में तुम संदेह किया करते थे। 151।

إِنَّ هَذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُونَ ٥١

निश्चित रूप से मुत्तक्री शांतिमय स्थान में होंगे। 152।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ ٥٢

बागों और जलस्रोतों में। 153।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ٥٣

बारीक और मोटे रेशम के वस्त्र पहने हुए एक दूसरे के सामने बैठे होंगे। 154।

يَلْبَسُونَ مِنْ سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُتَقَابِلِينَ ٥٤

इसी प्रकार होगा। और हम उन्हें बड़ी आँखों वाली कुंवारी कन्याओं के साथी

كَذَلِكَ وَرَوَّجَهُمْ بَخُورٍ عَيْنٍ ٥٥

बना देंगे ।55।*

वे उसमें शांतिपूर्वक प्रत्येक प्रकार के फलों को मंगवा रहे होंगे ।56।

वे उसमें पहली मृत्यु के अतिरिक्त किसी और मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे । और वह (अल्लाह) उन्हें नरक के अज़ाब से बचाएगा ।57।

यह तेरे रब्ब की ओर से कृपा स्वरूप होगा । यही बहुत बड़ी सफलता है ।58।

अतः निश्चित रूप से हमने इसे तेरी जुबान पर सरल बना दिया है ताकि वे उपदेश ग्रहण करें ।59।

अतः तू प्रतीक्षा कर निःसन्देह वे भी प्रतीक्षा में हैं ।60। (रूकू 3/16)

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ ﴿٥٥﴾

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ﴿٥٦﴾

فَضَلًّا مِّن رَّبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿٥٨﴾

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٥٩﴾

فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُونَ ﴿٦٠﴾

* आयत सं. 54, 55 : जो चीजें इस संसार में लोग पसन्द करते हैं, केवल उपमा स्वरूप उनका यहाँ वर्णन किया गया है जबकि उनकी वास्तविकता का किसी को ज्ञान नहीं ।

45- सूरः अल-जासियः

यह मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 38 आयतें हैं ।

इस सूरः में आयत सं. 14 एक ऐसी आयत है जो धरती और आकाश के गुप्त रहस्यों पर से इस रंग में पर्दा उठा रही है कि पूर्ववर्ती किसी भी ग्रंथ में इससे मिलती जुलती आयत अवतरित नहीं हुई । वर्णन किया कि सब कुछ जो धरती और आकाश में है वह मनुष्य के लिए सेवाधीन किया गया है । अतः वे लोग जो चिन्तन-मनन करते हैं यह जान लेंगे कि समस्त नक्षत्रों के प्रभाव मनुष्यों पर पड़ रहे हैं । मानो मनुष्य एक लघु ब्रह्माण्ड (Micro Universe) है और इस विशाल ब्रह्माण्ड का सारांश है ।

फिर इस चर्चा के पश्चात कि क़यामत अवश्य आने वाली है, कहा कि क़यामत के भयानक चिह्नों को देख कर और अपने बुरे अन्त को अपनी आँखों के समक्ष पाते हुए वे घुटनों के बल धरती पर गिर पड़ेंगे । अर्थात् अल्लाह तआला के प्रताप के समक्ष सजदः में गिर कर यह इच्छा करेंगे कि काश ! वे इस बड़े अज़ाब से बचाए जा सकते !

फिर वर्णन किया कि प्रत्येक संप्रदाय का निर्णय उसकी अपनी पुस्तक अर्थात् धर्मविधान के अनुसार किया जाएगा ।

इस सूरः की अन्तिम आयत मनुष्य की दृष्टि को फिर उस विषय की ओर आकर्षित करती है कि सारी सृष्टि अपनी स्थिति से अल्लाह की स्तुति को प्रकट कर रही है । और यह बता रही है कि सारी बड़ाई उसी की है और वही पूर्ण प्रभुत्व वाला और परम विवेकशील है ।



سُورَةُ الْجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَمَانٍ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعَةٌ رُكُوعَاتٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

हमीदुन्, मजीदुन् : स्तुति योग्य, अति गौरवशाली ।2।

इस पुस्तक का उतारा जाना पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) परम विवेकशील अल्लाह की ओर से है ।3।

निःसन्देह आकाशों और धरती में मोमिनों के लिए प्रचुर संख्या में चिह्न हैं ।4।

और तुम्हारी उत्पत्ति में, और जो कुछ चलने फिरने वाले प्राणियों में से वह (अल्लाह) फैलाता है, उनमें एक विश्वास करने वाले लोगों के लिए वृहद चिह्न हैं ।5।

और रात और दिन के अदलने-बदलने में और इस बात में कि अल्लाह आकाश से एक जीविका उतारता है, फिर उसके द्वारा धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात जीवित कर देता है। और हवाओं की दिशा बदल-बदल कर चलाने में (भी) बुद्धि से काम लेने वाले लोगों के लिए अनेक चिह्न हैं ।6।

ये अल्लाह की आयतें हैं जो हम तेरे समक्ष सत्य के साथ पढ़ कर सुनाते हैं । अतः अल्लाह और उसकी आयतों के

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حَمْدٌ ②

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ③

إِنَّا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِلْمُؤْمِنِينَ ④

وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُتُّ مِنْ دَابَّةٍ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ⑤

وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنْزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِنْ رِزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيْحِ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ⑥

تِلْكَ آيَاتُ اللَّهِ نَتْلُوهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِأَيِّ

बाद फिर और किस बात पर वे ईमान लाएंगे ? 17।

सर्वनाश हो प्रत्येक घोर मिथ्यावादी और महा पापी का 18।

वह अल्लाह की आयतों को सुनता है जो उस के समक्ष पढ़ी जाती हैं फिर भी अहंकार करते हुए (अपने हठ पर) अड़ा रहता है, मानो उसने उन्हें सुना ही नहीं। अतः उसे पीड़ाजनक अज़ाब का शुभ-समाचार दे दे 19।

और जब वह हमारे चिह्नों में से कुछ की जानकारी पाता है तो उन्हें उपहास का पात्र बनाता है। यही वे लोग हैं जिन के लिए अपमानजनक अज़ाब है 110।

(और) उनसे परे नरक है। और जो कुछ उन्होंने कमाया वह कुछ भी उनके काम नहीं आएगा और न ही वे (उनके काम आएंगे) जिनको उन्होंने अल्लाह के सिवा मित्र बना रखा है। जबकि उनके लिए एक बड़ा अज़ाब (निश्चित) है 111।

यह एक बड़ी हिदायत है। और वे लोग जिन्होंने अपने रब्ब की आयतों का इनकार किया उनके लिए थरा देने वाले अज़ाब में से एक पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है 112। (रुकू 1/17)

अल्लाह वह है जिसने तुम्हारे लिए समुद्र को सेवाधीन किया ताकि उसके आदेश से उसमें नौकाएँ चलें। और इसके परिणामस्वरूप तुम उसकी कृपा की तलाश करो और ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो 113।

حَدِيثٌ بَعْدَ اللَّهِ وَآيَةٍ يُؤْمِنُونَ ۝

وَيَلِّ لِكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيمٍ ۝

يَسْمَعُ آيَاتِ اللَّهِ تُثْلَىٰ عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ
مُسْتَكْبِرًا كَأَن لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبِشْرِهِ
بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ آيَاتِنَا شَيْئًا اتَّخَذَهَا هُزُوًا
أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِينٌ ۝

مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُعْنِي عَنْهُمْ مَا
كَسَبُوا شَيْئًا وَلَا مَا اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ
أَوْلِيَاءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ۝

هَٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ رَبِّهِمْ
لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رَّجْزٍ أَلِيمٍ ۝

اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لَتَجْرِي
الْفُلُكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝

और आकाशों में और धरती में जो कुछ भी है, उसमें से सब उसने तुम्हारे लिए सेवाधीन कर दिया। इसमें सोच-विचार करने वालों के लिए निश्चित रूप से खुले-खुले चिह्न हैं 114।

जो ईमान लाए हैं, तू उनसे कह दे कि उन लोगों से क्षमापूर्ण व्यवहार करें जो अल्लाह के दिनों की आशा नहीं रखते ताकि वह (अल्लाह) स्वयं ऐसे लोगों को उनकी कमाई के अनुसार प्रतिफल प्रदान करे 115।

जो नेक कर्म करता है तो (वह) अपने लिए ही ऐसा करता है। और जो कोई बुराई करता है तो (वह) स्वयं अपने विरुद्ध (ऐसा करता है)। फिर तुम अपने रब्ब की ओर लौटाए जाओगे 116।

और निःसन्देह हमने बनी इस्राईल को पुस्तक और तत्त्वज्ञान और नुबुव्वत प्रदान की। और पवित्र वस्तुओं में से उन्हें जीविका प्रदान की और उनको समस्त जगत पर श्रेष्ठता प्रदान की 117।*

और हमने उन्हें शरीअत (अर्थात् धर्म विधान) की खुली-खुली शिक्षाएँ प्रदान कीं। फिर उन्होंने एक दूसरे के विरुद्ध उद्दण्डता करते हुए मतभेद किया जब कि उनके पास ज्ञान आ चुका था। निःसन्देह तेरा रब्ब उनके बीच क़यामत

وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُونَ ﴿١١٤﴾

قُلْ لِلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿١١٥﴾

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۚ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ﴿١١٦﴾

وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ الْكِتَابَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿١١٧﴾

وَأَتَيْنَاهُم بِبَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا إِلَّا مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ ۚ بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ

* बनी इस्राईल को समस्त जगत पर श्रेष्ठता प्रदान करने का अभिप्राय यह है कि उस युग के ज्ञात जगत पर उन्हें श्रेष्ठता प्राप्त थी। संसार इतने भागों में बंटा हुआ था जिनका कोई ज्ञान बनी इस्राईल को नहीं था। फिर भी जो भी जगत बनी-इस्राईल की जानकारी में आए उन सब पर उन्हें श्रेष्ठता प्रदान की गई।

के दिन उन विषयों में निर्णय करेगा जिनमें वे मतभेद किया करते थे ।118।

फिर हमने तुझे शरीअत के एक महत्वपूर्ण विषय पर क़ायम कर दिया । अतः उसका अनुसरण कर । और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न कर जो ज्ञान नहीं रखते ।119।*

निःसन्देह वे अल्लाह के मुक़ाबले पर तेरे किसी काम नहीं आ सकेंगे । और निश्चित रूप से अत्याचारी परस्पर एक दूसरे के मित्र होते हैं जब कि अल्लाह मुत्तक़ियों का मित्र होता है ।20।

लोगों के लिए ये ज्ञान-वर्धक बातें हैं और विश्वास करने वाले लोगों के लिए हिदायत और करुणा स्वरूप हैं ।21।

क्या वे लोग जो भिन्न-भिन्न प्रकार के पाप अर्जित करते हैं, उन्होंने यह सोच लिया है कि हम उन्हें उन लोगों की भाँति बना देंगे जो ईमान लाए और नेक कर्म किए । (मानो) उनका जीना और मरना एक जैसा होगा ? बहुत ही बुरा है जो वे निर्णय करते हैं ।22। (रुकू- $\frac{2}{18}$)

और अल्लाह ने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया, ताकि प्रत्येक जान को उसकी कमाई के अनुसार प्रतिफल दिया जाए और उनपर अत्याचार नहीं किया जाएगा ।23।

क्या तूने उसे देखा है, जो अपनी इच्छा को ही उपास्य बना बैठा हो और

الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝۱۸

ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝۱۹

إِنَّهُمْ لَنُغْنُوا عَنْكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ۝۲۰

هَذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝۲۱

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَن نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ۝۲۲

وَخَلَقَ اللَّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلَيُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝۲۳

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلَهَهُ هَوَاهُ وَأَصْلَهُ

* फिर उनके पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शरीअत दी गई । क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सार्वभौम नबी थे इस कारण उनकी शरीअत भी सार्वभौमिक है ।

अल्लाह ने उसे किसी जानकारी के आधार पर पथभ्रष्ट घोषित किया हो । और उसकी सुनने की शक्ति पर और उसके दिल पर मुहर लगा दी हो और उसकी आँखों पर पर्दा डाल दिया हो ? अतः अल्लाह के बाद उसे कौन हिदायत दे सकता है ? क्या फिर भी तुम उपदेश ग्रहण नहीं करोगे ? 124।

और वे कहते हैं, यह (जीवन) हमारे सांसारिक जीवन के अतिरिक्त कुछ नहीं । हम मरते भी हैं और जीवित भी होते हैं और काल के अतिरिक्त और कोई नहीं जो हमें विनष्ट करता हो । हालाँकि उनको इस विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं । वे तो केवल काल्पनिक बातें करते हैं 125।

और जब हमारी खुली-खुली आयतें उन के समक्ष पढ़ी जाती हैं तो उनका तर्क यह कहने के सिवा कुछ नहीं होता कि हमारे पूर्वजों को वापस ले आओ, यदि तुम सच्चे हो 126।

तू कह दे कि अल्लाह ही तुम्हें जीवित करता है, फिर तुम्हें मारता है । फिर क़यामत के दिन की ओर जिसमें कोई संदेह नहीं, तुम्हें इकट्ठा करके ले जाएगा । परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते 127। (रुकू 3/19)

और आकाशों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही का है । और जिस दिन क़यामत होगी उस दिन झूठ बोलने वाले हानि उठाएँगे 128।

اللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ
وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غِشَاوَةً فَمَنْ يَهْدِيهِ
مِّنْ بَعْدِ اللَّهِ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ١٢٤

وَقَالُوا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوتُ
وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَا إِلَّا الدَّهْرُ وَمَا
لَهُمْ بِذَلِكَ مِنْ عِلْمٍ إِنْ هُمْ إِلَّا
يَظُنُّونَ ١٢٥

وَإِذَا تَلَّٰى عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ مَّا كَانَ
حُجَّتَهُمْ إِلَّا أَنْ قَالُوا اتُّوَابَا بَابِنَا
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ١٢٦

قُلِ اللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ
يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ١٢٧

وَاللَّهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَوْمَ
تَقُومُ السَّاعَةُ يُومِذِّ يَخْسَرُ الْمُبِطُونَ ١٢٨

और तू प्रत्येक सम्प्रदाय को घुटनों के बल गिरा हुआ देखेगा । प्रत्येक सम्प्रदाय को अपनी पुस्तक की ओर बुलाया जाएगा । (और कहा जाएगा) आज के दिन तुम्हें उसका प्रतिफल दिया जाएगा जो तुम किया करते थे । 129।

यह हमारी पुस्तक है जो तुम्हारे विरुद्ध सत्य के साथ बात करेगी । तुम जो कुछ करते थे हम निःसन्देह उसे लिखित में ले आते थे । 130।

अतः वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए तो उनका रबब उन्हें अपनी दया में प्रविष्ट करेगा । यही खुली-खुली सफलता है । 131।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया (उनसे कहा जाएगा कि) क्या तुम्हारे समक्ष मेरी आयतें नहीं पढ़ी जाती थीं ? फिर भी तुमने अहंकार किया और तुम अपराधी लोग बन गए । 132।

और जब कहा जाता है, निःसन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है । और निश्चित घड़ी में कोई संदेह नहीं तो तुम कहते हो कि हम नहीं जानते कि निश्चित घड़ी क्या चीज़ है । हम (इसे) एक अटकल से बढ़ कर कुछ नहीं सोचते और हम कदापि विश्वास करने वाले नहीं । 133।

और उन पर उन कर्मों के दुष्परिणाम प्रकट हो जाएंगे जो उन्होंने किए । और

وَتَرَى كُلَّ أُمَّةٍ جَائِيَةً كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعَى
إِلَى كِتَابِهَا ۚ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝

هَذَا كِتَابُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ۚ
إِنَّا كُنَّا نَسْتَنسِخُ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِي رَحْمَتِهِ ۚ ذَلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِينُ ۝

وَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ أَفَلَمْ تَكُنْ إِلَيْنَا
تُسَلِّى عَلَيْنَا ۖ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنتُمْ
قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ۝

وَإِذْ قِيلَ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ وَالسَّاعَةُ لَا
رَيْبَ فِيهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِي مَا السَّاعَةُ ۚ
إِنْ نَظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَمَا نَحْنُ
بِمُسْتَقْنِينَ ۝

وَبَدَّاهُمْ سَيِّئَاتٍ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ

उन्हें वह चीज़ घेर लेगी जिसकी वे खिल्ली उड़ाया करते थे ।34।

और कहा जाएगा, आज हम तुम्हें भूल जाएंगे जैसा कि तुम अपने इस दिन की भेंट को भूल गए थे । और तुम्हारा ठिकाना नरक होगा और तुम्हारे कोई सहायक नहीं होंगे ।35।

यह इस कारण होगा कि तुमने अल्लाह के चिह्नों को उपहास का पात्र बना लिया और सांसारिक जीवन ने तुम्हें धोखे में डाल दिया था । अतः आज वे उस (अग्नि) से निकाले नहीं जाएंगे और न ही उनका कोई बहाना स्वीकार किया जाएगा ।36।

अतः समस्त प्रशंसा अल्लाह ही की है जो आकाशों का रब्ब है और धरती का रब्ब है (अर्थात् वही) जो समस्त लोकों का रब्ब है ।37।

और आकाशों में और धरती में भी हर बड़ाई उसी की है । और वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।38।

(सू 4/20)

مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِءُونَ ۝

وَقِيلَ الْيَوْمَ نَنْسِكُمْ كَمَا نَسِيتُمْ لِقَاءَ
يَوْمِكُمْ هَذَا وَمَا أَوْكُمُ النَّارُ وَمَا
لَكُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ۝

ذَلِكُمْ بِأَنكُمْ اتَّخَذْتُمْ آيَاتِ اللَّهِ هُزُوًا
وَعَرَّيْتُمْ كُمُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا
يُخْرَجُونَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝

فَلِلَّهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمُوتِ وَرَبِّ
الْأَرْضِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

۞

46- सूरः अल-अहक्राफ़

यह सूरः मक्का में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 36 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ में ही उस वास्तविकता को दोबारा प्रकट किया गया है जो पिछली सूरः की अन्तिम आयतों में वर्णन की गई है कि धरती और आकाश की हर चीज़ और जो कुछ उसमें है वह सब अल्लाह ही की स्तुति कर रहा है । इस सूरः के आरम्भ में उल्लेख किया गया है कि धरती और आकाश तथा जो कुछ इनमें है वह इसी सच्चाई पर कायम है, जिसका इससे पूर्व वर्णन किया गया है । मानो सारा ब्रह्माण्ड अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी और की गवाही नहीं दे रहा । इसके तुरंत पश्चात मुश्रिकों को सम्बोधित करते हुए कहा है कि यह समस्त धरती और आकाश और जो कुछ इनके अन्दर है अल्लाह ही की सृष्टि है । अपने काल्पनिक उपास्यों की कोई सृष्टि भी तो दिखाओ । वास्तव में इसमें निहित तर्क यह है कि प्रत्येक सृष्टि पर एक ही स्रष्टा की छाप है ।

यद्यपि इस सूरः में अतीत की जाति आद के विनाश का वर्णन किया गया है जिन्हें अहक्राफ़ (बालू के टीलों) के द्वारा सतर्क किया गया । परन्तु पवित्र कुरआन की इस शैली की अनदेखी नहीं करनी चाहिए कि उसमें अतीत की जातियों के वर्णन के साथ उससे मिलते-जुलते भविष्य में घटित होने वाली परिस्थितियों की ओर भी संकेत कर दिया जाता है । इस सूरः में पुनः एक बार दुखान (धुआँ) वाले विषय की ओर संकेत किया गया है कि जब भी उन पर बादल छाया करते हैं तो वे समझते हैं कि आकाश से उन पर नेमतें बरसेंगी । परन्तु जब वह बादल उन तक पहुँचेगा तो उस समय उन को ज्ञात होगा कि उसके साथ ऐसी रेडियो-धर्मी हवाएँ आ रही हैं जो प्रत्येक वस्तु को नष्ट कर देती हैं। अतः वे अपने आवासों से बाहर निकलने का भी सामर्थ्य नहीं पाएँगे और उनके निर्जन आवासों के अतिरिक्त उनके अस्तित्व की ओर कोई गवाही नहीं मिलेगी । नागासाकी और हीरोशीमा शहर दोनों इसी की पुष्टि करते हैं ।

आयत संख्या 34 में यह विषय वर्णन किया जा रहा है कि क्या वे देखते नहीं कि धरती और आकाश की उत्पत्ति से अल्लाह थकता नहीं । उस युग का मनुष्य कैसे देख सकता था ? परन्तु वर्तमान युग का मनुष्य जो धरती और आकाश के रहस्य को जानने का प्रयास कर रहा है, वह जानता है कि धरती और आकाश लगातार अनस्तित्वता में डूबते और फिर एक नई सृष्टि के रूप में उभर आते हैं । धरती और आकाश को बार-बार समाप्त करके पुनः उत्पन्न करना अल्लाह तआला की एक ऐसी क्रिया है जो बता रही है कि वह कभी भी उत्पत्ति-क्रिया से थका नहीं । अतएव मनुष्य को कैसे यह मालूम हुआ कि जब वह मर जाएगा तो उसको नए सिरे से जीवित करने पर अल्लाह तआला समर्थ नहीं होगा ?

سُورَةُ الْأَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ السَّمَلَةِ سِتُّ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

हमीदुन् मजीदुन् : स्तुति योग्य, अति गौरवशाली ।2।

इस पुस्तक का उतारा जाना पूर्ण प्रभुत्व वाले (और) परम विवेकशील अल्लाह की ओर से है ।3।

हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उन दोनों के बीच है सत्य के साथ और एक निर्धारित अवधि के लिए ही पैदा किया । और जिन लोगों ने इनकार किया, वे उससे मुंह मोड़ते हैं, जिससे उन्हें सतर्क किया जाता है ।4।

तू पूछ, क्या तुमने उसे देखा है जिसे तुम अल्लाह के सिवा पुकारते हो ? मुझे दिखाओ तो सही कि उन्होंने धरती से क्या पैदा किया है ? अथवा (अल्लाह के साथ) उनका साझीदार होना केवल आकाशों ही में है ? यदि तुम सच्चे हो तो इससे पूर्ववर्ती कोई पुस्तक अथवा ज्ञान का कोई मामूली सा चिह्न मेरे पास लाओ ।5।

और उससे अधिक पथभ्रष्ट कौन होगा जो अल्लाह के सिवा उसे पुकारता है जो क़यामत तक उसे उत्तर नहीं दे सकता और वे तो उनकी पुकार ही से अनजान हैं ।6।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

حَمْدٌ

حَمْدٌ

تَنْزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ②

مَا خَلَقْنَا السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ③ وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنذِرُوا مُّعْرِضُونَ ④

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَرُونِي مَاذَا خَلَقُوا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمُوتِ ⑤ إِيْتُونِي بِكِتَابٍ مِّنْ قَبْلِ هَذَا أَوْ أَثَرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ⑥

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّن يَدْعُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ مَنْ لَا يَسْتَجِيبُ لَهُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَن دُعَائِهِمْ غَفْلُونَ ⑦

और जब लोग इकट्ठे किए जाएंगे तो वे (काल्पनिक उपास्य) उनके शत्रु होंगे और उनकी उपासना का इनकार कर देंगे ।71।

और जब उन के निकट हमारी खुली-खुली आयतें पढ़ी जाती हैं तो वे लोग, जिन्होंने सत्य का इनकार कर दिया जब वह उनके पास आया, कहते हैं, यह तो खुला-खुला जादू है ।8।

क्या वे यह कहते हैं कि इसने उसे झूठे रूप से गढ़ लिया है ? तू कह दे कि यदि मैंने यह झूठ गढ़ा होता तो तुम अल्लाह के मुकाबले पर मुझे बचाने की कोई शक्ति न रखते । जिन बातों में तुम पड़े हुए हो वह उन्हें सबसे अधिक जानता है । वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह के रूप में पर्याप्त है । और वही बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।9।

तू कह दे, मैं रसूलों में से पहला तो नहीं हूँ और मैं नहीं जानता कि मुझ से और तुम से क्या व्यवहार किया जाएगा । मैं तो केवल उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरी ओर वहइ किया जाता है । और एक सुस्पष्ट सतर्ककारी के अतिरिक्त मैं और कुछ भी नहीं हूँ ।10।

तू पूछ कि क्या तुमने (उसके परिणाम पर) ध्यान दिया कि यदि वह अल्लाह की ओर से ही हो और तुम उसका इनकार कर चुके हो, हालाँकि बनी इस्राईल में से भी एक गवाही देने वाले

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوا لَهُمْ أَعْدَاءً
وَكَانُوا بِعِبَادَتِهِمْ كَافِرِينَ ⑦

وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمُ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٌ قَالَ الَّذِينَ
كَفَرُوا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ هَذَا سِحْرٌ
مُبِينٌ ⑧

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ ⑨ قُلْ إِنْ افْتَرَيْتُهُ
فَلَا تَمْلِكُونَ لِي مِنَ اللَّهِ شَيْئاً ⑩ هُوَ أَعْلَمُ
بِمَاتُفِيصُونَ فِيهِ ⑪ كَفَىٰ بِهِ شَهِيدًا بَيِّنًا
وَبَيْنَكُمْ ⑫ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ⑬

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ
وَمَا أَدْرِى مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ ⑭
إِنْ أَتَّبِعْ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا
إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ ⑮

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ
وَكَفَرْتُمْ بِهِ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ
بَنِي إِسْرَءِيلَ عَلَىٰ مِثْلِهِ فَأَمَنَ

ने अपने समरूप के पक्ष में गवाही दी थी। अतः वह तो ईमान ले आया और तुमने अहंकार किया। निःसन्देह अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ॥11॥* (रकू 1)

और उन लोगों ने जिन्होंने इनकार किया, उनके सम्बन्ध में कहा जो ईमान लाए, कि यदि यह अच्छी बात होती तो उसे प्राप्त करने में ये हम से आगे न निकलते। और अब जबकि वे हिदायत पाने में असफल रहे हैं तो अवश्य कहेंगे कि यह तो एक पुराना झूठ है ॥12॥

और इससे पूर्व मूसा की पुस्तक एक पथप्रदर्शक और कृपा स्वरूप थी और यह (अर्थात् कुरआन) एक सत्यापन करने वाली पुस्तक है जो सरल और शुद्ध भाषा संपन्न है ताकि उन लोगों को सतर्क करे जिन्होंने अत्याचार किया। और जो उपकार करने वाले हैं उनके लिए शुभ-समाचार स्वरूप हो ॥13॥

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने कहा, अल्लाह हमारा रब्ब है फिर (इस बात

وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لِلَّذِينَ آمَنُوا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُونَا إِلَيْهِ ۚ وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوا بِهِ فَسَيَقُولُونَ هَذَا إِفْكٌ قَدِيمٌ ۝

وَمِنْ قَبْلِهِ كَتَبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ وَهَذَا كِتَابٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانِ عَزَبِيَّا لِّيُنْذِرَ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۖ وَبُشْرَىٰ لِلْمُحْسِنِينَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا

* इस स्थान पर अरबी शब्द **शाहिद** (गवाही देने वाला) से अभिप्राय हज़रत मूसा अलै. हैं। और उनके ईमान लाने का अर्थ आने वाले नबी अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाना है। जिनके आगमन की उन्होंने ने गवाही दी थी। जैसा कि बाइबिल में लिखा है “मैं उनके लिए उनके भाइयों के बीच में से तेरे समान एक नबी को उत्पन्न करूँगा और अपना वचन उसके मुँह में डालूँगा और जिस बात की मैं उसे आज्ञा दूँगा वही वह उनको कह सुनाएगा।” (व्यवस्थाविवरण 18:18)

यहाँ पर तुम ने अहंकार किया से अभिप्राय बनी-इस्राईल का वह सम्प्रदाय है जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इनकार करने वाला था। उन्हें समझाया गया है कि तुम्हारे धर्म का संस्थापक तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाता था परन्तु तुम उसके अस्वीकारी हो। अर्थात् सदा से ही तुम्हारा आचरण इनकार करना है जो अहंकार के कारण उत्पन्न होता है।

पर) अडिग रहे तो न उन को कोई भय होगा और न वे शोकग्रस्त होंगे ।।4।

ये ही स्वर्ग निवासी हैं, उसमें सदा रहने वाले हैं, उन कर्मों के प्रतिफल स्वरूप जो वे किया करते थे ।।5।

और हमने मनुष्य को ताकीद के साथ आदेश दिया कि अपने माता-पिता से सद-व्यवहार करे । उसे उसकी माँ ने कष्ट के साथ (गर्भ में) उठाए रखा और कष्ट ही के साथ उसे जन्म दिया । और उसके गर्भ-धारण और दूध छुड़ाने का समय तीस महीना है । यहाँ तक कि जब वह अपनी परिपक्व आयु को पहुँचा और चालीस वर्ष का हो गया तो उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मुझे सामर्थ्य प्रदान कर कि मैं तेरी इस नेमत पर कृतज्ञता प्रकट कर सकूँ जो तूने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर की। और ऐसे नेक कर्म करूँ जिन से तू प्रसन्न हो । और मेरे लिए मेरी संतान का भी सुधार कर दे । निश्चित रूप से मैं तेरी ही ओर लौटता हूँ और निःसन्देह मैं आज्ञाकारियों में से हूँ ।।6।

यही वे लोग हैं कि जो कुछ उन्होंने किया उसमें से उत्कृष्ट कर्म को हम उनकी ओर से स्वीकार करेंगे । और उनकी बुराइयों को क्षमा करेंगे । वे स्वर्ग निवासियों में से होंगे । यह सच्चा वादा है जो उनसे किया जाता था ।।7।*

فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ١٤

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ١٥

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۖ
حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ
وَحَمْلُهُ وَفُصْلُهُ ثَلَاثُونَ شَهْرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا
بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِينَ سَنَةً ۖ قَالَ
رَبِّ أَوْزِعْنِي أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِي
أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلَىٰ وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ
صَالِحًا تَرْضَاهُ ۖ وَأَصْلِحْ لِي فِي ذُرِّيَّتِي ۖ
إِنِّي تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ١٦

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا
عَمِلُوا وَتَتَجَاوَرُ عَنْ سَيِّئَاتِهِمْ ۖ فِ
أَصْحَابِ الْجَنَّةِ ۖ وَعَدَ الصَّدَقِ الَّذِي
كَانُوا يُوعَدُونَ ١٧

* जो कुछ उन्होंने किया उस में से उत्कृष्ट कर्म से तात्पर्य यह है कि अल्लाह तआला मोमिनों के कुछ कम अच्छे कर्मों के अनुसार नहीं अपितु उनके कर्मों के उत्कृष्ट भाग के अनुसार उनको प्रतिफल देगा ।

और वह जिसने अपने माता-पिता से कहा, खेद है तुम दोनों पर । क्या तुम मुझे इस बात से डराते हो कि मैं (मृत्योपरान्त पुनः) निकाला जाऊँगा ! हालाँकि मुझ से पहले कितनी ही जातियाँ गुज़र चुकी हैं । और उन दोनों ने अल्लाह से फ़रियाद करते हुए कहा : सर्वनाश हो तेरा । ईमान ले आ । निःसन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है । तब वह कहने लगा, ये केवल पहले लोगों की कहानियाँ हैं । 118।

यही वे लोग हैं जिन पर वह आदेश सत्य सिद्ध हो गया जो उनसे पूर्व जिनों और मनुष्यों की बीती हुई जातियों पर सत्य सिद्ध हुआ था । निश्चित रूप से ये सब घाटा पाने वाले लोग हैं । 119।

और सबके लिए जो वे करते रहे उसके अनुसार दर्जे हैं । ताकि (अल्लाह) उनके कर्मों का उन्हें पूरा-पूरा प्रतिफल प्रदान करे और उन पर अत्याचार नहीं किया जाएगा । 120।

और उस दिन को याद करो जब वे लोग जिन्होंने इनकार किया अग्नि के सामने पेश किए जाएंगे । (और कहा जाएगा) तुम अपनी सब अच्छी चीज़ें अपने सांसारिक जीवन में ही समाप्त कर बैठे हो और उनसे अस्थायी लाभ उठा चुके हो । अतः आज के दिन तुम इस कारण अपमानजनक अज़ाब दिए जाआगे कि तुम धरती में अनुचित रूप से अहंकार करते थे । और इस

وَالَّذِي قَالَ لِوَالَيْهِ أَقِ لَكُمْ
أَتَعْدِنِي أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ
الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِي ۖ وَهُمَا يَسْتَغِيثَنِ اللَّهَ
وَيْلَكَ مِنْ ۚ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۖ فَيَقُولُ
مَا هَذَا إِلَّا آسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي
أَمْرِ قَدْ خَلَتِ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ
وَالْإِنْسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ ۝

وَلِكُلِّ دَرَجَةٍ مِمَّا عَمِلُوا
وَلِيُوفيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ ۖ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُونَ ۝

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ ۖ
أَذْهَبْتُمْ طَيْبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا
وَأَسْتَمْتُمْ بِهَا ۖ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ
الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي
الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۖ بِمَا كُنْتُمْ

कारण (भी) कि तुम दुष्कर्म किया करते थे ।21। (रुकू 2/2)

और आद (जाति) के भाई को याद कर । जब उसने अपनी जाति को रेत के टीलों के पास सतर्क किया, जबकि उसके सामने भी और उससे पूर्व भी बहुत सी सतर्कवाणियाँ बीत चुकी थीं, कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की उपासना न करो । निःसन्देह मैं तुम पर एक बहुत बड़े दिन के दण्ड से अज़ाब हूँ ।22।

उन्होंने कहा, क्या तू हमारे पास इस कारण आया है कि हमें अपने उपास्यों से हटा दे । अतः यदि तू सच्चा है तो उसे ले आ जिसका तू हमें डरावा देता है ।23।

उसने कहा, निःसन्देह ज्ञान तो केवल अल्लाह ही के पास है । और मैं तो तुम्हें वह संदेश पहुँचा रहा हूँ जिसके साथ मुझे भेजा गया है । परन्तु मैं तुम्हें बड़े मूर्ख लोग देख रहा हूँ ।24।

अतः जब उन्होंने उसे एक बादल के रूप में देखा जो उनकी घाटियों की ओर बढ़ रहा था तो कहा, यह एक ऐसा बादल है जो हम पर बारिश बरसाने वाला है । नहीं ! बल्कि यह तो वही है जिसे तुम शीघ्रता से मांगा करते थे । यह एक ऐसा झकड़ है जिसमें पीड़ाजनक अज़ाब है ।25।

(जो) प्रत्येक वस्तु को अपने रब्ब के आदेश से नष्ट कर देता है । अतः वे ऐसे

عَفُوًّا

تَفْسُقُونَ ٢١

وَأَذْكُرَ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ
بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَّتِ النَّذْرُ مِنْ بَيْنِ
يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيمٍ ٢٢

قَالُوا أَاجْتَنَّا لِقَافِكُنَا عَنْ الْهَيْئَةِ فَأْتِنَا
بِمَا تَعِدُنَا إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ٢٣

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا
أُرْسِلْتُ بِهِ وَلَكِنِّي أَرِكُمْ قَوْمًا
تَجْهَلُونَ ٢٤

فَلَمَّا رَأَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ أَوْدِيَّتِهِمْ
قَالُوا هَذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا بَلْ هُوَ مَا
اسْتَعْجَلْتُمْ بِهِ رِيحٌ فِيهَا عَذَابٌ أَلِيمٌ ٢٥

تُدْمِرُ كُلَّ شَيْءٍ بِأَمْرِ رَبِّهَا فَأَصْبَحُوا

(नष्ट) हो गए कि उनके घरों के अतिरिक्त कुछ दिखाई नहीं देता था । इसी प्रकार हम अपराधी लोगों को प्रतिफल दिया करते हैं । 126।

और निःसन्देह हमने उन्हें वह दृढ़ता प्रदान की थी जो दृढ़ता तुम्हें प्रदान नहीं की । और हमने उनके कान और आँखें और उनके दिल बनाए थे । फिर उनके कान और उनकी आँखें और उनके दिल कुछ भी उनके काम न आ सके, जब उन्होंने अल्लाह की आयतों का हठधर्मिता के साथ इनकार किया । और जिस बात की वे खिल्ली उड़ाया करते थे उसी ने उन्हें घेर लिया । 127। (रकू 3/3) और निःसन्देह हम तुम्हारे इर्द-गिर्द की बस्तियों को भी तबाह कर चुके हैं । और हमने चिह्नों को फेर-फेर कर वर्णन किया ताकि वे लौट आयें । 128।

फिर क्यों न उन लोगों ने उनकी सहायता की जिनको उन्होंने (अल्लाह की) निकटता प्राप्ति के उद्देश्य से अल्लाह के सिवा उपास्य बना रखा था ? बल्कि वे तो उनसे खोये गये । और यह उनके झूठ का परिणाम था और उसका जो वे झूठ गढ़ा करते थे । 129।

और जब हमने जिनमें से एक समूह का ध्यान तेरी ओर फेर दिया जो कुरआन सुना करते थे । जब वे उसके समक्ष उपस्थित हुए तो उन्होंने कहा, चुप हो जाओ । फिर जब बात समाप्त

لَا يَرَى إِلَّا مَسْكِنُهُمْ ۚ كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۝

وَلَقَدْ مَكَّنَّهُمْ فِيمَا إِنْ مَكَّنَّاكُمْ فِيهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَآبْصَارًا وَأَفْئِدَةً ۚ فَمَا أَعْنَى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَا أَبْصَارُهُمْ وَلَا أَفْئِدَتُهُمْ مِنْ شَيْءٍ ۚ إِذْ كَانُوا يَجْحَدُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِنَ الْقُرَىٰ وَصَرَّفْنَا الْآيَاتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ۝

فَلَوْلَا نَصْرُهُمُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ قُرْبَانًا آلِهَةً ۚ بَلْ صَلُّوا عَلَيْهِمْ ۚ وَذَلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

وَإِذْ صَرَفْنَا إِلَيْكَ نَفَرًا مِنَ الْجِبِ ۖ يَسْتَمِعُونَ الْقُرْآنَ ۖ فَلَمَّا حَضَرُوهُ قَالُوا أَنْصِتُوا ۖ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلَىٰ

हो गई तो (वे) अपनी जाति को सतर्क करते हुए लौट गए। 130।*

उन्होंने कहा, हे हमारी जाति ! निःसन्देह हमने एक ऐसी पुस्तक सुनी जो मूसा के पश्चात उतारी गयी। वह उसकी पुष्टि कर रही थी जो उस से पहले था। वह सत्य की ओर और सन्मार्ग की ओर हिदायत दे रही थी। 131।**

हे हमारी जाति ! अल्लाह की ओर आह्वान करने वाले को स्वीकार करो और उस पर ईमान ले आओ। वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें पीड़ाजनक अज़ाब से बचाएगा। 132।***

और जो अल्लाह की ओर आह्वान करने वाले को स्वीकार नहीं करता तो वह धरती में (उसे) असमर्थ करने वाला नहीं बन सकता। और उसके विरुद्ध उसके कोई संरक्षक नहीं होते। यही वे लोग हैं जो खुली-खुली पथभ्रष्टता में हैं। 133।

और क्या उन्होंने नहीं देखा कि अल्लाह जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया और वह उनकी उत्पत्ति से थका नहीं, इस बात पर समर्थ है कि मृतकों

قَوْمَهُمْ مُنْذِرِينَ ۝

قَالُوا يَاقَوْمَنَا إِنَّا سَمِعْنَا كِتَابًا أُنْزِلَ مِنْ
بَعْدِ مُوسَى مُصَدِّقًا لِمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِي
إِلَى الْحَقِّ وَإِلَى طَرِيقٍ مُسْتَقِيمٍ ۝

يَقَوْمَنَا أَجِيبُوا دَاعِيَ اللَّهِ وَآمِنُوا بِهِ
يَعْرِزْ لَكُمْ مِنْ دُؤُوبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِنْ
عَذَابٍ أَلِيمٍ ۝

وَمَنْ لَا يَجِبْ دَاعِيَ اللَّهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ
فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهُ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءُ ۖ
أُولَئِكَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ
وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْ يَخْلُقْهُمْ يُقْدِرْ

* इस आयत में जिन जिनों का उल्लेख है वे लोक-प्रचलित काल्पनिक जिन नहीं थे बल्कि एक महान जाति के सरदार थे जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सूचना पा कर स्वयं जाकर देखने और निर्णय करने का इरादा किया। अतः जब वे अपनी जाति की ओर लौटे तो उन्हें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई का शुभ-समाचार सुनाया।

** इस आयत में यह बात बिल्कुल स्पष्ट कर दी गई है कि वह नबी आ गया है जिसने हज़रत मूसा अलै. के पश्चात एक सम्पूर्ण शरीअत (धर्म विधान) लानी थी।

*** उन्होंने अपनी जाति की ओर वापसी पर उपरोक्त वर्णन के पश्चात उनको उपदेश दिया कि यह सच्चा नबी है। इस कारण इस पर ईमान ले आओ, इसी में तुम्हारी भलाई है और सावधान किया कि जो भी अल्लाह की ओर बुलाने वाले का इनकार करता है वह उसे असफल नहीं कर सकता।

को जीवित करे ? क्यों नहीं ! निःसन्देह वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । 134।*

और याद रखो उस दिन को जिस दिन वे लोग जिन्होंने इनकार किया अग्नि के सामने पेश किए जाएंगे । (उन्हें कहा जाएगा) क्या यह सच नहीं था ? वे कहेंगे, क्यों नहीं । हमारे रब की सौगन्ध ! (यह सच था) । वह उनसे कहेगा, तो फिर अज़ाब को चखो । इस कारण कि तुम इनकार किया करते थे । 135।

अतः धैर्य धर जैसे दृढ़-संकल्प रसूलों ने धैर्य धारण किया । और उनके विषय में शीघ्रता न कर । जिस दिन वे उसे देखेंगे जिससे उन्हें डराया जाता है तो यूँ लगेगा जैसे दिन की एक घड़ी से अधिक वे (प्रतीक्षा में) नहीं रहे । संदेश पहुँचाया जा चुका है । अतः क्या दुराचारियों के अतिरिक्त भी कोई नष्ट की किया जाता है ? 136। (रुकू 4/4)

عَلَىٰ أَنْ يُخَيَّ الْمَوْتَىٰ ۖ بَلَىٰ إِنَّهُ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ ۚ
أَلَيْسَ هَذَا بِالْحَقِّ ۖ قَالُوا بَلَىٰ وَرَبِّنَا ۚ
قَالَ فَذُوقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنتُمْ
تَكْفُرُونَ ۝

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُوا الْعُرْمِ مِنَ
الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَهُمْ ۚ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ
يَرَوْنَ مَا يُوعَدُونَ لَمْ يَلْبُثُوا إِلَّا
سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ۚ بَلَّغْ ۚ فَهَلْ يَهْلِكُ
إِلَّا الْقَوْمُ الْفَاسِقُونَ ۝

* इस उपदेश के पश्चात इस शाश्वत सत्य की ओर उनका ध्यान आकर्षित किया जिसकी ओर प्रत्येक नबी अपनी जाति को बुलाता है कि वह मृत्यु के पश्चात पुनरुत्थान पर ईमान लाएँ जिसके बिना ईमान सम्पूर्ण नहीं होता ।

47- सूर: मुहम्मद

यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 39 आयतें हैं ।

यद्यपि यह सूर: आयतों की गिनती की दृष्टि से बहुत छोटी है, इसमें व्यवहारिक रूप से कुरआन की पिछली समस्त सूरतों का सारांश वर्णन कर दिया गया है । जैसा कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु व सल्लम सब नबियों के द्योतक थे ।

इस सूर: की आयत सं. 19 में यह कहा गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस वृहद आध्यात्मिक क़यामत के लिए भेजे गए उसके निकट होने के समस्त लक्षण प्रकट हो चुके हैं । अतः उस समय उन लोगों का उपदेश ग्रहण करना किस काम आएगा जब वह क़यामत उपस्थित हो जाएगी ।



سُورَةُ مُحَمَّدٍ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعٌ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعَةٌ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

वे लोग जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से रोका, उसने उनके कर्मों को नष्ट कर दिया ।2।

और वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए और उस पर ईमान लाए जो **मुहम्मद** पर उतारा गया, और वही उनके रब्ब की ओर से सम्पूर्ण सत्य है । उनके दोषों को वह दूर कर देगा और उनकी अवस्था को ठीक कर देगा ।3।

यह इस कारण होगा कि वे जिन्होंने इनकार किया उन्होंने झूठ का अनुसरण किया । और वे जो ईमान लाए उन्होंने अपने रब्ब की ओर से आने वाले सत्य का अनुसरण किया । इसी प्रकार अल्लाह लोगों के सामने उनके उदाहरण वर्णन करता है ।4।

अतः जब तुम उन लोगों से भिड़ जाओ जिन्होंने इनकार किया तो (उनकी) गर्दनो पर प्रहार करना । यहाँ तक कि जब तुम उनका अधिक मात्रा में रक्त बहा लो तो दृढ़तापूर्वक बंधन कसो । फिर इसके पश्चात उपकार स्वरूप अथवा मुक्तिमूल्य लेकर मुक्त करना । यहाँ तक कि युद्ध अपने हथियार डाल दे । ऐसा ही होना चाहिए । और यदि

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ
أَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ ②

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآمَنُوا
بِمَا نَزَّلَ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَهُوَ الْحَقُّ مِنْ
رَبِّهِمْ ③ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ وَأَصْلَحَ
بَالَهُمْ ④

ذَلِكَ بِأَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ
وَأَنَّ الَّذِينَ آمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَبِّهِمْ ⑤
كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللَّهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ ⑥

فَإِذَا لَقِيتُمْ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبُ
الرِّقَابِ ⑦ حَتَّىٰ إِذَا أَتَخْتَمُومُهُمْ
فَشُدُّوا الوثَاقَ ⑧ فَأَمَّا مَتًّا بَعْدَ وَآمًا
فَدَآءَ حَتَّىٰ تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ⑨

अल्लाह चाहता तो स्वयं उनसे प्रतिशोध लेता परन्तु (उसका) उद्देश्य यह है कि वह तुम में से कुछ को कुछ के द्वारा परीक्षा में डाले । और वे लोग जिन्हें अल्लाह के मार्ग में घोर कष्ट पहुँचाया गया, उनके कर्मों को वह कदापि नष्ट नहीं करेगा । 15।*

वह उन्हें हिदायत देगा और उनकी अवस्था ठीक कर देगा । 16।

और उन्हें उस स्वर्ग में प्रविष्ट करेगा जिसे उनके लिए उसने बहुत उत्तम बनाया है । 17।

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! यदि तुम अल्लाह की सहायता करो तो वह तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे पैरों को दृढ़ता प्रदान करेगा । 18।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया उनका सर्वनाश हो और (अल्लाह ने) उनके कर्मों को नष्ट कर दिया । 19।

यह इस लिए था कि जो कुछ अल्लाह ने उतारा उन्होंने उसे नापसन्द किया ।

अतः उसने उनके कर्मों को नष्ट कर दिया । 10।

ذَٰلِكَ ۖ وَلَوْ يَشَاءُ اللَّهُ لَا تَصْرِمُنَّهُمْ
وَلَكِنْ لِّيَبْلُوَ بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ۖ وَالَّذِينَ
قَاتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَلَنْ يُضِلَّ
أَعْمَالَهُمْ ۝

سَيَهْدِيهِمْ وَيُصْلِحْ بِأَلْفِهِمْ ۝

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن تَصْرُوا اللَّهَ
يَصْرِكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا فَتَعْسَاءَ لَهُمْ وَأَصْلٌ
أَعْمَالَهُمْ ۝

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أُنْزِلَ اللَّهُ فَاحْبَطَ
أَعْمَالَهُمْ ۝

- * इस आयत में अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने के प्रमुख उद्देश्य वर्णन कर दिए गए हैं । पहले तो यह कि जिन लोगों ने मोमिनों के विरुद्ध शस्त्र उठाए उन को पराजित करके उस समय तक अवश्य दृढ़तापूर्वक बांधे रखो जब तक युद्ध समाप्त न हो जाए । इसके पश्चात या तो मुक्तिमूल्य लेकर छोड़ दिया जाए अन्यथा बिना मुक्तिमूल्य लिए दया पूर्वक छोड़ दिया जाए तो यह भी बहुत अच्छा है । जो लोग इस्लाम के प्रतिरक्षात्मक युद्धों को बलपूर्वक मुसलमान बनाने के लिए किये गये युद्ध कहते हैं, उनका यह आयत प्रबल रूप से खण्डन करती है । क्योंकि यही सबसे अच्छा अवसर हो सकता था कि उन क्रादियों को मुसलमान बना लिया जाता । परन्तु मुसलमान बनाना तो दूर, उनके ईमान न लाने पर भी उन्हें स्वतन्त्र करने का आदेश दिया गया है । यहाँ तक कि यदि मुक्तिमूल्य भी न लो तो यह भी उत्तम है ।

अतः क्या वे धरती में नहीं फिरे जिसके परिणामस्वरूप वे देख लेते कि उनसे पहले लोगों का अन्त कैसा था ? अल्लाह ने उन पर विनाश की मार डाली और (इन) काफ़िरों से भी उन जैसा ही व्यवहार किया जाएगा ।111।

यह इस लिए है कि अल्लाह उन लोगों का संरक्षक होता है जो ईमान लाए और काफ़िरों का निश्चित रूप से कोई संरक्षक नहीं होता ।12। (रुकू 1/5)

निःसन्देह अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और उन्होंने नेक कर्म किए, ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बह रही होंगी । जबकि वे लोग जिन्होंने इनकार किया अस्थायी लाभ उठा रहे हैं और वे इस प्रकार खाते हैं जैसे पशु खाते हैं । हालाँकि अग्नि उन का ठिकाना है ।13।

और कितनी ही बस्तियाँ थीं जो तेरी (इस) बस्ती से अधिक शक्तिशाली थीं, जिसने तुझे निकाल दिया । हमने उनको नष्ट कर दिया तब कोई उनका सहायक नहीं निकला ।14।

अतः जो अपने रब्ब की ओर से खुली-खुली हिदायत पर हो, क्या उस जैसा हो सकता है जिसे उसके कुकर्म सुन्दर करके दिखाए गए हों और उन्होंने अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया हो ? ।15।

उस स्वर्ग का उदाहरण जिसका मुत्तकियों को वादा दिया जाता है, (यह है कि) उसमें कभी प्रदूषित न होने वाले

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
دَمَّرَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلِلْكَافِرِينَ أَمْثَالُهَا ⑪

ذَٰلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ مَوْلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَأَنَّ
الْكَافِرِينَ لَا مَوْلَى لَهُمْ ⑫

إِنَّ اللَّهَ يَدْخُلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ وَالَّذِينَ كَفَرُوا يَتَمَتَّعُونَ
وَيَأْكُلُونَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ
مَثْوًى لَهُمْ ⑬

وَكَايْنٍ مِنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً
مِنْ قَرْيَتِكَ الَّتِي أَخْرَجْتِكَ ۚ أَهْلَكَنَاهُمْ
فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ⑭

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِنْ رَبِّهِ كَمَنْ زُرِّيْنَ
لَهُ سُوءُ عَمَلٍ ۖ وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ ⑮

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعدَ الْمُتَّقُونَ ۖ فِيهَا
أَنْهَارٌ مِنْ مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ ۖ وَأَنْهَارٌ مِنْ

पानी की नहरें और दूध की नहरें हैं जिसका स्वाद नहीं बिगड़ता । और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों के लिए खूब स्वादिष्ट है । और ऐसे शहद की नहरें हैं जो विशुद्ध है । और उनके लिए उसमें प्रत्येक प्रकार के फल होंगे और उनके रत्न की ओर से बड़ा क्षमादान भी (होगा) । क्या (ऐसे लोग) उस जैसे हो सकते हैं जो अग्नि में लम्बे समय तक रहने वाला हो और खौलता हुआ पानी उन्हें पिलाया जाए जो उनकी अन्तड़ियाँ काट कर रख दे ॥6॥*

और उनमें वे भी हैं जो (प्रत्यक्ष रूप से) तेरी ओर कान धरते हैं । यहाँ तक कि जब वे तेरे पास से चले जाते हैं तो उन लोगों से जिन्हें ज्ञान दिया गया है पूछते हैं कि अभी अभी उसने क्या कहा था ? यही वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी और उन्होंने अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया ॥7॥

और वे लोग जिन्होंने हिदायत पाई उनको उसने हिदायत में बढ़ा दिया और उनको उनका तक्रवा प्रदान किया ॥8॥

अतः क्या वे केवल निश्चित घड़ी की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह सहसा उनके

لَبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ ۖ وَأَنْهَرٌ مِّنْ خَمْرٍ
لَّذَّةٌ لِلشَّارِبِينَ ۖ وَأَنْهَرٌ مِّنْ عَسَلٍ
مُّصَفًّى ۖ وَلَهُمْ فِيهَا مِن كُلِّ الثَّمَرَاتِ
وَمَغْفِرَةٌ مِّن رَّبِّهِمْ ۚ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ
فِي النَّارِ وَسُقُوا مَاءً حَمِيمًا فَقَطَّعَ
أَمْعَاءَهُمْ ۝٦

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَمِعُ إِلَيْكَ ۚ حَتَّىٰ إِذَا
خَرَجُوا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوا لِلَّذِينَ أُوتُوا
الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ أَنفَا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ
طَبَعَ اللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ وَاتَّبَعُوا
أَهْوَاءَهُمْ ۝٧

وَالَّذِينَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَاتَّبَهُمْ
تَقْوَاهُمْ ۝٨

فَهَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ

* यह आयत लगातार उपमाओं का वर्णन कर रही है । क्योंकि इस भौतिक संसार में तो न पानी खड़ा रहने पर प्रदूषित होने से बच सकता है, न दूध खराब होने से बच सकता है, न शराब ऐसी हो सकती है जो केवल स्वादिष्ट हो परन्तु नशा न दे । और इस संसार में तो मनुष्य को यदि केवल यही वस्तुएँ उपलब्ध हों तो कभी इन्हीं वस्तुओं पर ही संतुष्ट नहीं हो सकता । अतः स्पष्ट रूप से ये उपमाएँ हैं । जो लोग संसार में इन वस्तुओं को अच्छा समझते हैं अथवा उनसे लाभ जुड़ा हुआ देखते हैं, उनको शुभ-समाचार दिया जा रहा है कि स्वर्ग में उनको उनके लाभ की सर्वश्रेष्ठ वस्तुएँ प्रदान की जाएंगी ।

पास आ जाए ? अतः उसके लक्षण तो प्रकट हो चुके हैं । फिर जब वह भी उनके पास आ जाएगी तो उस समय उनका उपदेश ग्रहण करना उनके किस काम आएगा ? 119।

अतः जान ले कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं और अपनी भूल-चूक के प्रति तथा मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों के लिए भी क्षमा याचना कर । और अल्लाह तुम्हारे यात्रा कालीन ठिकानों को खूब जानता है और स्थायी ठिकानों को भी 120। (रकू 2/6)

और वे लोग जो ईमान लाए हैं, कहेंगे कि क्यों न कोई सूर: उतारी गई ? अतः जब कोई निर्णायक सूर: उतारी जाएगी और उसमें युद्ध का वर्णन किया जाएगा तो वे लोग जिनके दिलों में रोग है तू उन्हें देखेगा कि वे तेरी ओर इस प्रकार देखते हैं जैसे वह व्यक्ति देखता है जिस पर मृत्यु की मूर्च्छा छा गई हो । अतः सर्वनाश हो उनका 121।

आज्ञापालन और अच्छी बात चाहिए । अतः अब जबकि यह बात पक्की हो चुकी है, यदि वे अल्लाह के प्रति निष्ठावान होते तो अवश्य उनके लिए उत्तम होता 122।

क्या तुम्हारे लिए संभव है कि यदि तुम प्रबन्धक बन जाओ तो धरती में उपद्रव करते फिरो और अपने निकट-सम्बन्धों को काट दो ? (कदापि नहीं) 123।

بَعَثَتْ فَقَدْ جَاءَ أَشْرَاطُهَا فَأَنَّى لَهُمْ إِذَا
جَاءَتْهُمْ ذِكْرُهُمْ ⑩

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاسْتَغْفِرْ
لِذُنُوبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوَاكُمْ ⑪

وَيَقُولُ الَّذِينَ آمَنُوا لَوْلَا نَزَّلَتْ سُورَةٌ
فَإِذَا أَنْزَلَتْ سُورَةٌ مُحْكَمَةٌ وَذُكِرَ فِيهَا
الْقِتَالُ رَأَيْتُ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ
مَرَضٌ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ
عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ فَأُولَئِكَ لَهُمْ ⑫

طَاعَةً وَقَوْلٌ مَعْرُوفٌ فَإِذَا عَزَمَ
الْأَمْرُ فَلَوْ صَدَقُوا اللَّهَ لَكَانَ خَيْرًا
لَّهُمْ ⑬

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي
الْأَرْضِ وَتَقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ⑭

यही वे लोग हैं जिन पर अल्लाह ने ला'नत की और उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आँखों को अंधा कर दिया ।24।

अतः क्या वे कुरआन पर चिंतन-मनन नहीं करते अथवा उनके दिलों पर ताले पड़े हुए हैं ? ।25।

निःसन्देह वे लोग जो अपनी पीठ दिखाते हुए धर्म से फिर गए, जब कि उन पर हिदायत स्पष्ट हो चुकी थी । शैतान ने उन्हें (उनके कर्म) सुन्दर करके दिखाए और उन्हें झूठी आशाएँ दिलाई ।26।

यह इसलिए हुआ कि जो अल्लाह ने उतारा, उस से जिन लोगों ने घृणा की उनसे उन लोगों ने (यह) कहा कि हम अवश्य कुछ बातों में तुम्हारा आज्ञापालन करेंगे । और अल्लाह उनकी गोपनीयता को जानता है ।27।

अतः (उनकी) क्या दशा होगी जब फ़रिश्ते उन्हें मृत्यु देंगे ? वह उनके चेहरों और पीठों पर आघात लगाएँगे ।28।

यह परिणाम है उसका कि उन्होंने उस बात का अनुसरण किया जो अल्लाह को अप्रसन्न करती है और उसकी प्रसन्नता को नापसन्द किया । अतः उसने उनके कर्म नष्ट कर दिए ।29। (रुकू 3/7)

क्या वे लोग जिन के दिलों में रोग है धारणा करते हैं कि अल्लाह उनके द्वेषों को बाहर नहीं निकालेगा ? ।30।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فَأَصَمَّهُمْ
وَأَعَىٰ أَبْصَارَهُمْ ۖ

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ
أَقْفَالُهَا ۖ

إِنَّ الَّذِينَ ارْتَدُّوا عَلَىٰ أَدْبَارِهِم مِّن بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَىٰ الشَّيْطَانُ سَوَّلَ
لَهُمْ ۖ وَأَمْلَىٰ لَهُمْ ۖ

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لِلَّذِينَ كَرِهُوا مَا نَزَّلَ
اللَّهُ سَطِيعُكُمْ فِي بَعْضِ الْأَمْرِ ۖ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ ۖ

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلَائِكَةُ يُضْرَبُونَ
وُجُوهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ۖ

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اتَّبَعُوا مَا آسَخَطَ اللَّهُ
وَكَرِهُوا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ۖ

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ أَن
لَّن يُخْرِجَ اللَّهُ أَضْغَانَهُمْ ۖ

और यदि हम चाहें तो तुझे अवश्य वे लोग दिखा देंगे । और तू उनको अवश्य उनके लक्षणों से जान लेगा और उनको उनकी बोल-चाल से अवश्य पहचान लेगा और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को जानता है । 131।*

और हम अवश्य तुम्हारी परीक्षा लेंगे । यहाँ तक कि तुम में से जिहाद करने वाले और धैर्य धरने वाले को सुस्पष्ट कर दें और तुम्हारी अवस्था को परख लें । 132।

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोका और रसूल का विरोध किया, जबकि हिदायत उन पर स्पष्ट हो चुकी थी, वे कदापि अल्लाह को कुछ हानि पहुँचा नहीं सकेंगे । और वह अवश्य उनके कर्मों को नष्ट कर देगा । 133।

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो और अपने कर्मों को बर्बाद न करो । 134।

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने इनकार किया और अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोका, फिर वे इस अवस्था में मर गए कि वे काफिर थे तो अल्लाह कदापि उनको क्षमा नहीं करेगा । 135।

وَلَوْ نَشَاءُ لَأَرَيْنَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ
بِسِيمَتِهِمْ ۖ وَتَعْرِفَهُمْ فِي لَحْنِ الْقَوْلِ ۖ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ ۝

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتَّىٰ نَعْلَمَ الْمُجْتَهِدِينَ
مِنْكُمْ وَالصَّابِرِينَ ۖ وَتَبْلُواْ أَعْبَارَكُمْ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُواْ وَصَدُّواْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ
وَشَاقُّواْ الرَّسُولَ مِنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ
الْهُدَىٰ ۖ لَن يَضُرُّواْ اللَّهَ شَيْئًا ۖ وَسَيُجِطُّ
أَعْمَالُهُمْ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَطِيعُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا
الرَّسُولَ وَلَا تَبْطُلُواْ أَعْمَالَكُمْ ۝

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُواْ وَصَدُّواْ عَن سَبِيلِ اللَّهِ
ثُمَّ مَاتُواْ وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَن يَغْفِرَ اللَّهُ
لَهُمْ ۝

* आयत सं. 30-31 : इन आयतों में मुनाफ़िकों को सावधान किया गया है कि यदि वे यह समझते हैं कि वे अपने सीनों में ईर्ष्या और द्वेष को छिपाए रहेंगे और किसी को पता नहीं चलेगा तो यह नहीं हो सकता । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कहा कि उनको तू उनके चेहरों और बोल-चाल से ही पहचान लेता है । अतः मुनाफ़िक संभवतः सीधे सादे लोगों से छिपे रह सकते हों परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी अवस्था के बारे में भली-भाँति अवगत थे ।

अतः कमज़ोरी न दिखाओ कि संधि की ओर बुलाने लगे जबकि तुम ही विजयी होने वाले हो । और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह कदापि तुम्हें तुम्हारे कर्मों (का बदला) कम नहीं देगा ।36।

निःसन्देह संसार का जीवन केवल खेल-कूद और आत्मलिप्साओं को पूरा करने का ऐसा साधन है जो परम उद्देश्य से असावधान कर दे । और यदि तुम ईमान लाओ और तक्रवा धारण करो तो वह तुम्हें तुम्हारे प्रतिफल प्रदान करेगा और तुमसे तुम्हारी धन-सम्पत्ति नहीं माँगेगा ।37।

यदि वह तुमसे वह (धन) माँगे और तुम्हारे पीछे पड़ जाए तो तुम कंजूसी करोगे और वह तुम्हारी ईर्ष्या को बाहर निकाल देगा ।38।

देखो ! तुम वे लोग हो कि तुम्हें अल्लाह के पथ में खर्च करने के लिए बुलाया जाता है । फिर तुम में से वह भी है जो कंजूसी से काम लेता है । हालाँकि जो कंजूसी से काम लेता है तो वह निश्चित रूप से अपनी ही जान के विरुद्ध कंजूसी करता है । अल्लाह धनवान् है और तुम कंगाल हो । यदि तुम फिर जाओ तो वह तुम्हारे बदले अन्य लोगों को ले आएगा । फिर वे तुम्हारी भाँति नहीं होंगे ।39।

(रुकू 4/8)

فَلَا تَهْنُؤُوا وَتَدْعُوا إِلَى السَّلَامِ ۚ وَأَنْتُمْ
الْأَعْلَوْنَ ۚ وَاللَّهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَتْرُكَكُمْ
أَعْمَالَكُمْ ۝۳۶

إِنَّمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُوَ ۖ وَإِنْ
تُؤْمِنُوا وَتَتَّقُوا يُؤْتِكُمْ أَجُورَكُمْ
وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ ۝۳۷

إِنْ يَسْأَلْكُمْ مَوَالَهُمْ فَيُحْفِكُمْ تَبَخَّلُوا
وَيَخْرِجُ أَصْغَانَكُمْ ۝۳۸

هَآأَنْتُمْ هَؤُلَاءِ تُدْعُونَ لِتُقْفُوا فِي
سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَمِنْكُمْ مَنْ يَبْخُلُ ۚ وَمَنْ
يَبْخُلْ فَإِنَّمَا يَخِلْ عَنْ نَفْسِهِ ۖ وَاللَّهُ
الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَاءُ ۚ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا
يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُونُوا
أَمْثَالَكُمْ ۝۳۹

ع

48- सूर: अल-फ़तह

यह सूर: हुदैबिया नामक स्थान पर मक्का के काफ़िरों के साथ ऐतिहासिक संधि करके वापसी पर उतरी। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 30 आयतें हैं।

सूर: मुहम्मद के बाद सूर: अल्-फ़तह आती है, जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्ल. के ऊँचे रुतबे का उल्लेख किया गया है जो आयत सं. 11 में वर्णित है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का रुतबा इतना ऊँचा था कि पूर्ण रूप से वह अल्लाह तआला के हो गए थे और इसी कारण उनका आगमन मानो अल्लाह तआला का आगमन था। उन के हाथ पर बैअत करना मानो अल्लाह तआला के हाथ पर बैअत करना था। जैसा कि फ़र्माया **निःसन्देह वे लोग जो तेरी बैअत करते हैं वे अल्लाह ही की बैअत करते हैं। अल्लाह का हाथ है जो उनके हाथ पर है।** (आयत सं. 11)

आयत सं. 19 में अल्लाह तआला की बैअत वाली विषयवस्तु की पुनरावृत्ति की गई है। जब हुदैबिया संधि के अवसर पर एक वृक्ष के नीचे मोमिन हज़रत मुहम्मद सल्ल. के हाथ पर बैअत की प्रतिज्ञा की पुनरावृत्ति कर रहे थे। इसके साथ ही यह वादा कर दिया गया कि सहाबा रजि. के दिल में हज्ज न करने के कारण जो भी कसक थी वह इस बैअत के पश्चात पूर्ण रूप से दूर कर दी गई और संपूर्ण संतुष्टि प्राप्त हुई और जिस बात को पराजय समझा जाता था अर्थात् मक्का में प्रविष्ट न हो पाना, उसने भविष्य में समस्त प्रकार के विजय की नींव डाल दी। जिनमें निकट की विजय भी शामिल थी और बाद में आने वाली विजय भी।

अन्त में मोमिनों से वादा किया गया है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो स्वप्न दिखाया गया था वह निश्चित रूप से सत्य के साथ पूरा होगा। और सहाबा रजि. उस पर साक्षी ठहरेंगे कि वे हज्ज के धार्मिक कृत्यों को पूरा करते हुए मक्का नगरी में प्रवेश करेंगे। और यह मक्का विजय समग्र मानव जाति पर विजय प्राप्ति का आधार बनेगी।

सूर: मुहम्मद के पश्चात इस सूर: में फिर हज़रत मुहम्मद सल्ल. के नाम का उल्लेख किया गया और स्पष्ट रूप से हज़रत मूसा अलै. की उस भविष्यवाणी का उल्लेख कर दिया गया जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन का उन के 'मुहम्मद' नाम के साथ प्रकट किया गया था और उन समस्त सद्गुणों का उल्लेख किया गया जो उस महान प्रतापी नबी और उसके साहाबियों के लिए निश्चित थे। फिर बाइबिल की एक भविष्यवाणी का वर्णन किया गया। अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्ल. के आगमन की भविष्यवाणी केवल बाइबिल के 'पुराने नियम' में ही नहीं बल्कि 'नये

नियम' में भी हज़रत ईसा अलै. के द्वारा की गई थी जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सौम्य रूप का द्योतक है । और एक ऐसी खेती से उसका उदाहरण दिया गया है जिसे कोई अहंकारी अपने बुरे इरादों के बावजूद कुचलने में सफल नहीं होगा और एक नहीं बल्कि कई कृषिकार ऐसे होंगे जो वह खेती लगाएंगे ।



سُورَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثُونَ آيَةً وَأَرْبَعَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

निःसन्देह हमने तुझे खुली-खुली विजय प्रदान की है ।2।

ताकि अल्लाह तुझे तेरी अतीत की और भविष्य में होने वाली प्रत्येक भूल-चूक को क्षमा कर दे । और तुझ पर अपनी नेमत को पूरा करे और सन्मार्ग पर परिचालित करे ।3।*

और अल्लाह तेरी वह सहायता करे जो सम्मान जनक और प्रभुत्व वाली सहायता हो ।4।

वही है जिसने मोमिनों के दिलों में प्रशान्ति उतारी ताकि वे अपने ईमान के साथ ईमान में अधिक बढ़ें । और आकाशों और धरती की सेनाएँ अल्लाह ही की सम्पत्ति हैं । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है ।5।

ताकि वह मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करे

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُبِينًا ②

يَغْفِرُ لَكَ اللَّهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَيَهْدِيكَ صِرَاطًا مُسْتَقِيمًا ③

وَيُضْرِكَ اللَّهُ نَصْرًا عَزِيزًا ④

هُوَ الَّذِي أَنْزَلَ السَّكِينَةَ فِي قُلُوبِ الْمُؤْمِنِينَ لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَعَ إِيمَانِهِمْ ⑤ وَلِلَّهِ جُودُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ⑥ وَكَانَ اللَّهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ⑦

لِيَدْخُلَ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ جَنَّاتٍ

* आयत संख्या 2-3 : इन आरम्भिक आयतों में मोमिनों को यह शुभ-समाचार दिया गया है कि उनको शानदार विजय प्राप्त होगी ।

आयत सं. 3 में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए अरबी शब्द ज़ंब प्रयुक्त हुआ है जिससे अभिप्राय पाप नहीं है । इसका यह अर्थ नहीं है कि जिस प्रकार तू पहले पाप किया करता था इसी प्रकार आगे भी करता चला जा तो सब पाप क्षमा कर दिए जाएंगे । वास्तविक अर्थ यह है कि जिस प्रकार तू पहले भी पाप से पवित्र था, जिस पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सारा जीवन साक्षी है इसी प्रकार भविष्य में भी अल्लाह तआला सुरक्षा का वादा करता है । यहाँ तक कि नेमत संपूर्ण हो जाए । यहाँ नेमत से अभिप्राय नुबुव्वत है ।

जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे उनमें सदा रहने वाले होंगे । और वह उनसे उनकी बुराइयाँ दूर कर दे । और अल्लाह के निकट यह एक बहुत बड़ी सफलता है । 6।

और ताकि वह मुनाफ़िक पुरुषों और मुनाफ़िक स्त्रियों को और मुश्रिक पुरुषों और मुश्रिक स्त्रियों को अज़ाब दे जो अल्लाह पर कु-धारणा रखते हैं । विपत्तियों का चक्र स्वयं उन्हीं पर पड़ेगा और अल्लाह उन पर क्रोधित है । और उन पर ला'नत करता है और उसने उनके लिए नरक तैयार किया है और वह बहुत बुरा ठिकाना है । 7।

और आकाशों और धरती की सेनाएँ अल्लाह ही की हैं । और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है । 8।

निःसन्देह हमने तुझे एक गवाह तथा शुभ-समाचार दाता और सतर्ककारी के रूप में भेजा । 9।

ताकि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसकी सहायता करो और उसका सम्मान करो और सुबह और शाम उसका गुणगान करो । 10।

निःसन्देह वे लोग जो तेरी बैअत करते हैं वे अल्लाह ही की बैअत करते हैं । अल्लाह का हाथ है जो उनके हाथ पर है। अतः जो कोई प्रतिज्ञाभंग करे तो वह अपने ही हित के विरुद्ध प्रतिज्ञाभंग

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَيُكَفَّرُ عَنْهُمْ سَيِّئَاتِهِمْ ۖ وَكَانَ ذَلِكَ عِنْدَ اللَّهِ فَوْزًا عَظِيمًا ۝

وَيُعَذِّبُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ الظَّالِمِينَ بِاللَّهِ ظُلْمٌ السَّوْءُ ۖ عَلَيْهِمْ ذَائِرَةُ السَّوْءِ ۖ وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۖ وَسَاءَتْ مَصِيرًا ۝

وَاللَّهُ جُنُودُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ۝

لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُعَزِّرُوهُ وَتُوَقِّرُوهُ ۖ وَتُسَبِّحُوهُ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۝

إِنَّ الَّذِينَ يَبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يَبَايِعُونَ اللَّهَ ۖ يَدُ اللَّهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ ۖ فَمَنْ نَكَثَ فَإِنَّمَا

करता है। और जो उस प्रतिज्ञा को पूरा करे जो उसने अल्लाह से की है, तो निःसन्देह वह उसे बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा 111। (रकू 1/9)

मरुभूमि निवासियों में से पीछे छोड़ दिए जाने वाले तुझ से अवश्य कहेंगे कि हमें हमारी धन-सम्पत्तियों और हमारे घर वालों ने व्यस्त रखा। अतः हमारे लिए (अल्लाह के निकट) क्षमा याचना कर। वे अपनी जिह्वा से वह कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है। तू कह दे कि यदि वह (अल्लाह) तुम्हें कष्ट पहुँचाना चाहे अथवा लाभ पहुँचाने का विचार करे, तो कौन है जो अल्लाह के मुक्राबले पर तुम्हारे पक्ष में कुछ भी क्षमता रखता है? सच यह है कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से खूब अवगत रहता है 112।

बल्कि तुम धारणा करते रहे कि रसूल और ईमान लाने वाले अपने घर वालों की ओर कभी लौट कर नहीं आएँगे। और यह बात तुम्हारे दिलों को सुन्दर करके दिखाई गई। और तुम दुर्विचार करते रहे और तबाह होने वाले लोग बन गए 113।

और जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान नहीं लाया तो निःसन्देह हमने काफ़िरों के लिए भड़काने वाली अग्नि तैयार कर रखी है 114।

और आकाशों और धरती का साम्राज्य अल्लाह ही का है। वह जिसे चाहता है

يَنْكُثْ عَلَى نَفْسِهِ ۚ وَمَنْ أَوْفَى بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللَّهُ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا ۝ ١١١

سَيَقُولُ لَكَ الْمُخَلَّفُونَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَا أَمْوَالُنَا وَأَهْلُونَا فَاسْتَغْفِرْنَا ۖ يَقُولُونَ بِالسَّتِيزَةِ مَا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ ۚ قُلْ فَمَنْ يَمْلِكُ لَكُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۚ بَلْ كَانَ اللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرًا ۝ ١١٢

بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَنْ يَنْقَلِبَ الرَّسُولُ وَالْمُؤْمِنُونَ إِلَىٰ أَهْلِيهِمْ أَبَدًا ۖ وَرَبِّكَ فِي قُلُوبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنًّا سَوْءًا ۚ وَكُنْتُمْ قَوْمًا بُورًا ۝ ١١٣

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمَرْ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ فَإِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَعِيرًا ۝ ١١٤

وَاللَّهُ مَلِكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَغْفِرُ

क्षमा कर देता है । और जिसे चाहता है अज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।15।

जब तुम युद्धलब्ध धन को प्राप्त करने के लिए जाओगे तो वे लोग जो पीछे छोड़ दिए गए, अवश्य कहेंगे कि हमें भी अपने पीछे आने दो । वे चाहते हैं कि अल्लाह के वाक्य को बदल दें । तू कह दे कि तुम कदापि हमारे पीछे नहीं आओगे । इसी प्रकार अल्लाह ने पहले ही कह दिया था। इस पर वे कहेंगे, वस्तुतः तुम तो हम से ईर्ष्या रखते हो । सच यह है कि वह बहुत ही कम समझते हैं ।16।

मरुभूमि निवासियों में से पीछे छोड़ दिए जाने वालों से कह दे कि तुम शीघ्र ही ऐसे लोगों की ओर बुलाए जाओगे जो बड़े जंगजू होंगे । तुम उनसे युद्ध करोगे अथवा वे मुसलमान हो जाएंगे । अतः यदि तुम आज्ञापालन करोगे तो अल्लाह तुम्हें बहुत अच्छा प्रतिफल प्रदान करेगा। और यदि तुम पीठ फेर जाओगे जैसा कि पहले पीठ फेर गए थे तो वह तुम्हें बहुत पीड़ाजनक अज़ाब देगा ।17।

अंधे पर कोई दोष नहीं और न लंगड़े पर कोई दोष है और न रोगी पर कोई दोष है । और जो अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करेगा वह उसे ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । और जो पीठ दिखा जाएगा वह उसे

لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ۝

سَيَقُولُ الْمُخَلَّفُونَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلَى مَغَائِمَ لَنَأْخُذُوهَا ذُرُونَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلِمَ اللَّهِ ۚ قُلْ لَنْ تَتَّبِعُونَا كَذَلِكُمْ قَالَ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ ۚ فَسَيَقُولُونَ بَلْ تَحْسُدُونَنَا ۚ بَلْ كَانُوا لَا يَفْقَهُونَ إِلَّا قَلِيلًا ۝

قُلْ لِلْمُخَلَّفِينَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعُونَ إِلَى قَوْمٍ أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ تُقَاتِلُونَهُمْ أَوْ يُسْلِمُونَ ۚ فَإِنْ تُطِيعُوا يُؤْتِكُمُ اللَّهُ أَجْرًا حَسَنًا ۚ وَإِنْ تَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمَى حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَلَا عَلَى الْمَرِيضِ حَرَجٌ ۚ وَمَنْ يُطِيعِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ وَمَنْ

बहुत पीड़ाजनक अज़ाब देगा 118।
(सूकू 2/10)

निःसन्देह अल्लाह मोमिनों से संतुष्ट हो गया जब वे वृक्ष के नीचे तेरी बैअत कर रहे थे। वह जानता है जो उनके दिलों में था। अतः उसने उन पर प्रशान्ति उतारी और उन्हें एक निकटवर्ती विजय प्रदान की 119।

और भारी मात्रा में युद्धलब्ध धन प्रदान किया जो वे संग्रह कर रहे थे। और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है 120।

अल्लाह ने तुमसे भारी मात्रा में युद्धलब्ध धन का वादा किया है जो तुम प्राप्त करोगे। अतएव यह तुम्हें उसने तुरन्त प्रदान कर दिया और लोगों के हाथ तुम से रोक दिए ताकि यह मोमिनों के लिए एक बड़ा चिह्न बन जाए और वह तुम्हें सीधे रास्ते की ओर हिदायत दे 121।

इसी प्रकार कुछ और भी (विजय) हैं जो अभी तुम्हें प्राप्त नहीं हुईं। निःसन्देह अल्लाह ने उनको आयत्ताधीन कर रखा है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है 122।

और यदि वे लोग तुम से युद्ध करेंगे जिन्होंने इनकार किया तो अवश्य पीठ फेर कर (भाग) जाएंगे। फिर वे न कोई मित्र पाएँगे और न कोई सहायक 123।

यह अल्लाह का नियम है जो पहले भी बीत चुका है और तू अल्लाह के

﴿٤٨﴾

يَتَوَلَّ يُعَذِّبُهُ عَذَابًا آلِيمًا ۝

لَقَدْ رَضِيَ اللَّهُ عَنِ الْمُؤْمِنِينَ إِذْ
يُبَايِعُونَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِي
قُلُوبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِينَةَ عَلَيْهِمْ
وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيبًا ۝

وَمَغَانِمَ كَثِيرَةً يَأْخُذُونَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ
عَزِيزًا حَكِيمًا ۝

وَعَدَكُمُ اللَّهُ مَغَانِمَ كَثِيرَةً تَأْخُذُونَهَا
فَعَجَّلَ لَكُمْ هَذِهِ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ
عَنكُمْ ۖ وَلِتَكُونَ آيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ
وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيمًا ۝

وَأُخْرَى ۚ لَمْ تَقْدِرُوا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ
اللَّهُ بِهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرًا ۝

وَلَوْ قَتَلْتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوَلَّوْا
الْأَذْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُونَ وَلِيًّا
وَلَا نَصِيرًا ۝

سُنَّةَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ مِن قَبْلُ ۚ وَلَكِن

नियम में कदापि कोई परिवर्तन नहीं पाएगा ।24।

और वही है जिसने तुम्हें उन पर विजय प्रदान करने के पश्चात उनके हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उनसे मक्का की घाटी में रोक दिए थे । और जो कुछ तुम करते हो उस पर अल्लाह गहन दृष्टि रखता है ।25।

यही वे लोग हैं जिन्होंने इनकार किया था और तुम्हें मस्जिद-ए-हराम से रोक दिया था और कुर्बानी को भी, जबकि वह अपने कुर्बानी स्थल तक पहुँचने से रोक दी गई थी । और यदि ऐसे मोमिन पुरुष और ऐसी मोमिन स्त्रियाँ न होतीं जिन्हें न जानने के कारण तुम अपने पाँवों तले कुचल डालते तो तुम्हें उनकी ओर से अनजाने में कोई हानि पहुँच जाती । यह इस लिए हुआ ताकि अल्लाह जिसे चाहे उसे अपनी कृपा में प्रविष्ट करे । यदि वे निथर कर अलग हो चुके होते तो अवश्य हम उनमें से इनकार करने वालों को पीड़ाजनक अज़ाब देते ।26।

जब वे लोग जिन्होंने इनकार किया, अपने दिलों में आत्मसम्मान अर्थात् अज्ञानतापूर्ण आत्मसम्मान का मुद्दा बना बैठे तो अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनों पर अपनी प्रशान्ति उतारी और उन्हें तक्रवा के वाक्य से चिमटाए रखा और वे ही उसके सबसे बड़े हक़दार और योग्य थे । और अल्लाह

تَجَدَّلِ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا ۝

وَهُوَ الَّذِي كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ
وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْ بَعْدِ
أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ۚ وَكَانَ اللَّهُ
بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرًا ۝

هُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا وَاصَدُّوكُمْ عَنِ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيِ مَعْكُوفًا أَنْ يَبْلُغَ
مَحِلَّهُ ۚ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُؤْمِنُونَ وَنِسَاءٌ
مُؤْمِنَاتٌ لَمْ تَعْلَمُوهُمْ أَنْ تَطَّوُّوهُمْ
فَتَضَيِّبَكُمْ مِنْهُمْ مَعَرَّةٌ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ
لِيَدْخُلَ اللَّهُ فِي رَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ ۚ
لَوْ تَزِيلُوا الْعَذَابَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْهُمْ
عَذَابًا أَلِيمًا ۝

إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ
الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ
سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ
وَالزَّمَهُمْ كَلِمَةَ التَّمْوِی وَكَانُوا أَحَقَّ
بِهَا وَأَهْلَهَا ۚ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ

हर चीज़ को खूब जानता है ।27।

(रुकू 3/11)

निश्चित रूप से अल्लाह ने अपने रसूल को (उसका) स्वप्न सत्य के साथ पूरा कर दिखाया कि यदि अल्लाह चाहेगा तो तुम अवश्यमेव मस्जिद-ए-हराम में शांतिपूर्वक प्रवेश करोगे, अपने सिरों को मुंडवाते हुए और बाल कतरवाते हुए । ऐसी अवस्था में कि तुम भय नहीं करोगे। अतः वह (अल्लाह) उसका ज्ञान रखता था जो तुम नहीं जानते थे । फिर उसने इसके अतिरिक्त निकट-भविष्य में ही एक और विजय निश्चित कर दी है ।28।

वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सत्य-धर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म (की प्रत्येक शाखा) पर पूर्णतया विजयी कर दे । और साक्षी के रूप में अल्लाह बहुत पर्याप्त है ।29।*

अल्लाह के रसूल मुहम्मद और वे लोग जो उसके साथ हैं, काफ़िरों के विरुद्ध बहुत कठोर (और) आपस में अत्यन्त कृपा करने वाले हैं । तू उन्हें रुकू करते हुए और सजदः करते हुए देखेगा । वे अल्लाह ही से (उसकी) अनुकम्पा और प्रसन्नता चाहते हैं । सजदों के प्रभाव से उनके चेहरों पर उनके चिह्न हैं । ये उनकी उपमा है जो तौरात में है । और

عَلِيمًا

عَلِيمًا

لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ
لَتَدْخُلَنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ
أَمِينٌ مُخَلِّقِينَ رُءُوسَكُمْ
وَمُقَصِّرِينَ لَا تَخَافُونَ فَعَلِمَ مَا
لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ
فَتْحًا قَرِيبًا ۝

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى
وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ
وَكَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا ۝

مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ مَعَهُ
أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ
تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ
اللَّهِ وَرِضْوَانًا سِيمَاهُمْ فِي وُجُوهِهِمْ
مِنْ أَثَرِ السُّجُودِ ذَلِكَ مَثَلُهُمْ فِي

* इस आयत में संसार के सब धर्मों पर इस्लाम के विजयी होने की भविष्यवाणी की गई है । इस आयत के उतरने के समय तो मक्का वासियों पर ही विजय प्राप्ति नहीं हुई थी । फिर उस युग में यह भविष्यवाणी करना कि इस्लाम को संसार के सब धर्मों पर विजयी किया जाएगा, अनुपम महत्ता का परिचायक है ।

इंजील में उनकी उपमा एक खेती की भांति है जो अपनी कोंपल निकाले, फिर उसे सुदृढ़ करे। फिर वह मोटी हो जाए और अपने डंठल पर खड़ी हो जाए, कृषिकारों को प्रसन्न कर दे ताकि उनके कारण काफ़िरों को क्रोधित करे। अल्लाह ने उनमें से उनसे जो ईमान लाए और नेक कर्म किए क्षमा और महान प्रतिफल का वादा किया हुआ है। 130।*

(रुकू 4/12)

التَّورَةُ وَمَثَلُهُمْ فِي الْإِنْجِيلِ
كَزَّرَعٍ أُخْرِجَ شَطْطُهُ فَأَزْرَهُ
فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوَىٰ عَلَىٰ سَوْقِهِ يُعْجَبُ
الزَّرَّاعُ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارُ وَعَدَ اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ مِنْهُمْ
مَغْفِرَةً وَأَجْرًا عَظِيمًا

* इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जो गुण वर्णन किये गये हैं उनको उन तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि तुरन्त ही कहा वल्लज़ी न मअहू अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सद्गुण उन लोगों में भी प्रवेश करेंगे जो आप सल्ल. के साथ हैं। गुणों में सर्वप्रथम तो यह है कि वे काफ़िरों के विरुद्ध बहुत कठोर हैं। इसका यह अर्थ नहीं कि वे काफ़िरों पर अपनी कठोर-हृदयता के कारण कठोर होंगे बल्कि कुफ़्र का प्रभाव स्वीकार न करने की दृष्टि से उन्हें कठोर कहा गया है। अन्यथा उनके दिल दया से भरे हुए होंगे जिसके कारण मोमिन एक दूसरे से कृपा और नम्रतापूर्वक व्यवहार करने वाले होंगे। और उनके जिहाद का उद्देश्य केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्ति है न कि सांसारिक धन अर्जित करना। अतएव वे अल्लाह के समक्ष रुकू करते हुए और सजदः करते हुए झुकेंगे और उससे उसकी अनुकम्पा अर्थात् ऐसा सांसारिक धन मांगेंगे जिसके साथ अल्लाह तआला की प्रसन्नता भी हो। यह उनके जिहाद के वे प्रमुख पक्ष हैं जो तौरात में उनके सम्बन्ध में वर्णन किए गए थे।

जहाँ तक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुगामियों में अंत्ययुग में आने वाले मसीह और उसके मानने वालों का प्रसंग है, उनका उदाहरण इंजील में ऐसे अंकुरण के साथ दिया गया है जो क्रमशः बढ़ता है और अपने डंठल पर दृढ़ हो जाता है और उसको देख कर उसको बोलने वाले अर्थात् धर्म सेवा में भाग लेने वाले बहुत प्रसन्न होंगे। और इसके परिणाम स्वरूप काफ़िरों को उन पर और भी अधिक क्रोध आएगा। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने उनको भी जो अल्लाह तआला पर सच्चा ईमान लाएँगे और उससे क्षमा याचना करेंगे, बड़े क्षमा और अच्छा प्रतिफल प्रदान करने का शुभ-समाचार दिया है।

49- सूर: अल-हुजुरात

यह सूर: मक्का विजय के पश्चात मदीना में अवतरित हुई और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 19 आयतें हैं।

पिछली सूर: में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौद्र और सौम्य रूप के जो दर्जे वर्णन हुए हैं, उसके पश्चात यहाँ सहाबा रजि. की यह ज़िम्मेदारी वर्णन की गई है कि इस महान रसूल के सामने न तो नज़र उठा कर बात करना तुम्हें शोभा देता है न ऊँची आवाज़ में। अतः वे लोग जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूर से आवाज़ें देते हुए अपने घर से बाहर निकलने का कष्ट देते थे उन पर अत्यन्त अप्रसन्नता प्रकट की गई है।

इसके पश्चात आयत सं. 10 में भविष्य में मुस्लिम शासनों के परस्पर मतभेद की परिस्थिति में सर्वोत्तम उपाय का उल्लेख किया गया है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में तो मुस्लिम शासनों का परस्पर लड़ने का कोई प्रश्न नहीं था। इस कारण वास्तव में इस पवित्र आयत में एक महान चार्टर (राजकीय दिशानिर्देश) प्रस्तुत किया गया है जो केवल मुसलमानों ही के लिए नहीं अपितु ग़ैर मुस्लिमों के लिए भी जातीय मतभेद की परिस्थिति में उनमें परस्पर संधि कराने से सम्बन्ध रखता है। इसके मौलिक आधार यह हैं कि :-

1. यदि दो मुस्लिम शासन परस्पर लड़ पड़ें, तो शेष मुस्लिम शासनों का कर्तव्य है कि वे मिलकर दोनों को युद्ध से रोकें। और यदि उनमें से कोई उपदेश ग्रहण न करे तो सैन्य कार्रवाई के द्वारा उसको विवश कर दें।

2. अतः जब वे युद्ध से रुक जाएँ तो फिर उनके बीच संधि करवाने का प्रयत्न करो।

3. परन्तु जब संधि करवाने का प्रयत्न करो तो पूर्ण रूप से न्याय के साथ करो और दोनों पक्ष के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करो। क्योंकि अन्तिम परिणाम इसका यही है कि अल्लाह तआला न्याय करने वालों से प्रेम करता है और जिनसे अल्लाह तआला प्रेम करे उनको वह कदापि असफल नहीं होने देता।

एक बार फिर ध्यान दिलाया गया है कि यद्यपि यहाँ मुसलमानों को सम्बोधित किया गया है, परन्तु जो कार्य-शैली उनको समझाई गई है वह समस्त मानव जाति के लिए अनुकरणीय है।

इसके पश्चात विभिन्न जातियों में फूट और मतभेद का मौलिक कारण वर्णन कर दिया गया जो वास्तव में वंशवाद है। प्रत्येक जाति जब दूसरी जाति से उपहास करती है

तो मानो अपने आप को उनसे भिन्न और उत्कृष्ट वंशज मानते हुए ऐसा करती है ।

इसके पश्चात विभिन्न ऐसी सामाजिक बुराइयाँ वर्णन कर दी गईं जिनके परिणाम स्वरूप अलगाववाद उत्पन्न होते हैं । इसके पश्चात यह स्पष्ट किया गया कि अल्लाह तआला ने लोगों को विभिन्न रंगों और वंशों में बांटा क्यों है ? इसका उद्देश्य यह वर्णन किया गया कि एक दूसरे पर श्रेष्ठता जताने के लिए नहीं, बल्कि एक दूसरे की पहचान में आसानी के लिए ऐसा किया गया है । उदाहरणार्थ जब कहा जाए कि अमुक व्यक्ति अमेरिकन है अथवा अमुक जर्मन है तो इस लिए नहीं कहा जाता कि अमेरिकन जाति को सब पर श्रेष्ठता प्राप्त है अथवा जर्मन जाति को सब जातियों पर श्रेष्ठता प्राप्त है । बल्कि केवल पहचान के लिए ऐसा कहा जाता है ।



سُورَةُ الْحُجُرَاتِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो और अल्लाह का तक्रवा धारण करो । निःसन्देह अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।।।

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! नबी की आवाज़ से अपनी आवाज़ें ऊँची न किया करो । और जिस प्रकार तुम में से कुछ लोग कुछ दूसरे लोगों के सामने ऊँची आवाज़ में बातें करते हैं, उसके सामने ऊँची बात न किया करो । ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म नष्ट हो जाएँ और तुम्हें पता तक न चले ।।।

निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह के रसूल के समक्ष अपनी आवाज़ें धीमी रखते हैं, यही वे लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक्रवा के लिए परख लिया है । उनके लिए एक महान क्षमादान और बड़ा प्रतिफल है ।।।

निःसन्देह वे लोग जो तुझे घरों के बाहर से आवाज़ें देते हैं अधिकतर उनमें से बुद्धि नहीं रखते ।।।

यदि वे धैर्य करते यहाँ तक कि तू स्वयं ही उनकी ओर बाहर निकल आता तो यह

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَقَدَّمُوا بَيْنَ يَدَيْ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَاتَّقُوا اللَّهَ ② إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ③

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوا لَهُ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ أَنْ تَحْبَطَ أَعْمَالُكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُونَ ④

إِنَّ الَّذِينَ يُعْضُونَ أَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ امْتَحَنَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ لِلتَّقْوَى ⑤ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ عَظِيمٌ ⑥

إِنَّ الَّذِينَ يَدَّوْنَكَ مِنْ وَّرَاءِ الْحُجُرَاتِ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ⑦

وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتَّى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ

अवश्य उनके लिए उत्तम होता । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार कृपा करने वाला है । 16।

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! तुम्हारे पास यदि कोई दुराचारी कोई समाचार लाए तो (उसकी) छान-बीन कर लिया करो । ऐसा न हो कि तुम अज्ञानता वश किसी जाति को हानि पहुँचा बैठो । फिर तुम्हें अपने किए पर पश्चाताप करना पड़े । 17।*

और जान लो कि तुम में अल्लाह का रसूल मौजूद है । यदि वह तुम्हारी अधिकतर बातें मान ले तो तुम अवश्य कष्ट में पड़ जाओ । परन्तु अल्लाह ने तुम्हारे लिए ईमान को प्रिय बना दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में सुसज्जित कर दिया है और तुम्हारे लिए कुफ्र और कुकर्म तथा अवज्ञा के प्रति अत्यन्त घृणा उत्पन्न कर दी है । यही वे लोग हैं जो हिदायत प्राप्त हैं । 18।

अल्लाह की ओर से यह एक वृहद अनुकम्पा और नेमत के रूप में है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । 19।

और यदि मोमिनों में से दो समुदाय परस्पर लड़ पड़ें तो उनके बीच संधि

لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوا أَن تُصِيبُوا قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْحَبُوا عَلَى مَا فَعَلْتُمْ لِنُدِمِّينَ ⑤

وَاعْلَمُوا أَن فِيكُمْ رَسُولَ اللَّهِ ⑥ لَوْ يُطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ وَالْعِصْيَانَ ⑦ أُولَٰئِكَ هُمُ الرُّشْدُونَ ⑧

فَضْلًا مِّنَ اللَّهِ وَنِعْمَةً ⑨ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑩

وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا

* मदीना में बहुत से अफ़वाहें फैलाने वाले लोग ऐसी अफ़वाहें फैलाते थे कि उनको सच्च मान कर केवल संदेह के आधार पर कुछ लोगों के दिलों में कुछ दूसरों से युद्ध करने का विचार उत्पन्न होता था । अतः उनको इस प्रकार जल्दबाज़ी करने से कड़े शब्दों में मना किया गया है । क्योंकि संभव है कि इस प्रकार की अफ़वाहों के परिणामस्वरूप कुछ निर्दोष लोगों पर भी अत्याचार हो जाए और इसके परिणाम स्वरूप मोमिनों को लज्जित होना पड़े ।

करवाओ । फिर यदि उनमें से एक दूसरे के विरुद्ध उद्दण्डता करे तो जो अत्याचार कर रहा है उससे लड़ो, यहाँ तक कि वह अल्लाह के निर्णय की ओर लौट आए । अतः यदि वह लौट आए तो उन दोनों के बीच न्यायपूर्वक संधि करवाओ और न्याय करो । निःसन्देह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है । 110।

मोमिन तो भाई-भाई ही होते हैं । अतः अपने दो भाइयों के बीच संधि करवाया करो । और अल्लाह का तक्रवा धारण करो ताकि तुम पर कृपा की जाए । 111।

(सूकू 1/13)

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! (तुम में से) कोई जाति किसी जाति से उपहास न करे । संभव है कि वे उनसे उत्तम हो जाएँ । और न महिलायें महिलाओं से (उपहास करें) । हो सकता है कि वे उनसे उत्तम हो जाएँ । और अपने लोगों पर दोषारोपण न करो और एक दूसरे को नाम बिगाड़ कर न पुकारा करो । ईमान के पश्चात अवज्ञा करने का दाग लग जाना बहुत बुरी बात है । और जिसने प्रायश्चित्त नहीं किया तो यही वे लोग हैं जो अत्याचारी हैं । 12।

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! संदेह (करने) से बहुत बचा करो । निःसन्देह कुछ संदेह पाप होते हैं । और जासूसी न किया करो । और तुम में से कोई किसी दूसरे की चुगली न करे । क्या तुम में से कोई यह पसन्द करता है कि अपने मृत

فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا فَإِنْ بَغَتْ إِحْدَاهُمَا عَلَى الْأُخْرَىٰ فَقَاتِلُوا الَّتِي تَبْغِي حَتَّىٰ تَفِيءَ إِلَىٰ أَمْرِ اللَّهِ فَإِنْ فَاءَتْ فَأَصْلِحُوا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ وَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ مِنْ قَوْمٍ عَلَىٰ أَنْ يَكُونُوا خَيْرًا مِنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِنْ نِسَاءٍ عَلَىٰ أَنْ يَكُنَّ خَيْرًا مِنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ ۚ بِئْسَ الْإِسْمُ الْفُسُوقُ بَعْدَ الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ لَمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ الظَّنِّ ۖ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَلَا تَجَسَّسُوا وَلَا يَغْتَبَ بَعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ

भाई का मांस खाए ? अतः तुम इससे अत्यन्त घृणा करते हो । और अल्लाह का तक्रवा धारण करो । निःसन्देह अल्लाह बहुत प्रायश्चित्त स्वीकार करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 113।

हे लोगो ! निःसन्देह हमने तुम्हें पुरुष और स्त्री से पैदा किया । और तुम्हें जातियों और कबीलों में विभाजित किया ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको । निःसन्देह अल्लाह के निकट तुम में सबसे अधिक सम्माननीय वह है जो सर्वाधिक मुत्तक्री है । निःसन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) सदा अवगत है 114।

मरुभूमि निवासी कहते हैं कि हम ईमान ले आए । तू कह दे कि तुम ईमान नहीं लाए, परन्तु केवल इतना कहा करो कि हम मुसलमान हो चुके हैं । जबकि अभी तक ईमान तुम्हारे दिलों में प्रविष्ट नहीं हुआ । और यदि तुम अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो तो वह तुम्हारे कर्मों में कुछ भी कमी नहीं करेगा । निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 115।*

مَيِّتًا فَكْرِهْتُمْ^٥ وَاتَّقُوا اللَّهَ^٦ إِنَّ اللَّهَ
تَوَّابٌ رَّحِيمٌ^٧

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِنْ ذَكَرٍ
وَأُنْثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ
لِتَعَارَفُوا^٨ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ
اتَّقَىٰ^٩ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ^{١٠}

قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا قُلْ لَمْ تُؤْمِنُوا
وَلَكِنْ قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ
الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ^{١١} وَإِنْ تَطِيعُوا اللَّهَ
وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُمْ مِنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا^{١٢}
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ^{١٣}

* इस पवित्र आयत में ईमान और इस्लाम की वह मौलिक परिभाषा बता दी गई है जो ईमान को इस्लाम से पृथक कर देती है । मुँह से तो प्रत्येक व्यक्ति यह कह सकता है कि हमारे दिल में ईमान है परन्तु उनको बताया गया है कि तुम अधिक से अधिक यह कह सकते हो कि हम मुसलमान हो गए हैं । अर्थात् वे लोग जिनके दिलों में ईमान न भी हो अपने आपको मुसलमान कहने का अधिकार रखते हैं । उनमें से बहुत से हैं जो इनकार की अवस्था में ही मरेंगे और बहुत से ऐसे भी हैं जिनके दिल में अभी तक ईमान प्रविष्ट नहीं हुआ । परन्तु वे ज़ाहिरी रूप से इस्लाम स्वीकार करने के→

मोमिन वही हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए। फिर उन्होंने कभी संदेह नहीं किया और अपनी धन-सम्पत्तियों और अपनी जानों के साथ अल्लाह के मार्ग में जिहाद किया। यही वे लोग हैं जो सच्चे हैं। 116।

पूछ, कि क्या तुम अल्लाह को अपना धर्म सिखाते हो? जबकि अल्लाह जानता है जो आकाशों में है और जो धरती में है। और अल्लाह हर चीज़ का ख़ूब ज्ञान रखता है। 117।

वे तुझ पर उपकार जतलाते हैं कि वे मुसलमान हो गए हैं। तू कह दे मुझ पर अपने इस्लाम का उपकार न जताया करो। बल्कि अल्लाह तुम पर उपकार करता है कि उसने तुम्हें ईमान की ओर हिदायत दी। यदि तुम सच्चे हो (तो उसको स्वीकार करो)। 118।

निःसन्देह अल्लाह आकाशों और धरती के अदृश्य तत्त्वों को जानता है। और तुम जो करते हो अल्लाह उस पर गहन दृष्टि रखने वाला है। 119। (रूकू 2/14)

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ
أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ①

قُلْ أَتَعْلَمُونَ اللَّهُ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ
مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَاللَّهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ②

يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا قُلْ لَا تَمُنُّوا
عَلَىٰ إِسْلَامِكُمْ ۚ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ
أَنْ هَدَيْكُمْ لِلْإِيمَانِ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ③

إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ④

50- सूरः काफ़

यह सूरः मक्का निवास काल के आरम्भिक दिनों में अवतरित हुई। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 46 आयतें हैं।

यह सूरः खण्डाक्षरों में से काफ़ अक्षर से आरम्भ होती है। अरबी अक्षर काफ़ के सम्बन्ध में बड़े-बड़े विद्वानों का मत है कि क़दीर शब्द का यह संक्षिप्त रूप है। इस सूरः में इस शब्द के पश्चात पहला शब्द कुरआन आया है जो काफ़ ही से आरम्भ होता है। इसके पश्चात अल्लाह तआला की कुदरत (शक्ति) का इनकार करने वालों के इस वर्णन का उल्लेख है कि अल्लाह तआला के पास यह शक्ति कहाँ से आ गई कि हमारे मर कर मिट्टी हो जाने के पश्चात एक बार फिर क़यामत के दिन इकट्ठा करे। उनके निकट यह एक बहुत दूर की बात है अर्थात् समझ से परे है। अल्लाह तआला फ़र्माता है कि हमें जानकारी है कि धरती उनमें से क्या कुछ कम करती चली जा रही है। परन्तु इस के बावजूद हम यह सामर्थ्य रखते हैं कि उनके बिखरे हुए कणों को इकट्ठा कर दें। उनका ध्यान आकाश के फैलाव की ओर फेरा गया है कि इतने विशाल ब्रह्माण्ड में कोई एक त्रुटि भी वे दिखा नहीं सकते, फिर उसके स्रष्टा की शक्तियों का वह कैसे इनकार कर सकते हैं।

इसके पश्चात फ़र्माया कि जो शंका उनके मन में उठती हैं हम पूर्णतया उनसे अवगत हैं। क्योंकि हम मनुष्य के प्राणस्नायु से भी अधिक उसके निकट हैं। फिर यह भविष्यवाणी की गई कि अवश्य तुम लोग उठाए जाओगे और उठाए जाने वालों के साथ उनको एक हाँक कर ले जाने वाला होगा और एक साक्षी भी। नरक का वर्णन करते हुए कहा कि अधर्मी लोग एक के बाद एक समूहबद्ध रूप से नरक का ईंधन बनने वाले हैं। एक ऐसे नरक का जिसका पेट कभी नहीं भरेगा। जब उपमा स्वरूप अल्लाह तआला उससे पूछेगा कि क्या तेरा पेट भर गया है तो वह अपनी यथा स्थिति प्रकट करेगा कि क्या और भी ऐसे अभाग हैं? मेरे अन्दर उनके लिए भी स्थान है। और इसके विपरीत स्वर्ग मुत्तक्रियों के बहुत निकट कर दिया जाएगा। आयतांश ग़ैर बयीद (कुछ दूर नहीं) का यह अर्थ भी है कि यह बात कदापि कल्पना से दूर नहीं। अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उपदेश दिया गया कि उनके व्यंग्य और कटाक्ष को धैर्य पूर्वक सहन करें। जो भविष्यवाणियाँ पवित्र कुरआन में की गई हैं वे अवश्य पूरी हो कर रहेंगी। अतः पवित्र कुरआन के द्वारा तू उस व्यक्ति को उपदेश देता चला जा जो मेरी चेतावनी से डरता हो।

यहाँ यह अभिप्राय नहीं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चुन-चुन कर केवल उसको उपदेश देंगे जो चेतावनी से डरता हो। वस्तुतः उपदेश तो आप समस्त मानव जाति को दे रहे हैं परन्तु लाभ वही उठाएगा जो चेतावनी से डरने वाला हो।

سُورَةُ قَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ وَارْبَعُونَ آيَةً وَثَلَاثَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

क़दीरुन : सर्वशक्तिमान । अति गौरवशाली कुरआन की क़सम ! ।2।

قَ وَالْقُرْآنِ الْمَجِيدِ ②

वास्तविकता यह है कि उन्होंने आश्चर्य किया कि स्वयं उन्हीं में से एक सतर्ककारी उनके पास आया है । अतः काफ़िर कहते हैं कि यह विचित्र बात है ।3।

بَلْ عَجَبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ فَقَالَ الْكُفْرُونَ هَذَا شَيْءٌ عَجِيبٌ ③

क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे ? इस प्रकार लौटना एक दूर की बात है ।4।

إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ④ ذَلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ ⑤

हम भली-भाँति जानते हैं कि धरती उनमें से क्या कम कर रही है । और हमारे पास (सब कुछ) सुरक्षित रखने वाली एक पुस्तक है ।5।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِیْظٌ ⑥

बल्कि उन्होंने सत्य को झुठला दिया जब वह उनके पास आया । अतः वे एक उलझाव वाली बात में पड़े हुए हैं ।6।

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَرِیْجٍ ⑦

क्या उन्होंने अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा कि हमने उसे कैसे बनाया और उसे सुन्दरता प्रदान की और उसमें कोई त्रुटि नहीं ? ।7।

أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنَاهَا وَزَيَّنَّاهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ ⑧

और धरती को हमने फैला दिया और उसमें दृढ़तापूर्वक गड़े हुए पर्वत बना दिए । और प्रत्येक प्रकार के तरो ताज़ा जोड़े उसमें उगाये ।8।

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِیْجٍ ⑨

आँखें खोलने के लिए और प्रत्येक ऐसे भक्त के लिए शिक्षा स्वरूप जो बार-बार (अल्लाह की ओर) लौटने वाला है ।9।

और हमने आकाश से मंगलकारी पानी उतारा और उसके द्वारा बागों और कटाई की जाने वाली फसलों के बीज उगाए ।10।

और खजूरों के ऊँचे वृक्ष जिनके परत दर परत गुच्छे होते हैं ।11।

भक्तों के लिए जीविका स्वरूप । और हमने उस (अर्थात् वर्षा) के द्वारा एक मृत क्षेत्र को जीवित कर दिया । इसी प्रकार (क़ब्रों से) निकलना होगा ।12।

उनसे पूर्व नूह की जाति ने और खनिजपदार्थों के स्वामियों ने तथा समूद (जाति) ने भी झुठलाया था ।13।

और आद (जाति) और फ़िरऔन ने और लूत के भाइयों ने ।14।

और घने वृक्षों के बीच बसने वालों ने और तुब्बा की जाति ने । सबने रसूलों को झुठला दिया । अतः मेरा सतर्क करना सच्चा सिद्ध हो गया ।15।

क्या हम पहली उत्पत्ति से थक चुके हैं ? नहीं ! बल्कि वे तो नवीन उत्पत्ति के सम्बन्ध में भी संदेह में पड़े हैं ।16।

(स्कू 1/5)

और निःसन्देह हमने मनुष्य को पैदा किया और हम जानते हैं कि उसका मन उसे कैसे कैसे भ्रम में डालता है । और

تَبْصِرَةً وَذِكْرَى لِكُلِّ عَبْدٍ مُنِيبٍ ①

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبْرَكًا فَأَنْبَتْنَا بِهِ
جَنَّتٍ وَحَبَّ الْحَصِيدِ ②

وَالنَّخْلَ بَسَقَتْ لَهَا طَعْلٌ نَّضِيدٌ ③

رَزَقًا لِلْعِبَادِ ④ وَآحَيْنَا بِهِ بِلْدَةً مَّيِّتًا
كَذَلِكَ الْخُرُوجُ ⑤

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ
الرَّسِّ وَثَمُودُ ⑥

وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطَ ⑦

وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ⑧ كُلٌّ
كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيدُ ⑨

أَفَعَيِينَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ⑩ بَلْ هُمْ فِي لَبْسٍ
مِّنْ خَلْقٍ جَدِيدٍ ⑪

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعَلَهُ مَا تَوَسَّوَسُ
بِهِ نَفْسُهُ ⑫ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ

हम उससे (उसके) प्राणस्नायु से भी अधिक निकट हैं ।17।

जब दाएं और बाएं बैठे हुए दो बात पकड़ने वाले बात पकड़ते हैं ।18।*

वह जब भी कोई बात कहता है उसके पास ही (उसका) हर समय तत्पर निरीक्षक होता है ।19।

और जब मृत्यु की मुर्छा आ जाएगी जो नितांत सत्य है । (तब उसे कहा जाएगा) यह वही है जिससे तू बचता रहा ।20।

और बिगुल फूँका जाएगा । यह है वह चेताया हुआ दिन ।21।

और प्रत्येक जान इस अवस्था में आएगी कि उसके साथ एक हाँकने वाला और एक साक्षी होगा ।22।

निःसन्देह तू इस बारे में असावधान रहा । अतः हमने तुझ से तेरा पर्दा उठा दिया और आज तेरी दृष्टि बहुत तीव्र हो गई है ।23।

और उसका साक्षी कहेगा यह है जो मेरे पास तैयार पड़ा है ।24।

(हे हाँकने वाले और हे साक्षी !)
तुम दोनों प्रत्येक घोर कृतघ्न (और सत्य के) परम शत्रु को नरक में झोंक दो ।25।

حَبْلِ الْوَرِيدِ ①

إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّينَ عَنِ الْيَمِينِ
وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيدٌ ②

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيبٌ
عَتِيدٌ ③

وَجَاءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ④
ذَلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيدُ ⑤

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ ⑥ ذَلِكَ يَوْمُ الْوَعِيدِ ⑦

وَجَاءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَعَها سَائِقٌ وَشَهِيدٌ ⑧

لَقَدْ كُنْتَ فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هَذَا
فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَاءَكَ فَبَصَرُكَ
الْيَوْمَ حَدِيدٌ ⑨

وَقَالَ قَرِينُهُ هَذَا مَا لَدَيَّ عَتِيدٌ ⑩

أَلْقِيَا فِي جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيدٍ ⑪

* यहाँ मनुष्य के कर्मों का निरीक्षण करने वाले फ़रिश्तों की ओर संकेत है । अर्थात् उनके दाहिनी ओर के फ़रिश्ते उनके नेक-कर्म को लिपिबद्ध करते हैं और बाईं ओर के फ़रिश्ते कुकर्मों को लिपिबद्ध करते हैं । ये भौतिक आँख से दिखाई देने वाले कोई फ़रिश्ते नहीं हैं, बल्कि अल्लाह तआला की एक साक्ष्य व्यवस्था है जिसकी ओर संकेत किया गया है ।

प्रत्येक अच्छी बात से रोकने वाले,
सीमा का उल्लंघन करने वाले और संदेह
में डालने वाले को ।26।

वह जिसने अल्लाह के साथ कोई दूसरा
उपास्य बना रखा था । अतः तुम दोनों
उसे कठोर अज़ाब में झोंक दो ।27।

उसके साथी ने कहा, हे हमारे रबब !
मैंने तो उसे उड़ण्ड नहीं बनाया, परन्तु
वह स्वयं ही एक परले दर्जे की
पथभ्रष्टता में पड़ा था ।28।

वह कहेगा, मेरे समक्ष झगड़ा न करो ।
मैं पहले ही तुम्हारी ओर चेतावनी भेज
चुका हूँ ।29।

मेरे निकट आदेश परिवर्तित नहीं किया
जाता । मैं कदापि निरीह भक्तों पर
अत्याचार करने वाला नहीं ।30।

(सूकू 2/16)

(याद करो) वह दिन जब हम नरक से
पूछेंगे, क्या तू भर गया है ? और वह
उत्तर देगा, क्या कुछ और भी है ? ।31।

और जब स्वर्ग मुत्तकियों के लिए
निकट कर दिया जाएगा, कुछ दूर नहीं
होगा ।32।

यह है वह जिसका तुम में से प्रत्येक
लौटने वाले, निगरान रहने वाले के लिए
वचन दिया गया है ।33।

जो रहमान (अल्लाह) से परोक्ष में डरता
रहा और एक झुकने वाला दिल लिए हुए
आया है ।34।

शांति पूर्वक उसमें प्रवेश कर जाओ ।
यही वह सदा रहने वाला दिन है ।35।

مَتَّاعٍ لِلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيبٍ ۝

الَّذِي جَعَلَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَأَلْقِيَهُ
فِي الْعَذَابِ الشَّدِيدِ ۝

قَالَ قَرِينُهُ رَبَّنَا مَا أَطْغَيْتُهُ وَلَكِنْ كَانَ
فِي ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۝

قَالَ لَا تَخْصِمُوْا لَدَيَّْ وَقَدْ قَدَّمْتُ
إِلَيْكُمْ بِالْوَعْدِ ۝

مَا يَبْدُلُ الْقَوْلُ لَدَيَّْ وَمَا أَنَا بِظَلَّامٍ
لِّلْعَبِيدِ ۝

يَوْمَ نَقُولُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأَتْ وَتَقُولُ
هَلْ مِنْ مَّزِيدٍ ۝

وَأَزَلَفَتْ الْجَنَّةَ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۝

هَذَا مَا تُوْعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ۝

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمَنَ الْغَيْبَ وَجَاءَ
بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ ۝

ادْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝

उनके लिए उसमें जो वे चाहेंगे होगा और हमारे पास और भी बहुत कुछ है ।36।
और कितनी ही जातियाँ हमने उनसे पहले नष्ट कर दीं जो पकड़ करने में उनसे अधिक सशक्त थीं । अतः उन्होंने धरती में गुफाएँ बना लीं । (परन्तु उनके लिए) क्या कोई शरण का स्थान था ? ।37।

निःसन्देह इसमें बहुत बड़ी सीख है उसके लिए जो दिल रखता हो या कान धरे और वह देखने वाला हो ।38।

और निःसन्देह हमने आकाशों और धरती को और उसे भी जो उनके बीच है, छः दिनों में पैदा किया और हमें कोई थकान छुई तक नहीं ।39।

अतः धैर्य कर उस पर जो वे कहते हैं और सूर्योदय से पूर्व और सूर्यास्त से पूर्व भी अपने रब्ब की प्रशंसा के साथ (उसका) गुणगान कर ।40।

और रात के एक भाग में और सजदों के पश्चात् भी उसका गुणगान कर ।41।

और ध्यान से सुन ! जिस दिन एक पुकारने वाला निकट के स्थान से पुकारेगा ।42।

जिस दिन वे एक भयंकर सच्ची आवाज़ सुनेंगे । यह निकल खड़े होने का दिन है ।43।

निःसन्देह हम ही जीवित करते और मारते हैं और हमारी ओर ही लौट कर आना है ।44।

لَهُمْ مَا يَشَاءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ﴿٣٦﴾

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ هَلْ مِنْ مَّجِيصٍ ﴿٣٧﴾

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَذِكْرَى لِمَنْ كَانَ لَهُ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ﴿٣٨﴾

وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ۚ وَمَا مَسَّنَا مِنْ لُغُوبٍ ﴿٣٩﴾

فَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۚ ﴿٤٠﴾

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ﴿٤١﴾

وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيبٍ ﴿٤٢﴾

يَوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ۚ ذَلِكَ يَوْمُ الْخُرُوجِ ﴿٤٣﴾

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِي وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ﴿٤٤﴾

जिस दिन धरती उनके ऊपर से तीव्र हलचल के कारण फट जाएगी। यह वह महान एकत्रिकरण है जो हमारे लिए सरल है। 145।

हम उसे सबसे अधिक जानते हैं जो वे कहते हैं। और तू उन पर बलपूर्वक सुधार करने वाला निरीक्षक नहीं है।

अतः कुरआन के द्वारा उसे उपदेश देता चला जा जो मेरी चेतावनी से डरता है। 146। (रुकू 3/17)

يَوْمَ تَشَقُّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ۖ ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ﴿٤٥﴾

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ ۖ فَذَكِّرْ بِالْقُرْآنِ مَنْ يَخَافُ وَعِيدِ ﴿٤٦﴾

ع
٤٦
١٧

51- सूर: अज़-ज़ारियात

यह सूर: आरम्भिक मक्की सूरतों में से है। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 61 आयतें हैं।

इस सूर: के आरम्भ ही में पिछली सूरतों की भविष्यवाणियों को, जिनमें स्वर्ग और नरक आदि की भविष्यवाणियाँ हैं, इतनी विश्वसनीयता पूर्वक वर्णन किया गया है मानो जैसे कुरआन के सम्बोधित लोग परस्पर बातें करते हैं।

इस सूर: में भविष्य में घटित होने वाले युद्धों को फिर से गवाह ठहराया गया है ताकि जब मानव जाति इन भविष्यवाणियों को निश्चित रूप से पूरा होता हुआ देख ले तो इस बात में कोई शंका न रहे कि जिस रसूल पर यह रहस्य खोला गया, मृत्यु के पश्चात के जीवन का विषय भी निश्चित रूप से उस को सर्वज्ञ अल्लाह ने ही बताया है।

आयत संख्या 2 में आया है : “क़सम है बीज बिखेरने वालियों की...” अब प्रत्यक्ष रूप से अक्षरशः यह भविष्यवाणी पूरी हो चुकी है क्योंकि वास्तव में आज कल हवाई जहाज़ों और हैलीकैप्टरों के द्वारा बीज बिखेरे जाते हैं और बड़े-बड़े भार उठाकर जहाज़ उड़ते हैं और इन भारों के बावजूद वे द्रुतगामी होते हैं। महत्वपूर्ण जानकारीयाँ इन जहाज़ों के द्वारा विभिन्न विजयी, पराजित और प्रतिबंधित जातियों को भी पहुँचाई जाती है। इन सबको साक्षी ठहरा कर यह परिणाम निकाला गया कि जिसका तुम्हें वादा दिया जाता है वह निःसन्देह होकर रहने वाला है। और प्रतिफल दिवस अर्थात् निर्णय का दिन इहलोक में इहलोकिन जातियों के लिए होगा और परलोक में समस्त मानव जाति के लिए होगा।

इसके पश्चात यह स्पष्ट कर दिया गया कि ये बीज बिखेरने वालियाँ और भार उठाने वालियाँ धरती पर भार उठाकर चलने वाली कोई चीज़ नहीं बल्कि आकाश पर उड़ने वाली चीज़ें हैं। अतएव उस आकाश को साक्षी ठहराया गया जो हवाई मार्गों वाला आकाश है। अतः आज दृष्टि उठा कर देखें तो प्रत्येक स्थान पर जहाज़ों के मार्गों के चिह्न मिलते हैं। अतः इन सब विषय का परिणाम यह निकाला गया कि तुम परलोक का इनकार करके घोर पथभ्रष्टता में पड़ चुके हो। यदि ये बातें जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वर्णन कर रहे हैं किसी अटकल-पच्चू करने वाले की बातें होतीं तो अटकल-पच्चू करने वाले तो सारे तबाह हो गए। परन्तु यह रसूल सल्ल. सदा के लिए अमर है।

यह वाणी सरल और शुद्ध भाषा संपन्न है। आकाश से बीज बिखेरने वालियों के वर्णन के पश्चात इस ओर ध्यान दिलाया गया है कि तुम्हारी जीविका के सब साधन

आकाश से उतरते हैं । परन्तु एक आकाशीय जीविका वह भी होती है जिसके भेद को मनुष्य नहीं समझ सकता और फ़रिश्तों को भी वही जीविका दी जाती है । अतः हज़रत इब्राहीम अलै. के अतिथियों का वर्णन किया जो फ़रिश्ते थे और मनुष्य के रूप में उन के सम्मुख प्रकट हुए थे । जब उनके सामने हज़रत इब्राहीम अलै. ने वह उत्तम भोजन परोसा जो मनुष्य के जीवन का सहारा बनता है तो उन्होंने उसके खाने से इनकार कर दिया, क्योंकि उनको प्राप्त होने वाला भोजन भिन्न प्रकार का था । हज़रत इब्राहीम अलै. के वर्णन के पश्चात और बहुत से पिछले नबियों का भी वर्णन किया गया ।

इसके पश्चात एक ऐसी आयत है जो आकाश के निरंतर विस्तार की ओर अग्रसर होने का वर्णन करती है जिस की हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में कोई मनुष्य कल्पना तक नहीं कर सकता था । वर्तमान युग के खगोल शास्त्रियों ने यह वास्तविकता जान ली है कि आकाश सदा विस्तार की ओर अग्रसर रहता है । यहाँ तक कि एक निर्धारित समय तक पहुँचने के बाद फिर एक केन्द्र की ओर लौट आएगा ।

भोजन के विषयवस्तु को इस रंग में भी प्रस्तुत किया कि समस्त मनुष्य और फ़रिश्ते किसी न किसी प्रकार के भोजन पर निर्भर हैं । केवल एक सत्ता है जिसको किसी प्रकार के भोजन की आवश्यकता नहीं और वह अल्लाह की सत्ता है जो सब का अन्नदाता है ।



سُورَةُ الذَّرِيَّتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ إِحْدَى وَسِتُّونَ آيَةً وَثَلَاثَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

क़सम है (बीज) बिखेरने वालियों की ।2।

फिर भार उठाने वालियों की ।3।

फिर द्रुत गति से चलने वालियों की ।4।

फिर कोई महत्वपूर्ण विषय को बांटने वालियों की ।5।

(वह) जिसका तुम को वचन दिया जाता है, निःसन्देह वही सत्य है ।6।

और प्रतिफल दिवस अवश्य हो कर रहने वाला है ।7।

क़सम है रास्तों वाले आकाश की ।8।

निःसन्देह तुम एक मतभेद वाली बात में पड़े हुए हो ।9।

उस से वही फिरा दिया जाएगा जिसका फिरा दिया जाना (निश्चित हो चुका) होगा ।10।

अटकल पन्चू मारने वाले विनष्ट हो गए ।11।

जो अपनी लापरवाही में भटक रहे हैं ।12।

वे पूछते हैं कि प्रतिफल दिवस कब होगा ? ।13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ١

وَالذَّرِيَّتِ ذُرُؤًا ٢

فَالْحِمْلِتِ وَقْرًا ٣

فَالْجُرِيَّتِ يُسْرًا ٤

فَالْمَقْسَمِتِ أَمْرًا ٥

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَصَادِقٌ ٦

وَإِنَّ الدِّينَ لَوَاقِعٌ ٧

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْجُبِّ ٨

إِنَّكُمْ لَفِي قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ٩

يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ أُفِكَ ١٠

فَتِلْ الْخَرُصُونَ ١١

الَّذِينَ هُمْ فِي غَمْرَةٍ سَاهُونَ ١٢

يَسْأَلُونَ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّينِ ١٣

जिस दिन वे आग पर भूने जा रहे होंगे ।।4।

(उनसे कहा जाएगा) अपनी शरारत का स्वाद चखो । यही है वह जिसे तुम शीघ्रतापूर्वक मांगा करते थे ।।5।

निःसन्देह मुत्तकी बागों और जलस्रोतों के बीच होंगे ।।6।

वे (उसे) प्राप्त कर रहे होंगे जो उनका रब्ब उन्हें प्रदान करेगा । निःसन्देह इससे पूर्व वे बहुत अच्छे कर्म करने वाले थे ।।7।
वे रात को थोड़ा ही सोया करते थे ।।8।

और प्रातः काल में भी वे क्षमायाचना में लगे रहते थे ।।9।

और उनके धन में माँगने वालों और न माँगने वाले ज़रूरतमंदों के लिए एक हक़ था ।।10।

और धरती में विश्वास करने वालों के लिए कई चिह्न हैं ।।11।

और स्वयं तुम्हारी जानों के अन्दर भी ।
अतः क्या तुम देखते नहीं ? ।।12।

और आकाश में तुम्हारी जीविका है और वह भी है जिसका तुम को वचन दिया जाता है ।।13।

अतः आकाश और धरती के रब्ब की क़सम ! यह निःसन्देह उसी प्रकार सत्य है जैसे तुम (परस्पर) बातें करते हो ।।14। (रकू $\frac{1}{18}$)

क्या तुझ तक इब्राहीम के सम्मानित अतिथियों का समाचार पहुँचा है ? ।।15।

يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُونَ ۝

ذُوقُوا فِتْنَتَكُمْ ۚ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَسْتَعْجِلُونَ ۝

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝

أَخْذِينَ مَا أُنْهَرِبُ بِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُحْسِنِينَ ۝

كَانُوا أَقْلِيلًا ۖ مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُونَ ۝

وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُونَ ۝

وَفِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝

وَفِي الْأَرْضِ آيَاتٌ لِّلْمُوقِنِينَ ۝

وَفِي أَنْفُسِكُمْ أَفَلَا تُبْصَرُونَ ۝

وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ۝

فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنْطِقُونَ ۝

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ الْمُكْرَمِينَ ۝

जब वे उसके पास आए तो उन्होंने कहा, सलाम ! उसने भी कहा सलाम ! (और मन में कहा) अजनबी लोग (प्रतीत होते हैं) ।26।

वह शीघ्रता पूर्वक अपने घर वालों की ओर गया और एक मोटा ताज़ा (भुना हुआ) बछड़ा ले आया ।27।

फिर उसे उनके सामने पेश किया (और) पूछा, क्या तुम खाओगे नहीं ? ।28।

तब उसने उनकी ओर से भय का आभास किया, उन्होंने कहा डर नहीं । और उन्होंने उसे एक ज्ञानवान पुत्र का शुभ-समाचार दिया ।29।

इस पर उसकी पत्नी आवाज़ ऊँची करती हुई आगे बढ़ी आर अपने चेहरे पर हाथ मारा और कहा, (मैं) एक बांझ बुढ़िया हूँ ।30।

उन्होंने कहा, इसी प्रकार (होगा जो) तेरे रब्ब ने कहा है । निःसन्देह वही परम विवेकशील (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है ।31।

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ
سَلَامٌ ۚ قَوْمٌ مُّنتَكِرُونَ ﴿٢٦﴾

فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ بِعِجْلٍ سَمِينٍ ﴿٢٧﴾

فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ﴿٢٨﴾

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ
وَبَشَّرُوهُ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ﴿٢٩﴾

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ
وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ﴿٣٠﴾

قَالُوا كَذَلِكَ ۚ قَالَ رَبُّك ۖ إِنَّهُ هُوَ
الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ ﴿٣١﴾

उस (अर्थात इब्राहीम) ने कहा, हे दूतो ! तुम्हारा क्या उद्देश्य है ? ।32।

उन्होंने कहा, हमें निःसन्देह एक अपराधी जाति की ओर भेजा गया है।33।

ताकि हम मिट्टी के बने हुए कंकर उनकी ओर चलाएँ ।34।

जो चिह्नित किये गये हैं तेरे रब्ब के समक्ष, अपव्यय करने वालों के लिए।35।

फिर हमने जो उसमें मोमिन थे उन सबको निकाल लिया ।36।

अतः हमने उसमें आज्ञाकारियों का केवल एक घर पाया ।37।

और (शिक्षा स्वरूप) उन लोगों के लिए उसमें एक बड़ा चिह्न छोड़ दिया जो पीड़ाजनक अज़ाब से डरते हैं ।38।

और मूसा (की घटना) में भी (ऐसा ही चिह्न था) जब हमने उसे एक स्पष्ट प्रमाण के साथ फिरऔन की ओर भेजा ।39।

अतः वह अपने सरदारों समेत विमुख हुआ और कहा, (यह व्यक्ति) केवल एक जादूगर अथवा पागल है ।40।

तब हमने उसे और उसकी सेना को पकड़ लिया और उन्हें समुद्र में फेंक दिया और वह धिक्कार के योग्य था ।41।

और आद (जाति) में भी (एक चिह्न था) । जब हमने उन पर एक विनाशकारी हवा चलाई ।42।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ ﴿٣٢﴾

قَالُوا إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَى قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ ﴿٣٣﴾

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِنْ طِينٍ ﴿٣٤﴾

مُسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِينَ ﴿٣٥﴾

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيهَا مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٣٦﴾

فَمَا وَجَدْنَا فِيهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿٣٧﴾

وَتَرَكْنَا فِيهَا آيَةً لِلَّذِينَ يَخَافُونَ الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ﴿٣٨﴾

وَفِي مُوسَى إِذْ أَرْسَلْنَاهُ إِلَى فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ﴿٣٩﴾

فَتَوَلَّى بِرُكْنِهِ وَقَالَ سِحْرٌ أَوْ مَجْنُونٌ ﴿٤٠﴾

فَأَخَذْنَاهُ وَجُودَهُ فَبَبَدْنَاهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيمٌ ﴿٤١﴾

وَفِي عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيحَ الْعَقِيمَ ﴿٤٢﴾

जिस वस्तु पर से वह गुज़रती थी उसका कुछ शेष नहीं छोड़ती थी और उसे गली-सड़ी वस्तु की भाँति कर देती थी। 143।

और समूद (जाति) में भी (एक चिह्न था)। जब उन्हें कहा गया कि एक समय तक लाभ उठा लो। 144।

अतः उन्होंने अपने रब्ब के आदेश की अवमानना की तो उन्हें आकाशीय बिजली ने आ पकड़ा और वे देखते रह गए। 145।

तब उनमें खड़े होने का भी सामर्थ्य नहीं रहा। और न ही वे प्रतिशोध लेने की शक्ति रखते थे। 146।

और नूह की जाति भी इससे पूर्व (एक सीख भरी चिह्न थी) निःसन्देह वे अवज्ञाकारी लोग थे। 147। (स्कू. 2)

और हमने आकाश को एक विशेष शक्ति से बनाया और निःसन्देह हम (इसे) विस्तार देने वाले हैं। 148।*

और धरती को हमने समतल बना दिया। अतः (हम) क्या ही अच्छा बिछौना बनाने वाले हैं। 149।

और हर चीज़ में से हमने जोड़ा-जोड़ा पैदा किया ताकि तुम उपदेश प्राप्त कर सको। 150।

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلْنَاهُ كَالرَّمِيمِ ٤٣

وَفِي ثَمُودَ إِذْ قِيلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوا حَتَّىٰ حِينٍ ٤٤

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُونَ ٤٥

فَمَا اسْتَطَاعُوا مِنْ قِيَامٍ وَمَا كَانُوا مُتَنَصِّرِينَ ٤٦

وَقَوْمِ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ٤٧

وَالسَّمَاءَ بَنَيْنَاهَا بِأَيْدٍ وَإِنَّا لَمُوسِعُونَ ٤٨

وَالْأَرْضَ فَرَشْنَاهَا فَنِعْمَ الْمِهْدُونَ ٤٩

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ٥٠

* इस आयत में अरबी शब्द बिऐदिन (विशेष शक्ति) इस ओर संकेत करता है कि अल्लाह तआला ने आकाश को बनाते हुए उसमें असंख्य लाभ रख दिए हैं। साथ ही यह वर्णन भी कर दिया कि इसे हम खूब विस्तृत करते चले जाएंगे। इस आयत का यह भाग कि “हम उसे और विस्तार देते चले जाएंगे” एक महान चमत्कारिक वाक्य है जिसे अरब का एक निरक्षर नबी अपनी ओर से कदापि वर्णन नहीं कर सकता था। यह विषय वैज्ञानिकों ने आधुनिक उपकरणों की सहायता से अब ज्ञात किया है कि यह ब्रह्मांड हर पल विस्तार की ओर अग्रसर है। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में तो प्रत्येक मनुष्य को यह ब्रह्मांड एक जड़ और स्थिर वस्तु प्रतीत होता था।

अतः शीघ्रता पूर्वक अल्लाह की ओर दौड़ो । निःसन्देह मैं उसकी ओर से तुम्हें एक खुला-खुला सतर्क करने वाला हूँ । 151।

और अल्लाह के साथ कोई और उपास्य न बनाओ । निःसन्देह मैं उसकी ओर से तुम्हें एक खुला-खुला सतर्क करने वाला हूँ । 152।

इसी प्रकार इनसे पहले लोगों की ओर भी जब भी कोई रसूल आया तो उन्होंने कहा कि यह एक जादूगर अथवा पागल है । 153।

क्या इसी (बात) का वे एक दूसरे को उपदेश देते हैं ? बल्कि ये उड़ण्डी लोग हैं । 154।

अतः इनसे मुँह फेर ले । तू कदापि किसी धिक्कार का पात्र नहीं । 155।

और तू उपदेश करता चला जा । अतः निःसन्देह उपदेश मोमिनों को लाभ पहुँचाता है । 156।

और मैंने जिन्नों और मनुष्यों को केवल इसलिए पैदा किया कि वे मेरी उपासना करें । 157।*

मैं उनसे कोई जीविका नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे भोजन करायें । 158।

فَفَرُّوْا اِلَى اللّٰهِ اِنِّىْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ
مُّبِيْنٌ ۝۵۱

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ اِنِّىْ لَكُمْ
مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۵۲

كَذٰلِكَ مَا اٰتٰى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۝۵۳

اَتَوٰصُوْا بِهِۦٓ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طٰغُوْنَ ۝۵۴

فَقَوْلٌ عَنْهُمْ فَمَا اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ۝۵۵

وَذِكْرٌ فَاِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۵۶

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا
لِيَعْبُدُوْنَ ۝۵۷

مَا اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَمَا اُرِيْدُ
اَنْ يَّطْعَمُوْنَ ۝۵۸

* इस आयत में जिन्नों व मनुष्यों से अभिप्राय बड़े और छोटे लोग तथा बड़ी और छोटी जातियाँ हैं । दोनों की उत्पत्ति का उद्देश्य अल्लाह तआला की उपासना करना है । यदि जिन से अभिप्राय सर्वसाधारण में समझे जाने वाले जिन हों तो फिर उनको भी तो उपासना का प्रतिफल मिलना चाहिए । अर्थात् उनको स्वर्ग में जाने का शुभ-समाचार मिलना चाहिए । परन्तु जिन्नों के स्वर्ग में जाने का कहीं कोई उल्लेख नहीं मिलता ।

निःसन्देह अल्लाह ही है जो बहुत जीविका प्रदान करने वाला, बड़ा शक्तिशाली और उत्तम गुणों वाला है ।59।

अतः उन लोगों के लिए जिन्होंने अत्याचार किया निश्चित रूप से अत्याचार के प्रतिफल का वैसा ही भाग है जैसा कि उनके समकर्म व्यक्तियों का था । अतः चाहिए कि वे मुझ से (उसकी) मांग करने में शीघ्रता न करें ।60।

अतः जिन्होंने इनकार किया, उनका उस दिन सर्वनाश होगा जिसका उन्हें वचन दिया जाता है ।61। (रुकू $\frac{3}{2}$)

إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿٥٩﴾

فَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُنُوبًا مِّثْلَ ذُنُوبِ أَصْحَابِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُونَ ﴿٦٠﴾

فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ يَوْمِهِمُ الَّذِي يُوعَدُونَ ﴿٦١﴾

52- सूरः अत-तूर

यह सूरः आरम्भिक मक्की सूरतों में से है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 50 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ भी ईश्वरीय साक्ष्यों से किया गया है । सबसे पहले तो तूर पर्वत का साक्ष्य है, जिस के ऊपर हज़रत मूसा अलै. को उनसे श्रेष्ठतर रसूल अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खबर दी गई थी । फिर एक ऐसी लिखी हुई पुस्तक की कसम खाई गई है जो चमड़े के खुले पन्नों पर लिखी हुई है । क्योंकि प्राचीन काल में चमड़े पर लिखने का प्रचलन था इसलिए वह पुस्तक चमड़े के पन्नों पर लिखी हुई बताई गई है । इस पुस्तक में ही बैतुल्लाह (खाना का'बा) के बारे में भविष्यवाणी उल्लेखित है जो मुत्तक़ी व्यक्तियों और आध्यात्मिकता से परिपूर्ण होगा । एक बार फिर ऊँची छत वाले आकाश को तथा ठाठें मारते हुए समुद्र को भी साक्षी ठहराया गया है, जिन दोनों के बीच पानी को सेवा पर लगा दिया गया है जो जीवन का सहारा बनता है ।

इन सब ईश्वरीय साक्ष्यों का उल्लेख करने के पश्चात् अल्लाह तआला यह चेतावनी देता है कि जिस दिन आकाश में भारी कंपन होगी और पर्वतों समान बड़ी-बड़ी सांसारिक शक्तियाँ उखाड़ फेंकी जाएँगी और समग्र जगत में बिखर जाएँगी, उस दिन झुठलाने वालों का इस संसार ही में बहुत बड़ा विनाश होगा ।

इसके पश्चात् अपराधियों को नरक की चेतावनी दी गई है और मुत्तक़ियों को स्वर्गों का शुभ-समाचार प्रदान किया गया है । अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को निरंतर उपदेश करते चले जाने का आदेश देते हुए अल्लाह तआला इस बात की गवाही देता है कि हे रसूल ! न तेरी बातें ज्योतिषियों की बातों की भाँति ढकोसले हैं और न तू पागल है क्योंकि तेरी अपनी वाणी और तुझ पर उतरने वाली वाणी इन दोनों बातों को पूर्णतया नकारती हैं । इस कारण अपने रब्ब का आदेश पहुँचाने हेतु उसी के लिए धैर्य धर । तू हमारी दृष्टि के सामने है अर्थात् हर समय हमारी सुरक्षा में है । और अल्लाह तआला की प्रशंसा उसके गुणगान के साथ करता रह । चाहे तू दिन के समय उपासना के लिए खड़ा हो अथवा रात्रि के समय उपासना के लिए खड़ा हो और जब सितारे डूब चुके हों तब भी अपने रब्ब की उपासना में लीन रह ।



سُورَةُ الطُّورِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

तूर की क़सम ।2।

وَالطُّورِ ②

और एक लिखी हुई पुस्तक की ।3।

وَكِتَابٍ مَّسْطُورٍ ③

(जो) चमड़े के खुले पन्नों में (है) ।4।

فِي رَقٍّ مَّنْشُورٍ ④

और आबाद घर की (क़सम) ।5।

وَالْبَيْتِ الْمَعْمُورِ ⑤

और ऊँची की हुई छत की ।6।

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوعِ ⑥

और ठाठें मारते हुए समुद्र की ।7।

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُورِ ⑦

निःसन्देह तेरे रब्ब का अज़ाब आ कर रहने वाला है ।8।

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ⑧

कोई उसे टालने वाला नहीं ।9।

مَا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ⑨

जिस दिन आकाश भीषण रूप से कांपने लगेगा ।10।

يَوْمَ تَمُورُ السَّمَاءُ مَوْرًا ⑩

और पर्वत बहुत अधिक चलने लगेंगे ।11।

وَتَسِيرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ⑪

अतः सर्वनाश हो उस दिन झुठलाने वालों का ।12।

فَوَيْلٌ لِلْيَوْمِيِّ لِلْمَكْذِبِينَ ⑫

जो निरर्थक बातों में पड़कर क्रीड़ामग्न रहते हैं ।13।

الَّذِينَ هُمْ فِي خَوْضٍ يَلْعَبُونَ ⑬

जिस दिन वे बलपूर्वक नरकाग्नि की ओर धकेल दिए जाएँगे ।14।

يَوْمَ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ⑭

(उनसे कहा जाएगा) यही वह अग्नि है जिसे तुम झुठलाया करते थे ।।5।

अतः क्या यह जादू है अथवा तुम सूझ-बूझ से काम नहीं लेते थे ? ।।6।

इसमें प्रविष्ट हो जाओ । फिर धैर्य करो अथवा न करो तुम्हारे लिए एक समान है। तुम को केवल उसी का प्रतिफल दिया जाएगा जो तुम कर्म किया करते थे ।।7।

निःसन्दह मुत्तकी स्वर्गों और नेमतों में होंगे ।।8।

उस पर प्रसन्न होते हुए जो उनके रब्ब ने उन्हें प्रदान किया । और उनका रब्ब उनको नरक के अज़ाब से बचाएगा ।।9।

स्वाद ले ले कर खाओ और पीओ, उन कर्मों के फल स्वरूप जो तुम किया करते थे ।।10।

वे पंक्तिबद्ध बिछाए हुए पलंगों पर टेक लगाए बैठे होंगे । और हम उन्हें बड़ी आँखों वाली कुंवारी कन्याओं के साथी बना देंगे ।।11।

और वे लोग जो ईमान लाए और उनकी संतान ने भी ईमान के फलस्वरूप उनका अनुसरण किया, उनके साथ हम उनकी संतान को भी मिला देंगे । जबकि उनके कर्मों में से उन्हें कुछ भी कम न देंगे । प्रत्येक व्यक्ति अपनी कमाए हुए का बंधक है ।।12।

और हम उनकी सहायता करेंगे । और हम उन्हें उसमें से एक प्रकार का फल

هَذِهِ النَّارُ الَّتِي كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُونَ ۝

أَفَسِحْرُ هَذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُونَ ۝

إِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوا أَوْ لَا تَصْبِرُوا ۚ

سَوَاءٌ عَلَيْكُمْ ۖ إِنَّمَا تُجْرُونَ مَا كُنْتُمْ

تَعْمَلُونَ ۝

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَعِيمٍ ۝

فَكِهِينَ بِمَا آتَاهُمْ رَبُّهُمْ ۖ وَوَقَّهْمُ

رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

مُتَّكِئِينَ عَلَى سُرُرٍ مَّصْفُوفَةٍ ۖ

وَزَوَّجْنَاهُمْ بِحُورٍ عِينٍ ۝

وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ

بِإِيمَانٍ ۖ الْخَفَاءُ بِهِمْ ذُرِّيَّتُهُمْ وَمَا

آلَتْهُمْ مِنْ أَعْمَالِهِمْ مِنْ شَيْءٍ ۖ

كُلُّ امْرِئٍ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ۝

وَأَمَدَدْنَاهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَلَحْمٍ مِّمَّا

और एक प्रकार का मांस प्रदान करेंगे
जिसकी वे इच्छा करेंगे ।23।

वे उस (स्वर्ग) में एक दूसरे से (नाज़
उठाते हुए) प्याले छीनेंगे । उस में न
कोई अशिष्टता होगी और न ही पाप की
बात होगी ।24।

और उनके नवयुवक जो मानो ढाँप कर
रखे हुए मोतियों की भाँति (दमक रहे)
होंगे, उनके गिर्द घूमेंगे ।25।*

और उनमें से कुछ, कुछ दूसरों की ओर
परस्पर एक-दूसरे का हाल-चाल पूछते
हुए ध्यान केन्द्रित करेंगे ।26।

वे कहेंगे, निःसन्देह हम तो इससे पूर्व
अपने घर वालों में बहुत डरे-डरे रहते
थे ।27।

फिर अल्लाह ने हम पर कृपा की और
हमें झुल्सा देने वाली लपटों के अज़ाब से
बचाया ।28।

निःसन्देह हम पहले भी उसी को पुकारा
करते थे । निश्चित रूप से वही बहुत
सद्-व्यवहार करने वाला (और) बार-
बार दया करने वाला है ।29। (रुकू 1/3)

अतएव तू उपदेश करता चला जा । अतः
अपने रब्ब की नेमत के फलस्वरूप तू न
तो ज्योतिषी है और न पागल है ।30।

क्या वे कहते हैं कि यह एक कवि है
जिसके बारे में हम समय के उलटफेर की
प्रतीक्षा कर रहे हैं ? ।31।

يُسْتَهْوَنَ ①

يَتَنَازَعُونَ فِيهَا كَأْسًا لَا لَغْوٌ فِيهَا
وَلَا تَأْثِيمٌ ②

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَهُمْ كَأَنَّهُمْ
لُؤْلُؤٌ مَّكْنُونٌ ③

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ يَتَسَاءَلُونَ ④

قَالُوا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِي أَهْلِنَا مُشْفِقِينَ ⑤

فَمَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا وَوَقَّنَا عَذَابَ السُّمُومِ ⑥

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوهُ ⑦ إِنَّهُ هُوَ
الْبَرُّ الرَّحِيمُ ⑧

فَذَكِّرْ فَمَا أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ
وَلَا مَجْنُونٍ ⑨

أَمْ يَقُولُونَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهِ رَيْبَ
الْمُنُونِ ⑩

* इस आयत में भी स्वर्ग की नेमतों का उपमा के रूप में वर्णन है । उन स्वर्गनिवासियों की सेवा के लिए ऐसे किशोर नियुक्त होंगे जो “मानो ढके हुए मोती” हैं । इन शब्दों ने प्रमाणित कर दिया कि यह सारा वाक्य एक उपमा के रूप में है ।

तू कह दे कि प्रतीक्षा करते रहो ।
निश्चित रूप से मैं भी तुम्हारे साथ
प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ ।32।

क्या उनके विक्षिप्त विचार उन्हें इस का
आदेश देते हैं अथवा वे हैं ही उद्वण्डी
लोग ? ।33।

क्या वे कहते हैं कि उसने उसे मिथ्या
रूप से गढ़ लिया है ? वास्तविकता यह
है कि वे (किसी प्रकार) ईमान लाने
वाले नहीं हैं ।34।

अतः यदि वे सच्चे हैं तो चाहिए कि इस
जैसी कोई वाणी लाकर दिखाएँ ।35।

क्या वे बिना किसी चीज़ के (अपने
आप) पैदा कर दिए गए अथवा वे ही
स्रष्टा हैं ।36।

क्या उन्होंने ही आकाशों और धरती
की सृष्टि की है ? वास्तविकता यह है
कि वे (किसी प्रकार) विश्वास नहीं
करेंगे ।37।

क्या उनके पास तेरे रब्ब के खज़ाने हैं
अथवा वे (उन पर) दारोगे हैं ? ।38।

क्या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस में
(चढ़ कर) वे बातें सुनते हैं ? अतः
चाहिए कि उनमें से सुनने वाला कोई
प्रबल (और) स्पष्ट प्रमाण तो पेश
करे ।39।

क्या उस (अर्थात् अल्लाह) के लिए
तो पुत्रियाँ और तुम्हारे लिए पुत्र
हैं ? ।40।

قُلْ تَرَبَّصُوا فَإِنِّي مَعَكُمْ مِنَ
الْمُتَرَبِّصِينَ ۝

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهَذَا أَمْ هُمْ
قَوْمٌ طَاغُونَ ۝

أَمْ يَقُولُونَ تَقَوَّلَهُ ۚ بَلْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا
صَادِقِينَ ۝

أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمْ
الْخُلُقُونَ ۝

أَمْ خَلَقُوا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَلْ
لَا يُوقِنُونَ ۝

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَائِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمْ
الْمُضْطَرُّونَ ۝

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۚ فَلْيَأْتِ
مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطَانٍ مُّبِينٍ ۝

أَمْ لَهُ الْبَنَاتُ وَلَكُمْ الْبَنُونَ ۝

क्या तू उनसे कोई प्रतिफल मांगता है जिसके परिणाम स्वरूप वे चट्टी के बोझ तले दबा दिए गए हैं ? 141।

अथवा क्या उनके पास अदृश्य (का ज्ञान) है, जिसे वे लिखते हैं ? 142।

क्या वे कोई चाल चलना चाहते हैं ? अतः जिन लोगों ने इनकार किया उन्हीं के विरुद्ध चाल चली जाएगी। 143।

क्या उनके लिए अल्लाह के सिवा भी कोई उपास्य है ? पवित्र है अल्लाह उससे जो वे शिर्क करते हैं 144।

और यदि वे आकाश से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखेंगे तो कहेंगे कि (यह) एक परत दर परत बादल है। 145।

अतः तू उन्हें छोड़ दे । यहाँ तक कि वे अपने उस दिन को देख लेंगे जिसमें उन पर बिजली गिराई जाएगी 146।

जिस दिन उनका कोई उपाय उनके कुछ काम नहीं आएगा और न उन्हें सहायता दी जाएगी 147।

और निःसन्देह वे लोग जिन्होंने अत्याचार किया, उनके लिए उसके अतिरिक्त (और) भी अज़ाब होगा । परन्तु उनमें से अधिकतर जानते नहीं। 148।

और अपने रब्ब के आदेश के लिए धैर्य धर । निश्चित रूप से तू हमारी आँखों के सामने (रहता) है । और जब तू उठता है अपने रब्ब की

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَّغْرَمٍ مُثْقَلُونَ ٤١

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ٤٢

أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ٤٣ فَالَّذِينَ كَفَرُوا هُمُ الْمَكِيدُونَ ٤٤

أَمْ لَهُمْ إِلَهٌ غَيْرُ اللَّهِ ٤٥ سُبْحَانَ اللَّهِ عَمَّا يُشْرِكُونَ ٤٦

وَإِنْ يَرَوْا كِسْفًا مِنَ السَّمَاءِ سَاقِطًا يَقُولُوا سَحَابٌ مَرْكُومٌ ٤٧

فَذَرْهُمْ حَتَّى يُلَاقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي فِيهِ يُصْعَقُونَ ٤٨

يَوْمَ لَا يُعْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ٤٩

وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذَلِكَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ٥٠

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا

प्रशंसा के साथ (उसका) गुणगान
कर ।49।

और रात को भी तथा सितारों के
अस्त होने के बाद भी उसकी
महिमागान कर ।50। (रुकू $\frac{2}{4}$)

وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ۝

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُومِ ۝

53- सूरः अन-नज्म

यह सूरः हब्शा (पूर्वी अफ्रीकी देश) की ओर मुसलमानों की हिजरत के तुरंत पश्चात नुबुव्वत (प्राप्ति) के पांचवें वर्ष अवतरित हुई थी। बिस्मिल्लाह सहित इसकी 63 आयतें हैं।

इस सूरः का नाम **अन-नज्म** (सितारा) है। पिछली सूरः के अन्त पर भी सितारों के अस्त होने का वर्णन है। इसके पश्चात सूरः के विषयवस्तु को मुश्रिकों की ओर फेरा गया है और जिस सितारा की मुश्रिक उपासना किया करते थे उसके गिर जाने की भविष्यवाणी की गई और वर्णन किया कि यह बात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ओर से नहीं गढ़ी, क्योंकि आप सल्ल. कभी भी अपने मनोवेग से कोई बात नहीं करते।

इससे पूर्व सूरः अज़-ज़ारियात के अन्त पर जिस अल्लाह को **बड़ा शक्तिशाली** और **बहुत जीविका प्रदान कारी** कहा गया, उसी अल्लाह के लिए इस सूरः में **शदीदुल कुवा** और **ज़ू मिर्रितिन** कहा गया। अर्थात् जो उत्तम गुणों वाला और अनुपम विवेकशील है।

इसके पश्चात मे'राज की घटना का वर्णन आरम्भ हो जाता है जिसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने रब्ब के निकट हुए और अल्लाह तआला आप सल्ल. पर कृपा के साथ झुक गया और वह दो धनुषों की एक प्रत्यंचा की भाँति हो गया। ये बहुत असाधारण आयतें हैं जिनकी विभिन्न रंगों में व्याख्या का प्रयत्न किया गया है। निःसन्देह इस घटना में किसी प्रत्यक्ष आकाश का उल्लेख नहीं है बल्कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर बीतने वाली एक असाधारण घटना का वर्णन है। यह एक ऐसा क़श्फ़ (दिव्य-दर्शन) है जिसका कोई उदाहरण किसी अन्य नबी के जीवन में नहीं मिलता। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दिल अल्लाह के प्रेम में क्षितिज की ओर ऊँचा हुआ और अल्लाह अपने भक्त के प्रेम में उसके दिल पर उतर आया। आयतांश **का ब क़ौसेन** (दो धनुष की प्रत्यंचा) से यह अभिप्राय है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वह प्रत्यंचा बन गए जो अल्लाह तआला और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धनुषों के मध्य एक ही था। अर्थात् अल्लाह तआला के धनुष से चलने वाला वाण वही था जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धनुष से चलता था। यह व्याख्या पवित्र कुरआन की आयत **जब तूने (उनकी ओर कंकर) फेंके तो तूने नहीं फेंके बल्कि अल्लाह ने फेंके**। (सूरः अन्फाल आयत : 18) के अनुरूप है। इस कारण इसे अपनी मतानुसार की गई व्याख्या कदापि

नहीं कही जा सकती ।

फिर मे'राज की यात्रा के सशरीर होने को पूर्णतया नकार दिया गया जब कहा **मा कज़बल फ़ुआदु मा रअ** (आयत 12) अर्थात् शारीरिक आँखों ने अल्लाह को नहीं देखा बल्कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल की आँखों ने जिस अल्लाह को देखा उस दिल ने उसके वर्णन में कोई झूठ नहीं बोला ।

इसके बाद एक बेरी का उल्लेख है जो अल्लाह और उसके भक्तों के मध्य सीमाओं को पृथक करने वाली एक बाड़ की भाँति है । वास्तव में पहले भी अरबों में यही प्रचलन था और आज भी यह प्रचलन मिलता है कि जब एक ज़मीनदार के भू-क्षेत्र की सीमा समाप्त होती है तो दूसरे ज़मीनदार के भू-क्षेत्र और उसके भू-क्षेत्र के बीच सरहद के रूप में काँटेदार बेरियाँ लगा दी जाती हैं । अतः आकाश पर कदापि कोई बेरी का वृक्ष नहीं उगा हुआ था कि जिससे परे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नहीं जा सकते थे । यह तो एक अत्यन्त हास्यास्पद व्याख्या है जो मध्यकाल के कुछ व्याख्याकारों ने की है । तात्पर्य केवल इतना है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस उच्च दर्जा तक अल्लाह तआला की निकटता पा गए जिसके उपर किसी भक्त की पहुँच संभव नहीं थी । क्योंकि इसके बाद फिर अल्लाह तआला की तनज़िही सिफ़ात (वे गुण जो अल्लाह के सिवा किसी और को प्राप्त न हो सकें) का क्षेत्र आरम्भ हो जाता है ।

इसके पश्चात काफ़िरों के काल्पनिक उपास्यों का वर्णन करते हुए कहा कि उनके अस्तित्व का कोई प्रमाण उनके पास नहीं है । वे केवल अटकल पच्चू करते हैं । अतः यहीं तक उनका समस्त ज्ञान सीमित है ।

यहाँ अरबी शब्द **शिअरा** से अभिप्राय सितारा है, जिसे मुश्रिकों ने उपास्य बना रखा था ।

इसके बाद अतीत की मुश्रिक जातियाँ शिर्क के परिणामस्वरूप जिस बुरे अंत को पहुँचीं, शिक्षा स्वरूप उनका संक्षिप्त विवरण उल्लेख किया गया है ।



سُورَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَ سِتُّونَ آيَةً وَ ثَلَاثَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

क़सम है सितारे की, जब वह गिर जाएगा ।2।

तुम्हारा साथी न तो पथभ्रष्ट हुआ और न ही असफल रहा ।3।

और वह मन की इच्छा से बात नहीं करता ।4।

यह तो केवल एक वहइ है जो उतारी जा रही है ।5।

उसे दृढ़ शक्तियों के स्वामी ने सिखाया है ।6।

(जो) परम विवेकशील है । फिर वह अधिष्ठित हुआ ।7।

जबकि वह उच्चतम क्षितिज पर (स्थित) था ।8।

फिर वह निकट हुआ । फिर वह नीचे उतर आया ।9।

अतः वह दो धनुषों की प्रत्यंचा की भाँति अथवा उससे भी निकटतम हो गया ।10।

अतः उसने अपने भक्त की ओर वह वहइ किया जो वहइ करना (चाहता) था ।11।

और (उसके) दिल ने झूठा वर्णन नहीं किया जो उसने देखा ।12।

अतः क्या तुम उससे इस (बात) पर झगड़ते हो जो उसने देखा ? ।13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوَىٰ ②

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوَىٰ ③

وَمَا يَطِّقُ عَنِ الْهَوَىٰ ④

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُوحَىٰ ⑤

عَلَّمَهُ شَدِيدُ الْقُوَىٰ ⑥

ذُو مِرَّةٍ ۖ فَاسْتَوَىٰ ⑦

وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلَىٰ ⑧

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلَّىٰ ⑨

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ ⑩

فَأَوْحَىٰ إِلَىٰ عَبْدِهِ مَا أَوْحَىٰ ⑪

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ ⑫

أَفَتُمِرُّونَهُ عَلَىٰ مَا يَرَىٰ ⑬

जबकि वह उसे एक और अवस्था में भी देख चुका है ।14।

अन्तिम सीमा पर स्थित बेरी के पास ।15।

उसके निकट ही शरण देने वाला स्वर्ग है ।16।

जब बेरी को उसने ढाँप लिया जो (ऐसे समय में) ढाँप लिया (करती है) ।17।

न दृष्टि भ्रान्त हुई और न सीमा से (आगे) बढ़ी ।18।

निःसन्देह उसने अपने रब्ब के चिह्नों में से सबसे बड़ा चिह्न देखा ।19।

अतः क्या तुमने लात और उज़्ज़ा को देखा है ? ।20।

और तीसरी मनात को भी जो (उनके) अतिरिक्त है ? ।21।*

क्या तुम्हारे लिए तो पुत्र हैं और उसके लिए पुत्रियाँ हैं ? ।22।

तब तो यह एक बहुत छोटा विभाजन हुआ ।23।

यह तो केवल नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने उनको दे रखे हैं । अल्लाह ने उनके समर्थन में कोई प्रबल तर्क नहीं उतारा । वे केवल भ्रम का अनुसरण कर रहे हैं और उसका (भी) जो मन चाहते हैं । जबकि उनके रब्ब की ओर से निश्चित रूप से उनके पास हिदायत आ चुकी है ।24।

क्या मनुष्य जो इच्छा करता है वह उसे मिल जाया करती है ? ।25।

وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ ۝۱۴

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهَىٰ ۝۱۵

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَأْوَىٰ ۝۱۶

إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشَىٰ ۝۱۷

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغَىٰ ۝۱۸

لَقَدْ رَأَىٰ مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرَىٰ ۝۱۹

أَفَرَأَيْتُمُ اللَّاتَ وَالْعُزَّىٰ ۝۲۰

وَمَنْوَةَ الثَّالِثَةِ الْآخَرَىٰ ۝۲۱

أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْأُنْثَىٰ ۝۲۲

تِلْكَ إِذَا قِسْمَةٌ ضِيزَىٰ ۝۲۳

إِنْ هِيَ إِلَّا أَسْمَاءٌ سَمِيَّتُوهَا أَنْتُمْ
وَأَبَاؤُكُمْ مِمَّا أُنْزِلَ اللَّهُ بِهَِا مِنْ
سُلْطَانٍ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا
تَهْوَى الْأَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنْ
رَبِّهِمُ الْهُدَىٰ ۝۲۴

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنَّىٰ ۝۲۵

* आयत 20, 21 : लात, उज़्ज़ा, मनात - वे मूर्तियाँ जिनकी इस्लाम से पूर्व अरबवासी पूजा करते थे ।

अतः अन्त और आदि दोनों ही अल्लाह के वश में हैं । 26। (रूकू $\frac{1}{5}$)

और आकाशों में कितने ही फ़रिश्ते हैं कि उनकी सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आती । परन्तु सिवाए उसके कि जिसे अल्लाह अपनी इच्छा से अनुमति दे और उस पर प्रसन्न हो जाए । 27।

निःसन्देह वे लोग जो परलोक पर ईमान नहीं लाते (उन ही में से हैं जो) फ़रिश्तों को हठपूर्वक स्त्रियों वाले नाम देते हैं । 28।

हालाँकि उन्हें उसका कुछ भी ज्ञान नहीं । वे भ्रम के अतिरिक्त किसी चीज़ का अनुसरण नहीं करते । और निःसन्देह भ्रम सत्य के मुक़ाबले पर कुछ भी काम नहीं आता । 29।

अतः तू उससे मुँह फेर ले जो हमारे स्मरण से विमुख होता है और सांसारिक जीवन के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहता । 30।

यही उनके ज्ञान की कुल पूँजी है । निःसन्देह तेरा रब्ब ही है जो सबसे अधिक उसे जानता है जो उसके रास्ते से भटक गया । और वह सबसे अधिक उसे जानता है जो हिदायत पा गया । 31।

और अल्लाह ही का है जो आकाशों में है और जो धरती में है । उसी का परिणाम होता है कि वह उन लोगों को जिन्होंने बुराइयाँ कीं उनके कर्म का प्रतिफल देता है और उनको उत्तम

عَلَّمَ

فَلِلَّهِ الْآخِرَةُ وَالْأُولَى ۝

وَكَمْ مِنْ مَّلَكٍ فِي السَّمَوَاتِ لَا تُغْنِي شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْ بَعْدِ أَنْ يَأْذَنَ اللَّهُ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَرْضَى ۝

إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ لَيُسَمُّونَ الْمَلَائِكَةَ تَسْمِيَةَ الْإِنثَى ۝

وَمَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ ۖ وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۝

فَاعْرِضْ عَنْ مَنْ تَوَلَّىٰ عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝

ذَلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِنَ الْعِلْمِ ۖ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ ۖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدَى ۝

وَلِلَّهِ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۖ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ أَسَاءُوا بِمَا عَمِلُوا وَيَجْزِيَ

प्रतिफल देता है जो उत्तम कर्म करते थे ।32।

(ये अच्छे कर्मों वाले) वे लोग हैं जो सिवाए मामूली भूल-चूक के बड़े पापों और अश्लीलताओं से बचते हैं । निःसन्देह तेरा रब्ब अत्यन्त क्षमाशील है। वह तुम्हें सबसे अधिक जानता था जब उसने धरती से तुम्हें विकसित किया और जब तुम अपनी माओं के गर्भ में केवल भ्रूण की अवस्था में थे । अतः अपने आपको को (यूँ ही) पवित्र न ठहराया करो। वही है जो सबसे अधिक जानता है कि मुत्तकी कौन है ।33। (रकू $\frac{2}{6}$)

क्या तूने ऐसे व्यक्ति पर ध्यान दिया है जिसने पीठ फेर ली ।34।

और थोड़ा सा दिया और हाथ रोक लिया ।35।

क्या उसके पास अदृश्य का ज्ञान है जिसके परिणाम स्वरूप वह वास्तविकता को देख रहा है ? ।36।

अथवा क्या उसे उसकी सूचना नहीं दी गई जो मूसा के ग्रन्थों में है ? ।37।

और इब्राहीम (के ग्रन्थों में भी) जिसने प्रतिज्ञा को पूरा किया ।38।

कि कोई बोझ उठाने वाली किसी दूसरी का बोझ नहीं उठाएगी ।39।

और यह कि मनुष्य के लिए उसके अतिरिक्त कुछ नहीं जो उसने प्रयत्न किया हो ।40।

और यह कि उसका प्रयत्न अवश्य दृष्टि में रखा जाएगा ।41।

الَّذِينَ أَحْسَنُوا بِالْحُسْنَىٰ ۖ

الَّذِينَ يَجْتَنِبُونَ كَبِيرَ الْإِثْمِ
وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ
وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ
أَنْشَأَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ
فِي بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْا
أَنْفُسَكُمْ ۖ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقَىٰ ۖ

أَفَرَأَيْتَ الَّذِي تَوَلَّىٰ

وَأَعْطَىٰ قَلِيلًا وَأَكْثَىٰ ۚ

أَعِنْدَهُ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهَوْ يَرَىٰ ۚ

أَمْ لَمْ يُنَبِّأْ بِمَا فِي صُحُفِ مُوسَىٰ ۖ

وَأَبْرَاهِيمَ الَّذِي وَفَّىٰ ۖ

أَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِزْرَ أُخْرَىٰ ۖ

وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعَىٰ ۖ

وَأَنْ سَعْيُهُ سَوْفَ يُرَىٰ ۖ

फिर उसे उसका भरपूर प्रतिफल दिया जाएगा ।42।

और यह कि अन्ततः तेरे रब्ब की ओर ही पहुँचना है ।43।

और यह कि वही है जो हंसाता है और रुलाता भी है ।44।

और यह कि वही है जो मारता है और जीवित भी करता है ।45।

और यह कि वही है जिसने जोड़ा पैदा किया, अर्थात् पुरुष और स्त्री ।46।

वीर्य से, जब वह डाला जाता है ।47।

और यह कि दोबारा उठाना उसी के ज़िम्मे है ।48।

और यह कि वही है जो धनवान बनाता है और खज़ाने प्रदान करता है ।49।

और यह कि वही है जो शिअ्रा (सितारे) का रब्ब है ।50।

और यह कि वही है जिसने प्रथम आद (जाति) को विनष्ट किया ।51।

और समूद (जाति) को भी । फिर (उनका) कुछ न छोड़ा ।52।

और इससे पहले नूह की जाति को भी। निःसन्देह वही लोग सबसे अधिक अत्याचारी और सबसे अधिक उद्वण्डी थे ।53।

और उलट-पुलट हो जाने वाली बस्तियों को भी उसने दे मारा ।54।

फिर उन्हें उस चीज़ ने ढाँप लिया जो (ऐसे समय) ढाँप लिया (करती है) ।55।

ثُمَّ يُجْزِيهِ الْبَرْزَاءَ الْأَوْفَى ۝

وَأَنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الْمُنْتَهَىٰ ۝

وَأَنَّهُ هُوَ أَصْحَاكَ وَأَبَىٰ ۝

وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتٌ وَأَحْيَا ۝

وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ۝

مِنْ نُّطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ۝

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْآخِرَىٰ ۝

وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ۝

وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشَّعْرَىٰ ۝

وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ۝

وَتَمُودًا فَمَا أَبْقَىٰ ۝

وَقَوْمَ نُوحٍ مِّنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا

هُمُ الظَّالِمَ ۖ وَأَطْغَىٰ ۝

وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ۝

فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ ۝

अतः तू अपने रब्ब की किन-किन नेमतों के बारे में वाद-विवाद करेगा ? 156।

यह पहले की सतर्कवाणियों की भाँति एक सतर्कवाणी है 157।*

निकट आने वाली निकट आ चुकी है 158।

अल्लाह की इच्छा के विरुद्ध उसे कोई टालने वाली नहीं है 159।

अतः क्या तुम इस बात पर आश्चर्य करते हो ? 160।

और हंसते हो और रोते नहीं ? 161।

और तुम तो असावधान लोग हो 162।

अतः अल्लाह के समक्ष सजदः में गिर जाओ और (उसी की) उपासना करो 163। (रुकू $\frac{3}{7}$)

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَى ٥٦

هَذَا نَذِيرٌ مِّنَ النَّذِرِ الْأُولَى ٥٧

أَزِفَتِ الْأَزْفَةُ ٥٨

لَيْسَ لَهُمَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ٥٩

أَفَمِنْ هَذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ٦٠

وَتَضَحَكُونَ وَلَا تَبْكُونَ ٦١

وَأَنْتُمْ سَمِدُونَ ٦٢

فَاسْجُدُوا لِلَّهِ وَاعْبُدُوا ٦٣

54- सूरः अल-क़मर

यह सूरः मक्का में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 56 आयतें हैं ।

इससे पूर्ववर्ती सूरः में मुश्रिकों के कृत्रिम उपास्य शिअरा (सितारा) के गिरने का वर्णन है, मानो यह भविष्यवाणी की गई है कि शिर्क अपने काल्पनिक उपास्य सहित अवश्य नष्ट कर दिया जाएगा ।

अब सूरः अल् क़मर के आरम्भ ही में यह ख़बर दे दी गई कि वह घड़ी आ गई है और इस पर चन्द्रमा ने दो टुकड़े हो कर गवाही दे दी । चन्द्रमा से अभिप्राय अरब साम्राज्य-काल है । चन्द्रमा की यह व्याख्या भी स्वयं हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है। अतः अब सदा के लिए मुश्रिकों का साम्राज्य-काल समाप्त हुआ और वह घड़ी आ गई जो क्रांति की घड़ी थी और जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन के साथ ही प्रकट होनी थी ।

इसके पश्चात एक ऐसी आयत है जिससे पूर्ण रूप से प्रमाणित होता है कि उस समय के मुश्रिकों ने कुछ क्षणों के लिए चन्द्रमा को निःसन्देह दो भागों में बंटते हुए देखा था । इसके सम्बन्ध में व्याख्याकारों ने शुद्ध-अशुद्ध बहुत सी व्याख्याएँ की हैं । परन्तु उस वास्तविकता से इनकार नहीं किया जा सकता क्योंकि यदि मुश्रिकों ने चन्द्रमा के विभाजन का यह दृश्य न देखा होता तो वे तुरन्त इस घटना का इनकार कर देते । और मोमिन भी अपने ईमान से फिर जाते क्योंकि ईमान का पूरा आधार हज़रत मुहम्मद सल्ल. की सच्चाई पर था । **सिहुम मुस्तमिर** (चिरप्रचलित जादू) कह कर मुश्रिकों ने गवाही दे दी कि घटना तो अवश्य हुई है परन्तु जादू है । और इस प्रकार के जादू हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सदैव दिखाते रहते हैं ।

इसके पश्चात एक बार फिर अतीत की मुश्रिक जातियों का वर्णन है कि प्रत्येक ने अपने समय के रसूल को पागल ही घोषित किया था । वे एक के बाद एक अपने इनकार और अशिष्टता के परिणामस्वरूप विनष्ट कर दी गई ।

इस सूरः में एक आयत को बार-बार दोहराया गया है कि उपदेश प्राप्त करने के लिए हमने कुरआन करीम को सरल बनाया है । अर्थात् पिछली जातियों की दशा पर कोई किंचित विचार भी करता तो उसको सरलता पूर्वक यह बात समझ आ सकती थी कि संसार में सबसे बड़ा विनाश शिर्क ने फैलाया हुआ है । परन्तु कोई है जो उपदेश ग्रहण करने वाला हो । न पहले लोगों में से अधिकतर ने उपदेश ग्रहण किया और न बाद में आने वालों में से अधिकतर उपदेश ग्रहण करते हैं ।



سُورَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ سِتُّ وَخَمْسُونَ آيَةً وَثَلَاثَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

निश्चित घड़ी निकट आ गई और चन्द्रमा फट गया ।2।

और यदि वे कोई चिह्न देखें तो मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं, चिरप्रचलित जादू है ।3।

और उन्होंने झुठला दिया और अपनी इच्छाओं का अनुसरण किया (और जल्दबाजी की) हालांकि प्रत्येक काम (अपने समय पर) होकर रहता है ।4।

और उनके पास कुछ खबरें पहुंच चुकी थीं जिनमें कड़ी चेतावनी थी ।5।

श्रेष्ठतम तत्त्वपूर्ण (बातें) थीं फिर भी चेतावनियां किसी काम न आयीं ।6।

अतः उनसे विमुख रह । (वे दख लेंगे) वह दिन जब बुलाने वाला एक अत्यन्त अप्रिय वस्तु की ओर बुलाएगा ।7।

उनकी दृष्टियां अपमानवश झुकी हुई होंगी । वे क़ब्रों से निकलेंगे मानो वे (हर ओर) बिखरी हुई टिड्डियां हैं ।8।

वे बुलाने वाले की ओर दौड़ रहे होंगे । काफ़िर कह रहे होंगे कि यह बड़ा कठिन दिन है ।9।

उनसे पूर्व नूह की जाति ने भी झुठलाया था । अतः उन्होंने हमारे भक्त को

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ②

وَإِنْ يَرَوْا آيَةً يُعَرِّضُوا وَيَقُولُوا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ③

وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا أَهْوَاءَهُمْ وَكُلُّ أَمْرٍ مُّسْتَقَرٌّ ④

وَلَقَدْ جَاءَهُمْ مِنَ الْأَنْبَاءِ مَا فِيهِ مُزْدَجَرٌ ⑤

حِكْمَةٌ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ التَّذْذِرُ ⑥

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلَىٰ شَيْءٍ نُّكْرٍ ⑦

خُشْعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنتَشِرٌ ⑧

مُهْطِعِينَ إِلَى الدَّاعِ يَقُولُ الْكُفْرُونَ هَذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ⑨

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ فَكَذَّبُوا

झुठलाया और कहा कि एक पागल और धुतकारा हुआ है ।10।

तब उसने अपने रब्ब को पुकारा और कहा कि निश्चित रूप से मैं दबा हुआ हूँ। अतः मेरी सहायता कर ।11।

तब हमने लगातार बरसने वाले जल के रूप में आकाश के द्वार खोल दिए ।12।

और हमने धरती को जलस्रोतों के रूप में फाड़ दिया । अतः पानी एक ऐसी बात पर इकट्ठा हो गया जो पहले से निश्चित किया जा चुका था ।13।

और उसे (अर्थात् नूह को) हमने तख्तों और कीलों वाली (नौका) पर सवार किया ।14।

वह हमारी आँखों के सामने चलती थी । उस के प्रतिफल स्वरूप, जिसका इनकार किया गया था ।15।

और निःसन्देह हमने उस (नौका) को एक बड़े चिह्न के रूप में छोड़ा । अतएव है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? ।16।*

عَبَدْنَا وَقَالُوا مَجْثُونٌ وَازْدُجِرَ ۝

فَدَعَا رَبَّهُ أَنِّي مَغْلُوبٌ فَانْتَصِرَ ۝

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُنْهَمِرٍ ۝

وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى الْمَاءُ عَلَى أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝

وَحَمَلْنَاهُ عَلَى ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَدُسْرٍ ۝

تَجَرَّى بِأَعْيُنِنَا جَزَاءَ لِمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝

وَلَقَدْ تَرَكْنَاهَا آيَةً فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ۝

* आयत सं. 13 से 16 : इन आयतों में हज़रत नूह अलै. की नौका की चर्चा की जा रही है, जो लकड़ी के तख्तों और कीलों से बनी हुई थी । अर्थात् हज़रत नूह अलै. के युग में सभ्यता इतनी उन्नति कर चुकी थी कि उन्हें लोहे के प्रयोग करने पर पूरी तरह निपुणता प्राप्त हो चुकी थी । और वे सम्भवतः लकड़ी के तख्ते चीरने के लिए आरे भी बना सकते थे । इसी नौका के संबंध में कहा गया है कि यह एक चिह्न है जो उपदेश ग्रहण करने वालों के लिए ईमानवर्धक सिद्ध होगा । इससे यह सम्भावना भी उत्पन्न होती है कि हज़रत नूह अलै. की नौका को आने वाली पीढ़ियों के लिए एक चिह्न के रूप में सुरक्षित कर दिया गया है । जबकि ईसाइयों को कुरआन करीम के इस वर्णन की कोई जानकारी नहीं। वे फिर भी हज़रत नूह अलै. की नौका को कहीं न कहीं एक चिह्न के रूप में सुरक्षित समझते हैं और इसकी खोज हर जगह जारी है । जमाअत अहमदिय्या की ओर से भी कुछ लोग इस काम पर लगे हैं कि कुरआनी आयतों के संदर्भ में इस नौका को खोज निकालें । मेरी खोज के अनुसार यह नौका अन्ध महासागर की तल में सुरक्षित हो गई है और समय आने पर निकाल ली जाएगी ।

अतः मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी कैसी थी ? 117।

और निःसन्देह हमने कुरआन को उपदेश प्राप्ति के लिए सरल बना दिया।
अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? 118।

आद (जाति) ने भी झुठलाया था । फिर कैसा था मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी ? 119।

निःसन्देह हमने एक आकर ठहर जाने वाले अशुभ दिन में उन पर एक बहुत तीव्र गति से चलने वाली हवा भेजी 120।
जो लोगों को पछाड़ रही थी मानो वे जड़ों से उखड़े हुए खजूर के तने हों 121।

अतः कैसा था मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी ? 122।

और निःसन्देह हमने कुरआन को उपदेश प्राप्ति के लिए सरल बना दिया।
अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? 123। (रकू $\frac{1}{8}$)

समूद (जाति) ने भी सतर्क करने वालों को झुठला दिया था 124।

अतः उन्होंने कहा कि क्या हम अपने ही में से एक व्यक्ति का अनुसरण करें ?
तब तो हम निःसन्देह पथभ्रष्टता और पागलपने में पड़ जाएंगे 125।

क्या हमारे बीच में से एक इसी व्यक्ति पर अनुस्मारक-ग्रन्थ उतारा गया ?
नहीं ! बल्कि यह तो अत्यन्त झूठा (और) शेखी बघारने वाला है ? 126।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ①

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ②

كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ③

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمٍ نَحْسٍ مُسْتَمِرٍّ ④

تَنْزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُنْقَعِرٍ ⑤

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ⑥

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ ⑦

كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ ⑧

فَقَالُوا أَبَشَرًا مِمَّا وَاحِدًا نَتَّبِعُهُ إِنَّا إِدَّا لَفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ⑨

ءَالْقَى الذِّكْرَ عَلَيْهِ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَابٌ أَشِرٌّ ⑩

आने वाले कल को वे अवश्य जान लेंगे कि कौन है जो अत्यन्त झूठा और शेखी बघारने वाला है ? 127।

निःसन्देह उनकी परीक्षा स्वरूप हम एक ऊँटनी भेजने वाले हैं । अतः (हे सालेह !) तू उन पर दृष्टि रख और धैर्य धारण कर 128।

और उन्हें बता दे कि पानी उनके बीच (समयानुसार) बांटा जा चुका है। पानी पीने की हर निर्धारित बारी के अंदर ही उपस्थित होना आवश्यक है 129।

तब उन्होंने अपने साथी को बुलाया । उसने (उस ऊँटनी को) पकड़ लिया और (उसकी) कूँचें काट दीं 130।

फिर मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी कैसी थी ? 131।

निःसन्देह हमने उन पर एक ही ऊँची आवाज़ भेजी तो वे एक कटी हुई बाड़ की भाँति हो गए जो पाँवों के नीचे रौंदी जा चुकी हो 132।

और निःसन्देह हमने कुरआन को उपदेश प्राप्ति के लिए सरल बना दिया। अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? 133।

लूट की जाति ने भी सतर्ककारियों को झुठला दिया था 134।

निःसन्देह हमने उन पर पत्थरों की वर्षा बरसाई, सिवाए लूट के घर वालों के । उन्हें हमने प्रातः काल बचा लिया 135।

سَيَعْلَمُونَ عَذَابَ الْكَذَّابِ الْأَشْرُ ٢٧

إِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَهُمْ
فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ ٢٨

وَنَبِّئُهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ كُلُّ
شَرِبٍ مُحْتَضَرٌ ٢٩

فَنَادُوا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ ٣٠

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذْرِي ٣١

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَاحِدَةً
فَكَانُوا كَهَشِيمِ الْمُحْتَظِرِ ٣٢

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ
مُذَكِّرٍ ٣٣

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ بِالنُّذْرِ ٣٤

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا آلَ
لُوطٍ نَّجَّيْنَاهُمْ بِسَحَرٍ ٣٥

अपनी ओर से एक नेमत के रूप में ।
इसी प्रकार हम उसे प्रतिफल दिया करते
हैं जो कृतज्ञता प्रकट करे ।36।

और उसने भी उनको हमारी पकड़ से
डराया था । फिर भी वे चेतावनी के बारे
में असमंजस में रहे ।37।*

और उन्होंने उसे अपने अतिथियों के बारे
में फुसलाना चाहा तो हमने उनकी
आँखों को प्रकाशहीन कर दिया । अतः
मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी का स्वाद
चखो ।38।

और निःसन्देह उनके पास सुबह सवेरे ही
एक ठहर जाने वाला अज़ाब आ गया ।39।
अतः मेरा अज़ाब और मेरी चेतावनी का
स्वाद चखो ।40।

और निःसन्देह हमने कुरआन को
उपदेश प्राप्ति के लिए सरल बना
दिया। अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण
करने वाला ? ।41। (सूकू २/९)

और निःसन्देह फिरऔन के घर वालों के
पास भी सतर्ककारी आए ।42।

उन्होंने हमारे समस्त चिह्नों का इनकार
कर दिया । अतः हमने उन्हें इस प्रकार
पकड़ लिया जैसे पूर्ण प्रभुत्व वाला
सर्वशक्तिमान पकड़ता है ।43।

क्या तुम्हारे (युग के) काफ़िर उनसे श्रेष्ठ
हैं अथवा तुम्हारे लिए ग्रन्थों में छुटकारे
की कोई ज़मानत है ? ।44।

क्या वे कहते हैं कि हम बदला लेने वाला
गिरोह हैं ? ।45।

يَعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا ۖ كَذَلِكَ نَجْزِي
مَنْ شَكَرَ ۝۳۶

وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا
بِالنَّذْرِ ۝۳۷

وَلَقَدْ رَاوَدُوهُ عَنْ صَيْفِهِ فَطَمَسْنَا
أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذْرِي ۝۳۸

وَلَقَدْ صَبَحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقَرٌّ ۝۳۹
فَذُوقُوا عَذَابِي وَنُذْرِي ۝۴०

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ
مُّدَكِّرٍ ۝۴१

وَلَقَدْ جَاءَ آلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ۝۴२

كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا كُلِّهَا فَآخَذْنَاهُمْ أَخْذَ عَزِيزٍ
مُّقْتَدِرٍ ۝۴३

أَكْفَارُكُمْ خَيْرٌ مِنْ أُولَئِكُمْ أَمْ لَكُمْ
بِرَأْءِ فِي الرَّبِّ ۝۴४

أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرُونَ ۝۴५

इस विशाल जन-समूह को अवश्य पराजित किया जाएगा और वे पीठ फेर जाएंगे। 146।*

बल्कि उनसे क्रांति की घड़ी का वादा किया गया है और वह घड़ी बहुत कठोर और बहुत कड़वी होगी। 147।

निःसन्देह अपराधी लोग विनाश और पागलपन (की दशा) में होंगे। 148।

जिस दिन वे अग्नि में अपने चेहरों के बल घसीटे जाएंगे। (उन्हें कहा जाएगा) नरक का स्वाद चखो। 149।

निःसन्देह हमने हरेक चीज़ को एक अनुमान के अनुसार पैदा किया है। 150।

और हमारा आदेश एक ही बार आँख झपकने की भाँति (आता) है। 151।

और निःसन्देह हम तुम्हारे समकर्मियों को (पहले भी) विनष्ट कर चुके हैं। अतः क्या है कोई उपदेश ग्रहण करने वाला ? 152।

और प्रत्येक काम जो वे करते हैं, ग्रन्थों में (मौजूद) है। 153।

और प्रत्येक छोटा और बड़ा लिखा हुआ है। 154।

निःसन्देह मुत्तक्री स्वर्गों में और समृद्धि की अवस्था में होंगे। 155।

सच्चाई के आसन पर, एक सर्व-शक्तिमान सम्राट के निकट। 156।

(स्कू 3/10)

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ الدُّبُرَ ١٤٦

بَلِ السَّاعَةِ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَذْهَىٰ وَآمُرُ ١٤٧

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ ١٤٨

يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِي النَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ ذُوقُوا مَسَّ سَقَرَ ١٤٩

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ ١٥٠

وَمَا أَمْرُنَا إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ ١٥١

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا أَشْيَاءَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُدْكِرٍ ١٥٢

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ١٥٣

وَكُلُّ صَغِيرٍ وَكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ١٥٤

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَنَهَرٍ ١٥٥

فِي مَقْعَدٍ صَدِيقٍ عِنْدَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ١٥٦

* आयत सं. 45-46 ये आयतें जो आरम्भिक मक्की आयतों में से हैं, इनमें अहज़ाब युद्ध की भविष्यवाणी की गई है कि काफ़िरों की विशाल सेना मुसलमानों को पीठ दिखा कर भाग खड़ी होगी।

55- सूर: अर-रहमान

यह सूर: आरम्भिक मक्की दौर में अवतरित हुई थी । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 79 आयतें हैं ।

इस सूर: में मनुष्य और कुरआन करीम से संबंधित दो पृथक पृथक मुहावरे प्रयुक्त किये गए हैं । कुरआन के बारे में **खल्क** (सृष्टि) शब्द का कहीं कोई उल्लेख नहीं है परन्तु मनुष्य के लिए खल्क शब्द का उल्लेख है । अतः इस सूर: पर विचार न करने के परिणाम स्वरूप मध्य काल में कुछ मुसलमान कुरआन को मख्लूक (सृष्टि) मानते रहे और कुछ इसके विपरीत । इस कारण इन मुसलमानों में बहुत ही रक्तपात हुआ ।

इस सूर: में एक **मीज़ान** (तुला) का भी उल्लेख है और वर्णन किया गया है कि समग्र आकाश में एक संतुलन दिखाई देगा और वास्तव में हर ऊँचाई इसी संतुलन के अधीन होती है । अतः यदि अल्लाह तआला के मोमिन भक्त भी सदा इस संतुलन को बनाये रखेंगे और न्याय के विरुद्ध कभी कोई बात नहीं करेंगे तो अल्लाह तआला उनको भी बड़ी ऊँचाइयाँ प्रदान करेगा ।

इसके पश्चात जिन्न और मनुष्य को संबोधित करके इस बात की बार-बार पुनरावृत्ति की गई है कि तुम दोनों अन्ततः अल्लाह की किस किस नेमत का अस्वीकार करोगे । इसी प्रसंग में जिन्नों और मनुष्यों की उत्पत्ति का अन्तर भी वर्णन कर दिया कि जिन्न को आग के लपटों से पैदा किया गया है । वर्तमान युग में जिन्न शब्द की विभिन्न व्याख्याएँ की जाती हैं । परन्तु यहाँ जिन्न की एक व्याख्या यह है कि विषाणु (वायरस) और जीवाणु (बैक्टीरिया) भी जिन्न हैं जो सृष्टि के आरम्भ में आकाश से गिरने वाली अग्निमय रेडियो तरंगों के परिणामस्वरूप पैदा हुए । वर्तमान युग में इस बात पर सभी वैज्ञानिक सहमत हो चुके हैं कि बैक्टीरिया और वायरस सीधे-सीधे अग्नि से शक्ति प्राप्त कर के अस्तित्व में आते हैं ।

फिर मनुष्य के बारे में एक ऐसी भविष्यवाणी की गई है जो बहुत ही तत्त्वपूर्ण और सृष्टि के गहरे रहस्यों पर से पर्दा उठाती है । गीली मिट्टी से मनुष्य के पैदा करने की कल्पना तो पिछली सब पुस्तकों में मौजूद है परन्तु खनकती हुई ठीकरियों से मनुष्य का पैदा किया जाना एक ऐसी कल्पना है जो कुरआन मजीद से पूर्व किसी भी पुस्तक ने वर्णन नहीं किया । यहाँ विस्तार का अवसर नहीं, परन्तु वैज्ञानिक जानते हैं कि सृष्टि के बीच एक ऐसा पड़ाव भी आया जब आवश्यक था कि सृष्टि के तत्त्वों को बजने वाली ठीकरियों के रूप में शुष्क कर दिया जाता । फिर समुद्र ने इस शुष्क तत्त्व को वापस अपनी लहरों में समो लिया और मनुष्य की रासायनिक विकास की ऐसी यात्रा आरम्भ

हुई जिसमें मनुष्य की उत्पत्ति के लिए ये आवश्यक रसायन बार-बार अपने प्रारम्भिक अवस्था की ओर न लौट सकें ।

फिर यह भविष्यवाणी की गई कि अल्लाह तआला दो समुद्रों के बीच स्थित अन्तराल को समाप्त कर देगा और वे एक दूसरे से मिल जाएंगे ।

फिर एक और आयत ऐसी है जो कुरआन के अवतरण काल में किसी मनुष्य की कल्पना में नहीं आ सकती थी । मनुष्य में तो गज़ दो गज़ तक ऊँची छलांग मारने की भी शक्ति नहीं थी, कौन सोच सकता था कि बड़े लोग भी और छोटे लोग भी धरती और आकाश की सीमाओं को लाँघने का प्रयास करेंगे । इस प्रयास का आरम्भ मनुष्य के चन्द्रमा तक पहुँचने से हो चुका है । और उससे उच्चतर ग्रहों तक पहुँचने का प्रयास जारी है । परन्तु कुरआन करीम की भविष्यवाणी है कि मनुष्य **सुल्तान** अर्थात् ठोस तर्कों के बिना सृष्टि की सीमाओं को नहीं लाँघ सकता । और जब भी सशरीर लाँघने का प्रयास करेगा उस पर आग और पिघला हुआ ताँबा बरसाया जाएगा । इसमें कोई संदेह नहीं कि जब तक वैज्ञानिक आकाशीय पिण्डों की शिलावृष्टि से बचने के लिए समस्त संभावित उपाय न अपनायें वे रॉकेट्स में बैठ कर अंतरिक्ष की यात्रा नहीं कर सकते ।

नरक के आलंकारिक वर्णन के पश्चात् फिर स्वर्ग का आलंकारिक वर्णन आरम्भ होता है । पाठकों को सचेत रहना चाहिए कि कदापि इस वर्णन का ज़ाहिरी अर्थ करने का प्रयास न करें । यह सारी की सारी एक आलंकारिक भाषा है । इस पर विचार करने से विचारशील व्यक्तियों को ज्ञान के नए नए मोती प्राप्त हो सकते हैं । अन्यथा उनका दिमाग़ भटकता फिरेगा और कुछ भी प्राप्त न हो सकेगा । सिवाए स्वर्ग की एक भौतिक कल्पना के जिसमें बहुत सी बातों का कोई समाधान उन्हें ज्ञात न हो सकेगा । अतः अल्लाह तआला का नाम असीम बरकतों वाला है । उसकी बरकतों की गणना संभव नहीं है । वह प्रबल प्रतापी और परम सम्माननीय है ।



سُورَةُ الرَّحْمَنِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَةِ تِسْعٌ وَسَبْعُونَ آيَةً وَثَلَاثَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

अनंत कृपा करने वाला और बिन मांगे देने वाला ।2।

उसने कुरआन की शिक्षा दी ।3।

मनुष्य को पैदा किया ।4।

उसे अभिव्यक्त करना सिखाया ।5।

सूर्य और चन्द्रमा एक गणना के अनुसार (कार्यरत) हैं ।6।*

और सितारे और वृक्ष दोनों (अल्लाह के समक्ष) नतमस्तक हैं ।7।**

और आकाश की क्या ही शान है । उसने उसे ऊँचाई प्रदान की और न्याय का नमूना बनाया ।8।***

ताकि तुम नाप-तौल में कमी-बेशी न करो ।9।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الرَّحْمَنِ ②

عَلَّمَ الْقُرْآنَ ③

خَلَقَ الْإِنْسَانَ ④

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ⑤

الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ⑥

وَالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدَانِ ⑦

وَالسَّمَاءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيزَانَ ⑧

أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيزَانِ ⑨

* यहाँ अरबी शब्द **बि हस्बानि** का एक अर्थ यह भी है कि यह गणना के साधन हैं । दुनिया में जितनी भी उन्नति हुई है वह गणना के द्वारा हुई है और वैज्ञानिकों को सूर्य और चन्द्रमा की परिक्रमा के फलस्वरूप गणना का स्पष्ट ज्ञान प्राप्त हुआ है ।

** इस स्थान पर **नज्म** शब्द से अभिप्राय सितारा भी हो सकता है जो पिछली आयत में उल्लेखित गणना से सम्बन्ध रखता है और जड़ी बूटियाँ भी हो सकती हैं । क्योंकि इसके पश्चात् वृक्ष का वर्णन है । यह कुरआन करीम की वर्णन शैली का चमत्कार है कि हर एक आयत हर प्रकार से (परस्पर) संबद्ध है ।

*** इसके पश्चात् आकाश की ऊँचाइयों का वर्णन है जो वास्तव में पिछली आयतों के विषयवस्तु का सारांश है कि गणना ही के द्वारा संतुलन स्थापित किया जाता है और आकाश को जो ऊँचाइयाँ प्रदान की गई हैं वे इतनी संतुलित हैं कि इससे अल्लाह के भक्त न्याय करने की विधि सीख सकते हैं ।

और तौल को न्याय के साथ कायम करो
और तौल में कोई कमी न करो 110।

وَأَقِيمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا
الْمِيزَانَ ⑩

और धरती की भी क्या शान है उसने
उसे प्राणियों के लिए (सहारा)
बनाया 111।

وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنْعَامِ ⑪

इसमें भाँति-भाँति के फल हैं और
गुच्छेदार खजूरें भी 112।

فِيهَا فَاكِهَةٌ وَالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ ⑫

और भूसा युक्त अनाज और सुगन्धित
पौधे 113।

وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ⑬

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? 114।

فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ⑭

उसने मनुष्य को मिट्टी के पकाए हुए
वर्तन की भाँति शुष्क खनकती हुई मिट्टी
से पैदा किया 115।*

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ⑮

और जिन्न को आग की लपटों से पैदा
किया 116।

وَخَلَقَ الْجَانَّ مِنْ مَّارِجٍ مِنْ نَارٍ ⑯

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? 117।

فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ⑰

दोनों पूर्व दिशाओं का रब्ब और दोनों
पश्चिम दिशाओं का रब्ब (है) 118।**

رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ⑱

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? 119।

فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ⑲

* अरबी शब्द सल्साल का अर्थ : शुष्क खनकती हुई मिट्टी । देखें अरबी शब्दकोश “अल्-मुन्जिद” और “गरीबुल कुरआन” ।

** इस आयत में दो पूर्वी दिशाओं और दो पश्चिमी दिशाओं का वर्णन है । हालाँकि हज़रत मुहम्मद सल्ल. के युग के मनुष्य को केवल एक पूरब और एक पश्चिम का ही ज्ञान था । इस बहुत छोटी सी आयत में आगे आने वाले युग के महान आविष्कारों के बारे में भविष्यवाणी है ।

वह दो समुद्रों को मिला देगा जो बढ़-
बढ़ कर एक दूसरे से मिलेंगे ।20।

(इस समय) उनके बीच एक रोक है
(जिसका) वे अतिक्रमण नहीं कर
सकते ।21।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? ।22।

दोनों में से मोती और मूंगे निकलते
हैं ।23।*

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? ।24।

और उसी की (कारीगरी) वह नौकाएँ हैं
जो समुद्र में पर्वतों के सदृश ऊँची की
जाएँगी ।25।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? ।26। (रूकू $\frac{1}{11}$)

हर चीज़ जो इस (धरती) पर है नश्वर
है ।27।

परन्तु तेरे रब्ब की सत्ता अनश्वर रहेगी
जो प्रबल प्रतापी और परम सम्माननीय
है ।28।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? ।29।

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيَانِ ۝

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَا يَبْغِيَانِ ۝

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ۝

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنشَآتُ فِي الْبَحْرِ
كَالْأَعْلَامِ ۝

ع

ع

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝

وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ
وَالْإِكْرَامِ ۝

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ ۝

* आयत सं. 20 से 23 : इन आयतों में ऐसे दो समुद्रों का वर्णन है जिन में से लूअलूअ और मरजान अर्थात् मोती और मूंगे निकलते हैं और जिन दोनों को परस्पर मिला दिया जाएगा । अरबी शब्द यल्लतक्रियान से भविष्य में उनका मिलना अभिप्राय है । हालाँकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में ऐसे दो समुद्रों के बारे में लोगों को न कोई ज्ञान था और न उनके परस्पर मिलने की कोई भविष्यवाणी की जा सकती थी । यहाँ लाल सागर और रुम सागर अभिप्राय है, जिनको→

आकाशों में और धरती में जो भी है, उसी से याचना करता है। हर पल वह एक नई शान में होता है। 130।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 131।

हे दोनों महाशक्तियों ! हम अवश्य तुम से पूरी तरह निपटेंगे। 132।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 133।

हे जिन्न और मनुष्य समाज ! यदि तुम सामर्थ्य रखते हो कि आकाशों और धरती की सीमाओं से बाहर निकल सको तो निकल जाओ। परन्तु एक ठोस तर्क के बिना तुम नहीं निकल सकोगे। 134।*

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 135।

तुम दोनों पर आग के शोले बरसाए जाएंगे और एक प्रकार का धुआँ भी।

يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
كُلُّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ۝

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيَّهَ الثَّقَلَيْنِ ۝

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

يَمْعَشَرِ الْجِنَّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ
أَنْ تَنْقُذُوا مِنْ أَقْطَارِ السَّمَوَاتِ
وَالْأَرْضِ فَانْقُذُوا ۚ لَا تَنْقُذُونَ
إِلَّا بَسُلْطَنٍ ۝

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ۝

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ وَنُحَاسٌ

←स्वैज्ञ नहर के द्वारा मिलाया गया है।

- * इस आयत में हे जिन्न और मनुष्य समाज ! कह कर संबोधन किया गया है। जिन्न से जिस अद्भुत प्राणी की कल्पना की जाती थी उसके बारे में तो उस युग में यह कहा जा सकता था कि वे धरती और आकाश की सीमाओं से बाहर निकलने का प्रयत्न करेगा। परन्तु मनुष्य के विषय में तो यह कल्पना नहीं की जा सकती थी कि वे धरती और आकाश की सीमाओं से बाहर निकलने का प्रयास करेंगे। यहाँ विशेष रूप से ध्यान देने योग्य बात यह है कि केवल धरती की सीमाओं का उल्लेख नहीं किया गया बल्कि आकाश और धरती (दोनों) की सीमाओं का उल्लेख किया गया है। अर्थात् समस्त ब्रह्माण्ड को एक ही छलाँग में पार करने का प्रयत्न करेंगे। अरबी वाक्यांश इल्ला बि सुल्तान से यह अभिप्राय है कि वे प्रयत्न करेंगे परन्तु केवल ठोस तर्कों के साथ सफल हो सकेंगे। यही अवस्था इस युग में है। धरती और आकाश पर गवेषणा करने वाले वैज्ञानिक दो सौ खरब प्रकाश वर्ष तक दूर की खबरें केवल अपने ठोस तर्कों के आधार पर ज्ञात कर लेते हैं। सशरीर उनके लिए ऐसा कर पाना असंभव है।

फिर तुम दोनों प्रतिशोध नहीं ले सकोगे ।36।*

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।37।

अतः जब आकाश फट जाएगा और रंगे हुए चमड़े के सदृश लाल हो जाएगा ।38।**

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।39।

उस दिन जिन्न और मनुष्य में से किसी को अपनी भूल-चूक के बारे में पूछा नहीं जाएगा ।40।***

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।41।

सारे अपराधी अपने चिह्नों से पहचाने जाएंगे । फिर वे माथे के बालों से और पाँव से पकड़ लिए जाएंगे ।42।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? ।43।

فَلَا تَنْصُرُنَّ

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٧﴾

فَإِذَا انشَقَّتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً
كَالدِّهَانِ ﴿٣٨﴾

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٣٩﴾

فَيَوْمَئِذٍ لَا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهِ إِنْسٌ
وَلَا جَانٌّ ﴿٤٠﴾

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤١﴾

يَعْرِفُ الْمُجْرِمُونَ بِسِيمِهِمْ فَيُؤْخَذُ
بِالنَّوَاصِي وَالْأَقْدَامِ ﴿٤٢﴾

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٣﴾

* अंतरिक्ष यात्री जब रॉकेटों में बैठ कर आकाश और धरती को लांघने का प्रयास करते हैं तो उन पर इसी प्रकार की लपटों और एक प्रकार के धुएँ की बौछार होती है ।

** यह केवल उपमा है । इसमें अंतरिक्ष विज्ञान की असाधारण रूप से उन्नति का वर्णन है । साथ ही भयानक हवाई युद्धों की ओर भी संकेत हो सकता है ।

*** इस आयत में यह कहा गया है कि उस दिन जिन्नों और मनुष्यों से उनकी भूल-चूक के बारे में कोई प्रश्न नहीं किया जाएगा । क़यामत के दिन अपराधी अपने लक्षणों से ही पहचाने जाएंगे, इस लिए प्रश्न की आवश्यकता ही नहीं रहेगी । संसार के विश्वस्तरीय युद्धों में भी न बड़े लोग छोटों से कोई प्रश्न करते हैं न छोटी साम्यवादी जातियाँ बड़ी पूँजीपति जातियों से कोई प्रश्न करती हैं । भविष्यवाणी का यह भाग अभी और स्पष्ट होना शेष है ।

यही वह नरक है जिसका अपराधी
इनकार किया करते थे ।44।

هَذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي يُكَذِّبُ بِهَا
الْمُجْرِمُونَ ﴿٤٤﴾

वे उसके और खौलते हुए पानी के बीच
घूमेंगे ।45।

يُطْفَوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيمٍ ﴿٤٥﴾

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? ।46। (रूकू 2/12)

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٦﴾

और जो भी अपने रब्ब के मुक़ाम से
डरता है उसके लिए दो स्वर्ग हैं ।47।*

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ جَنَّتَيْنِ ﴿٤٧﴾

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? ।48।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٤٨﴾

दोनों (स्वर्ग) अनेक शाखों युक्त
हैं ।49।

ذَوَاتَا أَفْنَانٍ ﴿٤٩﴾

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? ।50।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٠﴾

उन दोनों में दो जलस्रोत बहते हैं ।51।

فِيهِمَا عَيْنَانِ تَجْرَيْنِ ﴿٥١﴾

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? ।52।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٢﴾

उन दोनों में हर प्रकार के जोड़े-जोड़े
फल हैं ।53।

فِيهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجَانِ ﴿٥٣﴾

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों
अपने रब्ब की किस-किस नेमत का
इनकार करोगे ? ।54।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٥٤﴾

* जो अल्लाह तआला का तक्वा धारण करे उसे संसार का स्वर्ग प्राप्त होगा और परलोक का भी ।
संसार के स्वर्ग से सम्भवतः अल्लाह के स्मरण से हार्दिक संतुष्टि प्राप्त करना अभिप्राय है । जिसकी
ओर आयत सुनो ! अल्लाह ही के स्मरण से दिल संतुष्टि प्राप्त करते हैं । (सूर: अर राद आयत :
29) संकेत करती है ।

वे ऐसे बिछौनों पर तकिया लगाए हुए होंगे जिनके अस्तर गाढ़े रेशम के हैं । और दोनों स्वर्गों के पके हुए फल भार से झुके हुए हैं । 155।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 156।

उनमें नज़रें झुकाए रखने वाली कुवाँरी कन्याएँ हैं जिन्हें उन (स्वर्गवासियों) से पूर्व जिन्नों और मनुष्यों में से किसी ने नहीं छूआ । 157।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 158।

मानो वे पद्मराग मणि और मूँगे हैं । 159।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 160।

क्या उपकार का प्रतिफल उपकार के अतिरिक्त (कुछ और) भी हो सकता है ? 161।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 162।

और इन दोनों के अतिरिक्त दो स्वर्ग और भी हैं । 163।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 164।

दोनों ही बहुत हरे-भरे हैं । 165।

مُتَكِّينَ عَلَى فُرُشٍ بَطَاطُهَا مِنْ
اسْتَبْرَقٍ وَجَنَّاتٍ دَانٍ ۝

فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝

فِيهِنَّ قَصْرَاتُ الظَّرْفِ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ
إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌ ۝

فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوتُ وَالْمَرْجَانُ ۝

فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝

هَلْ جَزَاءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ۝

فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝

وَمِنْ دُونِهِمَا جَنَّتَيْنِ ۝

فَبَايَ الْآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝

مُدَّهَا مَتْنِ ۝

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 166।

उन दोनों में जोश मारते हुए दो जलस्रोत हैं 167।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 168।

इन दोनों में कई प्रकार के मेवे और खजूरें और अनार हैं 169।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 170।

उनमें अत्यन्त नेक स्वभाव कुवाँरी कन्याएँ हैं 171।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 172।

महलों जैसे मकानों में जो ईंट पत्थर के नहीं, * ठहराई हुई अप्सराएँ हैं 173।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 174।

उन्हें उन (स्वर्ग निवासियों) से पूर्व जिन्न व मनुष्य में से किसी ने नहीं छूआ 175।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? 176।

فَبَايَ الْآءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝

فِيهِمَا عَيْنَانِ تَصَاحَتَنِ ۝

فَبَايَ الْآءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝

فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَنَخْلٌ وَرُمَانٌ ۝

فَبَايَ الْآءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝

فِيهِنَّ خَيْرَاتٌ حِسَانٌ ۝

فَبَايَ الْآءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝

حُورٌ مَّقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ ۝

فَبَايَ الْآءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَانٌ ۝

فَبَايَ الْآءِ رَبُّكُمَا تُكَذِّبَنِ ۝

वे हरे गलीचों पर तथा बढ़िया और बहुमूल्य बिछौनों पर तकिया लगाए हुए हैं । 177।

अतः (हे जिन्न और मनुष्य !) तुम दोनों अपने रब्ब की किस-किस नेमत का इनकार करोगे ? । 178।

तेरे प्रबल प्रतापी और अति सम्माननीय रब्ब का नाम ही बरकत वाला सिद्ध हुआ । 179। (रुकू 3/13)

مُتَكِّينَ عَلَى رُفْرٍ خُضِرٍ وَعَبْقَرِيٍّ
حِسَانٍ ﴿٧٧﴾

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبِينَ ﴿٧٨﴾

تَبَارَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلَلِ
وَالْإِكْرَامِ ﴿٧٩﴾

ع
۱۳

56- सूरः अल-वाक्रिअः

यह सूरः आरम्भिक मक्की युग में अवतरित हुई और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 97 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ में वर्णन किया गया है कि पिछली सूरः जो महान भविष्यवाणियाँ कर रही है वे अवश्य पूरी हो कर रहने वाली हैं । विशेषकर मृत्यु के पश्चात पुनः जी उठने की खबरें जो इस सूरः में वर्णन की गई हैं वे अवश्य घटित होंगी ।

इसके पश्चात इस्लाम के पूर्ववर्ती युग में कुर्बानी करने वालों और उत्तरवर्ती युग में कुर्बानी करने वालों की तुलना की गई है । जिससे ज्ञात होता है कि वे लोग जो पूर्ववर्ती युग में धर्म के लिए कुर्बानी देंगे और उत्तरवर्ती युग में भी कुर्बानी प्रस्तुत करेंगे उनमें से अधिकांश कुर्बानी प्रस्तुत करने की दृष्टि से परस्पर एक समान होंगे और उन्हें एक जैसे स्थान प्रदान किए जाएंगे । परन्तु पूर्ववर्ती युग के बहुत से कुर्बानी करने वालों को कुर्बानी में और त्याग में बाद में आने वालों पर संख्या और पद की दृष्टि से श्रेष्ठता प्राप्त होगी । परन्तु बाद के दौर में भी कुछ ऐसे लोग अवश्य होंगे जिन्हें पद की दृष्टि से वह श्रेष्ठताएँ प्राप्त होंगी जो पहले युग के लोगों को दी गई । फिर दोनों युगों के अभागों का भी वर्णन है जिनको बाँई दिशा वाले घोषित किया गया है । बाँई दिशा वालों से अभिप्राय बुरे लोग हैं और उनके वे गुण वर्णन किये गये हैं जो उनको नरकगामी बनाएँगे ।

फिर इस सूरः में उदाहरण स्वरूप नरक वासियों का और स्वर्ग निवासियों का भी वर्णन है और यह बात खूब स्पष्ट कर दी गई है कि तुम कदापि इस भौतिक शरीर के साथ दोबारा नहीं उठाए जाओगे । बल्कि ऐसी परिवर्तित सृष्टि के रूप में उठाए जाओगे जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकते ।

आयत सं. 61, 62 में यह भविष्यवाणी की गई है कि अल्लाह तआला तुम्हारे पुनरुत्थान के समय जिस दशा में तुम्हें नए सिरे से जीवित करेगा उसका तुम्हें कोई भी ज्ञान नहीं । ध्यान देने योग्य बात यह है कि देखने में तो इसका ज्ञान दिया जा रहा है, परन्तु वास्तव में यह चेतावनी है कि ज़ाहिरी शब्दों को बिल्कुल उसी प्रकार न समझ लेना । यह केवल आलंकारिक वर्णन हैं और वास्तव का तुम कोई ज्ञान नहीं रखते ।

फिर चार ऐसे विषय उल्लेखित हुए हैं जिन पर यदि विचार किया जाए तो हर निष्पक्ष व्यक्ति का दिल यह अवश्य पुकार उठेगा कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई ये चीज़ें बनाने पर समर्थ नहीं । प्रथम वह तत्त्व जिससे मनुष्य की उत्पत्ति का आरम्भ हुआ है और उसमें असंख्य पेचदार ऐसी बारीक से बारीक विशेषताओं को एकत्रित कर दिया गया है जिन्होंने बाद में प्रकट होना था । उदाहरणार्थ आँख, कान, नाक, मुँह, गला और स्वर

तंत्र इत्यादि को यहाँ तक आदेश दे दिया गया है कि किस सीमा तक एक अंग विकसित होगा और फिर किस समय यह विकास क्रम बन्द होना आवश्यक है । दाँतों ही को लीजिए, दूध के दाँत एक समय के बाद निकलते हैं फिर वे एक समय तक रह कर गिर जाते हैं । और बचपन में जो बच्चे दाँतों को स्वस्थ नहीं रख सकते, उसके दुष्प्रभाव से उनको सुरक्षित कर दिया जाता है । फिर युवावस्था के दाँत हैं, जिसके बाद मनुष्य जिम्मेदार है कि उनकी रक्षा करे । वे एक सीमा तक बढ़ कर रुक क्यों जाते हैं ? क्या चीज़ है जो उनको आगे बढ़ने से रोक देती है ? यह मनुष्य के डी.एन.ए. में एक कम्प्यूटाईज़्ड प्रोग्राम है जिस पर अल्लाह तआला के विधानानुसार वे दाँत काम करते हैं । वैज्ञानिक बताते हैं कि जिस गति से वे घिस रहे होते हैं लगभग उसी गति से वे बढ़ भी रहे होते हैं । यदि बढ़ते चले जाते और रुकने की व्यवस्था न होती तो मनुष्य के नीचे के दाँत मस्तिष्क फाड़ कर सिर से बहुत ऊपर निकल सकते थे और ऊपर के दाँत जबड़े फाड़ कर छाती को हानि पहुँचा सकते थे । तो फ़र्माया, क्या तुमने यह आनुवंशिक योग्यताएँ स्वयं प्राप्त की हैं ? ज़ाहिर है कि उनका उत्तर नहीं में है ।

इसी प्रकार यूँ तो मनुष्य समझता है कि हमने धरती में बीज बोए हैं । परन्तु धरती से इन बीजों के वृक्षों और सब्जियों और फलों के रूप में विकसित होने की प्रक्रिया भी एक अत्यन्त जटिल व्यवस्था है जो स्वतः जारी नहीं हो सकती ।

इसी प्रकार इस समग्र जीवन तंत्र को सहारा देने के लिए जो आकाश से पानी उतरता है उसकी प्रक्रिया पर भी मनुष्य का कोई हस्तक्षेप नहीं । इसी प्रकार आग से परिचालित वह यान जिस पर सवार हो कर मनुष्य आकाश पर जाने का प्रयास करते हैं यह भी अल्लाह के नियम के अधीन काम करता है, अन्यथा वही अग्नि उनको ऊँचाइयों तक पहुँचाने के स्थान पर भस्म कर सकती थी । इस प्रसंग में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आकाश पर उड़ने वाले जहाज़ों से सम्बन्धित भविष्यवाणी मौजूद है कि वे अग्नि से चलने वाली सवारियाँ होंगी परन्तु वह अग्नि उन यात्रियों को जो उनमें बैठेंगे कोई हानि नहीं पहुँचाएगी ।

फिर नक्षत्रों के झुरमुटों को साक्षी ठहराया गया । उस युग का मनुष्य तो समझता था कि नक्षत्र छोटे-छोटे चमकने वाले मोती अथवा पत्थर हैं । परन्तु अल्लाह तआला कहता है कि यदि तुम्हें ज्ञान हो कि वे छोटे-छोटे दिखाई देने वाले नक्षत्र क्या चीज़ हैं ? तो तुम आश्चर्यचकित रह जाओ कि यह नक्षत्र तो इतने बड़े-बड़े हैं कि चन्द्रमा और सूर्य, धरती और ग्रहमंडल भी इन नक्षत्रों के एक किनारे में समा सकते हैं । अतः फ़र्माया, यह बहुत बड़ी गवाही है जो हम दे रहे हैं ।

इन गवाहियों के पश्चात यह कहा गया कि कुरआन करीम भी एक ऐसी पुस्तक है

जिसमें अथाह तत्त्व निहित है । जैसे नक्षत्र दूर होने के कारण तुम्हारी दृष्टि से ओझल हैं इसी प्रकार कुरआन करीम की ऊँचाइयों तक भी तुम्हारी दृष्टि नहीं पहुँच सकती और तुम उसे छोटी सी पुस्तक देखते हो । फिर यह भी कहा गया कि यूँ तो तुम इसे छू भी सकते हो अर्थात् तुम इसके इतने निकट हो कि उसे हाथ भी लगा सकते हो, परन्तु अल्लाह तआला जिस के दिल को पवित्र करे उसके सिवा कोई इसके विषयवस्तु को नहीं छू सकता ।



سُورَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَعٌ وَتِسْعُونَ آيَةً وَثَلَاثَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

जब घटित होने वाली (घटना) घटित हो जाएगी ।2।

उसके घटित होने को कोई (जान) झुठला नहीं सकेगी ।3।

वह (कुछ को) नीचा करने वाली और (कुछ को) ऊँचा करने वाली होगी ।4।

जब धरती को खूब हिलाया जाएगा ।5।

और पर्वत चूर्ण-विचूर्ण कर दिए जाएंगे ।6।

अतः वे बिखरी हुई धूल की भाँति हो जाएंगे ।7।

जबकि तुम तीन समूहों में बटे हुए होगे ।8।

अतः दाईं ओर वाले । क्या हैं दाईं ओर वाले ? ।9।

और बाईं ओर वाले । क्या हैं बाईं ओर वाले ? ।10।

और अग्रगामी सब पर श्रेष्ठता ले जाने वाले होंगे ।11।

यही (अल्लाह के) निकटस्थ हैं ।12।

नेमतों वाले स्वर्गों में ।13।

पूर्ववर्तियों में से एक बड़ा समूह ।14।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ②

لَيْسَ لَوْقَعَتِهَا كَاذِبَةٌ ③

خَافِضَةٌ رَافِعَةٌ ④

إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًا ⑤

وَبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًا ⑥

فَكَانَتْ هَبَاءً مُنْبَثًا ⑦

وَكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلَاثَةً ⑧

فَأَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ⑨ مَا أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ⑩

وَأَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ⑪ مَا أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ⑫

وَالسَّابِقُونَ السَّابِقُونَ ⑬

أُولَئِكَ الْمُقَرَّبُونَ ⑭

فِي جَنَّاتٍ النَّعِيمِ ⑮

ثَلَاثَةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ⑯

और उत्तरवर्तियों में से थोड़े लोग ।15।

وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝١٥

रत्नजड़ित पलंगों पर ।16।

عَلَى سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ۝١٦

उन (पलंगों) पर आमने-सामने टेक लगाए हुए (होंगे) ।17।

مُتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ۝١٧

उन के लिए (सेवा करने वाले) युवा लड़के घूम रहे होंगे, जिन्हें अमरत्व प्रदान किया गया है ।18।

يُطَوَّفُ عَلَيْهِمْ وَلَدَانٌ مُّحَلَّدُونَ ۝١٨

कटौरे और सुराहियाँ और स्वच्छ जल से भरे हुए प्याले लिए हुए ।19।

بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقٍ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝١٩

उसके प्रभाव से न वे सिर दर्द में डाले जाएँगे, न बहकी-बहकी बातें करेंगे ।20।

لَا يَصْدَعُونَ عَنْهَا وَلَا يَنْزِفُونَ ۝٢٠

और भाँति-भाँति के फल लिए हुए, जिनमें से वे जो चाहेंगे पसन्द करेंगे ।21।

وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ۝٢١

और पक्षियों का मांस, जिनमें से जिस की भी वे इच्छा करेंगे ।22।

وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۝٢٢

और बड़ी-बड़ी आँखों वाली कुंवारी कन्याएँ ।23।

وَحُورٌ عِينٌ ۝٢٣

मानो ढके हुए मोतियों की भाँति हैं ।24।

كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝٢٤

उसके प्रतिफल स्वरूप जो वे कर्म किया करते थे ।25।

جَزَاءٌ بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝٢٥

वे उसमें कोई व्यर्थ आलाप अथवा पाप की बात नहीं सुनते ।26।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۝٢٦

परन्तु केवल “सलाम-सलाम” का वाक्य ।27।

إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ۝٢٧

और दाहिनी ओर वाले (लोग) । कौन हैं जो दाहिनी ओर वाले हैं ? ।28।

وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ ۝٢٨

ऐसी बेरियों में जो काँटेदार नहीं |29|

فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ۝

और परत-परत (फलों युक्त) केलों (के
बागों) के बीच |30|

وَوَطْحٍ مَّنْضُودٍ ۝

और दूर तक फैलाइ हुई छायाओं
में |31|

وَوِظْلٍ مَّمدُودٍ ۝

और बरसाए जान वाले पानी में |32|

وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ۝

और अधिकांश फलों में |33|

وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ۝

जो न तो काटे जाएँगे और न ही (उन्हें)
उनसे रोका जाएगा |34|

لَا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ۝

और ऊँचे बिछाए हुए आसनों में |35|

وَقُرُشٍ مَّرْقُوعَةٍ ۝

निःसन्देह हमने उन (के जोड़ों) को
अत्यन्त उत्तम विधि से पैदा किया |36|

إِنَّا أَشْأْنَهُنَّ إِنْشَاءً ۝

फिर हमने उन्हें अनुपम बनाया |37|*

فَجَعَلْنَهُنَّ أَبْكَارًا ۝

मनमोहन, समवयस्क |38|

عُرُبًا أَتْرَابًا ۝

दाहिनी ओर वाले (लोगों) के ^ع
लिए |39| (रुकू $\frac{1}{4}$)

لِلْأَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝

पूर्ववर्तियों में से एक बड़ा समूह है |40|

ثُلَّةٌ مِنَ الْأَوَّلِينَ ۝

और उत्तरवर्तियों में से भी एक बड़ा
समूह है |41|

وَثُلَّةٌ مِنَ الْآخِرِينَ ۝

और बाईं ओर वाले (लोग) । कौन हैं
बाईं ओर वाले ? |42|

وَأَصْحَابُ الشِّمَالِ ۝ مَا أَصْحَابُ الشِّمَالِ ۝

झुलसाने वाली उत्तप्त वायु और खौलते
हुए पानी में |43|

فِي سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۝

और ऐसी छाया में जो काले धुएँ से उत्पन्न होती है ।44।

وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُومٍ ۝۴४

(जो) न ठंडी है और न दयाशील ।45।

لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۝۴५

इससे पूर्व निःसन्देह वे लोग बहुत सुख में थे ।46।

إِنَّهُمْ كَانُوا قَبْلَ ذَلِكَ مُتْرَفِينَ ۝۴६

और बड़े पाप पर हठधर्मिता किया करते थे ।47।

وَكَانُوا يُصْرُونَ عَلَى الْخُبْثِ الْعَظِيمِ ۝۴७

और कहा करते थे, क्या जब हम मर जाएंगे और मिट्टी और हड्डियाँ बन जाएंगे, क्या हम फिर भी अवश्य उठाए जाएंगे ? ।48।

وَكَانُوا يَقُولُونَ إِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَعِظَامًا إِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝۴८

क्या हमारे बीते हुए पूर्वज भी ? ।49।

أَوَابَاؤُنَا الْأَوَّلُونَ ۝۴९

तू कह दे, अवश्य पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती सभी ।50।

قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِينَ وَالْآخِرِينَ ۝۵०

एक निर्धारित युग के निश्चित समय की ओर अवश्य एकत्रित किए जाएंगे ।51।

لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝۵१

फिर निःसन्देह तुम हे अत्यन्त पथभ्रष्टो ! बहुत झुठलाने वाले ! ।52।

ثُمَّ إِنَّكُمْ إِلَيْهَا لَتَصَّاتُونَ الْمَكَدِّبُونَ ۝۵२

अवश्य (तुम) थूहर के पौधे में से खाने वाले हो ।53।

لَا يَكُونُ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زُقُومٍ ۝۵३

फिर उसी से पेट भरने वाले हो ।54।

فَمَا لَتَوْنَ مِنْهَا الْبُطُونَ ۝۵४

इसके अतिरिक्त खौलता हुआ पानी भी पीने वाले हो ।55।

فَشَرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيمِ ۝۵५

फिर खूब प्यासे ऊँटों के पीने की भाँति (पानी) पीने वाले हो ।56।

فَشَرِبُونَ شُرْبَ الْهَيْمِ ۝۵६

प्रतिफल प्राप्ति के दिन यह होगा उनका आतिथ्य ।57।

هَذَا نُزِّلَهُمْ يَوْمَ الدِّينِ ۝۵७

हमने ही तुम्हें पैदा किया है, फिर तुम क्यों सत्य को स्वीकार नहीं करते ? 158।

बताओ तो सही ! कि जो वीर्य तुम (गर्भाशय में) गिराते हो 159।

क्या तुम हो जो उसे पैदा करते हो अथवा हम पैदा करने वाले हैं ? 160।

हमने ही तुम्हारे बीच मृत्यु को निश्चित किया है और हमें रोका नहीं जा सकता 161।

कि तुम्हारे रूप परिवर्तित कर दें और तुम्हें ऐसे रूप में उठाएँ कि तुम उसे नहीं जानते 162।

और निःसन्देह प्रथम उत्पत्ति को तुम जान चुके हो । फिर क्यों उपदेश ग्रहण नहीं करते ? 163।

भला बताओ तो सही कि जो कुछ तुम खेती करते हो 164।

क्या तुम ही हो जो उसे उगाते हो अथवा हम उगाने वाले हैं ? 165।

यदि हम चाहते तो अवश्य उसे चूर्ण-विचूर्ण कर देते । फिर तुम बातें बनाते रह जाते 166।

कि निःसन्देह हम चट्टी तले दब गए हैं 167।

नहीं ! बल्कि हम पूर्णतया वंचित कर दिए गये हैं 168।

क्या तुमने उस पानी पर विचार किया है जो तुम पीते हो ? 169।

क्या तुम ही ने उसे बादलों से उतारा है अथवा हम हैं जो उतारने वाले हैं ? 170।

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تَصَدِّقُوْنَ ۝۵۸

اَفَرءَيْتُمْ مَا تُمْنُوْنَ ۝۵۹

ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَہٗ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ۝۶۰

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ ۝۶۱

عَلٰی اَنْ يُبَدِّلَ اَمْثَالَکُمْ وَنُنْشِئَکُمْ فِیْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۶۲

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْاُولٰٓی فَلَوْلَا تَذٰکُرُوْنَ ۝۶۳

اَفَرءَيْتُمْ مَا تَحْرُثُوْنَ ۝۶۴

ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَہٗ اَمْ نَحْنُ الزَّارِعُوْنَ ۝۶۵

لَوْ نَشَاءُ لَجَعَلْنٰہٗ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفٰکِهٰۤیُوْنَ ۝۶۶

اِنَّا لَمَعْرِمُوْنَ ۝۶۷

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ۝۶۸

اَفَرءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِیْ تَشْرَبُوْنَ ۝۶۹

ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْہٗ مِنَ الْمُنْزِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ۝۷۰

यदि हम चाहते तो उसे खारा बना देते। अतः तुम कृतज्ञता क्यों प्रकट नहीं करते ? 171।

बताओ तो सही कि वह आग जो तुम जलाते हो 172।

क्या तुम उसके वृक्ष (सदृश लपट) को उठाते हो अथवा हम हैं जो उसे उठाने वाले हैं 173।*

हमने उसे उपदेश का एक साधन और यात्रियों के लिए लाभदायक बनाया है 174।

अतः अपने महान रब के नाम का गुणगान कर 175। (रुकू 2/15)

अतः मैं अवश्य नक्षत्रों के झुरमुटों को साक्षी के रूप में पेश करता हूँ 176।

और निश्चित रूप से यह एक बहुत बड़ा साक्ष्य है। काश, तुम जानते ! 177।

निःसन्देह यह एक सम्मान वाला कुरआन है 178।

एक छुपी हुई पुस्तक में (सुरक्षित) 179।

कोई उसे छू नहीं सकता सिवाए पवित्र किए हुए लोगों के 180।**

(उसका) उतारा जाना समस्त लोकों के रब की ओर से है 181।

अतः क्या इस वर्णन के सम्बन्ध में तुम चाटुकारिता पूर्ण बातें करते हो ? 182।

لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أَجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ ٧١

أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِي تُورُونَ ٧٢

ءَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَا أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُونَ ٧٣

نَحْنُ جَعَلْنَاهَا تَذْكِرَةً وَوَسَاءً لِلْمُقْوِينَ ٧٤

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ٧٥

فَلَا أَقْسَمُ بِمَوْقِعِ التَّجْوَمِ ٧٦

وَإِنَّهُ لَقَسَمٌ لِّتُوعَلَمُونَ عَظِيمٌ ٧٧

إِنَّهُ لَقُرْآنٌ كَرِيمٌ ٧٨

فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ ٧٩

لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ ٨٠

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ٨١

أَفَبِهَذَا الْحَدِيثِ أَنْتُمْ مُدْهِنُونَ ٨٢

* इस अर्थ के लिए देखें : तफ़सीर कबीर, इमाम राज़ी रहि.

** आयत सं. 78 से 80 : कुरआन करीम खुली हुई पुस्तक भी है और छुपी हुई पुस्तक भी है। यूँ तो इसका पाठ प्रत्येक पुण्य और पापी व्यक्ति कर सकता है, परन्तु इसके उच्च श्रेणी के छुपे हुए रहस्य केवल उन पर प्रकट किए जाते हैं जो अल्लाह तआला की ओर से पवित्र किए गए हों।

और (इसको) झुठलाना तुम अपनी जीविका बनाते हो ? 183।

अतः क्यों न हुआ कि जब (जान) गले तक आ पहुँची 184।

और तुम उस समय हर ओर नज़रें दौड़ा रहे थे (कि तुम अपने लिए कुछ कर सकते) 185।

और (उस समय) हम तुम्हारी अपेक्षा उस (मरने वाले) के अधिक निकट थे परन्तु तुम ज्ञान नहीं रखते थे 186।

यदि तुम वह नहीं, जिन्हें क़र्ज़ चुकाना हो तो फिर क्यों नहीं 187।

तुम उस (जान) को लौटा सके ? यदि तुम सच्चे हो 188।

हाँ ! यदि वह (मरने वाला अल्लाह के) निकटस्थों में से हो 189।

तो (उसके लिए) आरामदायक और सुगन्धित वातावरण और बड़ी नेमत वाला स्वर्ग (है) 190।

और यदि वह दाहिनी ओर वालों में से हो 191।

तो (उसे कहा जाएगा) तुझ पर सलाम ! हे वह व्यक्ति जो दाहिनी ओर वालों में से है 192।

और यदि वह झुठलाने वाले पथभ्रष्टों में से हो 193।

तो (उसके) उतरने का स्थान एक प्रकार का खौलता हुआ पानी होगा 194।*

और (उसको) नरक की अग्नि में भूना जाना है 195।

وَتَجْعَلُونَ رِزْقَكُمْ أَنْتُمْ تُكْذِبُونَ ﴿٨٣﴾

فَلَوْلَا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلُقُومَ ﴿٨٤﴾

وَأَنْتُمْ حِينِيذٍ تَنْتَظِرُونَ ﴿٨٥﴾

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلَكِنْ لَا بُرْهَانَ ﴿٨٦﴾

فَلَوْلَا إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ ﴿٨٧﴾

تَرْجِعُونَهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿٨٨﴾

فَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٨٩﴾

فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّتْ نَعِيمٌ ﴿٩٠﴾

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩١﴾

فَسَلَامٌ لَّكَ مِنْ أَصْحَابِ الْيَمِينِ ﴿٩٢﴾

وَأَمَّا إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِينَ الضَّالِّينَ ﴿٩٣﴾

فَنُزُلٌ مِنْ حَمِيمٍ ﴿٩٤﴾

وَتَصْلِيَةٌ جَهِيمٍ ﴿٩٥﴾

निःसन्देह निश्चयात्मकता तक पहुँचा
हुआ विश्वास यही है ।96।

अतः अपने महान रब्ब के नाम का $\frac{2}{11}$
गुणगान कर ।97। (रुकू $\frac{3}{16}$)

إِنَّ هَذَا هُوَ حَقُّ الْيَقِينِ ۝

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

57- सूर: अल-हदीद

यह सूर: मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 30 आयतें हैं ।

इसका आरम्भ इस घोषणा के साथ होता है कि धरती और आकाश और जो कुछ उनमें है सब अल्लाह ही की स्तुति कर रहे हैं । आदि भी वही है और अन्त भी वही है और दृश्य भी वही है और अदृश्य भी वही है । अर्थात् उसकी चमक सुस्पष्ट हैं । परन्तु जो आँख उनको न देख सके उसके लिए वे सदा अदृश्य ही रहेंगी ।

इस सूर: की एक आयत में सांसारिक जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा गया है कि यह तो केवल खेल कूद और व्यर्थ क्रीड़ा है । यह कोई शेष रहने वाली चीज़ नहीं । जब मनुष्य अपनी मृत्यु के निकट पहुँचेगा तो अवश्य स्वीकार करेगा कि वे तो अल्पकालिक सुख उपभोग के दिन थे ।

फिर इसी सूर: में यह महान आयत है जिससे प्रमाणित होता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह तआला ने यह बात खोल दी थी कि स्वर्ग और नरक की भौतिक कल्पना ठीक नहीं । अतः आयत संख्या 22 में कहा गया कि अल्लाह तआला से क्षमायाचना करने तथा उसके उस स्वर्ग की ओर क़दम बढ़ाने में एक दूसरे से आगे निकलने का प्रयत्न करो, जिस स्वर्ग का विस्तार धरती और आकाश पर फैला हुआ है । जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयत पाठ की तो एक सहाबी रज़ि. ने प्रश्न किया कि हे अल्लाह के नबी ! यदि स्वर्ग समस्त ब्रह्माण्ड पर फैला हुआ है तो नरक कहाँ है ? आप सल्ल. ने फ़र्माया, वह भी वहीं होगा । अर्थात् उसी ब्रह्माण्ड के परिधि में मौजूद होगा जिसमें स्वर्ग है । परन्तु तुम्हें इस बात की समझ नहीं है कि यह कैसे होगा । एक ही स्थान पर स्वर्ग और नरक स्थित हैं पर एक का दूसरे से कोई भी सम्बन्ध नहीं है । इससे स्पष्ट रूप से प्रमाणित है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उस युग में Relativity (सापेक्षतावाद) की कल्पना प्रदान की गई थी । अर्थात् एक ही स्थान में होते हुए आयाम बदल जाने से दो वस्तुओं का परस्पर कोई संबन्ध नहीं रहता ।

सूर: अल् हदीद की प्रमुख आयत वह है जिसमें घोषणा की गई है कि हमने लोहे को उतारा । अरबी शब्द **नुज़ूल** का जो अनुवाद जनसाधारण करते हैं उसके अनुसार लोहा मानो आकाश से बरसा है हालाँकि वह धरती की गहराइयों से खोद कर निकाला जाता है । इस आयत से **नुज़ूल** शब्द की वास्तविकता ज्ञात हो जाती है कि वह वस्तु जो अपने आप में सबसे अधिक लाभदायक है उसके लिए कुरआन करीम में शब्द नुज़ूल प्रयुक्त हुआ है । अतः इसी दृष्टि से पशुओं के लिए भी नुज़ूल शब्द आया है । वस्त्र के

सम्बन्ध में भी नुज़ूल शब्द आया है । सबसे बढ़ कर यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए कहा गया, **क़द अन ज़लल्लाहु इलैकुम ज़िक्ररसूलन्** (अत-तलाक़ 11-12) अर्थात् निःसन्देह अल्लाह ने तुम्हारी ओर साक्षात् अल्लाह का स्मरण करने वाला रसूल उतारा है । सारे विद्वान सहमत हैं कि सशरीर आप सल्ल. आकाश से नहीं उतरे । अतः यहाँ पर इसके सिवा और कोई अर्थ नहीं कि समस्त रसूलों में मानव जाति को सबसे अधिक लाभ पहुँचाने वाले रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही थे ।

फिर इसी सूरः में सहाबा रज़ि. के सम्बन्ध में यह वर्णन है कि उनका नूर उनके आगे भी चलता था और उनके दाहिने भी । मानो वे अपने नूर से अपना मार्ग देख रहे थे ।



سُورَةُ الْحَدِيدِ مَدِينَةٌ وَهِيَ مَعَ السَّمَلَةِ ثَلَاثُونَ آيَةً وَارْبَعَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

आकाशों और धरती में जो है अल्लाह ही का गुणगान करता है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।2।

आकाशों और धरती का साम्राज्य उसी का है । वह जीवित करता है और मारता है । और वह हर चीज़ पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।3।

वही आदि और वही अन्त, वही प्रकाश्य और वही अप्रकाश्य है । और वह हर चीज़ का स्थायी ज्ञान रखता है ।4।

वही है जिसने आकाशों और धरती को छः युगों में पैदा किया । फिर वह अर्श पर विराजमान हो गया । वह (उसे) जानता है जो धरती में प्रविष्ट होता है और जो उसमें से निकलता है और जो आकाश से उतरता है और जो उस की ओर चढ़ जाता है । और जहाँ कहीं भी तुम हो वह तुम्हारे साथ होता है । और जो तुम करते हो अल्लाह उस पर सदा गहन दृष्टि रखने वाला है ।5।*

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

لَهُ مُلْكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ
يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْآخِرُ وَالظَّاهِرُ
وَالْبَاطِنُ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ①

هُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضَ
فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ
يَعْلَمُ مَا يَلْجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ
مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ
فِيهَا ۚ وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ①

* अल्लाह तआला के अर्श पर विराजमान होने का अभिप्राय यह है कि वह ब्रह्माण्ड के सारे काम पूरा करने के बाद खाली नहीं बैठा बल्कि उनके निरीक्षण के लिए अर्श पर विराजमान हो गया । संसार में जितने काम हम देखते हैं कि दिखने में तो लगता है कि वे अपने आप हो रहे हैं परन्तु उन सब पर अंसख्य फ़रिश्ते तैनात हैं जो अल्लाह के आदेश से उनकी निगरानी कर रहे हैं ।→

धरती और आकाश का साम्राज्य उसी का है और अल्लाह की ओर ही समस्त विषय लौटाए जाते हैं। 16।

वह रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है। और वह सीनों की बातों का भी सदा ज्ञान रखता है। 17।

अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान ले आओ और उसमें से खर्च करो जिसमें उसने तुम्हें उत्तराधिकारी बनाया। अतः तुम में से वे लोग जो ईमान ले आए और (अल्लाह के मार्ग में) खर्च किया उनके लिए बहुत बड़ा प्रतिफल है। 18।

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते ? और रसूल तुम्हें बुला रहा है कि तुम अपने रब्ब पर ईमान ले आओ जबकि (हे आदम की संतान !) वह तुमसे दृढ़ वचन ले चुका है। यदि तुम ईमान लाने वाले होते (तो अच्छा होता)। 19।

वही है जो अपने भक्त पर सुस्पष्ट आयतें उतारता है ताकि वह तुम्हें अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकाल

لَهُ مَلَكُ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۖ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ ①

يُؤَيِّجُ الْبَلَّ فِي النَّهَارِ وَيُؤَيِّجُ اللَّيْلَ فِي الْبَلِّ ۖ وَهُوَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ②

أَمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَأَنْفِقُوا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُسْتَخْلِفِينَ فِيهِ ۖ فَالَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيرٌ ③

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ ۚ وَالرَّسُولُ يَدْعُوكُمْ لِتُؤْمِنُوا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ ④

هُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ عَلَى عَبْدِهِ آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ⑤

← आयतांश वह उसे जानता है जो धरती में प्रविष्ट होता है और जो उस में से निकलता है। धरती से हर समय कुछ न कुछ आकाश की ओर उठता रहता है और कुछ न कुछ नीचे उतरता रहता है। कुछ तो ऐसे वाष्पकण आदि हैं जिनको वापस धरती की ओर भेज दिया जाता है। परन्तु कुछ ऐसी रेडियो धर्मी और चुम्बकीय किरणें हैं जो ऊपर उठ कर धरती की सीमा से निकल जाती हैं। इसी प्रकार आकाश से उल्कापिण्डों और रेडियो धर्मी किरणों की धरती पर लगातार बौछार हो रही है। इसकी भी लगातार खोज जारी है और बहुत कुछ ज्ञात हो जाने पर भी आकाश से उतरने वाली अधिकतर किरणों का वैज्ञानिकों को ज्ञान नहीं हो सका है। यह विषयवस्तु भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में किसी मनुष्य की कल्पना में नहीं आ सकता था।

कर ले जाए । और निःसन्देह अल्लाह तुम पर बहुत कृपाशील (और) बार-बार दया करने वाला है ।।10।

और तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह के मार्ग में खर्च नहीं करते ? जबकि आकाशों और धरती का उत्तराधिकार अल्लाह ही का है । तुम में से कोई उसके बराबर नहीं हो सकता जिस ने विजय प्राप्ति से पूर्व खर्च किया और युद्ध किया । ये लोग दर्जों में उनसे बहुत बढ़ कर हैं जिन्होंने बाद में खर्च किया और युद्ध किया । और प्रत्येक से अल्लाह ने उत्तम (प्रतिफल का) वादा किया है । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।।11।

(रकू 1/17)

कौन है जो अल्लाह को उत्तम ऋण दे । ताकि वह उसे उसके लिए बढ़ा दे । और उसके लिए एक बड़ा सम्मान वाला प्रतिफल भी है ।।12।

जिस दिन तू मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को देखेगा कि उनका नूर उनके आगे आगे और उनके दाहिनी ओर तेज़ी से चल रहा है । (उन्हें कहा जाएगा) तुम्हें आज के दिन ऐसे स्वर्ग मुबारक हों जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे उनमें सदा रहने वाले होंगे । यही बहुत बड़ी सफलता है ।।13।*

وَإِنَّ اللَّهَ بِكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ۝

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ
وَاللَّهُ مِيرَاثُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا
يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ
وَقُتِلَ ۚ أُولَٰئِكَ أَغْظَمُ دَرَجَةً ۚ
الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدِ وَقْتَلُوا ۚ وَكُلًّا
وَعَدَ اللَّهُ الْحُسْنَىٰ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ
خَبِيرٌ ۝

ع
۱७

مَنْ ذَا الَّذِي يُقْرِضُ اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا
فِيضِعِفَهُ لَهُ وَلَهُ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعَى
نُورُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ
بُشْرَاكُمْ الْيَوْمَ جَنَّتْ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝

* मोमिनों को उनके हिदायत पाने के परिणामस्वरूप नूर प्राप्त होता है । और दाहिने हाथ से अभिप्राय हिदायत ही है ।

जिस दिन मुनाफ़िक़ पुरुष और मुनाफ़िक़ स्त्रियाँ उनसे जो ईमान लाए थे कहेंगे, हम पर भी दृष्टि डालो हम भी तुम्हारे नूर से कुछ लाभ उठा लें। कहा जाएगा, अपने पीछे की ओर लौट जाओ। फिर कोई नूर ढूँढो। तब उनके बीच एक ऐसी दीवार खड़ी कर दी जाएगी जिसका एक द्वार होगा। उसका भीतरी (भाग) ऐसा है कि उसमें कृपा होगी और उसका बाहरी (भाग) ऐसा है कि उसके सामने अज़ाब होगा 114।

वे उन्हें ऊँची आवाज़ से पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे? वे कहेंगे हाँ क्यों नहीं! परन्तु तुमने स्वयं अपने आपको परीक्षा में डाल लिया और प्रतीक्षा करते रहे और शंका में पड़ गए और तुम्हें (तुम्हारी) कामनाओं ने धोखा दिया। यहाँ तक कि अल्लाह का निर्णय आ गया। जबकि तुम्हें शैतान ने अल्लाह के बारे में खूब धोखे में डाले रखा 115।

अतः आज तुम से कोई मुक्तिमूल्य नहीं लिया जाएगा और न ही उन लोगों से जिन्होंने इनकार किया। तुम्हारा ठिकाना अग्नि है। यह है तुम्हारी मित्र और क्या ही बुरा ठिकाना है 116।

क्या उन लोगों के लिए जो ईमान लाए समय नहीं आया कि अल्लाह के स्मरण से तथा उस सत्य (के रोब) से जो उतरा है, उनके दिल फट कर गिर जाएँ। और वे उन लोगों की भाँति न बनें जिन्हें

يَوْمَ يَقُولُ الْمُنْفِقُونَ وَالْمُنْفِقَاتُ
لِلَّذِينَ آمَنُوا انْظُرُونَا نَقْتَبِسْ مِنْ
نُورِكُمْ قِيلَ ارْجِعُوا وَرَاءَكُمْ
فَاتِمِسُوا نُورًا ۖ فَضُرِبَ بَيْنَهُم
بِسُورَةٍ بَابٌ ۖ بَاطِنُهُ فِيهِ الرَّحْمَةُ
وَزَاهِرُهُ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَمْ يَكُنْ مَعَكُمْ قَالُوا بَلَى
وَلَكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ
وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتَّى جَاءَ
أَمْرُ اللَّهِ وَغَرَّكُمْ بِاللَّهِ الْغُرُورُ ۝

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَلَا
مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ مَا لَكُمْ النَّارُ
هِيَ مَوْلَاكُمْ ۖ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ۝

الْمَيَانِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَخْشَعَ
قُلُوبُهُمْ لِذِكْرِ اللَّهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ
وَلَا يَكُونُوا كَالَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ مِنْ

(इससे) पूर्व पुस्तक दी गई थी ? अतः उन पर समय लम्बा हो गया तो उनके दिल कठोर हो गए और उनमें से बहुत से वचन भंग करने वाले थे ॥17॥

जान लो कि अल्लाह धरती को उसकी मृत्यु के पश्चात अवश्य जीवित करता है । हम आयतों को तुम्हारे लिए खोल-खोल कर वर्णन कर चुके हैं ताकि तुम बुद्धि से काम लो ॥18॥

निःसन्देह दानशील पुरुष और दानशील स्त्रियाँ और वे जिन्होंने अल्लाह को उत्तम ऋण दिया, उनके लिए उसे बढ़ा दिया जाएगा और उनके लिए एक सम्मानदायक प्रतिफल है ॥19॥

और वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए, यही वे लोग हैं जो अपने रब्ब के समक्ष सिद्दीक़ और शहीद ठहरते हैं । उनके लिए उनका प्रतिफल और उनका नूर है । और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठलाया वही नरकवासी हैं ॥20॥ (सूकू 2/18)

जान लो कि सांसारिक जीवन केवल खेल-कूद और आत्मलिप्साओं को पूरा करने का ऐसा साधन है जो उच्च-उद्देश्य से बेपरवा कर दे और ठाटबाट और परस्पर एक दूसरे पर अहंकार करना है और धन और संतान में एक दूसरे से बढ़ने का प्रयास करना है । (यह जीवन) उस वर्षा के उदाहरण सदृश है जिसकी हरियाली काफ़िरों (के दिलों)

قَبْلَ فَطَالُ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوبُهُمْ ۖ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَسِقُونَ ۝۱۷

إِعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ يَحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝۱۸

إِنَّ الْمُصَّدِّقِينَ وَالْمُصَّدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضْعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيمٌ ۝۱۹

وَالَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ۖ وَالشُّهَدَاءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُورُهُمْ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ ۝۲۰

إِعْلَمُوا أَنَّهَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَلَهُوَ وِزْرِينٌ ۖ وَتَفَاخُرُ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرُ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ ۚ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهُ ثُمَّ يَهِيجُ

को लुभाती है। अतः वह शीघ्रता पूर्वक बढ़ती है। फिर तू उसे पीला पड़ता हुआ देखता है फिर वह चूर्ण-विचूर्ण हो जाती है। और परलोक में कठोर अज़ाब (निश्चित) है तथा अल्लाह की ओर से क्षमादान और प्रसन्नता भी है। जबकि सांसारिक जीवन तो केवल धोखे का एक अस्थायी सामान है। 121।

अपने रब्ब की क्षमाप्राप्ति की ओर तथा उस स्वर्ग की ओर भी एक दूसरे से आगे बढ़ो, जिसका फैलाव आकाश और धरती के फैलाव की भाँति है, जिसे उन लोगों के लिए तैयार किया गया है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाते हैं। यह अल्लाह की कृपा है, वह इसको जिसे चाहता है देता है और अल्लाह महान कृपालु है। 122।

धरती पर कोई विपत्ति नहीं आती और न स्वयं तुम्हारे ऊपर। परन्तु इस से पूर्व कि हम उसे प्रकट करें वह एक पुस्तक में (छिपी हुई) है। निःसन्देह यह अल्लाह के लिए बहुत सरल है। 123।

(याद रहे यह अल्लाह का विधान है) ताकि जो तुम से खोया गया तुम उस पर खेद न करो और जो उसने तुम्हें दिया है, उस पर न इतराओ। और अल्लाह किसी अहंकारी, बढ़-बढ़ कर इतराने वाले को पसन्द नहीं करता। 124।

(अर्थात्) उन लोगों को जो कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी की शिक्षा देते हैं। और जो मुंह फेर ले तो

فَتَرَهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُونُ حُطَامًا
وَفِي الْآخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۚ وَمَغْفِرَةٌ
مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانٌ ۚ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا
إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُورِ ۝

سَابِقُوا إِلَىٰ مَغْفِرَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ
عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ
أَعَدَّتْ لِلَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرُسُلِهِ
ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

مَا أَصَابَ مَن مُّصِيبَةٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي أَنفُسِكُمْ إِلَّا فِي كِتَابٍ مِّن قَبْلُ
أَن نَّبْرَأَهَا ۚ إِنَّ ذَٰلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝
لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلَىٰ مَا فَاتَكُمْ
وَلَا تَفْرَحُوا بِمَا آتَاكُمْ ۚ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ
كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُورٍ ۝

الَّذِينَ يَبْخُلُونَ وَيَأْمُرُونَ النَّاسَ
بِالْبُخْلِ ۚ وَمَن يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ

(वह जान ले कि) निःसन्देह अल्लाह ही निस्पृह और प्रशंसा योग्य है ।25।

हमने निःसन्देह अपने रसूल स्पष्ट चिह्नों के साथ भेजे और उनके साथ पुस्तक और न्याय की तुला भी उतारी ताकि लोग न्याय पर कायम रह सकें । और हमने लोहा उतारा जिसमें घोर युद्ध का सामान और मनुष्य के लिए बहुत से लाभ हैं । ताकि अल्लाह उसे जान ले जो उसकी और उसके रसूलों की परोक्ष में भी सहायता करता है । निःसन्देह अल्लाह बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है ।26। (स्कू³/₁₉)

और निःसन्देह हमने नूह और इब्राहीम को (भी) भेजा और दोनों की संतान में नुबुव्वत और पुस्तक (दान स्वरूप) रख दी । अतः उनमें वह भी था जो हिदायत पा गया जबकि एक बड़ी संख्या उनमें से पथभ्रष्टों की थी ।27।*

फिर हमने उनके पदचिह्नों पर लगातार अपने रसूल भेजे । और मरियम के पुत्र ईसा को भी पीछे लाए और उसे हमने इंजील प्रदान की । और उन लोगों के दिलों में जिन्होंने उसका अनुसरण किया नरमी और दयाशीलता रख दीं । और हमने उन पर वह ब्रह्मचर्य अनिवार्य नहीं किया था जिसे उन्होंने नई प्रथा गढ़ ली । परन्तु अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति (अनिवार्य की थी) । फिर उन्होंने उस की छूट का हक अदा न किया । अतः

الْغَنَى الْحَمِيدُ ⑤

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا
مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ لِيَقُومَ النَّاسُ
بِالْقِسْطِ ۖ وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ
شَدِيدٌ وَمَنَافِعٌ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللَّهُ
مَنْ يَنْصُرُهُ وَرُسُلَهُ بِالْغَيْبِ ۚ إِنَّ اللَّهَ
قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا
فِي ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتَابَ فَمِنْهُمْ
مُهْتَدٍ ۖ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلَىٰ آثَارِهِم بِرُسُلِنَا
وَقَفَّيْنَا بِعِيسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَآتَيْنَاهُ
الْإِنْجِيلَ ۖ وَجَعَلْنَا فِي قُلُوبِ الَّذِينَ
اتَّبَعُوهُ رَأْفَةً وَرَحْمَةً ۗ وَرَهْبَانِيَّةً
ابْتَدَعُوهَا مَا كَتَبْنَاهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا
ابْتِغَاءَ رِضْوَانِ اللَّهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقًّا

हमने उनमें से उनको जो ईमान लाए (और नेक कर्म किए) उनका प्रतिफल दिया । जबकि एक बड़ी संख्या उनमें दुराचारियों की थी ।28।*

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का तक्रवा धारण करो और उसके रसूल पर ईमान लाओ वह तुम्हें अपनी दया में से दोहरा भाग देगा । और तुम्हें एक नूर प्रदान करेगा जिसके साथ तुम चलोगे । और तुम्हें क्षमा करेगा और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।29।

ताकि अहले किताब कहीं यह न समझ बैठें कि इन (मोमिनों) को अल्लाह की कृपा प्राप्ति का कुछ सामर्थ्य नहीं । जबकि निःसन्देह सारी कृपा अल्लाह ही के हाथ में है । वह उसको जिसे चाहता है प्रदान करता है और अल्लाह बहुत बड़ा कृपालु है ।30। (रुकू 4/20)

رَعَايَتَهَا ۚ فَاتَيْنَا الَّذِينَ آمَنُوا مِنْهُمْ
أَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيرٌ مِنْهُمْ فَاسِقُونَ ۝۲۸

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَآمِنُوا
بِرَسُولِهِ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَحْمَتِهِ
وَيَجْعَلْ لَكُمْ نُورًا تَمْشُونَ بِهِ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۖ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝۲۹

لِّئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتَابِ إِلَّا يَتَّقِدُونَ
عَلَى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللَّهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ
بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ ۖ وَاللَّهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝۳۰

* इस आयत में विशेष रूप से उस रहबानिय्यत (आजीवन ब्रह्मचर्य) का उल्लेख है जो आजकल ईसाई पादरियों और ब्रह्मचारिणियों में आजीवन अविवाहित रहने की नई प्रथा के रूप में जारी है । अल्लाह तआला का कदापि यह उद्देश्य नहीं था बल्कि उनको तक्रवापूर्ण जीवन यापन करने का आदेश था जिस का आरम्भिक युगीन ईसाइयों ने यथोचित पालन किया । परन्तु बाद के समय में इसमें अतिशयोक्ति करते हुए आजीवन ब्रह्मचर्य धारण करने की नई प्रथा जारी कर दी गई ।

58- सूर: अल-मुजादल:

यह सूर: मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 23 आयतें हैं ।

सूर: अल-मुजादल: में प्रमुख विषयवस्तु यह वर्णन किया गया है कि अरबों की यह रीति अर्थहीन है कि नाराज़गी में पत्नियों को माँ कह कर अपने लिए अवैध ठहरा लिया जाय । माँ तो वही होती है जिसने जन्म दिया हो । फिर फ़र्माया कि इन व्यर्थ बातों का प्रायश्चित्त किया करो और इन व्यर्थ बातों से बचते हुए अपनी पत्नियों की ओर लौटो ।

सूर: अल् हदीद में लोहे का वर्णन है और काटने और चीरने फाड़ने के लिए लोहे का ही प्रयोग किया जाता है । परन्तु यह इसका भौतिक प्रयोग है परन्तु सूर: अल् मुजादल: में जो बार-बार **युहादू न** और **हादू** (वे विरोध करते हैं) शब्द आया है इससे अभिप्राय आध्यात्मिक रूप से एक दूसरे को फाड़ना है । और लगातार यह वर्णन है कि जो लोग हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को आध्यात्मिक रूप से आघात पहुँचाते हैं और सहाबा रज़ि. के बीच मतभेद उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं और इस उद्देश्य से छिप कर परामर्श करते हैं, वे सब अपने आप को विनष्ट करने वाली बातें करते हैं । फ़र्माया, जो भी अल्लाह और रसूल को अपनी छींटाकशियों से आघात पहुँचाते हैं वे असफल होंगे और अल्लाह तआला ने अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि वह और उसके रसूल अवश्य विजयी होंगे ।



سُورَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدْيَنَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَثَلَاثَةٌ رُّكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

निश्चित रूप से अल्लाह ने उसकी बात सुन ली है जो अपने पति के विषय में तुझ से बहस करती थी और अल्लाह से शिकायत कर रही थी, जबकि अल्लाह तुम दोनों की वार्तालाप को सुन रहा था। निःसन्देह अल्लाह सदा सुनने वाला (और) गहन दृष्टि रखने वाला है ।।।

तुम में से जो लोग अपनी पत्नियों को माँ कह देते हैं, वे उनकी माँ नहीं हो सकतीं, उनकी माँ तो वही हैं जिन्होंने उनको जन्म दिया । और निःसन्देह वे एक अत्यन्त अप्रिय और झूठी बात कहते हैं । और अल्लाह निःसन्देह बहुत माफ़ करने वाला (और) बहुत क्षमाशील है ।।।

और वे लोग जो अपनी पत्नियों को माँ कह देते हैं, फिर अपनी कही हुई बात से पीछे हटते हैं, तो इसके पूर्व कि वे दोनों एक दूसरे को छूँएँ एक गर्दन (दास) मुक्त करना (अनिवार्य) है । यह वह (बात) है जिसका तुम्हें उपदेश दिया जाता है । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।।।

अतः जो (इसका) सामर्थ्य न रखे तो लगातार दो महीने के रोज़े रखना है इससे

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

قَدْ سَمِعَ اللَّهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا وَتَشْتَكِي إِلَى اللَّهِ وَاللَّهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۖ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ بَصِيرٌ ②

الَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْكُمْ مِنْ نِسَائِهِمْ مَا هُنَّ أُمَّهَاتُهُمْ ۖ إِنَّ أُمَّهَاتَهُمْ إِلَّا الْإِطْعَامُ وَلَدْنَهُمْ ۖ وَإِنَّهُمْ لَيَقُولُونَ مُنْكَرًا مِنَ الْقَوْلِ وَزُورًا ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَعَفُوفٌ غَفُورٌ ③

وَالَّذِينَ يُظَاهِرُونَ مِنْ نِسَائِهِمْ ثُمَّ يَعُودُونَ لِمَا قَالُوا فَتَحَرِيرُ رَقَبَةٍ ۖ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَا ذِيكُمْ تُوعَظُونَ بِهِ ۖ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ④

فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ

पूर्व कि वे दोनों एक दूसरे को छूँ। फिर जो (इसका भी) सामर्थ्य न रखता हो तो साठ दरिद्रों को भोजन कराना है। यह इस कारण है कि तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल की ओर से संतुष्टि* प्राप्त हो। यह अल्लाह की (निर्धारित) सीमाएँ हैं। और काफ़ि़रों के लिए बहुत ही पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है। 15।

निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं, जबकि हम सुस्पष्ट चिह्न उतार चुके हैं। वे उसी प्रकार तबाह कर दिए जाएँगे जैसे उनसे पहले लोग तबाह कर दिए गए। और काफ़ि़रों के लिए एक बड़ा अपमान-जनक अज़ाब (निश्चित) है। 16।

जिस दिन अल्लाह उनको एक समूह के रूप में उठाएगा फिर उन्हें उसकी खबर देगा जो वे किया करते थे। अल्लाह ने उस (कर्म) को गिन रखा है जबकि वे उसे भूल चुके हैं। और अल्लाह हर चीज़ पर साक्षी है। 17। (रुकू 1/1)

क्या तूने देखा नहीं कि अल्लाह उसे जानता है जो आकाशों में है और जो धरती में है? कोई तीन (व्यक्ति) गुप्त मंत्रणा नहीं करते जबकि वह उनका चौथा न हो। और न ही कोई पाँच (मंत्रणाकारी) ऐसे होते हैं जबकि वह उनका छठा न हो और चाहे इससे कम अथवा अधिक (हों) परन्तु वह उनके साथ होता है, जहाँ कहीं भी वे हों। फिर

مِنْ قَبْلِ أَنْ يَتَمَاسَا ۖ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ
فَإِطْعَامُ سِتِّينَ مِسْكِينًا ۚ ذَلِكَ
لِتُؤْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ
اللَّهِ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادُّونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ كُبِتُوا
كَمَا كُتِبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ
وَقَدْ أَنْزَلْنَا آيَاتٍ بَيِّنَاتٍ ۚ وَلِلْكَافِرِينَ
عَذَابٌ مُهِينٌ ۝

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا
عَمِلُوا ۗ أَحْصَاهُ اللَّهُ وَنَسُوهُ ۗ وَاللَّهُ عَلَى
كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا
فِي الْأَرْضِ ۗ مَا يَكُونُ مِنْ نَجْوَى ثَلَاثَةٍ
إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ
سَادِسُهُمْ وَلَا أَذْنَى مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْثَرُ
إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوا ۚ
ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ

वह उन्हें क्रयामत के दिन उसकी सूचना देगा जो वे करते रहे । निःसन्देह अल्लाह हर चीज़ का खूब ज्ञान रखता है । 8।

क्या तूने उनकी ओर दृष्टि नहीं दौड़ाई ? जिन्हें गुप्त मन्त्रणाओं से मना किया गया परन्तु वे फिर वही कुछ करने लगे जिससे उनको मना किया गया था । और वे पाप, उद्वण्डता और रसूल की अवमानना के बारे में परस्पर गुप्त मन्त्रणा करते हैं । और जब वे तेरे पास आते हैं तो वे इस प्रकार तुझसे शुभ-कामना प्रकट करते हैं जिस प्रकार अल्लाह ने तुझ पर सलाम नहीं भेजा । और वे अपने दिलों में कहते हैं कि अल्लाह हमें इस पर अज़ाब क्यों नहीं देता जो हम कहते हैं । उन (से निपटने) को नरक पर्याप्त होगा । वे उसमें प्रविष्ट होंगे । अतः क्या ही बुरा ठिकाना है । 9।*

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम परस्पर गुप्त मन्त्रणा करो तो पाप, उद्वण्डता और रसूल की अवमानना पर आधारित मन्त्रणा न किया करो । हाँ नेकी और तक्रवा के विषय में मन्त्रणा किया करो । और अल्लाह से डरो जिसके समक्ष तुम इकट्ठे किए जाओगे । 10।

إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

الْمُتَرِّ إِلَى الَّذِينَ نُهُوا عَنِ النَّجْوَى
ثُمَّ يَعْوَدُونَ لِمَا نُهُوا عَنْهُ وَيَتَنَجَّوْنَ
بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُولِ وَإِذَا جَاءُوكَ حَيَّوْكَ بِمَا
لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللَّهُ وَيَقُولُونَ فِي
أَنفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللَّهُ بِمَا نَقُولُ
حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ يَصْلَوْنَهَا فَبِئْسَ
الْمَصِيرُ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا
تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُولِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوَى
وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ ۝

- * इस आयत में सबसे पहले अरबी शब्द नज्वा अर्थात् गुप्त मन्त्रणा करने का उल्लेख है । गुप्त मन्त्रणा करना तो पाप की बात नहीं सिवाए इसके कि उन मन्त्रणाओं का विषयवस्तु अत्याचार करना हो और उनमें अल्लाह और उसके रसूल के विरुद्ध षड़यन्त्र रचे जा रहे हों । इन्हीं लोगों का और अधिक परिचय यह करवाया गया है कि जब वे रसूल की सेवा में उपस्थित होते हैं तो दिखावे का सलाम करके मन में बुरी भावना रखते हैं और फिर मन ही मन में समझते हैं कि हम पर तो इसके परिणाम स्वरूप कोई अज़ाब नहीं आया । अल्लाह तआला उनकी मनस्थिति को जानता है और निःसन्देह वे नरक में डाले जाएंगे ।

गुप्त षड़यन्त्र तो केवल शैतान की ओर से होते हैं ताकि वह उन लोगों को जो ईमान लाए शोक में डाल दे। जबकि वह अल्लाह की आज्ञा के बिना उन्हें कुछ भी हानि नहीं पहुंचा सकता। अतः चाहिए कि मोमिन अल्लाह ही पर भरोसा करें। 111।

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम्हें यह कहा जाए कि सभाओं में (दूसरों के लिए) जगह खुली कर दिया करो तो खुली कर दिया करो, अल्लाह तुम्हें खुलापन प्रदान करेगा। और जब कहा जाए कि उठ जाओ तो उठ जाया करो। अल्लाह उन लोगों के दर्जों को ऊँचा करेगा जो तुम में से ईमान लाए हैं और विशेषकर उनके जिनको ज्ञान प्रदान किया गया है। और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है। 112।

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम रसूल से (कोई व्यक्तिगत) परामर्श करना चाहो तो अपने परामर्श से पूर्व दान दिया करो। यह बात तुम्हारे लिए उत्तम और अधिक पवित्र है। अतः यदि तुम (दान के लिए अपने पास) कुछ न पाओ तो निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 113।

क्या तुम (इस बात से) डर गए हो कि अपने (व्यक्तिगत) परामर्शों से पूर्व दान दिया करो। अतः जब तुम

إِنَّمَا النَّجْوَى مِنَ الشَّيْطَانِ لِيَحْزُنَ الَّذِينَ
آمَنُوا وَلَيْسَ بِضَارِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ
اللَّهِ ۖ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا قِيلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوا
فِي الْمَجَالِسِ فَافْسَحُوا يَفْسَحِ اللَّهُ لَكُمْ ۚ
وَإِذَا قِيلَ اسْكُرُوا فَإِن كُرُوا يَرْفَعِ اللَّهُ
الَّذِينَ آمَنُوا مِنْكُمْ ۖ وَالَّذِينَ أُوتُوا الْعِلْمَ
دَرَجَاتٍ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُولَ
فَقَدْ مَوَازَيْنَ يَدَىٰ نَجْوَيْكُمْ صَدَقَةٌ ۖ
ذَلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَظْهَرٌ ۗ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا
فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

ءَ أَشْفَقْتُمْ أَن تَقْدِمُوا بَيْنَ يَدَىٰ
نَجْوَيْكُمْ صَدَقَاتٍ ۖ فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوا

ऐसा न कर सको जबकि अल्लाह ने तुम्हारा प्रायश्चित्त स्वीकार कर लिया है तो नमाज़ को क़ायम करो और ज़कात दो और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है । 114। (रुकू 2/2)

क्या तूने उनकी ओर नज़र नहीं दौड़ाई जिन्होंने ऐसे लोगों को मित्र बनाया जिन पर अल्लाह क्रोधित हुआ ? ये लोग न तुम्हारे हैं न उनके, और वे जानबूझ कर झूठ पर क़समें खाते हैं । 115।

उनके लिए अल्लाह ने कठोर अज़ाब तैयार कर रखा है । जो वे करते हैं निःसन्देह (वह) बहुत ही बुरा है । 116। उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना लिया है । अतः उन्होंने अल्लाह के मार्ग से (लोगों को) रोक रखा है । परिणामस्वरूप उनके लिए अपमानजनक अज़ाब (निश्चित) है । 117।

उनके धन और उनकी संतान अल्लाह के विरुद्ध उनके किसी काम नहीं आएंगे । यही आग (में पड़ने) वाले लोग हैं । वे उसमें लम्बे समय तक रहने वाले हैं । 118।

जिस दिन अल्लाह उनको इकट्ठा उठाएगा तो वे उसके सामने भी उसी प्रकार क़समें खाएंगे जिस प्रकार तुम्हारे सामने क़समें खाते हैं । और धारणा करेंगे कि वे किसी सिद्धान्त

وَتَابَ اللَّهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَأَتُوا الزَّكَاةَ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ
اللَّهُ عَلَيْهِمْ ۖ مَا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ
وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ
يَعْلَمُونَ ۝

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ إِنَّهُمْ سَاءَ
مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝
اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُهِينٌ ۝

لَنْ تَغْنِي عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَا
أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللَّهُ جَمِيعًا فَيَحْلِفُونَ لَهُ
كَمَا يَحْلِفُونَ لَكُمْ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ

पर (कायम) हैं । सावधान ! यही हैं जो झूठे हैं । 119।

शैतान उन पर विजयी हो गया । अतः उसने उन्हें अल्लाह की याद भुला दी । यही शैतान के समुदाय हैं । सावधान ! शैतान ही का समुदाय ही अवश्य हानि उठाने वाला है । 120।

निःसन्देह वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूल का विरोध करते हैं ये ही घोर अपमानित लोगों में से हैं । 121।

अल्लाह ने लिख रखा है कि अवश्य मैं और मेरे रसूल विजयी होंगे । निःसन्देह अल्लाह बहुत शक्तिशाली (और) पूर्ण प्रभुत्व वाला है । 122।

तू कोई ऐसे लोग नहीं पाएगा जो अल्लाह और परकालीन दिवस पर ईमान रखते हुए ऐसे लोगों से मित्रता करें जो अल्लाह और उसका रसूल से शत्रुता करते हों । चाहे वे उनके बाप-दादा हों अथवा उनके बेटे हों अथवा उनके भाई हों अथवा उनके समुदाय के लोग हों । यही वे (आत्मसम्मानी) लोग हैं जिन के दिल में अल्लाह ने ईमान लिख रखा है । और उनका वह अपने आदेश से समर्थन करता है । और वह उन्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिन के दामन में नहरें बहती हैं वे उनमें सदा रहते चले जाएंगे । अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ और वे अल्लाह से प्रसन्न हो गए । यही अल्लाह का समुदाय है । सावधान !

عَلَى شَيْءٍ ۖ أَلَا إِنَّهُمْ هُمُ الْكَذِبُونَ ۝

اسْتَحْذَرُوا الشَّيْطَانَ فَأَنفُسَهُمْ ذَكَرَ
اللَّهُ ۖ أُولَٰئِكَ حِزْبُ الشَّيْطَانِ ۖ أَلَا إِنَّ
حِزْبَ الشَّيْطَانِ هُمُ الْخَسِرُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ يُحَادِّثُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
أُولَٰئِكَ فِي الْأَذَلِّينَ ۝

كَتَبَ اللَّهُ لَا غَلِبَ إِلَّا أَنَا وَرُسُلِي ۖ إِنَّ اللَّهَ
قَوِيٌّ عَزِيزٌ ۝

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ يُوَادُّونَ مَنْ حَادَّ اللَّهَ وَرَسُولَهُ
وَلَوْ كَانُوا آبَاءَهُمْ أَوْ أَبْنَاءَهُمْ أَوْ
إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيرَتَهُمْ ۖ أُولَٰئِكَ كَتَبَ
فِي قُلُوبِهِمُ الْإِيمَانَ وَأَيَّدَهُم بِرُوحٍ
مِّنْهُ ۖ وَيَدْخُلُهُمْ جَنَّتٌ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ رَضِيَ اللَّهُ
عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۖ أُولَٰئِكَ حِزْبُ اللَّهِ ۖ

अल्लाह ही का समुदाय है जिनमें $\text{أَلَا إِنَّ حِزْبَ اللَّهِ هُمُ الْمُفْلِحُونَ} \text{ ٥٨: ١٣}$ सफल होने वाले लोग हैं। 23।*

(रुकू $\frac{3}{3}$)

-
- * आयतांश : अय्यदहुम बिरूहिम मिन हु (उनका वह अपने आदेश से समर्थन करता है) में हुम (अर्थात उन) सर्वनाम सहाबा के लिए प्रयुक्त हुआ है और कहा गया है कि सहाबा रज़ि. पर रूह-उल-कुदुस उतरता था। इस दृष्टि से ईसाइयों के लिए गर्व करने का कोई स्थान नहीं रहता कि हज़रत ईसा अलै. पर रूह-उल-कुदुस उतरता था। वह तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सेवकों पर भी उतरता था और उनका सहायक होता था।

59- सूरः अल-हश्

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 25 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ में एक हश् (प्रतिफल दिवस) का उल्लेख है और इसके अन्त पर भी एक महान प्रतिफल दिवस का वर्णन है । प्रथम प्रतिफल दिवस जिसे **अव्वलुल हश्** कहा गया है उस दिन यहूदियों को जो दण्ड दिये गये उससे मानो उनके लिए प्रथम प्रतिफल दिवस कायम हो गया और प्रत्येक को उसके पाप के अनुसार दण्ड दिया गया । कुछ के लिए निर्वासन निश्चित किया गया । कुछ के लिए अपने हाथों अपने ही घरों को नष्ट करने का दण्ड निर्धारित हुआ तथा कुछ को मृत्युदण्ड दिया गया । अतः यह प्रथम प्रतिफल दिवस है जिसमें दण्डों का विवरण है । इस सूरः के अंत पर जिस प्रतिफल दिवस का उल्लेख है उसमें यह वर्णन किया गया कि दण्ड उनको मिलते हैं जो अल्लाह की याद को भुला देते हैं और फिर अपनी आत्मा की अच्छाई और बुराई को भूल जाते हैं । परन्तु उनके अतिरिक्त वे भी हैं जो प्रत्येक अवस्था में अल्लाह को याद रखते हैं और दृष्टि रखते हैं कि वे अपने कैसे कर्म आगे भेज रहे हैं । उनको उत्तम प्रतिफल प्रदान किया जाएगा ।

अल्लाह के गुणगान का जो विषयवस्तु पहली सूरतों में और इस सूरः के आरम्भ में वर्णित है, इस सूरः के अन्त पर उसी विषयवस्तु का उत्कर्ष है जो आयत संख्या 23 से आरम्भ होती है । इनमें अल्लाह तआला के कुछ महान गुणवाचक नाम उल्लेख किये गए हैं और आयत संख्या 25 में **समस्त सुन्दर नाम उसी के हैं** कह कर यह वर्णन कर दिया गया है कि केवल इतने ही नाम नहीं बल्कि समस्त सुन्दर नाम उसी के हैं ।



سُورَةُ الْحَشْرِ مَدْيَنَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَثَلَاثَةُ رُكُوعَاتٍ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

जो आकाशों और धरती में है वह अल्लाह का गुणगान करता है और वही पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।2।

वही है जिसने अहले किताब में से उनको जिन्होंने इनकार किया प्रथम प्रतिफल दिवस के अवसर पर उनके घरों से निकाला । तुम धारणा नहीं करते थे कि वे निकल जाएंगे जबकि वे यह समझते थे कि उनके दुर्ग अल्लाह से उनकी रक्षा करेंगे । फिर अल्लाह उन तक आ पहुँचा जहाँ से (आने की) वे कल्पना तक न कर सके । और उसने उनके दिलों में रोब डाल दिया । वे स्वयं अपने ही हाथों और मोमिनों के हाथों से भी अपने घरों को नष्ट करने लगे । अतः हे बुद्धिसंपन्न लोगो ! शिक्षा ग्रहण करो ।3।*

और यदि अल्लाह ने उनके लिए निर्वासन निश्चित न किया होता तो उन्हें इसी लोक में अज़ाब देता जबकि परलोक में उन के लिए (अवश्यमेव) अग्नि का अज़ाब (निश्चित) है ।4।

यह इस कारण है कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का घोर विरोध किया ।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ② وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ③

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ④ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا أَنَّهُمْ مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ فَأَتَهُمُ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا ⑤ وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِ الْمُؤْمِنِينَ ⑥ فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِيَ الْأَبْصَارِ ⑦

وَلَوْلَا أَنْ كَتَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ⑧ وَلَهُمْ فِي الْآخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ⑨

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ⑩ وَمَنْ

* इस आयत में यहूदी कबीला बनु नज़ीर के निर्वासित होने की घटना का उल्लेख है ।

और जो अल्लाह का विरोध करता है तो निःसन्देह अल्लाह दण्ड देने में बहुत कठोर है ।51।

जो भी खजूर का वृक्ष तुमने काटा अथवा उसे अपनी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो अल्लाह के आदेश पर ऐसा किया । और ऐसा करने का यह कारण था कि वह दुराचारियों को अपमानित कर दे ।6।

और अल्लाह ने उन (के धन-सम्पत्तियों में) से अपने रसूल को युद्धलब्ध धन स्वरूप जो प्रदान किया तो उस के लिए तुमने न छोड़े दौड़ाए और न ऊँट । परन्तु अल्लाह अपने रसूलों को जिन पर चाहता है प्रभुत्व प्रदान कर देता है । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।7।

अल्लाह ने कुछ बस्तियों के निवासियों (के धन-सम्पत्तियों में) से अपने रसूल को जो कुछ युद्धलब्ध धन के रूप में प्रदान किया है तो वह अल्लाह के लिए और रसूल के लिए है और निकट सम्बन्धियों, अनाथों और दरिद्रों और यात्रियों के लिए है । ताकि ऐसा न हो कि यह (युद्धलब्ध धन) तुम्हारे धनवानों ही के बीच में चक्कर लगाता रहे । और रसूल जो तुम्हें प्रदान करे तो उसे ले लो और जिस से तुम्हें रोके उससे रुक जाओ और अल्लाह का तक्रवा धारण करो । निःसन्देह अल्लाह दण्ड देने में बहुत कठोर है ।8।

يُشَاقُّ اللَّهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑤

مَا قَطَعْتُمْ مِنْ لِينَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوهَا قَائِمَةً عَلَى أُصُولِهَا فَبِإِذْنِ اللَّهِ وَلِيُخْزِيَ الْفَاسِقِينَ ⑥

وَمَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَلَا رِكَابٍ وَلَكِنَّ اللَّهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ ⑦
وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ⑧

مَا أَفَاءَ اللَّهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْ أَهْلِ الْقُرَى فَلِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَابْنِ السَّبِيلِ ⑨ لَكُمْ لَا يَكُونُ دُولَةً بَيْنَ الْأَغْنِيَاءِ مِنْكُمْ ⑩ وَمَا اتَّكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ ⑪ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا ⑫ وَاتَّقُوا اللَّهَ ⑬ إِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ⑭

(यह धन) उन दरिद्र मुहाजिरों के लिए भी है जो अपने घरों से निकाले गए और अपनी धन-सम्पत्तियों से (अलग किए गए)। वे अल्लाह ही से कृपा और उसकी प्रसन्नता चाहते हैं और अल्लाह और उसके रसूल की सहायता करते हैं। यही वे हैं जो सच्चे हैं। 9।

और वे लोग जिन्होंने उनसे पूर्व ही घर तैयार कर रखे थे और ईमान को (दिलों में) स्थान दिया था। वे उनसे प्रेम करते थे जो हिजरत करके उनकी ओर आए और जो कुछ उन (मुहाजिरों) को दिया गया था (वे) उसकी कोई लालसा नहीं रखते थे। और स्वयं तंगी में होते हुए भी अपनी जानों पर दूसरों को प्राथमिकता देते थे। अतः जो कोई भी आत्मा की कृपणता से बचाया जाए तो यही वे लोग हैं जो सफल होने वाले हैं। 10।

और जो लोग उनके बाद आए वे कहते हैं कि हे हमारे रब्ब ! हमें और हमारे उन भाइयों को भी क्षमा कर दे जो ईमान में हम से आगे निकल गए। और हमारे दिलों में उन लोगों के लिए जो ईमान लाए, कोई द्वेष न रहने दे। हे हमारे रब्ब! निःसन्देह तू बड़ा कृपालु (और बार-बार दया करने वाला है) 11।*

(रुकू - 1/4)

لِّلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا
مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُونَ فَضْلًا
مِّنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصَرُّونَ لِلَّهِ
وَرَسُولِهِ ۖ أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ۝۹

وَالَّذِينَ تَبَوَّءُوا الدَّارَ وَالْإِيمَانَ مِنْ
قَبْلِهِمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا
يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا
أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ
بِهِمْ حَصَاصَةٌ ۚ وَمَنْ يُوْثِقْ شَيْئًا لِّنَفْسِهِ
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ ۝۱۰

وَالَّذِينَ جَاءُوا مِنْ بَعْدِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا
اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِينَ سَبَقُونَا
بِالْإِيمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِي قُلُوبِنَا غِلًّا
لِّلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا إِنَّكَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝۱۱

* आयत संख्या 9 से 11 : ये आयतें अन्सार और मुहाजिरों के ईमान और ऊँचे आध्यात्मिक दर्जों का वर्णन कर रही हैं। हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रहि. की सेवा में एक बार इराक़ के राफ़ज़ियों (शीया संप्रदाय का एक गुट) का एक शिष्ट मण्डल उपस्थित हुआ और उन्होंने हज़रत अबू बकर, उमर और उसमान रज़ि. के विरुद्ध बातें कीं। हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रहि. ने उनसे कहा कि क्या→

क्या तूने उनकी ओर दृष्टि नहीं दौड़ाई जिन्होंने कपट किया। वे अहले किताब में से अपने उन भाइयों से जिन्होंने इनकार किया, कहते हैं कि यदि तुम निकाल दिए गए तो तुम्हारे साथ हम भी अवश्य निकलेंगे और तुम्हारे बारे में कभी किसी का आज्ञापालन नहीं करेंगे। और यदि तुम्हारे विरुद्ध लड़ाई की गई तो हम अवश्य तुम्हारी सहायता करेंगे। और अल्लाह गवाही देता है कि निःसन्देह वे झूठे हैं। 112।

और यदि वे निकाल दिए गए तो उनके साथ ये नहीं निकलेंगे और यदि उनसे लड़ाई की गई तो ये कभी उनकी सहायता नहीं करेंगे। और यदि ये उनकी सहायता करेंगे भी तो अवश्य पीठ दिखा जाएंगे। फिर उनकी कोई सहायता न की जाएगी। 113।

उनके दिलों में भय उत्पन्न करने की दृष्टि से निश्चित रूप से तुम (उनके निकट) अल्लाह से अधिक कठोर (प्रतीत होते) हो। यह इस कारण है कि वे ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं। 114।

वे क़िलाबन्द बस्तियों में अथवा प्राचीरों के ओट में रहकर युद्ध करने के अतिरिक्त तुमसे इकट्ठे होकर युद्ध नहीं

الْمُتَرِّكِ إِلَى الَّذِينَ نَافَقُوا يَقُولُونَ لِأَخْوَانِهِمُ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيعُ فِيكُمْ أَحَدًا أَبَدًا وَإِنْ قُوتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١١٢﴾

لَئِنْ أُخْرِجُوا لَا يَخْرُجُونَ مَعَهُمْ وَلَئِنْ قُوتِلُوا لَا يَنْصُرُونَهُمْ وَلَئِنْ نَصَرُوهُمْ لَيُوَلِّنَنَّ الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يُنصَرُونَ ﴿١١٣﴾

لَا تَنْتُمْ أَشَدَّ رَهْبَةً فِي صُدُورِهِمْ مِنَ اللَّهِ ذَٰلِكُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَفْقَهُونَ ﴿١١٤﴾

لَا يَقَاتِلُونَكُمْ جَمِيعًا إِلَّا فِي قَرْيٍ

← तुम लोग मुहाजिरों में से हो ? (जिनका आयत सं. 9 में वर्णन है) उन्होंने कहा, नहीं। फिर उन्होंने पूछा, तो क्या तुम अन्सार में से हो ? (जिनका आयत सं 10 में वर्णन है) उन्होंने कहा, नहीं। उन्होंने कहा, तो फिर मैं गवाही देता हूँ कि तुम उन लोगों में से भी नहीं हो (जिनका वर्णन आयत सं. 11 में है और) जिनके बारे में आया है और जो लोग उनके बाद आए वे....।

(कश्फुल गुम्मा, भाग 2, पृष्ठ 290, बैरुत प्रकाशन 1401 हिजरी)

करेंगे । उनकी लड़ाई परस्पर बहुत कठोर है । तू उन्हें इकट्ठा समझता है जबकि उनके दिल फटे हुए हैं । यह इस कारण है कि वे ऐसे लोग हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते ॥5१*॥

(ये) उन लोगों की भाँति (हैं) जो उनसे अल्प समय पूर्व अपने कर्मों का दुष्फल भोग चुके हैं । और उनके लिए पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ॥6॥

उन का उदाहरण शैतान की भाँति है, जब उसने मनुष्य से कहा, इनकार कर दे। अतः जब उसने इनकार कर दिया तो कहने लगा कि निश्चित रूप से मैं तुम्हारा ज़िम्मेदार नहीं हूँ । निःसन्देह मैं तो समस्त लोकों के रब्ब, अल्लाह से डरता हूँ ॥7॥

अतः उन दोनों का अंत यह ठहरा कि वे दोनों ही आग में पड़ेंगे । दोनों उसमें लम्बे समय तक रहने वाले होंगे । अत्याचारियों का यही प्रतिफल हुआ करता है ॥8॥ (रुकू $\frac{2}{5}$)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह का तक्रवा धारण करो । और प्रत्येक जान यह ध्यान रखे कि वह कल के लिए क्या आगे भेज रही है । और अल्लाह का

مُحَصَّنَةً أَوْ مِنْ وَرَاءِ جُدُرٍ بِأُسُهُمْ
بَيْنَهُمْ شَدِيدٌ تَحْسِبُهُمْ جَمِيعًا وَقُلُوبُهُمْ
شَتَّىٰ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَا يَعْقِلُونَ ۝

كَمَثَلِ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيبًا ذَاقُوا
وَبَالَ أَمْرِهِمْ ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

كَمَثَلِ الشَّيْطَانِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ ۖ
فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّي بَرِيءٌ مِنْكَ إِنِّي
أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ۝

فَكَانَ عَاقِبَتُهُمَا أَنَّهُمَا فِي النَّارِ
خَالِدَيْنِ فِيهَا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَاُ الظَّالِمِينَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَلْتَنْظُرْ
نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۖ وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ

- * यह यहूदियों के सम्बन्ध में एक भविष्यवाणी है जो क़यामत तक इसी प्रकार पूरी होती रहेगी । जब तक यहूदियों को मज़बूत प्रतिरक्षात्मक दुर्ग उपलब्ध न हों, जो प्रत्येक युग में परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हों, और इसके परिणाम स्वरूप उनको अपनी श्रेष्ठता का विश्वास न हो, वे कभी भी प्रतिपक्ष से युद्ध नहीं करेंगे । परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि उनके दिल परस्पर इकट्ठे हैं । प्रत्यक्ष रूप में तो वे अपने शत्रु के विरुद्ध इकट्ठे दिखाई देते हैं परन्तु परस्पर सदा उनके दिल एक दूसरे से फटे रहते हैं । वर्तमान काल में जिन लोगों को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहूदियों के समान ठहराया है उनकी भी बिल्कुल यही अवस्था है ।

तक़वा धारण करो । निःसन्देह जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है ।119।

और उन लोगों के सदृश न बन जाओ जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने उन्हें स्वयं अपने आप से विस्मृत करवा दिया । यही दुराचारी लोग हैं ।20।

अग्नि (अर्थात नरक) वाले और स्वर्ग वाले कभी समान नहीं हो सकते। स्वर्गगामी ही सफल होने वाले हैं ।21।

यदि हमने इस कुरआन को किसी पर्वत पर उतारा होता तो तू अवश्य देखता कि वह अल्लाह के भय से विनम्रता करते हुए टुकड़े-टुकड़े हो जाता । और ये उदाहरण हैं जिन्हें हम लोगों के लिए वर्णन करते हैं ताकि वे सोच-विचार करें ।22।*

वही अल्लाह है जिसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । अदृश्य और दृश्य का ज्ञाता है । वही है जो बिन मांगे देने वाला, अनन्त कृपा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।23।

वही अल्लाह है जिसके सिवा और कोई उपास्य नहीं । वह सम्राट है, पवित्र है, सलाम है, शांति देने वाला है, निरीक्षक है, पूर्ण प्रभुत्व वाला है, बिगड़े काम बनाने वाला है (और) महिमावान है ।

إِنَّ اللَّهَ خَيْرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللَّهَ فَأَنْسَاهُمْ أَنْفُسَهُمْ أُولَٰئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ ۝

لَا يَسْتَوِي أَصْحَابُ النَّارِ وَأَصْحَابُ الْجَنَّةِ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَائِزُونَ ۝

لَوْ أَنزَلْنَاهُ الْقُرْآنَ عَلَىٰ جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهُ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ ۝

هُوَ اللَّهُ الَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ أَمْلِكُ الْقُدُّوسُ السَّلَامُ ۚ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ ۚ الْعَزِيزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ سُبْحَانَ اللَّهِ

* इस आयत में जिन पर्वतों का वर्णन है उनसे अभिप्राय भौतिक पर्वत नहीं बल्कि पर्वतों की भांति बड़े-बड़े लोग हैं । जैसा कि इस आयत के अंत पर यह परिणाम निकाला गया है कि ये उदाहरण हैं जो इस लिए वर्णन किये जाते हैं ताकि लोग इन पर सोच-विचार करें ।

अल्लाह उससे पवित्र है जो वे शिर्क करते हैं ।24।

वही अल्लाह है जो सृष्टिकर्ता, सृष्टि का आरम्भ करने वाला और आकृति दाता है। सब सुन्दर नाम उसी के हैं । जो आकाशों और धरती में है (वह) उसी का गुणगान कर रहा है । और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।25। (रुकू $\frac{3}{6}$)

عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٢٤﴾

هُوَ اللَّهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ
لَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَىٰ ۚ يُسَبِّحُ لَهُ مَا
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَهُوَ
الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٢٥﴾

ع
٢
٤

60- सूर: अल-मुम्तहिन:

यह सूर: मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 14 आयतें हैं ।

इससे पूर्ववर्ती सूर: में यहूदियों के प्रतिफल दिवस का वर्णन किया गया है और इस सूर: में मुसलमानों को सावधान किया जा रहा है कि जो अल्लाह और रसूल से शत्रुता रखते हैं उनको कदापि मित्र न बनाओ । क्योंकि यदि वे मित्र बन भी जाएँ तब भी उनके सीनों में द्वेष भरा हुआ रहता है और वे हर समय तुम्हें नष्ट करने की योजनाएँ बनाते रहते हैं ।

इसके पश्चात हज़रत इब्राहीम अलै. के आदर्श का उल्लेख है कि उनकी सारी मित्रताएँ अल्लाह ही के लिए थीं और सारी शत्रुताएँ भी अल्लाह ही के लिए थीं । इस कारण तुम्हारे निकट सम्बन्धी, माता-पिता और बच्चे तुम्हारे किसी काम नहीं आ सकेंगे । तुम्हें अवश्य ही अपने सम्बन्ध अल्लाह ही के लिए सुधारने होंगे और अल्लाह ही के लिए तोड़ने होंगे । परन्तु साथ ही मोमिनों को यह ताकीद कर दी कि तुम्हारे जो शत्रु दुःख देने में पहल नहीं करते तुम्हें कदापि अधिकार नहीं पहुँचता कि उनको दुःख देने में तुम पहल करो । उच्चकोटि के न्याय का यही मापदण्ड है कि जब तक वे तुमसे मित्रता निभाते रहें तुम भी उनसे मित्रता रखो ।

क्योंकि यह सूर: उस युग का उल्लेख कर रही है जबकि मुसलमानों को यहूदियों के अतिरिक्त दूसरे मुश्रिकों से भी अपने बचाव के लिए युद्ध करने की अनुमति दे दी गई थी । इस लिए युद्ध के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली बहुत सी समस्याओं का भी वर्णन कर दिया गया कि इस अवस्था में उचित उपाय क्या होगा । उदाहरणार्थ काफ़िरों की पत्नियाँ यदि ईमान लाकर हिजरत कर जाएँ तो उनके ईमान की पूरी तरह परीक्षा ले लिया करो और यदि वे वास्तव में अपनी इच्छा से ईमान लाई हैं तो फिर पहला कर्त्तव्य यह है कि उनको कदापि काफ़िरों की ओर वापस न लौटाओ क्योंकि वे दोनों एक दूसरे के लिए वैध नहीं रहे । हाँ उनके अभिभावकों को वह खर्च दे दिया करो जो वे उन पर कर चुके हैं ।

इसके पश्चात अन्त में उस बैअत की प्रतिज्ञा का वर्णन किया गया है जो उन सभी मोमिन स्त्रियों से भी लेनी चाहिए जो काफ़िरों के चुंगल से भाग कर हिजरत करके आई हैं । उनके अतिरिक्त दूसरी सभी मोमिन स्त्रियों से भी यह प्रतिज्ञा लेनी चाहिए जब वे बैअत करना चाहें ।



سُورَةُ الْمُتَحِنَةِ مَدْنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ أَرْبَعُ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! मेरे शत्रु और अपने शत्रु को कभी मित्र न बनाओ। तुम उनकी ओर प्रेम के संदेश भेजते हो जबकि वे उस सत्य का जो तुम्हारे पास आया है, इनकार कर चुके हैं । वे रसूल को और तुम्हें केवल इसलिए (देश से) निकालते हैं क्योंकि तुम अपने रब्ब, अल्लाह पर ईमान ले आए । यदि तुम मेरे मार्ग में और मेरी ही प्रसन्नता चाहते हुए जिहाद पर निकले हो और साथ ही उन्हें प्रेम के गुप्त संदेश भी भेज रहे हो जबकि मैं सबसे अधिक जानता हूँ जो तुम छिपाते और जो प्रकट करते हो (तो तुम्हारा यह छिपाना व्यर्थ है) । और जो भी तुम में से ऐसा करे तो वह सन्मार्ग से भटक चुका है ।।

यदि वे तुम्हें कहीं पाएँ तो तुम्हारे शत्रु ही रहेंगे और अपने हाथ और अपनी जुबानें दुर्भावना रखते हुए तुम पर चलाएँगे और चाहेंगे कि काश ! तुम भी इनकार कर दो ।।

तुम्हारे निकट सम्बन्धी और तुम्हारी संतान क़यामत के दिन कदापि तुम्हें कोई लाभ नहीं पहुँचा सकेंगे । वह (अल्लाह) तुम्हारे बीच जुदाई डाल देगा

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوا عَدُوِّي وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَاءَ تُلْقُونَ إِلَيْهِمُ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوا بِمَا جَاءَكُمْ مِنَ الْحَقِّ ۚ يُخْرِجُونَ الرَّسُولَ وَإِيَّاكُمْ أَنْ تُؤْمِنُوا بِاللَّهِ رَبِّكُمْ ۖ إِنَّ كُنُتُمْ خَرْجَتُمْ جِهَادًا فِي سَبِيلِي وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِي ۚ تُسْرِفُونَ إِلَيْهِمُ بِالْمَوَدَّةِ ۚ وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَا أَخْفَيْتُمْ وَمَا أَعْلَنْتُمْ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَاءَ السَّبِيلِ ①

إِنْ يَتَّقُواكُمْ يَكُونُوا أَعْدَاءً وَيَسْطُوا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَسْنَنُهُمْ بِالسُّوءِ وَوَدُّوا أَنْ تُكْفَرُوا ①

لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَا أَوْلَادُكُمْ ۚ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ يَفْصِلُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللَّهُ

और जो तुम करते हो अल्लाह उस पर सदा दृष्टि रखता है ।4।

निश्चित रूप से इब्राहीम और उन लोगों में जो उसके साथ थे तुम्हारे लिए एक उत्तम आदर्श है । जब उन्होंने अपनी जाति से कहा कि हम तुमसे और उससे भी विरक्त हैं जिसकी तुम अल्लाह के सिवा उपासना करते हो । हम तुम्हारा इनकार करते हैं और हमारे और तुम्हारे बीच सदा की शत्रुता और द्वेष प्रकट हो चुके हैं, जबतक कि तुम एक ही अल्लाह पर ईमान न ले आओ । सिवाए इब्राहीम के अपने पिता के लिए एक कथन के (जो एक अपवाद स्वरूप था) कि मैं अवश्य आप के लिए क्षमा की दुआ करूंगा । हालाँकि मैं अल्लाह की ओर से आपके बारे में कुछ भी अधिकार नहीं रखता । हे हमारे रब्ब ! तुझ पर ही हम भरोसा करते हैं और तेरी ओर ही हम झुकते हैं और तेरी ओर ही लौट कर जाना है ।5।

हे हमारे रब्ब ! हमें उन लोगों के लिए परीक्षा का पात्र न बना जिन्होंने इनकार किया । और हे हमारे रब्ब ! हमें क्षमा कर दे निःसन्देह तू पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।6।

निःसन्देह तुम्हारे लिए उनमें एक उत्तम आदर्श है अर्थात् उसके लिए जो अल्लाह और अन्तिम दिवस की आशा रखता है । और जो विमुख हो जाए तो (जान ले कि) निःसन्देह वह अल्लाह ही है जो

بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ①

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِي إِبْرَاهِيمَ
وَالَّذِينَ مَعَهُ إِذْ قَالُوا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا
بِرَّاءٌ وَأَمْنُكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ
اللَّهِ كُفْرُنًا بِكُمْ وَبَدَائِبِنَا وَبَيْنَكُمْ
الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَاءُ أَبَدًا حَتَّى تُؤْمِنُوا
بِاللَّهِ وَحْدَهُ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ
لَا تُسْغِرَنَّ لَكَ وَمَا أَمْلِكُ لَكَ
مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ ② رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا
وَإِلَيْكَ أُنَبِّئُكَ الْمُصِيرُ ③

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا
وَاعْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ④ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ
الْحَكِيمُ ⑤

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِمَنْ
كَانَ يَرْجُو اللَّهَ وَالْيَوْمَ الْآخِرَ ⑥ وَمَنْ

निस्पृह (और) प्रशंसा का पात्र है 17।

(रुकू 1/7)

संभव है कि अल्लाह तुम्हारे और उनमें से उन लोगों के बीच जिनसे तुम परस्पर शत्रुता रखते थे, प्रेम उत्पन्न कर दे । और अल्लाह सदा सामर्थ्य रखने वाला है । और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 18।

अल्लाह तुम्हें उनसे भलाई और न्यायपूर्ण व्यवहार करने से मना नहीं करता जिन्होंने तुम से धार्मिक विषय में युद्ध नहीं किया । और न तुम्हें निर्वासित किया। निःसन्देह अल्लाह न्याय करने वालों से प्रेम करता है 19।*

अल्लाह तुम्हें केवल उन लोगों से मित्रता करने के बारे में मना करता है जिन्होंने धार्मिक विषय में तुमसे युद्ध किया और तुम्हें तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हें निकालने में एक दूसरे की सहायता की । और जो उन्हें मित्र बनाएगा तो यही हैं वे जो अत्याचारी हैं 110।

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम्हारे पास मोमिन स्त्रियाँ मुहाजिर होने की अवस्था में आएँ तो उनकी परीक्षा ले

يَتَوَلَّ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيدُ ۝ ١٧

عَسَى اللَّهُ أَنْ يَجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِينَ
عَادَيْتُمْ مِنْهُمْ مَوَدَّةً ۚ وَاللَّهُ قَدِيرٌ ۚ
وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ ١٨

لَا يَهْدِيكُمْ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ لَمْ
يُقَاتِلْوْكُمْ فِي الدِّينِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ
مِّنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْا
إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِينَ ۝ ١٩

إِنَّمَا يَهْدِيكُمْ اللَّهُ عَنِ الَّذِينَ قَاتَلْوْكُمْ
فِي الدِّينِ وَأَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ
وَوَضَعُوْا عَلَىٰ أَخْرَاجِكُمْ أَنْ
تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ فَاُولَٰئِكَ
هُمُ الظَّالِمُونَ ۝ ٢٠

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا جَاءَكُمْ الْمُؤْمِنَاتُ
مُهَاجِرَاتٍ فَامْتَحِنُوهُنَّ ۚ وَاللَّهُ أَعْلَمُ

* यह आयत अन्यायपूर्वक युद्ध करने की कल्पना का खण्डन करती है और उन लोगों से सद्व्यवहार और मित्रता करने से नहीं रोकती जिन्होंने मुसलमानों से धार्मिक मतभेद के कारण युद्ध नहीं किया और निर्दोष मुसलमानों को अपने घरों से नहीं निकाला । कुछ अन्य आयतों से कई लोग यह भूल व्याख्या करते हैं कि प्रत्येक प्रकार के गैर मुस्लिमों से मित्रता करना अवैध है । परन्तु इस आयत से तो पता चलता है कि जिन्होंने मुसलमानों के विरुद्ध धार्मिक मतभेद के कारण बर्बरता नहीं अपनाई, उनसे न केवल मित्रता करना वैध है बल्कि उनसे तो सद्व्यवहार करने का आदेश दिया गया है ।

लिया करो । अल्लाह उनके ईमान को सबसे अधिक जानता है । अतः यदि तुम भली प्रकार ज्ञात कर लो कि वे मोमिन स्त्रियाँ हैं तो काफ़िरों की ओर उन्हें वापस न भेजो । न ये उनके लिए वैध हैं और न वे इनके लिए वैध हैं । और उन (के अभिभावकों) को जो वे खर्च कर चुके हैं अदा करो । उन्हें उनके महर देने के पश्चात तुम उनसे निकाह करो तो तुम पर कोई पाप नहीं । और काफ़िर स्त्रियों के निकाह का मामला अपने अधिकार में न लो । और जो तुमने उन पर खर्च किया है वह उनसे माँगो और जो उन्होंने खर्च किया है वे तुमसे माँगें । यह अल्लाह का आदेश है । वह तुम्हारे बीच निर्णय करता है । और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है । 111।

और यदि तुम्हारी पत्नियों में से कुछ काफ़िरों की ओर चली जायँ और तुम क्षतिपूर्ति ले चुके हो तो उन मोमिनो को जिनकी पत्नियाँ हाथ से जा चुकी हों उसके अनुसार दो जो उन्होंने खर्च किया था । और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाते हो । 112।

हे नबी ! जब मोमिन स्त्रियाँ तेरे पास आएँ (और) इस (बात) पर तेरी बैअत् करें कि वे किसी को अल्लाह का साझीदार नहीं ठहराएँगी । और न ही चोरी करेंगी और न व्यभिचार करेंगी और न अपनी संतान का वध करेंगी और

بِإِيمَانِهِمْ فَإِنْ عَلِمْتُمُوهُنَّ مُؤْمِنَاتٍ فَلَا تَرْجِعُوهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّونَ لَهُنَّ وَآتُوهُم مَّا أَنْفَقُوا وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوهُنَّ إِذَا آتَيْتُمُوهُنَّ أَجُورَهُنَّ وَلَا تُمْسِكُوا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَسَلُّوا مَّا أَنْفَقْتُمْ وَلَيْسَلُوا مَّا أَنْفَقُوا ذَلِكُمْ حُكْمُ اللَّهِ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ⑪

وَأِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقِبْتُمْ فَاتُوا الَّذِينَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِثْلَ مَا أَنْفَقُوا وَاتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ⑫

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَاءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يَبَايِعُكَ عَلَى أَنْ لَا يُشْرِكْنَ بِاللَّهِ شَيْئًا

न ही (किसी पर) कोई झूठा आरोप लगाएंगी, जिसे वे अपने हाथों और पांवों के सामने गढ़ लें। और न ही उचित (बातों) में तेरी अवज्ञा करेंगी तो तू उनकी बैअत् स्वीकार कर और उनके लिए अल्लाह से क्षमा याचना कर। निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ॥13॥

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! ऐसे लोगों से मित्रता न करो जिन पर अल्लाह क्रोधित हुआ। वे परलोक से निराश हो चुके हैं जैसे काफिर कब्रों में पड़े व्यक्तियों से निराश हो चुके हैं ॥14॥

(रुकू $\frac{2}{8}$)

وَلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِينَ وَلَا يَقْتُلْنَ
أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِينَ بِهَتَّانٍ يَفْتَرِيْنَهُ
بَيْنَ أَيْدِيْهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ
فِي مَعْرُوفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ
اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝۱۳

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا
غَضَبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَدْرُسُوا مِنْ
الْآخِرَةِ كَمَا يَبْسُ الْكُفَّارُ مِنْ
أَصْحَابِ الْقُبُورِ ۝۱۴

ع
۝۱۴

61- सूर: अस-सफ़्र

यह सूर: मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 15 आयतें हैं ।

पिछली सूर: के अन्त पर जिस बैअत् की प्रतिज्ञा का उल्लेख है उसमें केवल मोमिन स्त्रियों के उत्तरदायित्वों का वर्णन ही नहीं है अपितु मोमिन पुरुष भी बैअत् की प्रतिज्ञा करके इस प्रकार की आध्यात्मिक रोगों से बचने की प्रतिज्ञा करते हैं । अतः दोनों को सूर: अस- सफ़्र के आरम्भ में यह आदेश दिया गया है कि अपनी बैअत की प्रतिज्ञा में कपट न करना और यह न हो कि दूसरों को तो उपदेश करते रहो और स्वयं उसके लिए प्रतिबद्ध न हो । यदि तुम निष्ठापरता के साथ बैअत् की प्रतिज्ञा पर अडिग रहोगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे दिल एक दूसरे से इस प्रकार मिला देगा कि तुम्हें एक सीसा से ढली हुई दीवार के सदृश शत्रु के मुकाबले पर खड़ा कर देगा ।

इसी सूर: में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में हज़रत ईसा अलै. की भविष्यवाणी का भी वर्णन है जिसमें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वितीय नाम अर्थात् **अहमद** का उल्लेख किया गया है । जो आपके सौम्य रूप का द्योतक है । **अहमद** सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में इसके बाद जो विवरण मिलता है उससे स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सौम्य रूप का द्योतक एक व्यक्ति अंत्ययुग में जन्म लेगा । उस समय उसको और उसके अनुयायियों को इस्लाम की जिस रंग में शांतिपूर्वक सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त होगा वह रूप-रेखा साफ प्रकट कर रही है कि यह आने वाले युग की एक भविष्यवाणी है ।

क्योंकि इस सूर: के अन्त पर हज़रत ईसा अलै. और उनकी भविष्यवाणियों का उल्लेख हो रहा है, इस लिए जिस प्रकार उन्होंने यह घोषणा की थी कि कौन है जो अल्लाह के लिए मेरा सहायक बनेगा । उसी प्रकार आवश्यक है कि अंत्ययुग में जब दोबारा यह घोषणा हो तो वे सभी मुसलमान जो सच्चे दिल से इन भविष्यवाणियों पर ईमान लाए हैं वे भी यह घोषणा करते हुए मुहम्मदी मसीह के झंडे तले एकत्रित हो जाएँ कि हम प्रत्येक प्रकार से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के धर्म के समर्थन में मुहम्मदी मसीह की धर्मसेवा के कामों में उसके सहायक बनेंगे ।



سُورَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ خَمْسَ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

अल्लाह ही का गुणगान करता है जो आकाशों में है और जो धरती में है । और वह (अल्लाह) पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।2।

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! क्यों वह (बात) कहते हो जो तुम करते नहीं ? ।3।

अल्लाह के निकट यह बहुत बड़ा पाप है कि तुम वह (बात) कहो जो तुम करते नहीं ।4।

निःसन्देह अल्लाह उन लोगों से प्रेम करता है जो उसके मार्ग में पंक्तिबद्ध हो कर युद्ध करते हैं मानो वे एक सीसा से ढाली हुई दीवार हैं ।5।

और (याद करो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा, हे मेरी जाति ! तुम मुझे क्यों कष्ट देते हो ? हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का रसूल हूँ । फिर जब वे टेढ़े हो गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया और अल्लाह दुराचारी लोगों को हिदायत नहीं देता ।6।

और (याद करो) जब मरियम के पुत्र ईसा ने कहा, हे बनी इस्राईल ! निःसन्देह मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سَبَّحَ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ②

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لِمَ تَقُولُونَ مَا لَا تَفْعَلُونَ ③

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللَّهِ أَنْ تَقُولُوا مَا لَا تَفْعَلُونَ ④

إِنَّ اللَّهَ يُحِبُّ الَّذِينَ يُقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِهِ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَرْصُوعٌ ⑤

وَإِذْ قَالَ مُوسَى لِقَوْمِهِ يُقَوْمِ لِمَ تُوذُونَنِي وَقَدْ تَعْلَمُونَ أَنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ ۖ فَلَمَّا زَاغُوا أَزَاغَ اللَّهُ قُلُوبَهُمْ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ⑥

وَإِذْ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ يَبْنَىٰ إِسْرَءِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ

रसूल बन कर उस बात की पुष्टि करते हुए आया हूँ जो तौरात में से मेरे सामने है। और एक महान रसूल का शुभ-सामाचार देते हुए जो मेरे बाद आएगा जिसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह स्पष्ट चिह्नों के साथ उनके पास आया तो उन्होंने कहा, यह तो एक खुला-खुला जादू है। 171*

और उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े, हालाँकि उसे इस्लाम की ओर बुलाया जा रहा हो। और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता। 18।

वे चाहते हैं कि वे अपने मुँह की फूँकों से अल्लाह के नूर को बुझा दें हालाँकि अल्लाह अवश्यमेव अपना नूर पूरा करने वाला है चाहे काफ़िर बुरा मनायें। 19।**

वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सत्यधर्म के साथ भेजा ताकि वह उसे धर्म (के प्रत्येक क्षेत्र) पर पूर्णरूप से विजयी कर दे चाहे मुश्रिक बुरा मनाएँ। 110।*** (रकू 1/9)

مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيِّ مِنَ التَّوْرَةِ
وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِي مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ
أَحْمَدٌ فَلَمَّا جَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ قَالُوا
هَذَا سِحْرٌ مُّبِينٌ ۝

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ
الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعَى إِلَى الْإِسْلَامِ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

يُرِيدُونَ لِيُطْفِئُوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَاهِهِمْ
وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝

هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَى وَدِينِ
الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ
الْمُشْرِكُونَ ۝

* इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अहमद रूपी महिमा (अर्थात् सौम्य रूप) के प्रकट होने की भविष्यवाणी की गई है। आप सल्ल. मुहम्मद के रूप में भी प्रकट हुए जिसकी भविष्यवाणी हज़रत मूसा अलै. ने की और अहमद के रूप में भी प्रकट हुए जिसकी भविष्यवाणी हज़रत ईसा अलै. ने की।

** हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं :- “इस आयत में स्पष्ट रूप से समझाया गया है कि मसीह मौऊद चौदहवीं शताब्दी में पैदा होगा। क्योंकि नूर की पराकाष्ठा के लिए चौदहवीं रात्रि निश्चित है।” (तोहफ़ा गोलड्विया रुहानी खज़ाइन, जिल्द 17, पृष्ठ 124।)

*** इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सार्वभौम नबी होने का स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है। अर्थात् आप सल्ल. किसी एक धर्म विशेष के मानने वालों की ओर नहीं →

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! क्या मैं तुम्हें एक ऐसे व्यापार की जानकारी दूँ जो तुम्हें एक पीड़ाजनक अज़ाब से मुक्ति देगा ? 111।

तुम (जो) अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाते हो और अल्लाह के मार्ग में अपने धन और अपनी जानों के साथ जिहाद करते हो, यदि तुम ज्ञान रखते तो यह तुम्हारे लिए बहुत उत्तम है 112।*

वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट कर देगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । और ऐसे पवित्र घरों में भी (प्रविष्ट कर देगा) जो चिरस्थायी स्वर्गों में हैं । यह बहुत बड़ी सफलता है 113।

एक दूसरा (शुभ समाचार भी) जिसे तुम बहुत चाहते हो, अल्लाह की ओर से सहायता और निकटस्थ विजय है । अतः तू मोमिनों को शुभ-समाचार दे दे 114।
हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह के सहायक बन जाओ जैसा कि मरियम के पुत्र ईसा ने हवारियों से कहा था (कि) कौन हैं जो अल्लाह की ओर मार्गदर्शन करने में मेरे सहायक हैं ?

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَى
تِجَارَةٍ تُنْجِيكُمْ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ⑩

تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَتُجَاهِدُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ
ذِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑪

يَغْفِرَ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ وَمَسْكِنٍ
طَيِّبَةٍ فِي جَنَّاتٍ عَدَبٍ ⑫ ذَلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ⑬

وَأُخْرَى تُحِبُّونَهَا ⑭ نَصْرٌ مِنَ اللَّهِ وَفَتْحٌ
قَرِيبٌ ⑮ وَبَشِيرٌ الْمُؤْمِنِينَ ⑯

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُونُوا أَنْصَارَ اللَّهِ كَمَا
قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيِّينَ مَنْ
أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ⑰ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ

←आये बल्कि समस्त जगत में प्रकट होने वाले प्रत्येक धर्म के अनुयायियों की ओर आये हैं और उन पर प्रभुत्व पाएँगे ।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़मति हैं :-

“यह कुरआन शरीफ़ में एक महान भविष्यवाणी है जिसके बारे में अन्वेषी विद्वान एकमत हैं कि यह मसीह मौऊद के द्वारा पूरी होगी ।” (तिरयाकुल कुलूब, रूहानी ख़ज़ाइन जिल्द 15, पृष्ठ 232)

* इस प्रकार का अनुवाद “इस्ला मा मन्न बिहिर्मान” के अनुसार किया गया है ।

हवारियों ने कहा, हम अल्लाह के सहायक हैं। अतः बनी इस्राईल में से एक समुदाय ईमान ले आया और एक समुदाय ने इनकार कर दिया। फिर हमने उन लोगों की जो ईमान लाए उनके शत्रुओं के विरुद्ध सहायता की तो वे विजयी हो गये ॥5॥ (रुकू 2/10)

نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ فَأَمَنْتُ طَائِفَةٌ مِّنْ
بَنِي إِسْرَءِيلَ وَكَفَرَتْ طَائِفَةٌ
فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ آمَنُوا عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ
فَأَصْبَحُوا ظَاهِرِينَ ۝

62- सूरः अल-जुमुअः

यह सूरः मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं ।

यह पिछली सूरः में उल्लेखित समस्त भविष्यवाणियों का संग्रह है । इसमें **जमअ** (एकत्रिकरण) के सभी अर्थ वर्णन कर दिये गये हैं । अर्थात् हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अंत्ययुगीन मुसलमानों को आरंभिक युगीन मुसलमानों के साथ एकत्रित करने का कारण बनेंगे और अपने प्रताप और सौम्य गुणों की चमकार को भी एकत्रित करेंगे । जुम्अः के दिन जो मुसलमानों को हर सप्ताह इकट्ठा किया जाता है, उसका भी इसी सूरः में वर्णन है ।

इस सूरः के अन्त पर यह भविष्यवाणी भी कर दी गई कि बाद के आने वाले मुसलमान धन कमाने और व्यापार में व्यस्त हो कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अकेला छोड़ देंगे । इस आयत के बारे में कुछ विद्वानों का यह कहना है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में ऐसा हुआ करता था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अत्यन्त निष्ठावान सहाबा रज़ि. जिन्होंने कभी हज़रत मुहम्मद सल्ल. को भयानक युद्धों में भी अकेला नहीं छोड़ा, जब व्यापारी दलों के आने की खबरें सुना करते थे तो आपको छोड़ कर उनकी ओर भाग जाया करते थे, ऐसा कहना वास्तव में हज़रत मुहम्मद सल्ल. के सहाबा पर एक लांछन है । निश्चित रूप से इसमें अंत्ययुग के मुसलमानों का वर्णन है जो अपने आचरण से अपने धर्म से बे-परवा हो चुके होंगे और हज़रत मुहम्मद सल्ल. के संदेश से कोई सरोकार नहीं रखेंगे ।



سُورَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और)

बार-बार दया करने वाला है ।।।

जो अकाशों में है और जो धरती में है अल्लाह ही का गुणगान करता है । वह सम्राट है, पवित्र है, पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।2।

वही है जिसने निरक्षर लोगों में उन्हीं में से एक महान रसूल भेजा जो उन पर उसकी आयतों का पाठ करता है और उन्हें पवित्र करता है । और उन्हें पुस्तक की और विवेकशीलता की शिक्षा देता है जबकि इससे पूर्व वे निश्चितरूप से खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े थे ।3।*

और उन्हीं में से दूसरों की ओर भी (उसे भेजा है) जो अभी उनसे नहीं मिले । वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।4।*

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَسْبَحُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ

الْمَلِكِ الْقُدُّوسِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ①

هُوَ الَّذِي بَعَثَ فِي الْأُمِّيِّينَ رَسُولًا مِنْهُمْ

يَتْلُو عَلَيْهِمْ آيَاتِهِ وَيُزَكِّيهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ

الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَإِنْ كَانُوا مِنْ قَبْلُ

لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ①

وَأَخْرَجَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوا بِهِمْ وَهُوَ

الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ①

* इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिस विशेष महिमा का उल्लेख किया गया है, वह यह है कि आप सल्ल. अपने ऊपर ईमान लाने वालों के सम्मुख कुरआनी आयतों के पाठ करने के साथ ही उन लोगों को पुस्तक का ज्ञान तथा विवेकशीलता सिखाने से पूर्व ही उनका शुद्धिकरण करते थे । कुरआन करीम का यह बड़ा चमत्कार है कि इससे पूर्व सूर: अल् बक्रर: आयत 130 में हज़रत इब्राहीम अलै. की वह दुआ वर्णित है जो हज़रत मुहम्मद सल्ल. के आगमन से सम्बन्ध रखती है । उन्होंने ऐसे रसूल को भेजने की दुआ मांगी है जो अल्लाह की आयतें लोगों को पढ़ कर सुनाए, फिर उनको ज्ञान एवं विवेकशीलता की जानकारी दे और इस प्रकार उनका शुद्धिकरण करे । इस दुआ के स्वीकार किये जाने का तीन स्थान पर उल्लेख है परन्तु तीनों स्थल पर यही वर्णन है कि हज़रत मुहम्मद सल्ल. कुरआनी आयतों का पाठ करने के साथ ही उनका शुद्धिकरण किया करते थे । फिर पुस्तक और विवेकशीलता के सिखाने का वर्णन है । अतः यह कुरआन करीम का विशेष चमत्कार है जो तेईस वर्ष में अवतरित हुआ परन्तु उसकी आयतों में एक स्थान पर भी परस्पर कोई मतभेद नहीं पाया जाता ।

** इस आयत में जिन आखरीन (अंत्ययुगीनों) का वर्णन किया गया है उनमें उसी रसूल के→

यह अल्लाह की कृपा है वह उसको जिसे चाहता है प्रदान करता है और अल्लाह बड़ा कृपालु है 15।*

वे लोग जिन पर तौरात का उत्तरदायित्व डाला गया, फिर उन्होंने उसे उठाए न रखा (जैसा कि उसके उठाने का हक्क था) उनका उदाहरण उस गधे के सदृश है जो पुस्तकों का बोझ उठाता है। क्या ही बुरा है उन लोगों का उदाहरण जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया। और अल्लाह अत्याचारी लोगों को हिदायत नहीं देता 16।

ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَّشَاءُ ۖ وَاللَّهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ۝

مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَةَ ثُمَّ
لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ
أَسْفَارًا ۖ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ
كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ ۖ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۝

← आगमन का उल्लेख है जिसका पिछली आयत वही है जिसने निरक्षरों में एक रसूल भेजा मैं वर्णन है। परन्तु इस आयत के अन्त पर अल्लाह के वे चार गुणवाचक नामों का वर्णन नहीं किया गया जो आयत सं. 2 के अन्त पर वर्णित हैं, बल्कि केवल “अज़ीज़” (पूर्ण प्रभुत्व वाला) और हकीम (परम विवेकशील) दो गुणवाचक नामों की पुनरावृत्ति की गई है। जिससे ज्ञात होता है कि जिस रसूल का आरम्भ मैं वर्णन है वह दोबारा स्वयं नहीं आएगा। बल्कि उसके किसी प्रतिरूप को भेजा जाएगा जो शरीअत वाला नबी नहीं होगा। दिलचस्प विषय यह है कि हज़रत ईसा अलै. के सम्बन्ध में भी अल्लाह के यही दो गुणवाचक नाम वर्णन हुए हैं जैसा कि फ़र्माया: बल्कि अल्लाह ने अपनी ओर उसका उत्थान किया और निःसन्देह अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है। (अन निसा आयत 159)

* इस आयत से सिद्ध होता है कि यह बात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रथम आगमन से सम्बन्धित नहीं है। अन्यथा वह जिसे चाहता है उसको प्रदान करता है कहने की आवश्यकता नहीं थी। बल्कि इससे अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का द्वितीय आगमन है जो आप सल्ल. की दासता को स्वीकार करते हुए प्रकट होने वाले एक उम्मीती नबी के रूप में होगा। यह सम्मान एक कृपा स्वरूप है अल्लाह जिसे चाहेगा उसे यह प्रदान कर देगा। वह बड़ा कृपालु और उपकार करने वाला है। इस अर्थ का समर्थन ‘सही बुखारी’ की इस हदीस से भी होता है कि इस आयत के पाठ करने पर सहाबा रज़ि. ने प्रश्न किया कि हे अल्लाह के रसूल! वे कौन होंगे? यह नहीं पूछा कि वह कौन उतरेगा? बल्कि यह पूछा कि वह किन लोगों की ओर भेजा जाएगा। इस पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि. के कंधे पर हाथ रख कर फ़र्माया कि यदि ईमान सुरख्या (सितारे) पर भी चला जाएगा तो इन लोगों में से एक पुरुष अथवा कुछ पुरुष होंगे जो उसे सुरख्या से वापस धरती पर ले आएँगे। इससे स्पष्ट रूप से प्रमाणित हो जाता है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं दोबारा नहीं आएँगे बल्कि आप सल्ल. का एक सेवक अवतरित होगा जो फ़ारसी मूल का व्यक्ति अर्थात् अरब वासियों से भिन्न होगा।

तू कह दे कि हे लोगो जो यहूदी बने हो !
यदि तुम यह विचार करते हो कि सब
लोगों को छोड़ कर एक तुम ही अल्लाह
के मित्र हो, यदि तुम सच्चे हो तो मृत्यु
की इच्छा करो । 7।

और वे उस कारण कदापि उसकी इच्छा
नहीं करेंगे जो उनके हाथों ने आगे भेजा
है । और अल्लाह अत्याचारियों को खूब
जानता है । 8।

तू कह दे कि निःसन्देह वह मृत्यु जिससे
तुम भाग रहे हो वह तुम्हें अवश्य आ
पकड़ेगी । फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष
का स्थायी ज्ञान रखने वाले (अल्लाह) की
ओर लौटाए जाओगे । फिर वह तुम्हें
(उस की) सूचना देगा जो तुम किया
करते थे । 9। (रुकू 1/11)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! जब
जुमअ: के दिन के एक भाग में नमाज़ के
लिए बुलाया जाए तो अल्लाह के स्मरण
की ओर शीघ्रता पूर्वक आया करो और
व्यापार को छोड़ दिया करो । यदि तुम
ज्ञान रखते हो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम
है । 10।

फिर जब नमाज़ अदा की जा चुकी हो
तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह
की कृपा को ढूँढो । और अल्लाह को
बहुत याद करो ताकि तुम सफल हो
जाओ । 11।

और जब वे कोई व्यापार अथवा मन
बहलावे (की बात) देखेंगे तो उसकी

قُلْ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ هَادُوا إِنْ زَعَمْتُمْ
أَنَّكُمْ أَوْلِيَاءُ لِلَّهِ مِنْ دُونِ النَّاسِ
فَتَمْنُوا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ٧

وَلَا يَتَمَنَّوْنَ أَبَدًا بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ
وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِالظَّالِمِينَ ٨

قُلْ إِنْ الْمَوْتَ الَّذِي تَفِرُّونَ مِنْهُ فَإِنَّهُ
مُلَقِيكُمْ ثُمَّ تُرَدُّونَ إِلَىٰ عِلْمِ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ٩

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا نُودِيَ لِلصَّلَاةِ
مِنْ يَوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلَىٰ ذِكْرِ اللَّهِ
وَذَرُوا الْبَيْعَ ۚ ذِكُّكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُونَ ١٠

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلَاةُ فَانْتَشِرُوا فِي
الْأَرْضِ وَابْتَغُوا مِنْ فَضْلِ اللَّهِ
وَاذْكُرُوا اللَّهَ كَثِيرًا لَّعَلَّكُمْ
تُفْلِحُونَ ١١

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوًا انفَضُّوا إِلَيْهَا

ओर दौड़ पड़ेंगे और तुझे अकेला खड़ा
हुआ छोड़ देंगे । तू कह दे कि जो
अल्लाह के पास है वह मन बहलावे
और व्यापार से अत्युत्तम है । और
अल्लाह जीविका प्रदान करने वालों में
सर्वोत्तम है ॥2॥ (रुकू 2/12)

وَتَرْكُوكَ قَائِمًا قُلْ مَا عِنْدَ اللَّهِ خَيْرٌ
مِّنَ اللَّهِوَمِنَ التِّجَارَةِ وَاللَّهُ خَيْرُ
الرَّزَاقِينَ

63- सूर: अल-मुनाफ़िकून

यह सूर: मदीना में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं ।

इसका आरम्भ ही इस बात से किया गया है कि जिस प्रकार इस युग में कुछ मुनाफ़िक़ क़समें खाते हैं कि तू अवश्य अल्लाह का रसूल है जबकि अल्लाह भली प्रकार जानता है कि वास्तव में तू अल्लाह का रसूल है परन्तु अल्लाह यह भी गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ झूठे हैं । इसी प्रकार अन्त्य युगीनों के समय मुसलमानों की बड़ी संख्या की यही अवस्था हो चुकी होगी । वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अपने ईमान को प्रकट करने में क़समें तो खाएँगे परन्तु अल्लाह तआला इस बात पर गवाह होगा कि वे केवल मुँह की क़समें खाते हैं और ईमान की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरे नहीं करते ।

इसी सूर: में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में उत्पन्न होने वाले मुनाफ़िक़ों के नेता अर्थात् अब्दुल्लाह बिन उबै बिन सुलूल का उल्लेख हुआ है कि किस प्रकार उसने एक युद्ध से वापसी पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का स्पष्ट रूप से अत्यन्त तिरस्कार किया था । यहाँ तक कि अपने बारे में मदीना-वासियों में सबसे अधिक सम्माननीय होने का दावा किया और इसके विपरीत हज़रत मुहम्मद सल्ल. के बारे में अपमान जनक शब्द बोलते हुए यह दावा किया कि मदीना जाने पर वह हज़रत मुहम्मद सल्ल. को मदीना से निकाल देगा । अल्लाह के विधान ने जो कुछ दिखाया वह इसके बिल्कुल विपरीत था । हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने क्षमा का महान आदर्श प्रदर्शित करते हुए सामर्थ्य रखते हुए भी उसको मदीने से बाहर नहीं निकाला और उसके अन्तिम श्वास तक उसके लिए अल्लाह से क्षमायाचना करते रहे, यहाँ तक कि अन्ततः अल्लाह तआला ने आदेश देकर मना कर दिया कि भविष्य में कभी उसकी क़ब्र पर खड़े होकर उसके लिए क्षमा की दुआ न किया करें ।



سُورَةُ الْمُنَافِقُونَ مَدْيَنَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ॥१॥

जब मुनाफ़िक़ तेरे पास आते हैं तो कहते हैं, हम गवाही देते हैं कि तू अवश्य अल्लाह का रसूल है। जबकि अल्लाह जानता है कि तू निःसन्देह उसका रसूल है। फिर भी अल्लाह गवाही देता है कि मुनाफ़िक़ अवश्य झूठे हैं ॥१२॥*

उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है। अतः वे अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं। जो वे कर्म करते हैं निश्चित रूप से बहुत बुरा है ॥१३॥

यह इस कारण है कि वे ईमान लाए फिर इनकार कर दिया तो उनके दिलों पर मुहर कर दी गई। अतः वे समझ नहीं रहे ॥१४॥

और जब तू उन्हें देखता है तो उनके शरीर तेरा दिल लुभाते हैं और यदि वे कुछ बोलें तो तू उनकी बात सुनता है। वे ऐसे हैं जैसे एक दूसरे के सहारे चुनी हुई सूखी लकड़ियाँ। वे बिजली की हर कड़क को अपने ही ऊपर (कड़कता हुआ) समझते हैं। वही शत्रु हैं, अतः

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِذَا جَاءَكَ الْمُنَافِقُونَ قَالُوا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُولُ اللَّهِ وَاللَّهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُولُهُ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِينَ كَذِبُونَ ②

اتَّخَذُوا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ إِنَّهُمْ سَاءَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ③

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا فَطُبِعَ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُونَ ④

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ وَإِنْ يَقُولُوا تَسْمَعُ لِقَوْلِهِمْ كَانَتْهُمْ حُشْبٌ مِّنْ سَنَدَةٍ ⑤ يَحْسَبُونَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرهُمْ ⑥

* कुछ लोग मुंह से सच्चाई स्वीकार करते हैं जो वास्तव में ठीक होती है परन्तु इसके बावजूद उनके दिल में इनकार होता है इसलिये अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सूचित कर दिया कि वे बात सच्ची कर रहे हैं परन्तु उनका दिल झुठला रहा है।

उन (के अनिष्ट) से बच । उन पर अल्लाह की ला'नत हो । वे किधर उल्टे फिराए जाते हैं । 5।

और जब उन्हें कहा जाता है कि आओ ! अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए क्षमा याचना करे, वे अपने सिर मोड़ लेते हैं । और तू उन्हें देखता है कि वे अहंकार करते हुए (सच्चाई को स्वीकार करने) से रुक जाते हैं । 6।

चाहे तू उनके लिए क्षमा याचना करे अथवा उनके लिए क्षमा याचना न करे उन के लिए बराबर है । अल्लाह उन्हें कदापि क्षमा नहीं करेगा । निःसन्देह अल्लाह दुराचारी लोगों को हिदायत नहीं देता । 7।

यही वे लोग हैं जो कहते हैं कि जो लोग अल्लाह के रसूल के निकट रहते हैं उन पर खर्च न करो, यहाँ तक कि वे भाग जाएँ । हालाँकि आकाशों और धरती के खज़ाने अल्लाह ही के हैं, परन्तु मुनाफ़िक़ समझते नहीं । 8।

वे कहते हैं यदि हम मदीना की ओर लौटेंगे तो अवश्य वह जो सबसे अधिक सम्माननीय है उस को जो सबसे अधिक नीच है, उसमें से निकाल बाहर करेगा । हालाँकि सम्मान सब का सब अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों का है, परन्तु मुनाफ़िक़ लोग जानते नहीं । 9। (रुकू 1/3)

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! तुम्हें तुम्हारी धन-सम्पत्ति और तुम्हारी

قَتَلَهُمُ اللَّهُ ۖ أَنَّى يُؤْفَكُونَ ۝

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُولُ اللَّهِ لَوَّوْا رُءُوسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّونَ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۝

سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۚ لَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ ۝

هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنْفِقُوا عَلَى مَنْ عِنْدَ رَسُولِ اللَّهِ حَتَّى يَنْفَضُوا ۚ وَاللَّهُ خَزَائِنُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَفْقَهُونَ ۝

يَقُولُونَ لَيْسَ رَجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لِيُخْرِجَنَا الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلُّ ۚ وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَلَكِنَّ الْمُنَافِقِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ

संतान अल्लाह के स्मरण से विस्मृत न कर दें। और जो ऐसा करें तो यही हैं जो हानि उठाने वाले हैं 110।

और उसमें से खर्च करो जो हमने तुम्हें दिया है इससे पूर्व कि तुम में से किसी पर मृत्यु आ जाए तो वह कहे, हे मेरे रब्ब ! काश तूने मुझे थोड़े समय तक ढील दी होती तो मैं अवश्य दान देता और नेक कर्म करने वालों में से बन जाता 111।

और अल्लाह किसी जान को जब उसका निश्चित समय आ पहुँचा हो कदापि ढील नहीं देगा। और अल्लाह उससे जो तुम करते हो सदा अवगत रहता है 112।

(रकू 2/14)

وَلَا أُولَٰئِكَ عَنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۚ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَٰلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ ۝

وَأَنْفِقُوا مِنْ مَّا رَزَقْنَاكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُولَ رَبِّ لَوْلَا أَخَّرْتَنِي إِلَىٰ أَجَلٍ قَرِيبٍ ۚ فَأَصَّدَّقَ وَأَكُنْ مِنَ الصَّالِحِينَ ۝

وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا ۚ وَاللَّهُ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝

ع

64- सूरः अत-तगाबुन

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 19 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ भी सूरः अल् जुमुअः की भाँति अरबी वाक्य **युसब्बिहू लिल्लाहि मा फ़िस्मावाति व मा फ़िल अज़ि** (आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का गुणगान कर रहा है) से होता है । इस सूरः में भी अल्लाह तआला के गुणगान उल्लेख करते हुए यह वर्णन किया गया है कि धरती व आकाश और जो कुछ उनमें है, अल्लाह का गुणगान कर रहा है । जैसा कि सब गुणगान करने वालों से बढ़ कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह तआला का गुणगान किया । अतः कैसे संभव है कि उस **महान गुणगायक** का कोई अपमान करे और अल्लाह उस व्यक्ति को अपने क्रोध का निशाना न बनाए ।

सूरः अल् जुमुअः में अंत्ययुग में जिस एकत्रिकरण का वर्णन है उसके बारे में यह भविष्यवाणी कर दी गई कि वह **तगाबुन** अर्थात् खरे-खोटे के बीच प्रभेद कर देने वाला दिन होगा ।

उस समय जो कि धर्म की सहायता के लिए अधिकता पूर्वक अर्थदान का समय होगा, उन सभी अर्थदान करने वालों को यह शुभ-समाचार दिया गया है कि जो कुछ भी वे निष्ठापूर्वक अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करेंगे उसको अल्लाह तआला स्वीकार करते हुए उसका बहुत बड़ा प्रतिफल प्रदान करेगा ।



سُورَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تِسْعَ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

आकाशों और धरती में जो कुछ है अल्लाह ही का गुणगान कर रहा है । उसी का साम्राज्य है और उसी की सब स्तुति है । और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।।।

वही है जिसने तुम्हें पैदा किया । अतः तुम में से काफिर भी हैं और मोमिन भी । और जो तुम करते हो । उस पर अल्लाह गहन दृष्टि रखने वाला है ।।।

उसने आकाशों और धरती को सत्य के साथ पैदा किया । और तुम्हारी आकृति बनाई और तुम्हारे रूप बहुत सुन्दर बनाए और उसी की ओर लौट कर जाना है ।।।

वह जानता है जो आकाशों और धरती में है । और (उसे भी) जानता है जो तुम छिपाते हो और जो तुम प्रकट करते हो । और अल्लाह सीनों की बातों को सदैव जानता है ।।।

क्या तुम तक उन लोगों की सूचना नहीं पहुँची जिन्होंने पहले इन्कार किया था । अतः उन्होंने अपने निर्णय का दुष्परिणाम भोग लिया । और उनके लिए बहुत पीड़ाजनक अज़ाब (निश्चित) है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَسْبِغُ لِلَّهِ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ
لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۚ وَهُوَ عَلَى كُلِّ
شَيْءٍ قَدِيرٌ ①

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ
مُّؤْمِنٌ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ②

خَلَقَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ بِالْحَقِّ
وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُورَكُمْ ۗ وَإِلَيْهِ
الْمَصِيرُ ③

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ
مَا تُسْرُونَ وَمَا تُعْلِنُونَ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ
بِدَاتِ الصُّدُورِ ④

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ
قَبْلُ ۚ فَذَاقُوا وَبَالَ أَمْرِهُمْ وَلَهُمْ
عَذَابٌ أَلِيمٌ ⑤

यह इस कारण है कि उनके पास उनके रसूल स्पष्ट चिह्नों के साथ आया करते थे तो वे कहते थे कि क्या हमें मनुष्य हिदायत देंगे ? अतः उन्होंने इनकार किया और मुंह फेर लिया और अल्लाह भी बेपरवा हो गया । और अल्लाह निस्पृह (और) प्रशंसा का अधिकारी है । 17।

वे लोग जिन्होंने इनकार किया धारणा कर बैठे कि वे कदापि उठाए नहीं जाएंगे। तू कह दे, क्यों नहीं । मेरे रब्ब की कसम ! तुम अवश्य उठाए जाओगे । फिर जो तुम करते थे उससे अवश्य सूचित किये जाओगे । और अल्लाह पर यह बहुत आसान है । 18।

अतः अल्लाह पर और उसके रसूल पर और उस नूर पर ईमान ले आओ जो हमने उतारा है । और जो तुम करते हो अल्लाह उससे सदा अवगत रहता है । 19।

जिस दिन वह तुम्हें एकत्रित होने के दिन (उपस्थित करने) के लिए इकट्ठा करेगा। यह वही हार-जीत का दिन है । और जो अल्लाह पर ईमान लाए और नेक कर्म करे वह उससे उसकी बुराइयाँ दूर कर देगा और उसे ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे उनमें सदैव रहेंगे । यह बहुत बड़ी सफलता है । 10।

और वे लोग जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुठला दिया, ये ही आग (में पड़ने) वाले हैं । वे लम्बे समय

ذَلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَأْتِيهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنَاتِ فَقَالُوا أَبَشَرٌ يَهْدُونَنَا
فَكَفَرُوا وَتَوَلَّوْا وَاسْتَغْنَى اللَّهُ وَاللَّهُ
غَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝

زَعَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنْ لَّنْ يُبْعَثُوا قُلْ
بَلَىٰ وَرَبِّي لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا
عَمِلْتُمْ ۚ وَذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ۝

فَأْمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالنُّورِ الَّذِي
أَنْزَلْنَا ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ ۝

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذَلِكَ يَوْمُ
التَّغَابُنِ ۚ وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ
صَالِحًا يُكْفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُدْخِلْهُ
جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ۚ ذَلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ۝

وَالَّذِينَ كَفَرُوا وَكَذَّبُوا بِآيَاتِنَا
أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ خَالِدِينَ فِيهَا ۚ

तक उसमें रहेंगे और (वह) बहुत ही बुरा ठिकाना है ।।।। (रूकू 1/5)

अल्लाह की आज्ञा के बिना कोई विपत्ति नहीं आती । और जो अल्लाह पर ईमान लाए वह उसके दिल को हिदायत प्रदान करता है । और अल्लाह प्रत्येक वस्तु का स्थायी ज्ञान रखता है ।।2।

और अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल का आज्ञापालन करो, फिर यदि तुम मुँह मोड़ लो तो (जान लो कि) हमारे रसूल पर केवल संदेश को स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है ।।3।

अल्लाह (वह है कि उस) के सिवा कोई उपास्य नहीं । अतः चाहिए कि मोमिन अल्लाह ही पर भरोसा करें ।।4।

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! निःसन्देह तुम्हारी पत्नियों में से और तुम्हारी संतान में से कुछ तुम्हारे शत्रु हैं । अतः उनसे बच कर रहो । और यदि तुम माफ़ करो और दरगुज़र करो और क्षमा कर दो तो निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।5।

तुम्हारे धन और तुम्हारी संतान केवल परीक्षा (स्वरूप) हैं । और वह अल्लाह ही है जिसके पास बहुत बड़ा प्रतिफल है ।।6।*

وَبَشِّرِ

وَبَشِّرِ الْمَصِيرُ ۝

مَا أَصَابَ مِنْ مُصِيبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ

وَمَنْ يُؤْمِنْ بِاللَّهِ يَهْدِ اللَّهُ قَلْبَهُ ۖ

وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝

وَاطِيعُوا اللَّهَ وَاطِيعُوا الرَّسُولَ ۚ فَإِنْ

تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلَىٰ رَسُولِنَا الْبَلَاغُ

الْمُبِينُ ۝

اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۖ وَعَلَى اللَّهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

الْمُؤْمِنُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنِّ مِنْ أَرْوَاجِكُمْ

وَأَوْلَادِكُمْ وَعَدُوَّالْكُفِّ فَاحْذَرُوهُمْ ۚ

وَإِنْ تَعَفَّوْا وَتَصَفَّحُوا وَتَغْفِرُوا فَإِنَّ

اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

إِنَّمَا أَمْوَالُكُمُ وَأَوْلَادُكُمُ فِتْنَةٌ ۖ

وَاللَّهُ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۝

* इस आयत में संतान की ओर से जिस विपत्ति का वर्णन है उसका यह अर्थ नहीं कि वे माता-पिता को खुल्लम-खुल्ला विपत्ति में डालेंगे बल्कि अपने परिजनों के द्वारा मनुष्य परीक्षा में डाला जाता है । और जो इस परीक्षा में असफल हो जाए वह विपत्ति में पड़ जाता है ।

जहाँ तक तुम्हें, अल्लाह का तक्रवा धारण करो और सुनो तथा आज्ञापालन करो और खर्च करो (यह) तुम्हारे लिए उत्तम होगा । और जो मन की कृपणता से बचाए जाएँ, तो वे लोग सफल होने वाले हैं ।17।

فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَأَسْمِعُوا
وَأَطِيعُوا وَأَنْفِقُوا خَيْرًا لِأَنْفُسِكُمْ ط
وَمَنْ يُؤْكُ شَحَّ نَفْسِهِ فَأُولَئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُونَ ۝

और यदि तुम अल्लाह को उत्तम ऋण दोगे (तो) वह उसे तुम्हारे लिए बढ़ा देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा । और अल्लाह बड़ा गुणग्राही (और) सहनशील है ।18।

إِنْ تَقْرِضُوا اللَّهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضَعِفْهُ
لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ط وَاللَّهُ شَكُورٌ
حَلِيمٌ ۝

(वह) अदृश्य और दृश्य का स्थायी ज्ञान रखने वाला, पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है ।19। (रुकू 2/16)

عِلْمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝

65- सूरः अत-तलाक़

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 13 आयतें हैं ।

इसका नाम सूरः अत-तलाक़ है और इसमें आरम्भ से लेकर अन्त तक तलाक़ से संबंधित विभिन्न विषयों का वर्णन है ।

पिछली सूरः से इस सूरः का प्रमुख संबंध यह है कि इसमें हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक ऐसे नूर के रूप में प्रस्तुत किया गया है जो अन्धकारों से प्रकाश की ओर निकालता है । यही वह नूर है जो अंत्ययुग में एक बार फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के उन लोगों को अंधेरो से निकालेगा जो सांसारिक अंधकारों में भटकते फिर रहे होंगे । अंधेरो से निकलने के विषयवस्तु में दुराचारपूर्ण जीवन से निकल कर पवित्रता पूर्ण जीवन में प्रविष्ट होने का भावार्थ बहुत महत्व रखता है । अर्थात् आस्था के अन्धकारों से भी वह बाहर निकालेगा और कर्म के अन्धकारों से भी निकालेगा । अतएव सूरः अत-तलाक़ में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में कहा गया कि यह रसूल तो सिर से पाँव तक अल्लाह के स्मरण का प्रतीक है और स्मरण ही के परिणाम स्वरूप नूर प्राप्त होता है । इसी स्मरण के परिणाम स्वरूप ही अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह महत्ता प्रदान की कि आप सल्ल. पूर्ण रूपेण नूर बन गए और अपने सच्चे सेवकों को भी प्रत्येक प्रकार के अन्धकार से प्रकाश की ओर निकाला ।

इस सूरः में एक और ऐसी आयत है जो धरती और आकाश के रहस्यों पर से आश्चर्यजनक रूप से पर्दा उठाती है । जिस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्वयं अंधेरो से निकालने वाले थे, उसी प्रकार आप सल्ल. पर वह वाणी उतारी गई जो ब्रह्मांड के अन्धकारों और रहस्यों पर से पर्दे उठा रही है । जहाँ कुरआन करीम में बार-बार सात आकाशों का उल्लेख है वहाँ यह भी कह दिया गया कि सात आकाशों की भाँति सात धरतियाँ भी सृष्टि की गई हैं । परन्तु अल्लाह ही भली प्रकार जानता है कि किस प्रकार उन धरतियों पर बसने वालों पर वह उतरी और किन किन अंधेरो से उनको मुक्ति प्रदान की गई । अभी तक ब्रह्मांड की खोज करने वाले वैज्ञानिकों को इस विषयवस्तु के आरम्भ तक भी पहुँच प्राप्त नहीं हुई । परन्तु जैसा कि बार-बार प्रमाणित हो चुका है कि कुरआन के ज्ञान एक अक्षय स्रोत की भाँति असीमित हैं और भविष्य के वैज्ञानिक इन विद्याओं की एक सीमा तक अवश्य जानकारी पाएँगे ।



سُورَةُ الطَّلَاقِ مَدِيْنَةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَلَاثَ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

हे नबी ! जब तुम (लोग) अपनी पत्नियों को तलाक़ दिया करो तो उनको उनकी (तलाक़ की) इदत के अनुसार दो और इदत की गणना रखो और अल्लाह, अपने रब्ब से डरो । उन्हें उनके घरों से न निकालो और न वे स्वयं निकलें सिवाए इसके कि वे खुली-खुली अश्लीलता में पड़ जायँ । और यह अल्लाह की सीमाएँ हैं । और जो भी अल्लाह की सीमाओं का उल्लंघन करे तो निःसन्देह उसने अपनी जान पर अत्याचार किया । तू नहीं जानता कि संभवतः इसके बाद अल्लाह कोई (नया) निर्णय प्रकट कर दे ।।२।

अतः जब वे अपनी निर्धारित अवधि को पहुँच जाएँ तो उन्हें समुचित ढंग से रोक लो अथवा उन्हें समुचित ढंग से अलग कर दो । और अपने में से दो न्याय-परायण (व्यक्तियों) को साक्षी ठहरा लो और अल्लाह के लिए साक्ष्य स्थिर करो । यह वह विषय है जिसका प्रत्येक उस व्यक्ति को उपदेश दिया जाता है जो अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाता है । और जो अल्लाह से डरे उसके लिए वह मुक्ति का कोई मार्ग बना देता है ।।३।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاءَ
فَطَلَّقُوهُنَّ لِعَدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ
وَاتَّقُوا اللَّهَ رَبَّكُمْ لَا تُخْرِجُوهُنَّ مِنْ
بُيُوتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَنَّ
بِفَاحِشَةٍ مُّبَيَّنَةٍ ۚ وَتِلْكَ حُدُودُ اللَّهِ
وَمَنْ يَتَعَدَّ حُدُودَ اللَّهِ فَقَدْ ظَلَمَ
نَفْسَهُ لَا تَدْرِي لَعَلَّ اللَّهَ يُحْدِثُ
بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا ②

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ
بِمَعْرُوفٍ أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ
وَأَشْهِدُوا ذَوَى عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَأَقِيمُوا
الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ۚ ذَٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَنْ كَانَ
يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ
اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ③

और वह (अल्लाह) उसे वहाँ से जीविका प्रदान करता है जहाँ से वह सोच भी नहीं सकता । और जो अल्लाह पर भरोसा करे तो वह उसके लिए पर्याप्त है। निःसन्देह अल्लाह अपने निर्णय को पूरा करके रहता है । अल्लाह ने हर चीज़ की एक योजना बना रखी है ।4।

और तुम्हारी स्त्रियों में से जो मासिक धर्म से निराश हो चुकी हों यदि तुम्हें शंका हो तो उनकी इदत तीन महीने है और उनकी भी जो रजवती नहीं हुई । और जहाँ तक गर्भवतियों का संबंध है उनकी इदत प्रसव समय तक है । और जो अल्लाह का तक्रवा धारण करे अल्लाह अपने आदेश से उसके लिए सरलता पैदा कर देगा ।5।

यह अल्लाह का आदेश है जो उसने तुम्हारी ओर उतारा । और जो अल्लाह से डरता है वह उससे उसकी बुराइयाँ दूर कर देता है । और उसके प्रतिफल को बहुत बढ़ा देता है ।6।

उनको (वहीं) रखो जहाँ तुम (स्वयं) अपने सामर्थ्य के अनुसार रहते हो । और उन्हें कष्ट न पहुँचाओ ताकि उन पर जीवन-निर्वाह कठिन कर दो । और यदि वे गर्भवती हों तो उन पर खर्च करते रहो जब तक कि वे अपने प्रसव से मुक्त न हो जाएँ । फिर यदि वे तुम्हारे लिए (तुम्हारी संतान को) दूध पिलाएँ तो उनका पारिश्रमिक उन्हें दो । और अपने बीच न्यायोचित ढंग से सहमति का

وَيَرْزُقُهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ④

وَالَّذِي يَسْنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِنْ نِسَائِكُمْ إِنْ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ ۚ وَالَّذِي لَمْ يَحْضَنْ ۚ وَأُولَاتِ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ⑤

ذَلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنْزَلَهُ إِلَيْكُمْ ۚ وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَكْفُرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ⑥

أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِنْ وَجْدِكُمْ وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتٍ حَمْلٍ فَأَنْفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَانْفِقُوا ۚ فَإِنْ أَجُورَهُنَّ

वातावरण उत्पन्न करो । और यदि तुम (समझौता करने में) एक दूसरे से परेशानी अनुभव करो तो उस (शिशु को पिता) की ओर से कोई अन्य (दूध पिलाने वाली) दूध पिलाए । 7।

चाहिए कि धनवान अपने सामर्थ्य के अनुसार खर्च करे और जिस की जीविका कम कर दी गई हो तो जो भी अल्लाह ने उसे दिया है वह उसमें से खर्च करे । अल्लाह कदापि किसी जान को उससे बढ़ कर जो उसने उसे दिया हो । कष्ट नहीं देता अल्लाह हर तंगी के पश्चात एक आसानी अवश्य पैदा कर देता है । 8। (रकू 17)

और कितनी ही ऐसी बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने रब्ब के आदेश की और उसके रसूलों की भी अवज्ञा की तो हमने उनसे एक बहुत कड़ा हिसाब लिया और उन्हें बहुत कष्टदायक अज़ाब दिया । 9।

अतः उन्होंने अपने निर्णय का दुष्परिणाम भोग लिया और उनके कर्मों का परिणाम घाटा उठाना था । 10।

अल्लाह ने उनके लिए अत्यन्त कठोर अज़ाब तैयार कर रखा है । अतः अल्लाह का तक्रवा धारण करो । हे बुद्धिमानो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह ने तुम्हारी ओर एक महान अनुस्मारक अवतरित किया है । 11।

एक रसूल के रूप में, जो तुम पर अल्लाह की स्पष्ट कर देने वाली आयतें पाठ करता है ताकि उन लोगों को जो ईमान

وَأْتِمِرُوا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوفٍ ۚ وَإِنْ تَعَاَسَرْتُمْ فَمَرْغَبُ لَكُمْ أُخْرَىٰ ۖ

لِيُنْفِقَ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ ۖ وَمَنْ قَدِرَ عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنْفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۝

ع 17

وَكَايْنٍ مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا وَرُسُلِهِ ۚ فَحَاسِبْنَاهَا حِسَابًا شَدِيدًا ۖ وَعَذَّبْنَاهَا عَذَابًا تُنْكِرًا ۝

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا خُسْرًا ۝

أَعَدَّ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيدًا ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ يَا أُولِي الْأَلْبَابِ ۖ الَّذِينَ آمَنُوا ۚ قَدْ أَنزَلَ اللَّهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا ۝

مَنْ آمَنَ

رَسُولًا يَتَتَّبِعُوا عَلَيْهِمْ آيَاتِ اللَّهِ فَهُمْ لِيُخْرِجَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ

लाए और नेक कर्म किए, अंधकारों से प्रकाश की ओर निकाले । और जो अल्लाह पर ईमान लाए और नेक कर्म करे वह उसे ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करेगा जिनके दामन में नहरें बहती हैं । वे उनमें सदैव निवास करने वाले हैं । उसके लिए (जो नेक कर्म करता है) अल्लाह ने निःसन्देह बहुत अच्छी जीविका बनाई है । 121*

अल्लाह वह है जिसने सात आकाश पैदा किए और उन के अनुरूप धरती भी (पैदा की) । (उसका) आदेश उन के बीच अधिकता पूर्वक उतरता है । ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ पर, जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है । और अल्लाह ज्ञान की दृष्टि से हर चीज़ को घेरे हुए है । 13। (सूकू 2/8)

مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَمَنْ يُؤْمِنْ
بِاللَّهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُدْخِلْهُ جَنَّاتٍ
تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا
أَبَدًا قَدْ أَحْسَنَ اللَّهُ لَهُ رِزْقًا ١٢١

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَوَاتٍ وَمِنَ
الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۖ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ
لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ
وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ١٢٢

* आयत सं. 11, 12 : इन आयतों से निश्चित रूप से यह प्रमाणित होता है कि अरबी शब्द **नुज़ूल** से यह अभिप्राय नहीं कि कोई भौतिक शरीर के साथ आकाश से उतरता है । **नुज़ूल** का अर्थ अल्लाह ताअला की ओर से उत्कृष्ट नेमत का प्रदान होना है । इस प्रकार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को साक्षात अल्लाह का स्मरण और रसूल कह कर आप सल्ल. की श्रेष्ठता दूसरे सब नबियों पर सिद्ध कर दी गई है ।

66- सूरः अत-तहरीम

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 13 आयतें हैं ।

पिछली सूरः में ब्रह्माण्ड के जिन महत्वपूर्ण रहस्यों का वर्णन है कि वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतरने वाली पुस्तक में खोले गए हैं । अब इस सूरः में कुछ छोटे-छोटे रहस्यों का भी उल्लेख है । इस प्रकार बड़े-बड़े रहस्य भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सर्वज्ञ अल्लाह की ओर से खोले गए और छोटे-छोटे रहस्य भी उस सर्वज्ञ की ओर से आप सल्ल. पर खोले गए । अतः इन अर्थों में इस सूरः का पिछली सूरः से यह सम्बन्ध स्थापित होता है कि **यह अद्भुत पुस्तक है कि छोटे से छोटे रहस्य को भी और बड़े से बड़े रहस्य को भी अपने अन्दर समोए हुए है ।** यही आयतांश सूरः अल-कहफ़ आयत 50 में वर्णित है ।

इस सूरः में विशुद्ध प्रायश्चित्त का विषय वर्णन कर के हज़रत मुहम्मद सल्ल. के सेवकों को यह आदेश दिया गया है कि यदि वे सच्चे मन से प्रायश्चित्त करेंगे तो अल्लाह तआला इस बात पर समर्थ है कि उनके सभी छोटे और बड़े पापों को क्षमा कर दे । इस प्रायश्चित्त के स्वीकृत होने का यह चिह्न बताया गया है कि ऐसे प्रायश्चित्त करने वालों के सुधार का आरम्भ हो जाएगा और दिन प्रति दिन वे पाप छोड़ने का सामर्थ्य प्राप्त करेंगे और उनकी सभी बुराइयाँ अल्लाह तआला उनसे दूर कर देगा । यह बुराइयों को दूर करने का समय वास्तव में उस नूर के कारण प्राप्त होगा जो उन्हें प्रदान किया जाएगा । जैसे अन्धकार में चलने वाला प्रकाश से ज्ञात कर लेता है कि क्या-क्या ख़तरे आने वाले हैं । अतः (आयत :9) **उनका नूर उनके आगे आगे तेज़ी से चलेगा** से यह अभिप्राय है कि वह अल्लाह उनका मार्ग दर्शन करता चला जाएगा । इसी प्रकार इस आयत के शब्द **(वह नूर) उनके दाहिनी ओर भी चलेगा** से यह संकेत प्रतीत होता है कि बुराई करने वाले लोगों को कोई नूर प्रदान नहीं किया जाता जो बायीं हाथ वाले लोग कहलाते हैं । केवल उन्हीं को नूर प्राप्त होता है जो सदा हर बुराई के मुक़ाबले पर नेकी को प्राथमिकता देते हैं और यही लोग हैं जिनको नेकी पर स्थिर रहने के लिए वह नूर मिलेगा जो उन्हें दृढ़ता प्रदान करेगा ।

इस सूरः के अंत में उन दो अभागिन स्त्रियों का दृष्टान्त उल्लेख किया गया है जो नबियों के परिवार में शामिल होने के बावजूद कर्मतः अपनी उत्तरदायित्व निभाने में सदाचारिणी न थीं । फिर उन दोनों के विपरीत दो अत्यन्त पुण्यवती स्त्रियों का भी उल्लेख है । उनमें से एक बड़े अत्याचारी और अल्लाह के घोर शत्रु की पत्नी थी । फिर भी उसने अपने ईमान की सुरक्षा की । और दूसरी स्त्री हज़रत मरियम अलैहा. का वर्णन

है जिनको अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह अलै. के रूप में एक चमत्कारी पुत्र प्रदान किया। यह पुत्र-लाभ किसी निजी कामना के कारण नहीं हुआ था। फिर अन्तिम आयत में वर्णन किया गया कि अल्लाह तआला मुहम्मदी उम्मत में पैदा होने वाले एक सच्चे और पवित्र व्यक्ति को भी यही चमत्कार दिखाएगा कि उसको आध्यात्मिक रूप से उच्च पद प्राप्त करने की कोई लालसा नहीं होगी बल्कि वह विनीतता का मूर्तिमान होगा, अल्लाह तआला उसमें अपनी रूह प्रविष्ट करेगा जिसके परिणामस्वरूप उसे एक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व में परिवर्तित कर दिया जाएगा। जो हज़रत ईसा अलै. के समरूप होगा। जैसा कि फ़र्माया **فَرِّدْ نَفْسُكَ نَا فَرِّدْ** **مِیْرُحِیْنَا** अर्थात् अल्लाह तआला उस मोमिन पुरुष में अपनी रूह अर्थात् वाणी फूँकेगा।



سُورَةُ التَّحْرِيمِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَلَاثَ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

हे नबी ! तू (उसे) क्यों अवैध ठहरा रहा है जिसे अल्लाह ने तेरे लिए वैध ठहराया है । तू अपनी पत्नियों की प्रसन्नता चाहता है और अल्लाह अत्यंत क्षमाशील (और) बार-बार दया करने वाला है ।१२।*

अल्लाह ने तुम पर अपनी क़समें तोड़ना अनिवार्य कर दिया है । और अल्लाह तुम्हारा स्वामी है और वह सर्वज्ञ (और) परम विवेकशील है ।१३।**

और जब नबी ने अपनी पत्नियों में से किसी से गोपनीयता के साथ एक बात कही । फिर जब उसने वह बात (आगे) बता दी और अल्लाह ने उस (अर्थात् नबी) पर वह (विषय) प्रकट कर दिया

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللَّهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِي مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ②

قَدْ فَرَضَ اللَّهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللَّهُ مَوْلَاكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ③

وَإِذَا أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ

* इस विवाद में पड़ने की तो आवश्यकता नहीं कि कौन सी वस्तु पत्नियों को अप्रिय थी जिसे अल्लाह के रसूल सल्ल. ने उनके लिए अपने ऊपर अवैध ठहराया । वह जो भी वस्तु थी अल्लाह तआला ने उसे वैध घोषित कर दिया है । इस प्रकार यह आदेश है कि अल्लाह तआला ने जिन वस्तुओं को स्पष्ट रूप से अवैध या वैध ठहरा दिया है उनको परिवर्तित करने का मनुष्य को अधिकार नहीं । जन-साधारण को तो यह अधिकार है कि वे अपनी पसन्द और नापसन्द के अनुसार कुछ वस्तुओं को अपने लिए अवैध वस्तु के समान ठहरा लें परन्तु वे दूसरों के लिए आदर्श नहीं होते । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को विशेष रूप से यह आदेश दिया गया है कि आप सल्ल. मुहम्मदी उम्मत के लिए आदर्श हैं ।

** यहाँ क़समों को तोड़ने का यह अर्थ नहीं कि गंभीरता पूर्वक किसी वचन को पूरा करने के उद्देश्य से खाई गई उचित क़समों को भी अवश्य तोड़ दिया जाए । यहाँ केवल यह भाव है कि अल्लाह तआला के द्वारा निरूपित वैध और अवैध में से यदि तुम किसी को परिवर्तित करने की क़सम खा बैठो तो उसे तोड़ दिया करो, परन्तु उसका भी प्रायश्चित्त करना होगा ।

तो उसने (उस विषय के) कुछ भाग से तो उस (पत्नी) को अवगत करा दिया और कुछ को टाल गया। फिर जब उसने उस (पत्नी) को इसकी सूचना दी तो उसने पूछा कि आप को किस ने बताया है ? तो उसने कहा कि सर्वज्ञ और सर्व-अवगत (अल्लाह) ने मुझे बताया है। 14।

यदि तुम दोनों प्रायश्चित्त करते हुए अल्लाह की ओर झुको तो (यही यथोचित है क्योंकि) तुम दोनों के दिल (पाप की ओर) झुक चुके थे। और यदि तुम दोनों उसके विरुद्ध एक दूसरे की सहायता करो तो निःसन्देह अल्लाह ही उसका संरक्षक है और जिब्रील भी और मोमिनों में से प्रत्येक सदाचारी व्यक्ति भी। और इसके अतिरिक्त फ़रिश्ते भी उसके पृष्ठपोषक हैं। 15।*

संभव है कि यदि वह तुम्हें तलाक़ दे दे (तो) उसका रब्ब तुम्हारे बदले उसके लिए तुम से उत्तम पत्नियाँ ले आए, (जो) मुसलमान, ईमान वालीयाँ आज्ञाकारिणी, प्रायश्चित्त करने वालीयाँ, उपासना करने वालीयाँ, रोज़े रखने वालीयाँ, विधवाएँ और कुवाँरियाँ (हों)। 16।

हे लोगो जो ईमान लाए हो ! अपने आप को और अपने घर वालों को

عَلَيْهِ عَرَفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ ۖ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَأَكَ هَذَا ۖ قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ ۝

إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۖ وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَلِكَ ظَهِيرٌ ۝

عَسَى رَبُّهُ إِنْ طَلَّقَنَّ أَنْ يَبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكَ مُسْلِمٍ مُمِيتٍ قَتَلَتْ تَيْبَتٍ عِبْدَتٍ سَاحَتٍ تَيْبَتٍ وَأَبْكَارًا ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا أَنْفُسَكُمْ

* इस आयत में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उन दो पत्नियों का नाम उल्लेख नहीं किया गया जिनसे हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने एक राज़ की बात बताई थी जो उन्होंने आगे फैला दी। जिस बात को अल्लाह तआला ने गुप्त रखा है, मनुष्य का काम नहीं कि उस विषय में अटकल बाज़ियाँ करे।

(उस) अग्नि से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर हैं। उस पर बहुत कठोर, शक्तिशाली फ़रिश्ते (नियुक्त) हैं। अल्लाह उन्हें जो आदेश दे उस बारे में वे उसकी अवज्ञा नहीं करते और वही करते हैं जिसका उन्हें आदेश दिया जाता है। 17।

हे वे लोगो जिन्होंने इनकार किया ! आज बहाने मत बनाओ। निश्चित रूप से तुम्हें केवल उसी का प्रतिफल दिया जाएगा जो तुम किया करते थे। 18।

(रकू 1/9)

हे वे लोगो जो ईमान लाए हो ! अल्लाह की ओर विशुद्ध रूप से प्रायश्चित्त करते हुए झुको। सम्भव है कि तुम्हारा रब्ब तुमसे तुम्हारी बुराइयाँ दूर कर दे और तुम्हें ऐसे स्वर्गों में प्रविष्ट करे जिनके दामन में नहरें बहती हैं। जिस दिन अल्लाह नबी को और उनको अपमानित नहीं करेगा जो उसके साथ ईमान लाए। उनका नूर उनके आगे भी तीव्रता पूर्वक चलेगा और उनके दाएँ भी। वे कहेंगे हे हमारे रब्ब ! हमारे लिए हमारे नूर को सम्पूर्ण कर दे और हमें क्षमा कर दे। निःसन्देह तू हर चीज़ पर, जिसे तू चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है। 19।

हे नबी ! काफ़िरों और मुनाफ़िकों से जिहाद कर और उनके विरुद्ध कठोरता अपना। और उनका

وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا النَّاسُ
وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَائِكَةٌ غِلَظٌ شِدَادٌ
لَّا يَعْصُونَ اللَّهَ مَا أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ
مَا يُؤْمَرُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ
إِنَّمَا تَجْرُونَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا تَوْبُوا إِلَى اللَّهِ تَوْبَةً
نُصُوحًا ۚ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنْكُمْ
سَيِّئَاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُم جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ
تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۚ يَوْمَ لَا يُخْزِي اللَّهُ النَّبِيَّ
وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ
أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَا
آتِنَا نُورَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ إِنَّكَ عَلَىٰ
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ
وَاعْلُظْ عَلَيْهِمْ ۚ وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ

ठिकाना नरक है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है 110।*

अल्लाह ने उन लोगों के लिए जिन्होंने इनकार किया, नूह की पत्नी और लूत की पत्नी का उदाहरण वर्णन किया है। वे दोनों हमारे दो सदाचारी भक्तों के अधीन थीं। फिर उन दोनों ने उनसे विश्वासघात किया तो वे उनको अल्लाह की पकड़ से लेश-मात्र भी बचा न सके। और कहा गया कि तुम दोनों अग्नि में प्रविष्ट होने वालों के साथ प्रविष्ट हो जाओ 111।

और अल्लाह ने उन लोगों के लिए जो ईमान लाए, फ़िरऔन की पत्नी का उदाहरण दिया है। जब उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मेरे लिए अपने निकट स्वर्ग में एक घर बना दे और मुझे फ़िरऔन से और उसके कर्म से बचा ले और मुझे इन अत्याचारी लोगों से मुक्ति प्रदान कर 112।

और इम्रान की बेटी मरियम (के साथ मोमिनों का उदाहरण दिया है) जिसने अपना सतीत्व सही ढंग से बचाए रखा तो हमने उस (बच्चे) में अपनी रूह में से कुछ फूँका और उस (की माँ) ने अपने रब्ब के वाक्यों और उसकी

وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑩

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ كَفَرُوا امْرَأَتَ
نُوحٍ وَامْرَأَتَ لُوطٍ ۚ كَانَتَا تَحْتَ
عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتْهُمَا
فَلَمْ يُغْنِ عَنْهُمَا مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَقِيلَ
ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ⑪

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا لِلَّذِينَ آمَنُوا امْرَأَتَ
فِرْعَوْنَ ۖ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ
بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ
وَعَمَلِهِ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ⑫

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِي أَحْصَنَتْ
فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوحِنَا
وَصَدَقَتْ بِكَلِمَتِ رَبِّهَا وَكُتِبَ عَلَيْهَا

* जो जिहाद निजी स्वार्थों के लिए नहीं, बल्कि केवल अल्लाह तआला के लिए किया जा रहा हो, उसमें शत्रुओं से युद्ध करते हुए कठोरता अपनाने का आदेश है चाहे दिल कितना ही कोमल हो। एक अन्य आयत से इस कठोरता का लाभ यह प्रतीत होता है कि इसके परिणाम स्वरूप जो युद्ध में सम्मिलित होने वाले लोग नहीं हैं, वे भी डर जाएंगे और अकारण मुसलमानों से युद्ध नहीं करेंगे जैसा कि सूर: अल अन्फाल आयत 58 में आदेश दिया गया है कि उनके पिछलों को भी तितर-बितर कर दे।

पुस्तकों की भी पुष्टि की और वह ۞
 आज्ञाकारिणी थी ॥13॥* (रूकू 2/20)

مِنَ الْقُسِيِّنَ ۞

* इसी विषय वस्तु पर आधारित एक और आयत (सूर: अल् अम्बिया 92) में फ़र्माया गया फिर हम ने उसमें अपने आदेश में से कुछ फूँका । यहाँ उसमें कह कर इस ओर संकेत किया गया कि जो मोमिन आध्यात्मिक रूप से मरियम की स्थिति में पहुँचेंगे उनके भीतर भी रूह फूँकी जाएगी । अर्थात् वे उपमा स्वरूप अपने समय के ईसा बनाए जाएंगे ।

67- सूरः अल-मुल्क

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 31 आयतें हैं ।

इस सूरः का आरम्भ इस आयत से होता है कि **केवल वही बरकत वाला सिद्ध हुआ जिसके अधिकार में समग्र साम्राज्य है** । अर्थात् अल्लाह तआला सब का स्वामी है और वह जो चाहता है उस का सामर्थ्य रखता है । अतः पिछली सूरः में जिस आश्चर्यजनक विषयवस्तु का वर्णन हुआ है उसी की ओर यहाँ संकेत प्रतीत होता है । क्योंकि इसके पश्चात मृत्यु से जीवन उत्पन्न करने का विषय आरम्भ हुआ है और यह घोषणा की गई है कि जैसे अल्लाह तआला समर्थ है कि भौतिक मुर्दों को जीवित कर दे, उसी प्रकार आध्यात्मिक मुर्दों को भी फिर से जीवित करने पर समर्थ है । इसमें मुहम्मदी उम्मत के लिए एक महान शुभ-समाचार है ।

इसके तुरन्त पश्चात कहा कि सारी सृष्टि पर विचार करके देख लो वह एक ही स्रष्टा के होने की गवाही देगी और इसमें कोई त्रुटि दिखाई नहीं देगी । यदि यह सृष्टि स्वयं उत्पन्न हुई होती तो कहीं किसी त्रुटि के चिह्न दिखाई देने चाहिए थे । बल्कि अधिकतर त्रुटियाँ दिखाई देनी चाहिए थी । यदि अल्लाह तआला के अतिरिक्त किसी कल्पित साझीदार ने यह सृष्टि बनाई होती तो अवश्य उसके बनाए हुए नियमों का अल्लाह के बनाए हुए नियमों से टकराव होना चाहिए था । अतः इस दृष्टि से समस्त मानव जाति को विचार करने का आमंत्रण दिया गया है कि सृष्टि के रहस्यों पर बार-बार दृष्टि डालें तो उनकी दृष्टि थकी हारी पश्चाताप करती हुई उनकी ओर लौटेंगी परन्तु वे सृष्टि में कहीं कोई त्रुटि ढूँढ नहीं सकेंगे ।

इस सूरः में ऐसे आध्यात्मिक पक्षियों का भी वर्णन है जो आकाश की विस्तृत वायुमण्डल में ऊँची उड़ान भरने का सौभाग्य पाते हैं । जिस प्रकार साधारण पक्षियों को अल्लाह तआला ने ही उड़ने की शक्ति प्रदान की है और धरती और आकाश के मध्य काम पर लगा दिया है इसी प्रकार वही अपने मोमिन भक्तों को भी उड़ने की शक्ति प्रदान करता है । इसके विपरीत नीचे मुँह लटकाए चलने वाले पशुओं को कोई आध्यात्मिक ऊँचाई प्राप्त नहीं होती, न सामान्य अर्थों में और न आध्यात्मिक अर्थों में ।

इस सूरः की अन्तिम आयत में कहा गया है कि जीवन का पानी जो आकाश से उतरता है जिससे तुम सदा लाभ उठाते हो, परन्तु कभी यह भी विचार किया कि यदि वह लगातार सूखे के कारण तुम्हारी पहुँच से दूर धरती की गहराइयों में चला जाए तो तुम स्वच्छ जल कहाँ से लाओगे ? अतः भौतिक जल की भाँति आध्यात्मिक जल भी अल्लाह तआला की विशेष कृपा से ही मनुष्य को प्राप्त होता है ।

سُورَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ إِحْدَى وَثَلَاثُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

केवल एक वही बरकत वाला सिद्ध हुआ जिसके अधिकार में समग्र साम्राज्य है और वह प्रत्येक वस्तु पर जिसे वह चाहे स्थायी सामर्थ्य रखता है ।।।

वही जिसने मृत्यु और जीवन को पैदा किया ताकि वह तुम्हारी परीक्षा करे कि कर्म की दृष्टि से तुम में से कौन उत्तम है और वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बहुत क्षमा करने वाला है ।।।

वही जिसने सात आकाशों को कई परतों में पैदा किया । तू रहमान (अल्लाह) की सृष्टि में कोई विसंगति नहीं देखता । अतः नज़र दौड़ा, क्या तू कोई त्रुटि देख सकता है ? ।।।*

फिर दोबारा नज़र दौड़ा, तेरी ओर नज़र असफल लौट आएगी और वह थकी हारी होगी ।।।

और निःसन्देह हमने निकट के आकाश को दीपकों से सुशोभित किया और उन्हें शैतानों को धिक्कारने का साधन बनाया और उन के लिए हमने धधकता हुआ अग्नि का अज़ाब तैयार किया ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

تَبَارَكَ الَّذِي بِيَدِهِ الْمُلْكُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ②

الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ③ وَهُوَ الْعَزِيزُ الْغَفُورُ ④

الَّذِي خَلَقَ سَبْعَ سَمَاوَاتٍ طِبَاقًا ⑤ مَا تَرَى فِي خَلْقِ الرَّحْمَنِ مِنْ تَفَوُّتٍ ⑥ فَارْجِعِ الْبَصَرَ ⑦ هَلْ تَرَى مِنْ فُطُورٍ ⑧

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَهُوَ حَسِيرٌ ⑨

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيحَ وَجَعَلْنَاهَا رُجُومًا لِلشَّيَاطِينِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيرِ ⑩

* इस आयत में मनुष्य को यह चुनौती दी गई है कि समग्र ब्रह्माण्ड पर जितनी चाहे गवेषणा कर ले उसे एक ही रचयिता की रचना होने के कारण इस में कोई विसंगति नहीं दिखेगी ।

और उन लोगों के लिए जिन्होंने अपने रब्ब का इनकार किया, नरक का अज़ाब है और वह बहुत बुरा लौटने का स्थान है ।7।

जब वे उसमें झोंके जाएंगे, वे उसकी एक चीत्कार की सी आवाज़ सुनेंगे और वह भड़क रहा होगा ।8।

सम्भव है कि वह क्रोध से फट जाए । जब भी उसमें कोई समूह झोंका जाएगा उस के प्रहरी उनसे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई सतर्ककारी नहीं आया था ? ।9।

वे कहेंगे, क्यों नहीं । हमारे पास सतर्ककारी अवश्य आया था अतः हमने (उसे) झुठला दिया और हमने कहा, अल्लाह ने कोई वस्तु नहीं उतारी, तुम केवल एक बड़ी पथभ्रष्टता में (पड़े) हो ।10।

और वे कहेंगे, यदि हम (ध्यान पूर्वक) सुनते अथवा बुद्धि का प्रयोग करते तो हम अग्नि में पड़ने वालों में सम्मिलित न होते ।11।

अतः उन्होंने अपने पाप का स्वीकार कर लिया । अतएव अग्नि में पड़ने वालों का सर्वनाश हो ।12।

निःसन्देह वे लोग जो अदृश्य में अपने रब्ब से डरते हैं, उनके लिए क्षमादान और बहुत बड़ा प्रतिफल है ।13।

और तुम अपनी बात को छुपाओ अथवा उसे प्रकट करो, निःसन्देह वह सीने की बातों का सदैव ज्ञान रखता है ।14।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ
وَبِئْسَ الْمَصِيرُ ⑦

إِذَا أُلْقُوا فِيهَا سَمِعُوا لَهَا شَهِيقًا وَهِيَ
تَفُورُ ⑧

تَكَادُ تَمَيِّزُ مِنَ الْغَيْظِ ⑨ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيهَا
فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ
نَذِيرٌ ⑩

قَالُوا بَلَىٰ قَدْ جَاءَنَا نَذِيرٌ فَكَذَّبْنَا
وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ ⑪ إِنْ أَنْتُمْ
إِلَّا فِي ضَلَالٍ كَبِيرٍ ⑫

وَقَالُوا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا
فِي أَصْحَابِ السَّعِيرِ ⑬

فَاعْتَرَفُوا بِذَنبِهِمْ ⑭ فَسُحِقًا لِأَصْحَابِ
السَّعِيرِ ⑮

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُم بِالْغَيْبِ لَهُمْ
مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ⑯

وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ ⑰ إِنَّهُ
عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ⑱

क्या वह जिसने पैदा किया, नहीं जानता ? जबकि वह सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों पर दृष्टि रखने वाला (और)

सदा अवगत है 115। (रकू 1)

वही है जिसने धरती को तुम्हारे अधीन कर दिया । अतः उसके रास्तों पर चलो और उस (अर्थात् अल्लाह) की जीविका में से खाओ और उसी की ओर उठाय जाना है 116।

क्या तुम उससे जो आकाश में है (इस बात से) सुरक्षित हो कि वह तुम्हें धरती में धंसा दे । फिर वे सहसा थरनि लगे 117।

अथवा क्या तुम उससे जो आकाश में है सुरक्षित हो कि वह तुम पर पत्थर बरसाने वाले झक्कड़ चला दे ? फिर तुम अवश्य जान लोगे कि मेरा सतर्क करना कैसा था 118।

और निःसन्देह उन लोगों ने भी झुठला दिया था जो उनसे पूर्व थे । अतः कैसा कठोर था मेरा दण्ड ! 119।

क्या उन्होंने पक्षियों को अपने ऊपर पंख फैलाते और समेटते हुए नहीं देखा ? रहमान (अल्लाह) के अतिरिक्त कोई नहीं जो उन्हें रोके रखे ।

निःसन्देह वह प्रत्येक वस्तु पर गहन दृष्टि रखता है 120।*

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ ١٥

هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامْشُوا فِي مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ ١٦ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ ١٧

أَمْ أَمْنُكُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ ١٨

أَمْ أَمْنُكُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ أَنْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ١٩ فَسَتَعْلَمُونَ كَيْفَ نَذِيرٍ ٢٠

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيرِ ٢١

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صَفْتٍ ٢٢ وَ يَقْبِضْنَ ٢٣ مَا يُمَسِّكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمَنُ ٢٤ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ بَصِيرٌ ٢٥

- * पक्षियों के आकाश में उड़ने और वायुमंडल में काम पर लगने के सम्बन्ध में यह आयत गूढ़ अर्थ रखती है । पक्षियों की संरचना विशेषता के साथ ऐसे नियमों के अनुसार की गई है कि वे वायुमंडल में उड़ सकें । यह केवल संयोग की बात नहीं । कुछ शिकारी पक्षियों की गति वायु में दो सौ मील प्रति घंटा तक पहुँच जाती है और उनके शरीर की बनावट ऐसी है कि इस वेग से उनको कोई भी हानि नहीं पहुँचती । क्योंकि हवा चोंच और सिर से टकरा कर चारों ओर फैल जाती है और इसी वेग के साथ वे उड़ते हुए पक्षियों का शिकार भी कर लेते हैं ।

अथवा ये कौन होते हैं जो तुम्हारी सेना बन कर रहमान के मुकाबले पर तुम्हारी सहायता करें। काफ़िर केवल एक बड़े धोखे में हैं। 121।

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ
مِّنْ دُونِ الرَّحْمَنِ إِنِ الْكَافِرُونَ إِلَّا
فِي غُرُورٍ ۝۱

अथवा यदि वह (अल्लाह) अपनी जीविका रोक ले तो ये हैं क्या चीज़ जो तुम्हें जीविका प्रदान करें? बल्कि वे तो उदण्डता और घृणा में बढ़ते चले जाते हैं। 122।

أَمَّنْ هَذَا الَّذِي يَرِزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ
رِزْقَهُ ۚ بَلْ لَّجُّوا فِي عُتُوٍّ وَنُفُورٍ ۝۲

अतः क्या वह जो अपनी अज्ञानता और विस्मयता में भटकता फिरता है, अधिक हिदायत प्राप्त है अथवा वह जो सन्मार्ग पर सीधा चलता है? 123।

أَفَمَنْ يَمْشِي مُكِبًّا عَلَىٰ وَجْهِهِ أَهْدَىٰ
أَمَّنْ يَمْشِي سَوِيًّا عَلَىٰ صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيمٍ ۝۳

कह दे कि वही है जिसने तुम्हें पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाए। तुम बहुत ही कम कृतज्ञता प्रकट करते हो। 124।

قُلْ هُوَ الَّذِي أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ
السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۚ قَلِيلًا مَّا
تَشْكُرُونَ ۝۴

कह दे कि वही है जिसने धरती में तुम्हारा बीजारोपण किया और उसी की ओर तुम इकट्ठे किए जाओगे। 125।
और वे पूछते हैं, यदि तुम सच्चे हो तो यह वादा कब (पूरा) होगा? 126।

قُلْ هُوَ الَّذِي ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ
تُحْشَرُونَ ۝۵
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ
صَادِقِينَ ۝۶

तू कह दे कि पूर्ण ज्ञान तो अल्लाह के पास है। और मैं तो केवल खुला-खुला सतर्ककारी हूँ। 127।

قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ ۖ وَإِنَّمَا أَنَا
نَذِيرٌ مُّبِينٌ ۝۷

अतः जब वे उसे निकट देखेंगे तो वे लोग जिन्होंने इनकार किया, उनके

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سَيِّئَتْ وُجُوهُ الَّذِينَ

चेहरे मलिन हो जाएंगे और कहा जाएगा, यही है वह जिसे तुम मांगा करते थे ।28।

कह दे, बताओ तो सही कि यदि अल्लाह मुझे और उसे भी जो मेरे साथ है, तबाह कर दे अथवा हम पर दया करे तो काफ़िरो को पीड़ाजनक अज़ाब से कौन शरण देगा ? ।29।

तू कह दे वही रहमान है । हम उस पर ईमान ले आए और उस पर ही हमने भरोसा किया । अतः तुम शीघ्र ही जान लोगे कि कौन है जो खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़ा है ।30।

तू कह दे कि यदि तुम्हारा पानी गहराई में चला जाए तो कौन है जो तुम्हारे पास स्रोतों का पानी लाएगा ? ।31।

(रुकू $\frac{2}{2}$)

كَفَرُوا وَقِيلَ هَذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ
تَدْعُونَ ۝۲۸

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكْنِي اللَّهُ وَمَنْ مَعِيَ
أَوْ رَحِمَنَا ۖ فَمَنْ يُجِيرُ الْكَافِرِينَ مِنْ
عَذَابِ الْيَمِّ ۝۲۹

قُلْ هُوَ الرَّحْمَنُ أَمَّنَّا بِهِ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا
فَسَتَعْلَمُونَ مَنْ هُوَ فِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ۝۳०

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَاؤُكُمْ غَوْرًا
فَمَنْ يَأْتِيكُمْ بِمَاءٍ مَعِينٍ ۝۳१

ع

68- सूरः अल-क़लम

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक समय में अवतरित हुई है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 53 आयतें हैं ।

यह सूरः खण्डाक्षरों से आरम्भ होने वाली अन्तिम सूरः है । यह सूरः अरबी अक्षर नून से आरम्भ होती है जिसका एक अर्थ दवात है और लेखनी से लिखने वाले सभी इसके ज़रूरतमन्द रहते हैं । और मनुष्य की समस्त उन्नति का युग लेखनी के आधिपत्य से आरम्भ होता है । यदि मनुष्य उन्नति में से लेखन विद्या को निकाल दिया जाए तो मनुष्य अज्ञानता की ओर लौट जाएगा और फिर कभी उसे किसी प्रकार ज्ञान की उन्नति प्राप्त नहीं हो सकती ।

फिर नून अक्षर से अभिप्राय अल्लाह तआला के वह नबी हैं जिन्हें जुन नून कहा जाता है अर्थात् हज़रत यूनस अलै. । उनका भी इसी सूरः में वर्णन मिलता है कि वह क्या घटना घटी थी जिसके परिणाम स्वरूप वह अपनी जाति पर अल्लाह तआला का अज़ाब न उतरने के कारण, जिसकी उन्हें चेतावनी दी गई थी, भारी मन से उस बस्ती को यह सोच कर छोड़ गए थे कि आगे कभी वह उस जाति को मुँह दिखाने के योग्य नहीं रहेंगे । तब अल्लाह तआला ने हज़रत यूनस अलै. को यह शिक्षा दी कि उसकी चेतावनी कई बार प्रायश्चित्त और क्षमायाचना से टल जाती हैं । उनको यह दुआ भी सिखाई, **ला इला-ह इल्ला अन त सुब्हा न क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन** (सूरः अल अम्बिया, आयत 88) अर्थात् तेरे सिवा कोई उपास्य नहीं । तू तो प्रत्येक दुर्बलता से पवित्र है । मैं ही अत्याचारी था जो प्रायश्चित्त करने वाली एक जाति के लिए अज़ाब की कामना करता रहा ।

इस सूरः में नून अक्षर का बार-बार उल्लेख है जो इस सूरः के विषयवस्तुओं के साथ पूर्णतया सामंजस्य रखता है और एक भी स्थान पर विषयवस्तु और नून अक्षर में कोई विसंगति दिखाई नहीं देती ।



سُورَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَةِ ثَلَاثٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 11।

नून : क़सम है लेखनी की और उसकी जो वे लिखते हैं 12।

तू अपने रब की नेमत के फलस्वरूप पागल नहीं है 13।

और निश्चित रूप से तेरे लिए एक अनंत प्रतिफल है 14।

और निश्चित रूप से तू सुशीलता के शिखर पर स्थित है 15।

अतः तू देख लेगा और वे भी देखेंगे 16।

कि तुम में से कौन पागल है 17।

निःसन्देह तेरा रब ही सबसे अधिक उसे जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया है और वही हिदायत पाने वाले लोगों को भी सबसे अधिक जानता है 18।

अतः तू झुठलाने वालों का आज्ञापालन न कर 19।

वे चाहते हैं कि यदि तू लचक दिखाए तो वे भी लचक दिखाएँगे 110।

और तू बढ़-बढ़ कर क़समें खाने वाले किसी अपमानित व्यक्ति की बात कदापि न मान 111।

(जो) बड़ा छिद्रान्वेषी (और) चुगलियाँ करते हुए बहुत चलने वाला है 112।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

نَّ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُونَ ①

مَا أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُونٍ ②

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُونٍ ③

وَإِنَّكَ لَعَلَى خُلُقٍ عَظِيمٍ ④

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُونَ ⑤

بِأَبْصَارِكُمُ الْمُفْتُونُ ⑥

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ

سَبِيلِهِ ⑧ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ⑧

فَلَا تُطِيعِ الْمُكْذِبِينَ ⑨

وَدُّوا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُونَ ⑩

وَلَا تُطِيعِ كُلَّ حَلَّافٍ مِّمِّينٍ ⑪

هَمَّازٍ مَشَّاءٍ بِنَمِيمٍ ⑫

(जो) भलाई से बहुत रोकने वाला,
सीमा का उल्लंघन करने वाला (और)
महापापी है 113।

बहुत कठोर हृदयी । इसके अतिरिक्त
अवैध संतान है 114।

(क्या केवल इस कारण अकड़ता है) कि
वह धनवान और (अनेक) संतान-
सन्तति वाला है 115।

जब उस के समक्ष हमारी आयतें पढ़ी
जाती हैं कहता है, (ये) पहले लोगों की
कहानियाँ हैं 116।

निःसन्देह हम उसे थूथनी पर
दागेंगे 117।*

हमने उनकी परीक्षा ली जिस प्रकार
घने बाग़ वालों की परीक्षा ली थी ।
जब उन्होंने क़सम खाई थी कि वे
अवश्य पौ फटते ही उसकी फसल काट
लेंगे 118।

और वे अल्लाह का नाम नहीं लेते थे
(इन्शाअल्लाह अर्थात् यदि अल्लाह ने
चाहा, नहीं कहते थे) 119।

अतः तेरे रब्ब की ओर से उस (बाग़)
पर एक घूमने वाला (अज़ाब) फिर गया
जबकि वे सोए हुए थे 120।

फिर वह (बाग़) ऐसा हो गया जैसे काट
दिया गया हो 121।

अतः वह सुबह सवेरे एक दूसरे को
पुकारने लगे 122।

कि यदि तुम फसल काटने वाले हो
तो सवेरे-सवेरे अपनी कृषि भूमि पर

مِّنَّا عِلِّ خَيْرٍ مُّعْتَدٍ أَشِيمٍ ۝۱۳

عُتِلِّ بَعْدَ ذَلِكَ زَنِيمٍ ۝۱۴

أَن كَانَ ذَا مَالٍ وَبَنِينَ ۝۱۵

إِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ
الْأَوَّلِينَ ۝۱۶

سَنَسِمُهُ عَلَى الْخُرُطُومِ ۝۱۷

إِنَّا بَلَوْنَهُمْ كَمَا بَلَوْنَا أَصْحَابَ
الْجَنَّةِ ۚ إِذْ أَقْسَمُوا لَيَصْرِمُنَّهَا
مُصْرِحِينَ ۝۱۸

وَلَا يَسْتَشْنُونَ ۝۱۹

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّن رَّبِّكَ وَهُمْ
نَائِمُونَ ۝۲۰

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيمِ ۝۲۱

فَتَنَادَوْا مُصْرِحِينَ ۝۲۲

أَبِ اغْدُوا عَلَىٰ حَرْثِكُمْ إِن كُنتُمْ

* अरबी शब्द खुरतूम का अर्थ 'थूथनी' है (लिसान उल अरब)

पहुँचो |23|

صَرِّمِينَ ۝۲۳

अतः उन्होंने प्रस्थान किया और परस्पर कानाफूसी करते जाते थे |24|

فَانْطَلَقُوا وَهُمْ يَتَخَفَتُونَ ۝۲۴

कि आज इसमें तुम्हारे हित के विरुद्ध कोई दरिद्र (व्यक्ति) कदापि प्रवेश न कर पाए |25|

أَنْ لَا يَدْخُلَهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مَسْكِينٌ ۝۲۵

वे किसी को कुछ न देने की योजना बनाते हुए गए |26|

وَعَدَوْا عَلَىٰ حَرْدٍ قَادِرِينَ ۝۲۶

अतः जब उन्होंने उसको देखा (तो) कहा कि निःसन्देह हम तो मारे गए |27|*

فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوا إِنَّا لَضَائِرُونَ ۝۲۷

बल्कि हम तो वंचित कर दिये गए हैं |28|

بَلْ نَحْنُ مَحْرُومُونَ ۝۲۸

उनमें से सब से अच्छे व्यक्ति ने कहा, क्या मैंने तुम्हें कहा नहीं था कि तुम क्यों (अल्लाह की) स्तुति नहीं करते ? |29|

قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُونَ ۝۲۹

उन्होंने कहा, पवित्र है हमारा रब्व । निःसन्देह हम ही अत्याचारी थे |30|

قَالُوا سُبْحَنَ رَبِّنَا إِنَّا كُنَّا ظَالِمِينَ ۝۳۰

फिर वे एक दूसरे को भर्त्सना करते हुए चले |31|

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَتَلَوْمُونَ ۝۳۱

कहने लगे, हाय हमारा सर्वनाश ! निःसन्देह हम ही उद्वण्डी थे |32|

قَالُوا يَٰوَيْلَنَا إِنَّا كُنَّا طٰغِينَ ۝۳۲

सम्भव है कि हमारा रब्व बदले में हमें इससे उत्तम दे । निःसन्देह हम अपने रब्व की ओर ही उन्मुख होने वाले हैं |33|

عَسَىٰ رَبَّنَا أَنْ يُبدِلَنَا خَيْرًا مِنْهَا إِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا رٰغِبُونَ ۝۳۳

अज़ाब इसी प्रकार होता है और परलोक का अज़ाब निश्चित रूप से सबसे बड़ा होगा । काश वे जानते ! |34| (रकू $\frac{1}{3}$)

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۖ وَلَعَذَابُ الْآخِرَةِ اَكْبَرُ ۚ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝۳۴

निःसन्देह मुत्तक़ियों के लिए उनके रब्ब के निकट नेमतों वाले स्वर्ग हैं ।35।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٍ
الَّتِي فِيهَا

अतः क्या हम आज्ञाकारियों को अपराधियों की भाँति बना लें ? ।36।

أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِينَ كَالْمُجْرِمِينَ

तुम्हें क्या हो गया है, कैसे निर्णय करते हो ? ।37।

مَا لَكُمْ بِهَذَا كَيْفَ تَحْكُمُونَ

क्या तुम्हारे लिए कोई पुस्तक है जिसमें तुम पढ़ते हो ? ।38।

أَمْ لَكُمْ كِتَابٌ فِيهِ تَدْرُسُونَ

निःसन्देह उसमें तुम्हारे लिए वह (कुछ) होगा जिसे तुम अधिक पसन्द करते हो ।39।

إِنَّ لَكُمْ فِيهِ لَمَا تَخَيَّرُونَ

क्या तुम्हारे पक्ष में हम पर ऐसी क़समें हैं जो हमें क़यामत तक के लिए बाध्य करती हैं कि तुम्हें पूरा अधिकार है जो चाहो निर्णय करो ? ।40।

أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بِالِغَةِ إِلَى
يَوْمِ الْقِيَمَةِ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُونَ

तू उनसे पूछ (कि) उनमें से कौन है जो इस बात का उत्तरदायी है ? ।41।

سَلِّمْهُمْ أَيُّهُمْ بِذَلِكَ رَعِيْمٌ

क्या उनके पक्ष में कोई उपास्य हैं ? यदि वे सच्चे हैं तो अपने उपास्यों को ले आएँ ।42।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَاءُ فَلْيَأْتُوا بِشُرَكَائِهِمْ
إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ

जिस दिन ख़ूब घबराहट का सामना होगा और वे सजदः करने के लिए बुलाए जाएँगे परन्तु सामर्थ्य न रखते होंगे ।43।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَيُدْعَوْنَ إِلَى
السُّجُودِ فَلَا يَسْتَطِيعُونَ

इस अवस्था में कि उनकी आँखें झुकी हुई होंगी । उन पर अपमान छा रहा होगा । और निःसन्देह उन्हें (इससे पूर्व) सजदों की ओर बुलाया जाता था, जब वे सही सलामत थे ।44।

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُقُهُمْ ذِلَّةٌ
وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ
وَهُمْ سَالِمُونَ

अतः तू मुझे और उसे जो इस वर्णन को झुठलाता है छोड़ दे। हम उन्हें धीरे-धीरे इस प्रकार पकड़ लेंगे कि उन्हें कुछ ज्ञान न हो सकेगा। 145।

और मैं उन्हें ढील देता हूँ। मेरी योजना निश्चित ही बहुत पक्की है। 146।

क्या तू उनसे कोई प्रतिफल मांगता है कि वे चट्टी के बोझ तले दबे जा रहे हों। 147।

क्या उनके पास अदृश्य (का ज्ञान) है, फिर वे (उसे) लिखते हैं? 148।

अतः अपने रब्ब के निर्णय की प्रतीक्षा में धैर्य धर और मछली वाले की भाँति न बन। जब उसने (अपने रब्ब को) पुकारा और वह शोक से भरा हुआ था। 149।

यदि उसके रब्ब की ओर से एक विशेष नेमत उसे बचा न लेती तो वह चटियल मैदान में इस प्रकार फेंक दिया जाता कि वह अत्यन्त धिक्कारा हुआ होता। 150।

फिर उसके रब्ब ने उसे चुन लिया और उसे नेक लोगों में गिन लिया। 151।

निश्चित रूप से काफ़िरो से यह असम्भव नहीं कि जब वे अनुस्मृति सुनते हैं तो तुझे अपनी दृष्टि (के प्रकोप) के द्वारा गिराने का प्रयत्न करें। और वे कहते हैं निःसन्देह यह तो एक पागल है। 152।

हालाँकि वह तो समस्त लोकों के लिए उपदेश के अतिरिक्त कुछ नहीं। 153।

(रुकू 2/4)

فَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبْ بِهَذَا الْحَدِيثِ
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ ١٤٥

وَأُمْلِي لَهُمْ ۖ إِنَّ كَيْدِي مَتِينٌ ١٤٦

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِنْ مَغْرَمٍ
مُقْتَلُونَ ١٤٧

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ١٤٨

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ
الْحُوتِ إِذْ نَادَى وَهُوَ مَكْظُومٌ ١٤٩

لَوْلَا أَنْ تَدْرَكَهُ نِعْمَةٌ مِنْ رَبِّهِ لَنُبِذَ
بِالْعَرَاءِ وَهُوَ مَذْمُومٌ ١٥٠

فَاجْتَبَاهُ رَبُّهُ فَجَعَلَهُ مِنَ الصَّالِحِينَ ١٥١

وَإِنْ يَكَادُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَيُزْلِقُونَكَ
بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُولُونَ
إِنَّهُ لَمَجْنُونٌ ١٥٢

وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ١٥٣

۞

69- सूर: अल-हाक्क़:

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 53 आयतें हैं ।

सूर: अल-क़लम में यह विषय वर्णन हुआ था कि जब हम नबियों के शत्रुओं को ढील देते हैं तो इस लिए देते हैं ताकि उनके पापों का घड़ा भर जाए और फिर अल्लाह तआला की पकड़ से उनको कोई बचा नहीं सकता । इस सूर: में भी उन जातियों का वर्णन है जिनको अल्लाह तआला की ओर से बार-बार ढील दी गई । परन्तु जब उनके पापों का घड़ा भर गया तो उनकी पकड़ की घड़ी आ गई । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने मानव जाति को जिस बहुत बड़े अज़ाब से सतर्क करने का आदेश दिया है उसका संबंध संसार के किसी विशेष धार्मिक सम्प्रदाय से नहीं है बल्कि मनुष्य के रूप में प्रत्येक को सतर्क किया गया है । जब वह घटना घटेगी तो सांसारिक दृष्टि से भी मनुष्य समझेगा कि मानो धरती और आकाश उस पर फट पड़े हैं । मनुष्य के दोबारा उठाए जाने में भी यह चेतावनी एक बार फिर पूरी होगी कि न उसका कोई पार्थिव संपर्क और न ही आकाशीय संपर्क उसे बचा सकेगा और नरक उसका अंत होगा ।

इसके पश्चात अल्लाह तआला उन बातों के पूरा होने के बारे में एक महान गवाही पेश कर रहा है जो मनुष्य को किसी सीमा तक दिखाई देते रहे हैं अथवा दिखाई देने लगते हैं और उन बातों के पूरा होने के बारे में भी जिन तक उसकी दृष्टि नहीं पहुँचती । अर्थात् यह कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बातें एक सम्माननीय एवं विश्वसनीय रसूल की बातें हैं, न वह किसी कवि की बहकी हुई बातें हैं न किसी ज्योतिषी की अटकलें हैं । यह तो समस्त लोकों के रब्ब की ओर से अवतरित हुई है ।

इस सूर: की अन्तिम आयतों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई का एक ऐसा मापदण्ड प्रस्तुत कर दिया गया जिसका शत्रु की ओर से कोई खण्डन नहीं हो सकता । शत्रु को सावधान किया कि तुम्हारे अनुसार तो इस सम्माननीय पुस्तक को इस रसूल ने अपनी ओर से ही गढ़ लिया है । हालाँकि यदि उसने अल्लाह तआला पर छोटे से छोटा झूठ भी गढ़ा होता तो निःसन्देह अल्लाह उसको और उसके सम्प्रदाय को नष्ट कर देता और यदि अल्लाह यह निर्णय करता तो तुम लोग किसी प्रकार उसको बचा न सकते । इस प्रकार तुम्हारी समस्त शक्तियों के मुक़ाबले पर अल्लाह तआला उसकी सहायता कर रहा है और उसको बचा रहा है जो निश्चित रूप से उसके अल्लाह का रसूल होने पर एक प्रमाण है । अर्थात् अल्लाह तआला का यह वाक्य फिर बड़ी सफाई से उसके पक्ष में पूरा हुआ है कि : **अल्लाह ने लिख रखा है कि मैं और मेरे रसूल अवश्य विजयी होंगे ।** (सूर: अल मुजादल: आयत 22)

سُورَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

अवश्यमेव घटित होने वाली ।2।

الْحَاقَّةُ ①

अवश्यमेव घटित होने वाली क्या है ? ।3।

مَا الْحَاقَّةُ ②

और तुझे क्या मालूम कि अवश्यमेव घटित होने वाली क्या है ? ।4।

وَمَا أَذْرَبُكَ مَا الْحَاقَّةُ ③

समूद और आद जाति ने (दिलों को) चौंका देने वाली विपत्ति का इनकार कर दिया था ।5।

كَذَّبَتْ ثَمُودُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ ④

अतः जहाँ तक समूद (जाति) का सम्बन्ध है तो वे सीमा से बढ़ी हुई विपत्ति से विनष्ट कर दिए गये ।6।

فَأَمَّا ثَمُودُ فَأُهْلِكُوا بِالطَّاغِيَةِ ⑤

और जो आद (जाति के लोग) थे तो वे एक तेज़ हवा से तबाह किए गए जो बढ़ती चली जाती थी ।7।

وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ⑥

उस (अल्लाह) ने उसे उन पर सात रातों और आठ दिनों तक इस प्रकार नियोजित कर रखा कि वह उन्हें जड़ों से उखाड़ कर फेंक रही थी । अतः लोगों को तू उसमें पछाड़ खा कर गिरे हुए देखता है जैसे वे खजूर के गिरे हुए वृक्षों के तने हों ।8।

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَثُمْنِيَّةَ أَيَّامٍ ۖ فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا صَرْعَى ۚ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ⑦

अतः क्या तू उनमें से किसी को शेष बचा हुआ देखता है ? ।9।

فَهَلْ تَرَى لَهُمْ مِّنْ بَاقِيَةٍ ⑧

और फिरऔन भी आया और वे भी (आये) जो उससे पूर्व थे । और एक

وَجَاءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهُ وَالْمُؤْتَفِكَتْ

बहुत बड़े पाप के कारण उलट-पुलट होने वाली बस्तियाँ भी 110।

अतः उन्होंने अपने रबब के रसूल की अवज्ञा की तो उसने उन्हें एक कठोर से कठोर होने वाली पकड़ में ले लिया 111।

निःसन्देह जब पानी ख़ूब उफान पर आ गया, हमने तुम्हें नौका में उठा लिया 112।

ताकि हम उसे तुम्हारे लिए एक चर्चा के योग्य चिह्न बना दें और स्मरण रखने वाले कान उसे याद रखें 113।

फिर जब बिगुल में एक ज़ोरदार फूंक मारी जाएगी 114।

और धरती और पर्वत उठाए जाएँगे और एक दम में कण-कण कर दिए जाएँगे 115।

अतः उस दिन अवश्य घटित होने वाली (घटना) घटित हो जाएगी 116।

और आकाश फट पड़ेगा। अतः उस दिन वह बोदा हो चुका होगा 117।

और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे और उस दिन तेरे रबब के अर्श को उन सबसे ऊपर आठ (गुण) उठाए हुए होंगे 118।*

उस दिन तुम पेश किए जाओगे। कोई छिपी रहने वाली (बात) तुम से छिपी नहीं रहेगी 119।

بِالْخَاطِئَةِ ۝

فَعَصَوْا رَسُولَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخَذَةً رَّابِيَةً ۝

إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَاءُ حَمَلْنَاكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَتَعِيَهَا أُذُنٌ وَاعِيَةٌ ۝

فَإِذَا نَفَخَ فِي الصُّورِ نَفْخَةٌ وَاحِدَةٌ ۝

وَحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَاحِدَةً ۝

فَيَوْمَئِذٍ وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝

وَانشَقَّتِ السَّمَاءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَاهِيَةٌ ۝

وَالْمَلَائِكَةُ عَلَىٰ أَرْجَائِهَا وَيَحْمِلُ عَرْشُ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمْنِيَةٌ ۝

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُونَ لَا تَخْفَىٰ مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ۝

* इस आयत से किसी को यह भ्रम न हो कि फ़रिश्तों को कोई भौतिक शक्ति प्राप्त है जिससे उन्होंने अल्लाह के अर्श को उठाया हुआ है। अर्श तो कोई भौतिक वस्तु नहीं है जिसे उठाने के लिए भौतिक शक्ति की आवश्यकता है। वास्तविकता यह है कि अल्लाह तआला ही प्रत्येक वस्तु को उठाए हुए है। अर्थात् प्रत्येक वस्तु उसी के सहारे स्थित है। हज़रत मसीह मौज़्द अलै, ने फ़र्माया है कि अर्श तो अल्लाह तआला के विशुद्ध और पवित्रता पूर्ण स्थान का नाम है और उसके समग्र सृष्टि से परे होने की अवस्था है। सूर: अल-फ़ातिह: में वर्णित अल्लाह के चार गुणवाचक नाम यथा :- →

अतः जिसका कर्म-पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा तो वह कहेगा, आओ मेरा कर्म-पत्र पकड़ो और पढ़ो ।20।*

निःसन्देह मैं आशा रखता हूँ कि मैं अपना हिसाब सामने देखने वाला हूँ।21।

अतः वह पसंदीदा जीवन में होगा ।22।

एक ऊँचे स्वर्ग में ।23।

उसके (फल के) गुच्छे झुके हुए होंगे ।24।

(कहा जाएगा) उन (कर्मों) के बदले में जो तुम बीते हुए दिनों में किया करते थे, मज़े से खाओ और पिओ ।25।

और वह जिसे उसकी बायीं ओर से उसका कर्म-पत्र दिया जाएगा तो वह कहेगा, काश ! मुझे मेरा कर्म-पत्र न दिया जाता ।26।

और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है ? ।27।

काश ! वह (घड़ी) झगड़ा निपटाने वाली होती ।28।

मेरा धन मेरे कुछ भी काम न आया।29।

فَأَمَّا مَنْ أَوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ۖ فَيَقُولُ
هَآؤُمُ اقْرَءُوا كِتَابِيَهٗ ۚ

إِنِّي ظَنَنْتُ أَنِّي مُلْقٍ حِسَابِيَهٗ ۚ

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۖ

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۖ

قُطُوفُهَا دَانِيَةٌ ۖ

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا أَسْلَفْتُمْ
فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۖ

وَأَمَّا مَنْ أَوْتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ ۖ

فَيَقُولُ يَلَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهٗ ۚ

وَلَمْ آدُرْ مَا حِسَابِيَهٗ ۚ

يَلَيْتَهَا كَانَتْ اقْضَايَةٍ ۖ

مَا أَغْنَىٰ عَنِّي مَالِيَهٗ ۚ

←रब्ब, रहमान, रहीम, और मालिके यौमिद्दीन को चार फ़रिश्तों से नामित किया गया है। “यह चारों गुणवाचक नाम हैं जो उसके अर्थ को उठाए हुए हैं। अर्थात् दुनिया में उसकी गुप्त सत्ता का ज्ञान इन गुणवाचक नामों के द्वारा होता है और यह ज्ञान परलोक में दोगुना हो जाएगा। अर्थात् चार के बदले आठ फ़रिश्ते हो जाएँगे।” (चश्मा-ए-मअरिफ़त, रूहानी खज़ाइन भाग 23 पृष्ठ 279)

* अरबी शब्द हाउमु का अर्थ है “पकड़ो” (मुफ़रदात इमाम राशिब रहि.)

मेरा प्रभुत्व मुझ से बर्बाद हो कर जाता
रहा ।30।

هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيَّةٌ ۝

(तब फ़रिश्तों से कहा जाएगा) उसको
पकड़ो और उसे तौक पहना दो ।31।

خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ۝

फिर उसको नरक में झोंक दो ।32।

ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ۝

अंततः फिर ऐसी जंजीर में उसे जकड़ दो
जिस की लम्बाई सत्तर हाथ है ।33।

ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا
فَأَسْلُكُوهُ ۝

निःसन्देह वह महिमाशाली अल्लाह पर
ईमान नहीं लाता था ।34।

إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ۝

और दरिद्रों को भोजन कराने की प्रेरणा
नहीं देता था ।35।

وَلَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ الْمَسْكِينِ ۝

अतः आज यहाँ उसका कोई जान-
न्योछावर करने वाला मित्र नहीं
होगा ।36।

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيمٌ ۝

और घावों के धोवन के सिवा कोई
भोजन नहीं मिलेगा ।37।*

وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غَسِيلٍ ۝

जिसे अपराधियों के सिवा कोई नहीं
खाता ।38। (रुकू 1/5)

لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ۝

अतः सावधान ! मैं कसम खाता हूँ
उसकी जो तुम देखते हो ।39।

فَلَا أَقْسَمُ بِمَا تُبْصِرُونَ ۝

और उसकी भी जो तुम नहीं देखते ।40।

وَمَا لَا تُبْصِرُونَ ۝

निःसन्देह यह सम्माननीय रसूल का
कथन है ।41।

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝

और यह किसी कवि की बात नहीं ।
बहुत कम है जो तुम ईमान लाते
हो ।42।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيلًا مَّا
تُؤْمِنُونَ ۝

और न (यह) किसी ज्यातिषी का कथन है। बहुत कम है जो तुम उपदेश ग्रहण करते हो। 143।

समस्त लोकों के रब्ब की ओर से (यह) अवतरित हुआ है। 144।

और यदि वह कुछ बातें झूठ के रूप में हमारी ओर सम्बन्धित कर देता। 145।

तो हम उसे अवश्य दाहिने हाथ से पकड़ लेते। 146।

फिर हम निःसन्देह उसकी प्राण-स्नायु को काट डालते। 147।

फिर तुम में से कोई एक भी उससे (हमें) रोकने वाला न होता। 148।*

और निःसन्देह यह मुत्तकियों के लिए एक बड़ा उपदेश है। 149।

और निश्चित रूप से हम जानते हैं कि तुम में झुठलाने वाले भी हैं। 150।

और निःसन्देह यह काफ़िरो के लिए एक बड़ा पछतावा है। 151।

और निःसन्देह यह निश्चयात्मकता को पहुँचा हुआ विश्वास है। 152।

अतः अपने महान रब्ब के नाम का गुणगान कर। 153। (रुकू 2/6)

وَلَا يَقُولُ كَاهِنٌ قَلِيلًا مَّا تَذَكَّرُونَ ۝

تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ ۝

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضُ الْأَقَاوِيلِ ۝

لَا خُذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِينِ ۝

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِينَ ۝

فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِينَ ۝

وَإِنَّهُ لَتَذَكَّرٌ لِّلْمُتَّقِينَ ۝

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِينَ ۝

وَإِنَّهُ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

وَإِنَّهُ لَحَقُّ الْيَقِينِ ۝

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيمِ ۝

* आयत संख्या 45 से 48 : इन आयतों में उन भ्रान्त धारणाओं का खण्डन किया गया है कि झूठी वहुद् अल्लाह तआला की ओर सम्बन्धित करने वाले को कोई सांसारिक शक्ति बचा सकती है। वास्तविकता यह है कि झूठे दावेदारों के पीछे अवश्य कोई सांसारिक शक्ति होती है। इस के बावजूद वे और उनके साथी सहायक विनाश कर दिए जाते हैं। अतः हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सच्चाई का यह ज्वलंत प्रमाण है। क्योंकि आपके दावे के पश्चात सारा अरब आप सल्ल. का विरोधी बन गया था। इस आयत में यह बहुत ही सूक्ष्म तथ्य वर्णन किया गया है कि यदि यह रसूल अल्लाह पर एक छोटा सा भी झूठ गढ़ता और सारा अरब इसका विरोधी न होकर समर्थन में खड़ा हो जाता तब भी इस रसूल को अल्लाह की पकड़ से बचा नहीं सकता था।

70- सूरः अल-मआरिज

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 45 आयतें हैं ।

इसकी पहली आयत ही में अल्लाह तआला ने एक ऐसे अज़ाब से सतर्क किया है जिसे काफ़िर रोक नहीं सकते ।

फिर अल्लाह तआला को **ज़िल मआरिज** (ऊँचाइयों वाला) घोषित किया गया है अर्थात् उसकी ऊँचाई कई स्तरों युक्त आकाश पर ध्यान देने से किसी सीमा तक समझ में आ सकती है, अन्यथा उसकी ऊँचाइयों को कोई नहीं समझ सकता । यहाँ जिस ऊँचाई का वर्णन किया गया है, उस पर एक ऐसा विज्ञानिक प्रमाण मिलता है जिसका इस सूरः की आयत संख्या 5 में वर्णन है कि फ़रिश्ते उसकी ओर पचास हज़ार वर्षों में चढ़ते हैं । अब पचास हज़ार वर्षों में चढ़ने के दो अर्थ हो सकते हैं । प्रथम :- प्रचलित पचास हज़ार वर्ष । यदि यह अर्थ लिए जाएँ तो इसमें भी कोई संदेह नहीं कि संसार में प्रत्येक पचास हज़ार वर्ष के पश्चात ऐसा मौसमी परिवर्तन होता है कि सारी धरती बर्फ के ढेरों से ढक जाती है और फिर नए सिरे से सृष्टि का आरम्भ होता है ।

द्वितीय :- यह ध्यान देने योग्य बात है कि यहाँ पर **मिम्मा तउहून** (जिसे तुम गिनते हो) नहीं कहा गया । पवित्र कुरआन की एक दूसरी आयत जिसमें एक हज़ार वर्ष का वर्णन है, उसे इसके साथ मिला कर पढ़ा जाए तो अर्थ यह बनेगा कि जो तुम लोगों की गिनती है, उसके यदि एक हज़ार वर्ष गिने जाएँ तो अल्लाह तआला का प्रत्येक दिन उस एक हज़ार वर्ष के समान होगा । और यदि प्रत्येक दिन को एक वर्ष के दिनों से गुणा किया जाए और फिर उसको पचास हज़ार वर्षों के दिनों से गुणा किया जाए तो जो अंक बनते हैं, वह अल्लाह के दिनों की अवधि को निश्चित करते हैं । अतः इस हिसाब से यदि पचास हज़ार वर्ष से जो अल्लाह तआला के दिन हैं उसे गुणा किया जाए तो अट्ठारह से बीस अरब वर्ष बन जाएँगे जो वैज्ञानिकों के निकट ब्रह्माण्ड की आयु है । $(1000 \times 50,000 \times 365 = 18,250,000,000)$ अर्थात् सृष्टि इस आयु को पहुँच कर अनस्तित्वता में समा जाती है और इसके बाद पुनः अनस्तित्व से अस्तित्व का निर्माण किया जाता है ।

यह इतनी दीर्घ अवधि है कि इसे मनुष्य बहुत दूर की बात समझता है परन्तु जब अज़ाब घटित होगा तो वह घड़ी बिल्कुल निकट दिखाई देगी । वह ऐसा अज़ाब होगा कि मनुष्य अपने सगे संबंधियों और अपने धन, जीवन तथा प्रत्येक वस्तु को उसके बदले में मुक्तिमूल्य स्वरूप दे कर उससे बचना चाहेगा, परन्तु ऐसा नहीं हो सकेगा । हाँ अज़ाब से पूर्व यदि मोमिनो में यह गुण हों कि वे अपनी नमाज़ पर डटे रहते हैं और सदा सोच समझ

कर अदा करते हैं और इसके अतिरिक्त अपनी पवित्रता की सुरक्षा के लिए उन सभी शर्तों को पूरा करते हैं जो उन पर लागू की गई हैं तो ये वे भाग्यवान हैं जो इस अज़ाब से पृथक रखे जाएंगे ।

आयत सं. 42 में फिर इस बात की चेतावनी दी गई कि अल्लाह तुम से बे परवाह है । अतः यदि तुम दुराचार से नहीं रुकोगे तो अल्लाह तआला इस बात पर समर्थ है कि तुम्हारे स्थान पर नवीन सृष्टि ले आए । अतः जिस अज़ाब के घटित होने का समाचार दिया गया है उसी के वर्णन पर यह सूरः समाप्त होती है ।



سُورَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسٌ وَارْبَعُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 11।

किसी पूछने वाले ने एक अवश्य घटित होने वाले अज़ाब के बारे में पूछा है 12। उसे काफ़िरों से कोई चीज़ टालने वाली नहीं 13।

(वह) सभी ऊँचाइयों के स्वामी, अल्लाह की ओर से है 14।

फ़रिश्ते और रूह उसकी ओर एक ऐसे दिन में चढ़ते हैं जिसकी गिनती पचास हज़ार वर्ष है 15।

अतः सम्यक रूप से धैर्य धारण कर 16।

निश्चित रूप से वे उसे बहुत दूर देख रहे हैं 17।

और हम उसे निकट देखते हैं 18।

जिस दिन आकाश पिघले हुए ताँबे की भाँति हो जाएगा 19।

और पर्वत धुनकी हुई ऊन की भाँति हो जाएंगे 110।

और कोई घनिष्ट मित्र किसी घनिष्ट मित्र का (हाल-चाल) नहीं पूछेगा 111।

वे उन्हें अच्छी प्रकार दिखला दिए जाएंगे। अपराधी यह चाहेगा कि काश वह उस दिन के अज़ाब से बचने के लिए मुक्तिमूल्य स्वरूप अपने पुत्रों को दे सके 112।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ وَاقِعٍ ②

لِّلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ دَافِعٌ ③

مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ ④

تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ
كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ⑤

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيلًا ⑥

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ بَعِيدًا ⑦

وَنَرَاهُ قَرِيبًا ⑧

يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ ⑨

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ⑩

وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا ⑪

يَبْصُرُونَهُمْ يَوْمَ الْمُجْرِمِ لَوْ يَفْقَدُ

مِّنْ عَذَابٍ يَوْمَئِذٍ بَيْنِيهِ ⑫

और अपनी पत्नी को और अपने भाई को 113।

और अपने कुल को भी जो उसे शरण देता था 114।

और उन सब को जो धरती में हैं। फिर वह (मुक्तिमूल्य) उसे उस अज़ाब से बचा ले 115।

सावधान ! निःसन्देह वह एक धुआँ विहीन आग की लपट है 116।

चमड़ी को उधेड़ देने वाली 117।

वह हर उस व्यक्ति को बुलाती है जिसने पीठ फेर ली और मुँह मोड़ लिया 118।

और (धन) इकट्ठा किया और संचय किया 119।

निःसन्देह मनुष्य बहुत अधिक लालची पैदा किया गया है 120।

जब उसे कोई कष्ट पहुँचता है तो अत्यन्त विलाप करने वाला होता है 121।

और जब उसे कोई भलाई पहुँचती है तो बड़ा कंजूस हो जाता है 122।

हाँ, नमाज़ पढ़ने वालों का मामला भिन्न है 123।

वे लोग जो अपनी नमाज़ पर सदैव कायम रहते हैं 124।

और वे लोग जिनके धन-सम्पत्ति में एक निश्चित अधिकार है 125।

माँगने वाले के लिए और वंचित रहने वाले के लिए 126।

और वे लोग जो प्रतिफल दिवस की पुष्टि करते हैं 127।

وَصَاحِبَتِهِ وَآخِيهِ ۝۱۳

وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤْوِيهِ ۝۱۴

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ثُمَّ يُنْجِيهِ ۝۱۵

كَأَلَا إِنَّهَا لَظَى ۝۱۶

نَزَاعَةً لِّلشَّوْىِ ۝۱۷

تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى ۝۱۸

وَجَمَعَ فَأَوْعَى ۝۱۹

إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلُقٌ هَلُوعًا ۝۲۰

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۝۲۱

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ۝۲۲

إِلَّا الْمَصْلِينَ ۝۲۳

الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ۝۲۴

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ۝۲۵

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ۝۲۶

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ۝۲۷

और वे लोग जो अपने रब्ब के अज़ाब से डरने वाले हैं |28|

निःसन्देह उनके रब्ब का अज़ाब ऐसा है जिससे बचा नहीं जा सकता |29|

और वे लोग जो अपने गुप्तांगों की सुरक्षा करने वाले होते हैं |30|

सिवाए अपनी पत्नियों के अथवा उन (स्त्रियों) के जिनके स्वामी उनके दाहिने हाथ हुए । अतः निःसन्देह वे धिक्कार योग्य नहीं हैं |31|

अतः जिसने इसके अतिरिक्त (कुछ और) चाहा तो यही वे हैं जो सीमा से बढ़ने वाले हैं |32|

और वे लोग जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञाओं की लाज रखने वाले हैं |33|

और वे लोग जो अपनी गवाहियों पर अटल रहने वाले हैं |34|

और वे लोग जो अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करते हैं |35|

यही वे हैं जिनसे स्वर्गों में सम्मानजनक व्यवहार किया जाएगा |36| (स्कू 1/7)

अतः उन लोगों को क्या हुआ था जिन्होंने इनकार किया कि वे तेरी ओर तेज़ी से दौड़े चले आते थे |37|

दाईं ओर से भी और बाईं ओर से भी, टोलियों में बंटे हुए |38|

क्या उनमें से प्रत्येक व्यक्ति यह आस लगाए हुए है कि वह नेमतों वाले स्वर्ग में प्रविष्ट किया जाएगा ? |39|

وَالَّذِينَ هُمْ مِنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ
مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٩﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَفِظُونَ ﴿٣٠﴾

إِلَّا عَلَىٰ أَرْوَاحِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣١﴾

فَمَنْ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الْعُدُونَ ﴿٣٢﴾

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ
رِعُونَ ﴿٣٣﴾

وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ ﴿٣٤﴾

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَىٰ صَلَاتِهِمْ
يَحَافِظُونَ ﴿٣٥﴾

أُولَٰئِكَ فِي جَنَّةٍ مُّكْرَمُونَ ﴿٣٦﴾

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا قِبَلَكَ مَهْطَعِينَ ﴿٣٧﴾

عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ ﴿٣٨﴾

أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ
جَنَّةَ نَعِيمٍ ﴿٣٩﴾

कदापि नहीं ! निःसन्देह हमने उनको उस चीज़ से पैदा किया जिसे वे जानते हैं । 40।

अतः सावधान ! मैं पूर्वी दिशाओं और पश्चिमी दिशाओं के रब्ब की कसम खाता हूँ, निश्चित रूप से हम समर्थ हैं । 41।

इस पर कि, उन्हें परिवर्तित कर के हम उनसे श्रेष्ठ ले आएँ । और हम से आगे बढ़ा नहीं जा सकता । 42।*

अतः उन्हें छोड़ दे, वे व्यर्थ बातों में और खेल-कूद में लगे रहें, यहाँ तक कि वे अपने उस दिन को देख लें जिसका उन्हें वचन दिया जाता है । 43।

जिस दिन वे क़ब्रों से तीव्रता पूर्वक निकलेंगे, मानो वे कुर्बानगाहों की ओर दौड़े जा रहे हों । 44।

इस अवस्था में कि उनकी आँखें झुकी हुई होंगी । उन पर अपमान छा रहा होगा । यह वह दिन है जिसका उन्हें वादा दिया जाता था । 45। (रुकू $\frac{2}{8}$)

كَأَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِمَّا يَعْلَمُونَ ۝

فَلَا أَقْسَمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ
إِنَّا لَقَدِرُونَ ۝

عَلَىٰ أَنْ تُبَدِّلَ حَيْرًا مِنْهُمْ ۚ وَمَا نَحْنُ
بِمُسْبِقِينَ ۝

فَذَرَهُمْ يَخُوضُوا وَيَلْعَبُوا حَتَّىٰ يُلَاقُوا
يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ ۝

يَوْمَ يُخْرِجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا
كَأَنَّهُمْ إِلَىٰ نُصَبٍ يُوْفِّضُونَ ۝

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهُقُهُمْ ذِلَّةٌ
ذٰلِكَ الْيَوْمِ الَّذِي كَانُوا يُوعَدُونَ ۝

* आयत सं. 41 से 42 : इन आयतों में पूर्वी और पश्चिमी दिशाओं के रब्ब को साक्षी ठहराया गया है । अर्थात् भविष्यवाणी है कि एक ऐसा युग आएगा जब कई प्रकार के पूर्व और पश्चिम मुहावरों में प्रयोग किये जाएंगे । जैसे मध्यपूर्व, निकटपूर्व और सुदूरपूर्व इत्यादि । दूसरा इसमें यह आश्चर्यजनक तथ्य का वर्णन है कि अल्लाह तआला इस बात पर पूर्ण रूप से समर्थ है कि यदि वह चाहे तो मनुष्यों से उत्तम जीव को इस संसार में ला सकता है ।

71- सूर: नूह

यह सूर: मक्का निवास के आरम्भिक काल में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 29 आयतें हैं ।

पिछली सूर: के अंत में कहा गया था कि हम इस बात पर समर्थ हैं कि तुम से श्रेष्ठ लोग पैदा कर दें । अब इस सूर: में कहा गया है कि नूह की जाति को मिले अज़ाब में छोटे रूप में यही स्थिति पैदा हुई थी कि पूरी की पूरी जाति डुबो दी गई सिवाए कुछ एक के जिन्होंने नूह अलै. की नौका में शरण ली थी । फिर उन लोगों से जो हज़रत नूह अलै. के साथ थे, एक नई और उत्तम पीढ़ी का आरम्भ किया गया ।

आयत सं. 5 में अल्लाह की निश्चित किए हुए समय का वर्णन है कि जब वह आएगा तो फिर तुम उसे टाल नहीं सकोगे । यह पिछली सूर: के विषयवस्तु की पुनरावृत्ति है ।

इसके पश्चात हज़रत नूह अलै. के अनुनय-विनय और प्रचार कार्य का उल्लेख किया गया कि केवल संदेश पहुँचा देना पर्याप्त नहीं हुआ करता बल्कि उस संदेश को समझाने के लिए एक नबी को एक प्रकार से अपने प्राण को संकट में डालना पड़ता है । ऐसा कोई उपाय वह नहीं छोड़ता जिससे अपनी जाति के बड़ों और छोटों को समझाया जा सकता हो । वह कभी अनुनय-विनय करके और कभी छिप-छिप कर समझाता है ताकि जाति के ऊँचे लोग, जनसाधारण के सामने सत्य को स्वीकार करके लज्जा का अनुभव न करें । कभी खुल्लम-खुल्ला उद्घोषणा कर के प्रचार करता है ताकि जन-साधारण को भी नबी से सीधा संदेश पहुँचे । अन्यथा उनके नेता तो उस संदेश को परिवर्तित करके लोगों में प्रस्तुत करेंगे । फिर कभी उन्हें लालच दिलाता है कि देखो ! यदि तुम ईमान ले आओगे तो आकाश से तुम पर कृपा-वृष्टि होगी । और कभी भयभीत कराता है कि यदि ईमान नहीं लाओगे तो आकाश से कृपा-वृष्टि के बदले अत्यन्त विनाशकारी वर्षा होगी और धरती भी तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकेगी । बल्कि धरती से भी विनाश के स्रोत फूट पड़ेंगे । तब इस प्रकार बात पूरी हो जाने के पश्चात् अन्ततः उनको समाप्त कर दिया गया और एक नई जाति की नींव डाली गई ।

अतः हज़रत नूह अलै. ने जो यह दुआ की थी कि अल्लाह तआला काफ़िरों में से किसी को शेष न छोड़े और सभी को विनष्ट कर दे । यह दुआ इस आधार पर की थी कि अल्लाह तआला ने आप को यह बता दिया था कि अब यदि ये लोग जीवित रखे गए तो ये केवल अवज्ञाकारी और दुराचारी को पैदा करेंगे । इनकी संतानों से अब मोमिन पैदा होने की आशा समाप्त हो चुकी है । अतः जब अल्लाह के भक्तगण इस प्रकार बात पूरी

कर दिया करते हैं तब उनका यह अधिकार बनता है कि विरोधियों के विनाश की दुआ करें ।

इसके अतिरिक्त इस सूरः में यह भी वर्णन है कि हज़रत नूह अलै. ने अपनी जाति को ध्यान दिलाते हुए यह कहा कि तुम अल्लाह तआला को एक गरिमाशाली सत्ता के रूप में क्यों स्वीकार नहीं करते ? उसने तुम्हें भी तो कई स्तरों में आगे बढ़ाते हुए पूर्णता को पहुँचाया है । और यही बात आकाश के कई स्तरीय ऊँचाइयों से प्रमाणित होती है । यह विषय एक प्रकार से उस जाति की समझ से परे था । न उसे अपने अतीत का ज्ञान था कि कैसे कई स्तरों से होते हुए वे पैदा हुए, न अपने भविष्य का ज्ञान था । न वे आकाश की अनेक स्तरों वाली ऊँचाइयों का ज्ञान रखते थे । संभवतः यह एक भविष्यवाणी है कि भविष्य में जब एक नई **कश्ती-ए-नूह** बनाई जाएगी तो उस युग के लोगों को इन सब बातों का ज्ञान हो चुका होगा । फिर भी यदि वे अनेकेश्वरवाद के फैलाने से न रुके और उन पर प्रत्येक प्रकार से बात पूरी कर दी गई तो अन्ततः उनके लिए यह दुआ अवश्य पूरी हो कर रहेगी :- **1. फ़ सह हिक हुम तस्हीकन 2. व ला तज़र अलल अर्ज़ि मिनल काफ़िरी न शरीरन** । अर्थात् 1. हे अल्लाह ! तू इन्हें पीस कर रख दे । 2. हे अल्लाह ! धरती में किसी दुष्ट काफ़िर को मत छोड़ ।



سُورَةُ نُوحٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

निःसन्देह हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा कि तू अपनी जाति को सतर्क कर, इससे पूर्व कि उनके पास पीड़ा जनक अज़ाब आ जाए ।2।

उसने कहा, हे मेरी जाति ! निःसन्देह मैं तुम्हारे लिए एक खुला-खुला सतर्क करने वाला हूँ ।3।

कि अल्लाह की उपासना करो और उसका तक्रवा धारण करो और मेरा आज्ञापालन करो ।4।

वह तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और एक निर्धारित समय तक ढील देगा । निःसन्देह अल्लाह का (निश्चित किया हुआ) समय जब आ जाता है तो उसे टाला नहीं जा सकता । काश तुम जानते ! ।5।

उसने कहा, हे मेरे रब्ब ! मैंने अपनी जाति को रात को भी और दिन को भी आमंत्रित किया ।6।

अतः मेरे निमंत्रण ने उन्हें भागने के सिवा किसी चीज़ में नहीं बढ़ाया ।7।

और निःसन्देह जब कभी मैंने उन्हें निमंत्रण दिया, ताकि तू उन्हें क्षमा कर दे उन्होंने अपनी उंगलियाँ अपने कानों में डाल लीं । और अपने कपड़े

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِنَّا أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ①

قَالَ يَقُومُ إِلَيَّ لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ②

أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاتَّقُوهُ وَأَطِيعُوا ③

يَغْفِرْ لَكُمْ مِنْ ذُنُوبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ④ إِنَّ أَجَلَ اللَّهِ إِذَا جَاءَ لَا يُؤَخَّرُ ⑤ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ⑥

قَالَ رَبِّ إِنِّي دَعَوْتُ قَوْمِي لَيْلًا وَنَهَارًا ⑦

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَائِي إِلَّا فِرَارًا ⑧

وَإِنِّي كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوا أَصَابِعَهُمْ فِي آذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا

लपेट लिए और बहुत हठ किया और बड़े अहंकार का प्रदर्शन किया ।8।

फिर मैंने उन्हें ऊँची आवाज़ से भी निमंत्रण दिया ।9।

फिर मैंने उनके लिए घोषणाएँ भी कीं और बहुत गुप्त रूप से भी काम लिया ।10।

अतः मैंने कहा, अपने रब्ब से क्षमा माँगो निःसन्देह वह बहुत क्षमा करने वाला है ।11।

वह तुम पर लगातार बरसने वाला बादल भेजेगा ।12।

और वह धन और संतान के साथ तुम्हारी सहायता करेगा । और तुम्हारे लिए बागान बनाएगा और तुम्हारे लिए नहरें जारी करेगा ।13।

तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह से किसी गरिमा की आशा नहीं रखते ? ।14।

हालाँकि उसने तुम्हें अनेक ढंगों से पैदा किया ।15।

क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने सात आकाशों को किस प्रकार अनेक स्तरों में पैदा किया ? ।16।

और उसने उनमें चन्द्रमा को एक प्रकाशमय और सूर्य को एक उज्ज्वल प्रदीप बनाया ।17।

और अल्लाह ने तुम्हें धरती से वनस्पति की भाँति उगाया ।18।

फिर वह तुम्हें उस में वापस कर देगा और तुम्हें एक नए रंग में

ثَبَّاهُمْ وَأَصْرُوا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝۸

ثُمَّ إِنِّي دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝۹

ثُمَّ إِنِّي أَعْلَتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۝۱०

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوا رَبَّكُمْ ۖ إِنَّهُ كَانَ غَفَّارًا ۝۱१

يُرْسِلُ السَّمَاءَ عَلَيْكُمْ مِدْرَارًا ۝۱२

وَيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَيَجْعَلْ لَكُمْ جَنَّاتٍ وَيَجْعَلْ لَكُمْ أَنْهَارًا ۝۱३

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُونَ لِلَّهِ وَقَارًا ۝۱४

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا ۝۱५

أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللَّهُ سَبْعَ سَمَوَاتٍ طِبَاقًا ۝۱६

وَجَعَلَ الْقَمَرَ فِيهِنَّ نُورًا وَجَعَلَ الشَّمْسُ سِرَاجًا ۝۱७

وَاللَّهُ أَنْبَتَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۝۱८

ثُمَّ يُعِيدُكُمْ فِيهَا وَيُخْرِجُكُمْ

निकालेगा। 19।*

إِخْرَاجًا ۝

और अल्लाह ने धरती को तुम्हारे लिए
बिछाया हुआ बनाया। 20।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ۝

ताकि तुम उसके खुले-खुले रास्तों पर
चलो फिरो। 21। (रुकू 1/9)

يَسْأَلُكُمُ مِنْهَا سَبِيلًا ۖ فَجَا جَا ۝

नूह ने कहा, हे मेरे रब्ब ! निःसन्देह
उन्होंने मेरी अवज्ञा की और उसका
अनुसरण किया जिसे उसके धन और
संतान ने घाटे के अतिरिक्त और किसी
चीज़ में नहीं बढ़ाया। 22।

قَالَ نُوحٌ رَبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِي وَاتَّبَعُوا
مَنْ لَمْ يَزِدْهُ مَالَهُ وَوَلَدَهُ إِلَّا خَسَارًا ۝

और उन्होंने बहुत बड़ा षड़यन्त्र
किया। 23।

وَمَكْرُؤًا مَكْرًا كُبَّارًا ۝

और उन्होंने कहा, कदापि अपने
उपास्यों को न छोड़ो और न वद को
छोड़ो और न सुवा को और न ही
यगूस और यऊक और नस को
(छोड़ो)। 24।**

وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ
وَدًّا وَلَا سُوَاعًا ۚ وَلَا يَغُوثَ وَيَعُوقَ
وَنَسْرًا ۝

और उन्होंने बहुतों को पथभ्रष्ट कर
दिया और तू अत्याचारियों को

وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ

* आयत सं. 14 से 19 में मनुष्य के क्रमबद्ध रूप से विकास के विभिन्न दौर से गुज़र कर पैदा होने का वर्णन है। वे लोग जो यह समझते हैं कि अल्लाह तआला ने तत्काल सब कुछ इसी प्रकार पैदा कर दिया, वे अल्लाह तआला के गरिमाशाली होने का इनकार करते हैं क्योंकि एक गरिमाशाली सत्ता को कोई हड़बड़ी नहीं होती। वह प्रत्येक वस्तु को क्रमबद्ध रूप से विकसित करके ऊँचाई प्रदान करता है। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने आकाशों को भी कई स्तरों में उत्पन्न किया। इन आयतों के अंत पर कहा हमने तुम्हें धरती से वनस्पति की भाँति उगाया। यह केवल मुहावरा नहीं बल्कि वास्तव में मनुष्य उत्पत्ति एक ऐसे समय से गुज़री कि वह केवल वनस्पति सदृश थी। और दूसरी आयत में इस दृश्य को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि वह उल्लेखनीय वस्तु नहीं था। (अद दहर, आयत : 2) अर्थात् मनुष्य अपनी उत्पत्ति में ऐसे पड़ाव से भी होकर गुज़रा है कि वह कोई उल्लेखनीय वस्तु नहीं था। इसमें सूक्ष्म रूप से इस ओर भी संकेत है कि जब मनुष्य की उत्पत्ति वनस्पति दौर में से गुज़र रही थी तो उसमें आवाज़ निकालने अथवा आवाज़ सुनने के इन्द्रिय उत्पन्न नहीं हुए थे। उस वनस्पति कालीन जीवन पर पूर्ण रूप से खामोशी छाई थी।

** वद, सुवा, यगूस, यऊक और नस :- वे मूर्तियाँ जिनकी इस्लाम से पूर्व अरबवासी पूजा करते थे।

असफलता के अतिरिक्त और किसी चीज़ में न बढ़ाना ।25।

वे अपने पापों के कारण डुबोए गए फिर अग्नि में प्रविष्ट किए गए । अतः उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर अपने लिए कोई सहायक न पाया ।26।

और नूह ने कहा, हे मेरे रब्ब ! काफ़िरों में से किसी को धरती पर बसता हुआ न रहने दे ।27।

निःसन्देह यदि तू उनको छोड़ देगा तो वे तेरे भक्तों को पथभ्रष्ट कर देंगे । और कुकर्मों और बड़े कृतघ्नों के अतिरिक्त किसी को जन्म नहीं देंगे ।28।*

हे मेरे रब्ब ! मुझे क्षमा कर दे । और मेरे माता-पिता को भी । और उसे भी जो मोमिन बनकर मेरे घर में प्रविष्ट हुआ । और सब मोमिन पुरुषों को और सब मोमिन स्त्रियों को क्षमा कर दे । और तू अत्याचारियों को सर्वनाश के अतिरिक्त किसी चीज़ में न बढ़ाना ।29।

(रुकू 2/10)

إِلَّا ضَلَالًا ۝۲۵

مِمَّا خَطِيئَتُهُمْ أُغْرِقُوا فَأَذْخَلُوا نَارًا ۝
فَلَمْ يَجِدُوا لَهُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ أَنْصَارًا ۝۲۶

وَقَالَ نُوحٌ رَبِّ لَا تَذَرْنِي عَلَى الْأَرْضِ
مِنَ الْكَافِرِينَ دَيَّارًا ۝۲۷

إِنَّكَ إِن تَذَرَهُمْ يَضِلُّوا عِبَادَكَ
وَلَا يَلْدُوا إِلَّا فَاِجْرًا كَفَّارًا ۝۲۸

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ
بَيْتِي مُؤْمِنًا وَلِلْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۝
وَلَا تَزِدِ الظَّالِمِينَ إِلَّا تَبَارًا ۝۲۹

* आयत सं. 27-28 हज़रत नूह अलै. की अपनी जाति के लिए जिस अहित-कामना का वर्णन है वह इस लिए था कि अल्लाह तआला ने उन को सतर्क कर दिया था कि अब यह जाति अथवा इसकी आगे की पीढ़ियाँ कभी ईमान नहीं लाएंगी । हज़रत नूह अलै. को व्यक्तिगत रूप से तो इस बात का ज्ञान नहीं हो सकता था । अवश्य अल्लाह तआला की ओर से ज्ञान पाकर उन्होंने ने यह अहित-कामना की थी ।

72- सूरः अल-जिन्न

यह सूरः मक्का में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 29 आयतें हैं ।

इस सूरः का सूरः नूह से एक सम्बन्ध यह प्रतीत होता है कि इसमें भी लोगों को यह शुभ-समाचार दिया गया है कि तुम यदि इस संदेश को स्वीकार कर लोगे तो आकाश से तुम पर अधिकता के साथ कृपावृष्टि होगी और यदि नहीं करोगे तो तुम्हें सदा बढ़ते रहने वाले एक अज़ाब में डाल दिया जाएगा । सूरः नूह में जिस विनाशकारी बाढ़ का वर्णन है वह भी एक लगातार बढ़ते रहने वाली बाढ़ थी ।

अब हम इस सूरः के विषयवस्तु पर दृष्टि डालते हैं कि इसमें जिन्नों के सदंर्भ में कुछ बहुत महत्वपूर्ण विषयवस्तु छेड़े गए हैं । विद्वानों का विचार है कि यहाँ जिन्नों से अभिप्राय अग्नि से बने हुए कोई अदृश्य जीव थे । हालाँकि प्रामाणिक हदीसों से सिद्ध है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने पास आये हुए एक शिष्ट मंडल से, जिसके सदस्य इन अर्थों में जिन्न थे कि वे अपनी जाति के बड़े लोग थे, जब उनकी भेंट हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हुई तो उन्होंने अपना भोजन तैयार करने के लिए वहाँ आग जलाई थी । अतएव यहाँ पर कदापि किसी काल्पनिक जिन्न का वर्णन नहीं है ।

इसके अतिरिक्त उन्होंने जिन महत्वपूर्ण विषयों का वर्णन छेड़ा है उनमें से एक यह भी है कि हम में से कुछ मूर्ख लोग विचित्र प्रकार की अज्ञानता की बातें अल्लाह तआला के साथ जोड़ा करते थे । इसी प्रकार हम में यह विचारधारा भी प्रचलित हो गई थी कि अब अल्लाह तआला कभी किसी नबी को नहीं भेजेगा । उन्होंने इस विचारधारा को इस कारण गलत घोषित कर दिया क्योंकि वे अपनी आँखों से एक महान नबी का दर्शन कर चुके थे ।

इसके पश्चात मस्जिदों के सम्बन्ध में कहा कि वह विशुद्ध रूप से अल्लाह के लिए बनाई जाती हैं । उनमें किसी और की उपासना उचित नहीं । फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उपासना शैली का वर्णन है कि उपासना के बीच में आप सल्ल. को कई प्रकार के शोक और चिंताएँ घेर लिया करती थीं और बार बार ध्यान भंग करने का प्रयत्न करती थीं । परन्तु आपका ध्यान इस के बावजूद पूर्णतया अल्लाह ही के लिए हुआ करता था । जबकि मनुष्य हर दिन यह देखता है कि उसकी खुशियाँ और उसके दुःख, उसके ध्यान को उपासना से हटाने में सफल हो जाया करते हैं ।

यहाँ एक बार फिर इस बात को दोहराया गया है कि जिस अज़ाब को तुम बहुत दूर देख रहे हो कोई नहीं कह सकता कि वह निकट है अथवा दूर । जब अज़ाब की घड़ी

आ जाए तो फिर चाहे उसे मनुष्य कितना ही दूर समझे उसे अवश्य निकट देखता है ।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अदृश्य का ज्ञान अधिकता पूर्वक दिया गया । आप सल्ल. स्वयं अदृश्य द्रष्टा नहीं थे बल्कि अल्लाह तआला यह ज्ञान सदा अपने रसूलों को ही प्रदान किया करता है जो अपने आप में अदृश्य विषय का कोई ज्ञान नहीं रखते परन्तु जो अदृश्य विषय उनको बताया जाता है वह अवश्य पूरा हो कर रहता है । इसी प्रकार वे फ़रिश्ते जो रसूल की वहइ ले कर आते हैं, वे आगे और पीछे उसकी सुरक्षा करते हुए चलते हैं ताकि शैतान उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन न कर सकें । अतः अल्लाह के महान रसूलों के बाद भी कई उनके अधीनस्थ रसूल आया करते हैं जो उस वहइ का सही अर्थ बताते हुए उसकी सुरक्षा करते हैं ।

☆☆☆

سُورَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ تِسْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

तू कह दे मेरी ओर वहइ किया गया है कि जिन्नों के एक समूह ने (कुरआन को) ध्यान से सुना, तो उन्होंने कहा, निःसन्देह हमने एक अद्भुत कुरआन सुना है ।2।

जो भलाई की ओर मार्गदर्शन करता है। अतः हम उस पर ईमान ले आए । और हम कदापि किसी को अपने रब्ब का साझीदार नहीं ठहराएंगे ।3।

और (कहा) कि निःसन्देह हमारे रब्ब की शान ऊँची है । उसने न कोई पत्नी अपनाई और न कोई पुत्र ।4।

और निश्चित रूप से हम में से एक मूर्ख व्यक्ति अल्लाह पर बढ़-बढ़ कर बातें किया करता था ।5।

और निःसन्देह हम सोचा करते थे कि मनुष्य और जिन्न अल्लाह पर कदापि झूठ नहीं बोलेंगे ।6।

और निःसन्देह जन-साधारण में से कई ऐसे थे जो बड़े लोगों की शरण में आ जाते थे । अतः उन्होंने उनको कुकर्मों और अज्ञानता में बढ़ा दिया ।7।

और उन्होंने भी धारण की थी जैसे तुम ने धारण कर ली कि अल्लाह कदापि किसी को नहीं भेजेगा ।8।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ١

قُلْ أَوْحَىٰ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا عَجَبًا ٢

يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَنْ نُشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ٣

وَأَنَّهُ تَعَلَّىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ٤

وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ٥

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّنْ نَقُولَ الْإِنسَ وَالْجِنُّ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ٦

وَأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنسِ يَعُوذُونَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوهُمْ رَهَقًا ٧

وَأَنَّهُمْ ظَنُّوا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَن لَّنْ يَبْعَثَ اللَّهُ أَحَدًا ٨

और निःसन्देह हमने आकाश को टटोला तो उसे सशक्त रक्षकों और आग की लपटों से भरा हुआ पाया ।9।

और निःसन्देह हम सुनने के लिए उसकी वेधशालाओं पर बैठे रहते थे ।

अतः जो अब सुनने का प्रयत्न करता है, वह एक अग्निशिखा को अपनी घात में पाता है ।10।*

और निःसन्देह हम नहीं जानते थे कि क्या जो भी धरती में हैं उनके लिए बुरा चाहा गया है अथवा उनके रब्ब ने उनसे भलाई करने का इरादा किया है ? ।11।

और निःसन्देह हम में कुछ नेक लोग थे और कुछ हम में से उनसे भिन्न भी थे । हम विभिन्न सम्प्रदायों में बटे हुए थे ।12।

और अवश्य हमने विश्वास कर लिया था कि हम कदापि अल्लाह को धरती में असमर्थ नहीं कर सकेंगे । और हम भागते हुए भी उसे मात नहीं दे सकेंगे ।13।

और निश्चित रूप से जब हमने हिदायत की बात सुनी, उस पर ईमान ले आए ।

وَأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاءَ فَوَجَدْنَاهَا مُلِئَتْ
حَرَّاسًا شَدِيدًا وَشُهَبًا ۝۹

وَأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۖ
فَمَنْ يَسْمَعِ الْآنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَصَدًا ۝۱۰

وَأَنَّا لَا نَدْرِي أَشَرٌّ أُرِيدَ بِمَنْ فِي
الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۝۱۱

وَأَنَّا مِنَّا الصَّالِحُونَ وَمِمَّا دُونَ ذَلِكَ ۖ
كُنَّا ظُرَاقًا قَدَدًا ۝۱۲

وَأَنَّا ظَنَنَّا أَن لَّنْ نُعْجِزَ اللَّهَ فِي الْأَرْضِ
وَلَنْ نُّعْجِزَهُ هَرَبًا ۝۱۳

وَأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدَىٰ أُمَّا بِهِ ۖ

* आयत सं 2 से 10 : इन आयतों में दो बातें विशेष रूप से स्पष्ट करने योग्य हैं । ये जिन्न जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुए थे, ये अपनी जाति के बड़े लोग थे और वे उस प्रकार के काल्पनिक जिन्न नहीं थे जिनकी कल्पना की जाती है । फिर उन्होंने अपना भोजन पकाने के लिए वहाँ आग भी जलाई और सहाबा रज़ि. ने उसके बाद वहाँ उनके बुझे हुए कोयले और भोजन की तैयारी के चिह्न भी देखे । इनके बारे में दृढ़ विचार यह है कि ये अफ़ग़ानिस्तान में बसे बनी इस्राईल के एक प्रतिनिधि मण्डल का वर्णन है जो अपनी जाति के सरदार और बड़े लोग अर्थात् जिन्न थे । उन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगमन का समाचार सुन कर स्वयं जा कर देखने का निर्णय किया था । उन्होंने लम्बे तर्क-वितर्क के पश्चात न केवल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दिल से सच्चा स्वीकार कर लिया बल्कि उस झूठे सिद्धान्त का भी इन्कार किया कि हम मूर्खों की भाँति यह समझा करते थे कि अब अल्लाह कोई नबी नहीं भेजेगा । इसके बाद ये लोग अपनी जाति की ओर वापस गये और उस समय के समग्र→

अतः जो भी अपने रब्ब पर ईमान लाए तो वह न किसी कमी का भय रखेगा और न किसी अत्याचार का ।।14।

और निःसन्देह हममें से आज्ञाकारी भी थे और हम ही में से अत्याचार करने वाले भी थे । अतः जिसने भी आज्ञापालन किया, तो यही वे हैं जिन्होंने हिदायत की खोज की ।।15।

और वे जो अत्याचारी थे, वे तो नरक का ईंधन बन गए ।।16।

और यदि वे (अर्थात् मक्का वासी) सही विचारधारा पर अडिग रहते तो हम उन्हें अवश्य प्रचुर मात्रा में जल प्रदान करते ।।17।

ताकि हम उस के द्वारा उनकी परीक्षा करें । और जो अपने रब्ब के स्मरण से मुंह मोड़े उसे वह सदा बढ़ते रहने वाले एक अज्ञाब में झोंक देगा ।।18।

और निश्चित रूप से मस्जिदें अल्लाह ही के लिए हैं । अतः अल्लाह के साथ किसी (और) को न पुकारो ।।19।

और निःसन्देह जब भी अल्लाह का भक्त उसको पुकारते हुए खड़ा हुआ तो वे झुंड के झुंड उस पर टूट पड़ने के निकट होते हैं ।।20।* (रुकू 1/11)

तू कह दे मैं केवल अपने रब्ब को पुकारूँगा और उसके साथ किसी को साझीदार नहीं ठहराऊँगा ।।21।

فَمَنْ يُؤْمِنُ بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا
وَلَا رَهَقًا ۝۱۴

وَ أَنَا مِنَّا الْمُسْلِمُونَ وَمِنَّا الْقَاسِطُونَ ۝
فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولَٰئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ۝۱۵

وَأَمَّا الْقَاسِطُونَ فَكَانُوا لِجَهَنَّمَ
حَطَبًا ۝۱۶

وَ أَن لَّوِ اسْتَقَامُوا عَلَى الطَّرِيقَةِ
لَأَسْقَيْنَهُمْ مَّاءً غَدَقًا ۝۱۷

لِنَقْتَبَهُمْ فِيهِ ۝ وَمَنْ يَعْزُضْ عَنْ ذِكْرِ
رَبِّهِ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۝۱۸

وَ أَنَّ الْمَسْجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدْعُوا مَعَ اللَّهِ
أَحَدًا ۝۱۹

وَأَنَّهُ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللَّهِ يَدْعُوهُ كَادُوا
يَكُونُونَ عَلَيْهِ لِبَدًا ۝۲۰

قُلْ إِنَّمَا أَدْعُوا رَبِّي وَلَا أُشْرِكُ بِهِ
أَحَدًا ۝۲۱

← अफ़ग़ानिस्तान को मुसलमान बना लिया ।

* इस अर्थ के लिए देखें मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि.

तू कह दे कि मैं तुम्हें न किसी प्रकार की हानी पहुँचाने की और न किसी प्रकार की भलाई पहुँचाने की शक्ति रखता हूँ ।22।

तू कह दे कि मुझे अल्लाह के मुकाबले पर कदापि कोई आश्रय नहीं दे सकेगा । और मैं उसे छोड़ कर कदापि कोई आश्रय स्थल नहीं पाऊँगा ।23।

परन्तु अल्लाह की ओर से प्रचार करते हुए और उसके संदेशों को पहुँचाते हुए* और जो अल्लाह की और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा तो निःसन्देह उसके लिए नरक की अग्नि होगी । वे दीर्घ काल तक उसमें रहने वाले होंगे ।24।

यहाँ तक कि जब वे उसे देख लेंगे । जिससे उन्हें डराया जाता है तो वे अवश्य जान लेंगे कि सहायक के रूप में कौन सबसे अधिक दुर्बल और संख्या की दृष्टि से सबसे कम था ।25।

तू कह दे, मैं नहीं जानता कि जिससे तुम डराए जाते हो वह निकट है अथवा मेरा रब्ब उसकी अवधि को लम्बा कर देगा ।26।

वह अदृश्य का ज्ञाता है । अतः वह किसी को अपने अदृश्य (मामलों) पर प्रभुत्व प्रदान नहीं करता ।27।

सिवाए अपने मनोनीत रसूल के । फिर निश्चित रूप से वह उसके आगे और उसके पीछे सुरक्षा करते हुए चलता है ।28।

قُلْ إِنِّي لَا أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَلَا رَشَدًا ۝۲۲

قُلْ إِنِّي لَنْ يُجِيرَنِي مِنَ اللَّهِ أَحَدٌ ۚ وَلَنْ أَجِدَ مِنْ دُونِهِ مُلْتَحَدًا ۝۲۳

إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللَّهِ وَرِسَالَةً ۖ وَمَنْ يَعْصِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ لَهُ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا أَبَدًا ۝۲۴

حَتَّىٰ إِذَا رَأَوْا مَا يُوعَدُونَ فَيَسْأَلُونَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَأَقَلُّ عَدَدًا ۝۲۵

قُلْ إِن أَدْرِيٓٓٓ أَقْرَبُ مَا تُوعَدُونَ أَمْ يَجْعَلُ لَهُ رَبِّيٓٓٓ أَمَدًا ۝۲۶

عَلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلَىٰ غَيْبِهِ أَحَدًا ۝۲۷

إِلَّا مَنِ ارْتَضَىٰ مِنْ رَسُولٍ فَإِنَّهُ يَسْلُكُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ رَصَدًا ۝۲۸

ताकि वह जान ले कि वे (रसूल) अपने
रब्ब के संदेश को खूब स्पष्ट करके
पहुँचा चुके हैं। और जो उन के पास है
वह उसको घेरे हुए है और संख्या की
दृष्टि से प्रत्येक वस्तु को उसने गिन
रखा है। 29। (रुकू $\frac{2}{12}$)

يَعْلَمَ أَنَّ قَدْ أَبْلَغُوا رِسَالَتِ رَبِّهِمْ
وَإِحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصَى كُلَّ شَيْءٍ
عَدَدًا ۝
٤١

73- सूरः अल-मुज़ज़म्मिल

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक समय में उतरी थी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 21 आयतें हैं ।

इससे पूर्ववर्ती सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उपासना करने की शैली का उल्लेख किया गया था । उसका विवरण इस सूरः के आरम्भ ही में मिलता है जो संक्षेप में इस प्रकार है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रातों का अधिकतर भाग जाग कर अनुनय पूर्वक उपासना करने में बिताते थे । इन्द्रियनिग्रह का इससे उत्तम और कोई उपाय नहीं कि मनुष्य रात्रि को उठ कर उपासना के द्वारा अपनी आत्मलिप्साओं को कुचल डाले ।

इस सूरः में एक बार फिर हज़रत मूसा अलै. के साथ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की समानता वर्णन की गई है कि आप सल्ल. भी एक शरीयत धारक और ओजस्वी रसूल हैं । अतः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समक्ष उपस्थित लोगों को चेतावनी दी गई है कि हज़रत मूसा अलै. से बढ़ कर ओजस्वी रसूल प्रकट हो चुका है । इसका विरोध करने से तुम्हारे सर्वनाश के अतिरिक्त और कोई परिणाम नहीं निकलेगा । जैसा कि हज़रत मूसा अलै. का विरोध करके एक बहुत बड़े अत्याचारी ने उन के संदेश को नकारने का दुस्साहस किया था तब उसे विनष्ट कर दिया गया ।



سُورَةُ الْمُرْمِلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ إِحْدَى وَعِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

हे अच्छी प्रकार चादर में लिपटने वाले ! ।2।

रात्रि को (उपासनार्थ) खड़ा हुआ कर, परन्तु थोड़ा ।3।

उसका आधा अथवा उससे कुछ थोड़ा सा कम कर दे ।4।

अथवा उस पर (कुछ) बढ़ा दे और कुरआन को खूब निखार कर पढ़ा कर ।5।

निःसन्देह हम तुझ पर एक भारी आदेश उतारेंगे ।6।

रात्रि को उठना निःसन्देह (आत्मलिप्सा को) पाँव तले कुचलने के लिए अधिक प्रभावकारी और (साफ सीधी) बात करने में सर्वाधिक दृढ़ता (प्रदानकारी) है ।7।

निःसन्देह तेरे लिए दिन को बहुत लम्बा काम होता है ।8।

अतः अपने रबब के नाम का स्मरण कर और पूर्ण रूपेण पृथक होकर उसकी ओर झुक जा ।9।

वह पूर्व और पश्चिम का रबब है । उसके सिवा और कोई उपास्य नहीं ।

अतः कार्यसाधक के रूप में उसे अपना ले ।10।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

يَا أَيُّهَا الْمُرْمِلُ ②

قُمْ آتَيْلْ إِلَّا قَلِيلًا ③

نُصْفَهُ أَوْ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيلًا ④

أَوْزِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْآنَ تَرْتِيلًا ⑤

إِنَّا سَنُلْقِي عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيلًا ⑥

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْئًا
وَأَقْوَمُ قِيلًا ⑦

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيلًا ⑧

وَاذْكُرْ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ
تَبَتُّلًا ⑨

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ
فَاتَّخِذْهُ وَكِيلًا ⑩

और जो वे कहते हैं उस पर धैर्य धर और उनसे अच्छे रंग में अलग हो जा 111।

और मुझे और ऐश्वर्य में पलने वाले झुठलाने वालों को (अलग) छोड़ दे और उन्हें कुछ ढील दे 112।

निःसन्देह हमारे पास शिक्षाप्रद कई साधन हैं और नरक भी है 113।

और गले में फंस जाने वाला एक भोजन और पीड़ाजनक अज़ाब भी है 114।

जिस दिन धरती और पहाड़ खूब प्रकम्पित होंगे और पहाड़ भुरभुरे टीलों के समान हो जाएंगे 115।

निःसन्देह हमने तुम्हारी ओर एक रसूल भेजा है जो तुम्हारा निरीक्षक है। जैसा कि हमने फिरौन की ओर भी एक रसूल भेजा था 116।

अतः फिरौन ने उस रसूल की अवमानना की तो हमने उसे एक कठोर पकड़ में जकड़ लिया 117।

अतः यदि तुमने इनकार किया तो तुम उस दिन से कैसे बच सकोगे जो बच्चों को बूढ़ा बना देगा 118।

आकाश उस (के भय) से फट जाएगा। उसका (यह) वादा अवश्य पूरा होने वाला है 119।

निःसन्देह यह एक बड़ा शिक्षाप्रद उपदेश है। अतः जो चाहे अपने रब्ब की ओर (जाने वाला) रास्ता अपना ले 120।

(रुकू 1/13)

وَاصْبِرْ عَلَىٰ مَا يَقُولُونَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيلًا ۝

وَذَرْنِي وَالْمُكَذِّبِينَ أُولِيَ النَّعْمَةِ وَمَهْلَهُمْ قَلِيلًا ۝

إِن لَّدَيْنَا أَنكَالًا وَجَحِيمًا ۝

وَطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَعَذَابًا أَلِيمًا ۝

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيبًا مَّهِيلًا ۝

إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَيْكُمْ رَسُولًا شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ رَسُولًا ۝

فَعَصَىٰ فِرْعَوْنُ الرَّسُولَ فَأَخَذْنَاهُ أَخْذًا وَبِيلًا ۝

فَكَيْفَ تَتَّقُونَ إِن كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيبًا ۝

السَّمَاءُ مُنْفَطِرٌ بِهِ ۚ كَانَ وَعْدُهُ مَفْعُولًا ۝

إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۖ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذْ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝

ع

निःसन्देह तेरा रब्ब जानता है कि तू रात का लगभग दो तिहाई भाग अथवा उसका आधा अथवा उसका तीसरा भाग (उपासनार्थ) खड़ा रहता है। और उन लोगों का एक दल भी जो तेरे साथ (खड़े रहते) हैं। और अल्लाह रात और दिन को घटाता बढ़ाता रहता है। और वह जानता है कि तुम कदापि इस (रीति) को निभा नहीं सकोगे। अतः वह तुम पर दयापूर्वक झुक गया है। अतः कुरआन में से जितना सम्भव हो पढ़ लिया करो। वह जानता है कि तुम में से रोगी भी होंगे। और दूसरे भी जो धरती में अल्लाह की कृपा चाहते हुए यात्रा करते हैं। और कुछ और भी जो अल्लाह के मार्ग में युद्ध करेंगे। अतः उसमें से जो भी सम्भव हो पढ़ लिया करो। और नमाज़ को कायम करो। और ज़कात दिया करो और अल्लाह को उत्तम ऋण दान करो। और अच्छी चीज़ों में से जो भी तुम स्वयं अपने लिए आगे भेजोगे तो वही है जिसे तुम अल्लाह के समक्ष उत्तम और प्रतिफल की दृष्टि से श्रेष्ठ पाओगे। अतः अल्लाह से क्षमा याचना करो। निःसन्देह अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है। 121। (रुकू 2/14)

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُومُ أَدْنَىٰ مِنْ ثُلُثَيِ
الَّيْلِ وَنِصْفَهُ وَثُلُثَهُ وَطَائِفَةٌ مِّنَ الَّذِينَ
مَعَكَ ۗ وَاللَّهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۚ عَلِمَ أَن
لَّنْ تَحْصُوهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوا مَا
تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ ۚ عَلِمَ أَن سَيَكُونُ مِنْكُمْ
مَّرْضَىٰ ۖ وَآخَرُونَ يَضْرِبُونَ فِي الْأَرْضِ
يَبْتَغُونَ مِن فَضْلِ اللَّهِ ۖ وَآخَرُونَ
يَقَاتِلُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۖ فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ
مِنْهُ ۚ وَاقِيمُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ
وَاقْرَءُوا وَاللَّهُ قَرِضًا حَسَنًا ۚ وَمَاتَّقَدِمُوا
لَا نَفْسَكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوهُ عِنْدَ اللَّهِ هُوَ
خَيْرٌ وَأَعْظَمَ أَجْرًا ۚ وَاسْتَغْفِرُوا لِلَّهِ
إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝

74- सूरः अल-मुद्दस्सिर

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक समय में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 57 आयतें हैं ।

जिस प्रकार पिछली सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को **मुज़्ज़म्मिल** कहा गया है । जैसे अपने आप को दृढ़ता पूर्वक एक कम्बल में लपेट लिया हो । इस सूरः में भी यही विषयवस्तु है और इस बात को स्पष्ट किया गया है कि वह कौन से कपड़े हैं जिन को नबी दृढ़ता पूर्वक अपने साथ लगा लेता है और जिनको स्वच्छ करता रहता है । यहाँ पर साधारण वस्त्र अभिप्राय नहीं है बल्कि सहाबा रज़ि. का उल्लेख है कि वे सहाबा रज़ि. जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समीप रहते थे आप सल्ल. की पवित्रकारी संगति से निरंतर पवित्र किए जाते हैं । और वे अपवित्रता को छोड़ते चले जाते हैं हालाँकि इससे पूर्व उनमें बहुत से ऐसे थे कि उनके लिए अपवित्रता से बचना संभव न था । इसके अतिरिक्त अपवित्रता से अभिप्राय मक्का के मुश्रिक भी हो सकते हैं और उनसे पूर्ण रूप से सम्बन्ध विच्छेद करने का आदेश दिया गया है ।

इस सूरः में ऐसे उन्नीस कठोर फ़रिशतों का वर्णन है जो अपराधियों को दंड देने में कोई नरमी नहीं दिखाएँगे । यहाँ उन्नीस का अंक कुछ ऐसी मनुष्य शक्तियों की ओर संकेत कर रहा है जिनके अनुचित प्रयोग के परिणाम स्वरूप उन के लिए नरक अनिवार्य हो सकता है । सिर से पाँव तक अल्लाह तआला ने जो अंग मनुष्य को प्रदान किए हैं, जिनसे यदि यथोचित ढंग से काम लिया जाए तो मनुष्य पापों और भूल-चूक से बच सकता है । इन अंगों की संख्या लगभग उन्नीस है । परन्तु जो भी संख्या हो, यह सूरः इस बात पर प्रकाश डाल रही है कि अल्लाह तआला की सेना असंख्य हैं और उन्नीस के अंक पर ठहर कर यह न समझना कि केवल उन्नीस फ़रिशते ही हैं । अल्लाह तआला के अज़ाब पर तैनात फ़रिशते भी असंख्य हैं जो परिस्थिति के अनुकूल मनुष्य को दंड देने के लिए नियुक्त किए जाते हैं ।

इसी सूरः में एक चन्द्रमा की भविष्यवाणी की गई है जो सूर्य के पश्चात उसका अनुगमन करते हुए प्रकट होगा । यह भी बहुत अर्थपूर्ण बात है । यही विषयवस्तु सूरः अश-शम्स में भी वर्णित है ।



سُورَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعٌ وَخَمْسُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और)

बार-बार दया करने वाला है ।1।

हे कपड़ा ओढ़ने वाले ! ।2।

उठ खड़ा हो और सतर्क कर ।3।

और अपने रब की ही बड़ाई वर्णन कर ।4।

और जहाँ तक तेरे कपड़ों (अर्थात् निकटतम साथियों) का सम्बन्ध है, तू (उन्हें) बहुत पवित्र कर ।5।

और जहाँ तक अपवित्रता का सम्बन्ध है तो उससे पूर्ण रूप से अलग रह ।6।

और अधिक पाने के उद्देश्य से परोपकार न किया कर ।7।

और अपने रब की ही के लिए धैर्य धर ।8।

अतः जब शंख फूँका जाएगा ।9।

तो वही वह दिन होगा जो बहुत कठोर दिन होगा ।10।

काफ़िरों के लिए दयाहीन ।11।

मुझे और उसको जिसे मैं ने पैदा किया, अकेला छोड़ दे ।12।

और मैंने उसके लिए प्रचुर मात्रा में धन बनाया था ।13।

और दृष्टि के समक्ष रहने वाले पुत्र-पुत्रियाँ ।14।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ۝

قُمْ فَأَنْذِرْ ۝

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۝

وَشِيبَكَ فَطَهِّرْ ۝

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۝

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۝

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۝

فَإِذَا نُفِرَ فِي النَّاقُورِ ۝

فَذَلِكَ يَوْمٌ مِّنْ يَّوْمٍ عَسِيرٍ ۝

عَلَى الْكَافِرِينَ عَذَابٌ عَسِيرٌ ۝

ذَرْنِي وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيدًا ۝

وَجَعَلْتُ لَهُ مَالًا مَّمْدُودًا ۝

وَبَنِينَ شُهُودًا ۝

और मैंने उसके लिए (धरती को)
सर्वोत्तम पालन-पोषण का पालना
बनाया ।।5।

फिर भी वह लालच करता है कि मैं और
अधिक बढ़ाऊँ ।।6।

कदापि नहीं ! निःसन्देह वह तो हमारे
चिह्नों का शत्रु था ।।7।

मैं अवश्य उस पर एक बढ़ती चली जाने
वाली विपत्ति चढ़ा लाऊँगा ।।8।

निश्चित रूप से उसने भली प्रकार विचार
किया और एक अनुमान लगाया ।।9।

अतः सर्वनाश हो उसका, उसने कैसा
अनुमान लगाया ।।20।

उस का फिर सर्वनाश हो, उसने कैसा
अनुमान लगाया ।।21।

फिर उसने नज़र दौड़ाई ।।22।

फिर त्योरी चढ़ाई और माथे पर बल डाल
लिए ।।23।

फिर पीठ फेर ली और अहंकार
किया ।।24।

तब कहा, यह तो केवल एक जादू है
जिसे अपनाया जा रहा है ।।25।

यह एक मनुष्य के कथन के अतिरिक्त
कुछ नहीं ।।26।

मैं अवश्य ही उसे सक्कर में डाल
दूँगा ।।27।

और तुझे क्या पता कि सक्कर क्या
है ? ।।28।

न वह कुछ शेष रहने देती है, न (पीछा)
छोड़ती है ।।29।

وَمَهَّدْتُ لَهُ تَمْهِيدًا ۝٥

ثُمَّ يَظْمَعُ أَنْ أَزِيدَ ۝٦

كَأَلَّا إِنَّهُ كَانَ لِآيَاتِنَا عِينِدًا ۝٧

سَأَرْهُقُهُ صُعُودًا ۝٨

إِنَّهُ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۝٩

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝١٠

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۝١١

ثُمَّ نَظَرَ ۝١٢

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۝١٣

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۝١٤

فَقَالَ إِنَّ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ يُؤْتَرُ ۝١٥

إِنَّ هَذَا إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۝١٦

سَأُصْلِيهِ سَقَرَ ۝١٧

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ۝١٨

لَا تَبْقَى وَلَا تَذَرُ ۝١٩

चेहरे को झुलसा देने वाली है ।30।

لَوَاحَةٌ لِلْبَشَرِ ۝۳۰

उस पर उन्नीस (निरीक्षक) हैं ।31।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۝۳۱

और हमने फ़रिश्तों के अतिरिक्त किसी को नरक के दारोगे नहीं बनाया । और हमने उनकी संख्या केवल उन लोगों की परीक्षा के लिए निश्चित की जिन्होंने इनकार किया । ताकि वे लोग जिन्हें पुस्तक दी गई वे विश्वास कर लें । और वे लोग जो ईमान लाए हैं ईमान में बढ़ जाएँ । और जिनको पुस्तक दी गई, वे और मोमिन किसी शंका में न रहें । और जिनके मन में रोग है वे और काफ़िर कहें कि अन्ततः इस उदाहरण से अल्लाह का क्या उद्देश्य है ? इसी प्रकार अल्लाह जिसे चाहता है पथभ्रष्ट ठहराता है और जिसे चाहता है उसे हिदायत देता है । और तेरे रब्ब की सेनाओं को उसके सिवा कोई नहीं जानता । और यह मनुष्य के लिए एक बड़े उपदेश के अतिरिक्त और कुछ नहीं ।32। (रकू 1/5)

وَمَا جَعَلْنَا أَصْحَابَ النَّارِ إِلَّا مَلَائِكَةً ۖ وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لِيَسْتَيَقِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا ۖ وَلَا يَرْتَابَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ وَلِيَقُولَ الَّذِينَ فِي قُلُوبِهِم مَّرَضٌ وَالْكَافِرُونَ مَاذَا أَرَادَ اللَّهُ بِهَذَا مَثَلًا ۗ كَذَلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي مَن يَشَاءُ ۚ وَمَا يَعْلَمُ جُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ۚ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْبَشَرِ ۝۳۲

सावधान ! क्रसम है चन्द्रमा की ।33।

كَلَّا وَالْقَمَرَ ۝۳۳

और रात्रि की, जब वह पीठ फेर चुकी हो ।34।

وَالَّيْلِ إِذَا أَدْبَرَ ۝۳۴

और प्रभात की, जब वह उज्ज्वलित हो जाए ।35।

وَالصُّبْحِ إِذَا أَسْفَرَ ۝۳۵

कि निश्चित रूप से वह बड़ी बातों में से एक है ।36।

إِنَّهَا لِأَحَدَى الْكُبَرِ ۝۳۶

मनुष्य को डराने वाली ।37।

نَذِيرًا لِلْبَشَرِ ۝۳۷

ताकि तुम में से जो चाहे आगे बढ़े और जो चाहे पीछे रह जाए ।38।

प्रत्येक जान जो कमाई करती है उसी की गिरवी होती है ।39।

सिवाए दाहिनी ओर वालों के ।40।

जो स्वर्गों में होंगे । एक दूसरे से पूछ रहे होंगे ।41।

अपराधियों के बारे में ।42।

तुम्हें किस चीज़ ने नरक में प्रविष्ट किया ? ।43।

वे कहेंगे, हम नमाज़ियों में से नहीं थे ।44।

और हम दरिद्रों को भोजन नहीं कराते थे ।45।

और हम व्यर्थ बातों में लगे रहने वालों के साथ लगे रहा करते थे ।46।

और हम प्रतिफल दिवस का इनकार किया करते थे ।47।

यहाँ तक कि मृत्यु हमारे निकट आ गई ।48।

अतः उनको सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश कोई लाभ नहीं देगी ।49।

अतः उन्हें क्या हुआ था कि वे शिक्षाप्रद बातों से पीठ फेर लिया करते थे ।50।

मानो वे बिदके हुए गधे हों ।51।

बब्बर शेर से (डर कर) दौड़ रहे हों ।52।

बल्कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति यही चाहता था कि (अपनी विचार-धारा के प्रचार-प्रसार के लिए) सर्वाधिक

لَمِنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ۝

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِينَةٌ ۝

إِلَّا أَصْحَابَ الْيَمِينِ ۝

فِي جَنَّتٍ يُتَسَاءَلُونَ ۝

عَنِ الْمَجْرِمِينَ ۝

مَا سَلَكَكُمْ فِي سَقَرٍ ۝

قَالُوا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّينَ ۝

وَلَمْ نَكُ نَطْعِمُ الْمِسْكِينَ ۝

وَكُنَّا نَحُورُصَّ مَعَ الْخَائِضِينَ ۝

وَكُنَّا نَكْذِبُ يَوْمَ الدِّينِ ۝

حَتَّىٰ آسَأَ الْيَقِينَ ۝

فَمَا تَتَّعِبُهُمْ شِفَاعَةُ الشَّافِعِينَ ۝

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكَرَةِ مُعْرِضِينَ ۝

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُسْتَنْفِرَةٌ ۝

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝

بَلْ يَرِيدُ كُلُّ امْرِئٍ مِنْهُمْ أَنْ يُؤْتَىٰ

عَذَابُ الْمُتَّقِينَ

प्रसारित होने वाले ग्रन्थ उसे दिए जाते ।53।*

صُحُفًا مُنَشَّرَةً ۝

कदापि नहीं ! बल्कि वे परलोक से नहीं डरते ।54।

كَلَّا ۚ بَلْ لَا يَخَافُونَ الْآخِرَةَ ۝

सावधान ! निःसन्देह यह एक बड़ा उपदेश है ।55।

كَلَّا إِنَّهُ تَذَكُّرٌ ۝

अतः जो चाहे उसे याद रखे ।56।

فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ۝

और अल्लाह की इच्छा के बिना वे उपदेश ग्रहण नहीं करेंगे । वही तक्वा का अधिकारी और क्षमादान का भी अधिकारी है ।57। (रुकू- $\frac{2}{16}$)

وَمَا يَذْكُرُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ هُوَ أَهْلُ التَّقْوَىٰ وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝

75- सूरः अल-क्रियामः

यह सूरः मक्का निवास के आरम्भिक समय में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 41 आयतें हैं ।

पिछली सूरः में नरकगामियों की स्वीकारोक्ति है कि उनको नरक का दंड इस कारण मिला कि वे परलोक का इनकार किया करते थे । परलोक के इनकार के कारण ही असंख्य अपराध जन्म लेते हैं और सारा संसार पाप से भर जाता है । अतः इस सूरः के आरम्भ में क़यामत के दिन को ही साक्षी ठहराया गया है और उस जान को भी जो बार-बार अपने आपको धिक्कारती है । यदि मनुष्य इस धिक्कार से लाभ उठा ले तो हज़ारों प्रकार के पापों से बच सकता है ।

क़यामत के इनकार का कारण यह बताया गया कि वे यह समझते थे कि जब उनके सारे अंग प्रत्यंग सड़-गल कर बिखर जाएंगे तो अल्लाह तआला किस प्रकार उनको इकट्ठा करेगा । यह केवल उनकी नासमझी थी क्योंकि कुरआन करीम स्पष्ट रूप से यह बात कई बार पेश कर चुका है कि तुम्हारे भौतिक शरीर के अंग इकट्ठे नहीं किए जाएंगे बल्कि आध्यात्मिक शरीर के अंग-प्रत्यंग इकट्ठे किए जाएंगे । परन्तु शत्रु अपने इस हठ धर्मिता पर अटल रहा ताकि अपने समय के रसूल से उपहास कर सके और परकाल के इनकार का तर्कसंगत कारण अपनी धारणानुसार प्रस्तुत कर सके ।

आयत संख्या 8, 9, 10 में जिन बातों का उल्लेख है, उन्हें क़यामत पर लागू करना उचित नहीं । ये बातें क़यामत की निकटता के चिह्न हैं न कि क़यामत की घटनाएँ हैं । क्योंकि क़यामत के दिन तो यह ब्रह्माण्ड व्यवस्था पूर्णतया नाश हो जाएगी । न यह सूर्य होगा, न यह चन्द्रमा, न इनके परिक्रमण की व्यवस्था, न उनका ग्रहण, न उसे कोई देखने वाला होगा ।

आयत जब आँखें पथरा जाएँगी से यह अभिप्राय है कि उन दिनों संसार पर भयानक अज़ाब आएँगे । आगे की आयत में जो यह कहा कि उस समय झुठलाने वाले के लिए भागने का स्थान नहीं रहेगा तो इससे स्पष्ट होता है कि सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण के चिह्न अल्लाह के एक प्रतिश्रुत पुरुष की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए प्रकट होंगे ताकि इनकार करने वालों पर बात पूरी हो जाए ।

सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण कब इकट्ठे होगा ? इसका विवरण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनानुसार यह है कि रमज़ान नामक एक ही महीना की निश्चित तिथियों में सूर्य और चन्द्रमा का ग्रहण होगा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनानुसार यह घटना उनके महदी के सच्चा होने का चिह्न है ।

अतः यह घटना घट चुकी है । इसी विषयवस्तु पर आधारित एक भविष्यवाणी हज़रत ईसा मसीह अलै. ने भी की थी ।

इसके पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक और चमत्कार का वर्णन है । इतनी बड़ी पुस्तक कुरआन करीम तेईस वर्षों में उतरी और उतरने के समय आप सल्ल. इस चिंता में कि मैं इसे भूल न जाऊँ, अपनी जिह्वा को तेज़ी से हिला कर उसे याद रखने का प्रयास करते थे । परन्तु अल्लाह तआला ने आपको विश्वास दिलाया कि हम ने ही यह कुरआन उतारा है और हम ही इसे इकट्ठा करने की शक्ति रखते हैं । अतः एक निरक्षर व्यक्ति पर तेईस वर्षों में उतरने वाला कुरआन सुरक्षापूर्वक इकट्ठा किया गया । हज़रत मसीह मौऊद अलै. इस बात को एक महान चमत्कार ठहराते हैं कि इस तेईस वर्ष के समय में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर शत्रुओं ने प्रत्येक प्रकार के आक्रमण किए और उनकी हत्या करने का प्रयत्न किया । यदि कुरआन के कुछ भाग उतरने के पश्चात ही नऊज़ुबिल्लाह (इस बात से हम अल्लाह की शरण चाहते हैं) आप सल्ल. को समाप्त करने में शत्रु सफल हो जाता तो कुरआन का एक सम्पूर्ण ग्रन्थ होने का दावा, मिथ्या और पूर्णतया अर्थहीन हो जाता ।

इस सूरः के अंत पर मनुष्य जन्म के विभिन्न चरणों का वर्णन करने के पश्चात कहा गया है कि वह निरंतर विकासशील है । अतः कैसे संभव है कि वह अन्ततोगत्वा अल्लाह तआला के समक्ष उपस्थित न हो और उसे अपने कर्मों का उत्तरदायी न ठहराया जाए ।



سُورَةُ الْقِيَامَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ إِحْدَى وَارْبَعُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

सावधान ! मैं क़यामत के दिन की क़सम खाता हूँ ।।2।

और सावधान ! मैं ख़ूब धिक्कारने वाली आत्मा की भी क़सम खाता हूँ ।।3।

या मनुष्य (यह) विचार करता है कि हम कदापि उसकी हड्डियाँ इकट्ठा नहीं करेंगे ? ।।4।

क्यों नहीं ! हम इस बात पर ख़ूब समर्थ हैं कि उसकी पोर-पोर (तक) को ठीक कर दें ।।5।

वास्तविकता यह है कि मनुष्य यह चाहता है कि वह उसके सामने पाप करता रहे ।।6।

वह पूछता है कि क़यामत का दिन कब होगा ? ।।7।

तू (उत्तर दे कि) जब नज़र चौंधिया जाएगी ।।8।

और चन्द्रमा को ग्रहण लगेगा ।।9।

और सूर्य और चन्द्रमा इकट्ठे किए जाएंगे ।।10।

उस दिन मनुष्य कहेगा, भागने का रास्ता कहाँ है ? ।।11।

सावधान ! कोई आश्रयस्थल नहीं ।।12।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

لَا أَقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيَمَةِ ②

وَلَا أَقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ③

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُنْجَمَعَ ④
عِظَامُهُ ⑤

بَلَىٰ قَدَرِينٌ عَلَىٰ أَنْ تُسَوَّىٰ بَنَانُهُ ⑥

بَلْ يَرِيدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجَرَا مَامَهُ ⑦

يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيَمَةِ ⑧

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ⑨

وَحَسَفَ الْقَمَرُ ⑩

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ⑪

يَقُولُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ⑫

كَأَلَا وَزَرُّ ⑬

तेरे रब्ब ही के निकट उस दिन
आश्रयस्थल है 113।

उस दिन मनुष्य को सूचित किया जाएगा
कि उसने क्या आगे भेजा था और क्या
पीछे छोड़ा 114।

वास्तविकता यह है कि मनुष्य अपनी
जान पर गहन दृष्टि रखने वाला है 115।
चाहे वह अपने बड़े-बड़े बहाने पेश
करे 116।

तू इस (कुरआन) के पढ़ने के समय
अपनी जिह्वा को इस कारण तीव्रता
पूर्वक न हिला कि तू इसे शीघ्र-शीघ्र
याद करे 117।

निश्चित रूप से इसका इकट्ठा करना
और इसका पाठ किया जाना हमारी
ज़िम्मेदारी है 118।

अतः जब हम उसे पढ़ लें तो तू उसके
पाठ का अनुसरण कर 119।

फिर निःसन्देह उसको स्पष्ट रूप से
वर्णन करना भी हमारे ही ज़िम्मा
है 120।

सावधान ! बल्कि तुम संसार को पसन्द
करते हो 121।*

और परलोक का अनदेखा कर देते
हो 122।

उस दिन कुछ चेहरे तरो-ताज़ा
होंगे 123।

अपने रब्ब की ओर दृष्टि लगाए
हुए 124।

إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمُسْتَقَرُّ ۝

يُنَبِّئُ الْإِنْسَانَ يَوْمَئِذٍ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ۝

بَلِ الْإِنْسَانُ عَلَىٰ نَفْسِهِ بَصِيرَةٌ ۝

وَلَوْ أَلْقَىٰ مَعَاذِيرَهُ ۝

لَا تَحْرِكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ ۝

إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ ۝

فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ ۝

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ۝

كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ۝

وَتَذَرُونَ الْآخِرَةَ ۝

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۝

إِلَىٰ رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ۝

जबकि कुछ चेहरे बहुत मलिन होंगे। 125।

वे विश्वास कर लेंगे कि उनसे कमरतोड़ व्यवहार किया जाएगा। 126।

सावधान ! जब जान हंसलियों तक पहुँच चुकी होगी। 127।

और कहा जाएगा, कौन है झाड़-फूंक करने वाला ? 128।

और वह अनुमान लगा लेगा कि अब जुदाई (का समय) है। 129।

और पिंडली पिंडली से रगड़ खा रही होगी। 130।

उस दिन तेरे रब्ब ही की ओर हंकाया जाना है। 131। (रुकू 1/17)

अतः उसने न पुष्टि की और न नमाज़ पढ़ी। 132।

बल्कि झुठलाया और मुँह फेर लिया। 133।

फिर अपने घर वालों की ओर अकड़ता हुआ गया। 134।

तेरा सर्वनाश हो । फिर सर्वनाश हो। 135।

फिर तेरा सर्वनाश हो । फिर सर्वनाश हो। 136।

क्या मनुष्य यह विचार करता है कि उसे निरंकुश छोड़ दिया जाएगा ? 137।

क्या वह केवल वीर्य की एक बूंद नहीं था जो डाला गया ? 138।

तब वह एक लोथड़ा बन गया । फिर उस (अल्लाह) ने उसका सृजन किया, फिर उसे संतुलित किया। 139।

وَوُجُوهُ يَوْمَئِذٍ بِآسَرَةٍ ۝

تَنْظُرُ أَنْ يَفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۝

كَأَلَّا إِذَا بَلَغَتِ الثَّرَاقِي ۝

وَقِيلَ مَنْ رَاقٍ ۝

وَوَظَنَ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۝

وَالْتَفَتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۝

إِلَى رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ۝

فَلَا صَدَقَ وَلَا صَلَّى ۝

وَلَكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّى ۝

ثُمَّ ذَهَبَ إِلَى أَهْلِهِ يَمْتَسِطُ ۝

أُولَىٰ لَكَ فَأُولَىٰ ۝

ثُمَّ أُولَىٰ لَكَ فَأُولَىٰ ۝

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَنْ يُتْرَكَ سُدًى ۝

أَلَمْ يَكُنْ نَظْفَةً مِنْ مَنِيٍّ يُمْنَىٰ ۝

ثُمَّ كَانَ عَاقَةً فَخَلَقَ فَسَوَىٰ ۝

फिर उसमें से जोड़ा बनाया अर्थात पुरुष
और स्त्री ।40।

क्या वह इस बात पर समर्थ नहीं कि वह
मुर्दों को जीवित कर सके ? ।41।

(रुकू 2/18)

فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ۖ

أَلَيْسَ ذَلِكَ بِقَدِيرٍ عَلَىٰ أَنْ يُّحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ۚ

76- सूरः अद-दहर

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में उतरी और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 32 आयतें हैं ।

इस सूरः में मनुष्य को उसकी उत्पत्ति की ओर ध्यान दिलाते हुए वर्णन किया गया है कि उस पर एक ऐसा भी समय आया है जब वह कोई उल्लेखनीय वस्तु नहीं था । हालाँकि मनुष्य जबसे अस्तित्व में आया है समग्र सृष्टि में वही सबसे अधिक उल्लेखनीय वस्तु था । यहाँ मनुष्य की आरम्भिक परिस्थितियों का वर्णन किया गया है कि मनुष्य ऐसे आरम्भिक, विकासोन्मुख दौर में से गुज़रा है जब वह किसी प्रकार उल्लेखनीय वस्तु नहीं था । यह वह समय जान पड़ता है जब पक्षियों को भी बोलने की क्षमता प्रदान नहीं की गई थी और धरती पर एक भारी सन्नाटा छाया हुआ था । इस दौर से गुज़ार कर मनुष्य को पैदा किया गया और फिर उसे सुनने और देखने वाला बना दिया गया । अतः जिस अल्लाह ने मिट्टी को सुनने और देखने की शक्ति प्रदान की वह इस बात पर भी समर्थ है कि उसे दोबारा पैदा कर दे और उसके सुनने और देखने की शक्ति का हिसाब लिया जाए ।

इसके बाद स्वर्गगामियों के विशेष गुणों का विवरण मिलता है कि वे किसी पर इस कारण उपकार नहीं करते कि उसके बदले उनके धन-सम्पत्ति बढ़ जाएँ । जब भी वे किसी से सद्-व्यवहार करते हैं तो यह कहते हैं कि हम तो केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए ऐसा कर रहे हैं । इसके बदले में हम तुमसे किसी प्रतिफल अथवा धन्यवाद पाने की कदापि अभिलाषा नहीं रखते ।



سُورَةُ الدَّهْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَانِ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

क्या मनुष्य पर काल भर में से कोई ऐसा क्षण भी आया था जब कि वह कोई उल्लेखनीय वस्तु नहीं था ? ।2।

निःसन्देह हमने मनुष्य को एक मिश्रित वीर्य से पैदा किया जिसे हम विभिन्न प्रकार की आकृतियों में ढालते हैं । फिर उसे हमने सुनने (और) देखने वाला बना दिया ।3।

निःसन्देह हमने उसे सीधे रास्ते की ओर निर्देशित किया । चाहे (वह) कृतज्ञ बनते हुए चाहे कृतघ्न बनते हुए (उस पर चले) ।4।

निःसन्देह हमने काफ़िरों के लिए भाँति-भाँति की जंजीरें और तौक और एक धधकती हुई अग्नि तैयार किए हैं ।5।

निःसन्देह नेक लोग एक ऐसे प्याले से पियेंगे जिसमें कर्पूर का गुण होगा ।6।

एक ऐसा स्रोत, जिससे अल्लाह के भक्त पिएँगे । जिसे वे फाड़-फाड़ कर विस्तृत करते चले जाएँगे ।7।

वे (अपनी) मन्त पुरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसका अनिष्ट फैल जाने वाला है ।8।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

هَلْ أَتَى عَلَى الْإِنْسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ
لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُورًا ②

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ
نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ③

إِنَّا هَدَيْنَاهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَإِمَّا
كَفُورًا ④

إِنَّا أَعْتَدْنَا لِلْكَافِرِينَ سَلَاسِلًا وَأَغْلَالًا
وَسَعِيرًا ⑤

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ
مِرَاجُهَا كَافُورًا ⑥

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَهَا
تَفْجِيرًا ⑦

يُوقُونَ بِالْتَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ
مُسْتَظِيرًا ⑧

और वे भोजन को, उसकी चाहत के होते हुए भी दरिद्रों और अनाथों और बन्दियों को खिलाते हैं ।9।

(और उनसे कहते हैं कि) हम तुम्हें केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए भोजन करा रहे हैं । हम कदापि तुमसे न कोई बदला और न कोई धन्यवाद चाहते हैं ।10।

निःसन्देह हम अपने रब्ब की ओर से (आने वाले) एक त्योरी चढ़ाए हुए, अत्यन्त कठिन दिन का भय रखते हैं ।11।

अतः अल्लाह ने उन्हें उस दिन के अनिष्ट से बचा लिया और उन्हें ताज़गी और आनन्द प्रदान किए ।12।

और उसने उनको उनके धैर्य धारण के कारण एक स्वर्ग और एक प्रकार का रेशम प्रतिफल स्वरूप दिया ।13।

वे उसमें पलंगों पर तकिया लगाए बैठे होंगे । न तो वे उसमें कड़ी धूप देखेंगे और न कड़ाके की सर्दी ।14।

और उसकी छाहें उन पर झुकी हुई होंगी और उसके फल पूरी तरह झुका दिए जाएंगे ।15।

और उन के मध्य चाँदी के बर्तनों और ऐसे कटोरों का दौर चलाया जाएगा जो शीशे के होंगे ।16।

ऐसे शीशे जो चाँदी से बने होंगे, उन्होंने उनको बड़ी कुशलतापूर्वक गढ़ा होगा ।17।

और वे उसमें एक ऐसे प्याले से पिलाए जाएंगे जिसमें सोंठ का मिश्रण

وَيُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۝۹

إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ۝۱०

إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا قَمْطَرِيرًا ۝۱१

فَوَقَّهْمُ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّهْمُ نَصْرَةً وَسُرُورًا ۝۱२

وَجَزَاهُمْ بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَحَرِيرًا ۝۱३

مُتَّكِئِينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَائِكِ ۝ لَا يَرَوْنَ فِيهَا شَمْسًا وَلَا زَمَهْرِيرًا ۝

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلُّهَا وَذُلَّتْ قُطُوفُهَا تَذَلِيلًا ۝۱५

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِانِيَةٍ مِنْ فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا ۝۱६

قَوَارِيرًا مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ۝۱७

وَيُسْقَوْنَ فِيهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا

قوله: يَطْفَأُ عَلَيْهِمْ بِانِيَةٍ مِنْ فِضَّةٍ وَأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرًا ۝۱६

होगा ।18।

زَنَجِيلًا ۞

उसमें एक ऐसा अद्भुत स्रोत होगा जो
सल्सबील कहलाएगा ।19।

عَيْنًا فِيهَا تُسْمَىٰ سَلْسَبِيلًا ۞

और उन (की सेवा) में अमरत्व को
प्राप्त किये हुए बच्चे घूमेंगे । जब तू
उन्हें देखेगा तो उन्हें बिखरे हुए मोती
समझेगा ।20।

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۚ
إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنثُورًا ۞

और जब तू नज़र दौड़ाएगा तो वहाँ एक
बड़ी नेमत और एक बहुत बड़ा राज्य
देखेगा ।21।

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيمًا
وَمُلْكًا كَبِيرًا ۞

उन पर बारीक रेशम के और मोटे
रेशम के हरे वस्त्र होंगे । और वे
चाँदी के कंगन पहनाए जाएंगे और
उन्हें उनका रब्ब पवित्र पेय
पिलाएगा ।22।

عَلَيْهِمْ ثِيَابٌ سُنْدُسٍ خُضْرٌ
وَإِسْتَبْرَقٌ وَحُلُّوْا أَسَاوِرَ مِنْ
فِضَّةٍ وَسَقَمَهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُورًا ۞

निःसन्देह यह तुम्हारे लिए बदले के रूप
में होगा । और तुम्हारे प्रयासों का
सम्मान किया जाएगा ।23। (स्कू 1/19)
निःसन्देह हमने ही तुझ पर कुरआन
को एक शानदार क्रम के साथ उतारा
है ।24।

إِنَّ هَذَا كَانَ لَكُمْ جَزَاءً وَكَانَ سَعْيُكُمْ
مُّشْكُورًا ۞

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْآنَ تَنْزِيلًا ۞

अतः अपने रब्ब के आदेश (का पालन
करने) के लिए दृढ़ता पूर्वक डटे रह ।
और इनमें से किसी पापी और बड़े
कृतघ्न का अनुसरण न कर ।25।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ
أَثِمًا أَوْ كَفُورًا ۞

और सुबह शाम अपने रब्ब के नाम का
स्मरण कर ।26।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَأَصِيلًا ۞

और रात्रि के एक भाग में उसके समक्ष
सजदः में पड़ा रह और सारी-सारी रात
उसका गुणगान करता रह ।27।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهُ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا
طَوِيلًا ۞

निःसन्देह ये लोग संसार से प्रेम करते हैं। और अपने पीछे एक भारी दिन की अनदेखी कर रहे हैं। 128।

हमने ही उनको पैदा किया है और उनके जोड़बंद सशक्त बनाए हैं। और जब हम चाहेंगे उनकी आकृतियों को एकदम परिवर्तित कर देंगे। 129।

निःसन्देह यह एक बड़ा शिक्षाप्रद उपदेश है। अतः जो चाहे अपने रब्ब की ओर (जाने वाला) मार्ग अपना ले। 130।

और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते (कि हो जाए) सिवाए इसके कि (वही) अल्लाह चाहे। निःसन्देह अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला (और) परम विवेकशील है। 131।

वह जिसे चाहता है अपनी कृपा में प्रविष्ट करता है। और जहाँ तक अत्याचारियों का संबंध है, उनके लिए उसने पीड़ादायक अज़ाब तैयार कर रखा है। 132। (रुकू 2/20)

إِنَّ هَؤُلَاءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ
وَرَاءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۝۲۸

نَحْنُ خَلَقْنَاهُمْ وَشَدَدْنَا أَسْرَهُمْ ۚ
وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَا أَمْثَلَهُمْ تَبْدِيلًا ۝۲۹

إِنَّ هَذِهِ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ
إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ۝۳۰

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ
كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا ۝۳۱

يُدْخِلُ مَنْ يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۖ وَالظَّالِمِينَ
أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۝۳۲

77- सूरः अल-मुर्सलात

यह सूरः मक्का में अवतरित हुई और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 51 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ में ही फिर से भविष्य की वह घटनाएँ जो अंत्ययुगीनों के दौर से सम्बंध रखती हैं, वर्णन की गई हैं और उस युग की वैज्ञानिक प्रगतियों को गवाह ठहराया गया है, कि जिस अल्लाह ने इन अदृश्य विषयों की खबर दी है वह हर प्रकार की क्रांति पैदा करने का सामर्थ्य रखता है । इस प्रसंग में कुछ ऐसे उड़ने वालों का वर्णन है जो आरम्भ में धीरे-धीरे उड़ते हैं और फिर तूफानी रफतार पकड़ लेते हैं । इस समय के तेज़ रफतार वायुयानों की भी यही अवस्था है कि पहले धीरे-धीरे उड़ना शुरू करते हैं और फिर उनकी गति में बहुत तेज़ी आ जाती है । और इन वायुयानों के द्वारा शत्रुओं से युद्ध करते हुए उन पर परचे फेंके जाते हैं और यह स्पष्ट किया जाता है कि यदि तुम हमारे साथ हो जाओ तो हम तुम्हारे सहायक होंगे अन्यथा हमारी पकड़ से तुम्हें कोई बचा नहीं सकेगा ।

फिर फर्माया, फिर जब आकाश के सितारे मलिन पड़ जाएँगे और जब आसमान पर चढ़ने के लिए मनुष्य विभिन्न उपाय अपनायेगा यहाँ सितारे मलिन पड़ने से यह अभिप्राय प्रतीत होता है कि जब सहाबा रज़ि. का युग बीत चुका होगा और वह प्रकाश जो इन सितारों से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत प्राप्त किया करती थी वह भी माँद पड़ चुका होगा ।

फिर फर्माया, जब बड़े-बड़े पर्वतों के समान शक्तियाँ जड़ों से उखेड़ दी जाएँगी और सभी रसूल भेजे जाएँगे । इस आयत के सम्बन्ध में विद्वान यह भ्रांति उत्पन्न करने की चेष्टा करते हैं कि यह क़यामत का दृश्य है । परन्तु क़यामत में तो कोई पर्वत उखेड़े नहीं जाएँगे और रसूल तो इस संसार में भेजे जाते हैं, क़यामत के दिन तो नहीं भेजे जाएँगे। अतः यहाँ निश्चित रूप से यही अभिप्राय है कि कुरआन करीम की भविष्यवाणी के अनुसार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दासता को पूर्ण रूपेण अपना कर और आप सल्ल. का आज्ञापालन करते हुए एक ऐसा नबी आएगा जिसका आना अतीत के सब रसूलों का आना होगा । अर्थात् उसके प्रयासों से पिछली सभी रसूलों की उम्मत हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत में विलीन हो जाएगी ।

भविष्य में होने वाले जिन युद्धों का इस सूरः में वर्णन किया गया है उनका एक चिह्न यह है कि वे तीन प्रकार से होंगे । अर्थात् ज़मीनी, समुद्री और हवाई । उस समय आकाश से ऐसी लपटें बरसेंगी जो दुर्गों की भाँति होंगी, मानो वे गेरुए रंग के ऊँट हैं । इन दोनों आयतों ने निश्चित रूप से प्रमाणित कर दिया कि ये बातें उपमा के रूप में कही जा

रही हैं। क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय में किसी ऐसे युद्ध की कल्पना तक नहीं थी जिसमें आकाश से आग की लपटें बरसें। इस लिए अवश्य यह उस सर्वज्ञ और सर्व-अवगत सत्ता की ओर से एक भविष्यवाणी है जो भविष्य की परिस्थितियों को भी जानता है।

क़यामत के दिन तो आकाश से आग की लपटें नहीं बरसाई जाएंगी। इस लिए यह धारणा भी भूल सिद्ध हुई कि यह क़यामत के दिन की खबर है। यहाँ एक आणविक युद्ध की भविष्यवाणी जान पड़ती है जिसका वर्णन सूरः अद-दुख़ान में भी मिलता है कि उस दिन आकाश उन पर ऐसी रेडियो तरंगों का विकिरण करेगा कि उसकी छाया तले वे हर प्रकार की शांति को खो बैठेंगे।

इसके पश्चात फिर परकालीन जीवन की ओर संकेत किया गया है कि जब इन कुरआनी भविष्यवाणियों के अनुसार संसार में ये चिह्न प्रकट हो जाएँ तो इस बात पर भी विश्वास करो कि एक परकालीन जीवन भी है। यदि तुम इस लोक में अल्लाह तआला का आज्ञापालन नहीं करोगे तो उस लोक में दंड निश्चित है।





अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

क़सम है लगातार भेजी जाने वालियों की ।2।

फिर बहुत तेज़ रफ़्तार हो जाने वालियों की ।3।

और (संदेश को) भली-भांति प्रसारित करने वालियों की ।4।

फिर स्पष्ट अंतर करने वालियों की ।5।

फिर चेतावनी देते हुए (परचे) फेंकने वालियों की ।6।

प्रमाण अथवा चेतावनी स्वरूप ।7।

निःसन्देह जिससे तुम सचेत कराए जा रहे हो (वह) अवश्य हो कर रहने वाला है ।8।

अतः जब नक्षत्र मलिन हो जाएंगे ।9।

और जब आकाश में (भांति-भांति के) छेद कर दिए जाएंगे ।10।

और जब पर्वत जड़ों से उखेड़ दिए जाएंगे ।11।

और जब रसूल निश्चित समय पर लाए जाएंगे ।12।

किस दिन के लिए उनका समय निर्धारित था ? ।13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالْمُرْسَلَاتِ عُرْفًا ②

فَالْعَصْفِ عَصْفًا ③

وَالنَّشْرِ نَشْرًا ④

فَأَنْفِرَتْ فَرْقًا ⑤

فَأَمْلَقِيَّتِ ذِكْرًا ⑥

عُذْرًا أَوْ نُذْرًا ⑦

إِنَّمَا تُوعَدُونَ لَوَاقِعٌ ⑧

فَإِذَا التَّجُومُ طُمِسَتْ ⑨

وَإِذَا السَّمَاءُ فُرِجَتْ ⑩

وَإِذَا الْجِبَالُ سُفَّتْ ⑪

وَإِذَا الرَّسُلُ أُقِتَتْ ⑫

لَا يَوْمٍ أُجِّلَتْ ⑬

एक निर्णायक दिन के लिए ।।4।

और तुझे क्या पता कि निर्णायक दिन क्या है ? ।।5।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।।6।

क्या हमने पहलों को विनष्ट नहीं किया ? ।।7।

फिर बाद में आने वालों को हम उनके पीछे लाते हैं ।।8।

इसी प्रकार हम अपराधियों से बर्ताव किया करते हैं ।।9।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।।10।

क्या हमने तुम्हें एक तुच्छ पानी से पैदा नहीं किया ? ।।11।

फिर हमने उसे एक टिके रहने के सुरक्षित स्थान पर नहीं रखा ? ।।12।

एक निर्धारित अवधि तक ।।13।

फिर हमने (उसका) सृजन किया । अतः हम क्या ही उत्तम सृजनहार हैं ।।14।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।।15।

क्या हमने धरती को समेटने वाली नहीं बनाया ? ।।16।

जीवितों को भी और मृतकों को भी ।।17।

और हमने उसमें ऊँचे-ऊँचे पर्वत बनाए। और तुम्हें मीठे पानी से भली प्रकार तृप्त किया ।।18।

لَيَوْمِ الْفَصْلِ ۝

وَمَا أَذْرَبَكَ مَا يَوْمَ الْفَصْلِ ۝

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِينَ ۝

ثُمَّ سُبُّهُمْ الْآخِرِينَ ۝

كَذَلِكَ نَفْعِلُ بِالْمُجْرِمِينَ ۝

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

أَلَمْ نَخْلُقْكُمْ مِنْ مَّاءٍ مَّهِينٍ ۝

فَجَعَلْنَاهُ فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ۝

إِلَىٰ قَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۝

فَقَدَرْنَا فَنِعْمَ الْقَادِرُونَ ۝

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝

أَحْيَاءَ وَأَمْوَاتًا ۝

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شَامِخَاتٍ

وَأَسْقَيْنَاكُمْ مَّاءً فُرَاتًا ۝

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है 129।

(उन से कहा जाएगा) उसकी ओर चलो जिसे तुम झुठलाया करते थे 130।

ऐसी छाया की ओर चलो जो तीन शाखाओं युक्त है 131।

न (वह) संतुष्टि देती है न आग की लपटों से बचाती है 132।

निःसन्देह वह एक दुर्ग सदृश आग की लपट फेंकती है 133।

मानो वह गेरुआ रंग के ऊँटों की भाँति है 134।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है 135।

यह है वह दिन, जब वे मूक बन जाएँगे 136।

और उनको आज्ञा नहीं दी जाएगी कि वे अपने बहाने पेश करें 137।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है 138।

यह है निर्णय का दिन, जिस के लिए हमने तुम्हें और पूर्ववर्ती लोगों को भी इकट्ठा किया 139।

अतः यदि तुम्हारे पास कोई उपाय है तो मुझ पर परीक्षण कर के देखो 140।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है 141। (स्कू. 1/21)

निःसन्देह मुत्तकी छावों और स्रोतों (वाले स्वर्गों) में होंगे 142।

और ऐसे फलों में जिनकी वे चाह रखते हैं 143।

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٢٩﴾

اِنطَلِقُوا اِلَى مَا كُنْتُمْ بِهِ تُكَذِّبُونَ ﴿٣٠﴾

اِنطَلِقُوا اِلَى ظِلٍّ ذِي ثَلَاثِ شُعَبٍ ﴿٣١﴾

لَا ظِلُّلٍ وَلَا يَغْنَى مِنَ اللّٰهِ ﴿٣٢﴾

اِنَّهَا تَرْمِي بِشَرِّ رَكا تَقْصِرِ ﴿٣٣﴾

كَانَ هِجْلًا صُفْرًا ﴿٣٤﴾

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٥﴾

هَذَا يَوْمٌ لَا يَنْطِقُونَ ﴿٣٦﴾

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ﴿٣٧﴾

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٨﴾

هَذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمْعُكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ﴿٣٩﴾

فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ﴿٤٠﴾

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤١﴾

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلٍّ وَعُيُونٍ ﴿٤٢﴾

وَفَوَاحٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ﴿٤٣﴾

(उनसे कहा जाएगा) जो तुम कर्म करते थे उसके फलस्वरूप मजे से खाओ और पिओ ।44।

निःसन्देह हम इसी प्रकार भलाई करने वालों को प्रतिफल दिया करते हैं ।45।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।46।

खाओ और कुछ देर थोड़ा लाभ उठा लो। निःसन्देह तुम अपराधी हो ।47।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।48।

और जब उनसे यह कहा जाता था कि झुक जाओ तो वे झुकते नहीं थे ।49।

उस दिन झुठलाने वालों का सर्वनाश है ।50।

फिर इसके बाद वे और किस कथन पर ईमान लाएँगे ? ।51। (रुकू 2/22)

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٤٤﴾

إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٤٥﴾

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٦﴾

كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُونَ ﴿٤٧﴾

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٤٨﴾

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ﴿٤٩﴾

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ﴿٥٠﴾

فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهُ يُؤْمِنُونَ ﴿٥١﴾

78- सूरः अन-नबा

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में उतरी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 41 आयतें हैं ।

इससे पूर्व सूरः अल्-मुर्सलात में काफ़िरों की ओर से एक मौलिक प्रश्न यह उठाया गया था कि **यौम-उल-फ़स्ल** (निर्णय का दिन) कब आएगा जो खरे-खोटे में प्रभेद कर देगा । सूरः अन-नबा में इसके उत्तर में यह महान सु-समाचार दिया जा रहा है कि वह **यौम-उल-फ़स्ल** आ चुका । प्रस्तुत सूरः में कहा गया है कि **यौम-उल-फ़स्ल** एक अटल और निश्चित वादा था जिसे निर्धारित समय पर अवश्य पूरा होना था ।

फिर **यौम-उल-फ़स्ल** के विभिन्न रूप इस सूरः में वर्णित हुए हैं । सब से पहले तो अल्लाह तआला की उस व्यवस्था के वर्णन की पुनरावृत्ति की गयी है जो आकाश से पानी बरसाती और धरती से खाद्यान्न निकालती है । फिर ध्यान आकर्षित कराया गया है कि इससे मनुष्य लाभ नहीं उठाते और यह नहीं सोचते कि वास्तविक आसमानी पानी तो आध्यात्मिक हिदायत का पानी है । इस इनकार के परिणामस्वरूप उन पर जो विपत्तियाँ पड़ती हैं अथवा पड़ेंगी उनका इस सूरः में वर्णन मिलता है ।

इस सूरः के अंत पर एक बहुत बड़ी चेतावनी दी गई है कि यदि मनुष्य ने इसी प्रकार बेपरवाही में जीवन व्यतीत कर दिया तो अंततोगत्वा वह बहुत कष्ट के साथ पछतावा करेगा कि काश ! मैं इससे पहले ही मिट्टी बन जाता और मिट्टी से मनुष्य के रूप में उठाया न जाता ।



سُورَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اِحْدَى وَاَرْبَعُوْنَ اَيَّةً وَرُكُوْعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

वे किसके बारे में एक दूसरे से प्रश्न करते हैं ? ।2।

एक बहुत बड़े समाचार के बारे में ।3।

(यह) वही (समाचार) है जिसके सम्बंध में वे परस्पर मतभेद कर रहे हैं ।4।

सावधान ! वे अवश्य जान लेंगे ।5।

फिर सावधान ! वे अवश्य जान लेंगे ।6।

क्या हमने धरती को बिछौना नहीं बनाया ? ।7।

और पर्वतों को गड़े हुए खूंटों की भांति (नहीं बनाया) ? ।8।

और हमने तुम्हें जोड़ा-जोड़ा पैदा किया ।9।

और तुम्हारी नींद को हमने आराम प्राप्ति का साधन बनाया ।10।

और रात्रि को हमने एक परिधान बनाया ।11।

और दिन को हमने जीविकोपार्जन का एक साधन बनाया है ।12।

और हमने तुम्हारे ऊपर सात सुदृढ़ आकाश बनाए ।13।*

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

عَمَّ يَتَسَاءَلُونَ ②

عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيمِ ③

الَّذِي هُمْ فِيهِ مُخْتَلِفُونَ ④

كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ⑤

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُونَ ⑥

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهْدًا ⑦

وَالْجِبَالَ أَوْتَادًا ⑧

وَخَلَقْنَاكُمْ أَزْوَاجًا ⑨

وَجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ⑩

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ لِبَاسًا ⑪

وَجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ⑫

وَبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ⑬

* यहाँ 'आकाश' शब्द विषयवस्तु में सम्मिलित है, जो अधिक प्रचलन के कारण स्वतः हट गया है ।→

और हमने एक तेज़ चमकता हुआ दीपक बनाया ।14।

وَجَعَلْنَا سِرَاجًا وَهَّاجًا ۝

और हमने घने बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया ।15।

وَأَنزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرَاتِ مَاءً ثَجَّاجًا ۝

ताकि हम उसके द्वारा अनाज और वनस्पतियाँ उगाएँ ।16।

لِنُخْرِجَ بِهِ حَبًّا وَنَبَاتًا ۝

और घने बाग़ (उगाएँ) ।17।

وَجَبَّتْ أَلْفَاظًا ۝

निःसन्देह निर्णय का दिन एक निर्धारित समय है ।18।

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيقَاتًا ۝

जिस दिन बिगुल फूँका जाएगा और तुम झुंड के झुंड आओगे ।19।

يَوْمَ يُفْعَخُ فِي الصُّورِ فَتَأْتُونَ أَفْوَاجًا ۝

और आकाश खोल दिया जाएगा । अतः वह कई द्वारों युक्त हो जाएगा ।20।

وَفُتِحَتِ السَّمَاءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا ۝

और पर्वत चलाए जाएँगे और वे ढलान की ओर गतिशील हो जाएँगे ।21।*

وَسِيرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝

निश्चित रूप से नरक घात में है ।22।

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝

उद्‌ण्डियों के लिए लौट कर जाने का स्थान ।23।

لِلطَّاغِيَةِ مَابًا ۝

वे उसमें शताब्दियों (तक) रहने वाले होंगे ।24।

لِبَشِيرِينَ فِيهَا أَحْقَابًا ۝

न वे उसमें कोई शीतल पदार्थ और न कोई पेय चखेंगे ।25।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا بَرْدًا وَلَا شَرَابًا ۝

सिवाय एक खौलते हुए पानी और घावों के दुर्गंध युक्त धोवन के ।26।**

إِلَّا حَمِيمًا وَغَسَّاقًا ۝

←इसलिए अनुवाद में यदि इसे लिख दिया जाए तो किसी प्रकार के कोष्ठक की आवश्यकता नहीं है।

* अरबी शब्द अस सराब का अर्थ है किसी वस्तु का ढलान की ओर जाना ।
(मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि.)

** अरबी शब्द अल ग़स्साक़ का अर्थ है नरक वासियों की चमड़ियों से जो पीब टपकती है ।
(मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि.)

यह एक यथोचित प्रतिफल है ।27।

جَزَاءٌ وَفَاقًا ۝

वे कदापि किसी प्रकार के हिसाब की आशा नहीं रखते थे ।28।

إِنَّهُمْ كَانُوا لَا يَرْجُونَ حِسَابًا ۝

और उन्होंने हमारी आयतों को सख्ती से झुठला दिया था ।29।

وَكَذَّبُوا بِالْآيَاتِ كِذَابًا ۝

और हर चीज़ को हमने एक पुस्तक के रूप में सुरक्षित कर रखा है ।30।

وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ كِتَابًا ۝

तो चखो । अतः हम तुम्हें अज़ाब के सिवा कदापि किसी और चीज़ में नहीं बढ़ाएँगे ।31। (रुकू 1)

فَذُوقُوا فَلَنْ نَزِيدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ۝

निःसन्देह मुत्तकियों के लिए बहुत बड़ी सफलता (निश्चित) है ।32।

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ۝

बाग़ हैं और अंगूरों की बेलें ।33।*

حَدَاقٍ وَأَعْنَابًا ۝

और समवयस्का कुवारी कन्याएँ ।34।

وَكَوَاعِبَ أُنْرَابًا ۝

और छलकते हुए प्याले ।35।

وَكَأْسًا دِهَاقًا ۝

वे उसमें न कोई व्यर्थ (बात) सुनेंगे और न कोई मामूली सा झूठ ।36।

لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا نَغْوًا وَلَا كِذْبًا ۝

(उनके लिए) तेरे रब्ब की ओर से एक प्रतिफल, एक जचा-तुला पुरस्कार है ।37।

جَزَاءٌ مِّن رَّبِّكَ عَطَاءٌ حِسَابًا ۝

आसमानों और धरती तथा उन दोनों के बीच स्थित प्रत्येक वस्तु के रब्ब की ओर से अर्थात् रहमान की ओर से (होगा) । वे उससे किसी बातचीत का अधिकार नहीं रखेंगे ।38।

رَبِّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا

الرَّحْمَنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ خِطَابًا ۝

जिस दिन रूह-उल-कुदुस और फ़रिश्ते पंक्तिबद्ध होकर खड़े होंगे, वे बातचीत नहीं करेंगे सिवाये उसके जिसे रहमान आज्ञा देगा और वह सटीक बात कहेगा ।39।*

वह दिन सत्य है । अतः जो चाहे अपने रब्ब की ओर लौटने का स्थान बनाए ।40।

निःसन्देह हमने तुम्हें एक निकट आने वाले अज़ाब से सतर्क कर दिया है । जिस दिन मनुष्य उसे देख लेगा जो उसके दोनों हाथों ने आगे भेजा, और काफ़िर कहेगा, काश ! मैं मिट्टी बन चुका होता ।41। (रूकू 2/2)

يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلَائِكَةُ صَفًّا
لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمَنُ
وَقَالَ صَوَابًا ۝۳۹

ذَٰلِكَ الْيَوْمَ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَاءَ اتَّخَذَ
إِلَىٰ رَبِّهِ مَآبًا ۝۴۰

إِنَّا أَنْذَرْنَاكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَوْمَ يَنْظُرُ
الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُولُ الْكَافِرُ
يَلِيَّتَنِي كُنْتُ تُرَابًا ۝۴۱

* क्रियामत के दिन किसी को अल्लाह की अनुमति के बिना कोई सिफ़ारिश करने की आज्ञा नहीं होगी। अल्लाह तआला के भय से पूरी तरह सन्नाटा छाया होगा और जो भी कोई बात करेगा वह सही होगी। अल्लाह के समक्ष झूठ बोलने का किसी को साहस नहीं होगा ।

79- सूरः अन-नाज़िआत

यह सूरः आरम्भिक मक्की युग में उतरी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 47 आयतें हैं ।

कुरआनी शैली के अनुसार एक बार फिर इस सूरः में सांसारिक अज़ाब और युद्धों का विवरण आया है और स्पष्ट रूप से ऐसे युद्धों का वर्णन है जिनमें पनडुब्बी नौकाओं का प्रयोग किया जाएगा । आयत **वन्नाज़िआति गर्कन** (सं. 2) का एक अर्थ यह है कि वे युद्ध करने वालियाँ इस उद्देश्य से डूब कर आक्रमण करती हैं कि शत्रु को डुबो दें और फिर अपनी प्रत्येक सफलता पर खुशी अनुभव करती हैं । इसी प्रकार युद्ध और आक्रमण का यह दौड़ एक दूसरे से बढ़त ले जाने के प्रयासों में समाप्त हो जाता है और दोनों ओर से शत्रु बड़े-बड़े षड़यन्त्र रचता है ।

आयत **वस्साबिहाति सब हन** (सं. 4) से तैरने वालीयाँ अभिप्रेत हैं चाहे वे समुद्र के अन्दर डूब कर तैरें अथवा समुद्र के तल पर तैरें । कई बार पनडुब्बी नौकाएँ अपनी विजय प्राप्ति के पश्चात समुद्र तल पर उभर आ निकलती हैं ।

इन युद्धों से ऐसा आतंक छा जाता है कि दिल उसके भय से धड़कने लगते हैं और नज़रें झुक जाती हैं । इस सांसारिक विनाश के पश्चात मनुष्य की अन्तरात्मा यह प्रश्न उठाती है कि क्या फिर हम मृतावस्था से पुनः जी उठेंगे, जबकि हमारी हड्डियाँ गल-सड़ चुकी होंगी ? अल्लाह ने कहा, निःसन्देह ऐसा ही होगा और एक बहुत बड़ी चेतावनी देने वाली आवाज़ गूँजेगी तो सहसा वे अपने आप को क़यामत के मैदान में उपस्थित पाएँगे ।

इसके बाद हज़रत मूसा अलै. का वर्णन आरम्भ किया गया है, क्योंकि उनको फ़िरऔन की ओर भेजा गया था जो स्वयं ईश्वरत्व का दावेदार और परलोक का परम अस्वीकारी था । जब हज़रत मूसा अलै. ने उसे सत्यवार्ता पहुँचाई तो उसने उत्तर में यह डींग हाँकी कि तुम्हारा सर्वोच्च रब्ब तो मैं हूँ । अतः अल्लाह तआला ने उसे ऐसा पकड़ा कि वह पूर्ववर्तियों और परवर्तियों के लिए एक शिक्षाप्रद उदाहरण बन गया । पूर्ववर्तियों ने तो उसे और उसकी सेनाओं को डूबते हुए देखा और परवर्तियों ने उसके डूबे हुए शरीर को देखा, जिसे अल्लाह तआला ने शिक्षा प्रदान करने के लिए भौतिक मृत्यु से इस अवस्था में बचाया कि लम्बी आयु तक वह जीवन और मरण से संघर्ष करता हुआ इस दशा में मरा कि उसके शव को आने वाली पीढ़ियों को शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से ममी (Mummy) के रूप में सुरक्षित कर दिया गया ।

इसके बाद इस सूरः का अन्त इस प्रश्न के उल्लेख पर हुआ है कि वे पूछते हैं कि

आखिर वह क़यामत की घड़ी कब और कैसे आएगी ? अल्लाह ने कहा, जब वह आएगी तो भली-भाँति स्पष्ट हो जाएगा कि प्रत्येक वस्तु का अंतिम गंतव्य उसके रब्ब ही की ओर है । और हे रसूल ! तू तो केवल उसी को डरा सकता है जो इस भयानक घड़ी से डरता हो और जिस दिन वे उसे देखेंगे तो संसार का जीवन यूँ प्रतीत होगा जैसे कुछ क्षणों से अधिक नहीं था ।



سُورَةُ النَّازِعَاتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ السَّمَلَةِ سَعٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَرُكُوعَانِ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

क़सम है डूब कर खींचने वालियों की (अथवा) डुबोने के उद्देश्य से खींचने वालियों की ।2।

और बहुत खुशी मनाने वालियों की ।3।

और खूब तैरने वालियों की ।4।

फिर एक दूसरी पर बढ़त ले जाने वालियों की ।5।

फिर किसी महत्वपूर्ण कार्य की योजना बनाने वालियों की ।6।

जिस दिन कांपने वाली खूब कांपेगी ।7।

एक पीछे आने वाली उसके पीछे आएगी ।8।

दिल उस दिन बहुत धड़क रहे होंगे ।9।

उनकी आंखें नीची होंगी ।10।

वे (लोग) कहेंगे कि क्या हमें पूर्वावस्था की ओर अवश्य लौटा दिया जाएगा ? ।11।

क्या जब हम सड़ी-गली हड्डियां बन चुके होंगे ? ।12।

वे कहेंगे, तब तो यह लौट कर जाना बहुत घाटे का होगा ।13।

अतः (सुनो कि) यह तो केवल एक बड़ी डांट (की आवाज़) होगी ।14।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالْزُّرْعَتِ غَرَقًا ②

وَالشَّيْطِ نَسْطًا ③

وَالسَّيْحَتِ سَبْحًا ④

فَالسَّيْقَتِ سَبَقًا ⑤

فَالْمَدْبَرَتِ أَمْرًا ⑥

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ⑦

تَتَّبِعُهَا الرّادِفَةُ ⑧

قُلُوبٌ يَوْمَئِذٍ وَاجِفَةٌ ⑨

أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ⑩

يَقُولُونَ ءَاِنَّا لَمَرْدُودُونَ فِي الْحَافِرَةِ ⑪

ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ⑫

قَالُوا تِلْكَ اِذَا كُرَّةٌ خَاسِرَةٌ ⑬

فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَاحِدَةٌ ⑭

तब वे सहसा एक खुले मैदान में होंगे ।15।

क्या तेरे पास मूसा का समाचार आया है ? ।16।

जब उसके रब्ब ने उसे पवित्र घाटी तुवा में पुकारा ।17।

(कि) फिरऔन की ओर जा । निःसन्देह उसने उड़ण्डता की है ।18।

फिर (उससे) पूछ, क्या तेरे लिए संभव है कि तू पवित्रता धारण करे ? ।19।

और मैं तुझे तेरे रब्ब की ओर मार्ग-दर्शित करूँ ताकि तू डरे ? ।20।

फिर उस (मूसा) ने उसे एक बहुत बड़ा चिह्न दिखाया ।21।

तो उसने झुठला दिया और अवज्ञा की ।22।

फिर शीघ्रता पूर्वक पीठ फेर ली ।23।

फिर उसने (लोगों को) एकत्रित किया और पुकारा ।24।

फिर कहा कि मैं ही तुम्हारा सर्वोच्च रब्ब हूँ ।25।

अतः अल्लाह ने उसे परलोक और इहलोक के एक शिक्षाप्रद दण्ड के द्वारा पकड़ लिया ।26।

निःसन्देह इसमें उसके लिए जो डरता है अवश्य एक बड़ी सीख है ।27।

(सूकू $\frac{1}{3}$)

क्या सृष्टि में तुम अधिक सशक्त हो अथवा आकाश, जिसे उसने बनाया

فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ مُوسَى ۝

إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝

إِذْ هَبْ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغَىٰ ۝

فَقُلْ هَلْ لَّكَ إِلَىٰ أَنْ تَزْكَىٰ ۝

وَأَهْدِيكَ إِلَىٰ رَبِّكَ فَتَخْشَىٰ ۝

فَأَرَاهُ الْآيَةَ الْكُبْرَىٰ ۝

فَكَذَّبَ وَعَصَىٰ ۝

ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعَىٰ ۝

فَحَشَرَ فَنَادَىٰ ۝

فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلَىٰ ۝

فَأَخَذَهُ اللَّهُ نَكَالَ الْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ۝

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنِ يَخْشَىٰ ۝

عَآلَتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَاءُ بَنَاهَا ۝

है? 128।*

उसकी ऊँचाई को उसने बहुत ऊँचा किया । फिर उसे सुव्यवस्थित किया।29।

और उसकी रात को ढाँप दिया और उसके सुबह को उदित किया ।30।

और धरती को उसके बाद समतल बना दिया ।31।

उससे उसने उसका पानी और उसमें उगने वाला चारा निकाला ।32।**

और पर्वतों को उसने गहरा गाड़ दिया ।33।

तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए जीवनयापन के सामान के रूप में ।34।***

अतः जब सबसे बड़ी विपत्ति आएगी।35।

उस दिन मनुष्य याद करेगा जो उसने प्रयास किया था ।36।

और नरक को उसके लिए प्रकट कर दिया जाएगा जो (उसे अभी केवल कल्पना की दृष्टि से) देखता है।37।

अतः वह जिसने उद्वण्डता की ।38।

رَفَعَ سَمَكَهَا فَسَوَّيَهَا ۝۲۹

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحَاهَا ۝۳۰

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا ۝۳۱

أَخْرَجَ مِنْهَا مَاءَهَا وَمَرْعَاهَا ۝۳۲

وَالْجِبَالَ أَرْسَاهَا ۝۳۳

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝۳۴

فَإِذَا جَاءَتِ الطَّامَةُ الْكُبْرَى ۝۳۵

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعَى ۝۳۶

وَبُرَزَتِ الْجَحِيمُ لِمَنْ يَرَى ۝۳۷

فَأَمَّا مَنْ طَغَى ۝۳۸

* अल्लाह तआला ने आकाश की सृष्टि की, जो इतनी आश्चर्यजनक और महान शक्तियों से परिपूर्ण है कि उसके मुकाबले पर मनुष्य का आविष्कार महत्वहीन है । चाहे वह रॉकेट बना ले, जहाज़ अथवा पनडुब्बियाँ बना ले । इसी प्रकार मनुष्य का अपना जन्म ऐसी आश्चर्यजनक कारीगरी पर आधारित है कि उस पर जितना चिंतन किया जाए उतना ही अल्लाह तआला की कारीगरी और शक्तियों के अनन्त दृश्य दिखते चले जाते हैं ।

** अरबी शब्द **मरआ** के इन अर्थों के लिए देखिए मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि. ।

*** पर्वतों को दृढ़तापूर्वक धरती में गाड़ देने का जो वर्णन है, उसका एक कारण यह है कि इन पर्वतों ही से मनुष्य और पशुओं के जीवनयापन के साधन जुड़े हैं ।

और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी ।39।

तो निःसन्देह नरक ही (उसका) ठिकाना होगा ।40।

और वह जो अपने रब्ब की महत्ता से डरा और उसने अपने मन को बुरी कामना से रोका ।41।

तो निःसन्देह स्वर्ग ही (उसका) ठिकाना होगा ।42।

वे क़यामत की घड़ी के सम्बन्ध में तुझ से पूछते हैं कि वह कब आयेगी ? ।43।

उसके वर्णन से तू किस सोच में है ? ।44।

तेरे रब्ब ही की ओर उसकी पराकाष्ठा है ।45।

तू केवल उसे चेतावनी दे सकता है जो उससे डरता हो ।46।

जब वे उसे देखेंगे (तो विचार करेंगे कि) मानो वे एक शाम अथवा उसकी सुबह के अतिरिक्त (इस संसार में) नहीं बसे ।47। (रुकू $\frac{2}{4}$)

وَأَثَرِ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ

فَإِنَّ الْجَحِيمَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۚ

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهِ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوَىٰ ۚ

فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوَىٰ ۚ

يَسْأَلُونَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۚ

فِيمَا أَنْتَ مِنْ ذِكْرِهَا ۚ

إِلَىٰ رَبِّكَ مُتَّهَمَةٌ ۚ

إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ مَّنْ يَخْشَاهَا ۚ

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبُثُوا

إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ۚ

80- सूरः अ ब स

यह सूरः आरम्भिक काल की मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 43 आयतें हैं ।

इस सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के समय के एक अस्वीकारी का वर्णन है जो बड़ा अहंकारी था और जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से प्रश्न करने के लिए आया था । क्योंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खूब इच्छा होती थी कि किसी प्रकार कोई हिदायत पा जाए । इस कारण उसके अहंकारपूर्ण बर्ताव पर भी अत्यन्त शांत चित्त के साथ उसकी बातों को सुनते रहे । यहाँ तक कि एक नेत्रहीन मोमिन आपसे कोई प्रश्न करने के लिए उपस्थित हुआ तो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस समय उसके हस्तक्षेप को पसंद नहीं किया और उससे अपनी अप्रसन्नता इस प्रकार प्रकट की कि वह व्यक्ति जो बहस कर रहा था वह तो देख सकता था परन्तु उस नेत्रहीन का दिल दुःखी नहीं हो सकता था, क्योंकि उसे कुछ मालूम नहीं हो पाया था । इस विवरण के पश्चात अल्लाह तआला ने यह आदेश दिया है कि जो व्यक्ति निष्ठा और उत्सुकता पूर्वक तेरे पास आए उससे कभी बेपरवाही न कर और जो अहंकार करने वाला जानकारी प्राप्त करने के लिए उपस्थित हो चाहे वह संसार का बड़ा व्यक्ति हो उसको किसी निर्धन परन्तु निष्ठावान अनुयायी पर किसी प्रकार का महत्व न दे । इसके बाद कुरआन करीम की ऊँची शान का वर्णन आरम्भ हो जाता है कि यह पुस्तक किस प्रकार बह्माण्ड की प्रारम्भिक उत्पत्ति के रहस्यों पर से पर्दा उठाती है और इसके अंत और परकालीन दिवस में घटित होने वाली वृहद घटनाओं का भी वर्णन करती है ।



سُورَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ ثَلَاثٌ وَأَرْبَعُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 11।
उसने त्योंरी चढ़ाई और मुंह मोड़ लिया 12।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

عَبَسَ وَتَوَلَّى ②

कि उसके पास एक नेत्रहीन आया 13।

أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَى ③

और तुझे क्या मालूम कि हो सकता था वह बहुत पवित्र हो जाता 14।
अथवा उपदेश पर विचार करता तो उपदेश उसे लाभ पहुँचाता 15।

وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ يَزَّكَّى ④

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرَى ⑤

वह जिसने बेपरवाही की 16।

أَمَّا مَنْ اسْتَغْنَى ⑥

तू उसकी ओर ध्यान दे रहा है 17।

فَأَنْتَ لَهُ تَصَدَّى ⑦

हालाँकि यदि वह पवित्रता धारण न करे तो तुझ पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं 18।*
और वह जो तेरे पास बहुत प्रयास करके आया 19।

وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكَّى ⑧

وَأَمَّا مَنْ جَاءَكَ يَسْعَى ⑨

और वह डर रहा था 110।

وَهُوَ يَخْشَى ⑩

पर तू उससे बेपरवाह रहा 111।

فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهَّى ⑪

सावधान ! निःसन्देह यह एक बड़ा उपदेश है 112।

كَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ⑫

अतः जो चाहे इसे याद रखे 113।

﴿

فَمَنْ شَاءَ ذَكَرْهُ ⑬﴾

सम्माननीय पृष्ठों में है ।14।

فِي صُحُفٍ مُّكْرَمَةٍ ۝۱४

जो उच्च प्रतिष्ठा संपन्न, बहुत पवित्र
रखे गए हैं ।15।

مَرْفُوعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ ۝۱५

लिखने वालों के हाथों में हैं ।16।

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۝۱६

(जो) बहुत सम्माननीय (और) बड़े
नेक हैं ।17।

كِرَامٍ بَرَرَةٍ ۝۱७

सर्वनाश हो मनुष्य का ! वह कैसा
कृतघ्न है ।18।

قَتَلَ الْإِنْسَانَ مَا أَكْفَرَهُ ۝۱८

उसे उसने किस चीज़ से पैदा
किया ? ।19।

مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝۱९

वीर्य से उसे पैदा किया, फिर उसे
सुव्यवस्थित किया ।20।

مِنْ نُّطْفَةٍ ۝ خَلَقَهُ فَقَدَرَهُ ۝۲०

फिर उसके लिए रास्ते को आसान कर
दिया ।21।

ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۝۲१

फिर उसे मारा और क़ब्र में प्रविष्ट
किया ।22।*

ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ ۝۲२

फिर वह जब चाहेगा उसे उठाएगा ।23।

ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشَرَهُ ۝۲३

सावधान ! उसने उसे जो आदेश
दिया था, वह अभी तक पूरा नहीं
कर सका ।24।

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا أَمَرَهُ ۝۲४

अतः मनुष्य अपने भोजन की ओर
देखे ।25।

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامِهِ ۝۲५

कि हमने खूब पानी बरसाया ।26।

أَنَّا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّا ۝۲६

फिर हमने धरती को अच्छी प्रकार
फाड़ा ।27।

ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۝۲७

* आवश्यक नहीं कि प्रत्येक व्यक्ति की एक क़ब्र बने । बहुत से लोग डूब जाते हैं अथवा जंगली जानवरों की भेंट चढ़ जाते हैं । अतः यहाँ क़ब्र से अभिप्राय उसके पुनरुत्थान से पूर्व का समय है अर्थात् प्रत्येक मनुष्य की आत्मा पर क़ब्र सदृश एक समय आएगा ।

फिर उसमें हमने अनाज उगाया ।28।

فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۝

और अंगूर और सब्जियाँ ।29।

وَعِنَبًا وَقُضْبًا ۝

और जैतून और खजूर ।30।

وَزَيْتُونًا وَنَخْلًا ۝

और घने बाग़ ।31।

وَحَدَآئِقٍ غُلْبًا ۝

और भाँति-भाँति के फल और चारा ।32।

وَفَاكِهَةً وَأَبًّا ۝

जो तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए लाभ का सामान हैं ।33।

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ۝

अतः जब एक कड़कदार आवाज़ आएगी ।34।

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاحَةُ ۝

जिस दिन मनुष्य अपने भाई से भी पलायन करेगा ।35।

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۝

और अपनी माता से भी और अपने पिता से भी ।36।

وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ ۝

और अपनी पत्नी से भी और अपनी संतान से भी ।37।

وَصَاحِبَتِهِ وَبَنِيهِ ۝

उस दिन उनमें से प्रत्येक व्यक्ति की एक ऐसी अवस्था होगी जो उसे (सबसे) निस्पृह कर देगी ।38।

لِكُلِّ امْرِئٍ مِنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ ۝

कुछ चेहरे उस दिन उज्ज्वल होंगे ।39।

وُجُوهُ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝

हंसते हुए, प्रसन्न चित्त ।40।

صَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۝

और कुछ चेहरे ऐसे होंगे कि उस दिन उन पर धूल पड़ी होगी ।41।

وُجُوهُ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝

उन पर कालिमा छा रही होगी ।42।

تَرْمُقُهَا قَرَّةٌ ۝

यही वे कृतघ्न, दुराचारी लोग हैं ।43।

۝

أُولَٰئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝

(रुकू 1/5)

81- सूरः अत-तक्वीर

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 30 आयतें हैं ।

फिर एक बार कुरआन करीम संसार में घटित होने वाली वृहद घटनाओं की खबर देता है जो क़यामत की घड़ी पर साक्षी ठहरेंगी और सूर्य को साक्षी ठहराया गया है जब उसे ढाँप दिया जाएगा । अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के प्रकाश को उस युग के शत्रु मानव-जाति की भलाई के लिए नहीं पहुँचने देंगे और उनका षड़यन्त्र और दुष्प्रचार बीच में बाधक बन जाएगा । और जब सहाबा रज़ि. के प्रकाश को भी शत्रु की ओर से मलिन कर दिया जाएगा और जिस प्रकार सूर्य के बाद सितारे किसी सीमा तक प्रकाश फैलाने का काम करते हैं, इसी प्रकार सहाबा का प्रकाश भी मनुष्य की दृष्टि से ओझल कर दिया जाएगा। यह वह युग होगा जबकि बड़े-बड़े पर्वत चलाए जाएंगे अर्थात् पर्वतों की भाँति बड़े-बड़े समुद्री जहाज़ और हवाई जहाज़ भी यातायात करने और माल ढुलाई के लिए व्यवहृत होंगे और ऊँटनियाँ उनके मुक्काबले पर बेकार वस्तु की भाँति परित्यक्त कर दी जाएंगी । यह वह युग होगा जब अधिकता से चिड़ियाघर बनाए जाएंगे । स्पष्ट है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग में इसका कोई अस्तित्व नहीं था । वर्तमान युग के चिड़ियाघर भी इस बात की गवाही दे रहे हैं कि इतने बड़े-बड़े जानवर समुद्री जहाज़ों और हवाई जहाज़ों के द्वारा उनमें स्थानान्तरित किए जाते हैं । उस युग का मनुष्य इसकी कल्पना तक नहीं कर सकता था ।

फिर सम्भवतः समुद्री युद्धों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित कराया गया है, जब अधिकतापूर्वक समुद्रों में जहाज़ चलेंगे और इसके परिणाम स्वरूप दूर-दूर के लोग परस्पर मिलाए जाएंगे अर्थात् केवल जानवर ही इकट्ठे नहीं किए जाएंगे अपितु मनुष्य भी परस्पर मिलाए जाएंगे । वह दौर क़ानून का दौर होगा अर्थात् पूरे भू-मंडल पर क़ानून का राज होगा । यहाँ तक कि मनुष्य को यह भी अधिकार नहीं दिया जाएगा कि वह स्वयं अपनी संतान के साथ अत्याचार-पूर्ण व्यवहार कर सके । देखने में तो समग्र संसार पर क़ानून ही का राज है परन्तु अल्लाह तआला के क़ानून के इनकार के कारण संसार का क़ानून भी किसी देश से दंगा-उपद्रव को दूर नहीं कर सकता । यह दौर अधिक मात्रा में पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार का दौर होगा और आकाश के रहस्यों की तलाश करने वाले मानों आकाश की खाल उधेड़ देंगे । उस दिन नरक को भी धधकाया जाएगा जो युद्ध रूपी नरक भी होगा और आकाशीय प्रकोप रूपी नरक भी होगा । इस के बावजूद जो लोग अल्लाह तआला की शिक्षा का पालन करेंगे और उस पर अडिग रहेंगे, उनके लिए स्वर्ग को निकट कर दिया जाएगा । प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञात हो जाएगा कि उसने अपने

लिए आगे क्या भेजा है ।

आयत सं. 16 और 17 में गुप्त रूप से कार्यवाहियाँ करके पलट जाने वाली उन नौकाओं को साक्षी ठहराया गया है जो कार्यवाहियाँ करने के पश्चात अपने निश्चित अड्डों में जा छिपती हैं । इसको बार-बार इसलिए दोहराया गया है कि यहाँ अब आध्यात्मिक रूप से मनुष्य के मन पर आक्रमण करने वाले ऐसे शैतानी विचारों का वर्णन है जो आक्रमण करके फिर अदृश्य हो जाते हैं । और उस रात्रि को साक्षी ठहराया गया है कि जब वह अन्तिम स्वास ले रही होगी और प्रातोदय के लक्षण प्रकट हो जाएँगे और अन्ततः उस अंधेरी रात के बाद इस्लाम का सूर्योदय अवश्य होगा ।



سُورَةُ التَّكْوِيْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثُونَ آيَةً وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

जब सूर्य को लपेट दिया जाएगा ।2।

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ①

और जब नक्षत्र मलिन पड़ जाएंगे ।3।

وَإِذَا النُّجُومُ انْكَدَرَتْ ②

जब पर्वत चलाए जाएंगे ।4।

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ③

और जब दस माह की गाभिन ऊँटनियाँ बिना किसी निगरानी के छोड़ दी जाएंगी ।5।

وَإِذَا الْعُشُورُ عُطِّلَتْ ④

और जब जंगली जानवर इकट्ठे किए जाएंगे ।6।

وَإِذَا الْوُحُوشُ حُشِرَتْ ⑤

और जब समुद्र फाड़े जाएंगे ।7।

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ⑥

और जब जानें मिला दी जाएंगी ।8।

وَإِذَا النُّفُوسُ زُوِّجَتْ ⑦

और जब जीवित गाड़ दी जाने वाली (अपने बारे में) पूछी जाएगी ।9।

وَإِذَا الْمَوْءِدَةُ سُئِلَتْ ⑧

(कि) किस पाप के बदले में (वह) वध की गई है ? ।10।*

بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ⑨

और जब ग्रंथ प्रसारित किए जाएंगे ।11।

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ⑩

और जब आकाश की खाल उधेड़ी जाएगी ।12।

وَإِذَا السَّمَاءُ كُشِطَتْ ⑪

* आयत सं. 9, 10 :- इन आयतों में भविष्य युगीन विकसित शासन तन्त्रों का वर्णन है जो अपने बच्चों पर भी माता-पिता के प्रभुत्व को नकारेंगे । अपने विस्तृत अर्थों की दृष्टि से यह आयत इस शान के साथ पूरी हुई है कि बच्चों का वध करना तो दूर, यदि यह प्रमाणित हो जाए कि माता-पिता अपने बच्चों पर किसी प्रकार की ज़्यादती करते हैं तो सरकारें उनके बच्चों को अपने संरक्षण में ले लेती हैं ।

और जब नरक को भड़काया जाएगा। 113।

और जब स्वर्ग को निकट कर दिया जाएगा। 114।

(तब) हर एक जान जो वह लाई होगी, जान लेगी। 115।

अतः सावधान ! मैं क्रसम खाता हूँ गुप्त कार्यवाहियाँ करके पलट जाने वालियों की। 116।

अर्थात् नौकाओं की, जो छुपने के समय (अथवा छुपने के स्थानों में) छुप जाती हैं। 117।

और रात की, जब वह आएगी और पीठ फेर जाएगी। 118।*

और सुबह की, जब वह साँस लेने लगेगी। 119।

निःसन्देह यह एक (ऐसे) सम्माननीय रसूल का कथन है। 120।

(जो) शक्ति वाला है। अर्श के अधिपति के निकट उच्च पदस्थ है। 121।

बहुत अनुसरण करने योग्य (जो) वहाँ (अर्थात् अर्श के अधिपति के समक्ष) विश्वस्त भी है। 122।

और (निःसन्देह) तुम्हारा साथी पागल नहीं। 123।

और वह अवश्य उसे उज्ज्वल क्षितिज पर देख चुका है। 124।**

وَإِذَا الْجَحِيمُ سُعِّرَتْ ۝

وَإِذَا الْجَنَّةُ أُرْلِفَتْ ۝

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا أَحْضَرَتْ ۝

فَلَا أَقْسَمُ بِالْخُتْسِ ۝

الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝

وَالَّيْلِ إِذَا عَسَسَ ۝

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ۝

إِنَّهُ لَقَوْلُ رَسُولٍ كَرِيمٍ ۝

ذِي قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِينٍ ۝

مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِينٍ ۝

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُونٍ ۝

وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأَفْقى الْمُبِينِ ۝

* अरबी में अस असल लैलु के अर्थ हैं : रात आई और पीठ फेर गई। मुफ़रदात इमाम राशिब रहि.

** आयत सं. 23, 24 : इससे तात्पर्य यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी ओर से बातें नहीं बनाई बल्कि वास्तव में उन्होंने जिब्रील को एक उज्ज्वल क्षितिज पर देखा था।

और वह अदृश्य के (वर्णन करने) में
कंजूस नहीं ।25।

और वह किसी धुतकारे हुए शैतान का
कथन नहीं ।26।

अतः तुम किधर जा रहे हो ? ।27।

वह तो समस्त लोकों के लिए एक बड़े
उपदेश के सिवा कुछ नहीं ।28।

उसके लिए, जो तुम में से (सन्मार्ग पर)
अडिग रहना चाहे ।29।

और तुम कुछ भी नहीं चाह सकते,
परन्तु वही जो समस्त लोकों का रब्ब
अल्लाह चाहे ।30। (रकू $\frac{1}{6}$)

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِينٌ ۝٢٥

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَّجِئٍ ۝٢٦

فَإَيْنَ تَذْهَبُونَ ۝٢٧

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝٢٨

لِمَنْ شَاءَ مِنْكُمْ أَنْ يَسْتَقِيمَ ۝٢٩

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ
رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝٣٠

82- सूरः अल-इन्फितार

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 20 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ पर भी सितारों का वर्णन है परन्तु उनके मलिन पड़ने का नहीं बल्कि टूट जाने का वर्णन है । अर्थात् रात्रि के अंधकार में मनुष्य पूरी तरह सितारों के प्रकाश से भी वंचित कर दिया जाएगा । फिर समुद्र का वर्णन करते हुए यह बात दोहराई गई कि केवल समुद्रों में ही अधिकता पूर्वक जहाज़रानी नहीं होगी और उनके रहस्य को जानने के लिए उनको फाड़ा नहीं जाएगा बल्कि पुरातत्त्वविद भू-भाग पर भी गड़ी हुई अतीत युगीन सभ्यताओं की क़ब्रों को उखेड़ेंगे । उस दिन मनुष्य को ज्ञात हो जाएगा कि इससे पहले लोग अपने आगे क्या भेजते रहे हैं और परवर्ती समय में आने वाले भी क्या आगे भेजेंगे ।

इस सूरः के अन्त पर फिर परकालीन दिवस के वर्णन पर एक आयत में यह विषय वर्णन किया गया है कि संसार का वास्तविक स्वामित्व अस्थायी स्वामियों के पास नहीं है। बल्कि वास्तविक स्वामी तो अल्लाह तआला ही है जिसकी ओर परकालीन दिवस में प्रत्येक प्रकार का स्वामित्व लौट जाएगा और अन्य सभी को स्वामित्व विहीन कर दिया जाएगा ।



سُورَةُ الْإِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ عِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।11।

जब आकाश फट जाएगा ।2।

और जब सितारे झड़ जाएँगे ।3।

और जब समुद्र फाड़े जाएँगे ।4।

और जब क़ब्रें उखेड़ी जाएँगी ।5।

हर एक जान को ज्ञात हो जाएगा कि उसने क्या आगे भेजा है और क्या पीछे छोड़ा है ।6।

हे मनुष्य ! तुझे अपने कृपाशील रब्ब के बारे में किस बात ने धोखे में डाला ? ।7।

वह जिसने तुझे पैदा किया । फिर तुझे ठीक-ठाक बनाया । फिर तुझे व्यवस्थित किया ।8।

जिस आकृति में भी चाहा तेरा सृजन किया ।9।

सावधान ! तुम तो कर्मफल का ही इनकार कर रहे हो ।10।

जबकि निश्चित रूप से तुम पर निरीक्षक नियुक्त हैं ।11।

सम्माननीय लिखने वाले ।12।

वे जानते हैं जो तुम करते हो ।13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِذَا السَّمَاءُ انْفَطَرَتْ ②

وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انتَثَرَتْ ③

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ④

وَإِذَا الْقُبُورُ بُعْثِرَتْ ⑤

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ⑥

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيمِ ⑦

الَّذِي خَلَقَكَ فَسُبُّكَ فَعَدَلَكَ ⑧

فِي أَيِّ صُورَةٍ مَّا شَاءَ رَكَّبَكَ ⑨

كَأَلْبَلٌ تُكَذِّبُونَ بِالْدِّينِ ⑩

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحَافِظِينَ ⑪

كِرَامًا كَاتِبِينَ ⑫

يَعْلَمُونَ مَا تَفْعَلُونَ ⑬

निःसन्देह सदाचारी लोग अवश्य सुख-
समृद्धि में होंगे ।14।

और निःसन्देह दुराचारी अवश्य नरक में
होंगे ।15।

वे उसमें कर्मफल प्राप्ति के दिन प्रविष्ट
होंगे ।16।

और वे कदापि उससे बच न सकेंगे ।17।

और तुझे क्या पता कि कर्मफल प्राप्ति
का दिन क्या है ? ।18।

फिर तुझे क्या पता कि कर्मफल प्राप्ति
का दिन क्या है ? ।19।

जिस दिन कोई जान किसी दूसरी जान
के लिए किसी चीज़ का अधिकार नहीं
रखेगी । और उस दिन निर्णय करने का
अधिकार पूर्णरूपेण अल्लाह ही का
होगा ।20। (रुकू $\frac{1}{7}$)

إِنَّ الْآبِرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝

وَأِنَّ الْفَجَّارَ لَفِي جَحِيمٍ ۝

يَصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَائِبِينَ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

ثُمَّ مَا أَدْرَاكَ مَا يَوْمَ الدِّينِ ۝

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ۝

۞

وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِلَّهِ ۝

83- सूरः अल-मुतफ़्फ़ीन

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 37 आयतें हैं ।

इस सूरः में एक बार फिर से नाप-तौल की ओर मनुष्य को ध्यान दिलाया गया है कि तुम तभी सफल हो सकते हो यदि न्याय पर डटे रहो । यह न हो कि लेने के मापदंड और हों और देने के मापदंड और । यहाँ वर्तमान काल के व्यापार का भी विश्लेषण कर दिया गया है । बड़ी-बड़ी धनवान जातियाँ जब भी निर्धन जातियों से सौदा करती हैं तो सर्वथा उस सौदे में निर्धन जातियों की हानि अवश्य होती है । अल्लाह ने कहा, क्या ये लोग सोचते नहीं कि एक बहुत बड़े हिसाब-किताब के दिन वे एकत्रित किए जाएंगे जिसमें उनके सांसारिक सौदों का भी हिसाब होगा । यह वह कर्मफल दिवस है जिसका वर्णन पिछली सूरः के अंत में हुआ है ।

इसके बाद की आयतों में स्पष्ट रूप से कर्मफल दिवस का वर्णन करके चेतावनी दी गई है कि कर्मफल दिवस के अस्वीकारी पिछले युगों में भी विनष्ट कर दिए गए थे और अंत्ययुग में भी बुरे अंत को प्राप्त होंगे ।

इसके बाद की आयतों में नरक और स्वर्ग निवासियों का तुलनात्मक वर्णन प्रस्तुत किया गया है और चेतावनी दी गई है कि वे लोग जिनसे ये संसार में उपहास करते हुए व्यंग कसते और आँखों के इशारों से उनका अपमान करते हुए उन्हें काफ़िर कहते थे, उस दिन वे उन काफ़िरों पर हंसेगे और उनसे पूछेंगे कि बताओ अब तुम्हारा क्या हाल है ?



سُورَةُ الْمُطَفِّفِينَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَعٌ وَثَلَاثُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 11।

सर्वनाश है नाप-तौल में अन्याय करने वालों के लिए 12।

अर्थात् वे लोग जो कि लोगों से जब तौल कर लेते हैं तो भरपूर (मापदंडों के साथ) लेते हैं 13।

और जब उनको नाप कर अथवा तौल कर देते हैं तो कम देते हैं 14।

क्या ये लोग विश्वास नहीं करते कि वे अवश्य उठाए जाएंगे 15।

एक बहुत बड़े दिन में (पेशी) के लिए 16।

जिस दिन लोग समस्त लोकों के रब्ब के समक्ष खड़े होंगे 17।

सावधान ! निःसन्देह दुराचारियों का कर्मपत्र सिज्जीन में है 18।

और तुझे क्या मालूम कि सिज्जीन क्या है ? 19।

एक लिखी हुई पुस्तक है 110।

सर्वनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए 111।

जो कर्मफल दिवस को झुठलाते हैं 112।

और उसे कोई नहीं झुठलाता परन्तु वही जो सीमा से बढ़ा हुआ महापापी है 113।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِينَ ②

الَّذِينَ إِذَا اكْتَالُوا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُونَ ③

وَإِذَا كَالُوهُمْ أَوْ وَزَنُوهُمْ يُخْسِرُونَ ④

أَلَا يَظُنُّ أُولَٰئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ ⑤

لِيَوْمٍ عَظِيمٍ ⑥

يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ⑦

كَلَّا إِنَّ كِتَابَ الْفَجَّارِ لَفِي سَجِينٍ ⑧

وَمَا أَدْرَاكَ مَا سَجِينٌ ⑨

كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ⑩

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِينَ ⑪

الَّذِينَ يَكْذِبُونَ يَوْمَ الدِّينِ ⑫

وَمَا يَكْذِبُ بِهِ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيمٍ ⑬

जब उस के समक्ष हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, वह कहता है (ये) पहले लोगों की कहानियाँ हैं ।14।

सावधान ! वास्तविकता यह है कि उन कमाइयों ने उनके दिलों पर ज़ंग लगा दिया है जिन्हें वे अर्जित किया करते थे ।15।

सावधान ! निःसन्देह उस दिन वे अपने रब्ब से पर्दे में कर दिए जाएँगे (अर्थात् उसके दर्शन से वंचित कर दिए जाएँगे) ।16।

फिर अवश्य वे नरक में प्रविष्ट होंगे ।17।

फिर कहा जाएगा कि यही वह है जिसको तुम झुठलाया करते थे ।18।

सावधान ! निःसन्देह नेक लोगों का कर्मपत्र **इल्लियीन** में अवश्य है ।19।

और तुझे क्या मालूम कि **इल्लियीन** क्या है ? ।20।

एक लिखी हुई पुस्तक है ।21।

सान्निध्य प्राप्त लोग उसे (अपनी आँखों से) देख लेंगे ।22।

निःसन्देह नेक लोग सुख-समृद्धि में अवश्य होंगे ।23।

सुसज्जित पलंगों पर बैठे अवलोकन कर रहे होंगे ।24।

तू उनके चेहरों में सुख-समृद्धि की ताज़गी पहचान लेगा ।25।

إِذَا تُلِيٰ عَلَيْهِ آيَاتُنَا قَالَ أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝۱۴

كَذَٰلِكَ رَآنَا عَلَىٰ قُلُوبِهِمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝۱۵

كَذَٰلِكَ إِنَّهُمْ عَنْ رَبِّهِمْ يَوْمِذٍ لَّمَّحْجُوبُونَ ۝۱۶

ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيمِ ۝۱۷

ثُمَّ يُقَالُ هَٰذَا الَّذِي كُنْتُمْ بِهِ تَكْذِبُونَ ۝۱۸

كَذَٰلِكَ إِنَّ كِتَابَ الْأَبْرَارِ لَفِي عِلِّيِّينَ ۝۱۹

وَمَا أَدْرَاكَ مَا عِلِّيُّونَ ۝۲۰

كِتَابٌ مَّرْقُومٌ ۝۲۱

يَشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُونَ ۝۲۲

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝۲۳

عَلَى الْأَرَآئِكِ يَنْظُرُونَ ۝۲۴

تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۝۲۵

उन्हें एक मुहरबंद शराब में से पिलाया जाएगा ।26।

उसकी मुहर कस्तूरी होगी । अतः इस (विषय) में चाहिए कि मुक्राबले की इच्छा रखने वाले एक दूसरे से बढ़ कर इच्छा करें ।27।

उसका गुण तस्नीम (मिश्रित) होगा ।28।

(जो) एक ऐसा स्रोत है, जिससे सान्निध्य प्राप्त लोग पिँएँगे ।29।

निःसन्देह जिन्होंने अपराध किए वे उन लोगों से जो ईमान लाए, उपहास किया करते थे ।30।

और जब उनके पास से गुज़रते थे तो परस्पर इशारे करते थे ।31।

और जब अपने घर वालों की ओर लौटते थे, व्यर्थ बातें बनाते हुए लौटते थे ।32।

और जब कभी उन्हें देखते थे कहते थे, निःसन्देह यही हैं जो पक्के पथभ्रष्ट हैं ।33।

हालाँकि वे उन पर निरीक्षक बना कर नहीं भेजे गए थे ।34।

अतः वे लोग जो ईमान लाए आज काफ़िरों पर हँसेंगे ।35।

सुसज्जित पलंगों पर विराजित होकर अवलोकन कर रहे होंगे ।36।

क्या काफ़िरों को उसका पूरा प्रतिफल दे दिया गया है जो वे किया करते थे ? ।37। (रकू 1/8)

يُسْقَوْنَ مِنْ رَحِيقٍ مَخْمُومٍ ۝

خِتْمُهُ مِسْكٌ ۖ وَفِي ذَلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ۝

وَمِرَاجُهُ مِنْ تَسْنِيمٍ ۝

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝

إِنَّ الَّذِينَ أَجْرَمُوا كَانُوا مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا يَضْحَكُونَ ۝

وَإِذَا مَرُّوا بِهِمْ يَتَغَامَزُونَ ۝

وَإِذَا انْقَلَبُوا إِلَىٰ أَهْلِهِمْ انْقَلَبُوا فَكِهِينَ ۝

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوا إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَضَّاوُونَ ۝

وَمَا أُرْسِلُوا عَلَيْهِمْ حَفِظِينَ ۝

فَالْيَوْمَ الَّذِينَ آمَنُوا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُونَ ۝

عَلَى الْأَرَائِكِ لَا يَنْظُرُونَ ۝

هَلْ تُؤْتَوْنَ الْكُفَّارَ مَا كَانُوا يَفْعَلُونَ ۝

84- सूरः अल-इन्शिकाक़

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 26 आयतें हैं ।

पिछली सूरतों की वर्णन शैली को जारी रखते हुए एक बार फिर संसार में प्रकट होने वाले महान परिवर्तनों को परलोक के लिए साक्षी ठहराया गया है । एक बार फिर आकाश के फट जाने का वर्णन है जिसका एक अर्थ यह है कि भाँति-भाँति की विपत्तियाँ आएँगी ।

इसके बाद धरती को फैला दिए जाने का वर्णन है । वैसे तो इस संसार में धरती फैलाई हुई दिखाई नहीं देती परन्तु कुरआन के समय में मनुष्य की जानकारी में केवल आधी धरती थी और आधी धरती अमेरिका इत्यादि की खोज से व्यवहारिक दृष्टि से फैला दी गई । और यही वह दौर है जिसमें धरती सबसे अधिक अपने दबे हुए रहस्यों को बाहर निकाल देगी, मानो खाली हो जाएगी । विज्ञान का यह नवीन विकास-काल अमेरिका की खोज से ही आरम्भ होता है ।

इसके बाद यह भविष्यवाणी है कि जब दिन अंधकार में परिवर्तित हो रहा होगा और फिर रात छा जाएगी तब एक बार फिर इस्लाम का चन्द्रमा उदय होगा, उस दिन तुम क्रमशः अपनी उन्नति के अंतिम पड़ाव तय कर रहे होगे ।



سُورَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ وَعِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

जब आकाश फट जाएगा ।2।

إِذَا السَّمَاءُ انشَقَّتْ ①

और अपने रब की ओर कान धरेगा और यही उस पर अनिवार्य किया गया है ।3।

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ①

और जब धरती विस्तृत कर दी जाएगी ।4।

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ①

और जो कुछ उसमें है (उसे वह) निकाल फेंकेगी और खाली हो जाएगी ।5।

وَأَلْقَتْ مَا فِيهَا وَتَخَلَّتْ ①

और अपने रब की ओर कान धरेगी । और यही उस पर अनिवार्य किया गया है ।6।

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ①

हे मनुष्य ! तुझे अवश्य अपने रब की ओर कठोर परिश्रम (करके जाने) वाला बनना होगा । अतः (अवश्यमेव) तू उसे आमने-सामने मिलने वाला है ।7।

يَا أَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلَىٰ رَبِّكَ كَدًا فَمُلِقِيهِ ⑦

अतः वह जिसे उसका कर्मपत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा ।8।

فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ ⑧

तो निःसन्देह उसका सरल हिसाब लिया जाएगा ।9।

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا ⑧

और वह अपने घरवालों की ओर प्रसन्नचित्त होकर लौटेगा ।10।

وَيَنْقَلِبُ إِلَىٰ أَهْلِهِ مَسْرُورًا ⑧

और वह जिसे उसके गुप्त रूप से किए हुए कर्मों का हिसाब दिया जाएगा ।11।

وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ وَرَاءَ ظَهْرِهِ ⑩

वह अवश्य (अपने लिए) विनाश की दुआ मांगेगा ।12।

فَسَوْفَ يَدْعُوا ثُبُورًا ⑩

और भड़कती हुई अग्नि में प्रविष्ट होगा 113।

निःसन्देह वह अपने घरवालों में प्रसन्न था 114।

निःसन्देह उसने यह सोच रखा था कि वह कदापि उठाया नहीं जाएगा 115।*

क्यों नहीं ! निःसन्देह उसका रब्ब उस पर सदा गहन दृष्टि रखने वाला था 116।

अतः सावधान ! मैं संध्या की लालिमा को साक्षी ठहराता हूँ 117।

और रात को और उसे जो वह समेटती है 118।

और चन्द्रमा को जब वह प्रकाश से परिपूर्ण हो जाए 119।

निःसन्देह तुम अवश्य क्रमशः उन्नति करोगे 120।*

अतः उन्हें क्या हो गया है कि वे ईमान नहीं लाते ? 121।

और जब उन के समक्ष कुरआन पढ़ा जाता है तो सजदः नहीं करते 122।

बल्कि वे लोग जिन्होंने इनकार किया, झुठला देते हैं 123।

وَيَصْلَىٰ سَعِيرًا ۝

إِنَّهُ كَانَ فِي أَهْلِهِ مَسْرُورًا ۝

إِنَّهُ ظَنَّ أَنْ لَنْ يَخُورَ ۝

بَلَىٰ إِنَّ رَبَّهُ كَانَ بِهِ بَصِيرًا ۝

فَلَا أَقْسَمُ بِالْشفقِ ۝

وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝

وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۝

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۝

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۝

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يَكْذِبُونَ ۝

* इस प्रकार के अर्थ के लिए देखें मुफ़रदात इमाम राशिब रहि.

*** आयत सं. 17-20 : अरबी शब्द फ़ला से यहाँ यह अभिप्राय नहीं है कि मैं क्रसम नहीं खाता, बल्कि इससे तत्कालीन प्रचलित विचारधारा को नकारना है । अल्लाह तआला संध्या की लालिमा को साक्षी ठहराता है और फिर उसके पश्चात जब रात गहरी होने लगे उस समय भी अल्लाह तआला मनुष्य को प्रकाश से पूर्णतया वंचित नहीं करता बल्कि चन्द्रमा को सूर्य के प्रकाश को प्रतिबिम्बित करने के लिए भेज देता है । और चन्द्रमा भी एक साथ पूरे प्रकाश के साथ नहीं चमकता अर्थात एक बार चौदहवीं का चाँद नहीं बन जाता बल्कि धीरे-धीरे उन्नति करता है । इसी प्रकार चौदहवीं शताब्दी में आने वाला मुजद्दिद (धर्म-सुधारक) भी तेरह शताब्दियों के सुधारकों के पश्चात क्रमशः उन्नति करते हुए पूर्ण चन्द्रमा की भाँति प्रकट होगा ।

और अल्लाह सबसे अधिक जानता है जो
वे इकट्ठा कर रहे हैं ।24।

अतः उन्हें पीड़जनक अज़ाब का शुभ-
समाचार दे दे ।25।

सिवाय उन लोगों के, जो ईमान लाए
और नेक कर्म किए, उनके लिए एक
अनंत प्रतिफल है ।26। (रकू $\frac{1}{9}$)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوعُوْنَ ۝۲۴

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝۲۵

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝۲۶

85- सूर: अल-बुरूज

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 23 आयतें हैं ।

इस सूर: का पिछली सूर: से यह सम्बन्ध है कि उसमें नए सिरे से इस्लाम के चन्द्रमा के उदय होने का वर्णन था । यह घटना कब घटेगी और इसका उद्देश्य क्या होगा ? याद रहे कि आकाश के बारह नक्षत्र हैं अर्थात् बारह सौ वर्षों के पश्चात इस भविष्यवाणी के प्रकट होने का समय आएगा और जिस प्रकार चन्द्रमा सूर्य की गवाही देता है इसी प्रकार एक आने वाला शाहिद (गवाही देने वाला) अपने महान मशहूद (जिसकी गवाही दी जाय) अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गवाही देगा और इस गवाही में उसके सच्चे अनुयायी भी सम्मिलित होंगे । उनका इसके अतिरिक्त कोई अपराध नहीं होगा कि वे आने वाले पर ईमान ले आए परन्तु इसके बावजूद उनको घोर अत्याचारपूर्ण दंड दिये जायेंगे, यहाँ तक कि उन्हें अग्नि में जलाया जाएगा और देखने वाले आराम से उसका तमाशा देखेंगे । बिल्कुल इसी प्रकार की घटनाएँ पाकिस्तान में निष्ठावान अहमदियों के विरुद्ध लगातार घटित हो रही हैं ।

इस सूर: के अन्त पर इस बात की कड़ी चेतावनी दी गई है कि पहली जातियों ने भी जब इस प्रकार के अत्याचार किए थे तो उन्हें उनके अत्याचारों ने घेर लिया था । अतः उस कुरआन की क़सम है जो सुरक्षित पट्टिका में है कि तुम भी अपने अपराधों का दंड अवश्य पाओगे ।



سُورَةُ الْبُرُوجِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَلَاثٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

कसम है नक्षत्रों वाले आकाश की ।2।

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ ②

और प्रतिश्रुत दिवस की ।3।

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ ③

और एक गवाही देने वाले की और उसकी जिसकी गवाही दी जाएगी ।4।

وَشَهِيدٍ مَّشْهُودٍ ④

खाइयों वाले विनष्ट कर दिए जाएंगे ।5।

قَتَلَ أَصْحَابِ الْأَحْدُودِ ⑤

अर्थात् उस अग्नि वाले जो बहुत ईंधन वाली है ।6।

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ ⑥

जब वे उसके गिर्द बैठे होंगे ।7।

إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ ⑦

और वे उस पर साक्षी होंगे जो वे मोमिनों से करेंगे ।8।*

وَهُمْ عَلَى مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ ⑧

और वे उनसे केवल इसलिए द्वेष रखते थे कि वे पूर्ण प्रभुत्व वाले, स्तुति योग्य अल्लाह पर ईमान ले आए ।9।

وَمَا نَقْمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ⑨

- * आयत सं. 5 से 8 : इन आयतों में उन लोगों के विनाश की भविष्यवाणी की गई है जिन्होंने खाई में आग जलाई थी और उसमें मोमिनों को फेंक कर बैठे उनका तमाशा देखते थे । इन आयतों में यह भविष्यवाणी निहित है कि यह घटना आगे आने वाले समय में भी घटेगी और वह समय मसीह मौऊद का युग होगा । अतः निश्चित रूप से यह भविष्यवाणी उन निर्दोष अहमदियों के ऊपर पूरी हुई, जिनको घरों में ज़िंदा जलाने का प्रयास किया गया । अरबी शब्द कुऊद बताता है कि लोग बैठे तमाशा देखते रहे और अत्याचारियों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की गई । अतः यह महान भविष्यवाणी इस रंग में कई बार पूरी हो चुकी है कि पुलिस की देख-रेख में दंगाइयों ने निर्दोष अहमदियों को ज़िंदा जलाने का प्रयास किया और कई बार सफल हो गए और कई बार असफल भी रहे ।

जिसका आकाशों और धरती में शासन है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर साक्षी है ॥10॥

निःसन्देह वे लोग जिन्होंने मोमिन पुरुषों और मोमिन स्त्रियों को परीक्षा में डाला फिर प्रायश्चित्त नहीं किया तो उनके लिए नरक का अज़ाब है और उनके लिए अग्नि का अज़ाब (निश्चित) है ॥11॥

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए उनके लिए ऐसे स्वर्ग हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं । यह बहुत बड़ी सफलता है ॥12॥

निःसन्देह तेरे रब की पकड़ बहुत कठोर है ॥13॥

निःसन्देह वही आरम्भ करता है और दोहराता भी है ॥14॥

जब कि वह बहुत क्षमा करने वाला और बहुत प्रेम करने वाला है ॥15॥

अर्श का स्वामी और परम पूजनीय है ॥16॥

जो चाहता है उसे अवश्य करके रहता है ॥17॥

क्या तुझ तक सेनाओं का समाचार पहुँचा है ? ॥18॥

फ़िरऔन और समूद का ॥19॥

बल्कि वे लोग जिन्होंने इनकार किया वे झुठलाने में ही (लगे) रहते हैं ॥20॥

जबकि अल्लाह उनके आगे-पीछे से घेरा डाले हुए है ॥21॥

الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ
وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ ۝

إِنَّ الَّذِينَ قَتَلُوا الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ
ثُمَّ لَمْ يَتُوبُوا فَلَهُمْ عَذَابٌ جَهَنَّمَ
وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيقِ ۝

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ
جَنَّاتٌ تَجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
ذَلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيرُ ۝

إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيدٌ ۝

إِنَّهُ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيدُ ۝

وَهُوَ الْغَفُورُ الْوَدُودُ ۝

ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيدُ ۝

فَعَالٌ لِّمَآ يُرِيدُ ۝

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْجُنُودِ ۝

فِرْعَوْنَ وَثَمُودَ ۝

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي تَكْذِيبٍ ۝

وَاللَّهُ مِنْ وَرَائِهِمْ مُحِيطٌ ۝

बल्कि वह तो एक गौरवशाली
कुरआन है ।22।

और एक सुरक्षित पट्टिका में है ।23।
(रुकू $\frac{1}{10}$)

بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَّجِيدٌ ۝

فِي لَوْحٍ مَّحْفُوظٍ ۝

86- सूरः अत-तारिक़

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 18 आयतें हैं ।

इसमें सूरः अल्-बुरुज के विषयवस्तु को ही आगे बढ़ाया गया है और यह भविष्यवाणी की गई है कि उस अंधेरी रात में अल्लाह तआला अपने आकाशीय प्रहरियों को नियुक्त करेगा जो उन पीड़ित भक्तों की सहायता करेंगे । मनुष्य इस बात पर क्यों विचार नहीं करता कि वह एक उछलने वाला और डींगे मारने वाला जीव ही तो है । अतः अन्ततोगत्वा वह अवश्य अपने दुष्कर्मों के परिणामस्वरूप पकड़ा जाएगा और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप के इस दौर के अनुयायियों को यह आदेश है कि ये लोग कुछ देर और शरारतें कर लें, अन्ततः ये पकड़े जाएंगे । अतः प्रतीक्षा करो और इनको कुछ ढील दे दो ।



سُورَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَمَانِي عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

क़सम है आकाश की और रात को प्रकट होने वाले की ।2।*

और तुझे क्या मालूम कि रात को प्रकट होने वाला क्या है ? ।3।

बहुत चमकता हुआ नक्षत्र ।4।

कोई (एक) प्राणी भी नहीं जिस पर कोई प्रहरी न हो ।5।

अतः मनुष्य ध्यान दे कि उसे किस चीज़ से पैदा किया गया ।6।

उछलने वाले पानी से पैदा किया गया ।7।

जो पीठ और पसलियों के बीच से निकलता है ।8।

निःसन्देह वह उसके वापस ले जाने पर अवश्य समर्थ है ।9।

जिस दिन गुप्त बातें प्रकट की जाएंगी ।10।

अतः न तो उसे कोई शक्ति प्राप्त होगी और न ही कोई सहायक होगा ।11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالسَّمَاءِ وَالطَّارِقِ ②

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ ③

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ④

إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ⑤

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ⑥

خُلِقَ مِنْ مَّاءٍ دَافِقٍ ⑦

يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ ⑧

وَالْتَّرَائِبِ ⑨

إِنَّهُ عَلَى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ⑩

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَائِرُ ⑪

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَلَا نَاصِرٍ ⑫

* इस सूर: के आरम्भ में ही रात को आने वाले चिह्न की गवाही दी गई है । इससे आगे की आयतों से यह स्पष्ट होता है कि वह चमकता हुआ नक्षत्र होगा । चमकते हुए नक्षत्र से यही प्रतीत होता है कि आग बरसाने वाली लपटें आसमान से बरसेंगी ।

क़सम है मूसलाधार वर्षा युक्त आकाश
की ॥12॥*

और हरियाली उगाने वाली धरती
की ॥13॥**

निःसन्देह वह एक निर्णायक वाणी
है ॥14॥

और वह कदापि कोई अशिष्ट वाणी नहीं
है ॥15॥

निःसन्देह वे कोई चाल चलेंगे ॥16॥

और मैं भी एक चाल चलूंगा ॥17॥

अतः काफ़िरों को ढील दे । उन्हें एक ۞ ۞
समय तक ढील दे दे ॥18॥ (रुकू 1/11)

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝۱۲

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝۱۳

إِنَّهُ لَقَوْلُ فَصْلٍ ۝۱۴

وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝۱۵

إِنَّهُمْ يَكِيدُونَ كَيْدًا ۝۱۶

وَأَكِيدُ كَيْدًا ۝۱۷

* अरबी शब्द अर्जज़ का अर्थ मूसलाधार वर्षा है । (अल् मुन्जिद, अल अक़रब)

** अरबी शब्द अस सद्ज़ का अर्थ धरती की हरियाली है । (अल अक़रब)

87- सूरः अल-आ'ला

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 20 आयतें हैं ।

इस सूरः के आरम्भ में ही यह शुभ-समाचार दे दिया गया है कि अल्लाह तआला का नाम और अल्लाह वालों का नाम ही सर्वोपरि सिद्ध होगा । अतः यह आदेश दिया गया है कि उपदेश करते चले जाओ । यद्यपि उपदेश आरम्भ में असफल होता दिखाई देगा परन्तु अन्ततोगत्वा लाभजनक सिद्ध होगा । फिर मनुष्य को सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि तुम उपदेश से लाभहीन इस लिए होते हो कि तुम ने संसार के जीवन को परलोक के जीवन पर श्रेष्ठता दे दी है हालाँकि परलोक ही भलाई और चिरस्थायी घर है।



سُورَةُ الْأَعْلَى مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ عِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और)

बार-बार दया करने वाला है ।1।

अपने महामहिम रब्ब के नाम का प्रत्येक अवगुण से पवित्र होना वर्णन कर ।2।

जिसने पैदा किया फिर ठीक-ठाक किया ।3।

और जिसने (भिन्न-भिन्न तत्वों को) मिश्रित किया, फिर हिदायत दी ।4।

और जिसने जीवन रक्षा के लिए हरियाली उगाई ।5।*

फिर उसे (अनादर करने वालों) के लिए काला कूड़ा-कर्कट बना दिया ।6।

हम अवश्य तुझे पढ़ना सिखाएंगे फिर तू नहीं भूलेगा ।7।

सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे । निःसन्देह वह प्रकाश्य को जानता है और उसे भी जो अप्रकाश्य है ।8।**

और हम तुझे सरलता प्रदान करेंगे ।9।

अतः उपदेश कर । उपदेश अवश्य लाभ देता है ।10।

जो डरता है, वह अवश्य उपदेश ग्रहण करेगा ।11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

سَبِّحْ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى ②

الَّذِي خَلَقَ فَسُوَّى ③

وَالَّذِي قَدَّرَ فَهَدَى ④

وَالَّذِي أَخْرَجَ الْمَرْعَى ⑤

فَجَعَلَهُ غُثَاءً أَحْوَى ⑥

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنسَى ⑦

إِلَّا مَا شَاءَ اللَّهُ ⑧ إِنَّهُ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفَى ⑧

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرَى ⑨

فَذَكِّرْ إِن نَّفَعَتِ الذِّكْرَى ⑩

سَيَذَكِّرُ مَنْ يَخْشَى ⑪

* इस प्रकार के अर्थ के लिए देखिए : मुफ़रदात इमाम राग़िब रहि. ।

** आयत सं. 7, 8 यहाँ जिस भूलने का वर्णन है उस से यह तात्पर्य नहीं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुरआन भूल जाते थे । वस्तुतः इस से अभिप्राय वह भूल-चूक है जो नमाज़ में कुरआन पाठ करते हुए कई बार हो जाती है । जिसके लिए यह आदेश है कि यदि कोई शब्द अनजाने में भूल पढ़ा जाए तो पीछे खड़े हुए नमाज़ी उसे ठीक कर दें ।

और बड़ा भाग्यहीन (व्यक्ति) उससे
बचेगा 112।

जो सबसे बड़ी अग्नि में प्रविष्ट
होगा 113।

फिर वह उसमें न मरेगा और न
जिएगा 114।

जो पवित्र बना निःसन्देह वह सफल हो
गया 115।

और अपने रब के नाम का स्मरण किया
और नमाज़ पढ़ी 116।

वास्तव में तुम तो सांसारिक जीवन को
श्रेष्ठता देते हो 117।

हालाँकि परलोक उत्तम और चिरस्थायी
है 118।

निःसन्देह यह पूर्ववर्ती ग्रन्थों में भी
है 119।

इब्राहीम और मूसा के ग्रन्थों में 120*

(स्कू 1/12)

وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشَقَى ۝

الَّذِي يُصَلِّي النَّارَ الْكُبْرَى ۝

ثُمَّ لَا يَمُوتُ فِيهَا وَلَا يَحْيَى ۝

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكَّى ۝

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهِ فَصَلَّى ۝

بَلْ تُؤْثِرُونَ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا ۝

وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ وَأَبْقَى ۝

إِنَّ هَذَا فِي الصُّحُفِ الْأُولَى ۝

صُحُفِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَى ۝

* आयत सं. 19-20 : यहाँ कुरआन करीम के सम्बन्ध में कहा गया है कि उसने पिछले ग्रन्थों की प्रत्येक उत्तम शिक्षा को अपने अन्दर एकत्रित कर लिया है। इब्राहीम अलै. के ग्रन्थ में से उत्तम शिक्षा इसमें मौजूद है और मूसा के ग्रन्थ में से भी।

88- सूरः अल-गाशियः

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 27 आयतें हैं ।

इस सूरः में लगातार आने वाले ऐसे अज़ाबों का वर्णन है जो ढाँप देंगे और उस दिन कई चेहरे बहुत भयभीत होंगे और कठिन परिश्रम में पड़ेंगे और थक कर चूर हो जाएँगे । वे भड़कने वाली अग्नि में प्रविष्ट होंगे और उनका भोजन थूहर के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा जो न उन्हें हृष्ट-पुष्ट कर सकेगा न उनकी भूख मिटा सकेगा । यह एक आलंकारिक वर्णन है जो थूहर पर लगने वाले फल के प्रभाव की ओर संकेत कर रहा है जो दिखने में मीठे लगते हैं परंतु खाने वालों को अंततोगत्वा बहुत कष्ट पहुँचाते हैं ।

इसके बाद अवशिष्ट सूरः परकालीन जीवन में घटित होने वाली घटनाओं का वर्णन कर के अन्त पर उस हिसाब का उल्लेख करती है जिसके लिए मनुष्य को अवश्य अल्लाह तआला के समक्ष पेश होना होगा ।

इस सूरः की अन्तिम आयत पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत का अनुसरण करते हुए सामुहिक नमाज़ में सम्मिलित सब नमाज़ी कुछ ऊँची आवाज़ में यह दुआ करते हैं कि “हे अल्लाह ! हमसे आसान हिसाब लेना ।”



سُورَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعٌ وَعِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।1।

क्या तुझे मतवाला कर देने वाली (घड़ी) का समाचार पहुँचा है ? ।2।

कुछ चेहरे उस दिन अत्यन्त भयभीत होंगे ।3।*

(अर्थात् इससे पूर्व संसार की तलाश में) कठोर परिश्रम करने वाले (और) थक कर चूर हो जाने वाले ।4।

वह धधकती हुई अग्नि में प्रविष्ट होंगे ।5।

एक खौलते हुए स्रोत से उन्हें पिलाया जाएगा ।6।

उनके लिए थूहर से बने भोजन के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा ।7।

न वह हृष्ट-पुष्ट करेगा और न भूख से मुक्ति दिलाएगा ।8।

कुछ चेहरे उस दिन तरो-ताज़ा होंगे ।9।

अपने प्रयासों पर बहुत प्रसन्न ।।10।

एक अत्युच्च स्वर्ग में ।।11।

तू उसमें कोई अशिष्ट बात नहीं सुनेगा ।।12।

उसमें एक बहता हुआ स्रोत होगा ।।13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ الْغَاشِيَةِ ②

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ ③

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ④

تَصْلَى نَارًا حَامِيَةً ⑤

تُسْقَى مِنْ عَيْنٍ أَنْيَّةٍ ⑥

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ ضَرِيعٍ ⑦

لَا يَسْمِنُ وَلَا يُغْنِي مِنْ جُوعٍ ⑧

وَجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ⑨

لِسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ⑩

فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ⑪

لَا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ⑫

فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ⑬

उसमें ऊँचे बिछाए हुए पलंग होंगे ।14।

और (ढंग से) चुने हुए प्याले ।15।

और पंक्तिबद्ध लगाए हुए तकिए ।16।

और बिछाए हुए आसन ।17।

क्या वे ऊँटों की ओर नहीं देखते कि कैसे पैदा किए गए ? ।18।

और आकाश की ओर, कि उसे कैसे ऊँचाई दी गई ? ।19।

और पर्वतों की ओर कि वे कैसे दृढ़ता पूर्वक गाड़े गए ? ।20।

और धरती की ओर कि वह कैसे समतल बनाई गई ? ।21।

अतः बहुत अधिक उपदेश कर । तू केवल एक बार-बार उपदेश करने वाला है ।22।

तू उन पर दारोगा नहीं ।23।

हाँ वह जो पीठ फेर जाए और इनकार कर दे ।24।

तो उसे अल्लाह सबसे बड़ा अज़ाब देगा ।25।

निःसन्देह हमारी ओर ही उनका लौटना है ।26।

निःसन्देह फिर हम पर ही उनका हिसाब है ।27। (स्कू $\frac{1}{13}$)

فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ۝۱۴

وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ۝۱۵

وَنَمَارِقٌ مَّصْفُوفَةٌ ۝۱۶

وَزَرَائِبُ مَبْثُوثَةٌ ۝۱۷

أَفَلَا يَنْظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ

كَيْفَ خُلِقَتْ ۝۱۸

وَالِى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝۱۹

وَالِى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝۲۰

وَالِى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝۲۱

فَذَكِّرْ ۚ إِنَّمَا أَنْتَ مُذَكِّرٌ ۝۲۲

لَسْتُ عَلَيْهِمْ بِمُصَيِّرٍ ۝۲۳

إِلَّا مَنْ تَوَلَّى وَكَفَرَ ۝۲۴

فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝۲۵

إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۝۲۶

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ۝۲۷

۝۲۷

89- सूरः अल-फ़ज़्र

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में अवतरित हुई है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 31 आयतें हैं ।

इस सूरः का नाम अल्-फ़ज़्र (सवेरा) है और सवेरा के उदय होने पर दस रातों को साक्षी ठहराया गया है । फिर दो और एक को भी साक्षी ठहराया गया है जो कुल तेरह बनते हैं । ये तेरह वर्ष आरम्भिक मक्की दौर की ओर संकेत कर रहे हैं जिसके बाद हिजरत का सवेरा उदय होना था ।

इन आयतों की और भी बहुत सी व्याख्याएँ की गई हैं जिनमें अंत्ययुगीनों के समय उदय होने वाले एक सवेरा का भी संकेत मिलता है । परन्तु प्रथमोक्त सवेरा का वर्णन स्पष्ट रूप से मिलता है । इस लिए उसी के वर्णन को पर्याप्त समझते हैं ।

इस सूरः की शेष आयतों में मानव जाति की सेवा करने की प्रेरणा दी गई है । वर्णन किया गया है कि निर्धनों और उत्पीड़ित जातियों को आज़ादी दिलाने के लिए जो भी प्रयास करेगा उसके लिए शुभ-समाचार है कि वह महान प्रतिफल पाएगा । सबसे बड़ा शुभ-समाचार अन्तिम आयत में यह दिया गया है कि वह इस अवस्था में मरेगा कि अल्लाह तआला उसकी आत्मा को यह कहते हुए अपनी ओर बुलाएगा कि हे वह आत्मा ! जो मेरे बारे में पूर्णतया संतुष्ट हो चुकी थी, केवल संतुष्ट ही नहीं थी बल्कि मेरी प्रसन्नता भी उसको प्राप्त थी, अब मेरे भक्तों में शामिल हो जा और उस स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा जो मेरे भक्तों का स्वर्ग है ।



سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اخْدَى وَثَلَاثُونَ آيَةً وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

कसम है सवेरा की ।2।

وَالْفَجْرِ ①

और दस रातों की ।3।

وَلَيَالٍ عَشْرٍ ②

और युगल की और एकल की ।4।

وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ③

और रात की जब वह चल पड़े ।5।

وَاللَّيْلِ إِذَا يَسِرُّ ④

क्या इसमें किसी बुद्धिमान के लिए कोई कसम है ? ।6।*

هَلْ فِي ذَلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حَبْرِ ⑤

क्या तूने देखा नहीं कि तेरे रब्ब ने आद (जाति) के साथ क्या किया ? ।7।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ⑥

(अर्थात् आद की शाखा) इरम के साथ, जो बड़े-बड़े स्तम्भों वाले थे ।8।

إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ⑦

जिन के जैसा निर्माण कुल देशों में कभी नहीं किया गया ।9।

الَّتِي لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ⑧

- * आयत सं. 2 से 6 : इन आयतों में बुद्धिमानों के लिए एक भविष्यवाणी प्रस्तुत की गई है । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी होने का दावा करने के पश्चात आपका मक्की जीवनकाल तेरह वर्ष तक फैला रहा । अन्तिम दस वर्ष जिनमें विपत्तियों के अंधेरे बढ़ते चले गए जिनके बाद सवेरा निकलने का शुभ-समाचार दिया गया था । यह वह समय था जिसमें मक्का के काफ़िर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अत्याचार करने में लगातार आगे बढ़ते रहे, यहाँ तक कि आप पर हिज़रत का सवेरा प्रकट हो गया । इस विषयवस्तु को कुछ भाष्यकारों ने इस प्रकार भी वर्णन किया है कि युगल और एकल से अभिप्राय इस्लाम की प्रथम तीन शताब्दियाँ हैं । अर्थात् सहाबा, ताबयीन और तबअ् ताबयीन का समय । इसके पश्चात दस रातें अर्थात् नैतिक पतन के एक हज़ार वर्ष का समय इस्लाम पर बहुत अन्धकारमय युग आया और फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनानुसार इस्लाम का अनुयायी, शरीअत विहीन एक नबी ने प्रकट होना था । यह समय चौदहवीं शताब्दी हिजरी के आरम्भ तक फैला हुआ है जिसमें मसीह मौऊद का आविर्भाव हुआ ।

और समूद (जाति) के साथ, जिन्होंने घाटी में चट्टानें तराशी थीं ।।10।

और फिरऔन के साथ, जो कील-कांटों से लेस था ।।11।

(ये) वे लोग (थे) जिन्होंने देशों में उपद्रव किया ।।12।

और उनमें बहुत अधिक उपद्रव किया ।।13।

अतः तेरे रब्ब ने अज़ाब का कोड़ा उन पर बरसाया ।।14।

निश्चित रूप से तेरा रब्ब घात में था ।।15।

अतः मनुष्य का स्वभाव यह है कि जब उसका रब्ब उसकी परीक्षा करता है, फिर उसे सम्मान देता है । और उसे नेमत प्रदान करता है तो वह कहता है, मेरे रब्ब ने मेरा सम्मान किया है ।।16।

और इसके विपरीत जब वह उसकी परीक्षा करता और उसकी जीविका उस पर संकुचित कर देता है । तो वह कहता है, मेरे रब्ब ने मेरा अपमान किया है ।।17।

सावधान ! वास्तव में तुम अनाथ का सम्मान नहीं करते ।।18।

और न ही दरिद्र को भोजन कराने की एक दूसरे को प्रेरणा देते हो ।।19।

और तुम सारे का सारा विस्सा (उत्तराधिकार में प्राप्त सम्पत्ति) हड़प कर जाते हो ।।20।

और धन से बहुत अधिक प्रेम करते हो ।।21।

وَتُمُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۖ

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ۖ

الَّذِينَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۖ

فَاكْثَرُوا فِيهَا الْفَسَادَ ۖ

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۖ

إِنَّ رَبَّكَ لَبِاْمْرِ صَادٍ ۖ

فَإِمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلَاهُ رَبُّهُ فَأَكْرَمَهُ
وَنَعَّمَهُ ۖ فَيَقُولُ رَبِّي أَكْرَمَنِ ۖ

وَأَمَّا إِذَا مَا ابْتَلَاهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهُ ۖ
فَيَقُولُ رَبِّي أَهَانَنِ ۖ

كَأَلْبَلٍ لَا تَكْرِمُونَ الْيَتِيمَ ۖ

وَلَا تَحْضُونَ عَلَى طَعَامِ الْمُسْكِينِ ۖ

وَتَأْكُلُونَ الثَّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ۖ

وَتَحِبُّونَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۖ

सावधान ! जब धरती कूट-कूट कर
कण-कण कर दी जाएगी ।22।

और तेरा रबब आएगा और पंक्तिबद्ध
फ़रिश्ते भी ।23।

और उस दिन नरक को लाया
जाएगा। उस दिन मनुष्य उपदेश ग्रहण
करना चाहेगा, परन्तु अब उपदेश
प्राप्त करना उसके लिए कहाँ संभव
होगा ? ।24।

वह कहेगा, काश ! मैंने अपने जीवन के
लिए (कुछ) आगे भेजा होता ।25।

अतः उस दिन उस जैसा अज़ाब (उसे)
कोई और न देगा ।26।

और कोई उस जैसी मुश्कें नहीं
बाँधेगा ।27।

हे संतुष्ट आत्मा ! ।28।

अपने रबब की ओर प्रसन्न होते हुए
और (उसकी) प्रसन्नता पाते हुए लौट
जा ।29।

अतः मेरे भक्तों में प्रविष्ट हो जा ।30।

और मेरे स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा ।31।* $\frac{1}{14}$
(स्कू 1/14)

كَلَّا إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝

وَجَاءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝

وَجِئَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ

يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنَّى لَهُ الذِّكْرَى ۝

يَقُولُ يَلَيِّنِي قَدَّمْتُ لِحَيَاتِي ۝

فَيَوْمَئِذٍ لَا يَعْدِبُ عَذَابَهُ أَحَدٌ ۝

وَلَا يُوثِقُ وَثَاقَهُ أَحَدٌ ۝

يَا أَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝

ارْجِعِي إِلَىٰ رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝

فَادْخُلِي فِي عِبَادِي ۝

وَادْخُلِي جَنَّتِي ۝

* आयत सं. 28-31 : इन आयतों में उन मोमिनों को शुभ-समाचार दिया गया है जिनको मृत्यु से पूर्व अल्लाह तआला की ओर से यह कहा जाएगा कि हे संतुष्ट आत्मा ! अपने रबब के समक्ष इस अवस्था में उपस्थित हो जाओ कि तुम उससे प्रसन्न हो और वह तुम से प्रसन्न हो । यद्यपि आयत सं. 28 में आत्मा के लिए नफ़्स प्रयुक्त किया गया है जो अरबी में स्त्री लिंग शब्दरूप है । परन्तु आयत सं. 30 में पुलिंग शब्द इबादी (मेरे भक्तों) उल्लेख करके यह बताया कि वस्तुतः आत्मा न तो स्त्री है न पुरुष । इसी बात को कहा कि मेरे भक्तों में प्रविष्ट हो जा और मेरे उस स्वर्ग में प्रविष्ट हो जा जिसे मैंने अपने विशेष भक्तों के लिए तैयार किया हुआ है ।

90- सूरः अल-बलद

यह सूरः आरम्भिक मक्की दौर में अवतरित हुई है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 21 आयतें हैं ।

पिछली सूरः में मक्का की जिन रातों को साक्षी ठहराया गया था उसी मक्का का वर्णन इस सूरः में फिर से दोबारा आरम्भ कर दिया गया है । अल्लाह तआला हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करते हुए कहता है कि मैं इस नगर को उस समय तक साक्षी ठहराता हूँ जब तक तू इसमें है । जब तुझे इस नगर के निवासी यहाँ से निकाल देंगे तब यह नगर शांतिदायक नहीं रहेगा ।

इसके बाद आने वाली पीढ़ियों को साक्षी ठहराया गया है कि मनुष्य के भाग्य में लगातार परिश्रम करना लिखा है । जब उसे नुबुव्वत का प्रकाश प्रदान किया जाता है तो उसके सामने धार्मिक और सांसारिक उन्नति के दो मार्ग खोले जाते हैं । परन्तु मनुष्य परिश्रम का मार्ग अपना कर धार्मिक और सांसारिक ऊँचाइयों की ओर न चढ़कर ढलान का सरल मार्ग अपनाता है और पतन की ओर चला जाता है । यहाँ ऊँचाई पर चढ़ने के विषयवस्तु को खोल कर बता दिया गया कि इससे किसी पर्वत पर चढ़ना अभिप्राय नहीं बल्कि जब निर्धन जातियों को भूख सताए और कई जातियों को दास बना लिया जाए, उस समय यदि कोई उनको उस से मुक्त कराने के लिए प्रयास करे और भूख के मारों और निर्धनों को अपने पाँवों पर खड़ा करने के लिए प्रयत्न करे तो वही लोग ऊँचाइयों की ओर चढ़ने वाले हैं । परन्तु यह लक्ष्य ऐसा है कि एक दो दिन में प्राप्त होने वाला नहीं । उसके लिए निरन्तर धैर्य से काम लेते हुए धैर्य करने का उपदेश देना पड़ेगा और निरन्तर दया से काम लेते हुए दया का उपदेश देना पड़ेगा ।



سُورَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ اِحْدَى وَعِشْرُونَ آيَةً وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

सावधान ! मैं इस नगर की क़सम खाता हूँ ।2।

जबकि तू इस नगर में (एक दिन) उतरने वाला है ।3।

और पिता की और जो उसने संतान पैदा की ।4।

निःसन्देह हमने मनुष्य को एक लगातार परिश्रम में (लगे रहने के लिए) पैदा किया ।5।

क्या वह धारणा करता है कि उस पर कदापि कोई प्रभुत्व नहीं पा सकेगा ।6।

वह कहता है मैंने ढेरों धन लुटा दिया ।7।

क्या वह समझता है कि उसे किसी ने नहीं देखा ? ।8।

क्या हम ने उसके लिए दो आँखें नहीं बनाई ? ।9।

और जिह्वा और दो होंठ ? ।10।

और हमने उसे दो ऊँचे मार्गों की ओर हिदायत दी ।11।

अतः वह अक़बः पर नहीं चढ़ा ।12।

और तुझे क्या मालूम कि अक़बः क्या है ? ।13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

لَا أَقْسِمُ بِهَذَا الْبَلَدِ ۝

وَأَنْتَ حِلٌّ بِهَذَا الْبَلَدِ ۝

وَوَالِدٍ وَمَا وَلَدَ ۝

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ ۝

أَيَحْسَبُ أَنْ لَنْ يَقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ ۝

يَقُولُ أَهْلَكْتُ مَا لَا بَدَأَ ۝

أَيَحْسَبُ أَنْ لَمْ يَرَهُ أَحَدٌ ۝

أَلَمْ نَجْعَلْ لَهُ عَيْنَيْنِ ۝

وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ ۝

وَهَدَيْنَاهُ النَّجْدَيْنِ ۝

فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝

गर्दन (अर्थात दास) मुक्त करना ।।14।

فَكَرَّ قَبَةً ۝

अथवा एक साधारण भूख के दिन भोजन कराना ।।15।

أَوْ اطْعَمَ فِي يَوْمٍ ذِي مَسْغَبَةٍ ۝

ऐसे अनाथ को जो निकट सम्पर्कीय हो ।।16।

يَتِيمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝

अथवा ऐसे दरिद्र को जो धूल-धूसरित हो ।।17।

أَوْ مَسْكِينًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝

फिर वह उनमें से बन जाए जो ईमान ले आए और धैर्य पर डटे रहते हुए एक दूसरे को धैर्य का उपदेश करते हैं । और दया करने पर डटे रहते हुए एक दूसरे को दया का उपदेश देते हैं ।।18।

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَوَاصَوْا
بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝

ये ही दाहिनी ओर वाले हैं ।।19।

أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْمَيْمَنَةِ ۝

और वे लोग जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार कर दिया वे बाईं ओर वाले हैं ।।20।

وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا هُمْ
أَصْحَابُ الْمَشْأَمَةِ ۝

उन पर (लपकने के लिए) एक बन्द की हुई आग (निश्चित) है ।।21।

۝
۱۵

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّوَصَّدَةٌ ۝

(स्कू 1/15)

91- सूरः अश-शम्स

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 16 आयतें हैं ।

इसमें एक बार फिर यह भविष्यवाणी की गई कि इस्लाम का सूर्य एक बार फिर उदय होगा और वह चन्द्रमा फिर चमकेगा जो इस सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होगा । फिर एक सवेरा उदय होगा और उसके पश्चात फिर एक अन्धेरी रात छा जाएगी । अर्थात् कोई सवेरा ऐसा नहीं हुआ करता जिसके पश्चात अज्ञानता के अंधेरे मानवजाति को घेर न लें ।

फिर यह घोषणा की गई है कि प्रत्येक जान को अल्लाह तआला ने न्याय के साथ पैदा किया है और उसे अपने अच्छे बुरे की पहचान बता दी गई है । जिसने अपनी प्राप्त योग्यताओं को आगे बढ़ाया वह सफल हो जाएगा और जिसने अपनी प्राप्त योग्यताओं को मिट्टी में गाड़ दिया वह बर्बाद हो जाएगा ।

इसके बाद समूद जाति और उसके रसूल की ऊँटनी का वर्णन है । संभव है इसमें उस ओर संकेत हो कि हज़रत सालेह अलै. जिस ऊँटनी पर सवार होकर संदेश पहुँचाने के लिए यात्रा किया करते थे, जब उस संप्रदाय के लोगों ने उस ऊँटनी की कूँचें काट डालीं तो फिर उन पर बहुत बड़ी तबाही आई । अतः नबियों के शत्रु जब भी संदेश प्रसारण के इन साधनों को काटते हैं जिनके द्वारा हिदायत का संदेश पहुँचाया जाता है तो वे भी सदैव विनष्ट कर दिए जाते हैं ।



سُورَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

क़सम है सूर्य की और उसकी धूप की ।2।

और चन्द्रमा की जब वह उसके पीछे आए ।3।

और दिन की जब वह उस (अर्थात् सूर्य) को ख़ूब उज्ज्वल कर दे ।4।

और रात की जब वह उसे ढाँप ले ।5।

और आसमान की और जैसे उसने उसे बनाया ।6।

और धरती की और जैसे उसने उसे बिछाया ।7।

और प्रत्येक जान की और जैसे उसने उसे ठीक-ठाक किया ।8।

अतः उसके दुराचारों और उसके सदाचारों (की पहचान करने की क्षमता) को उसकी प्रकृति में जमा दिया ।9।

जिसने उस (तक्रवा) को उन्नत किया, निःसन्देह वह सफल हो गया ।10।

और जिसने उसे मिट्टी में गाड़ दिया वह असफल हो गया ।11।

समूद (जाति) ने अपनी उद्वण्डता के कारण झुठला दिया ।12।

जब उनमें से सर्वाधिक भाग्यहीन व्यक्ति उठ खड़ा हुआ ।13।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالشَّمْسِ وَضُحَاهَا ②

وَالْقَمَرِ إِذَا تَلَّهَا ③

وَالنَّهَارِ إِذَا جَلَّهَا ④

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشَاهَا ⑤

وَالسَّمَاءِ وَمَا بَنَاهَا ⑥

وَالْأَرْضِ وَمَا طَحَاهَا ⑦

وَنَفْسٍ وَمَا سَوَّاهَا ⑧

فَالْهَمَهَا فُجُورَهَا وَتَقْوَاهَا ⑨

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكَّاهَا ⑩

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسَّاهَا ⑪

كَذَّبَتْ ثَمُودٌ بِطَغْوَاهَا ⑫

إِذِ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا ⑬

तब अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा,
अल्लाह की ऊँटनी और उसके पानी पीने
का अधिकार (याद रखना) ।14।

फिर भी उन्होंने उसे झुठला दिया और
उस (ऊँटनी) की कूँचें काट डालीं । तब
उनके पापों के कारण उनके रब्ब ने उन
पर लगातार प्रहार किया और उस
(बस्ती) को समतल कर दिया ।15।

जबकि वह उसके अंत की कोई परवाह ^{عَلَيْهِمْ}
नहीं कर रहा था ।16। (रुकू $\frac{1}{16}$)

فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللَّهِ نَاقَةَ اللَّهِ
وَسُقْيَاهَا ۖ

فَكَذَّبُوهُ فَعَقَرُوها ۖ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ
رَبُّهُم بِذُنُوبِهِمْ فَسَوَّاهَا ۖ

وَلَا يَخَافُ عُقْبَاهَا ۖ

92- सूरः अल-लैल

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 22 आयतें हैं ।

सूरः अश-शम्स के बाद सूरः अल्-लैल आती है जैसे दिन के बाद रात आया करती है । यह कोई साधारण रात नहीं बल्कि इस सूरः में रात के आध्यात्मिक पहलू को उत्तम ढंग से प्रस्तुत किया गया है । साथ ही यह भी शुभ-समाचार दिया गया है कि जब रात आएगी तो फिर दिन भी अवश्य चढ़ेगा । फ़र्माया, जैसे दिन और रात के प्रभाव भिन्न-भिन्न होते हैं इसी प्रकार मनुष्य के प्रयास भी या तो रात की भाँति अन्धकारमय होते हैं अथवा दिन की भाँति उज्ज्वल । प्रत्येक मनुष्य को उसके अपने कर्मों और दृष्टिकोण के अनुसार प्रतिफल दिया जाता है । अतः वे लोग जो अल्लाह का तक्वा धारण करके उसके मार्ग पर और दरिद्र-कल्याण पर खर्च करते हैं और जब अच्छी बात उनके पास पहुँचे तो उसका समर्थन करते हैं, तो अल्लाह तआला उनके रास्ते सरल कर देगा । उसके मुकाबले पर वह व्यक्ति जो कंजूसी से काम ले और इस बात से बे-परवाह हो कि उसके क्या परिणाम निकलेंगे तथा जब भलाई की बात उसके पास पहुँचे तो उसको झुठला दे, तो हम उसकी जीवन-यात्रा कठिन बना देंगे ।

इसी प्रकार सूरः के अन्त में दुराचारी व्यक्ति को, जिसके अवगुण ऊपर वर्णित हैं धधकती हुई अग्नि में डाले जाने से डराया गया है । इसी प्रकार वह व्यक्ति उस अग्नि से अवश्य बचाया जाएगा जिसने अपना धन नेक-कर्मों पर खर्च किया और तक्वा को अपनाया ।



سُورَةُ الْاَيْلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمِلَةِ اثْنَتَانِ وَعِشْرُونَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है 11।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

क़सम है रात की जब वह ढाँप ले 12।

وَالْأَيْلِ إِذَا يَغْشَى ②

और दिन की जब वह उज्ज्वल हो जाए 13।

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلَّى ③

और उसकी, जो उसने पुरुष और स्त्री पैदा किए 14।

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنثَى ④

तुम्हारा प्रयास निःसन्देह भिन्न-भिन्न है 15।

إِنْ سَعَيْكُمْ لَشَيْءٌ ⑤

अतः वह जिसने (सन्मार्ग में) दान किया और तक्रवा धारण किया 16।

فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى ⑥

और सर्वोत्तम नेकी की पुष्टि की 17।

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنَى ⑦

तो हम उसे अवश्य बहुतायत प्रदान करेंगे 18।

فَسَيُيَسِّرُهُ لِلْيُسْرَى ⑧

और जहाँ तक उसका सम्बन्ध है, जिसने कंजूसी की और बे-परवाही की 19।

وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنَى ⑨

और सर्वोत्तम नेकी को झुठलाया 110।

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنَى ⑩

तो हम उसे अवश्य तंगी में डाल देंगे 111।

فَسَيُيَسِّرُهُ لِلْعُسْرَى ⑪

और जब उसका धन नष्ट हो जाएगा और (वह) उसके किसी काम न आएगा 112।

وَمَا يُغْنِي عَنْهُ مَالُهُ إِذَا تَرَدَّى ⑫

निःसन्देह हिदायत देना हम पर हर हाल में अनिवार्य है 113।

إِنْ عَلَيْنَا لَلْهُدَى ⑬

और निःसन्देह अन्त और आदि भी
अवश्यमेव हमारे अधिकार में है ।14।

अतः मैं तुम्हें उस अग्नि से डराता हूँ जो
तेज़ भड़कने वाली है ।15।

उसमें बड़े भाग्यहीन व्यक्ति के सिवा
कोई प्रविष्ट नहीं होगा ।16।

वह जिसने झुठलाया और पीठ फेर
ली ।17।

जबकि सबसे बड़ा मुत्तकी व्यक्ति उससे
अवश्य बचाया जाएगा ।18।

जो पवित्रता चाहते हुए अपना धन देता
है ।19।

और जिसका (उसकी ओर से) प्रतिफल
दिया जा रहा हो उस पर किसी का
उपकार नहीं है ।20।

(यह) केवल अपने सर्वोच्च रब्ब की
प्रसन्नता चाहते हुए (खर्च करता
है) ।21।

और वह अवश्य प्रसन्न हो जाएगा ।22।

(रुकू 1/17)

عَلَىٰ

وَإِنَّ لَنَا لِلْآخِرَةِ وَالْأُولَىٰ ۝۱۴

فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظَّىٰ ۝۱۵

لَا يَصْلَاهَا إِلَّا الْأَشْقَى ۝۱۶

الَّذِي كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۝۱۷

وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۝۱۸

الَّذِي يُؤْتِي مَالَهُ يَتَزَكَّىٰ ۝۱۹

وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهُ مِنْ نِعْمَةٍ تُجْزَىٰ ۝۲۰

إِلَّا ابْتِغَاءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلَىٰ ۝۲۱

وَلَسَوْفَ يَرْضَىٰ ۝۲۲

93- सूरः अज़-ज़ुहा

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं ।

इस सूरः में फिर एक ऐसे दिन का शुभ-समाचार दिया गया है जो अत्यन्त उज्ज्वल हो चुका होगा और फिर एक रात का जो उसके पश्चात फिर आएगी । हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करके यह कहा गया है कि घोर अन्धकारों और कठिनाइयों के समय में अल्लाह तआला तुझे अकेला नहीं छोड़ेगा । और बाद में आने वाला तेरा हर पल पहले से बेहतर होगा और फिर यह शुभ-समाचार है कि तुझे अल्लाह तआला बहुत कुछ प्रदान करेगा । अतः अनाथों से सद्-व्यवहार कर और याचक को झिड़का न कर । और तुझे प्राप्त सुख-संपन्नता को समाप्त हो जाने की भय से मानव जाति से छुपा नहीं । जितना तू अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करता चला जाएगा अल्लाह तआला उसे और भी अधिक बढ़ाता चला जाएगा ।



سُورَةُ الضُّحَىٰ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

क़सम है दिन की जब वह अत्यंत उज्ज्वल हो चुका हो ।2।

और रात की जब वह खूब अन्धकारमय हो जाए ।3।

तुझे तेरे रब्ब ने न परित्याग किया है और न घृणा की है ।4।

और निःसन्देह परवर्ती समय तेरे लिए (हर) पहली (अवस्था) से उत्तम है ।5।*

और तेरा रब्ब अवश्य तुझे प्रदान करेगा। फिर तू संतुष्ट हो जाएगा ।6।

क्या उसने तुझे अनाथ नहीं पाया था ? फिर शरण दिया ।7।

और तुझे (सत्य की) तलाश में परेशान (नहीं) पाया ? फिर हिदायत दी ।8।**

और तुझे एक बड़े कुटुम्ब वाला (नहीं) पाया ? फिर धनवान बना दिया ।9।

अतः जहाँ तक अनाथ का सम्बन्ध है, तू उस पर सख्ती न कर ।10।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالضُّحَىٰ ②

وَاللَّيْلِ إِذَا سَجَىٰ ③

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلَىٰ ④

وَلَلْآخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُولَىٰ ⑤

وَسَوْفَ يُعْطِيكَ رَبُّكَ فَتَرْضَىٰ ⑥

أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيمًا فَآوَىٰ ⑦

وَوَجَدَكَ ضَالًّا فَهَدَىٰ ⑧

وَوَجَدَكَ عَائِلًا فَأَغْنَىٰ ⑨

فَأَمَّا الْيَتِيمَ فَلَا تَقْهَرْ ⑩

* यहाँ जिस परवर्ती समय का पूर्ववर्ती समय से उत्तम होने का वर्णन किया गया है, इससे अभिप्राय यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जीवन का हर आने वाला क्षण है जो हर बीते हुए क्षण से उत्तम था । क्योंकि आप सल्ल. हर पल अल्लाह तआला की ओर अग्रसर थे ।

** आयत सं. 8-9 इन आयतों में अरबी शब्द ज़ाल्लन् का अर्थ पथभ्रष्टता नहीं है बल्कि इसका यह अर्थ है कि जो अल्लाह तआला के प्रेम में मानो खो गया हुआ है और शब्द आइलन (बड़े कुटुम्ब वाला) आप सल्ल. को आप के भारीसंख्यक अनुयायियों के कारण कहा गया है । किसी नबी को इतने भारीसंख्यक अनुयायी नहीं मिले जितने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिले ।

और जहाँ तक याचक का प्रश्न है, तू
उसे मत झिड़क ।।।।

और जहाँ तक तेरे रब्ब की नेमत का
सम्बन्ध है, तू (उसकी) अधिकता के
साथ चर्चा कर ।।2।* (रूकू $\frac{1}{8}$)

وَأَمَّا السَّائِلَ فَلَا تَنْهَرْ ۝

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ۝

- * हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसों से ज्ञात होता है कि अल्लाह तआला ने जो उपकार और सांसारिक पुरस्कार आप सल्ल. को प्रदान किए थे उनको आपने अपने मानव जाति से छुपाया नहीं बल्कि खुल कर प्रकट किया । जो आध्यात्मिक अनुकम्पा आप पर उतारी गई थी यदि अल्लाह का आप को यह आदेश न होता तो आप उसे अपने में ही गुप्त रखते । जो सांसारिक वरदान आप को दिये गए उसका वर्णन करना इस कारण आवश्यक था ताकि अभावग्रस्त लोग उसके वर्णन से आप सल्ल. की ओर लपकें और उनकी आवश्यकताएं पूरी हो सकें । उनसे जो उपकारपूर्ण बर्ताव होगा वह ऐसा ही है जैसे अपने घरवालों से किया जाता है जिसके बदले में मनुष्य कोई आभार नहीं चाहता ।

94- सूरः अलम नश्रह

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं ।

इस महान सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सद्गुणों के वर्णन करने के पश्चात आप सल्ल. से प्रश्न किया गया है कि क्या हमने तेरा दिल पूरी तरह खोल नहीं दिया ? और अमानत का जो बोझ तूने उठाया हुआ था, अल्लाह ने अपनी कृपा से उसे उतारने का सामर्थ्य प्रदान नहीं किया ? और तेरी चर्चा को उन्नत नहीं कर दिया ? अतः इस स्थायी सत्य को याद रख कि प्रत्येक कठिनाई के बाद एक सरलता उत्पन्न होती है । प्रत्येक कठिनाई के पश्चात एक सरलता उत्पन्न होती है । अर्थात् सांसारिक दृष्टि से भी यही सिद्धान्त है और आध्यात्मिक दृष्टि से भी यही सिद्धान्त है । अतः जब तू दिन भर की व्यस्तता से मुक्त हो तो रात को अपने रब्ब के समक्ष खड़े हो जाया कर और उसके प्रेम से मन की शांति प्राप्त कर ।



سُورَةُ الْمُنَشَّرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعُ آيَاتٍ وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

क्या हमने तेरे लिए तेरे सीने को खोल नहीं दिया ? ।2।

और तुझ पर से हमने तेरा बोझ उतार नहीं दिया ? ।3।

जिसने तेरी कमर तोड़ रखी थी ।4।

और हमने तेरे लिए तेरे स्मरण को उन्नत कर दिया ।5।

अतः निःसन्देह तंगी के साथ सुख-संपन्नता है ।6।

निश्चित रूप से तंगी के साथ सुख-संपन्नता है ।7।

अतः जब तू निवृत्त हो जाए तो तत्पर हो जा ।8।

और अपने रब्ब ही की ओर मनोनिवेश ^१/_{१९} कर ।9। (रुकू ^१/_{१९})

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

أَلَمْ نُنْشَرْكَ لَكَ صَدْرَكَ ②

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ③

الَّذِي أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ④

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ⑤

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ⑥

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ⑦

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانصَبْ ⑧

وَإِلَىٰ رَبِّكَ فَارْغَبْ ⑨

95- सूरः अत-तीन

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं ।

सूरः अल-इन्शिराह (अलम् नश्रह) के पश्चात सूरः अत-तीन आती है जो वास्तव में आयत निस्सन्देह तंगी के साथ सुख-संपन्नता है । निश्चित रूप से तंगी के साथ सुख-संपन्नता है । की व्याख्या है ।

इस सूरः में एक असीमित उन्नति का समाचार दिया गया है । इसमें अंजीर और ज़ैतून को साक्षी ठहराया गया है । अर्थात् आदम और नूह अलै. को और तूरे सीनीन अर्थात् हज़रत मूसा अलै. के उस पर्वत को जिस पर अल्लाह तआला की दीप्ति प्रकट हुई और फिर उस शांतिपूर्ण नगर (मक्का) को साक्षी ठहराया गया, जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लक्ष्यस्थल था । इस प्रकार क्रमबद्ध रूप से आध्यात्मिक उन्नति के साथ यह घोषणा कर दी गई कि इसी प्रकार हमने मनुष्य को निम्नावस्था से उन्नति देते हुए शिखर तक पहुँचाया है । परन्तु जो अभाग्य इससे लाभ न उठाये उसे हम निम्नावस्था की ओर लौटने वालों में सबसे अधिक नीचे की ओर लौटा दिया करते हैं । इस प्रकार एक अन्तहीन उत्थान-पतन का वर्णन है । परन्तु वे जो ईमान लाएँ और नेक कर्म करें उनकी आध्यात्मिक उन्नतियाँ असीमित होंगी । अतः जो इसके बाद भी धर्म के मामले में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को झुठलाए तो अल्लाह तआला उसका सर्वोत्तम निर्णय करने वाला है ।



سُورَةُ التِّينِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ تِسْعُ آيَاتٍ وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

क़सम है अंजीर की और ज़ैतून की ।2।

وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ ①

और सिनाइ पर्वत शृंखला की ।3।

وَطُورِ سَيْنَاءَ ①

और इस शांति पूर्ण नगर की ।4।

وَهَذَا الْبَلَدِ الْأَمِينِ ①

निःसन्देह हमने मनुष्य को समुन्नत अवस्था में पैदा किया ।5।*

لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ ①

फिर हमने उसे निचले दर्जे की ओर लौटने वालों में सबसे अधिक नीचे (की ओर) लौटा दिया ।6।**

ثُمَّ رَدَدْنَاهُ أَسْفَلَ سَافِلِينَ ①

सिवाय उनके जो ईमान लाए और नेक कर्म किए । अतः उनके लिए अक्षय प्रतिफल है ।7।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ①

* तक्वीम शब्द के इस अर्थ के लिए देखें : मुफ़रदात इमाम रागिब और अल मुन्जिद ।

** आयत सं. 5, 6 : इन आयतों में मनुष्य के निरंतर विकास का वर्णन है कि किस प्रकार मनुष्य को निम्नावस्था से उठा कर सबसे उच्चतम पद पर आसीन किया गया । अरबी शब्द तक्वीम का शब्दकोशीय अर्थ यही है कि किसी वस्तु को ठीक-ठाक करते हुए उत्कृष्ट से उत्कृष्ट करते चले जाना है । इसके बाद फ़र्माया कि फिर हमने उसको उस अत्यन्त निकृष्ट अवस्था की ओर लौटा दिया जहाँ से उसने उन्नति आरम्भ की थी । इससे अभिप्राय केवल कृतघ्न और दुराचारी लोग हैं । वे मनुष्य होते हुए भी सृष्टि में सब से बुरे हो जाते हैं । सिवाय मोमिनों के जिनके लिए इसी सूर: में असीमित उन्नतियों का शुभ-समाचार दिया गया है ।

मनुष्य के सर्वश्रेष्ठ होने के बावजूद सब से अधिक निकृष्ट बनने की संभावना के बारे में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह हदीस है कि आने वाले अत्यन्त बुरे युग में उन लोगों के धर्मज्ञ आकाश के नीचे सबसे बुरे जीव होंगे । (मिशकात, किताबुल इल्म)

अतः इसके पश्चात वह क्या है जो तुझे
धर्म के मामले में झुठलाए ? ।8।

क्या अल्लाह सभी निर्णयकर्ताओं में $\frac{1}{8}$
सर्वोत्कृष्ट निर्णयकर्ता नहीं है ? ।9।

(रुकू $\frac{1}{20}$)

فَمَا يَكْذِبُكَ بَعْدَ الدِّينِ ۝۸

أَلَيْسَ اللَّهُ بِأَحْكَمِ الْحَكَمِينَ ۝۹

96- सूर: अल-अलक़

यह सूर: मक्की है और सर्वप्रथम अवतरित होने वाली सूर: है । बिस्मिल्लाह सहित इसकी 20 आयतें हैं ।

वह्द के अवतरण का आरम्भ इस सूर: से हुआ जिसमें अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपने उस रब्ब के नाम के साथ पाठ करने का आदेश दिया है जिसने प्रत्येक वस्तु को सृष्टि किया और फिर दोबारा इक़्रा शब्द कह कर यह घोषणा की कि सबसे अधिक सम्माननीय उस रब्ब का नाम लेकर पाठ कर जिसने मनुष्य की समस्त उन्नति का रहस्य लेखनी में रख दिया है । यदि लेखनी और लेखन-कला का ज्ञान मनुष्य को नहीं दिया जाता तो किसी प्रकार की उन्नति संभव नहीं थी ।

इसके पश्चात प्रत्येक उस मनुष्य को सावधान किया गया है जो उपासना करने के मार्ग में रोकें डालता है । उसको उस अन्त से डराया गया है कि यदि वह न रुका तो हम उसे उसके झूठे, अपराधी मस्तक के बालों से पकड़ लेंगे । फिर वह अपने जिस सहायक को चाहे बुलाए । हमारे पास भी कठोर दण्ड देने वाले नरक के फ़रिश्ते हैं।



سُورَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ عِشْرُونَ آيَةً وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

अपने रब के नाम के साथ पढ़, जिसने पैदा किया ।2।

उसने मनुष्य को एक चिमट जाने वाले लोथड़े से पैदा किया ।3।

पढ़, और तेरा रब सबसे अधिक सम्माननीय है ।4।

जिसने लेखनी के द्वारा सिखाया ।5।

मनुष्य को वह कुछ सिखाया जो वह नहीं जानता था ।6।

सावधान ! निःसन्देह मनुष्य उदण्डता करता है ।7।

(इस कारण) कि उसने अपने आप को बे-परवाह समझा ।8।

निःसन्देह तेरे रब की ओर ही लौट कर जाना है ।9।

क्या तूने उस व्यक्ति पर ध्यान दिया जो रोकता है ? ।10।

एक महान भक्त को, जब वह नमाज़ पढ़ता है ।11।*

क्या तूने ध्यान दिया कि यदि वह (महान भक्त) हिदायत पर हो ? ।12।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ ②

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ③

اقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ ④

الَّذِي عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ⑤

عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ⑥

كَلَّا إِنَّ الْإِنْسَانَ لِكَبْفٍ لِّيطْغَى ⑦

أَن رَّاهُ اسْتَغْنَى ⑧

إِنَّ إِلَىٰ رَبِّكَ الرُّجْعَى ⑨

أَرَأَيْتَ الَّذِي يَنْهَى ⑩

عَبْدًا إِذَا صَلَّى ⑪

أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدَى ⑫

* आयत सं. 10-11 :- इन आयतों में इस्लाम के आरम्भिक युग का वर्णन है कि किस प्रकार कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोग हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नमाज़ पढ़ने से रोका करते थे और आप सल्ल. पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार करते थे ।

अथवा तक्रवा का आदेश देता
हो ? 113।

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوَىٰ ۖ

क्या तूने ध्यान दिया कि यदि उस
(नमाज़ से रोकने वाले) ने (फिर भी)
झुठला दिया और पीठ फेर ली ? 114।

أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۖ

(तो) क्या वह नहीं जानता कि
निःसन्देह अल्लाह देख रहा है ? 115।

أَلَمْ يَعْلَم بِأَنَّ اللَّهَ يَرَىٰ ۖ

सावधान ! यदि वह न रुका तो
निःसन्देह हम उसे मस्तक के बालों से
पकड़ कर खींचेंगे 116।

كَأَلَيْنَ لَمْ يَنْتَهُ لِنُسْفَعْ بِالنَّاصِيَةِ ۖ

झूठे अपराधी मस्तक के बालों से 117।

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۖ

अतः चाहिए कि वह अपनी सभा वालों
को बुला कर देखे 118।

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۖ

हम नरक के फ़रिश्तों को अवश्य
बुलाएंगे 119।

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۖ

सावधान ! उसका अनुसरण न कर
और सजदः में गिर जा और निकटता
(प्राप्त करने) का प्रयास कर 120।

كَأَلَّا لَا تُطَعَّهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۖ

(रुकू $\frac{1}{21}$)

97- सूरः अल-क़द्र

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 6 आयतें हैं ।

इस सूरः में यह शुभ-समाचार दिया गया है कि जिस कुरआन की वहइ का आरम्भ किया गया है वह प्रत्येक प्रकार की अंधेरी रातों को प्रकाशित करने का सामर्थ्य रखती है । अतः यहाँ हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग की अत्यन्त अंधेरी रात का वर्णन किया गया है, जिसमें जल, स्थल चारों ओर बुराई फैल चुकी थी । परन्तु अल्लाह में लीन उस व्यक्ति की अंधेरी रातों की दुआओं के परिणाम स्वरूप एक ऐसा सवेरा उदय हुआ, अर्थात् कुरआन करीम का अवतरण हुआ जिसका प्रकाश क़यामत तक रहने वाला था । आयत **हि य हत्ता मत्लइल फ़ज़्र** (यह क्रम उषाकाल के उदय होने तक जारी रहता है) का अभिप्राय यह है कि वहइ उस समय तक अवतरित होती रहेगी जब तक पूर्णरूपेण फ़ज़्र (सवेरा) उदित न हो जाय । और फिर यह घोषणा की गई कि एक व्यक्ति के जीवन भर के संघर्ष से उत्तम यह एक **लैलतुल क़द्र** (सम्माननीय रात्रि) की घड़ी है, यदि किसी को प्राप्त हो जाए ।



سُورَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

निःसन्देह हमने इसे क़द्र की रात्रि में उतारा है ।2।

और तुझे क्या मालूम कि क़द्र की रात्रि क्या है ? ।3।

क़द्र की रात्रि हजार महीनों से श्रेष्ठ है ।4।

उसमें फ़रिश्ते और रूह-उल-कुदुस अपने रब्ब के आदेश से हर मामले में बहुत अधिक उतरते हैं ।5।

सलाम है । यह (क्रम) उषाकाल के उदय तक जारी रहता है ।6।

(रुकू $\frac{1}{22}$)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ②

وَمَا أَذْرَبْكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ③

لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِنْ أَلْفِ شَهْرٍ ④

تَنْزِيلُ الْمَلَائِكَةِ وَالرُّوحِ فِيهَا ⑤

بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ⑥

سَلَامٌ هِيَ حَتَّى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ⑦

وَالْقُرْآنِ

مَعَالِ السَّامِعِينَ

وَالْقُرْآنِ

98- सूरः अल-बय्यिनः

यह सूरः मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं ।

पिछली सूरः में वर्णन किया गया था कि लैलतुल क़द्र में उतरने वाली वहइ प्रातोदय के समान प्रत्येक विषय को ख़ूब स्पष्ट कर देगी । अब इस सूरः में वर्णन है कि इसी प्रकार हमने पिछले नबियों को भी अपेक्षाकृत एक छोटी लैलतुल क़द्र प्रदान की थी अन्यथा वे केवल अपने प्रयासों के द्वारा समय के अंधकारों को सबेरा में परिवर्तित नहीं कर सकते थे ।

इसके पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सम्बोधित करके कहा गया कि पिछले सब नबियों पर जो पुस्तकें उतारी गई थीं उन सभी का सारांश तेरी शिक्षा में सम्मिलित कर दिया गया है । उनकी शिक्षाओं का सारांश यह था कि वे अल्लाह तआला के लिए उसके धर्म को विशिष्ट करते हुए उसकी उपासना करें और नमाज़ को क़ायम करें और ज़कात दें । यह ऐसा धर्म है जो स्वयं सदा क़ायम रहेगा और मानवजाति को भी सन्मार्ग पर स्थित करता रहेगा ।

इसके पश्चात काफ़िरों और मोमिनों को दोनों के बुरे और भले अंत की सूचना दी गई है कि जब **दीन-ए-क़य्यिम** (अर्थात क़ायम रहने वाला और क़ायम रखने वाला धर्म) आ जाए तो फिर प्रत्येक व्यक्ति स्वतन्त्र है कि चाहे तो उसका अनुसरण करे और भले अंत को प्राप्त करे और चाहे तो उसका इनकार करके बुरे अंत को प्राप्त करे ।



سُورَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

अहले किताब और मुश्रिकों में से जिन्होंने इनकार किया, उनके निकट स्पष्ट प्रमाण आ चुके थे, फिर भी वे कदापि रुकने वाले न थे ।2।

अल्लाह का रसूल पवित्र पृष्ठों का पाठ करता था ।3।

उनमें क़ायम रहने वाली और क़ायम रखने वाली शिक्षाएँ थीं ।4।

और वे लोग जिन्हें पुस्तक दी गई, उनके निकट उज्ज्वल प्रमाण आने के पश्चात ही उन्होंने मतभेद किया ।5।

और उन्हें इसके अतिरिक्त और कोई आदेश नहीं दिया गया कि वे धर्म को अल्लाह के लिए विशिष्ट करते हुए और सर्वदा उसकी ओर झुकते हुए, उसकी उपासना करें और नमाज़ को क़ायम करें और ज़कात दें । और यही क़ायम रहने वाली और क़ायम रखने वाली शिक्षाओं से परिपूर्ण धर्म है ।6।

निःसन्देह अहले किताब और मुश्रिकों में से जिन्होंने इनकार किया, नरक की अग्नि में होंगे । वे उसमें एक दीर्घ अवधि तक रहने वाले होंगे । ये ही अत्यन्त निकृष्टम सृष्टि हैं ।7।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

لَمْ يَكُنِ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
وَالْمُشْرِكِينَ مُنْفَكِّينَ حَتَّى تَأْتِيَهُمُ
الْبَيِّنَةُ ②

رَسُولٌ مِنَ اللَّهِ يَتْلُو صُحُفًا مُطَهَّرَةً ③

فِيهَا كُتِبَ قِيمَةٌ ④

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا مِنْ
بَعْدِ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَةُ ⑤

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ
لَهُ الدِّينَ ⑥ حَقَّاءُ وَيُقِيمُوا الصَّلَاةَ
وَيُؤْتُوا الزَّكَاةَ وَذَلِكَ دِينُ الْقِيمَةِ ⑦

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ
وَالْمُشْرِكِينَ فِي نَارِ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ⑧
أُولَئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ⑨

निःसन्देह वे लोग जो ईमान लाए और नेक कर्म किए। ये ही श्रेष्ठतम सृष्टि हैं। 18।

उनका प्रतिफल उनके रब्ब के पास स्थायी स्वर्ग हैं जिनके दामन में नहरें बहती हैं। वे चिरकाल तक उनमें रहने वाले होंगे। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ और वे उससे प्रसन्न हो गए। यह उसके लिए है जो अपने रब्ब से डरता रहा। 19।

(रुकू 1/23)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
أُولَٰئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝

جَزَاءُ وَهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ

تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا

أَبَدًا رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ۝

ع

ذَٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ ۝

99- सूरः अज्ञ-ज़िज़्जाल

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं ।

इस सूरः में अन्तिम युग में प्रकट होने वाले परिवर्तनों का वर्णन है जिनके परिणाम स्वरूप मनुष्य समझेगा कि उसने प्रकृति के नियमों पर विजय प्राप्त कर ली है हालाँकि उस समय जो कुछ धरती अपना रहस्य उगलेगी वह तेरे रब्ब के आदेश से ऐसा करेगी । उस दिन लोगों के लिए सांसारिक कर्मफल-प्राप्ति का भी एक समय आएगा जब वे देखेंगे कि उनकी सांसारिक उन्नतियों ने उनको कुछ भी न दिया । सिवाय इसके कि वे पारस्परिक लड़ाई-झगड़े में पड़ कर तितर-बितर हो गए । अतः उस दिन प्रत्येक मनुष्य अपनी छोटी से छोटी भलाई का भी प्रतिफल पाएगा और छोटी से छोटी बुराई का भी प्रतिफल पाएगा ।

इस सूरः के आरम्भ में वर्णन किया गया है कि धरती अपना बोझ बाहर निकाल फेंकेगी और इसी क्रम में अंत पर कहा कि केवल बड़ी-बड़ी भलाई अथवा बुराई का ही हिसाब नहीं लिया जाएगा बल्कि यदि किसी ने भलाई का छोटे से छोटा अंश भी किया होगा तो वह उसका प्रतिफल पाएगा और यदि छोटी से छोटी बुराई भी की हो तो वह उसका दंड भोग करेगा ।



سُورَةُ الزَّلْزَالِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعَ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और)

बार-बार दया करने वाला है 11।

जब धरती अपने भूकंप से हिलाई जाएगी 12।

और धरती अपना बोझ निकाल फेंकेगी 13।

और मनुष्य कहेगा कि इसे क्या हो गया है ? 14।

उस दिन वह अपने समाचार वर्णन करेगी 15।

क्योंकि तेरे रब्ब ने उसे वहइ की होगी 16।

उस दिन लोग तितर-बितर होकर निकल खड़े होंगे ताकि उन्हें उनके कर्म दिखा दिए जाएँ 17।

अतः जो कोई लेश-मात्र भी भलाई करेगा वह उसे देख लेगा 18।

और जो कोई लेश-मात्र भी बुराई करेगा वह उसे देख लेगा 19।* (रुकू 1/24)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ①

وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ①

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا هَآءِهِ ①

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ①

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحَى لَهَا ①

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا ①

لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ①

فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ①

وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ①

* आयत सं. 8-9 : इन दो आयतों से ज्ञात होता है कि जो कोई छोटी से छोटी भलाई अथवा छोटी से छोटी बुराई करेगा तो उसे उनका प्रतिफल दिया जाएगा । परन्तु अल्लाह तआला की क्षमा सर्वोपरि है । कुरआन करीम से पता चलता है कि यदि अल्लाह चाहे तो बड़े से बड़े पाप को भी क्षमा कर सकता है क्योंकि वह दिलों का हाल जानता है और यह भी जानता है कि कौन इस योग्य है कि उसके पाप क्षमा किए जाएँ।

100- सूरः अल-आदियात

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं ।

सांसारिक कारणों से लड़े जाने वाले युद्धों के विवरण के पश्चात इस सूरः में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा रज़ि. के प्रतिरक्षात्मक युद्धों का वर्णन किया गया है जो प्रत्येक दृष्टि से सांसारिक युद्धों से भिन्न और सुखांत युक्त हैं । उन तेज़ रफ़्तार घोड़ों को साक्षी ठहराया गया है जो तेज़ी से साँस लेते हुए इस प्रकार शत्रु पर झपटते हैं कि उनके खुरों से चिंगारियाँ निकलती हैं और वे सवेरे आक्रमण करते हैं, निशाक्रमण नहीं करते । यह उच्चकोटि के साहस का लक्षण है, अन्यथा भौतिकवादी जातियों की लड़ाई के प्रसंग में प्रत्येक स्थान पर यही वर्णन हुआ है कि वे छिप कर आक्रमण करते हैं ।

फिर कहा गया है कि मनुष्य अपने रब्ब की बड़ी कृतघ्नता करता है और वह स्वयं इस बात पर साक्षी है । धन के मोह में वह बहुत लिप्त होता है । यहाँ इस ओर संकेत किया गया है कि संसार के सभी युद्ध धन के लिए लड़े जाते हैं । अतः क्या वह नहीं जानता कि जब धरती के समस्त रहस्य उद्घाटित किए जाएंगे और लोगों के सीनों में जो कुछ छुपी हुई बातें हैं वे प्रकट हो जाएंगी, उस दिन अल्लाह तआला उनकी हालतों से भली प्रकार अवगत होगा ।



سُورَةُ الْعَادِيَّاتِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और)

बार-बार दया करने वाला है 11।

हाँफते हुए तेज़ रफ़्तार घोड़ों की कसम 12।

फिर चिंगारियाँ उड़ाते हुए आग उगलने वालों की 13।

फिर उनकी जो प्रातःकाल छापा मारते हैं 14।

फिर वे इस (आक्रमण) के साथ धूल उड़ाते हैं 15।

फिर वे इस (धूल) के साथ एक भीड़ के बीचों-बीच जा पहुँचते हैं 16।

निःसन्देह मनुष्य अपने रब का बड़ा कृतघ्न है 17।

और निःसन्देह वह उस पर अवश्य साक्षी है 18।

और निःसन्देह वह धन के मोह में बहुत बढ़ा हुआ है 19।

अतः क्या वह नहीं जानता कि जो क़ब्रों में है, जब उसे निकाला जाएगा ? 110।

और जो सीनों में है उसे प्राप्त किया जाएगा 111।*

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

وَالْعَدِيَّتِ صَبْحًا ②

فَالْمُورِيَّتِ قَدْحًا ③

فَالْمُعِيرِيَّتِ صَبْحًا ④

فَأَثَرَنَ بِهِ نَقْعًا ⑤

فَوَسَطْنَ بِهِ جَمْعًا ⑥

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ⑦

وَإِنَّهُ عَلَىٰ ذَٰلِكَ لَشَهِيدٌ ⑧

وَإِنَّهُ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيدٌ ⑨

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُورِ ⑩

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُورِ ⑪

* आयत सं. 10-11 :- इन आयतों में अन्तिम युग की उन्नतियों की भविष्यवाणियाँ हैं। जो क़ब्रों में है, उसे निकाला जाएगा से यह तात्पर्य है कि धरती के नीचे दबी हुई सभ्यताओं के बारे में जानकारी प्राप्त होगी। इस में पुरातत्त्व विज्ञान (Archaeology) में असाधारण उन्नति की भविष्यवाणी है जो इस समय हमारी आँखों के सामने पूरी हो रही है। पुरातत्त्वविद हज़ारों वर्ष पूर्व गुज़र चुके लोगों के अवशेषों से उनके बारे में आश्चर्यजनक रूप से जानकारीयाँ प्राप्त कर लेते हैं।→

निःसन्देह उनका रब्ब उस दिन उनसे $\frac{1}{10}$ $\text{إِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيرٌ}$
 पूर्णरूप से अवगत होगा ॥2॥
 (स्कू $\frac{1}{25}$)

←आयत संख्या 7 और जो सीनों में है उसे प्राप्त कर लिया जाएगा आजकल मनोरोग-विज्ञान में इस बात पर बहुत बल दिया गया है कि मानसिक रोगी तब तक ठीक नहीं हो सकता जब तक उसके मन की हालतों की जानकारी प्राप्त न की जाए। उसे नीम बेहोशी का टीका लगा कर डाक्टर जो प्रश्न करता है उससे उसके मन के समस्त रहस्य उगलवा लिए जाते हैं।

101- सूरः अल-क्रारिअः

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 12 आयतें हैं ।

यह सूरः पिछली सूरः की चेतावनी को ही दोहरा रही है कि कभी-कभी मनुष्य को लापरवाही से जगाने के लिए एक भयंकर ध्वनि उसका द्वार खटखटाएगी । यह खटखटाने वाली ध्वनि क्या है ? फिर विचार करो कि यह ध्वनि क्या है ? जब भयंकर युद्धों के विनाश के परिणाम स्वरूप मनुष्य टिड्डी दल की भाँति तितर-बितर हो जाएगा और मानो पर्वत भी धुनी हुई ऊन की भाँति कण-कण कर दिए जाएँगे । यहाँ पर्वतों से अभिप्राय बड़ी-बड़ी सांसारिक शक्तियाँ हैं । निश्चित रूप से यहाँ किसी परकालीन क्रयामत का वर्णन नहीं है । क्योंकि तब तो पर्वत कण-कण नहीं किए जाएँगे । उस समय जिन जातियों के पास अधिक शक्तिशाली युद्ध-सामग्री होगी वे विजयी होंगी और जिनकी युद्ध-सामग्री प्रतिपक्ष की तुलना में कमज़ोर होंगी वे युद्ध के नरक में गिराई जाएँगी । यह एक भड़कती हुई अग्नि है ।



سُورَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ اثْنَتَا عَشْرَةَ آيَةً وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

(प्रमाद से जगाने वाली) भयंकर ध्वनि ।2।

الْقَارِعَةُ ②

वह भयंकर ध्वनि क्या है ? ।3।

مَا الْقَارِعَةُ ③

और तुझे क्या मालूम कि वह भयंकर ध्वनि क्या है ? ।4।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا الْقَارِعَةُ ④

जिस दिन लोग तितर-बितर की हुई टिड्डियों की भाँति हो जाएँगे ।5।

يَوْمَ يَكُونُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوثِ ⑤

और पर्वत धुनकी हुई ऊन की भाँति हो जाएँगे ।6।

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوشِ ⑥

अतः वह जिसके वज़न भारी होंगे ।7।

فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ⑦

तो वह अवश्य एक मनभावन जीवन में होगा ।8।

فَهُوَ فِي عِيشَةٍ رَاضِيَةٍ ⑧

और वह जिसके वज़न हल्के होंगे ।9।

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ⑨

तो उसकी माँ नरक होगी ।10।

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ⑩

और तुझे क्या मालूम कि यह क्या है ? ।11।

وَمَا أَدْرَاكَ مَا هِيَ ⑪

(यह) एक धधकती हुई अग्नि $\frac{1}{26}$
है। 121* (रुकू $\frac{1}{26}$)

نَارٌ حَامِيَةٌ

* इस सूर: के विषयवस्तु इस संसार पर भी लागू होते हैं। युद्धों में युद्ध-सामग्री की दृष्टि से जिन जातियों का पलड़ा भारी हो वही विजयी होती हैं और अपनी जीत के द्वारा सुख-सम्पन्नता प्राप्त करती हैं। जिन जातियों का पलड़ा युद्ध-सामग्री की दृष्टि से हल्का हो उनका अन्त यह होता है कि उनको युद्ध की अग्नि में भून दिया जाता है।

इस विषयवस्तु को क्रयामत पर लागू करें तो भावार्थ यह होगा कि जिन लोगों के नेक कर्मों का पलड़ा भारी होगा वे स्वर्ग में आनंद उपभोग करेंगे और जिनके कुकर्मों का पलड़ा भारी होगा वे नरकाग्नि का कष्ट भोग करेंगे।

102- सूरः अत-तकासुर

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 9 आयतें हैं ।

इस सूरः में मनुष्य को सचेत किया गया है कि वह धन के मोह के परिणाम स्वरूप क़ब्रों तक पहुँच जाएगा । इसमें एक ओर तो बड़ी जातियों को सावधान किया गया है कि इस दौड़ का परिणाम सिवाए विनाश के और कुछ नहीं होगा और कुछ कमज़ोर लोगों की अवस्था भी वर्णन की गई है कि वे अपनी धन-सम्पत्ति की लालसा और इच्छाओं को पूरा करने के लिए क़ब्रों के परिभ्रमण करने से भी पीछे नहीं हटेंगे । इसके परिणाम स्वरूप मनुष्य अर्थात् भौतिकवादी जातियों को और कु-धारणा के अनुगामी धार्मिक सम्प्रदायों को भी सचेत किया गया है कि इसका अन्तिम परिणाम यह होगा कि तुम उस अग्नि का ज्ञान प्राप्त कर लोगे जो तुम्हारे लिए भड़काई गई है और फिर तुम उसे अपनी आंखों के सामने देख लोगे । फिर जब तुम उसमें झोंके जाओगे तो तुमसे पूछा जाएगा कि अब बताओ कि सांसारिक सुख-सुविधाओं की अंधा-धुंध चाहत ने तुम्हें क्या दिया ?



سُورَةُ التَّكْوِيْنِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ تِسْعُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन माँगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

एक दूसरे से बढ़ जाने की होड़ ने तुम्हें लापरवाह बना दिया ।2।

أَلْهَكُمُ التَّكَاثُرُ ②

यहाँ तक कि तुमने क़ब्रगाहों का भी परिभ्रमण किया ।3।

حَتَّى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ③

सावधान ! तुम अवश्य जान लोगे ।4।

كَأَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ④

सावधान ! तुम अवश्य जान लोगे ।5।

ثُمَّ كَالَّا سَوْفَ تَعْلَمُونَ ⑤

फिर सावधान ! यदि तुम विश्वासपूर्ण ज्ञान की सीमा तक जान लो ।6।

كَأَلَّا لَوْ تَعْلَمُونَ عِلْمَ الْيَقِينِ ⑥

तो अवश्य तुम नरक को देख लोगे ।7।

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيمَ ⑦

फिर तुम अवश्य उसे आंखों देखे विश्वास की भाँति देखोगे ।8।

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِينِ ⑧

फिर उस दिन तुम सुख-समृद्धि के बारे में अवश्य पूछे जाओगे ।9। (रुकू 1/27)

⑨

ثُمَّ لَتَسْأَلَنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ⑨

103- सूर: अल-अस्र

यह आरम्भिक मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 4 आयतें हैं ।
 इस सूर: में यह वर्णन किया गया है कि पिछली सूरतों में जिस प्रकार के लोगों का वर्णन है और जिस सांसारिक चाहत से डराया गया है उसके परिणाम स्वरूप एक ऐसा समय आएगा कि जब सारा जग साक्षी होगा कि वह मनुष्य घाटे में है सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक कर्म किए और उन्होंने सत्य पर अटल रहते हुए सत्य की शिक्षा दी और धैर्य पर अटल रहते हुए धैर्य की शिक्षा दी ।

☆☆☆

سُورَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ أَرْبَعُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

काल की कसम ।2।

وَالْعَصْرِ ②

निःसन्देह मनुष्य एक बड़े घाटे में है ।3।

إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ③

सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए और नेक कर्म किए और सत्य पर अटल रहते हुए एक दूसरे को सत्य का उपदेश दिया और धैर्य पर अटल रहते हुए एक दूसरे को धैर्य का उपदेश दिया ।4।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ④
 وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ⑤

(स्कू $\frac{1}{28}$)

104- सूरः अल-हुमज़ः

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 10 आयतें हैं ।

सूरः अल् अस्न के पश्चात सूरः अल् हुमज़ः आती है जो धन के लालायित जातियों के लिए अब तक दी गई चेतावनियों में सबसे बड़ी चेतावनी है । अल्लाह ने कहा, क्या उस युग का धनवान् व्यक्ति यह विचार करेगा कि उसके पास इस प्रकार अधिकता से धन इकट्ठा हो चुका है और वह उसे बेधड़क अपनी सुरक्षा पर खर्च कर रहा है, मानो अब उसे इस संसार में चिरस्थायी श्रेष्ठता प्राप्त हो गई है ? सावधान ! वह एक ऐसी अग्नि में झोंका जाएगा जो छोटे से छोटे कणों में बन्द की गई है और तुझे क्या पता कि वह कौन सी अग्नि है ?

यहाँ यह प्रश्न स्वभाविक रूप से उठता है कि छोटे से कण में अग्नि कैसे बन्द की जा सकती है ? अवश्यमेव यहाँ उस अग्नि का वर्णन है जो परमाणु (Atom) के भीतर बन्द होती है । अरबी शब्द **हुतमः** और परमाणु में ध्वन्यात्मक समानता है । यह वह अग्नि है जो दिलों पर लपकेगी और उन पर आक्रमण करने के लिए उसे ऐसे स्तम्भों में बन्द की गई है जो खींच कर लम्बे हो जाएँगे ।

इस सूरः का विषयवस्तु मनुष्य को समझ आ ही नहीं सकता जब तक उस आणविक युग की परिस्थितियाँ उस पर उजागर न हों । वह आणविक तत्त्व जिसमें यह अग्नि बन्द है वह फटने से पहले **खींचकर लम्बे किए गए स्तम्भों** का रूप धारण करता है अर्थात् बढ़ते हुए आन्तरिक दबाव के कारण फैलने लगता है और उसकी आग लोगों के शरीर को जलाने से पहले उनके दिलों पर लपकती है और हृदयगति बन्द हो जाती है । समस्त वैज्ञानिक साक्षी हैं कि परमाणु बम फटने से बिल्कुल इसी प्रकार के प्रभाव प्रकट होते हैं । परमाणु बम के ज्वलनशील तत्त्व मनुष्य तक पहुँचने से पूर्व ही अत्यन्त शक्तिशाली रेडियो तरंगें हृदय की गति को बन्द कर देती हैं ।

इसका एक और अर्थ यह भी है कि मनुष्य शरीर की कोशिकाओं में भी एक अग्नि छिपी है । जब वह प्रकट होगी तो फिर मनुष्य के हृदय पर लपकेगी और उसे नाकारा बना देगी ।



سُورَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَةِ عَشْرُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

हर चुगलखोर (और) छिद्रान्वेषी का सर्वनाश हो ।2।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةٍ ②

जिसने धन इकट्ठा किया और उसकी गणना करता रहा ।3।

الَّذِي جَمَعَ مَالًا وَعَدَّدَهُ ③

वह विचार किया करता था कि उसका धन उसे अमरत्व प्रदान करेगा ।4।

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ ④

सावधान ! वह अवश्य हुतम: में गिराया जाएगा ।5।

كَأَلَيْسَ بُذْنٌ فِي الْحُطَمَةِ ⑤

और तुझे क्या पता कि हुतम: क्या है? ।6।

وَمَا أَذْرَبَكَ مَا الْحُطَمَةُ ⑥

वह अल्लाह की भड़काई हुई अग्नि है ।7।

نَارُ اللَّهِ الْمَوْقَدَةُ ⑦

जो दिलों पर लपकेगी ।8।

الَّتِي تَطْلُعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ ⑧

निःसन्देह वह उनके विरुद्ध बन्द करके रखी गई है ।9।

إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّوَصَدَةٌ ⑨

ऐसे स्तम्भों में, जो खींच कर लम्बे किए गए हैं ।10। (रुकू 1/29)

فِي عَمَدٍ مُمَدَّدَةٍ ⑩

105- सूरः अल-फ़ील

यह आरम्भिक मक्की सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 6 आयतें हैं ।

सांसारिक जातियों की उन्नति अन्ततः उस चरम बिंदू पर समाप्त होगी कि वे सारी बड़ी शक्तियाँ इस्लाम को नष्ट-भ्रष्ट करने पर तुली होंगी । कुरआन करीम अतीत की एक घटना का वर्णन करते हुए कहता है कि इससे पूर्व भी **उम्मुल कुरा** अर्थात् मक्का को बड़ी-बड़ी वैभवशाली जातियों ने नष्ट करने का प्रयास किया था । वे **अस्हाब-उल-फ़ील** अर्थात् बड़े-बड़े हाथियों वाले थे । परन्तु इससे पूर्व कि वे उन बड़े-बड़े हाथियों पर सवार होकर मक्का तक पहुँचते उन पर अबाबील नामक चिड़ियों ने जो समुद्री चट्टानों की गुफाओं में घर बनाती हैं, ऐसे कंकर बरसाए जिन में चेचक रोग के कीटाणु थे और पूरी सेना में वह भयंकर रोग फैल गया और पल भर में वे शवों के ऐसे ढेर बन गए जैसे खाया हुआ भूसा हो । उनके शवों को शवभक्षी पक्षी पटक पटक कर धरती पर मारते थे । अतएव भविष्य में भी यदि किसी जाति ने शक्ति के बल पर इस्लाम को अथवा मक्का को अपमानित करने या तबाह करने का इरादा किया तो वह भी इसी प्रकार विनष्ट कर दी जाएगी ।



سُورَةُ الْفِيلِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝

क्या तू नहीं जानता कि तेरे रब ने हाथी वालों के साथ कैसा बर्ताव किया ? ।2।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝

क्या उसने उनकी योजना को व्यर्थ नहीं कर दिया ? ।3।

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي تَضْلِيلٍ ۝

और उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी (नहीं) भेजे ? ।4।

وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝

वे उन पर कंकर मिश्रित शुष्क मिट्टी के ढेलों से पथराव कर रहे थे ।5।

تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيلٍ ۝

अतः उसने उन्हें खाए हुए भूसे की भाँति बना दिया ।6। (रुकू $\frac{1}{30}$)

ع

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

106- सूर: कुरैश

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 5 आयतें हैं ।

सूर: अल्-फ़ील के तुरन्त पश्चात इस सूर: में यह शुभ-समाचार दिया गया है कि जिस प्रकार इस घटना से पूर्व मक्का निवासियों के व्यापारिक दल गर्मियों और सर्दियों में यात्रा करते थे और प्रत्येक प्रकार के फलों के द्वारा उनको भूख और भय से मुक्त करते थे, यही क्रम आगे भी जारी रहेगा ।



سُورَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ خَمْسُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

कुरैश में परस्पर मेल-जोल उत्पन्न करने के लिए ।2।

لَا يُلْفِ قُرَيْشٌ ②

(हाँ) उनमें मेल-जोल बढ़ाने के लिए (हमने) सर्दियों और गर्मियों की यात्राएँ बनाई हैं ।3।

الْفِهُمُ رِحْلَةَ الْشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ③

अतः वे इस घर के रब्ब की उपासना करें ।4।

فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ ④

जिसने उन्हें भूख से (मुक्ति देते हुए) भोजन कराया और उन्हें भय से शांति प्रदान की ।5। (रुकू 1/31) ع

الَّذِي أَطْعَمَهُم مِّنْ جُوعٍ ⑤
وَأَمَّنَهُم مِّنْ خَوْفٍ ⑥

107- सूर: अल-माऊन

यह आरम्भिक मक्की सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 8 आयतें हैं ।

इस सूर: का पिछली सूर: से यह सम्बन्ध प्रतीत होता है कि जब अल्लाह तआला मुसलमानों को बहुतात के साथ सुख-संपन्नता प्रदान करेगा तो वे उसके मार्ग में खर्च करने से पीछे नहीं हटेंगे और वह उपासना जिसे का'बा के रब्ब ने सिखाई उसमें कदापि दिखावे से काम नहीं लेंगे । अन्यथा उनकी नमाज़ें उनके लिए विनाश का कारण बन जाएंगी क्योंकि ऐसी नमाज़ें दिखावे की होंगी । इसी प्रकार उनका खर्च भी दिखावे का हुआ करेगा । दशा यह होगी कि वे बड़े-बड़े खर्च करेंगे जिसके परिणाम स्वरूप उनको ख्याति प्राप्त हो परन्तु निर्धनों को छोटी से छोटी आवश्यकता की वस्तु भी देने में टाल-मटोल करेंगे ।

سُورَةُ الْمَاعُونِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ ثَمَانِي آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।1।

क्या तूने उस व्यक्ति पर ध्यान दिया जो धर्म को झुठलाता है ? ।2।

अतः वही व्यक्ति है जो अनाथ को धुतकारता है ।3।

और दरिद्र को भोजन कराने की प्रेरणा नहीं देता ।4।

अतः उन नमाज़ पढ़ने वालों का सर्वनाश हो ।5।

जो अपनी नमाज़ से असावधान रहते हैं ।6।

वे लोग जो दिखावा करते हैं ।7।

और दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं को भी (लोगों से) रोके रखते हैं ।8।

(स्कू 1/32)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْإِيمَانِ ②

فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ الْيَتِيمَ ③

وَلَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ ④

فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ⑤

الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ⑥

الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ⑦

وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ⑧

⑧

108- सूरः अल-कौसर

यह सूरः मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 4 आयतें हैं ।

सूरः अल-माऊन के तुरन्त पश्चात हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसी **कौसर** (हर चीज़ की बहुतात) प्रदान करने का शुभ-समाचार दिया गया है जो कभी समाप्त नहीं होगी । इसका एक अर्थ तो यह है कि वह धन जिसे वे अल्लाह तआला के मार्ग में खर्च करेंगे, यदि वे उसे बिना सोचे समझे भी खर्च करें तब भी अल्लाह तआला और अधिक धन प्रदान करता चला जाएगा । और सबसे बड़ा शुभ-समाचार यह है कि आप सल्ल. को कुरआन प्रदान हुआ जिसके विषयवस्तु कभी न समाप्त होने वाले खज़ाने की भाँति क़यामत तक मानव जाति के हित के लिए जारी रहेंगे । उसके विषयवस्तुओं के अन्त तक कोई पहुँच नहीं सकेगा ।

इसके पश्चात यह कहा गया है कि तू इस महान पुरस्कार प्राप्ति पर आभार व्यक्त करने के लिए उपासना कर और कुर्बानी दे । निःसन्देह तेरा शत्रु ही **अब्तर** रहेगा और तेरा उपकार कभी समाप्त होने वाला नहीं है ।



سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ أَرْبَعُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

निःसन्देह हमने तुझे कौसर प्रदान किया है ।2।

إِنَّا آعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ②

अतः अपने रब्ब के लिए नमाज़ पढ़ और कुर्बानी दे ।3।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَأَنْحَرْ ③

निःसन्देह तेरा शत्रु ही अब्तर $\frac{1}{33}$ रहेगा ।4।* (रकू $\frac{1}{33}$)

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ④

- * हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर मक्का के काफ़िर अब्तर होने का व्यंग कसते थे अर्थात् ऐसा व्यक्ति जिसकी कोई पुत्र-संतान नहीं । आप सल्ल. को यह शुभ-समाचार दिया गया कि वे जो पुत्र-संतान वाले हैं उनकी संतान भी आध्यात्मिक रूप से आपकी ओर सम्बन्धित होना अपने लिए गर्व समझेगी और अपने दुष्ट माता-पिता से अपना सम्बन्ध काट लेगी । अतः इस्लाम के शत्रु अबु-जहल के पुत्र इक्रमा रज़ि. के बारे में यह वर्णन उल्लेखित है कि उसके इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात किसी मुसलमान ने उस पर अबु-जहल के पुत्र होने का कटाक्ष किया तो उसने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास इसकी शिकायत की और आप सल्ल. ने उस मुसलमान को उसे आगे अबु-जहल का पुत्र कहने से मना किया । (असदुल गा़बा शब्द इक्रमा के अन्तर्गत) तो इस प्रकार अबु-जहल स्वयं अब्तर हो कर मरा और उसकी संतान आध्यात्मिक रूप से हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ सम्बन्धित होने लगी ।

109- सूर: अल-काफ़िरून

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 7 आयतें हैं ।

इस सूर: में काफ़िरों को फिर से चेतावनी दी गई है कि न कभी मैं तुम्हारे धर्म का अनुसरण करूँगा, न कभी तुम मेरे धर्म का अनुसरण करोगे । अतः तुम अपने धर्म पर चलते रहो और मैं अपने धर्म पर चलता रहूँगा ।



سُورَةُ الْكَافِرُونَ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبِسْمَلَةِ سَبْعُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

कह दे कि हे काफ़िरो ! ।2।

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ①

मैं उसकी उपासना नहीं करूँगा जिसकी तुम उपासना करते हो ।3।

لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ①

और न तुम उसकी उपासना करने वाले हो, जिसकी मैं उपासना करता हूँ ।4।

وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ①

और मैं कभी उसकी उपासना करने वाला नहीं बनूँगा, जिसकी तुमने उपासना की है ।5।

وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَا عَبَدْتُمْ ①

और न तुम उसकी उपासना करने वाले बनोगे, जिसकी मैं उपासना करता हूँ ।6।

وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا أَعْبُدُ ①

तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म है और मेरे लिए मेरा धर्म ।7। (रुकू 34)



لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ①

110- सूर: अन-नस्र

यह सूर: मदनी है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 4 आयतें हैं ।

इस सूर: में वास्तव में कौसर ही का एक दूसरा रूप वर्णन किया गया है । अर्थात् जैसा कि कुरआनी पुरस्कार कभी समाप्त होने वाले नहीं, इसी प्रकार इस्लामी विजय-यात्राओं का क्रम भी असीमित होगा और वह समय अवश्य आएगा जब गिरोह के गिरोह लोग इस्लाम में शामिल होंगे । यह समय विजय शंख बजाने का नहीं बल्कि अल्लाह से क्षमायाचना करने का होगा । क्योंकि इन विजयों के परिणाम स्वरूप अहंकार उत्पन्न होना नहीं चाहिए बल्कि और भी अधिक विनम्रता पूर्वक इस विश्वास पर दृढ़ होना चाहिए कि यह केवल अल्लाह की कृपा से ही प्राप्त हुआ है । अतः ऐसे अवसर पर पहले से बढ़ कर क्षमायाचना में लगे रहना चाहिए और पहले से बढ़ कर अल्लाह का प्रशंसागान करना चाहिए ।



سُورَةُ النَّصْرِ مَدْنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ أَرْبَعُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।

जब अल्लाह की सहायता और विजय आएगी ।2।

और तू लोगों को देखेगा कि वे अल्लाह के धर्म में गिरोह के गिरोह प्रवेश कर रहे हैं ।3।

अतः अपने रब की स्तुति के साथ (उसका) गुणगान कर और उससे क्षमायाचना कर । निःसन्देह वह बहुत प्रायश्चित्त स्वीकार करने वाला है ।4।

(रुकू 1/35)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ②

وَرَأَيْتِ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي

دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ③

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ④

إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ⑤

111- सूर: अल-लहब

यह आरम्भिक मक्की सूरतों में से है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 6 आयतें हैं ।

अबू-लहब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक चाचा का नाम था जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विरुद्ध हर जगह घृणा फैलाता फिरता था और उसकी पत्नी भी इस काम में उसकी सहायक थी । अल्लाह ने फ़र्माया : उसके दोनों हाथ काटे जाएंगे अर्थात् इस्लाम के विरुद्ध भविष्य में भी युद्ध के उन्माद भड़काने वालों को, चाहे वे दाहिने बाजू के हों अथवा बायें बाजू के हों, निन्दा, अपमान के अतिरिक्त उन्हें कुछ प्राप्त नहीं होगा । और जो अधीनस्थ जातियाँ युद्ध का ईंधन जुटाने में उनकी सहायता करेंगी उनके भाग्य में तो फांसी के फंदे के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा ।



سُورَةُ الْاَلْبَبِ مَكِّيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ اَيَاتٍ وَرُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

अबू लहब के दोनों हाथ विनष्ट हो गए और वह स्वयं भी विनष्ट हो गया ।2।

تَبَّتْ يَدَا اَبِيْ لَهَبٍ وَتَبَّ ۝

उसके धन और जो कुछ उसने कमाया, कुछ उसके काम न आया ।3।

مَا اَغْنٰی عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۝

वह अवश्य एक भड़कती हुई अग्नि में प्रविष्ट होगा ।4।

سَيَصْلٰی نَارًا اِذَا تَلَهَّبَ ۝

और उसकी पत्नी भी, इस अवस्था में कि वह बहुत ईंधन उठाए हुए होगी ।5।

وَاَمْرَاَتُهُ ۚ حَمَّالَةَ الْخَطَبِ ۝

उसकी गर्दन में खजूर की छाल का बटा हुआ सशक्त रस्सा होगा ।6।

عِ

فِيْ جِدِّهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝

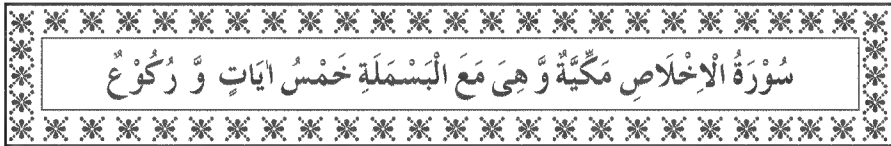
(रुकू $\frac{1}{36}$)

112- सूर: अल-इख्लास

यह सूर: मक्की है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 5 आयतें हैं ।

यह एक बहुत छोटी सी सूर: है परन्तु इसमें उन महत्वपूर्ण विजयों का वादा दिया गया है जो ईसाइयत के विरुद्ध इस्लाम को प्राप्त होंगी और यह सूचना दी गई है कि न अल्लाह का कोई पिता था न उसका कोई पुत्र होगा । इस एक वाक्य से ईसाइयत का समूचा ढाँचा धराशाई हो जाता है । अर्थात् यदि अल्लाह का पिता नहीं तो उसमें पुत्र उत्पन्न करने के गुण कैसे आए ? और ईसा अलै. जिन्हें अल्लाह तआला का काल्पनिक पुत्र कहा जाता है, उन्होंने अपने पिता से उन गुणों का अंश क्यों न लिया ? और यदि पिता ने पुत्र पैदा किया था तो फिर आगे उनके पुत्र क्यों पैदा न हुए ? इसके बाद यह कहा गया कि अल्लाह तआला का कोई समकक्ष नहीं है । इसलिए इस प्रकार की व्यर्थ बातें परम प्रशंसनीय अल्लाह की गुस्ताखी के अतिरिक्त और कुछ नहीं होंगी ।

☆☆☆



अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

तू कह दे कि वह अल्लाह एक ही है ।2।

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ②

अल्लाह को किसी की आवश्यकता नहीं है ।3।

اللَّهُ الصَّمَدُ ③

न उसने किसी को जना और न वह जना गया ।4।

لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ④

और उसका कभी कोई समकक्ष नहीं बना ।5। (रुकू $\frac{1}{37}$)

ع

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ⑤

113- सूर: अल-फलक़

यह मदनी सूर: है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 6 आयतें हैं ।

इस सूर: में सचेत किया गया है कि प्रत्येक सृष्टि के परिणाम स्वरूप भलाई के अतिरिक्त अनिष्टता भी उत्पन्न होती है । अतः उनके अनिष्ट से अल्लाह की शरण माँगते रहो और उस अंधेरी रात के अनिष्ट से भी अल्लाह तआला की शरण माँगो जो एक बार फिर संसार पर छा जाने वाली है और उन जातियों के अनिष्ट से शरण माँगो जो मनुष्य को मनुष्य से और जातियों से जातियों को काट कर पृथक कर देती हैं । अर्थात् उनका सिद्धान्त ही यह है Divide and Rule कि यदि राज करना चाहते हो तो लोगों में फूट डाल दो । यह सब साम्राज्यवाद का सार है जिसने संसार पर क़ब्ज़ा करना था । इस के बावजूद इस्लाम अवश्य उन्नति करेगा । अन्यथा उसके नष्ट हो जाने पर तो उससे ईर्ष्या उत्पन्न नहीं हो सकती थी । ईर्ष्या का विषयवस्तु बताता है कि इस्लाम ने उन्नति करनी है और जब भी वह उन्नति करेगा, शत्रु उससे ईर्ष्या करेगा ।



سُورَةُ الْفَلَقِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سِتُّ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

तू कह दे कि मैं (चीज़ों को) फाड़ कर (नई चीज़) पैदा करने वाले रब की शरण माँगता हूँ ।2।

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ①

जो उसने पैदा किया, उसके अनिष्ट से ।3।

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ②

और अन्धेरा करने वाले के अनिष्ट से जब वह छा चुका हो ।4।

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ③

और गाँठों में फूंकने वालियों के अनिष्ट से ।5।*

وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ④

और ईर्ष्या करने वाले के अनिष्ट से जब वह ईर्ष्या करे ।6। (रुकू $\frac{1}{38}$)

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ⑤

* इसका एक अर्थ तो यह किया जाता है कि जादू-टोनों के द्वारा आपसी सम्बन्धों की गाँठों में फूंकने वालियाँ । परन्तु वास्तव में यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण भविष्यवाणी है और ऐसी जातियों से सम्बन्धित है जिनकी सत्ता Divide and Rule के सिद्धान्त पर होगी । अर्थात् जिन जातियों पर उन्होंने विजय प्राप्त करनी हो उनको परस्पर लड़ा कर शक्तिहीन कर देंगी और स्वयं शासक बन बैठेंगी । विशेषकर पश्चिम वासियों ने सारे संसार पर इसी सिद्धान्त के द्वारा शासन किया है ।

114- सूरः अन-नास

यह मदनी सूरः है और बिस्मिल्लाह सहित इसकी 7 आयतें हैं ।

यह सूरः यहूदियों और ईसाइयों के उन सभी सामुहिक प्रयासों को सारांशतः प्रस्तुत करती है जिनकी रूप-रेखा यह होगी कि वे मानव जाति के पालनहार होने का दावा करेंगे अर्थात् उनकी अर्थ-व्यवस्था के भी स्वामी बन बैठेंगे और उनकी राजनीति पर भी कब्ज़ा कर के उनके शासक बन बैठेंगे । इस प्रकार स्वयं उपास्य बन जाएंगे और जो उनकी उपासना करेगा उसको तो वे पुरस्कृत करेंगे और जो उनकी उपासना करने से इनकार करेगा वे उसको बर्बाद कर देंगे ।

उनका सबसे भयानक हथियार यह होगा कि वे ऐसे भ्रम उत्पन्न करने वाले की भाँति होंगे जो **खन्नास** होगा अर्थात् लोगों के मन में भ्रम उत्पन्न करके स्वयं छुप जाएंगे । यही दशा इस युग की बड़ी शक्तियों अर्थात् पूंजीवादियों की होगी और जन-शक्तियों अर्थात् साम्यवादियों की भी होगी । अतः जो भी इन सभी मामलों से अल्लाह तआला की शरण में आएगा अल्लाह तआला उसे बचा लेगा ।



سُورَةُ النَّاسِ مَدَنِيَّةٌ وَهِيَ مَعَ الْبَسْمَلَةِ سَبْعُ آيَاتٍ وَ رُكُوعٌ

अल्लाह के नाम के साथ जो अनंत कृपा करने वाला, बिन मांगे देने वाला (और) बार-बार दया करने वाला है ।।।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

तू कह दे कि मैं मनुष्यों के रब्ब की शरण मांगता हूँ ।2।

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ②

मनुष्यों के सम्राट की ।3।

مَلِكِ النَّاسِ ③

मनुष्यों के उपास्य की ।4।

إِلَهِ النَّاسِ ④

अत्यधिक भ्रम उत्पन्न करने वाले के अनिष्ट से, जो भ्रम डाल कर पीछे हट जाता है ।5।

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ⑤

वह जो मनुष्यों के दिलों में भ्रम डालता है ।6।

الَّذِي يُوسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ⑥

(चाहे) वह जिनों में से हो (अर्थात् बड़े लोगों में से) अथवा जन-साधारण में से हो ।7।* (रुकू 1/39)

ع ⑦

مَنْ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ⑦

- * आयत सं. 5 से 7 : यहाँ अंत्ययुग में यहूदियों और ईसाइयों की ओर से दूसरों के दिलों में भ्रांतियाँ उत्पन्न करने की भविष्यवाणी की गई है । आयतांश अल् जिनन्ति वन नासि से एक तो यह अभिप्राय है कि बड़े लोगों के दिलों में भी भ्रांतियाँ डाली जाएँगी और छोटे लोगों अर्थात् जन-साधारण के दिलों में भी भ्रांतियाँ डाली जाएँगी । अतः पूंजीवादियों और साम्यवादियों के दिलों में शैतान ने जो भ्रम डाला उसके कारण दोनों ही जाति नास्तिकता की ओर चली गई । दूसरा अभिप्राय यह है कि यहूदी और ईसाई दोनों भ्रम उत्पन्न करने वाले हैं । वे जिन लोगों पर शासन करते हैं उनके ईमान में भी भ्रम उत्पन्न करके उनको दुर्बल कर देते हैं ।



कुरआन पढ़ने के बाद की दुआ

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ بِالْقُرْآنِ الْعَظِيْمِ وَاَجْعَلْهُ لِيْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهْدًى وَّرَحْمَةً.
اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِيْ مِنْهُ مَا نَسِيتُ وَعَلِّمْنِيْ مِنْهُ مَا جَهِلْتُ وَاَرْزُقْنِيْ تِلَاوَتَهٗ
اِنَّهٗ اَلْيَلِ وَاِنَّهٗ النَّهَارِ وَاَجْعَلْهُ لِيْ حُجَّةً يَّارَبَّ الْعٰلَمِيْنَ.

“अल्लाहुम्मर्हम्नी बिल कुरआनिल् अज़ीम् । वज्जअल्हु ली इमामं-व नूरं-व हुदं-व रहमतन् । अल्लाहु म्म ज़क्किर्नी मिन्हु मा नसीतु व अल्लिम्नी मिन्हु मा जहिल्तु वर्जुक्नी तिलाव-तहू आना अल्लैलि व आना अन्नहारि वज्जअल्हु ली हुज्जतंय्या रब्बल आलमीन ।”

हे मेरे अल्लाह ! महान कुरआन की बरकत से मुझे पर कृपा कर और इसे मेरे लिए पथ-प्रदर्शक, प्रकाश, सन्मार्ग और करुणा स्वरूप बना । हे मेरे अल्लाह ! पवित्र कुरआन में से जो कुछ मैं भूल चुका हूँ वह मुझे याद दिला दे और जो कुछ मुझे नहीं आता वह मुझे सिखा दे । और दिन-रात मुझे इसके पाठ करने की शक्ति प्रदान कर । और हे समस्त लोकों के प्रतिपालक ! इसे मेरे हित में युक्ति स्वरूप बना दे ।



पारिभाषिक शब्दावली

अल्लाह	- उस परम सत्ता का निजी नाम है जो समग्र सृष्टि का स्रष्टा और प्रतिपालक है । वास्तविक उपास्य अर्थात ईश्वर । पवित्र कुरआन में अल्लाह के अनेक गुणवाचक नाम बताये गये हैं । अरबी भाषा में अल्लाह शब्द किसी अन्य वस्तु अथवा व्यक्ति के लिये तथा बहुवचन में कभी प्रयुक्त नहीं हुआ ।
अर्श	- सिंहासन । वह स्थान जहाँ पर अल्लाह का अधिष्ठान है ।
अहले किताब	- ग्रंथधारी, यहूदी और ईसाई जो तौरात नामक ग्रंथ को ईशवाणी मानते हैं।
अज़ाब	- अल्लाह की अवज्ञा करने पर मिलने वाला दंड । ईशप्रकोप, कष्ट, विपत्ति।
अरबी	- भाषाविशेष जो अरब प्रांत में बोली जाती है, जिसके शब्दावली अनेकार्थबोधक होते हैं ।
अजमी	- अरबी से इतर भाषाएँ ।
अनुसार	- सहयोगी । मदीना के वे लोग जिन्होंने मक्का से हिजरत करके आये हुये मुसलमानों की सहायता की थी ।
अरफ़ात	- मक्का से लगभग नौ मील की दूरी पर एक मैदान जहां हज्ज के महीना की नवीं तिथि को सब हाजी एकत्रित होकर उपासना करते हैं । हर एक हाजी को यहाँ पहुँचना अनिवार्य है ।
अलैहिस्सलाम	- उनपर अल्लाह की कृपा हो । नबियों, रसूलों और अवतारों के नामों के बाद यह वाक्य कहा जाता है ।
अलैहस्सलाम	- उनपर अल्लाह की कृपा हो । यह वाक्य किसी पुण्यवती स्त्री के नाम के बाद कहा जाता है ।
आयत	- पवित्र कुरआन की पंक्ति अथवा वाक्य । ईश्वरीय चि ।
आदम	- मानव-जगत की सुधार के लिये अल्लाह की ओर से आये हुए सर्वप्रथम अवतार ।
इंजील	- शुभ-समाचार । ईसाइयों का धर्मग्रंथ ।
इमाम	- धार्मिक अगुआ । नबी, रसूल, पथ-प्रदर्शक तथा अनुकरणीय व्यक्ति ।
इद्दत	- एक मुसलमान स्त्री के विधवा होने अथवा तलाक़ पाने पर किसी दूसरे व्यक्ति से विवाह करने से पूर्व इस्लामी धर्मविधान के द्वारा निश्चित अवधि बिताने का नाम इद्दत है ।
इस्लाम	- आज्ञा पालन करना । इस्लाम वह धर्म है जिसे हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने

	<p>लोगों के समक्ष पेश किया, जो अमन और शांति की शिक्षा देता है ।</p>
इस्त्राईल	<p>- अल्लाह का वीर या सैनिक । हज़रत याकूब अलै. का एक गुणवाचक नाम, जिस के कारण उनके वंशज को 'बनी इस्त्राईल' (अर्थात इस्त्राईल की संतान) कहा जाता है । फ़िलिस्तीन का एक भू-भाग जिस में यहूदियों ने अपना राज्य स्थापित करके उस का नाम इस्त्राईल रखा है ।</p>
इज़्ज़त वाला महीना	<p>- हुर्मत अर्थात इज़्ज़त वाले चार महीने, जो हिज़्री संवत के जुल क़अदः, जुल हज्जः, मुहर्रम और रजब हैं । इन महीनों में हज्जक्षेत्र में अनावश्यक रूप से किसी जीवधारी को मारना निषेध है ।</p>
इब्लीस ईमान	<p>- जो अल्लाह की कृपा से निराश हो । शैतान ।</p> <p>- अर्थात विश्वास और स्वीकार करना । जैसे अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करना ।</p>
उम्मत	<p>- संप्रदाय । किसी नबी या रसूल के अनुयायियों का समूह उसकी उम्मत कहलाता है ।</p>
उम्मती नबी	<p>- किसी नबी की शिक्षाओं को आगे फैलाने के लिये उसके अनुयायियों में से किसी का नबी पद प्राप्त करना ।</p>
उम्रा	<p>- हज्ज के निश्चित दिनों के अतिरिक्त अन्य दिनों में हज्ज के निश्चित उपासना-कर्म करना ।</p>
उलेमा	<p>- इस्लामी धर्मज्ञ ।</p>
ए'तिकाफ़	<p>- रमज़ान के महीना की इक्कीसवीं तिथि से अंतिम तिथि तक अल्लाह की उपासना करने के लिये मस्जिद में एकांतवास करना ।</p>
एहराम	<p>- हज्ज या उम्रा करते समय दो अनसिला चादरों वाला विशेष परिधान ।</p>
कलिमा	<p>- वचन । धर्मवाक्य । इस्लाम धर्म का मूलमंत्र :- 'ला इला ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' (अल्लाह के सिवा अन्य कोई उपास्य नहीं, हज़रत मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के रसूल हैं)</p>
क़यामत	<p>- महाप्रलय । मृत्यु के बाद अल्लाह के समक्ष उपस्थित होने का दिन ।</p>
कशफ़	<p>- प्रकटित होना । जाग्रतावस्था में कोई अदृष्ट विषय देखना । स्वप्न और कशफ़ में यह अंतर है कि स्वप्न सोते में देखा जाता है और कशफ़ जागते में देखा जाता है । दिव्य-दर्शन । योगनिद्रा ।</p>
काफ़िर	<p>- सच्चाई का इनकार करने वाला । इस्लाम धर्म का अस्वीकारी ।</p>
क़ायम करना	<p>- खड़ा करना । संभाल और संवार कर कोई काम करना ।</p>
क़ायम रहना	<p>- अडिग रहना । चिरस्थायी ।</p>

क्रिब्ला	- आमने-सामने । जिसकी ओर मुँह करके मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं । खाना का'बा मुसलमानों का क्रिब्ला है जिसकी ओर सारे संसार के मुसलमान मुँह करके नमाज़ पढ़ते हैं ।
कुर'आन	- अल्लाह की वाणी जो मुसलमानों का धर्मग्रंथ है ।
कुर्बानी	- त्याग, बलिदान । ईदुज्जुहा के बाद तथा हज्ज करने के समय ज़िबह किया जाने वाला पशु ।
कुर्बान गाह	- कुर्बानी के लिये निश्चित स्थान ।
कुफ़्र	- सच्चाई का अस्वीकार । इस्लाम का इनकार करना ।
खलीफ़ा	- उत्तराधिकारी । अधिनायक । नबी और रसूलों के बाद उनका स्थान लेने वाला और उनके काम को चलाने वाला ।
खाना का'बा	- मक्का में स्थित एक चौकोर भवन । संसार में एक ईश्वर की उपासना-गृह के रूप में सर्वप्रथम इसका निर्माण हुआ था । हज़रत इब्राहीम अलै. और उनके पुत्र हज़रत इस्माईल अलै. ने इसका जीर्णोद्धार किया था । हज्ज के समय इस गृह की परिक्रमा की जाती है ।
खिलाफ़त	- नबी और रसूल के बाद उनके कामों को आगे चलाने वाली व्यवस्था, जिसका प्रमुख खलीफ़ा कहलाता है ।
ग़नीमत	- युद्ध-लब्ध धन ।
ज़कात	- इस्लाम का वह आर्थिक कर जो धनवान मुसलमानों से निश्चित दर से लिया जाता है और निर्धनों में बाँट दिया जाता है । इसे राष्ट्रहित में भी खर्च किया जा सकता है ।
जनाज़:	- कफ़न में लपेटा हुआ शव । इस्लामी धर्मविधान के अनुसार मृतक के लिए जो नमाज़ पढ़ी जाती है उसे नमाज़ जनाज़: कहते हैं ।
ज़बूर	- हज़रत दाऊद अलै. को अल्लाह की ओर से दिया गया धर्मग्रंथ ।
ज़िज़्या	- वह कर जिसे ग़ैर-मुस्लिम प्रजा से उनकी जान-माल और मान-सम्मान की सुरक्षा के लिए सैन्य सेवाओं के उद्देश्य से लिया जाता है ।
जिन्न	- छिपी रहने वाली सृष्टि । बड़े लोग, धनपति जो द्वारपालों और पदों के पीछे छिपे रहते हैं । बैक्टीरिया, वायरस ।
ज़िबह	- अल्लाह का नाम लेकर भोजन के उद्देश्य से किसी जीव का गला काट कर वध करना ।
जिब्रील	- ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता ।
जिहाद	- प्रबल उद्यम करना । अपने को सुधारने के लिये तथा धर्मप्रचार के लिये

	प्रयत्न करना । सत्यधर्म की रक्षा के लिये प्रतिरक्षात्मक युद्ध करना ।
जुंबी	- वीर्यस्खलित अपवित्र व्यक्ति । स्नान करने के उपरांत जुंबी-व्यक्ति पवित्र होता है ।
तक्क़वा	- निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करना और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखना । संयम, धर्मपरायणता ।
तबअ ताबयीन	- ताबयीन के अनुगामी । जिन्होंने केवल ताबयीन को देखा ।
तयम्मूम	- पानी न मिलने और बीमार होने के कारण वज़ू के बदले पवित्र मिट्टी पर हाथ मार कर उससे अपने मुँह और हाथों को मलना ।
तरका	- मृत व्यक्ति की सम्पत्ति ।
तलाक़	- छुटकारा । पति का विवाह-बंधन को तोड़ कर पत्नी को छोड़ने की घोषणा करना ।
तहज्जुद	- अर्धरात्रि के पश्चात और प्रातःकालीन नमाज़ से पूर्व पढ़ी जाने वाली नमाज़
ताबयीन	- अनुगमन कारी । वे मुसलमान जिन्होंने हज़रत मुहम्मद सल्ल. को तो नहीं देखा परंतु हज़रत मुहम्मद सल्ल. के साहाबियों को देखा ।
तौरात	- यहूदियों का धर्मग्रंथ ।
दज्जाल	- झूठा । धोखेबाज । अंत्ययुग में लोगों को धर्मभ्रष्ट कराने के लिए उत्पन्न होने वाली एक शक्ति ।
दुरूद व सलाम	- हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए की जाने वाली दुआ।
नबी	- लोगों को सन्मार्ग प्रदर्शित कराने के लिए अल्लाह की ओर से आया हुआ व्यक्ति, जिसे अदृष्ट विषय से अवगत कराया जाता है । अवतार ।
नमाज़	- इस्लामी उपासना । दिन में पाँच बार नमाज़ पढ़ी जाती है । जिनके नाम फ़ज़्र, जुहर, अस्त्र, मगरिब और इशा ।
निकाह	- विवाह । कुछ निर्दिष्ट कुरआनी आयतों का पाठ करके पुरुष और स्त्री की सम्मति से लोगों की उपस्थिति में उनके विवाह की घोषणा करना ।
नुबुव्वत	- नबी बनने की क्रिया । अवतारत्व ।
नूर	- प्रकाश, ज्योति ।
नेक	- सदाचारी ।
नेमत	- अल्लाह की देन ।
पारः (सिपारः)	- पवित्र कुरआन का भाग । पवित्र कुरआन को तीस भागों में विभाजित किया गया है ।

पैगम्बर	- अल्लाह का संदेशवाहक । नबी । रसूल ।
फ़तवा	- धर्मदिश । किसी कर्म के उचित या अनुचित होने के संबंध में इस्लामी धर्माचार्य के द्वारा इस्लामी शास्त्रों के अनुसार दी गई व्यवस्था ।
फ़रिश्ता	- देवदूत जो पुण्यवान और पापमुक्त होते हैं, अल्लाह जो आदेश देता है वे उसका पालन करते हैं ।
फ़िक्रः	- इस्लामी-विधान शास्त्र ।
फ़िरदौस	- स्वर्ग । उद्यान ।
फुर्कान	- सत्य और असत्य का प्रभेदक । पवित्र कुरआन ।
बरकत	- बढ़ोत्तरी । समृद्धि ।
बनी इस्राईल	- इस्राईल की संतान । (‘इस्राईल’ शब्द भी देखें)
बैअत	- बिक जाना । धर्मगुरु के हाथ पर हाथ रख कर उसका आनुगत्य स्वीकार करना ।
बैतुल मुक़द्दस	- येरुशेलम में स्थित एक पवित्र उपासना स्थल जिसे मस्जिद-ए-अक़सा भी कहा जाता है ।
मन्न	- तुरंजबीन । बिना परिश्रम के मिलने वाली चीज़ । अल्लाह की ओर से बनी इस्राईल को उनके बे-घरबार होने की अवस्था में मिलने वाला खाद्यविशेष ।
मश्अर-ए-हराम	- मक्का का वह स्थान जहाँ पर हज्ज करने वाले कुर्बानी देते हैं, सिर मुंडवाते हैं और अल्लाह की उपासना करते हैं ।
मसह	- मलना । तयम्मूम करते हुए पवित्र मिट्टी से हाथों और मुँह को मलना ।
मस्जिद	- मुसलमानों का उपासना गृह ।
मस्जिद-ए-अक़सा	- दूरवर्ती मस्जिद । येरुशेलम में स्थित पवित्र उपासना स्थल ।
मस्जिद-ए-हराम	- सम्माननीय मस्जिद । ख़ाना का’बा जो मक्का में स्थित है ।
मीकाईल	- एक फ़रिश्ता, जिस का काम प्रायः सांसारिक उन्नति के साधन उपलब्ध करना है ।
मुश्रिक	- शिर्क करने वाला । अल्लाह के अतिरिक्त अन्य को उपास्य मान कर उसे अल्लाह का समकक्ष ठहराने वाला व्यक्ति ।
मुनाफ़िक	- कपटाचारी । वह व्यक्ति जो ईमान लाने का प्रदर्शन तो करे परंतु दिल से उसका अस्वीकार करने वाला हो ।
मुत्तकी	- निष्ठापूर्वक अल्लाह की आज्ञा का पालन करने वाला और हर काम को करते समय अल्लाह का भय मन में रखने वाला व्यक्ति । धर्मपरायण ।

मुबाहल:	- एक दूसरे को शाप देना । इस्लामी धर्मविधान के अनुसार किसी विवादित धार्मिक विषय को अल्लाह पर छोड़ते हुए एक दूसरे को शाप देना कि जो झूठा है उस पर अल्लाह की ला'नत हो ।
मुहाजिर	- स्वदेश को छोड़ कर अन्य स्थान में बसने वाला व्यक्ति । प्रवासी ।
मे'राज	- आध्यात्मिक उत्थान । अल्लाह की ओर हज़रत मुहम्मद सल्ल. की अलौकिक यात्रा जो सशरीर नहीं हुई ।
मोमिन	- अल्लाह, फ़रिश्तों, रसूलों, ईश्वरीय ग्रंथों और पारलौकिक जीवन पर विश्वास करने वाला निष्ठावान् व्यक्ति ।
यहूदी	- हज़रत मूसा अलै. का अनुयायी ।
याजूज-माजूज	- अंत्ययुग में उत्पन्न होने वाली दो महाशक्तियाँ ।
रब्ब	- प्रतिपालक । अल्लाह का गुणवाचक नाम ।
रहमान	- बिन मांगे देने वाला । अल्लाह का एक गुणवाचक नाम ।
रहीम	- बार बार दया करने वाला । अल्लाह एक गुणवाचक नाम ।
रसूल	- अल्लाह का भेजा हुआ अवतार, दूत । (देखें 'नबी' की परिभाषा भी)
रज़ियल्लाहु अन्हु/ अन्हा	- अल्लाह उन पर प्रसन्न हो । हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुरुष सहाबियों के नाम के बाद 'रज़ियल्लाहु अन्हु' और महिला सहाबियों के नाम के बाद 'रज़ियल्लाहु अन्हा' वाक्य प्रयुक्त होता है ।
रहिमहुल्लाहु	- उन पर अल्लाह की कृपा हो । यह वाक्य दिवंगत महापुरुषों के नाम के बाद प्रयुक्त होता है ।
तआला	- सन्यासी । वह ईसाई पुरुष जो सांसारिक सुखों से निवृत्त हो चुका हो ।
राहिब	- अवतारत्व, दूतत्व, पैग़म्बरी ।
रिसालत	- झुकना । नमाज़ में घुटनों पर हाथ रखकर झुकने की अवस्था ।
रुकू	- पवित्र कुर'आन की सूरतों के अंतर्गत आयत समूहों भाग । कुर'आन में कुल 540 रुकू हैं ।
रुकू	- आत्मा ।
रूह	- पवित्रात्मा । ईशवाणी लाने वाला फ़रिश्ता ।
रूह-उल-कुदुस	- ज़िब्रील, जो ईशवाणी लाने वाले फ़रिश्ता हैं ।
रूह-उल-अमीन	- उपवास । इस्लामी धर्म विधान के अनुसार पौ फटने से लेकर सूर्यास्त होने तक बिना खाये-पिये और वासनाओं को त्याग करके प्रार्थनाओं में समय बिताना ।
रोज़:	- अभिशाप, अमंगल कामना ।
ला'नत	-

वसीयत	- इच्छापत्र, मृत्यु-लेख । आदेश ।
वहइ	- अल्लाह की ओर से प्रकाशित होने वाला संदेश या सूक्ष्म इशारा । ईश्वरीय ग्रन्थों का अवतरण वहई के द्वारा होता है । पवित्र कुरआन हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर वहइ के द्वारा ही उतरा है ।
शरीयत	- इस्लामी धर्मविधान ।
शहीद	- साक्षी । अल्लाह के लिए जान देने वाला । हर एक बात का ज्ञान रखने वाला, निरीक्षक । अल्लाह का एक गुणवाचक नाम ।
शिरक	- अल्लाह के बदले दूसरे को उपास्य मानना, किसी को अल्लाह का समकक्ष ठहराना ।
शैतान	- पापों की प्रेरणा देने वाला, अल्लाह से दूर ले जाने वाला ।
सब्त	- शनिवार । यहूदियों के साप्ताहिक उपासना का दिन ।
सजदः	- आज्ञापालन करना । नमाज़ पढ़ते समय धरती पर माथा रखकर उपासना करने की दशा ।
सफ़ा-मरवा	- मक्का में ख़ाना का'बा के पास की दो पहाड़ियाँ । हज्ज और उमरः करते समय इन दो पहाड़ियों के बीच सात चक्कर लगाए जाते हैं ।
सलाम	- शांति और आशीर्वाद सूचक अभिवादन । मुसलमान परस्पर “अस्सलामु अलैकुम” कहकर अभिवादन करते हैं जिसका अर्थ यह है कि तुम पर शांति अवतरित हो ।
सलीब	- सूली, जिस पर लटका कर मृत्युदंड दिया जाता था ।
संगसार	- मृत्युदंड देने की एक विधि, जिसमें अपराधी की पत्थर मार-मार कर हत्या की जाती थी ।
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम	- उनपर अल्लाह की कृपा और शांति अवतरित हो । हज़रत मुहम्मद सल्ल. के लिए मंगलकामना करते हुए आपके नाम के साथ यह वाक्य कहा जाता है ।
सल्वा	- शहद । बटेर प्रजाति की एक पक्षी जो अल्लाह की ओर से बनी इस्राईल को उनके बे-घरबार होने की अवस्था में भोजन के रूप में मिली थी ।
सहाबी	- हज़रत मुहम्मद सल्ल. के वे अनुगामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई ।
साबी	- नक्षत्र पूजक । धर्म का अस्वीकारी ।
सामरी	- बनी इस्राईल को धर्मभ्रष्ट करने वाला एक व्यक्ति जिसे हज़रत मूसा अलै. ने अभिशाप दिया था ।
सिद्दीक़	- अपने कर्म से अपनी बात को सत्य सिद्ध करने वाला । सत्यभाषी ।

सूरः / सूरत	- पवित्र कुरआन का अध्याय । पवित्र कुरआन में 114 अध्याय हैं ।
हज़रत	- श्रद्धेय व्यक्तियों के नाम से पूर्व सम्मानार्थ लगाया जाने वाला शब्द ।
हक्र महर / महर	- स्त्रीधन । वह धन जिसे विवाह के समय पुरुष अपनी पत्नी को देने की प्रतिज्ञा करता है । यह धन स्त्री की निजी सम्पत्ति होती है । पुरुष की आय के अनुरूप हक्र महर तय होता है । निकाह के समय सार्वजनिक रूप से इसकी घोषणा की जाती है ।
हराम	- इस्लामी धर्मशास्त्रानुसार अवैध ।
हलाल	- इस्लामी धर्मशास्त्रानुसार वैध ।
हज्ज	- इस्लाम धर्म का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ और एक विशेष उपासना । जिसे जुल्हज्ज महीना की निश्चित तिथियों में मक्का में जाकर खाना का'बा की परिक्रमा तथा अरफ़ात मैदान आदि स्थानों में उपस्थित होकर पूरा किया जाता है ।
हज्जे अकबर	- मक्का विजय के उपरांत इस्लामी अनुशासन के अधीन होने वाला पहला हज्ज ।
हवारी	- सहायक, साथी । हज़रत ईसा अलै. के साथी ।
हदीस	- हज़रत मुहम्मद सल्ल. की उपदेशावली जिन्हें कुछ वर्षों के पश्चात इकट्ठा करके ग्रंथबद्ध किया गया । इन में से छः विश्वसनीय हदीस ग्रंथों को 'सहा सित्ता' कहा जाता है । इनके अतिरिक्त और भी हदीस के ग्रंथ हैं ।
हिजरत	- देशांतरण । हज़रत मुहम्मद सल्ल. के मक्का से मदीना आ जाने की घटना हिजरत के नाम से ख्यात है ।
हिदायत	- सन्मार्ग प्राप्ति ।

संक्षिप्त रूप

अलै.	-	अलैहिस्सलाम
अलैहा.	-	अलैहस्सलाम
रज़ि.	-	रज़ियल्लाहु अन्हु
रज़ि. अन्हा	-	रज़ियल्लाहु अन्हा
रहि.	-	रहिमहुल्लाहु तआला
सल्ल.	-	सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

विषय सूची

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अ			
अल्लाह तआला			
मनुष्य की प्रकृति में ही अल्लाह के अस्तित्व का प्रमाण है	अल बक्रर:	29	9
	अल आ'राफ़	173	305
	लुक़मान	33	788
अल्लाह के चार प्रमुख गुणवाचक नाम : रब्बुल आलमीन (समस्त लोकों का रब्ब), अर-रहमान (बिन माँगे देने वाला), अर-रहीम (बार-बार दया करने वाला), मालिके यौमिद्दीन (कर्मफल दिवस का स्वामी)	अल फ़ातिह:	2-4	2
अल्लाह एक है	अल बक्रर:	164	42
	आले इम्रान	19	89
	आले इम्रान	63	99
	अल इख़्लास	2	1302
अल्लाह का कोई साझीदार नहीं	अल अन्आम	164	263
	अत तौब:	31	341
	अल फुर्क़ान	3	672
वही आदि, वही अंत, वही प्रकाश्य, वही अप्रकाश्य है	अल हदीद	4	1082
केवल अल्लाह की सत्ता अनश्वर है	अर रहमान	27,28	1062
केवल वही उपासना करने योग्य है	अल फ़ातिह:	5	2
अल्लाह आकाशों और धरती का प्रकाश है	अन नूर	36	661
अल्लाह का साम्राज्य धरती और आकाश पर व्याप्त है	अल बक्रर:	256	72
सभी साम्राज्य उसीके अधीनस्थ हैं	अल मुल्क	2	1144
धरती और आकाश की प्रत्येक वस्तु अल्लाह को सजद: करती है	अर राद	16	450
प्रत्येक वस्तुत पर अल्लाह स्थायी सामर्थ्य रखने वाला है	अल बक्रर:	21	7
अल्लाह अपने निर्णय पर सामर्थ्य रखता है	यूसुफ़	22	424
अल्लाह जो चाहता है करता है	अल हज्ज	15	620

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अल्लाह के “ज़िल मआरिज” (ऊँचाइयों वाला) होने की वास्तविकता	सूर: परिचय		1161
वह धरती और आकाश की सृष्टि से नहीं थकता	अल अहकाफ़	34	992
अल्लाह की कृपा प्रत्येक वस्तु पर छाई है	अल आ'राफ़	157	300
अल्लाह स्वयं अपने रास्तों की ओर मार्गदर्शन करता है	अल अन्कबूत	70	764
अल्लाह की ओर जाने के लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता	अल इन्शिकाक़	7	1235
अल्लाह रसूल चुनता रहता है	अल हज्ज	76	632
अल्लाह और उसके रसूल सदा विजयी होते हैं	अल मुजादल:	22	1096
अल्लाह मोमिनों की अवश्य सहायता करता है	अर रूम	48	775
अल्लाह के रहमान गुणवाचक नाम के संपूर्ण द्योतक हज़रत मुहम्मद सल्ल. हैं	सूर: परिचय		596
सब सुंदर नाम अल्लाह ही के हैं	अल आ'राफ़	181	306
	अल हश्र	25	1105
अल-हय्यु (सदा जीवित रहने वाला), अल-क़य्यूम (स्वयं पतिष्ठित)	अल बकर:	256	72
मलिक (सम्राट), कुदूस (पवित्र), सलाम (सलामती), मु'मिन (शांतिदायक), मुहैमिन (निरीक्षक), अज़ीज़ (पूर्ण प्रभुत्व वाला), जब्बार (बिगड़े काम बनाने वाला) और मुतकब्बिर (महिमावान)	अल हश्र	24	1104
ख़ालिक (सृष्टिकर्ता), बारी (सृष्टि का आरंभ करने वाला), और मुसव्विर (आकृतिदाता)	अल हश्र	25	1105
केवल ब्रह्मांड के सृष्टिकर्ता को ही जोड़े की आवश्यकता नहीं अन्यथा सारी सृष्टि को जोड़े की आवश्यकता है	सूर: परिचय		846
अल्लाह अकेला, उसको किसी की आवश्यकता नहीं, न उसने किसी को जना और न वह जना गया, उसका कोई समकक्ष नहीं	अल इक्ल़ास	2-5	1302
अल्लाह जैसा कोई नहीं	अश शूरा	12	944
अल्लाह के विधान में कोई परिवर्तन नहीं होता	बनी इस्राईल	78	529
	फ़ातिर	44	844

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अल्लाह को आँखें पा नहीं सकतीं, हाँ वह स्वयं आँखों तक पहुँचता है	अल अन्आम	104	248
अल्लाह मनुष्य के प्राणस्नायु से अधिक निकट है	क्राफ़	17	1023
अल्लाह दुआ सुनता है	अल बक्रर:	187	49
ज्ञान के बल पर अल्लाह के अंत को नहीं पाया जा सकता	ताहा	111	590
केवल अल्लाह ही अदृश्य ज्ञाता है	अन नम्ल	66	724
वह दृश्य अदृश्य का ज्ञाता है	अल हश्र	23	1104
वह दिल के रहस्यों और धरती और आकाशों के रहस्यों को जानता है	आले इम्रान	30	92
उससे कण भर कोई वस्तु छुपी नहीं रहती	यूनस	62	381
जीवन और मरण केवल अल्लाह के अधीन है	अल हिज्र	24	475
समग्र सृष्टि को अल्लाह ही जीविका प्रदान करता है	अल अन्कबूत	61	762
मनुष्य के बदले नई सृष्टि लाने पर अल्लाह समर्थ है	इब्राहीम	20	464
अल्लाह की विवेकशीलता और कुदरत कोई लिपिबद्ध नहीं कर सकता	सूर: परिचय		780
अल्लाह प्रत्येक दोष से पवित्र है	अल बक्रर:	31	10
	अल बक्रर:	33	10
	बनी इस्राईल	44	523
अल्लाह संतान (की आवश्यकता) से पवित्र है	अल बक्रर:	117	31
	अन निसा	172	182
	अल अन्आम	101	247
अल्लाह प्रजनन व्यवस्था से पूर्णतः पवित्र है	सूर: परिचय		536
उसकी न कोई पत्नी है न कोई पुत्र	अल जिन्न	4	1175
अल्लाह तआला न भटकता है न भूलता है	ताहा	53	581
अल्लाह को न ऊँघ आती है न नींद	अल बक्रर:	256	72
अल्लाह थकान से पवित्र है	अल बक्रर:	256	73
	क्राफ़	39	1025
अल्लाह को भोजन की आवश्यकता नहीं	अल अन्आम	15	227
अनेकेश्वरवाद			
(अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्यों का खंडन)			
अल्लाह का साझीदार ठहराने वालों को वह कदापि क्षमा नहीं करता	अन निसा	49, 117	149,168

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अल्लाह के सिवा जिनकी उपासना की जाती है वे कुछ पैदा नहीं कर सकते बल्कि स्वयं पैदा किए गए हैं और वे मुर्दे हैं	अन नहल अल फुर्कान	21,22 4	491 672
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य कहीं से कोई जीविका प्रदान करने की शक्ति नहीं रखते	अन नहल अल अन्कबूत	74 18	500 754
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य और उनके उपासक नरक के ईंधन हैं	अल अम्बिया	99	611
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्यों के बारे में कोई भी तर्क नहीं है	अल हज्ज	72	631
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य एक मकड़ी तक पैदा नहीं कर सकते बल्कि मकड़ी से भी अधिक असहाय हैं	अल हज्ज सूर: परिचय	74	631 616
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य मकड़ी के जाले के समान कमज़ोर हैं	अल अन्कबूत	42	758,759
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य किसी चीज़ के भी स्वामी नहीं	सबा	23	825,826
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य अल्लाह के इरादे को बदल नहीं सकते	अज़ जुमर	39	898
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य क़यामत तक किसी बात का उत्तर नहीं दे सकते	अल अहक्राफ़ अर राद	6 15	985 450
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य स्वयं अपनी सहायता करने भी में समर्थ नहीं	अल अम्बिया	44	603
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य वस्तुतः कुछ काल्पनिक नाम हैं	यूसुफ़	41	429
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य किसी का कष्ट निवारण नहीं कर सकते	बनी इस्राईल	57	525
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य मिथ्या के सिवा कुछ नहीं	अल हज्ज लुक़मान	63 31	629 787
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य खज़ूर की गुठली की झिल्ली के भी स्वामी नहीं	फ़ातिर	14	838
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य किसी बात का निर्णय नहीं कर सकते	अल मु'मिन	21	912
अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य क़यामत के दिन	अल मु'मिन	74,75	922

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अपने उपासकों से खो जाएँगे अल्लाह के सिवा दूसरे उपास्य किसी लाभ-हानि पहुँचाने की शक्ति नहीं रखते	अल माइदः अल अन्आम यूनुस	77 72 19	209 240 372
अर्श			
अर्श पर स्थित होने का अर्थ फ़रिश्ते उसके अर्श के वातावरण को घेरे हुए हैं क़यामत के दिन आठ फ़रिश्तों ने अर्श को उठाया हुआ होगा	अल हदीद अज़ जुमर अल हाक्कः	5 76 18	1082 906 1157
पानी पर अर्श स्थित होने से तात्पर्य हज़रत मुहम्मद सल्ल. का निर्मल हृदय अल्लाह का वास स्थान है फ़रिश्तों का अर्श को उठाने का तात्पर्य	हूद सूरः परिचय टीका	8 टीका	395 907 907
अदृश्य विषय (ग़ैब)			
अल्लाह अपने रसूलों पर ही अदृश्य विषय प्रकट करता है ब्रह्माण्ड के गुप्त रहस्यों पर से सर्वज्ञ अल्लाह ही पर्दा उठा सकता है अतीत के बारे में जानकारी	आले इम्रान अल ज़िन्न सूरः परिचय सूरः परिचय	180 27,28	126 1178 445 419
अवतरण (नुज़ूल)			
‘नुज़ूल’ शब्द का जो अनुवाद लोग करते हैं उसकी दृष्टि से यह मानना पड़ेगा कि लोहा आकाश से बरसा है लोहा का उतारा जाना क़ुरआन का उतारा जाना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक अनुस्मारक और रसूल के रूप में अवतरण मवेशियों का उतारा जाना वस्त्र का अवतरण	सूरः परिचय अल हदीद अद दहर अत तलाक़ अज़ जुमर अल आ'राफ़	 26 24 11,12 7 27	 1088 1199 1134 892 272
अंत्ययुगीन			
अंत्ययुगीनों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आविर्भाव	अल जुमुअः टीका सूरः परिचय	4	1118 1126

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अंत्ययुगीनों के एकत्र होने का दिन खरे-खोटे में प्रभेद करने का दिन होगा	सूर: परिचय		1126
धर्मसेवा के लिए अत्यधिक अर्थदान करने का समय	सूर: परिचय		1126
पीड़ित अहमदियों को आग में जलाये जाने के बारे में भविष्यवाणी	सूर: परिचय		1238
अंत्ययुगीन मुसलमानों की भारी संख्या की मुनाफ़िकों के साथ समानता	सूर: परिचय		1122
परवर्ती काल के मुसलमानों के बारे में भविष्यवाणी कि व्यापार के लिए वे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अकेला छोड़ देंगे	सूर: परिचय		1117
अहले किताब			
अहले किताब को ईमान लाने का निर्देश	अन् निसा	48	149
अल्लाह और उसके रसूल तथा उसकी शिक्षाओं पर कई अहले किताब का ईमान लाना	आले इम्रान	200	131
कई अहले किताब का रात्रि के समय उपासना करना	आले इम्रान	114	111
कई अहले किताब का पुण्यकर्म करना	आले इम्रान	115	111
कई अहले किताब का अमानतदार होना और कइयों का बेईमान होना	आले इम्रान	76	102
अहले किताब से दृढ़ वचन लिया गया है कि अपनी पुस्तकों की सच्चाइयों को न छुपायें	आले इम्रान	188	128
अहले किताब के प्रत्येक संप्रदाय में से कुछ लोग मसीह की मृत्यु से पूर्व उन पर अवश्य ईमान लायेंगे	अन निसा	160	179
अहले किताब को साँझा सिद्धांत पर सहमत होने का आह्वान	आले इम्रान	65	100
अहले किताब पर कुरआन अवतरण के प्रभाव	अल् बय्यिन:	2-6	1278
अहले किताब की तुलना में यह नबी और इसके अनुयायी इब्राहीम अलै. के अधिक निकट हैं	आले इम्रान	69	101
नबियों से अहले किताब की अनुचित माँगें	अन निसा	154	177
अहले किताब का ऐसी कुर्बानी का चिह्न माँगना जिसे आग खा जाये	आले इम्रान	184	127
अहले किताब का कर्म और विश्वास			
अहले किताब का धर्म में अतिशयोक्ति और भूल विश्वास	अन निसा	172	182

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
सत्य को मिथ्या के साथ मिलाकर सत्य को छिपाना	आले इम्रान	72	101
अल्लाह के चिह्नों का इनकार	आले इम्रान	71	101
अहले किताब के बड़े अपराध	अन निसा	156-158	177,178
अहले किताब का इस्लाम के विरुद्ध षड्यंत्र			
मुसलमानों को कोई भलाई मिलने को अप्रिय जानना	अल बक्रर:	106	28
लोगों को इस्लाम स्वीकार करने से रोकना	आले इम्रान	100	108
मुसलमानों को पथभ्रष्ट और विधर्मी बनाने का षड्यंत्र	अल बक्रर:	110	29
	आले इम्रान	70	101
	आले इम्रान	71	101
अहले किताब के साथ व्यवहार			
अहले किताब की महिलाओं से विवाह करने की अनुमति	अल माइद:	6	189
अहले किताब के हाथ का पका हुआ भोजन खाने की अनुमति	अल माइद:	6	189
गैर मुस्लिम प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ सद्व्यवहार की शिक्षा	अल मुम्तहिन:	9 टीका	1109
अर्थ-व्यवस्था			
तुम्हारे धन में माँगने वालों और न माँगने वाले ज़रूरतमंदों का भी हक़ है	अज़ ज़ारियात	20	1030
धन केवल धनिकों के बीच चक्कर न खाता रहे	अल हश्र	8	1100
ब्याज लेने से बचने की शिक्षा	अल बक्रर:	279	80
	अर रूम	40	774
	आले इम्रान	131	115
जुआ, मूर्तिपूजा और तीर चलाकर भाग्य जानने की मनाही	अल माइद:	91	213
व्यापार के द्वारा लाभ कमाना उचित है	अन निसा	30	143
वर्तमान कालीन व्यापार का विश्लेषण	सूर: परिचय		1230
खर्च करने में मध्यमार्ग अपनाने की शिक्षा	अल फुर्कानि	68	682
धन के प्रति लालायित लोगों के लिये चेतावनी	सूर: परिचय		1291
दूसरों की धन-संपत्ति को हथियाने के लिये अधिकारियों को रिश्वत देने की मनाही	अल बक्रर:	189	50

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अहंकार			
अहंकारी स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगा	अल आ'राफ़	41	275
इब्लीस अहंकार के कारण आदम के लिए सजदः नहीं किया	अल बक्ररः साद	35 75	10 887
अहंकार के कारण नबियों का इनकार किया जाता है	अल आ'राफ़	37	274
अहंकार के कारण बनी इस्राईल ने नबियों का इनकार किया	अल बक्ररः	88	23
फ़िरऔन का अहंकार	अल क़सस	40	739
अहंकारियों का ठिकाना नरक है	अन नहल अज़ जुमर	30 73	492 905
अहंकारियों के दिलों पर अल्लाह की मुहर	अल मु'मिन	36	916
अनाथ			
अनाथ पर सख्ती न की जाये	अज़ जुहा	10	1265
निकट-सम्पर्कीय अनाथ की विशेष रूप से ख़बरगीरी करने का आदेश	अल बलद	15,16	1257
अनाथ स्त्रियों से विवाह	अन निसा	4	133
अनाथों के अधिकार और संपत्तियों को वापस करें	अन निसा	3 4	133
अमानत और ईमानदारी			
अमानत को उसके हक़दार के सुपुर्द करना चाहिए	अल बक्ररः अन निसा	284 59	83 151
मोमिन अपनी अमानतों का ध्यान रखते हैं	अल मआरिज अल मु'मिनून	33 9	1165 636
अल्लाह ख़यानत करने वालों से प्रेम नहीं करता	अल अन्फ़ाल अन निसा	59 108	327 166
माप-तौल सही होना चाहिए	बनी इस्राईल	36	522
लोगों को उनके प्राप्य से कम चीज़ें न दिया करो	अश शुअरा	184	703
अनाथों के अच्छे धन को निकृष्ट धन से न बदलो	अन निसा	3	133
परस्पर धोखाधड़ी करके एक दूसरे के धन को न खाओ	अल बक्ररः	189	50
आ			
आज्ञाकारिता			
अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञाकारिता	अल अन्फ़ाल	47	325
रसूल इस उद्देश्य से भेजे जाते हैं कि अल्लाह के	अन् निसा	65	153

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
आदेशानुसार उनकी आज्ञा का पालन किया जाये			
हज़रत मुहम्मद सल्ल. का आज्ञापालन वास्तव में	अन् निसा	81	157
अल्लाह की आज्ञा का पालन करना है			
हज़रत मुहम्मद सल्ल. का आज्ञापालन करना	आले इम्रान	32	92
अल्लाह के प्रेमपात्र बनने का माध्यम है			
रसूल का आज्ञापालन हिदायत पाने का माध्यम है	अन नूर	55	665
अल्लाह और इस रसूल के आज्ञापालन के फलस्वरूप	अन निसा	70	154
सालेह (सदाचारी), शहीद और सिद्दीक़ (सत्यनिष्ठ)			
यहाँ तक कि नबी की उपाधि भी मिल सकती है			
अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करने वाले ही	अन नूर	53	665
सफलता प्राप्त करेंगे			
अल्लाह और रसूल के आज्ञापालन के फलस्वरूप	अन निसा	14,15	137,138
परकालीन पुरस्कार, और अवज्ञा करने के			
फलस्वरूप दंड मिलेगा			
अल्लाह और रसूल के आज्ञापालन के पश्चात्	अन निसा	60	151
शासकों का आज्ञापालन			
आत्मा (रूह)			
आत्मा संचार अल्लाह के आदेश से होता है	बनी इस्राईल	86	530
आत्मा के बारे में मनुष्य का ज्ञान बहुत कम है	बनी इस्राईल	86	530
आत्मा ईश्वरादेश के सिवा कुछ नहीं	सूर: परिचय		514
आत्मा (वाणी) संचार	अल हिज़्र	30	476
	साद	73	887
लैलतुल क़द्र में रूह-उल-कुदुस (पवित्र आत्मा)	अल क़द्र	5	1276
का अवतरण			
रूह-उल-अमीन/रूह-उल-कुदुस ने कुरआन	अन नह्ल	103	506
करीम को हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व	अश शुअरा	194	704
सल्लम के दिल पर उतारा है			
रूह-उल-कुदुस के द्वारा मरियम के पुत्र मसीह का	अल बक्र:	88, 254	23, 72
समर्थन	अल माइद:	111	219
रूह-उल-कुदुस के द्वारा सहाबा का समर्थन	टीका		1097
अपनी जान को मारने का अभिप्राय	अल बक्र:	55	14
मनुष्य-आत्मा की तीन अवस्था :-			
नफ़से अम्मारा (पाप की ओर प्रवृत्त आत्मा)	यूसुफ़	54	433

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
नफ़से लव्वामा (कुकर्म पर स्वयं को धिक्कारने वाली आत्मा)	अल क्रियामः	3	1192
नफ़से मुत्मइन्ना (अल्लाह से संतुष्ट आत्मा)	अल फ़ज़्र	28-31 टीका	1254
आत्मा की शुद्धि के फलस्वरूप सफलता प्राप्ति	अश शम्स	10,11	1259
आरोप			
बैअत के समय महिलायें प्रतिज्ञा करें कि वे मिथ्यारोप नहीं लगायेंगी	अल मुस्तहिनः	13	1111
सतवंती स्त्रियों पर मिथ्यारोपण करने वाला यदि चार साक्ष्य प्रस्तुत न कर सके तो उसका दंड अस्सी कोड़े हैं	अन नूर	5	653
मिथ्यारोप लगाने वालों के लिए इहलोक और परलोक में ला'नत और अज़ाब है	अन नूर	24	657
हज़रत मरियम पर यहूदियों का आरोप	अन निसा	157	178
आवागमन			
अनस्तित्व से अस्तित्व में आना	सूरः परिचय		446
मनुष्य अपने जन्म से पूर्व कुछ भी न था	अद दहर	2	1197
	मरियम	10	562
	मरियम	68	570
आचरण			
हज़रत मुहम्मद सल्ल. सर्वोत्तम आचरण के धनी थे	अल क़लम	5	1150
हज़रत मुहम्मद सल्ल. अपने अनुयायियों के लिए उत्तम आदर्श हैं	अल अहज़ाब	22	804
इ			
इज़ज़त वाले महीने			
अल्लाह के निकट इज़ज़त वाले महीने चार हैं	अत तौबः	36	342
सम्माननीय महीनों का अपमान न करो	अल माइदः	3	187
इज़ज़त वाले महीनों में युद्ध करना घोर अपराध है	अल बक्करः	218	57, 58
इज़ज़त वाले महीनों में प्रतिरक्षात्मक युद्ध की अनुमति	अल बक्करः	195	51
इस्लाम			
इस्लाम की वास्तविकता	अल बक्करः	113	30
	अल अन्'आम	163,164	263

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अल्लाह के निकट वास्तविक धर्म इस्लाम ही है	आले इम्रान	20	89
अब इस्लाम ही स्वीकार्य धर्म है	आले इम्रान	86	105
इस्लाम से बेहतर और कोई धर्म नहीं	अन निसा	126	169
शरीअत (धर्म-विधान) की पूर्णता	सूर: परिचय		3
अल्लाह जिस को हिदायत देना चाहता है उसे इस्लाम	अल अन्आम	126	253
स्वीकार करने के लिए हार्दिक संतुष्टि प्रदान करता है			
इस्लाम धर्म चिरकाल तक जीवित रहेगा और मानव	सूर: परिचय		1277
समाज को सीधे रास्ते पर स्थित करता रहेगा			
जिसने इस्लाम (अर्थात् आज्ञाकारिता) स्वीकार	आले इम्रान	21	90
किया वही हिदायत पाने का हकदार है	अल जिनन	15	1177
इस्लाम स्वीकार करना वास्तव में एक सशक्त कड़े	लुकमान	23	786
को पकड़ना है			
जो इस्लाम स्वीकार करता है वह अल्लाह की ओर	अज़ जुमर	23	896
से प्रकाश पर स्थित होता है			
इस्लाम स्वीकार करने की अवस्था में मरने का अर्थ	आले इम्रान	103	109
इस्लाम में पूर्ण रूप से प्रवेश करने का आदेश	अल बकर:	209	55
इस्लाम में प्रवेश करना वास्तव में स्वयं का उपकार	अल हुजुरात	18	1019
करना है			
पूर्ववर्ती नबियों का भी धर्म इस्लाम ही था	अश शूरा	14	945
इस्लाम की विशेषता			
इस्लाम एक संपूर्ण धर्म है	अल माइद:	4	188
इस्लाम विश्वव्यापी धर्म है	अल आ'राफ़	159	301
	सबा	29	827
	टीका		661
इस्लाम जाति और वर्ण भेद को समाप्त करता है	अल हुजुरात	14	1018
इस्लाम में खिलाफ़त का वादा	अन नूर	56	666
इस्लाम में विचार-विमर्श व्यवस्था	अश शूरा	39	951
	आले इम्रान	160	122
नेकी और तक्वा में सहयोग करना चाहिए	अल माइद:	3	187
सुंदरता और पवित्रता हराम नहीं	अल आ'राफ़	33	273
इस्लाम के मौलिक विश्वास			
इस्लाम के मौलिक विश्वासों का उल्लेख सूर: अल	सूर: परिचय		3
बकर: में है			

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अल्लाह, फ़रिश्ते, सब नबियों और समस्त पुस्तकों पर विश्वास करना	अल बक्रः	286	84
परलोक पर विश्वास	अल बक्रः	5	4
प्रत्येक देश और जाति में अल्लाह के रसूल आये हैं	यूनुस	48	379
	फ़ातिर	25	839
धर्म के मामले में जबरदस्ती करना अनुचित है	अल बक्रः	257	73
	अल आ'राफ़	89	287
	यूनुस	100	389
	हूद	29	399
	अल कहफ़	30	544
शत्रु से भी न्याय करने की शिक्षा	अल माइदः	9	191
दूसरे धर्मानुयायियों से न्याय करने की शिक्षा	अल अन्आम	109	249
शांतिप्रिय ग़ैर मुस्लिमों से न्याय करने की शिक्षा	अल मुम्तहिनः	9	1109
अन्यायपूर्ण युद्धों का उन्मूलन	अल मुम्तहिनः	9	1109
'मुसलमान' नाम स्वयं अल्लाह ने रखा है	अल हज्ज	79	632
'मुस्लिम' शब्द पर किसी का एकाधिकार नहीं	टीका		633
तुम्हें सलाम कहने वाले को काफ़िर न कहो	अन निसा	95	162
कोई जान किसी और का बोझ नहीं उठायेगी	अल अन्आम	165	263
जो निष्ठापूर्वक अल्लाह को ढूँढ़ेंगे चाहे वे किसी भी धर्म के अनुयायी हों अंततोगत्वा अल्लाह उनका इस्लाम और सन्मार्ग की ओर मार्गदर्शन करेगा	सूरः परिचय		750
यदि मुश्रिक शरण माँगे तो उसे शरण दी जाये	अत तौबः	6	335
जातियों में मतभेद होने की स्थिति में उनमें संधि कराने की व्यवस्था	सूरः परिचय		1013
अपनी सुरक्षा करने का निर्देश	अन निसा	72	155
मोमिनों को छोड़कर काफ़िरों को मित्र बनाना उचित नहीं	अन निसा	145	175
अल्लाह की आयतों के साथ उपहास करने वालों के साथ न बैठो	अन निसा	141	173
इस्लामी शिक्षा की विशेषता कि जीविका केवल	अल अन्आम	69	238
हलाल ही नहीं अपितु पवित्र भी होनी चाहिए	अल बक्रः	169	44
युद्ध-लब्ध धन का वैधीकरण	अल माइदः	89	212
अनुचित प्रश्न नहीं करना चाहिए	अल अन्फ़ाल	70	330
	अल माइदः	102	216

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
इस्लाम की विश्वविजय	अत तौबः	33	341
	अर राद	42	457
	अल फ़त्ह	29	1011
	अस सफ़्फ़	10	1114
इस्लाम के विरुद्ध युद्ध के उन्माद भड़काने वालों के हाथ काटे जाएंगे	सूरः परिचय		1301
इस्लाम या मक्का का अपमान अथवा विनाश का इरादा रखने वालों का अंत “अस्हाब-उल-फ़ील” की भाँति होगा	सूरः परिचय		1293
इस्लाम ने उन्नति करनी है, इसलिए शत्रु का उससे ईर्ष्या करना स्वभाविक है	सूरः परिचय		1303
भविष्य में इस्लामी विजय का क्रम अन्तहीन होगा	सूरः परिचय		1300
इस्लाम एक मध्यमार्गी धर्म है	अल बक्ररः	144	38
इस्लाम सहज धर्म है	अल् बक्ररः	186	48
	अल माइदः	7	190
	अल हज्ज	79	632
इस्लाम अल्लाह तक पहुँचने का सीधा रास्ता है	अल अन्आम	154	261
अंत्ययुगीनों के समय इस्लाम की अवस्था			
पुनर्वार इस्लाम के सूर्योदय की भविष्यवाणी	सूरः परिचय		1258
इस्लाम के पूर्ववर्ती युग और उत्तरवर्ती युग में कुर्बानियाँ करने वालों की तुलना	सूरः परिचय		1069
ई			
ईर्ष्या	अल फ़लक़	6	1304
	अन निसा	55	150
	अल बक्ररः	110	29
ईसाई मत			
ईसाइयों के कई समूहों में बँटने की भविष्यवाणी	सूरः परिचय		185
हवारियों का नेमतों का थाल माँगना	अल माइदः	113	220
माइदः (भोज्य वस्तुओं का थाल) की वास्तविकता	सूरः परिचय		185
हज़रत मूसा अलै. और हज़रत ईसा अलै. की आध्यात्मिक यात्रा	सूरः परिचय		536
आरंभिक ईसाई एकेश्वरवाद की सुरक्षा के लिए जनपदों को छोड़कर गुफाओं में चले गये	सूरः परिचय		536

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
मसीह अलै. के जीवन काल में ईसाई नहीं बिगड़े	अल माइदः	118 टीका	222
ईसाइयों का कुत्तों से प्रेम करने का कारण	अल कहफ़	23 टीका	543
ईसाइयों का दावा कि उनके सिवा कोई स्वर्ग में नहीं जाएगा	अल बक्रः	112	30
यहूदी और ईसाई मत की सामुहिक चेष्टाओं का सार	सूरः परिचय		1305
ईसाई मत का पतन	सूरः परिचय		1302
ईसाइयों के उत्थान और पतन के कारण	सूरः परिचय		537
वस्तुतः आज काल्पनिक saints को ईश्वरत्व का दर्जा दिया जाता है	सूरः परिचय		537
मसीह का ईश्वरत्व	अल माइदः	73-77	208-210
	अल माइदः	117	221
	अल माइदः	74	209
मसीह को ईशपुत्र मानना	अत तौबः	30,31	341
ईसाई अपनी शिक्षाओं का एक भाग भूल गये	अल माइदः	15	192
इनकी यहूदियों के साथ शत्रुता क्रियामत तक रहेगी	अल माइदः	15	192
कई ईसाइयों का सच्चाई को पहचानना	अल माइदः	84	212
मोमिनों से प्रेम करने में ईसाई अधिक निकट	अल माइदः	83	211
इंजील के अनुयायी इंजील के अनुसार निर्णय करें	अल माइदः	48	202
सूरः अल इख़लास में ईसाई मत की भूल आस्थाओं का खंडन	सूरः परिचय		1302
उ			
उत्तराधिकार (विरासत)			
उत्तराधिकार बंटन के नियम अल्लाह की ओर से निश्चित किये गये हैं	अन निसा	8	135
उत्तराधिकार में पुरुष और स्त्री दोनों शामिल हैं	अन निसा	8	135
महिलाओं से जबरदस्ती उत्तराधिकार छीनने की मनाही	अन निसा	20	139
मृत्यु के समय माता-पिता और सगे संबंधियों के लिए विशेष वसीयत	अल बक्रः	181	47
किसी की वसीयत में परिवर्तन करना पाप है	अल बक्रः	182	47
वसीयत करने वाले की भूल को सुधारना उचित है	अल बक्रः	183	47
मृतक की वसीयत उसके ऋण चुकाने के बाद बाँटी जाएगी	अन निसा	12,13	136,137

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
उत्तराधिकार-बंटन के समय गरीबों, सगे-संबंधियों, अनाथों और दीन हीनों को भी कुछ देने का निर्देश	अन निसा	9	135
उत्तराधिकार बंटन का विवरण	अन निसा	12,13	136,137
	अन निसा	177	183
उपहास			
किसी जाति या व्यक्ति का उपहास मत करो	अल हुजुरात	12	1017
दूसरों के बुरे नाम रखना	अल हुजुरात	12	1017
चाटुकारिता	अल कलम	10	1150
उम्मत			
(किसी धर्मानुयायियों का समूह, समुदाय, संप्रदाय)			
पहले लोग एक ही संप्रदाय के रूप में थे	अल बक्रर:	214	56
	यूनुस	20	372
यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को एक ही समुदाय बना देता	अल माइद:	49	202
प्रत्येक समुदाय के लिए एक समय निर्धारित है	अल आ'राफ़	35	274
प्रत्येक संप्रदाय का निर्णय उसकी अपनी पुस्तक	अल जासिय:	29	982
अर्थात् धर्म विधान के अनुसार किया जाएगा			
इब्राहीम अलै. अपने आप में एक समुदाय स्वरूप थे	अन नहल	121	509
प्रत्येक संप्रदाय में अल्लाह के रसूल आये हैं	यूनुस	48	379
प्रत्येक समुदाय में सतर्ककारी आये हैं	फ़ातिर	25	839
उम्मत-ए-मुहम्मदिय्या			
उम्मतों में सर्वश्रेष्ठ उम्मत	आले इम्रान	111	110
मध्यमार्गी संप्रदाय अर्थात् सर्वश्रेष्ठ उम्मत	अल बक्रर:	144	38
उम्मते मुहम्मदिय्या पर अल्लाह की बड़ी अनुकंपा	आले इम्रान	104	109
उम्मत में वहइ और ईशवाणी सदा जारी रहेंगी	हामीम अस सज्द:	31,32	933
अल्लाह और हज़रत मुहम्मद सल्ल.के आज्ञापालन	अन निसा	70	154
करने के फलस्वरूप अल्लाह के द्वारा पुरस्कृत लोगों			
की चार उपाधि			
उम्मते मुहम्मदिय्या के लिए खुशखबरी कि	सूर: परिचय		1143
आध्यात्मिक मुर्दे पुन: जीवित किये जाएंगे			
उम्मते मुहम्मदिय्या में नुबुव्वत का वरदान	आले इम्रान	180	126
	अन निसा	70	154
	अल आ'राफ़	36	274

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद आप के सत्यापक के आने की भविष्यवाणी	अल जिन्न	8	1175
	हूद	18	397
	अल बुरूज	4	1239
	सूर: परिचय		1238
	अन नूर	56-58	666-667
	अल जुमुअ:	4	1118
	टीका		1119
	अस सफ़्फ़	7	1114
	अज़ जुख़रूफ़	58	964
	आले इम्रान	104	109
	अल अहज़ाब	70	816
	सूरा परिचय		185
	अल बक्रर:	109	29
	अल माइद:	102	216
	अल अहक्राफ़	31	992
उम्मत मुहम्मदिय्या के लिए ख़िलाफ़त का वादा हज़रत मुहम्मद सल्ल. के पुनरागमन अर्थात प्रतिश्रुत महदी के आने की सूचना उम्मत मुहम्मदिय्या में मरियम के पुत्र ईसा के प्रतिरूप के आगमन पर शोर उठना उम्मत मुहम्मदिय्या को विभेदायन से बचने का आदेश उन लोगों की भाँति न बनो जिन्होंने मूसा अलै. को कष्ट दिया यहूदियों और ईसाइयों की प्रतिज्ञा भंग करने जैसी त्रुटियों के बारे में उम्मत मुहम्मदिय्या को चेतावनी उम्मत को अत्यधिक प्रश्न करने की मनाही जिन्नों का ईमान लाना अल्लाह की ओर आह्वान करने का निर्देश उम्मत पर विपत्तियों का आना ज़रूरी है	आले इम्रान	105	109
	अल अन्कबूत	3	751
अल्लाह की ओर आह्वान करने का निर्देश उम्मत पर विपत्तियों का आना ज़रूरी है	अल बक्रर:	279	80
	अल बक्रर:	281	81
	अल बक्रर:	283	82
	अल बक्रर:	283	82
	अल बक्रर:	284	83
अल्लाह एक है उसके सिवा कोई और उपास्य नहीं	अल बक्रर:	164,254	42,72
	आले इम्रान	3,7,	86,86,

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
	आले इम्रान	19,63	89,99
	अन निसा	88,172	159,182
	अल माइदः	74	209
	अल अन्आम	20,103,	228,248,
		107	248
	अल आ'राफ़	60,66,	280,281,
		74,86,	283,285,
		159	301
	अत तौबः	31,129	341,366
	हूद	15,51,	397,404,
		62,85	406,410
	अर राद	31	454
	इब्राहीम	53	470
	अन नहल	3,23,	488,491,
		52	496
	अल कहफ़	111	558
	ताहा	9,15,	576,577,
		99	588
	अल अम्बिया	26,88,	600,609,
		109	613
	अल हज्ज	35	624
	अल मु'मिनून	24,33,	638,640,
		92,117	647,649
	अन नम्ल	27,	716,
		61-65	723-724
	अल क़सस	71,89	744,748
	फ़ातिर	4	835
	साद	66	886
	अज़ जुमर	7	892
	अल मु'मिन	4,63,	909,920,
		66	921
	हामीम अस सज्दः	7	928
	अज़ जुख़रुफ़	85	967

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
<p>अल्लाह के साथ पुत्र जोड़ने वाले भयानक युद्ध का सामना करेंगे</p> <p>अल्लाह के अद्वितीय होने का विषय नबियों पर बारिश के समान उतरता है</p> <p>अल्लाह के सिवा अन्य को उपास्य बनाने वालों और उन के अनुगामियों की मूर्खता</p> <p>अल्लाह के सिवा कोई उपास्य न बन सकने के महान तर्क</p> <p>दो अल्लाह न बन सकने के तर्क</p> <p>ए'तिकाफ़ (एकांत उपासना)</p> <p>क</p> <p>कंजूसी</p> <p>क़ब्र</p> <p>आयत : “फिर उसे मारा और क़ब्र में प्रविष्ट किया” का अर्थ</p> <p>अंत्ययुग में क़ब्रें उखेड़ी जाएंगी</p> <p>क़ब्रों में गड़े रहस्य मालूम किये जाएँगे</p> <p>आयत : “यहाँ तक की तुम ने क़ब्रगाहों का भी परिभ्रमण किया” की व्याख्या</p> <p>क़यामत</p> <p>क़यामत के आने में कोई सन्देह नहीं</p>	अद दुखान	9	970
	मुहम्मद	20	999
	अत तूर	44	1041
	अल हश्र	23,24	1104
	अत तगाबुन	14	1129
	अल मुज़्ज़म्मिल	10	1181
	अन नास	2-4	1306
	सूर: परिचय		560
	सूर: परिचय		709
	अल अन्कबूत	42	758
	अल अम्बिया	23	599
	सूर: परिचय		595
	अल बक्कर:	188	49
	अन निसा	38	146
	अल हदीद	25	1087
	अल हश्र	10	1101
	अत तगाबुन	17	1130
	मुहम्मद	39	1002
	अ ब स	22	1220
	अल इन्फितार	5	1228
	सूर: परिचय		1227
	अल आदियात	10	1283
	सूर: परिचय		1288
	अन निसा	88	159

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
क्रयामत में समस्त मानव जगत को इकट्ठा किया जाएगा	अन निसा	88	159
क्रयामत के दिन लोगों की पृथक-पृथक पेशी होगी	अल अन्आम	129	253
	अल अन्आम	95	245
	मरियम	96	573
क्रयामत के भिन्न-भिन्न प्रकटन	सूर: परिचय		267
क्रयामत के इनकार का कारण	सूर: परिचय		1190
क्रिब्ला			
क्रिब्ला बदलने का आदेश	अल बक्रर:	143	38
कुरआन			
महान रात्रि में कुरआन का अवतरण	अल कद्र	2	1276
	सूर: परिचय		1275
रूह-उल-अमीन ने इसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिल पर उतारा है	अश शुअरा	194	704
अल्लाह की ओर से कुरआन की शब्द-सुरक्षा और अर्थ-सुरक्षा का वादा	अन नह्ल	103	506
	अल हिज़्र	10	474
कुरआन सुरक्षित पट्टिका में है	अल बुरूज	23	1241
कुरआन सम्माननीय और पवित्र पृष्ठों में लिखित है	अ ब स	14,15	1220
उन में कायम रहने वाली और कायम रखने वाली शिक्षाएँ हैं	अल बय्यिन:	4	1278
पूर्वकालीन धर्मग्रंथों की उत्कृष्ट शिक्षा इस में संकलित है	अल आ'ला	19,20	1247
कुरआन एक छुपी हुई पुस्तक में है	अल वाक्रिअ:	79	1077
कुरआन एक लिखी हुई पुस्तक है	अत तूर	3	1037
कुरआन सत्यासत्य में प्रभेदक है	अल फुर्कान	2	672
कुरआन मंगलमय अनुस्मारक-ग्रंथ है	अल अम्बिया	51	604
कुरआन के अर्थ और अभिप्राय समय की आवश्यकतानुसार उतरते रहते हैं	अल हिज़्र	22	475
कुरआन के गूढ़ार्थ उन्हीं पर खुलते हैं जिन को अल्लाह ने पवित्र ठहराया है	अल वाक्रिअ:	80	1077
कुरआन ऐसे लोगों के हाथ में है जो सम्माननीय और नेक हैं	अ ब स	16,17	1220
कोई बात कुरआन से बाहर नहीं रखी गई	अल अन्आम	39	232
कुरआन अपने अर्थों को खूब स्पष्ट करने वाला है	अज़ जुख़रुफ़	4	957

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
कुरआन का एक बिंदु भी निरसित नहीं है	अल बकर:	107	28
कुरआन में निश्चायक और अनेकार्थक आयतें हैं	आले इम्रान	8	87,88
कुरआन करीम में कोई विभेद नहीं	अन निसा	83	158
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कहना कि सूर: हूद ने मुझे बूढ़ा बना दिया	सूर: परिचय		392
कुरआन की सर्वोत्तम कहानी हज़रत मुहम्मद सल्ल. की हार्दिक प्रसन्नता का कारण है	सूर: परिचय		419
सूर: अल जुमुअ: में एकत्रिकरण के सभी अर्थों का वर्णन	सूर: परिचय		1117
सूर: अल फ़ज्र में तेरह वर्षीय आरंभिक मक्की दौर की ओर संकेत है	सूर: परिचय		1251
कुरआन के आध्यात्मिक खज़ानों के सदृश मनुष्य जीवन के लिए आवश्यक भौतिक खज़ाने भी अंतहीन हैं	सूर: परिचय		471
कुरआन के धर्म-विधान की परिधि से बाहर निकलने का परिणाम	सूर: परिचय		266
कुरआन बनी इस्राईल के पारस्परिक विवादित बातों के बारे में उचित मार्गदर्शन करता है	अन नम्ल	77	725
‘अहले कुरआन’ संप्रदाय का खंडन	अन निसा	151	176
कुरआन की सुरक्षा		टीका	
कुरआन की सुरक्षा के बारे में अल्लाह तआला का दृढ़वचन	सूर: परिचय		471
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दासों में से ऐसे लोग होते रहेंगे जो कुरआन की सुरक्षा के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे	सूर: परिचय		671
कुरआन की सुरक्षा का एक पक्ष			
एक निरक्षर व्यक्ति पर तेईस वर्षों में उतरने वाला कुरआन सुरक्षा पूर्वक इकट्ठा किया गया	सूर: परिचय		1191
कुरआन का धीरे-धीरे उतरना एक महानतम चमत्कार है	सूर: परिचय		671
कुरआन की भाषाशैली			
कुरआन सरल और शुद्धभाषा संपन्न होकर उतरा है	सूर: परिचय		926

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
कुरआन की काव्यशिष्टता से प्रभावित होकर अनेक कविओं ने काव्यरचना छोड़ दी	सूर: परिचय अर राद सूर: परिचय	38	1027 456 686
कुरआन पाठ की विधि			
कुरआन पाठ करने से पूर्व अल्लाह की शरण माँगना	अन नह्ल	99	506
कुरआन चुपचाप सुनना चाहिए	अल आ'राफ़	205	311
कुरआन को पवित्र होकर छूना चाहिए	अल वाकिअ:	80	1077
प्रातःकाल कुरआन पाठ का विशेष महत्व है	बनी इस्राईल	79	529
एक समय मुसलमानों का कुरआन को छोड़ देने की भविष्यवाणी	अल फुर्कान	31	677
कुरआन के उदाहरण			
मच्छर का उदाहरण देने की वास्तविकता	अल बक्रर:	27	8
मुनाफ़िकों का उदाहरण	अल बक्रर:	18	6
इस्लाम और अन्य धर्मों का उदाहरण	इब्राहीम	25-27	465
मुश्रिक और मोमिन का उदाहरण	अन नह्ल	76	501
	अज़ जुमर	30	897
मरियम और फ़िरऔन की पत्नी के साथ मोमिनों का उदाहरण	अत तहरीम	12,13	1141
नूह और लूत की पत्नियों के साथ काफ़िरों का उदाहरण	अत तहरीम	11	1141
मरियम-पुत्र के पुनरागमन का उदाहरण	अज़ जुख़रुफ़	58	964
झूठे उपास्यों का उदाहरण	अल हज्ज	74	631
सत्य और असत्य का उदाहरण	अर राद	18	451
दो दासों के उदाहरण की वास्तविकता	सूर: परिचय		485
दो बागों का उदाहरण	सूर: परिचय		536
पवित्र वाक्य और अपवित्र वाक्य का उदाहरण	इब्राहीम	25-27	465
दो प्रकार से काफ़िरों का उदाहरण	सूर: परिचय		651
नबियों के शत्रुओं का एक उदाहरण	सूर: परिचय		845
कु-धारणा	अल हुजुरात	13	1017
	बनी इस्राईल	37	522
कृतज्ञता			
नेमत प्राप्त करके कृतज्ञता प्रकट करना मनुष्य के	अन नम्ल	41	718

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
लिए लाभदायक होता है			
नेमत पाकर कृतज्ञता प्रकट करने से और अधिक पुरस्कार मिलता है और कृतघ्नता करने पर अज़ाब मिलता है	इब्राहीम	8	461
नेमत पाकर कृतज्ञता प्रकट करने की सामर्थ्य प्राप्ति के लिए दुआ	अन नम्ल	20	715
कृतज्ञता प्रकट करना अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति का साधन है	अल अहकाफ़	16	988
	अज़ जुमर	39	898
हज़रत लुक्मान अलै, को दी गई विवेकशीलता का केन्द्रबिंदु कृतज्ञता प्रकट करना है	सूर: परिचय		780
कौसर (अक्षय स्रोत)			
हज़रत मुहम्मद सल्ल. को ऐसा कौसर मिलने की खुशखबरी जो कभी समाप्त नहीं होगा	सूर: परिचय		1297
क्ष			
क्षमा			
क्रोध को पी जाना और लोगों को क्षमा करना	अन नूर	23	657
क्षमा करने वालों का अल्लाह के निकट प्रतिफल है	आले इम्रान	135	115
	अश शूरा	41	951
अल्लाह से क्षमायाचना (इस्तिग़फ़ार)			
मोमिनों को अल्लाह से क्षमायाचना करने का आदेश	अल मुज़ज़म्मिल	21	1183
भूल हो जाने पर अल्लाह से क्षमायाचना करना	आले इम्रान	136	115
मुत्तकी सदैव अल्लाह से क्षमायाचना करते हैं	अज़ ज़ारियात	19	1030
फ़रिश्ते मोमिनों के लिए अल्लाह से क्षमायाचना करते हैं	अश शूरा	6	943
	अल मु'मिन	8	910
मोमिनों के लिए अल्लाह से क्षमायाचना करने का	अन नूर	63	669
हज़रत मुहम्मद सल्ल. को आदेश			
अल्लाह से क्षमायाचना करना ईश्वरीय अनुकंपा को प्राप्त करने का साधन है	हूद	4,53	393,404
	नूह	11-13	1170
अल्लाह से क्षमायाचना करने वाले उसे बहुत क्षमाशील और बार-बार दया करने वाला पायेंगे	अन निसा	65,111	153,166
अल्लाह से क्षमायाचना करने वालों को वह दंडित नहीं करता	अल अन्फ़ाल	34	320

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
नबी और मोमिनों को मुश्रिकों के लिए अल्लाह से क्षमायाचना करने की मनाही	अत तौब:	113	362
हज़रत इब्राहीम अलै. का अपने पिता के लिए अल्लाह से क्षमायाचना करने का वादा	मरियम	48	567
हज़रत इब्राहीम अलै. का अपने पिता के लिए अल्लाह से क्षमायाचना करना एक वादा के कारण था	अत तौब:	114	362
मुनाफ़िकों के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अल्लाह से क्षमायाचना करना	अत तौब:	80	353
उन्हें कोई लाभ नहीं देगा	अल मुनाफ़िकून	7	1124
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अल्लाह से क्षमायाचना की वास्तविकता	टीका		1005
विजय प्राप्ति के समय अल्लाह से क्षमायाचना करने में मग्न रहना चाहिए	सूर: परिचय		1300
ख			
ख़यानत (ग़बन)			
अल्लाह ख़यानत करने वालों को पसंद नहीं करता	अन् निसा	108	166
आँखों की ख़यानत	अल मु'मिन	20	912
ख़यानत करने वालों का पक्ष लेने की मनाही	अन निसा	106	165
ख़िलाफ़त (नबियों का उत्तराधिकार)			
ख़लीफ़ा के कर्तव्य	साद	27	880
ख़िलाफ़त की बरकतें	अन् नूर	56	666
अल्लाह का हज़रत आदम अलै. को धरती में ख़लीफ़ा बनाना	अल बक्रर:	31	9
हज़रत मूसा अलै. का अपनी अनुपस्थिति में हज़रत हारून अलै. को अपना उत्तराधिकारी बनाना	अल आ'राफ़	143	296
अल्लाह का हज़रत दाऊद अलै. को धरती में ख़लीफ़ा बनाना	साद	27	880
हज़रत मुहम्मद सल्ल. के अनुयायियों में सत्कर्म करने वाले मोमिनों से ख़िलाफ़त का वादा	अन नूर	56	666
ग			
गवाही (साक्ष्य)			
गवाही देने में पूर्ण रूपेण न्याय पर स्थित रहने की शिक्षा	सूर: परिचय		185

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अल्लाह के लिए न्याय के अनुरूप गवाही दो, चाहे स्वयं अपने या अपने सगे-संबंधियों के विरुद्ध ही हो गवाही को न छिपाओ	अन निसा अल अन्आम अल बक्रर: अल बक्रर:	136 153 141 284	172 261 37 83
अनाथों के धन उनको लौटाने पर गवाह बनाओ कर्जों और लेन-देन के मामले लिखित में लाने का आदेश और गवाही देने का ढंग	अन निसा अल बक्रर:	7 283	135 81
मृत्यु से पूर्व वसीयत करते हुए गवाह बनाना आवश्यक है	अल माइद:	107- 109	218-219
बड़े-बड़े सौदे करते समय लिखित रसीद के साथ साथ गवाह बनाने का आदेश	अल बक्रर:	283	82
व्यभिचार का आरोप सिद्ध करने के लिए चार गवाहों की शर्त	अन नूर	5	653
पत्नी पर व्यभिचार के आरोप के साक्ष्य न होने पर कसम खाना	अन नूर	7	654
अश्लीलता करने वाली महिलाओं पर चार गवाहों की आवश्यकता	अन निसा	16	138
अल्लाह का गुणकीर्तन (तस्बीह)			
अल्लाह के गुणकीर्तन करने का आदेश	अल वाक्रिअ: अल हाक्क:	75 53	1077 1160
प्रातः और सायं गुणकीर्तन करने का निर्देश	ता हा अल मु'मिन क्राफ़ आले इम्रान अल अहज़ाब अल फ़त्ह	131 56 40 42 43 10	593 919 1025 94 810 1006
सभी गुणकीर्तनकारियों से बढ़कर हज़रत मुहम्मद सल्ल. ने अल्लाह का गुणकीर्तन किया	सूर: परिचय		1126
धरती और आकाश की प्रत्येक वस्तु अल्लाह का गुणकीर्तन करती है	अल हश्र अल हदीद अस सफ़्फ़ बनी इस्राईल अल जुमुअ:	25 2 2 45 2	1105 1082 1113 523 1118

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
फ़रिश्ते अल्लाह का गुणकीर्तन करते हैं	अत तगाबुन	2	1127
	अल बक्रः	31	9
	अल अम्बिआ	21	599
	अज़ जुमर	76	906
	अर राद	14	450
	अल मु'मिन	8	910
	अश शूरा	6	943
घन-गर्जन के साथ बिजली का गुणकीर्तन करना पहाड़ों का गुणकीर्तन करना	अर राद	14	450
	अल अम्बिया	80	608
	साद	19	879
पक्षियों का गुणकीर्तन करना	अन नूर	42	663
यदि हज़रत यूनस अलै, अल्लाह का गुणकीर्तन करने वाले न होते तो सदा के लिए मछली के पेट में रहते	अस साफ़्फ़ात	144	873
ग्रहण			
सूर्य और चन्द्र ग्रहण	अल क्रियामः	9,10	1192
	सूरः परिचय		1190
घ			
घड़ी (क्रियामत)			
निश्चित घड़ी के आने की जानकारी केवल अल्लाह को है	अल आ'राफ़	188	307
	लुकमान	35	788
	अल अहज़ाब	64	815
निश्चित घड़ी सन्निकट है	अश शूरा	18	947
	अल क्रमर	2	1052
निश्चित घड़ी का आना अवश्यम्भावी है	ता हा	16	577
	अल मु'मिन	60	920
क्रांति की घड़ी का अर्थ	सूरः परिचय		1051
घोड़ा			
हज़रत सुलैमान अलै. का घोड़ों से प्रेम	साद	33	881
	सूरः परिचय		876
आयतांश “फिर वह उनकी पिंडलियों और गर्दनो पर (प्रेम पूर्वक) हाथ फेरने लगा” का अर्थ	टीका		881
जिहाद के लिए तैयार किये गये घोड़ों के मस्तकों	सूरः परिचय		876

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
में कयामत तक बरकत रखी गई है			
जिहाद में भाग लेने वाले घोड़ों का वर्णन	अल आदियात	2 6	1283
शत्रु के विरुद्ध घुड़सेना की छावनियाँ बनाने का निर्देश	अल अन्फ़ाल	61	327
घोड़े सांसारिक मान-मर्यादा के भी चिह्न हैं	आले इम्रान	15	88
घोड़े सवारी और सौंदर्य के साधन हैं	अन नहल	9	489
च			
चन्द्रमा			
सूर्य चन्द्रमा का अल्लाह के लिए सजदः में पड़े रहना	अल हज्ज	19	620
चन्द्र और सूर्य अल्लाह के चिह्न हैं	हामीम अस सज्दः	38	935
चन्द्रमा का घटना और बढ़ना	या सीन	40	852
चन्द्रमा समय जानने का साधन है	अल बक्रः	190	50
चन्द्र और सूर्य मनुष्य को गिनती सिखाने के साधन हैं	अल अन्आम	97	246
	अर रहमान	6	1060
चन्द्रमा के फट जाने का चमत्कार	अल क्रमर	2	1052
अंत्ययुग में सूर्य चन्द्रमा का ग्रहण	अल क्रियामः	10	1192
सूर्य का प्रकाश निजी है और चन्द्रमा की ज्योति मांगी हुई है	यूनस	6	369
चन्द्र और सूर्य परस्पर नहीं टकरा सकते	या सीन	41	852
चन्द्रमा से अभिप्राय अरबवासियों का साम्राज्य काल	सूरः परिचय		1051
मुश्रिकों का चन्द्रमा को दो भागों में बँटते हुए देखना	सूरः परिचय		1051
चन्द्र-भंग का यथार्थ	सूरः परिचय		1051
प्रकाशमय सूर्य के बाद अंत्ययुग में चन्द्रोदय	अश शम्स	3	1259
चुगलखोरी			
चुगलखोर के लिए सर्वनाश निश्चित है	अल हुमज़ः	2	1292
छिद्रान्वेषी और चुगलखोर की बात नहीं माननी चाहिए	अल क़लम	11,12	1150
तुम में कोई किसी की चुगली न करे	अल हुजुरात	13	1017
चोरी			
चेतावनी			
अज़ाब की चेतावनी कभी-कभार प्रायश्चित और क्षमा प्रार्थना से टल जाती है	यूनस	99	388
	सूरः परिचय		367

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
ज			
ज़कात			
ज़कात की अनिवार्यता	अल बक्रर:	44	12
	अल बक्रर:	84	22
	अल बक्रर:	111	29
	अल बय्यिन:	6	1278
	अल बक्रर:	178	46
ज़कात आत्मशुद्धि और धनशुद्धि का साधन है	अत तौब:	103	359
केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए ज़कात देनी चाहिए	अर रूम	40	774
व्यापार करना आदर्श मोमिनों को ज़कात देने से रोक नहीं पाता	अन् नूर	38	662
ज़कात के उपयोग	अल बक्रर:	274	79
अर्थदान के उपयोग	अत तौब:	60	348
जबरदस्ती			
हथियार के बल पर लोगों का धर्मांतरण करना दुनिया का सबसे बड़ा उपद्रव है	सूर: परिचय		313
जबरदस्ती धर्म परिवर्तन करने की अनुमति नहीं दी जा सकती	सूर: परिचय		186
धर्म में कोई जबरदस्ती नहीं	अल बक्रर:	257	73
जो चाहे ईमान ला सकता है और जो चाहे इनकार कर सकता है	अल कहफ़	30	544
तुम्हारे लिए तुम्हारा धर्म और हमारे लिए हमारा धर्म	अल काफ़िरून	7	1299
यदि अल्लाह चाहता तो सब लोगों को स्वयं हिदायत दे देता	अल अन्आम	150	260
जन्म-निरोध			
ग़रीबी के भय से जन्म-निरोध उचित नहीं	अल अन्आम	152	260
	बनी इस्राईल	32	521
जाति / लोग			
अल्लाह की कृपा से ही लोगों में भाईचारा और एकता पैदा होती है	आले इम्रान	104	109
जाति को परस्पर के प्रति सदय और विरोधियों के प्रति कठोर होना चाहिए	अल फ़त्ह	30	1011

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
आपसी मतभेदों से जाति का रोब समाप्त हो जाता है	अल अन्फाल	47	325
मतभेद का मौलिक कारण	सूर: परिचय		1013
जातियों के मतभेद की दशा में उनमें संधि कराने की व्यवस्था	सूर: परिचय		1013
जिन्न			
जिन्न और मनुष्य को अल्लाह ने अपनी उपासना के लिए उत्पन्न किया है	अज़ ज़ारियात	57	1034
इब्लीस जिन्नों में से था	अल कहफ़	51	548
हज़रत मुहम्मद सल्ल. से भेंट करने के लिए जिन्नों के एक प्रतिनिधिमंडल का आगमन	अल अहकाफ़	30	991
हज़रत मुहम्मद सल्ल. के निकट उपस्थित होकर जिन्नों का कुरआन सुन कर प्रभावित होना	अल जिन्न	2	1175
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भेंट करने वाले जिन्न अपनी जाति के बड़े लोग थे	सूर: परिचय		1173
जिन्नों का अपनी जाति को हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर ईमान लाने की प्रेरणा देना	अल अहकाफ़	32-33	992
जिन्न भी यह विश्वास रखते थे कि अब अल्लाह तआला किसी को नहीं भेजेगा	अल जिन्न	8	1175
जिन्न और मनुष्य समाज	अर रहमान	34	1063
जिन्नों से बचने की दुआ	अन नास	7	1306
हज़रत दाऊद अलै. के अधीनस्थ जिन्न	अन नम्ल	40	718
हज़रत सुलैमान अलै. के अधीनस्थ जिन्न	सबा	13	822
जिन्नों और मनुष्यों के पारस्परिक संबंध	अल अन्आम	129	253
जिन्न अत्यधिक गर्म हवा युक्त अग्नि से पैदा किये गये हैं	अल हिज़्र	28	476
जिन्नों से अभिप्राय बैकटीरिया और वायरस भी हो सकते हैं	सूर: परिचय		1058
जिन्नों से अभिप्राय परिश्रमी पहाड़ी जातियाँ हैं	अन नम्ल	40 टीका	718
जीविका			
जीवन व्यवस्था पहाड़ों पर निर्भर है	सूर: परिचय		484
पहाड़ खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के साधन हैं	अन नहल	16	490
	अल अम्बिया	32	601

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
आकाश को तुम्हारे अस्तित्व का आधार बनाया जीविका के सभी साधन आकाश से उतरते हैं जीविका की कमी के भय से जन्म-निरोध करना उचित नहीं जीविका में बढ़ती और घटती पैदा करना अल्लाह के हाथ में है	लुकमान	11	783
	हामीम अस सज्दः	11	929
	अल बक्ररः	23	7
	सूरः परिचय		1027
	अल अन्आम	152	260
	बनी इस्राईल	32	521
	अर राद	27	453
	बनी इस्राईल	31	521
	अल कसस	83	747
	अल अन्कबूत	63	763
	अल बक्ररः	262	76
	सूरः परिचय		313
	सूरः परिचय		1028
	सूरः परिचय		941
	सूरः परिचय		471
आवश्यकतानुसार अनाज में सात सौ गुना तक वृद्धि संभव है हिजरत के फलस्वरूप जीविका में बढ़ोत्तरी मनुष्य और फरिश्ताओं को किसी न किसी प्रकार से जीविका की आवश्यकता है जीविका के संकुचन और प्रसारण का सिद्धांत मनुष्य जीवन की आवश्यकीय वस्तुओं का खजाना अतंहीन है धरती में भोजन व्यवस्था का चार युगों में संपूर्ण होना और पहाड़ों की इस में प्रमुख भूमिका तथा फलों और फसलों के पकने की व्यवस्था	सूरः परिचय		926
झ			
झूठ की निन्दा			
झूठ बोलने से बचो मोमिन झूठी गवाही नहीं देते झूठे लोगों को अल्लाह हिदायत नहीं देता सत्य और असत्य को गड़ु-मड़ु न करो	अल हज्ज	31	623
	अल फुर्कान	73	683
	अल मु'मिन	29	914
	अल बक्ररः	43	12
	आले इम्रान	72	101
झूठ का सहारा लेकर एक दूसरे का धन न खाओ झूठ से किसी चीज़ का आरम्भ नहीं हो सकता और न उसे बार-बार दोहराया जा सकता है झूठ के सहारे सत्य को ठुकराने वाले दंडित होते हैं झूठ को अल्लाह मिटा दिया करता है	अल बक्ररः	189	50
	सबा	50	831
	अल मु'मिन	6	909
	अश शूरा	25	948

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
त			
तक्रवा			
तक्रवा धारण करने का निर्देश	अन निसा	2	133
	अल बक्रर:	283	81
	आले इम्रान	201	131
	अल माइद:	12	191
तक्रवा का वस्त्र सर्वोत्कृष्ट है	अल आ'राफ़	27	272
सच्चों और झूठों के बीच स्पष्ट प्रभेद कर देने वाला हथियार तक्रवा है	सूर: परिचय		313
तहज्जुद			
(आधी रात के बाद की नमाज़)			
तहज्जुद की नमाज़ इन्द्रियनिग्रह का सर्वोत्तम उपाय	सूर: परिचय		1180
तौरात			
तौरात के अनुयायियों को इस्लाम स्वीकार करने का आमंत्रण	अल माइद:	16-20	193-194
तौरात केवल बनी इस्राईल के लिए पथप्रदर्शक था	बनी इस्राईल	3	515
तौरात अपने समय में अगुआ और कृपा स्वरूप था	अल अहक्राफ़	13	987
	हूद	18	397
तौरात में नूर और हिदायत थी	अल माइद:	45	200
तौरात अपने समय के लिए संपूर्ण धर्म-विधान था	अल अन्'आम	155	261
बनी इस्राईल के नबी तौरात के द्वारा फैसले किया करते थे	अल माइद:	45	201
यहूदियों ने तौरात में परिवर्तन किया	अल बक्रर:	76	20
	अन निसा	47	148
	अल माइद:	14	192
	अल माइद:	42	199
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में तौरात में भविष्यवाणी	अल आ'राफ़	158	300
	अल फ़त्ह	30	1011
	अल हश्र	10	1101
त्याग			
द			
दंड विधान			
हत्या			
हत्या का निषेध	बनी इस्राईल	34	521

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
एक जीवन की हत्या करना पूरी मानवता की हत्या करना है	अल माइदः	33	197
बदला			
हत्या किये गये व्यक्ति का बदला लेना आवश्यक है	अल बक्ररः	179	46
हत्या किये गये व्यक्ति के परिजन हत्यारे को क्षमा कर सकते हैं	अल बक्ररः	179	46
भूल से हत्या हो जाने पर हत व्यक्ति के परिजनों को मुवावज़ा दी जाये	अन निसा	93	161
हत व्यक्ति के परिजन क्षतिपूर्ति क्षमा कर सकते हैं	अन निसा	93	161
देश में फ़साद और अशांति फैलाने वाले को परिस्थिति के अनुसार मृत्युदंड, सूली, निर्वासन अथवा हाथ पांव काटने का दंड दिया जा सकता है	अल माइदः	34	197
व्यभिचार			
व्यभिचार की मनाही और उसका दंड	अन नूर	3,4	653
व्यभिचारिणी दासी के लिए आधा दंड	अन निसा	26	143
सब के सामने दंड दिया जाये	अन नूर	3	653
आरोप			
सतवंती स्त्रियों पर दुष्कर्म का आरोप लगाने वालों पर इहलोक और परलोक में ला'नत और अज़ाब	अन नूर	24	657
चार गवाह पेश न कर सकने पर आरोप लगाने का दंड अस्सी कोड़े हैं	अन नूर	5	653
आरोप लगाने वाले अपराधी की गवाही कभी स्वीकार नहीं की जाएगी	अन नूर	5	653
चोरी			
अभ्यस्त चोर का दंड हाथ काटना है	अल माइदः	39	198
अश्लीलता			
दो पुरुष परस्पर अश्लीलता करें तो उनके लिए परिस्थिति के अनुकूल दंड निश्चित किया जाये	अन निसा	17	138
अश्लीलता करने वाली स्त्री पर घर से बाहर जाने की पाबंदी	अन निसा	16	138
अश्लीलता प्रचार का दंड इहलोक में भी मिलता है	अन नूर	20	656

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
दज्जाल			
सूर: अद दुखान की भविष्यवाणी का 'दज्जाल' के युग से संबंध	सूर: परिचय		969
दान			
अल्लाह के रास्ते में प्रकाश्य और अप्रकाश्य रूप से खर्च करना	अर राद	23	452
खुशहाली और तंगी में भी अल्लाह के रास्ते में अर्थदान होना चाहिए	आले इम्रान	135	115
अर्थदान का दार्शनिक विवेचन	सूर: परिचय		85
स्व-अर्जित पवित्र धन में से अर्थदान किया जाये	अल बक्रर:	268	78
प्रियतम वस्तु अल्लाह के रास्ते में दान दिया जाये	आले इम्रान	93	107
केवल अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए अर्थदान किया जाये	अद दहर	9,10	1198
धर्म की सहायतार्थ अधिकता पूर्वक अर्थदान करने का समय अंत्ययुग होगा	सूर: परिचय		1126
दाब्बतुल अर्ज़			
'दाब्बतुल अर्ज़' का अर्थ	अन नम्ल	83	726
	सूर: परिचय		711
'दाब्बतुल अर्ज़' का हज़रत सुलैमान अलै. की मृत्यु का समाचार देना	सबा	15	824
दुआ			
मनुष्य पर दुआ करना अनिवार्य है	अल फुर्कान	78	684
अल्लाह की ओर से दुआ स्वीकार करने का वादा	अल मु'मिन	61	920
आतुर व्यक्ति की दुआ	अन नम्ल	63	723
नमाज़ और दुआ का ढंग	बनी इस्राईल	111	535
सुखांत होने की दुआ	यूसुफ़	102	442
नरक से बचने की दुआ	आले इम्रान	192	129
	अल फुर्कान	66	682
नेक लोगों की संगति और स्वर्ग प्राप्ति की दुआ	अश शुअरा	84 86	695
मोमिनों के लिए फ़रिश्तों की दुआ	अल मु'मिन	8, 9	910
अल्लाह की शरणागति के लिए व्यापक दुआएँ	अल फ़लक़	1-6	1304
	अन नास	1-7	1306
हज़रत इब्राहीम अलै. की दुआएँ	अश् शुअरा	84	695

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
नूह की जाति के लिए अज़ाब की दुआ	नूह	27	1172
हज़रत याकूब अलै. की दुआ “मैं तो अपने दुःख दर्द की फ़रियाद केवल अल्लाह से करता हूँ”	यूसुफ़	87	439
हज़रत यूसुफ़ अलै. की दुआ “मुझे आज्ञाकारी होने की अवस्था में मृत्यु दे और मुझे सदाचारियों के वर्ग में शामिल कर”	यूसुफ़	102	442
फ़िराऊन की पत्नी की दुआ	अत तहरीम	12	1141
हज़रत इब्राहीम अलै. की दुआओं का फल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं	सूर: परिचय		459
बद्र युद्ध के समय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ	सूर: परिचय		312
हज़रत मुहम्मद सल्ल. को सिखाई गई कुछ दुआएँ	आले इम्रान	27	91
	बनी इस्राईल	25	520
	बनी इस्राईल	81	530
	ताहा	115	591
	अल मु'मिनून	98	647
	अल मु'मिनून	119	650
हुनैन युद्ध में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं के कारण विजय प्राप्त हुई थी	सूर: परिचय		332
पापियों की क्षमा के लिए दुआ	अल माइद:	119	222
काफ़िरों की दुआ बेकार जाती है	अर राद	15	450
कुछ दुआएँ			
संपूर्ण और सारगर्भक दुआ	अल फ़ातिह:	1-7	2
धार्मिक और लौकिक भलाई प्राप्ति की दुआ	अल बक्रर:	202	54
	अल आ'राफ़	157	300
अल्लाह की पर्याप्तता पाने की दुआ	आले इम्रान	174	125
शुभ-प्रवेश और शुभ-प्रस्थान के लिए दुआ	बनी इस्राईल	81	530
भलाई पाने की दुआ	अल क़सस	25	736
हिदायत पर अटल रहने की दुआ	आले इम्रान	9	87
विशालहृदयता पाने की दुआ	ताहा	26-29	578
ज्ञानवृद्धि की दुआ	ताहा	115	591
दृढ़निश्चयी बनने की दुआ	अल बक्रर:	251	70
	आले इम्रान	148	118

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
माता-पिता के लिए दुआ	अल आ'राफ़ बनी इस्राईल नूह इब्राहीम	127 25 29 41-42	293 520 1172 468
सदाचारी संतान प्राप्ति के लिए दुआ	आले इम्रान अल अम्बिया अस साफ़्फ़ात	39 90 101	94 610 868
घर-परिवार के आँखों के ठंडक बनने की दुआ	अल फुर्कान	75	683
संतान के सुधार के लिए दुआ	अल अहक़ाफ़	16	988
सदाचारी बनने की दुआ	अन नम्ल	20	715
अल्लाह की कृपा प्राप्ति और स्वकर्म में सरलता के लिए दुआ	अल कहफ़	11	539
अल्लाह से क्षमायाचना के लिए दुआ	अल बक्रर: आले इम्रान अल आ'राफ़ अल आ'राफ़	287 194 24 156,157	84 130 271 300
अपने और अपने बड़ों के लिए अल्लाह से क्षमाप्राप्ति और मन से द्वेष दूर होने की दुआ	अल हश्र	11	1101
आध्यात्मिक उन्नति और अल्लाह से क्षमायाचना की दुआ	अत तहरीम	9	1140
आरोग्य प्राप्ति की दुआ	अल अम्बिया	84	609
विपत्ति से मुक्त होने की दुआ	अल अम्बिया	88	609
विपत्ति के समय मोमिनों की दुआ	अल बक्रर:	157	41
पराभूत अवस्था में दुआ	अल क़मर	11	1053
शैतानी भ्रम से बचने की दुआ	अल मु'मिनून	98-99	647
उपासना और प्रार्थना स्वीकृत होने की दुआ	अल बक्रर:	128	34
दिवस			
हार-जीत का दिन	अत तगाबुन	10	1128
कर्मफल दिवस के अस्वीकारियों की तबाही	सूर: परिचय		1230
जातियों के लिए कर्मफल दिवस इस जगत में भी आता है	सूर: परिचय		1027
निर्णय दिवस	अस साफ़्फ़ात	22	862
	अद दुख़ान	41	973

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
<p style="text-align: center;">ध धरती</p> <p>धरती की सृष्टि छः दौर में हुई</p> <p>धरती की सृष्टि दो दौर में हुई</p> <p>धरती गतिहीन नहीं बल्कि गतिशील है</p> <p>धरती अपने कक्ष में गतिशील है</p> <p>धरती को फैला दिये जाने की भविष्यवाणी</p> <p>सात आकाश की भाँति धरती भी सात हैं</p> <p>अंत्ययुग में धरती अपने रहस्य उगलेगी</p> <p>धरती और आकाश की सृष्टि</p> <p>धरती और आकाश तथा जो कुछ इनके बीच है</p> <p>खेल-तमाशा के रूप में नहीं बनाया गया</p> <p>अल्लाह की सृष्टि और मनुष्य की सृष्टि में प्रभेद</p> <p>धरती और आकाश की सृष्टि से अल्लाह थकता नहीं</p> <p>इस ब्रह्मांड के सदृश और ब्रह्मांडों के निर्माण करने पर अल्लाह सक्षम है</p> <p>सात आकाश और सात धरती</p> <p>सृष्टि की प्रारंभिक अवस्था</p> <p>अनस्तित्व से अस्तित्व में आना</p> <p>प्रारंभ में ब्रह्मांड दृढ़ता पूर्वक बंद किया हुआ गेंद के समान था</p> <p>ब्रह्मांड निरंतर विस्तारशील है</p> <p>अदृश्य स्तंभों पर सृष्टि-व्यवस्था स्थित है</p>	अल मुर्सलात	14-15,	1204
		39	1205
	अन नबा	18	1209
	हूद	8	395
	अस सज्दः	5	791
	हामीम अस सज्दः	10	929
	अन नम्ल	89	727
	अल अम्बिया	34	601
	अल इन्शिकाक़	4	1235
	सूरः परिचय		1234
	सूरः परिचय		1131
	अज़ ज़िलज़ाल	3	1281
	अल अम्बिया	17	599
	अल वाक़िअः	58-74	1076,
			1077
	सूरः परिचय		1069
	अल अहक़ाफ़	34	992
	सूरः परिचय		984
	बनी इस्राईल	100	533
	या सीन	82	857
	अत तलाक़	13	1135
	अल अम्बिया	31	601
	हामीम अस सज्दः	12	929
	सूरः परिचय		446
	अल अम्बिया	31	601
	अज़ ज़ारियात	48	1033
	लुक़मान	11	783

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
सप्त आकाश की कई परतों में उत्पत्ति	अल मुल्क	4	1144
	नूह	16	1170
छः युगों में सृष्टि रचना	अल आ'राफ़	55	279
	यूनुस	4	368
	हूद	8	395
	अल फुर्कान	60	681
	अस सज्दः	5	791
	अल हदीद	5	1082
सप्त आकाश की दो युगों में उत्पत्ति	हामीम अस सज्दः	13	929
धरती की उत्पत्ति के दो युग	हामीम अस सज्दः	10	929
दीपकों और सुरक्षा सामग्रियों से आकाश की सजावट	हामीम अस सज्दः	13	929
भू-लोक के निकटवर्ती आकाश को नक्षत्रों से सुसज्जित किया गया है	अस साफ़फ़ात	7	860
आकाशीय पिंडों की उत्पत्ति	अल मुल्क	6	1144
आकाशीय पिंडों की परिक्रमण-व्यवस्था	अल अम्बिया	31	601
आकाश में रास्ते होने की भविष्यवाणी	या सीन	41 टीका	852
	अज़ ज़ारियात	8	1029
	सूरः परिचय		1027
आकाश में सात रास्ते	अल मु'मिनून	18	637
सूर्य-चन्द्रमा और दिन रात की उत्पत्ति	अल अम्बिया	34	601
अंधकार और प्रकाश की उत्पत्ति	अल अन्'आम	2	225
दिन रात के अदलने बदलने में बुद्धिमानों के लिए चिह्न	अल बक्रः	165	42
	आले इम्रान	191	129
	यूनुस	7	369
जीविका का आकाश के साथ संबंध	यूनुस	32	375
आसमानों का खुलना	अन नबा	20	1209
आसमानों में छेद	अल मुर्सलात	10	1203
आसमानों का फटना	अल इन्फ़ितार	2	1228
आकाश की खाल उतारे जाने की वास्तविकता	अत तक्वीर	12	1225
	सूरः परिचय		1222
आकाश पर धुआँ प्रकट होगा जो लोगों को ढाँप लेगा	अद दुख़ान	11,12	971
आकाश घोर प्रकंपित होगा	अत तूर	10	1037
नक्षत्रों वाला आकाश	अल बुरूज	2	1239
मूसलाधार बारिश वाला आकाश	अल अन्'आम	7	226

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
प्रत्येक वस्तु की उत्पत्ति के साथ ही उसकी क्षमताएँ भी निश्चित की गईं	अत तारिक अल फुर्कान	12 3	1244 672
समस्त जीवन का आधार पानी पर रखा गया है	हूद	8 टीका	395
अल्लाह के निकट महीनों की गिनती बारह हैं	अत तौब:	36	342
इतने विशाल ब्रह्मांड में कोई भी त्रुटि नहीं है	अल मुल्क	4	1144
	सूर: परिचय		1143
	सूर: परिचय		595
	सूर: परिचय		1020
	सूर: परिचय		223
सृष्टि के रहस्य वैज्ञानिकों पर उनकी खोज के परिणाम स्वरूप तथा नबियों पर ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा प्रकट किये जाते हैं			
सृष्टि के गुप्त रहस्यों पर से निश्चित रूप से सर्वज्ञ अल्लाह ही पर्दा उठा सकता है	सूर: परिचय		445
ब्रह्माण्ड का फैलाव	सूर: परिचय		1070
ब्रह्मांड के छोर पर स्थित आकाशगंगाएँ (Galaxies) भी मनुष्य पर प्रभाव डालती हैं	सूर: परिचय		780
ब्रह्मांड की आयु का रहस्य कुरआन में है	सूर: परिचय		789
वर्तमान उपस्थित ब्रह्मांड की आयु	सूर: परिचय		1161
सृष्टि की हर चीज़ नष्ट होने वाली है	अर रहमान	27	1062
यह सृष्टि एक बार अनस्तित्वता में समा जाएगी, फिर इस से नई सृष्टि उत्पन्न की जाएगी	सूर: परिचय		596
अल्लाह के दाहिने हाथ पर ब्रह्मांड को लपेटे जाने की वास्तविकता	अज़ जुमर	68 टीका	904
धरती और आकाश अपने आप अपनी धुरियों पर स्थित नहीं हैं	सूर: परिचय		834
फ़रिश्तों के चार परो से तात्पर्य पदार्थ के चार मौलिक रासायनिक संयोजन	सूर: परिचय		833
सृष्टि की प्रत्येक वस्तु जोड़ा जोड़ा है	या सीन	37	851
पदार्थ के भी जोड़े होते हैं	सूर: परिचय		846
रासायनिक प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप वह जीवन अस्तित्व में आया जिसे वैज्ञानिक कार्बन आधारित जीवन कहते हैं	सूर: परिचय		833

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
ब्रह्मांड में चलने फिरने वाले जीव हैं जो किसी समय धरती पर स्थित जीवों के साथ एकत्रित कर दिये जाएंगे	अश शूरा सूर: परिचय	30	949 942
आकाश और समुद्र के बीच पानी जारी किया जाना धरती पर पानी की सुव्यवस्था	सूर: परिचय सूर: परिचय		1036 445
धरती से पानी समाप्त होने के दो कारण	सूर: परिचय		634
जीवन का प्रत्येक रूप आकाश के वर्षा जल से लाभान्वित होता है	सूर: परिचय		833
ब्रह्मांड में गुल्फाकर्षण व्यवस्था	सूर: परिचय		445
एक से अधिक पूर्वी दिशा	अल मआरिज सूर: परिचय	41	1166 858
सृष्टि के आरंभ में विषाणु (वायरस) और जीवाणु (बैक्टीरिया) आकाश से बरसने वाली रोडियो तरंगों के कारण उत्पन्न हुए	सूर: परिचय		1058
धैर्य			
धैर्य के साथ सहायता मांगना	अल बक्रर:	46	13
	अल बक्रर:	154	41
विपत्ति में धैर्य धरने वालों को खुशखबरी	अल बक्रर:	157,158	41
विपत्तियों और युद्धों में धैर्य	अल बक्रर:	178	46
अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति के लिए धैर्य	अर राद	23	452
हज़रत अय्यूब अलै. का धैर्य	साद	45	883
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को धैर्य का एक बड़ा भाग दिया गया	सूर: परिचय		927
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जो तत्त्वज्ञान प्राप्त हुआ उसके लिए जिस धैर्य की आवश्यकता थी वह मूसा अलै. के पास नहीं था	सूर: परिचय		536
शत्रु के व्यंग-उपहास पर हज़रत मुहम्मद सल्ल. को धैर्य धरने का निर्देश	सूर: परिचय		1020
धर्म त्याग			
धर्मत्यागी अल्लाह के धर्म को कोई हानि नहीं पहुँचा सकते	आले इम्रान	145	117
एक धर्मत्यागी के बदले अल्लाह से प्रेम करने वाली एक जाति का वादा	अल माइद:	55	204

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
धर्मत्यागी की हत्या करना, रसूलों के इनकार करने वालों का सांझा सिद्धान्त था धर्मत्यागी का दंड हत्या नहीं	सूर: परिचय		458
	अल बक्रर:	218	58
	आले इम्रान	91	105
	अन निसा	138	173
	टीका		
	अल माइद:	55 टीका	204
	अन नहल	107	507
न			
नमाज़			
नमाज़ क़ायम करने का आदेश	अल बक्रर:	44	12
	अल बक्रर:	111	29
	इब्राहीम	32	466
नमाज़ निश्चित समय पर पढ़ना अनिवार्य है	अन निसा	104	165
मुत्तकी नमाज़ क़ायम करते हैं	अल बक्रर:	4	4
नमाज़ क़ायम करना बहुत बड़ी नेकी है	अल बक्रर:	178	46
मध्यवर्ती नमाज़ की सुरक्षा करने की ताकीद	अल बक्रर:	239	66
नमाज़ का उद्देश्य ईश्वर स्मरण	ताहा	15	577
धैर्य और नमाज़ के साथ सहायता माँगो	अल बक्रर:	46	13
	अल बक्रर:	154	41
वास्तविक नमाज़ निर्लज्जता और प्रत्येक अप्रिय बात से रोकती है	अल अन्कबूत	46	760
मोमिन का आध्यात्मिक जीवन नमाज़ के क़ायम करने पर ही टिका है	सूर: परिचय		780
सच्चे मोमिन का एक चिह्न :- नमाज़ निरंतरता से पढ़ना	अल मआरिज	24	1164
मोमिन अपनी नमाज़ों की सुरक्षा करते हैं	अल मु'मिनून	10	636
मोमिन अनुनय-विनय पूर्वक नमाज़ पढ़ते हैं	अल मु'मिनून	3	636
महान पुरुषों को व्यापार करना नमाज़ से लापरवाह नहीं करता	अन नूर	38	662
मदहोशी की हालत में नमाज़ पढ़ने की मनाही	अन निसा	44	147
सब नबियों को नमाज़ क़ायम करने का आदेश	अल अम्बिया	74	607

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
हज़रत इब्राहीम अलै. की अपनी संतान के लिए नमाज़ कायम करने की दुआ	इब्राहीम	38,41	468
बनी इस्राईल से नमाज़ कायम करने का वचन लिया जाना	अल माइदः यूनुस	13 88	191 386
शैतान नमाज़ से रोकने की चेष्टा करता है	अल माइदः	92	213
विनयी व्यक्तियों के सिवा दूसरों पर नमाज़ पढ़ना भारी होता है	अल बक्रः	46	13
नमाज़ में सुस्ती मुनाफ़िक़ का लक्षण है	अन निसा अत तौबः	143 54	174 347
अहले किताब का मुसलमानों की अज़ान का खिल्ली उड़ाना	अल माइदः	59	205
बे-नमाज़ी नरक का ईंधन बनेंगे	अल मुद्स्सिर	43, 44	1188
नमाज़ों से लापरवाही करने वालों और दिखावा करने वालों के लिए तबाही की चेतावनी	अल माऊन	5-7	1296
दैनिक नमाज़ों का समय			
सूर्य ढलने से रात छा जाने तक नमाज़ का आदेश	बनी इस्राईल हूद	79 115	529 416
दिन के दोनों छोर और रात के कुछ भागों में नमाज़ पढ़ने का आदेश			
दिन रात की सभी नमाज़ों का वर्णन	सूरः परिचय		575
नमाज़ के अन्यान्य प्रसंग			
नमाज़ से पूर्व वुजू करने का निर्देश	अल माइदः	7	190
नमाज़ के स्तंभ :- खड़ा होना, झुकना, सजदः करना	अल हज्ज	27	622
कुछ विशेष परिस्थितियाँ जिन में नमाज़ से पूर्व स्नान करना आवश्यक है	अन निसा अल माइदः	44 7	148 190
मजबूरी की अवस्था में तयम्मुम की अनुमति	अन निसा अल माइदः	44 7	148 190
यात्रा के समय नमाज़ छोटी पढ़ने की अनुमति	अन निसा	102	164
युद्ध और भय की अवस्था में नमाज़ की स्थिति	अन निसा	103	164
जुम्अ की नमाज़ की अनिवार्यता	अल जुमुअः	10	1120
तहज्जुद की नमाज़ और उसका निर्देश	बनी इस्राईल अल मुज़म्मिल	80 3-9	529 1181

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
नबी और रसूल			
नबी और रसूल एक ही व्यक्तित्व के दो पद हैं	मरियम	55	568
नबी की आवश्यकता	अल कसस	48	740
हज़रत मुहम्मद सल्ल. अल्लाह के रसूल और 'खातमुन्नबियीन' (नबियों के मुहर) हैं	अल अहज़ाब	41	809
'खातमुन्नबियीन' की व्याख्या	सूर: परिचय		796
नुबुव्वत समाप्त होने की विचारधारा युक्तिसंगत नहीं	सूर: परिचय		1173, 908
अल्लाह बेहतर जानता है कि रसूल का चुनाव कहाँ से करे	अल अन्आम	125	253
नबी अल्लाह के आदेशानुसार कर्म करते हैं	अल अम्बिया	28	600
नबी और रसूल अल्लाह की बात से एक शब्द भी अधिक नहीं कहते	अल माइद:	118	221
अल्लाह अपने निर्वाचित रसूलों के द्वारा ही अदृश्य विषय प्रकट करता है	अन नज़्म	4	1045
रसूल को अधिक मात्रा में अदृश्य का ज्ञान दिया जाता है	आले इम्रान	180	126
नबी को उसकी जातीय भाषा में वहइ की जाती है	अल ज़िन्न	27,28	1178
रसूल के ज़िम्मे केवल संदेश पहुँचाना होता है	इब्राहीम	5	460
नबी और रसूल लोगों से किसी प्रकार बदला नहीं चाहते	अल माइद:	100	216
हर जाति में रसूल आये हैं	हूद	30,52	399,404
हर जाति में अल्लाह के पथ-प्रदर्शक और सतर्ककारी आते रहे हैं	अन नह्ल	37	494
शरीयत विहीन नबी जो पूर्ववर्ती शरीयत के अनुसार निर्णय करते रहे हैं	अर राद	8	448
नबियों और रसूलों की एक दूसरे पर श्रेष्ठता	फ़ातिर	25	839
कुरआन में केवल कुछ नबियों का वर्णन है	अल माइद:	45	200
नबी और रसूल मनुष्य होते हैं	अल बकर:	254	72
	बनी इस्राईल	56	525
	अन निसा	165	180
	अल मु'मिन	79	923
	इब्राहीम	12	462
	बनी इस्राईल	94	532
	अल कहफ़	111	558

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
नबी और रसूल मानवीय आवश्यकताओं से परे नहीं होते	अल अम्बिया अर राद अल फुर्कान अल फुर्कान	9 39 8 21	598 456 673 675
रसूलों पर सलाम	अस साफ़्फ़ात	182	875
नबियों के आगे और पीछे रक्षक फ़रिश्ते होते हैं	अल जिन्न	28	1178
नबियों और रसूलों को ईश्वरीय सहायता प्राप्त होती है	अस साफ़्फ़ात	173	875
अंततोगत्वा रसूल विजयी होते हैं	अल मुजादल: अस साफ़्फ़ात	22 174	1096 875
वे अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते	अल अहज़ाब	40	809
नबियों की हत्या अथवा घोर विरोध की वास्तविकता	अल बक्र: आले इम्रान अन निसा	62 22,113 156	16 90,111 177
रहमान अल्लाह रसूल पद प्रदान करता है	सूर: परिचय		574
नबी होने का दावा करने वालों का मामला	सूर: परिचय		908
अल्लाह पर छोड़ देना चाहिए			
नबियों को भी पूछा जाएगा कि उन्होंने किस सीमा तक अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाया	सूर: परिचय		265
नबियों की कथाओं के वर्णन का उद्देश्य	सूर: परिचय		392
ज़रूरी नहीं कि नबी के जीवन में ही उसकी सभी भविष्यवाणियाँ पूरी हो जायें	यूनस	47 टीका	379
मनुष्य और जिन्न रूपी शैतान हर नबी के शत्रु होते हैं	अल अन्आम	113	250
शैतान को रसूलों के निकट फटकने की भी अनुमति नहीं	सूर: परिचय अश शुअरा		685 211-213 705
हर नबी को झुठलाया जाता है	अल मु'मिनून	45	641
नबी और रसूलों का उपहास किया जाता है	अल अम्बिया या सीन	42 31	602 850
	अज़ जुख़रुफ़	8	957
सभी रसूलों पर एक प्रकार की आपत्तियाँ होती हैं	हामीम अस सज्द:	44	936
	अज़ ज़ारियात	53, 54	1034
नबियों के शत्रुओं को अल्लाह के छूट देने का अर्थ	आले इम्रान	179	126

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
	अल क़लम	45,46	1154
	अल आ'राफ़	184	307
नबियों के प्रचार माध्यमों को तोड़ने वाले शत्रुओं का विनाश	सूर: परिचय		1258
नबियों के विरोधियों की तबाही और पुरातत्त्वविदों के द्वारा उनके अवशेषों को ढूँढ निकालना	सूर: परिचय		749
शीया संप्रदाय की अशुद्ध व्याख्या कि इमाम का दर्जा नबी से बढ़कर है	अल बक्रर:	125	33
किसी नबी के लिए संभव नहीं कि वह स्वयं को अथवा फ़रिश्तों को रब्ब बनाने की शिक्षा दे	आले इम्रान	टीका 81	103
अंत्ययुग में सभी रसूलों के आविर्भाव होने की वास्तविकता	सूर: परिचय		1201
नबियों की प्रतिज्ञा			
नबियों की प्रतिज्ञा का वर्णन	आले इम्रान	82 टीका	104
	सूर: परिचय		85
हज़रत मुहम्मद सल्ल. से भी प्रतिज्ञा ली गई	अल अहज़ाब	8	801
	सूर: परिचय		796
बनी इस्राईल से भी प्रतिज्ञा ली गई	अल बक्रर:	94	25
नरक			
नरक चिरस्थायी नहीं है	हूद	108	415
नरक दिलों पर लपकने वाली आग है	अल हुमज़:	7,8	1292
नरक का ईंधन आग और पत्थर होंगे	अल बक्रर:	25	8
झूठे उपास्य और उनके उपासक नरक का ईंधन होंगे	अल अम्बिया	99	611
नरक वासियों का भोजन और उसके गुण	अल गाशिय:	7	1249
	सूर: परिचय		1248
	अर रहमान	45	1065
	अल वाक्किअ:	53-56	1075
	अल अन्आम	71	239
	मुहम्मद	16	998
	अल हाक्क़:	37	1159
	अन नबा	25,26	1209
नरक के उन्नीस फ़रिश्तों की वास्तविकता	अल मुद्स्सिर	31,32	1187

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
प्रत्येक व्यक्ति के नरक में प्रविष्ट होने का तात्पर्य	सूर: परिचय		1184
नेक लोग उसकी सरसराहट तक नहीं सुनेंगे	मरियम	72	570
नरकगामी न मरेगा न जियेगा	अल अम्बिया	103	612
नरकवासियों और स्वर्गवासियों का तुलनात्मक वर्णन	अल आ'ला	14	1247
	अल मुतफ़्फ़ीन	8-37	1231-
			1233
स्वर्ग और नरक की स्थूल कल्पना सही नहीं	सूर: परिचय		1230
यदि समग्र बह्दांड में स्वर्ग व्याप्त हो तो नरक	सूर: परिचय		1080
कहाँ होगा हज़रत मुहम्मद सल्ल. का उत्तर	सूर: परिचय		1080
नरकवासियों का उपमा स्वरूप वर्णन	सूर: परिचय		1069
नरक का उपमा स्वरूप वर्णन	सूर: परिचय		1059
अधर्मी लोग नरक का ईंधन बनने वाले हैं	सूर: परिचय		1020
उस पर उन्नीस निरीक्षक नियुक्त होने का अर्थ	सूर: परिचय		1184
नींद			
नींद भी अल्लाह के चिह्नों में से एक चिह्न है	अर रूम	24	770
नींद आराम का साधन है	अल फुर्कान	48	679
	अन नबा	10	1208
नींद भी एक प्रकार की मृत्यु है	अज़ जुमर	43	899
नूह की नौका			
अल्लाह की वह्द के अनुसार नौका निर्माण	हूद	38	401
	अल मु'मिनून	28	639
पुरातत्त्वविदों का कहना है कि वे एक दिन नूह की नौका को खोज निकालेंगे	सूर: परिचय		749
अंत्ययुग में एक नूह की नौका निर्मित की जाएगी	सूर: परिचय		1168
न्याय			
अल्लाह न्याय करने का आदेश देता है	अन नहल	91	504
अल्लाह न्याय करने वालों को पसंद करता है	अल हुजुरात	10	1017
न्याय करो, चाहे सगे संबंधियों के विरुद्ध ही करना पड़े	अल अन्आम	153	261
किसी जाति की शत्रुता तुम्हें न्याय से न रोके	अल माइद:	9	191
न्याय पर डटे रहना ही सफलता की ज़मानत है	सूर: परिचय		1230
न्याय और उपकार करने का आदेश	अन नहल	91	504

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
न्याय से अगला चरण उपकार	अन नहल	91	504
न्याय और उपकार के बाद अगला चरण	अन नहल	91	504
सगे संबंधियों की सहायता करना है			
प			
पूँजीवाद			
पूँजीवादी व्यवस्था 'खन्नास' है	सूर: परिचय		1305
पक्षी			
पक्षियों की विचित्र बनावट	सूर: परिचय		486
पक्षियों की उपासना और स्तुति करना	अन नूर	42	663
आध्यात्मिक पक्षियों का वर्णन	सूर: परिचय		1143
हज़रत इब्राहीम अलै. को चार पक्षी सिधाने का निर्देश	अल बक्रर:	261	75
हज़रत ईसा अलै. का पक्षी सृजन करने का तात्पर्य	आले इम्रान	50	96
	अल माइद:	111	219
हज़रत दाऊद अलै. के लिए पक्षियों को सेवाधीन किया जाना	साद	20	879
	अल अम्बिया	80	608
हज़रत सुलैमान अलै. की पक्षियों की सेना	अन नम्ल	18	714
पक्षियों की भाषा की वास्तविकता	सूर: परिचय		708
खाना का'बा की सुरक्षा के लिए झुण्ड के झुण्ड	अल फ़ील	4	1294
पक्षियों का भेजा जाना			
स्वर्गवासियों के लिए पक्षियों का माँस	अल वाक्किअ:	22	1073
परलोक			
प्रत्येक नबी ने मृत्योपरांत पुनर्जीवित होने पर ईमान लाने की शिक्षा दी है	टीका		993
परलोकीन जीवन की आवश्यकता	यूनुस	5	368
परलोकीन जीवन का एक प्रमाण	सूर: परिचय		1202
परलोकीन जीवन ही वास्तविक जीवन है	अल अन्कबूत	65	763
इहलोक से परलोक उत्तम है	अन निसा	78	156
	बनी इस्राईल	22	519
	यूसुफ़	110	444
परलोक में अल्लाह का दर्शन	अल क्रियाम:	24	1193
प्रत्येक कर्म का प्रतिफल मिलेगा	अल कहफ़	50	548
	ता हा	16	577

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
उस दिन सत्य ही भारी सिद्ध होगा	अल आ'राफ़	9	269
धरती और आकाश विनाश के ब्लेकहॉल में प्रविष्ट कर दिये जाएंगे	टीका		904
इहलोक में जो ज्ञान-दृष्टि से वंचित है वह परलोक में भी ज्ञान-दृष्टि से वंचित होगा	बनी इस्राईल	73	528
परलोकीन उत्थान के बारे में बाह्य शब्दावली को ज्यों का त्यों घटित होना नहीं समझना चाहिए	सूर: परिचय		1069
प्रत्येक व्यक्ति का कर्म-पत्र उसके गले में टंगा होगा	बनी इस्राईल	14 टीका	518
मनुष्य के अंग-प्रत्यंग भी गवाही देंगे	या सीन	66	855
कान, आँखों और चर्म की गवाही	हामीम अस सज्द:	21-23	931
क्रयामत के दिन भौतिक शरीर नहीं बल्कि आध्यात्मिक शरीर इकट्ठे किये जाएंगे	सूर: परिचय		1190
मृत्योपरांत पुनर्जीवित होने तक के समय की दीर्घता	सूर: परिचय		635
पुनर्जीवित होने वालों के साथ एक हाँकने वाला और एक गवाह होगा	क्राफ़	22	1023
हश्त्र (कर्म-फल प्राप्ति) के दिन अपराधियों में से अधिकतर नीली आँखों वाले होंगे	सूर: परिचय		1020
परलोक के अस्वीकारियों का खंडन	ता हा	103	589
	अल अन्आम	30-32	230-231
	अन् नहल	39-41	494
	बनी इस्राईल	50-53	524
	या सीन	79,80	857
	अ ब स	23	1220
पर्दा			
आँखें नीची रखना पुरुष और स्त्री दोनों के लिए अनिवार्य है	अन नूर	31,32	659
मुसलमान महिलाओं के लिए चादर का पर्दा	अल अहज़ाब	60	814
वक्ष:स्थल पर ओढ़नी डालने का निर्देश	अन नूर	32	659
अधिक आयु वाली महिलाओं के लिए पर्दा में ढील	अन नूर	61	667
पर्दे के तीन समय	अन नूर	59	667
परपुरुष के समक्ष सौन्दर्य प्रकट करने की मनाही	अन नूर	32	659
पहाड़			
पहाड़ स्थिर नहीं बल्कि क्रमशः चलायमान हैं	अन नम्ल	89	727

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
जीवन रक्षा की व्यवस्था पहाड़ों पर निर्भर है	सूर: परिचय		484
पहाड़ मनुष्य और पशुओं के भोजन का साधन हैं	अन नहल	16	490
	अन नाज़ियात	33,34	1216
	अल अम्बिया	32	601
	लुक़्मान	11	783
	हामीम अस सज्द:	11	929
पहाड़ों के द्वारा खाने पीने के सामान चार युगों में पूरे किये गये	हामीम अस सज्द:	11	929
सफ़ा और मरवा पहाड़ी अल्लाह के चिह्नों में से हैं	अल बक्र:	159	41
जूदी पर्वत जहाँ तूफ़ान के बाद नूह की नौका ठहर गई	हूद	45	403
तूरे-सैना और तूरे-सीनीन पर्वत शृंखला	अल मु'मिनून	21	638
	अत तूर	2	1037
	अत तीन	3	1270
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की विशाल पर्वत के समान श्रेष्ठता	सूर: परिचय		459
अमानत का जो बोझ हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर डाला गया पहाड़ भी उसको उठाने से डर गये	अल अहज़ाब	73	816
पहाड़ से अभिप्राय कठिन परिश्रमी जातियाँ	सूर: परिचय		818
पहाड़ों से अभिप्राय बड़ी-बड़ी सांसारिक शक्तियाँ	सूर: परिचय		1285
हज़रत दाऊद अलै. के लिए पहाड़ सेवाधीन किये गये	अल अम्बिया	80	608
	साद	19	879
हज़रत दाऊद अलै. के साथ पहाड़ों का स्तुतिगान करना	सबा	11	822
पहाड़ों को टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा	ता हा	106	589
आने वाले युग में पहाड़ रेत के समान हो जाने का तात्पर्य	सूर: परिचय		574
अंत्ययुग में पहाड़ धुनकी हुई ऊन की भाँति हो जाएँगे	अल मआरिज	10	1163
	अल क़ारिअ:	6	1286
पानी			
पानी पर अल्लाह का सिंहासन होने का अर्थ	हूद	8 टीका	395
धरती पर पानी की व्यवस्था	सूर: परिचय		445
आकाश और समुद्र के बीच पानी को जारी करना	सूर: परिचय		1036

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अल्लाह इस पानी को लुप्त करने पर समर्थ है	अल मु'मिनून	19	637
धरती से पानी लुप्त होने के दो कारण	सूर: परिचय		634
पानी से प्रत्येक जीवधारी का जन्म	अल अम्बिया	31	601
	अन नूर	46	664
पानी से मनुष्य की उत्पत्ति	अल फुर्कान	55	680
पानी से प्रत्येक प्रकार के अंकुरण की उत्पत्ति	अल अन्आम	100	247
पानी जीविका का आधार है	अल बक्रर:	23	7
समुद्रों के द्वारा यात्रा की सुविधायें	अल जासिय:	13	978
समुद्र खाद्य सामग्री के माध्यम हैं	अन नह्ल	15	490
प्रतिज्ञा			
प्रतिज्ञापालन करने वाले नेक लोग होते हैं	अल बक्रर:	178	46
मोमिन अपनी प्रतिज्ञा की निगरानी करते हैं	अल मु'मिनून	9	636
अल्लाह से की गई प्रतिज्ञा को पूरी करो	अन नह्ल	92	504
	अल माइद:	2	187
	बनी इस्राईल	35	522
प्रतिज्ञा पालन करने वालों को शुभ-समाचार	अत तौब:	111	361
प्रतिज्ञा पूरी करने वालों का दर्जा	आले इम्रान	77	102
समझौता भंग करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही	अल अन्फ़ाल	57-60	327
प्रतिकार (क़िसास)			
हत्या किये गये व्यक्ति का प्रतिकार आवश्यक है	अल बक्रर:	179	46
'क़िसास' जीवन की ज़मानत है	अल बक्रर:	180	47
प्रायश्चित (तौब:)			
अल्लाह चाहता है कि तुम्हारा प्रायश्चित स्वीकार करे	अन निसा	28	143
मृत्यु के समय प्रायश्चित स्वीकार्य नहीं होगा	अन निसा	19	139
अज्ञानता के कारण कुकर्म करने वाले का	अन निसा	18	139
प्रायश्चित अवश्य स्वीकृत होता है			
विशुद्ध प्रायश्चित	अत तहरीम	9	1140
अल्लाह जिस का चाहे प्रायश्चित स्वीकार करता है	अत तौब:	27	340
प्रायश्चित करने वालों की बुराइयों को अल्लाह	अल फुर्कान	71	683
नेकियों में परिवर्तित करता है			
प्रायश्चित करने वाले स्वर्ग में प्रविष्ट किये जाएंगे	मरियम	61	569
प्लेग			
धरती का जीव (दाब्बतुल अर्ज़) प्लेग का कारण है	अन नम्ल	83	726

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
फ फ़रिश्ते (देवदूत)			
फ़रिश्तों पर ईमान लाना अनिवार्य है	अल बक्रः	178	46
फ़रिश्तों का इनकार करना पथभ्रष्टता है	अन निसा	137	173
फ़रिश्ते अल्लाह की अवज्ञा नहीं करते	अत तहरीम	7	1140
फ़रिश्ते अल्लाह की सृष्टि हैं	अस साफ़्फ़ात	151	873
फ़रिश्ते भौतिक आँख से नहीं दिखते	अल अन्आम	9,10	226
फ़रिश्तों का कोई लिंगभेद नहीं है	अस साफ़्फ़ात	151	873
फ़रिश्ते असंख्य हैं	अल मुद्स्सिर	32	1187
जितना अल्लाह बताता है फ़रिश्तों को केवल उतनी ही जानकारी होती है	अल बक्रः	33	10
फ़रिश्ते विभिन्न योग्यताओं के अधिकारी हैं	फ़ातिर	2	835
फ़रिश्तों के चार परो से अभिप्राय पदार्थ के चार मौलिक संयोजन क्षमता	सूरः परिचय		833
जिब्रील, मीकाईल	अल बक्रः	98,99	26
रूह-उल-अमीन	अश शुअरा	194	704
फ़रिश्ते अल्लाह की स्तुति और गुणगान करते हैं	अज़ जुमर	76	906
फ़रिश्तों का अल्लाह के समक्ष सजदः किये रहना	सूरः परिचय		484
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर	अल अहज़ाब	57	813
फ़रिश्तों का दुखद भेजना			
फ़रिश्तों का मोमिनों के लिए क्षमा-प्रार्थना करना	अल मु'मिन	8	910
फ़रिश्तों का अर्श को उठाना	अल मु'मिन	8	910
अर्श को उठाने का अभिप्राय	सूरः परिचय		907
क़यामत के दिन अर्श को उठाने वाले फ़रिश्तों की संख्या दोगुनी होगी	अल हाक्कः	18	1157
कठोर और सशक्त फ़रिश्ते	अत तहरीम	7	1140
मृत्यु का फ़रिश्ता	अस सज्दः	12	792
फ़रिश्तों का कर्मलेखन करना	अल इन्फ़ितार	11-13	1228
फ़रिश्तों को संदेश वाहक के रूप में चुना जाना	अल हज्ज	76	632
मोमिनों को शुभ-समाचार देना	हामीम अस सज्दः	31,32	933
नबी और उनके अनुयायियों की सहायता करना	आले इम्रान	125	114
नबियों के विरोधियों पर अज़ाब उतारना	अल अन्आम	159	262

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
फ़रिश्तों को आदम के लिए सजदः करने का आदेश	अल बक्रः	35	10
	अल आ'राफ़	12	269
	बनी इस्राईल	62	526
	अल कहफ़	51	548
फ़िज़ूल खर्ची	अल आ'राफ़	32	273
	बनी इस्राईल	27	520
	अल फ़ुर्कान	68	682
ब			
बेरी वृक्ष (सिद्रः)			
हज़रत मुहम्मद सल्ल. का अंतिम सीमा पर स्थित बेरी वृक्ष (सिद्रतुल मुंतहा) तक पहुँचना	अन नज़्म	15	1046
सिद्रतुल मुंतहा की वास्तविकता	सूरः परिचय		1044
बैअत			
जो लोग हज़रत मुहम्मद सल्ल. की बैअत करते हैं वास्तव में वे अल्लाह की बैअत करते हैं	अल फ़त्ह	11	1006
“बैअत-ए-रिज़वान” करने वालों को अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्ति की खुशख़बरी	अल फ़त्ह	19	1009
महिलाओं की बैअत की प्रमुख बातें	अल मुम्तहिनः	13	1110
ब्याज			
ब्याज की मनाही	अल बक्रः	279	80
ब्याज अल्लाह के निकट नहीं बढ़ता	अर रूम	40	774
ब्याज को न छोड़ना अल्लाह और रसूल से युद्ध की घोषणा करने के समान है	अल बक्रः	280	81
यहूदियों के ब्याज खाने का दुष्परिणाम	अन निसा	161,162	179
भ			
भरोसा			
	इब्राहीम	13	462
	अत तलाक़	4	1133
	अल फ़ुर्कान	59	681
भविष्यवाणियाँ			
कुरआन की भविष्यवाणियाँ अवश्य पूरी होंगी	सूरः परिचय		1020
नबी के जीवनकाल में ही उसकी सभी भविष्यवाणियाँ पूरी नहीं होतीं	यूनुस	47 टीका	379

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
कुरआन करीम की अनगिनत ऐसी भविष्यवाणियाँ हैं जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के देहांत के बाद पूरी होनी शुरू हुईं	यूनूस	47 टीका	379
हज़रत मुहम्मद सल्ल. की हिज़रत और सफल प्रत्यावर्तन	अल क़सस अल बलद	86 3	748 1256
अहज़ाब युद्ध में विजय की भविष्यवाणी	सूर: परिचय अल अहज़ाब	 23	1255 804
	साद	12	878
	अल क़मर	46	1057
रोमवासी ईरान पर विजयी होंगे	अर रूम	3,4	767
रोमवासियों के विजय के साथ मोमिनों के लिए भी खुशी का सामान (अर्थात बद्र युद्ध में विजय प्राप्ति)	अर रूम	5,6	767
‘क़ैसर’ और ‘क़िस्रा’ (अर्थात रोम और ईरान) के साम्राज्यों का रेत की भाँति हो जाने का अर्थ	सूर: परिचय		574
अंत्ययुग में बिखरे हुए यहूदियों को फिलिस्तीन में एकत्रित किया जाएगा	बनी इस्राईल	105	534
क्रयामत तक ऐसे लोग पैदा होते रहेंगे जो यहूदियों को दंडित करते रहेंगे	अल आ'राफ़	168	303
यहूदी धरती पर दो बार उपद्रव करेंगे	बनी इस्राईल	5	516
भविष्य में मुसलमानों की विजयप्राप्ति की भविष्यवाणी	अल अहज़ाब	28	806
हज़रत मुहम्मद सल्ल. का अंत्ययुगीनों में पुनरागमन	अल जुमुअ:	4 टीका	1118
एक चन्द्रमा की भविष्यवाणी जो सूर्य के पश्चात् उसका अनुगमन करते हुए निकलेगा	अश शम्स	3	1259
समस्त नबियों का द्योतक आविर्भूत होगा	सूर: परिचय		1184
	अल मुर्सलात	12	1203
	सूर: परिचय		1201
‘याज़ूज’ और ‘माज़ूज’ का प्रभुत्व	अल अम्बिया	97	611
	अल कहफ़	95	556
Genetic Engineering (आनुवंशिकी इंजीनियरिंग) के आविष्कार की भविष्यवाणी	अन निसा	120	168
आने वाले युग में पुरातत्त्वज्ञान की महत्वपूर्ण उन्नति और मनोविज्ञान की जानकारी पर ज़ोर	अल आदियात	टीका 10-11 टीका	1283

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
खगोल विज्ञान की उन्नति	अत तक्वीर	12	1225
	अर रहमान	38 टीका	1064
धरती की सीमाएँ फैलेंगी	अल इन्शिकाक़	4	1235
दो पूर्वी दिशाओं और दो पश्चिमी दिशाओं का वर्णन और आने वाले युग की महत्वपूर्ण खोज के संबंध में भविष्यवाणी	अर रहमान	18 टीका	1061
मनुष्य इस ब्रह्माण्ड को लांघने का प्रयास करेगा	अर रहमान	34	1063
समुद्रों को परस्पर मिलाया जाएगा	अर रहमान	20	1062
प्रशांत महासागर और अतलांतिक महासागर की मध्यवर्ती रोक को हटाया जाएगा	अल फुर्कान	54 टीका	680
सुएज़ नहर बनाये जाने की भविष्यवाणी	अर रहमान	20-23	1062
	टीका		1062
भू-गर्भ विज्ञान की उन्नति	अल इन्शिकाक़	5	1235
	सूर: परिचय		1234
क्रबों में गड़े रहस्य ज्ञात किये जायेंगे	अल इन्फ़ितार	5	1228
	अल आदियात	10	1283
धरती अपना बोझ (खज़ाना) उगल देगी	अज़ ज़िलज़ाल	3	1281
नूह की नौका सुरक्षित है और समय आने पर निकाल ली जाएगी	अल क्रमर	14-16	1053
		टीका	
पहाड़ों के समान समुद्री जहाज़ बनेंगे	अर रहमान	25	1062
	अश शूरा	33	950
समुद्रों में जहाज़रानी बहुत होगी	सूर: परिचय		1222
युद्धों में पनडुब्बियों के प्रयोग की भविष्यवाणी	सूर: परिचय		1212
ऊँट बेकार हो जाएँगे	अत तक्वीर	5	1224
	सूर: परिचय		1222
अधिक संख्या में पुस्तकों का प्रकाशन होगा	अत तक्वीर	11	1224
कुरआन अधिकता पूर्वक लिखा जाएगा	अत तूर	3	1037
आने वाले युग की सभ्य जातियों का वर्णन	अत तक्वीर	9,10	1224
पीड़ित अहमदियों के बारे में भविष्यवाणी कि उनके घर जलाये जाएँगे	अल बुरूज	5-8	1239
		टीका	
लड़कियों को ज़िंदा गाड़ने की प्रथा समाप्त होने की भविष्यवाणी	अत तक्वीर	9	1224
चिड़ियाघरों का रिवाज	सूर: परिचय		1222

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
संसार की सभी जातियों का परस्पर संबंध	अत तक्वीर	6	1224
आसमानों पर चलने फिरने वाली सृष्टि धरती	अत तक्वीर	8	1224
की सृष्टि के साथ एक दिन एकत्रित कर दी जाएगी	अश शूरा	30	949
धरती पर अवस्थित कुछ ईश्वरीय साक्ष्यों का वर्णन	सूर: परिचय		1036
भविष्य में ऐसी जातियाँ होंगी जिन का शासन	अल फ़लक़	5 टीका	1304
Divide and Rule (फूट डालो और राज करो) के सिद्धांत पर आधारित होगा	सूर: परिचय		1303
अंत्ययुग में यहूदियों और ईसाइयों का भ्रम उत्पन्न करना	अन नास	5-7	1306
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया गया कि सूर: अद दुखान की भविष्यवाणियों का प्रकटन दज्जाल के युग में होगा	सूर: परिचय		969
विश्वयुद्धों का विवरण	अर रहमान	40 टीका	1064
आकाश से अग्निवर्षा	अर रहमान	36	1063
परमाणु आक्रमणों की भविष्यवाणी	अल मआरिज	9,10	1163
परमाणु धूँ की ओर इशारा	सूर: परिचय		969
	अद दुखान	11	971
परमाणु युद्ध में आकाश रेडियो तरंगों का विकिरण करेगा	सूर: परिचय		1202
आकाश घोर प्रकंपित होगा	सूर: परिचय		1036
नयी सवारियाँ आविष्कार होंगी	अन नहल	9	489
आकाश पर उड़ने वाले जहाज़ों के संबंध में भविष्यवाणी	सूर: परिचय		1070
लड़ाकू विमानों की भविष्यवाणी	सूर: परिचय		858
लड़ाकू विमान शत्रुओं पर बहुत पर्वे गिरावेंगे जिन पर संदेश लिखे होंगे	सूर: परिचय		858
द्रुतगामी जहाज़ों की भविष्यवाणी	अल मुर्सलात	3	1203
	सूर: परिचय		1201
तीन विभागों वाली अग्नि का तात्पर्य	अल मुर्सलात	31	1205
	सूर: परिचय		1201

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
म			
मकड़ी			
मकड़ी के जाले का उदाहरण	अल अन्कबूत	42	759
मकड़ी के जाले का उदाहरण देने का निहितार्थ	सूर: परिचय		750
मकड़ी के धागे में और जाल में शक्तिहीनता	सूर: परिचय		750
मक्का-विजय			
मक्का-विजय के बारे में समय से पूर्व भविष्यवाणी	अल क़सस	86	748
	अल बलद	3	1256
	अन नस्र	2,3	1300
मधु / मधुमक्खी			
मधुमक्खी की ओर वहइ	अन नह्ल	69	499
मधुमक्खी के उदाहरण से वहइ की महत्ता का वर्णन	सूर: परिचय		485
मधु में आरोग्य तत्व है	अन नह्ल	70	499
मधुमक्खी और उसके मधु में सोच-विचार करने	अन नह्ल	70	499
वालों के लिए अनेक चिह्न हैं			
मधुमक्खी ऐसे दास के समान है जिसे उत्तम	सूर: परिचय		485
जीविका दी गई हो जिसे वह आगे भी बाँटे			
मनुष्य			
अल्लाह ने मनुष्य को अपनी प्रकृति के अनुरूप	अर रूम	31	772
पैदा किया है			
मनुष्य जन्म का उद्देश्य	अज़ ज़ारियात	57	1034
मनुष्य से उत्कृष्ट सृष्टि पैदा करने पर अल्लाह	अल मआरिज	41,42	1166
सक्षम है			
प्रत्येक मनुष्य से वचन लिया गया है कि वह अपने	अल हदीद	9	1083
रब्ब पर ईमान लाये			
मनुष्य में दुराचारों और सदाचारों में प्रभेद करने	अश शम्स	9	1259
की क्षमता			
दो ऊँचे रास्तों की ओर मनुष्य का मार्गदर्शन	अल बलद	11	1256
	सूर: परिचय		1255
मनुष्य अपने कर्म में स्वतंत्र है	हामीम अस सज़द:	41	935
मनुष्य की बढ़ाई और सम्मान	बनी इस्राईल	71	528
अल्लाह ने मनुष्य को जन्म देकर उसे अभिव्यक्त	अर रहमान	4,5	1060
करने की शक्ति प्रदान की			

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अल्लाह मनुष्य पर उसकी शक्ति से बढ़कर बोझ नहीं डालता	अल मुमिनून	63	643
	अत तलाक़	8	1134
	अल बक्रर:	234,287	64,84
मनुष्य की तीन श्रेणी	फ़ातिर	33	841
1. स्वयं पर अत्याचारी			
2. मध्यमार्गी			
3. नेकियों में अग्रगामी			
मनुष्य स्वयं के बारे में भली-भाँति जानता है	अल क्रियाम:	15	1193
मनुष्य को वही प्राप्त होता है जिसके लिए वह प्रयास करता है	अन नज्म	40	1048
मनुष्य को परिश्रम करने से छुटकारा नहीं	अल बलद	5	1256
मनुष्य भलाई माँगने से नहीं थकता	हामीम अस सज्द:	50	938
मनुष्य को कष्ट पहुँचता है तो वह बहुत दुआयें करता है	यूनस	13	370
	अज़ जुमर	9,50	893,901
	हामीम अस सज्द:	52	939
मनुष्य पर जब नेमत उतरती है तो वह मुँह फेरने लगता है	हामीम अस सज्द:	52	938
मनुष्य बुराई को ऐसे माँगता है जैसे भलाई माँग रहा हो	बनी इस्राईल	12	517
मनुष्य की प्रकृति में उतावलापन है	अल अम्बिया	38	602
मनुष्य को लालची पैदा किया गया है	अल मआरिज	20	1164
मनुष्य बड़ा कंजूस बना है	बनी इस्राईल	101	533
मनुष्य का जन्म, मरण और पुनरुत्थान इसी धरती से संबद्ध होने का तात्पर्य	ताहा	56 टीका	581
मनुष्य की सृष्टि और विकास			
मनुष्य जन्म से सूर्य कुछ न था	मरियम	68	570
जल से मनुष्य की उत्पत्ति	अन नूर	46	664
	अल फुर्कान	55	680
	अल मुर्सलात	21	1204
	अत तारिक़	7	1243
मिट्टी से मनुष्य की उत्पत्ति	आले इम्रान	60	99
	अल हज्ज	6	617
	अर रूम	21	770

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
गीली मिट्टी से मनुष्य की उत्पत्ति	फ़ातिर	12	837
	अल मु'मिन	68	921
	अल अन्आम	3	225
	अस सज्दः	8	792
	साद	72	887
चिमट जाने वाली मिट्टी से उत्पत्ति	अल मु'मिनून	13	637
	अस साफ़फ़ात	12	861
	अल हिज़्र	27	476
गले सड़े कीचड़ से उत्पत्ति	अल हिज़्र	34	477
	अल हिज़्र	27	476
	अर रहमान	15	1061
वीर्य से मनुष्य की उत्पत्ति	अन नह्ल	5	488
	या सीन	78	856
	अल क्रियामः	38	1194
	अ ब स	19,20	1220
	अद दहर	3	1197
मिश्रित वीर्य से उत्पत्ति	अल अलक़	3	1273
चिमट जाने वाले लोथड़े से मनुष्य की उत्पत्ति	नूह	18	1170
मनुष्य पर वानस्पत्य युग	टीका		1171
	टीका		945
	अल हज़्ज	6	617
गर्भाशय में मनुष्य उत्पत्ति के विभिन्न चरण	अल मु'मिनून	13-15	637
	सूरः परिचय		780
	अज़ जुमर	7	892
तीन अंधकारों में उत्पत्ति	सूरः परिचय		889
	अल मु'मिनून	15	637
	अन निसा	2	133
गर्भाशय में मनुष्य उत्पत्ति का अन्तिम चरण	अन नज़्म	46	1049
एक जान से जोड़ा बनाना	अल इन्फ़ितार	8	1228
मनुष्य की पुरुष और स्त्री के रूप में उत्पत्ति			
मनुष्य उत्पत्ति के तीन चरण :- उत्पत्ति, बराबर करना और व्यवस्थित करना			
मनुष्य के क्रमबद्ध रूप से विकास का वर्णन	सूरः परिचय		1269
	अत तीन	5,6	1270
		टीका	

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
	अत तगाबुन	4	1127
	नूह	15-19	1170
‘नीच बंदर’ मनुष्य विकास सिद्धांत के संबंध में कुरआन की सच्चाई का एक चिह्न	अल बक्रर:	66 टीका	17
प्रारंभिक विकास के युग का वर्णन	सूर: परिचय		1196
विकास के क्रम में सर्वप्रथम श्रवणशक्ति फिर दृष्टिशक्ति और फिर हृदय प्रदान किया जाना	अल मु’मिनून	79	645
मनुष्य उत्पत्ति का महत्वपूर्ण युक्ति और गूढ़ रहस्य	सूर: परिचय		1058
मनुष्य के DNA (डी.एन.ए.) में कंप्यूटरीकृत प्रोग्राम	सूर: परिचय		1070
क्लोरोफिल (हरितकी) का मनुष्य उत्पत्ति से संबंध	सूर: परिचय		224
आकाश गंगाएँ (Galaxies) भी मनुष्य जीवन पर प्रभाव डालती हैं	सूर: परिचय		780
धरती पर यदि प्राणीवर्ग न होते तो मनुष्य का जीवित रहना असंभव था	सूर: परिचय		485
प्रत्येक जान को अल्लाह ने न्यायपूर्वक उत्पन्न किया है	अन नहल	62	498
मनुष्य में भले-बुरे में भेद करने की शक्ति वहाँ और ईशवाणी की देन है	सूर: परिचय		1258
मनुष्य-उन्नति का युग लेखनी के आधिपत्य से आरंभ होता है	अश शम्स	9	1259
प्रारंभ में एक ही भाषा थी और सभी मनुष्यों का रंग भी एक था	सूर: परिचय		1149
मनुष्य ‘लघुब्रह्मांड’ (Micro Universe) है	टीका		770
प्रत्येक मनुष्य के आगे पीछे उसके गुप्त रक्षक मौजूद हैं (एक विज्ञान संबंधी विषय)	सूर: परिचय		976
	सूर: परिचय		445
मस्जिद			
मस्जिदें विशुद्ध रूप से अल्लाह की उपासना के लिए होती हैं	अल जिन्न	19	1177
मस्जिद और अन्य पूजास्थलों का सम्मान	अल हज्ज	41	625
मस्जिद जाने की विधि	अल आ’राफ़	32	273
मस्जिद को स्वच्छ और पवित्र रखा जाए	अल बक्रर:	126	33
मस्जिद से रोकना सब से बड़ा अत्याचार है	अल बक्रर:	115	30

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
मस्जिद-ए-हराम से मस्जिद-ए-अक्सा की ओर रात्रि-विचरण	बनी इस्राईल	2	515
कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से निर्मित मस्जिद को गिराने का निहितार्थ	अत तौब:	107	360
मुनाफ़िक़			
मुनाफ़िक़ का परिचय	अन निसा	144	175
मुनाफ़िक़ आज्ञापलन का दावा केवल मुँह से करता है	अन निसा	82	157
मुनाफ़िक़ों के दिल की हालत से अल्लाह अवगत है	अन निसा	64	153
मुनाफ़िक़ों की अल्लाह और रसूल से घृणा	अन निसा	62	152
मुनाफ़िक़ों की मुसलमानों को धर्मभ्रष्ट करने की चेष्टा	अन निसा	90	160
मुनाफ़िक़ों का अफवाह फैलाना	अन निसा	63	153
मुनाफ़िक़ों की उपासना में सुस्ती	अन निसा	143	174
मुनाफ़िक़ों के लिए पीड़ाजनक अज़ाब है	अन निसा	139	173
	अन निसा	146	175
मुनाफ़िक़ों की ओर से हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर ख़यानत और बेईमानी का आरोप	सूर: परिचय		332
हज़रत मुहम्मद सल्ल. को मुनाफ़िक़ों की नमाज़-जनाज़: पढ़ने और उनके लिए दुआ करने की मनाही	अत तौब:	84	354
मुनाफ़िक़ों का भय कि कहीं उनके बारे में कुरआन में आयत न उतर जाये	अत तौब:	64	349
मुबाहल:			
(एक दूसरे के विरुद्ध अमंगल की प्रार्थना करना)			
ईसाइयों को मुबाहल: की चुनौती	आले इम्रान	62	99
यहूदियों को मुबाहल: की चुनौती	अल जुमुअ:	7	1120
मुश्रिक			
कृत्रिम उपास्यों के मुक्ति-माध्यम होने का खंडन	सूर: परिचय		889
अपवित्रता से अभिप्राय मक्का के मुश्रिक	सूर: परिचय		1184
मुश्रिक भी शरण मांगें तो उन्हें शरण दो	अत तौब:	6	335
शिरक की अवस्था में मृत्यु प्राप्त करने वाले मुश्रिकों के लिए नबी और मोमिन क्षमा-प्रार्थना न करें	अत तौब:	113	362
मूर्तिपूजा का खंडन			
मूर्तिपूजा करना मूर्खता है	अल आ'राफ़	139	295
मूर्तिपूजा से बचने की दुआ	इब्राहीम	36	467

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
मूर्तिपूजा करना पथभ्रष्टता है	अल अन्आम	75	240,241
मूर्तिपूजा के विरुद्ध तर्क	अश शुअरा	71-78	694
मूर्तिपूजा की वास्तविकता को उजागर करने के लिए हज़रत इब्राहीम अलै. का अनूठा उपाय	अल अम्बिया	59-64	605
मूर्तियों की अपवित्रता से बचने का निर्देश	अल हज्ज	31	623
मूर्तिपूजा से परहेज़ करने का निर्देश	अन नह्ल	37	494
मूर्तिपूजा करना वस्तुतः झूठ गढ़ना है	अल अन्कबूत	18	753,754
क्रयामत के दिन मूर्तिपूजक परस्पर ला'नत डालेंगे और उनका ठिकाना आग होगा	अल अन्कबूत	26	755
मूर्तिपूजकों पर अल्लाह की ला'नत	अन निसा	52,53	150
मूर्तिपूजा से परहेज़ करने और अल्लाह की ओर झुकने वालों के लिए शुभ समाचार	अज़ जुमर	18	895
मूर्ति अल्लाह तक पहुँचाने का माध्यम कदापि नहीं	सूर: परिचय		889
मूर्तिपूजा वस्तुतः शैतान की उपासना है	अन निसा	118	168
मृत्यु			
प्रत्येक मनुष्य के लिए मृत्यु अनिवार्य है	अन निसा	79	157
	अल अम्बिया	35	601
मरने के बाद मनुष्य इस लोक में नहीं आ सकता	अल मु'मिनून	101	648
दो मृत्यु और दो जीवन का तात्पर्य	अल मु'मिन	12	911
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के द्वारा आध्यात्मिक मुर्दों को जीवनदान	अल अन्फ़ाल	25	318
हज़रत ईसा अलै. का आध्यात्मिक मुर्दों को जीवित करना	आले इम्रान	50	96
नींद भी एक प्रकार की मृत्यु है	सूर: परिचय		890
वैज्ञानिक मुर्दों को जीवित नहीं कर सकेंगे	सूर: परिचय		596
निश्चित अवधि के पूर्व या बाद की मृत्यु	अल अन्आम	3 टीका	225
मृत्यु के बाद जी उठने तक के समय की दीर्घता	सूर: परिचय		635
मृत्यु के बाद जीवन			
अल्लाह ही मृत्यु के बाद जीवित करने पर समर्थ है	अल क़ियाम:	41	1195
	या सीन	13	848
	अश शूरा	10	944
अल्लाह ही जीवित करता है और मृत्यु देता है	अल बक्कर:	259	74
	आले इम्रान	157	121

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
	अल आ'राफ़	159	301
	यूनुस	57	380
	अल हिज़्र	24	475
	अल हज़्ज	7	618
	क्राफ़	44	1025
	अन नज़्म	45	1049
मरने वाले जीवित होकर इस लोक में नहीं लौटते	अल अम्बिया	96	611
	या सीन	32	850,851
मृत्यु के बाद जीवित होने की वास्तविकता	अल अन्'आम	123	252
मृत्यु के बाद जीवित होने की वास्तविकता को जानने के लिए हज़रत इब्राहीम अलै. की जिज्ञासा	अल बक्रर:	261	75
हज़रत मुहम्मद सल्ल. के द्वारा पुनरुज्जीवन	टीका		
मुसलमानों के लिए महत्वपूर्ण शुभ समाचार	अल अन्फ़ाल	25 टीका	318
हज़रत ईसा अलै. का आध्यात्मिक मुद्दों को जीवित करना	सूर: परिचय		1143
स्पष्ट युक्ति के द्वारा आध्यात्मिक मुद्दों का पुनरुज्जीवन	आले इम्रान	50	96
पवित्र जीवन प्राप्ति के उपाय	अल अन्फ़ाल	43	323
दो बार मरना और दो बार जीवित होना	अन् नहल	98	505
परलोक में पुनः जीवन प्राप्ति	अल मु'मिन	12	911
एक व्यक्ति को सौ वर्ष तक मृत्यु देने के पश्चात पुनर्जीवित करने का तात्पर्य	अल हज़्ज	67	630
	अल बक्रर:	260	74
मे'राज			
हज़रत मुहम्मद सल्ल. का मे'राज	अन नज़्म	14	1046
मे'राज आध्यात्मिक था	अन नज़्म	12	1045
	सूर: परिचय		1044
य			
यहूदी मत			
यहूदियों की बुराइयाँ जो उनमें उनकी निर्दयता के दिनों में घर कर गई थीं	सूर: परिचय		512
'अभिषिप्त वृक्ष' से अभिप्राय यहूदी	सूर: परिचय		513
यहूदियों की प्रतिज्ञा की तुलना में नबियों की प्रतिज्ञा का वर्णन	सूर: परिचय		85
	टीका		104

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अंत्ययुग में यहूदियों का फ़िलिस्तीन पर अधिकार और फिर वहाँ से निकाले जाने की भविष्यवाणी	सूर: परिचय		512
यहूदियों का दावा कि उनके अतिरिक्त कोई स्वर्ग का अधिकारी नहीं	अल बक्रर:	112	30
यहूदियों के ब्याज खाने और लोगों के धन हरण करने और अत्याचार करने का दंड	अन निसा	161, 162	179 180
प्रथम एकत्रिकरण के समय यहूदियों को दंड	सूर: परिचय		1098
यहूदियों की ईसाइयों के साथ क्रयामत तक शत्रुता रहेगी	अल माइद:	15	192
यहूदियों और ईसाइयों की सामुहिक चेष्टाओं का सार	सूर: परिचय		1305
याजूज माजूज			
याजूज माजूज के आक्रमणों से बचाव के लिए जुल-क़र्नैन का प्राचीर निर्माण	अल कहफ़	95-97	556
याजूज और माजूज का विजयारंभ	अल अम्बिया	97	611
याजूज और माजूज के आपसी युद्ध	अल कहफ़	100	557
याजूज माजूज के युग में वैज्ञानिक मुद्दों को जीवित करने में सफल नहीं हो पायेंगे	सूर: परिचय		596
युद्ध/जिहाद			
केवल प्रतिरक्षात्मक युद्ध उचित है	अल बक्रर:	191,192	50-51
	अल हज्ज	40	625
युद्ध का उद्देश्य धार्मिक स्वतंत्रता की स्थापना है	अल बक्रर:	194	51
युद्ध में किसी प्रकार का अत्याचार उचित नहीं	अल बक्रर:	191	50
	अन नह्ल	127	510
युद्ध में समझौतों का पालन करना अनिवार्य है	अत तौब:	4	334
युद्ध में शत्रु से भी न्याय करना आवश्यक है	अल माइद:	9	191
यदि शत्रु संधि की ओर आगे बढ़े तो संधि कर लेनी चाहिए	अल अन्फ़ाल	62	328
भयभीत होकर संधि करने की मनाही	मुहम्मद	36	1002
दो जातियों के युद्ध को रोकने के लिए सामुहिक प्रयास करने का निर्देश	अल हुजुरात	10	1016
			1017
खूनी युद्ध के बिना युद्धबंदी बनाना उचित नहीं	अल अन्फ़ाल	68	329
युद्धबंदियों को मुक्तिमूल्य लेकर अथवा दया पूर्वक छोड़ दिया जाये	मुहम्मद	5	995

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
राष्ट्रीय सीमाओं पर छावनियाँ बनाने का निर्देश	आले इम्रान	201	131
यथाशक्ति युद्ध की तैयारी रखनी चाहिए	अल अन्फाल	61	327
मुकाबला पूरे ज़ोर और वीरता के साथ करनी चाहिए	अल अन्फाल	58	327
अल्लाह के रास्ते में युद्ध में मरने वाले शहीद होते हैं	आले इम्रान	141	116
अल्लाह के रास्ते में युद्ध के लिए धैर्य अत्यावश्यक है	आले इम्रान	142	117
अल्लाह के रास्ते में शहीद होने वालों का दर्जा	अल बक्रर:	155	41
	आले इम्रान	170	124
शत्रु के साथ भीषण युद्धों और उनके परिणाम	सूर: परिचय		132
स्वरूप उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों का समाधान			
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और	सूर: परिचय		1282
आप के सहाबियों के प्रतिरक्षात्मक युद्धों का वर्णन			
अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने का आदेश	अल हज्ज	79	632
अंतरात्मा के साथ जिहाद (अर्थात प्रयत्न) और	अल अन्कबूत	70	764
उसके फलाफल			
कुरआन के द्वारा जिहाद करना बड़ा जिहाद है	अल फुर्कान	53	680
धन के द्वारा जिहाद	अल अन्फाल	73	330
तलवार के द्वारा जिहाद	अल हज्ज	40	625
	सूर: परिचय		615
युद्ध की अनिवार्यता	अल बक्रर:	217	57
	अल हज्ज	79	632
	अत तौब:	73	351
अल्लाह के रास्ते में युद्ध करने वालों से अल्लाह	अस सफ़्फ़	5	1113
प्रेम करता है			
जिहाद के लिए तैयार किये गये घोड़ों के माथों में	सूर: परिचय		876
क्रयामत तक के लिए बरकत			
जिहाद में भाग लेने वाले घोड़ों का वर्णन	अल आदियात	2-6	1283
युद्ध में बंदी होने वालों के अधिकार	अन नूर	33,34	660
मोमिनों को ज़बरदस्ती धर्मच्युत करने वालों के	अल बक्रर:	194	51
विरुद्ध युद्ध की अनुमति	टीका		
	अल बक्रर:	218	58
	अल अन्फाल	40 टीका	322
इज़ज़त वाले महीनों में प्रतिरक्षात्मक युद्ध की	अल बक्रर:	195,218	51,58
अनुमति			

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
मस्जिद-ए-हराम में युद्ध	अल बकर:	192	51
दरिद्रता के बावजूद सहाबियों का जिहाद में सम्मिलित होने का उत्साह	अत तौब:	92	356
बीमार और अपाहिज को युद्ध में शामिल न होने की छूट	अल फ़त्ह	18	1008
हज़रत मुहम्मद सल्ल. के इनकार के परिणाम स्वरूप भीषण युद्ध होंगे	सूर: परिचय		614
दुनिया के सभी युद्ध धन के कारण लड़े जाते हैं	सूर: परिचय		1282
एक विश्वयुद्ध के बाद अगला विश्वयुद्ध नई तबाही लेकर आयेगा	सूर: परिचय		969
इस्लाम के विरुद्ध युद्ध भड़काने वाले अपमानित होंगे	सूर: परिचय		1301
हज़रत मुहम्मद सल्ल. और आपके साथी कदापि युद्ध नहीं करते यदि युद्ध के द्वारा उनका धर्म परिवर्तित करने की चेष्टा न की जाती	सूर: परिचय		313
युद्धलब्ध धन का विवरण	अल अन्फ़ाल	42	323
बद्र युद्ध			
बद्र युद्ध के समय मुसलमान बहुत कमज़ोर थे	आले इम्रान	124	113
इस अवसर पर मुनाफ़िकों का आचरण	अल अन्फ़ाल	50,51	325 326
मोमिनों को काफ़िर अल्प संख्या में दिखाये जाने का यथार्थ	अल अन्फ़ाल	44,45	323 324
बद्र युद्ध में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं के फलस्वरूप विजय मिली	सूर: परिचय		312
उहद युद्ध			
हज़रत मुहम्मद सल्ल. का सहाबियों को रणक्षेत्र के महत्वपूर्ण स्थानों पर बैठाना	आले इम्रान	122	113
उहद युद्ध में हज़रत इस्माईल अलै. की कुर्बानी की याद ताज़ा हुई	सूर: परिचय		85
युद्ध के समय सहाबियों के मतभिन्नता का नुकसान	आले इम्रान	153	119
खंदक / अहज़ाब युद्ध			
काफ़िरों ने चारों ओर से आक्रमण किया	अल अहज़ाब	11	802
आंधी का चलना काफ़िरों की पराजय का कारण बना	अल अहज़ाब	10	802
अल्लाह की चमत्कारिक सहायता	सूर: परिचय		797
अहज़ाब युद्ध में विजय की भविष्यवाणी	अल अहज़ाब	23	804

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
	साद	12	878
	अल क़मर	46	1057
	टीका		363
तबूक युद्ध			
हुनैन युद्ध			
अल्लाह की सहायता	अत तौबः	25	339
रसूल और मोमिनों पर शांति वर्षण	अत तौबः	26	339
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ के कारण विजय मिली	सूरः परिचय		332
भविष्यकालीन युद्ध			
भविष्य में होने वाले युद्धों को साक्षी ठहराना	अज ज़ारियात	2-4	1029
भविष्य के युद्धों में पनडुब्बियों का उपयोग होगा	अन नाज़ियात	2-5	1214
	सूरः परिचय		1212
परमाणु युद्धों में आकाश से रेडियो तरंगें विकिरण होंगी	सूरः परिचय		1202
भविष्य के युद्ध तीन प्रकार के होंगे	अल मुर्सलात	31	1205
	सूरः परिचय		1201
र			
रहबानिय्यत			
(आजीवन बह्मचारी रहना)			
रहबानिय्यत अप-संस्कार है	अल हदीद	28	1088
रोज़ा (उपवास)			
रमज़ान की महिमा	अल बक्ररः	186	48
रमज़ान के रोज़े अनिवार्य हैं	अल बक्ररः	184	47
रमज़ान के रोज़े पूरे एक माह रखने अनिवार्य हैं	अल बक्ररः	186	48
रोज़े का समय	अल बक्ररः	188	49
रोज़े रखना भलाई का कारण है	अल बक्ररः	185	48
बीमार और यात्री के लिए छूट	अल बक्ररः	186	48
रोज़े की क्षतिपूर्ति : एक दरिद्र को भोजन कराना	अल बक्ररः	185	48
रोज़ों की रातों में पत्नी-संसर्ग की अनुमति	अल बक्ररः	188	49
ए'तिकाफ़ में पत्नी-संसर्ग वर्जित है	अल बक्ररः	188	49
ल			
लेखनी			
लेखनी और दवात की क़सम	अल क़लम	2	1150

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अल्लाह तआला ने लेखनी के द्वारा ज्ञान प्रदान किया	अल अलक़	5	1273
मनुष्य की उन्नति का रहस्य लेखनी में है	सूर: परिचय		1272
मनुष्य की सभी उन्नतियों का दौर लेखनी के प्रभुत्व से आरंभ होता है	सूर: परिचय		1149
यदि दुनिया के सारे पेड़ लेखनी बन जायें तो भी अल्लाह के वाक्य लिखित में नहीं लाये जा सकते	अल कहफ़	110	558
लैल-तुल क़द्र (मंगलमयी रात्रि)			
लैल-तुल-क़द्र का एक अर्थ कुरआन अवतरण का युग	अल क़द्र	2	1276
	सूर: परिचय		1275
	अद दुख़ान	4	970
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के युग की सर्वाधिक अंधकारमय रात्रि का वर्णन	सूर: परिचय		1275
लैल-तुल-क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है	अल क़द्र	4	1276
उषाकाल के उदय तक फ़रिश्तों का अवतरण	अल क़द्र	5	1276
व			
वहड़ और इल्हाम			
मनुष्य के साथ ईश्वरीय वार्तालाप की तीन स्थितियाँ	अश शूरा	52	953
	सूर: परिचय		942
मनुष्य में भले-बुरे में प्रभेद करने की क्षमता उसकी प्रकृति में रख दी गई है	अश शम्स	8,9	1259
वहड़ और इल्हाम सदा जारी रहेंगे	हामीम अस सज्द:	31-32	933
मूसा अलै. की माँ की ओर वहड़	ताहा	39,40	579
	अल क़सस	8	732
हवारियों की ओर वहड़	अल माइद:	112	220
मधुमक्खी की ओर वहड़	अन नहल	69	499
आसमानों की ओर वहड़	हामीम अस सज्द:	13	929
धरती की ओर वहड़	अज़ ज़िलज़ाल	6	1281
अल्लाह की वहड़ में शैतान हस्तक्षेप नहीं कर सकता	अश शुअरा	211-213	705
विज्ञान			
सृष्टि का आरंभ	सूर: परिचय		595
यह ब्रह्मांड हर क्षण विस्तारशील है	अज़ ज़ारियात	48 टीका	1033

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
प्रत्येक वस्तु को जोड़ा-जोड़ा उत्पन्न किया गया है	अज्ञ ज़ारियात	50	1033
	सूर: परिचय		446
	या सीन	37	851
समग्र सृष्टि को जोड़े की आवश्यकता है	सूर: परिचय		845
पदार्थ का हर कण जोड़ा-जोड़ा बनाया गया है	टीका		945
जीवधारियों और उद्भिदों के जोड़े होने के साथ-	सूर: परिचय		446
साथ अणु परमाणुओं के भी जोड़े हैं			
अणु और परमाणु के भी जोड़े-जोड़े होते हैं	सूर: परिचय		846
द्रव्य (Matter) का जोड़ा प्रतिद्रव्य (Anti-matter) है	सूर: परिचय		446
ब्रह्मांड में गुरुत्वाकर्षण	सूर: परिचय		445
वर्तमान कालीन ब्रह्मांड की आयु	सूर: परिचय		1161
	सूर: परिचय		789
पदार्थ के चार मौलिक रासायनिक संयोजन	सूर: परिचय		833
क्लोरोफिल (Chlorophyll) का मनुष्य जन्म से संबंध	सूर: परिचय		224
पक्षियों की आश्चर्यजनक बनावट	सूर: परिचय		486
धरती के लिए पानी की उपलब्धता की विचित्र व्यवस्था	सूर: परिचय		445
धरती से पानी लुप्त होने की दो स्थिति	सूर: परिचय		634
हरे-भरे पेड़ों से भी आग उत्पन्न हो सकती है	सूर: परिचय		846
नये आविष्कारों के द्वारा फ़रिश्तों के रहस्य को जानने की मनुष्य की चेष्टा	सूर: परिचय		858
रेडियो तरंगें प्रत्येक वस्तु को नष्ट कर देती हैं	सूर: परिचय		984
मकड़ी के धागे की शक्ति और उससे निर्मित जाल की कमज़ोरी	सूर: परिचय		750
मुर्दों को जीवित करने में विज्ञान सफल नहीं होगा	सूर: परिचय		596
छोटे से कण में आग के बंद होने का वर्णन	सूर: परिचय		1291
परमाणु बम विस्फोट से निकलने वाली रेडियो तरंगें हृदय गति बंद कर देती हैं	सूर: परिचय		1291
क्रयामत तक समाप्त न होने वाली उर्जा	सूर: परिचय		471
परमाणु युद्ध की भविष्यवाणी, जब आकाश रेडियो तरंगें बरसाएगा	सूर: परिचय		969

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
‘दुखान’ (धुआँ) से तात्पर्य परमाणु धुआँ	सूर: परिचय		969
अमेरिका की खोज से नये विज्ञान युग का आरंभ	सूर: परिचय		1234
गुप्त कार्यवाहियाँ करके पलट जाने वाली नौकाओं को गवाह ठहराना	सूर: परिचय		1223
अंत्ययुगीनों के समय की वैज्ञानिक प्रगति को गवाह ठहराना	सूर: परिचय		1201
एक ही स्थान पर होते हुए आयाम बदल जाने से दो वस्तुओं का परस्पर कोई संबंध नहीं रहता	सूर: परिचय		1080
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सापेक्षतावाद (Relativity) की कल्पना थी	सूर: परिचय		1080
सूर्य और चंद्रमा की परिक्रमा से मनुष्य को गिनती का ज्ञान हुआ	अर रहमान	6 टीका	1060
आकाशीय पिंडों के बारे में जानकारी	या सीन	39-41 टीका	851, 852
उल्का पिंडों और आकाश पर राकेटों के पहुँचने का वर्णन	अस साफ़फ़ात	7-9 टीका	860
राकेटों के द्वारा अंतरिक्ष को लांघते समय अग्निशिखाओं और धुआँ की बौछार	अर रहमान	36 टीका	1064
जब तक वैज्ञानिक आकाशीय पिंडों की शिलावृष्टि के लिए प्रतिरक्षात्मक उपाय न करें वे राकेटों में बैठ कर अंतरिक्ष की यात्रा नहीं कर सकते	सूर: परिचय		1059
धरती और आकाश में प्रविष्ट होने और बाहर निकलने वाली वस्तुओं और किरणों का वर्णन	अल हदीद	5	1082
बैक्टीरिया (अर्थात् जिन्नों) की उत्पत्ति का वर्णन	अल हिज़्र	28	476
सृष्टि के आरंभ में आकाश से बरसने वाली रेडियो तरंगों के फलस्वरूप वायरस और बैक्टीरिया का जन्म	सूर: परिचय		1058
वायरस और बैक्टीरिया भी जिन्न हैं	सूर: परिचय		1058
आयतांश “जो उसके ऊपर हो” का तात्पर्य मलेरिया के कीटाणु	अल बक्रर:	27 टीका	9
पक्षियों की विशेष बनावट की ओर संकेत	अल मुल्क	20	1146
कुरआन में आनुवंशिकी इंजीनियरिंग (Genetic Engineering) के बारे में शिक्षा	हामीम अस सज्द:	21-23 टीका	931,932

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
प्रकाश स्वतः आँख तक पहुँचता है जिसके कारण आँख देखती है	अल अन्आम	104	248
विनम्रता	टीका		
रहमान के भक्त धरती पर विनम्रता पूर्वक चलते हैं	लुकमान	19	785
	अल फुर्कान	64	682
विवाह प्रसंग			
निकाह (विवाह)			
निकाह का उद्देश्य पवित्रता प्राप्ति है	अन निसा	25	142
विधवाओं और दासियों के निकाह करवाने का आदेश	अन नूर	33	660
जिन स्त्रियों से निकाह करना मना है	अन निसा	23-25	140-142
अनाथ लड़की से न्याय न कर पाने की अवस्था में उससे निकाह न करो	अन निसा	4	133
चार स्त्रियों तक से विवाह करने की अनुमति	अन निसा	4	133
आजीवन अविवाहित रहना एक कु-संस्कार है	अल हदीद	28	1088
हक्र महर			
निकाह में हक्र महर देना अनिवार्य है	अन निसा	25	142
प्रसन्नता पूर्वक हक्र महर देना चाहिए	अन निसा	5	134
स्त्री अपनी इच्छा से हक्र महर छोड़ सकती है	अन निसा	5	134
स्त्री को स्पर्श करने से पूर्व तलाक़ देने पर हक्र महर आधा देना होगा	अल बक्रर:	238	66
यदि हक्र महर निश्चित नहीं हुआ था तो पति की आर्थिक स्थिति के अनुसार होगा	अल बक्रर:	237	65, 66
तलाक़			
तलाक़ देने का सही ढंग	अत तलाक़	2	1132
दो बार तलाक़ देकर प्रत्यावर्तन हो सकता है, तीसरी बार या तो प्रत्यावर्तन करना होगा अथवा उपकार पूर्वक विदा करना होगा और दिये गये धन को वापस नहीं लेने चाहिए	अल बक्रर:	230	62
तीसरी तलाक़ के बाद स्त्री उस पति से निकाह नहीं कर सकती जबतक दूसरे पुरुष के साथ निकाह के बाद उससे तलाक़ न हो जाये या फिर विधवा न हो जाये	अल बक्रर:	231	62

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
स्त्री को छूने से पहले तलाक़ देने का औचित्य	अल बकर:	237	65
खुलअ (स्त्री की ओर से तलाक़)			
यदि पति पत्नी अल्लाह की निर्धारित सीमा की रक्षा न कर सकें तो पृथक होने की विधि	अल बकर:	230	62
इदत (पुनर्विवाह न करने की समय सीमा)			
तलाक़ शुदा स्त्री के लिए इदत	अल बकर:	229	61
विधवा के लिए इदत	अल बकर:	235	65
रजोनिवृत्त स्त्री के लिए इदत	अत तलाक़	5	1133
इदत में सांकेतिक रूप से निकाह की पेशकश की जा सकती है, परन्तु निकाह नहीं हो सकता	अल बकर:	236	65
स्तन-पान			
शिशु को स्तन-पान कराने की समय सीमा	अल बकर:	234	64
	लुकमान	15	784
तलाक़शुदा पत्नी से शिशु को स्तन-पान कराने का नियम	अल बकर:	234	64
स्तन्य-दात्री माता और उसके स्तन से दूध पी हुई लड़की से निकाह करने की मनाही	अन निसा	24	140
ईला (क्रसम)			
पत्नियों से संबंध स्थापित न करने की क्रसम खाने वालों के बारे में आदेश	अल बकर:	227	61
ज़िहार (पत्नी को माँ कहना)			
पत्नी को माँ कहने का प्रायश्चित्त	अल अहज़ाब	5	800
	अल मुजादल:	3-5	1091
माँ और पुत्र का संबंध तो अल्लाह के बनाये हुए नियम के अनुसार होता है	अल मुजादल:	3-5	1091
लिआन (एक दूसरे को अभिशाप देना)			
पति की ओर से पत्नी पर दुष्कर्म का आरोप लगाये जाने पर धमदिश	अन् नूर	7	654
व्यर्थ बातों से परहेज़			
मोमिन व्यर्थ बातों से विमुख होते हैं	अल मु'मिनून	4	636
रहमान के भक्त व्यर्थ बातों से परहेज़ करते हैं	अल फुर्कान	73	683
व्यापार			
व्यापार में उभय पक्ष की सहमति आवश्यक है	अन निसा	30	143

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
परस्पर क्रय विक्रय करते हुए किसी को साक्षी बनाया जाये और समझौते को लिखित में लाया जाये	अल बक्रर:	283	81, 82
व्यापार करना आध्यात्मिक व्यक्तियों को नमाज़ पढ़ने और ज़कात देने से बेपरवाह नहीं करता लाभप्रद व्यापार	अन नूर	38	662
	फ़ातिर	30	840
	अस सफ़र	11,12	1115
वर्तमान युग के व्यापार का विवेचन	सूर: परिचय		1230
लेन-देन में नाप-तौल सही रखा जाये	अल अन्आम	153	261
	अल आ'राफ़	86	285
	बनी इस्राईल	36	522
	अश शुअरा	182,183	703
	अर रहमान	9,10	1060, 1061
श			
शराब और नशे की बुराई			
शराब का पाप उसके लाभ से बढ़कर है	अल बक्रर:	220	58
शराब पीना अपवित्र और शैतानी कर्म है	अल माइद:	91	213
शराब के द्वारा शैतान लोगों के मध्य शत्रुता और द्वेष उत्पन्न करना चाहता है	अल माइद:	92	213
नशे की हालत में नमाज़ पढ़ने की मनाही	अन निसा	44	147
शिष्टाचार			
हज़रत मुहम्मद सल्ल. के प्रति शिष्टाचार			
हज़रत मुहम्मद सल्ल. की महत्ता को ध्यान में रखकर अत्यन्त शिष्ट आचरण करने का आदेश	सूर: परिचय		799
आप सल्ल. को साधारण व्यक्ति के सदृश न बुलाया जाये	अन नूर	64	669
आप सल्ल. के समक्ष बढ़-बढ़ कर बातें करने की मनाही	अल हुजुरात	2	1015
आप सल्ल. के समक्ष स्वर ऊँचा करने की मनाही	अल हुजुरात	3	1015
नबी सल्ल. से विचार-विमर्श करने से पूर्व दान करना	अल मुजादल:	13,14	1094
रसूल के बुलावे को अविलंब स्वीकार करना चाहिए	सूर: परिचय		652

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
सामाजिक शिष्टाचार			
आवाज़ धीमी रखें	लुकमान	20	785
लोगों से अच्छी बात कहें	अल बक्रर:	84	22
बात-चीत न्याय पूर्वक करो	अल अनुआम	153	261
सर्वोत्कृष्ट ढंग से अपनी प्रतिरक्षा करें	हामीम अस सज्द:	35	934
किसी व्यक्ति या किसी जाति का उपहास न करें	अल हुजुरात	12	1017
चलने-फिरने के शिष्टाचार	लुकमान	20	785
रहमान के भक्त धरती पर विनम्रता पूर्वक चलते हैं	अल फुर्कान	64	682
गृह प्रवेश के शिष्टाचार	अल बक्रर:	190	50
	अन् नूर	28,29	658
सभाओं में बैठने के शिष्टाचार	अल मुजादल:	12	1094
खाने-पीने में मध्यमार्ग को अपनावें	अल आ'राफ़	32	273
उपहार लेने और देने के शिष्टाचार	अन निसा	87	159
यात्रा करने के शिष्टाचार			
यात्रा करने से पूर्व पाथेय की चिंता करनी चाहिए	अल बक्रर:	198	53
सवारी पर सवार होने की दुआ	अज़ जुख़रूफ़	14,15	958
जहाज़ या नौका पर सवार होने की दुआ	हूद	42	402
शैतान			
शैतान का नरकगामी होना	अल आ'राफ़	13	269
शैतान मनुष्य का शत्रु है	बनी इस्राईल	54	525
	फ़ातिर	7	836
शैतान का आदम को फुसलाना	अल बक्रर:	37	11
हर एक पक्के झूठे पर शैतान उतरते हैं	अश शुअरा	222-225	706
अल्लाह की वह्द में शैतान हस्तक्षेप नहीं कर सकते	अश शुअरा	211-213	705
शैतान काफ़ि़रों के मित्र हैं	अल बक्रर:	258	73
अहले किताब शैतान पर ईमान लाते हैं	अन निसा	52	150
काफ़िर शैतान के रास्ते में युद्ध करते हैं	अन निसा	77	156
मुनाफ़ि़क़ शैतान से फैसले करवाना चाहते हैं	अन निसा	61	152
स			
संतुलन			
हर ऊँचाई को संतुलन की आवश्यकता है	सूर: परिचय		1058
सृष्टि रचना में संतुलन	अल मुल्क	4	1144
	सूर: परिचय		1143

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
संधि			
हुदैबिया संधि एक स्पष्ट विजय	अल फ़तह	2	1005
हुदैबिया संधि के अवसर पर बैअत-ए-रिज़वान	अल फ़तह	19	1009
स्त्री			
स्त्री और पुरुष एक जान या वर्ग से ही पैदा किये गये हैं	अन निसा	2	133
	अन नहल	73	500
	सूर: परिचय		132
पुण्य प्राप्ति में स्त्री पुरुष दोनों समान हैं	आले इम्रान	196	130
स्त्रियों को उसी प्रकार अधिकार प्राप्त हैं जिस प्रकार उन पर ज़िम्मेदारियाँ हैं	अल बक्रर:	229	62
स्त्री पुरुषों के परिधान और पुरुष स्त्रियों के परिधान हैं	अल बक्रर:	188	49
स्त्री को खेती कहने का तात्पर्य	अल बक्रर:	224	60
	टीका		
स्त्री की कमाई पर उसी का अधिकार है	अन निसा	33	144
माँ-बाप और सगे संबंधियों के छोड़े हुए धन में स्त्रियों का अधिकार है	अन निसा	8	135
स्त्रियों से बलपूर्वक उत्तराधिकार छीनने की मनाही	अन निसा	20	139
अंत्ययुग में स्त्री के अधिकारों की ओर ध्यान	अत तक्वीर	10 टीका	1224
कन्या-जन्म पर अनुचित प्रथाओं की निंदा	अन नहल	59,60	497
केवल कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से तलाक़शुदा स्त्रियों को निकाह करने से न रोका जाये	अल बक्रर:	232	63
स्त्रियों की बैअत के विशेष बिंदु	अल मुम्तहिन:	13	1110
हज़रत मुहम्मद सल्ल. की पत्नियों को अन्य मुसलमान स्त्रियों से अधिक पवित्रता अपनाने की ताक़ीद	अल अहज़ाब	33	807
संधि, मेल-मिलाप			
मेल-मिलाप सर्वथा उत्तम है	अन निसा	129	170
यदि शत्रु संधि करने की ओर झुके तो संधि कर लेनी चाहिए	अल अन्फ़ाल	62	328
सच्चाई			
सच्चे पुरुषों और सच्ची महिलाओं के गुण	अल अहज़ाब	36	807
मोमिन झूठी गवाही नहीं देते	अल फ़ुर्क़ान	73	683

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
साफ-सीधी बात किया करो	अल अहज़ाब	71	816
	अन निसा	10	135
अल्लाह सत्य को सिद्ध करता है और असत्य का खंडन करता है	अल अन्फ़ाल	9	315
सच्चाई के सामने झूठ टिक नहीं सकता	बनी इस्राईल	82	530
सच्चाई झूठ को कुचल डालता है	अल अम्बिया	19	599
अल्लाह सत्य के द्वारा असत्य पर प्रहार करता है	सबा	49	831
अल्लाह सत्य को अपने वाक्यों से सिद्ध करता है	अश शूरा	25	948
झूठ से परहेज़ करना चाहिए	अल हज्ज	31	623
सतीत्व			
सतीत्व की रक्षा	अल मु'मिनून	6-8	636
	अन नूर	61	667
	अल मआरिज	30	1165
व्यभिचार के निकट भी न जाओ	बनी इस्राईल	33	521
विवाह की शक्ति न रखने वाले व्यक्ति स्वयं को बचाये रखें	अन नूर	34	660
मोमिन पुरुष और मोमिन स्त्री नज़रें नीची रखें	अन नूर	31, 32	659
सौंदर्य हराम नहीं है	अल आ'राफ़	33	273
महिलायें अपना सौंदर्य अनुचित ढंग से प्रकट न करें	अन नूर	32	659
सफाई और पवित्रता			
वस्त्र की स्वच्छता	अल मुद्स्सिर	5	1185
अपवित्रता से परहेज़	अल मुद्स्सिर	6	1185
मस्जिदों को स्वच्छ और पवित्र रखने की शिक्षा	अल बक्रः	126	33
	अल हज्ज	27	622
अल्लाह पवित्र व्यक्तियों को पसंद करता है	अत तौबः	108	360
मस्जिदों में जाते हुए सौंदर्य अपनाने का अर्थ	अल आ'राफ़	32	273
मैथुन के पश्चात शुद्ध-पूत होना आवश्यक है	अल माइदः	7	190
समय/दिन			
दिन (रात के विपरीत अर्थ में)	सबा	19	825
	अल हाक्कः	8	1156
दिन अर्थात् दिन और रात	आले इम्रान	42	94
	अल हज्ज	29	622
दिन, सीमित समय के अर्थ में	अल हाक्कः	25	1158

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
दिन, एक हज़ार वर्ष के अर्थ में	अल हज्ज	48	627
	अस सज्दः	6	791
दिन, पचास हज़ार वर्ष के अर्थ में	अल मआरिज	5	1163
दिन, अवधि / दीर्घ काल के अर्थ में	अल फुर्कान	60	681
	हामीम अस सज्दः	11	929
	अस सज्दः	5	791
	हूद	8	395
अल्लाह के निकट एक वर्ष बारह महीने का है	अत तौबः	36	342
‘नसी’ अर्थात सम्माननीय महीनों को आगे पीछे करना कुफ़्र है	अत तौबः	37	342
सहाबा			
(हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वे अनुगामी जिन्हें आपकी संगति प्राप्त हुई)			
संपन्नता और विपन्नता में सहाबा ने हज़रत मुहम्मद सल्ल. का साथ निभाया	अत तौबः	117	363
वह कपड़े जिन को नबी अपने साथ चिमटा कर रखता है, वे सहाबा हैं	सूरः परिचय		1184
ग़रीबी के बावजूद त्याग का अनूठा उत्साह	अत तौबः	92	356
मदीना के अनुसरियों का आदर्शमय त्याग	अल हश्र	10	1101
मुहाजिरों से प्रेम	अल हश्र	10	1101
सहाबा परस्पर भाई भाई बन गये थे	आले इम्रान	104	109
सहाबा का प्रारस्परिक प्रेम	अल फ़त्ह	30	1011
सहाबा का परस्पर ईर्ष्या से पवित्र होना	अल हिज़्र	48	478
सहाबा के गुण	अल फ़त्ह	30	1011
सहाबा की श्रेष्ठता	सूरः परिचय		266
कुर्बानियों की भाँति सहाबा को ज़िबह किया गया	सूरः परिचय		859
उहद युद्ध में सहाबा भेड़ बकरियों के समान ज़िबह किये गये परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्ल. का साथ न छोड़ा	सूरः परिचय		85
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा के प्रतिरक्षात्मक युद्धों का वर्णन	सूरः परिचय		1282
बद्र युद्ध के समय सहाबा के लिए हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आतुर दुआ	सूरः परिचय		312

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
मुहाजिर अल्लाह की कृपा और उसकी प्रसन्नता के इच्छुक हैं	अल हश्त्र	9	1101
अल्लाह तआला ने मुहाजिरों और अनुसारियों पर दयादृष्टि डाली	अत तौब:	117	363
अल्लाह उन से प्रसन्न और वे अल्लाह से प्रसन्न हैं	अत तौब:	100	358
बैअत-ए-रिज़वान में शामिल सहाबा से अल्लाह प्रसन्न हुआ	अल फ़त्ह	19	1009
सहाबा को अल्लाह का समर्थन प्राप्त था	अल मुजादल:	23	1096
जब वे गुफा में थे वह उन दोनों में से एक था	अत तौब:	40	344
व्यापार करना सहाबा को ईश्वर स्मरण से विस्मृत नहीं करता था	अन नूर	38	662
यह कहना कि व्यापार के उद्देश्य से सहाबा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अकेला छोड़ देते थे, केवल एक मिथ्यारोप है	सूर: परिचय		1117
मोमिनों के लिए आवश्यक है कि वे ईमान में आगे बढ़े हुए सहाबा के लिए क्षमा की दुआ करें और उनसे कोई द्वेष न रखें	अल हश्त्र	11	1101
अंत्ययुग में सहाबा के प्रकाश को मलिन कर दिये जाने की भविष्यवाणी	सूर: परिचय		1222
अंत्ययुगीनों में सहाबा के समरूप	अल जुमुअ:	4 टीका	1118
सहन शक्ति			
क्रोध पर नियंत्रण	आले इम्रान	135	115
सहानुभूति / उपकार			
निकट संबंधियों से सहानुभूति	बनी इस्राईल	27	520
प्रकाश्य और अप्रकाश्य रूप से भलाई की जाये	अर राद	23	452
अपनी पसंदीदा चीज़ें दी जायें	आले इम्रान	93	107
	अल बक्रर:	268	78
उपकार करने वालों से अल्लाह प्रेम करता है	अल् बक्रर:	196	52
उपकार जताया न जाये	अल बक्रर:	265	76
उपकार से पूर्व न्याय आवश्यक है	अन् नह्ल	91	504
नेकी और तक्रवा में सहयोग करो	अल माइद:	3	187
सगे संबंधियों से सहानुभूति	अर राद	22	452
	अल बक्रर:	178	46

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
माता-पिता से सद्व्यवहार	अर रूम	39	773
	बनी इस्राईल	27	520
	अन निसा	37	146
	बनी इस्राईल	24	520
	लुकमान	15	784
माता-पिता के लिए दुआ करने का आदेश	अल अन्कबूत	9	752
	अल अहकाफ़	16	988
	बनी इस्राईल	25	520
	अल अहकाफ़	16	988
	अज़ ज़ारियात	20	1030
दरिद्रों की देखभाल	अल बलद	15	1257
भूखों को भोजन उपलब्ध कराना	अद दहर	9,10	1198
पड़ोसी और अधीनस्थों से सद्व्यवहार यात्रियों से सद्व्यवहार	अन निसा	37	146
	अल बकरः	178	46
	बनी इस्राईल	27	520
	अर रूम	39	773
साम्यवाद			
जन-शक्ति अर्थात साम्यवाद का 'खन्नास' होना	सूरः परिचय		1305
	टीका		1306
सिफ़ारिश			
अल्लाह को छोड़ कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं सिफ़ारिश (का विषय) अल्लाह के अधिकार में है सिफ़ारिश केवल अल्लाह की अनुमति से होगी	अस सज्दः	5	791
	अज़ जुमर	45	900
	यूनस	4	368
	अन नबा	39 टीका	1211
	मरियम	88	572
सिफ़ारिश का अधिकार केवल उसी को प्राप्त है जिसने रहमान (अल्लाह) से वचन ले रखा है सिफ़ारिश का अधिकार केवल उसी को प्राप्त है जो 'सत्य' की गवाही दे हज़रत मुहम्मद सल्ल. का विस्तृत सिफ़ारिश क्षेत्र कुरआन के सिवा कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं होगा	अज़ जुख़रुफ़	87	968
	सूरः परिचय		367
	अल अन्आम	52	235
	ताहा	110	590
	सबा	24	826

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
क्रयामत के दिन कोई दोस्ती और सिफ़ारिश काम नहीं आयेगी	अन नज्म अल मुद्स्सिर अल बक्रर:	27 49 49,124,	1047 1188 13,32,
कल्पित उपास्यों में से कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं होगा	अल अन्आम अर रूम	255 95 14	72 245,246 769
कल्पित उपास्यों की सिफ़ारिश काम नहीं आयेगी	या सीन	24	850
अत्याचारियों और इनकार करने वालों के लिए कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं होगा	अल आ'राफ़ अल मु'मिन अश शुअरा	54 19 101	278 912 696
सांसारिक कार्यों में अच्छी सिफ़ारिश	अन निसा	86	159
सुधार-कर्म			
लोगों का सुधार	अन निसा	115	167
अच्छी बातों का आदेश देना और बुरी बातों से रोकना	आले इम्रान	111	110
लोगों से अच्छी बात करो	अल बक्रर:	84	22
परस्पर सुधार करो	अल अन्फ़ाल	2	314
सु-धारणा			
स्वर्ग			
स्वर्ग चिरस्थायी और अबाधित है	हूद	109	415
स्वर्ग और नरक की भौतिक कल्पना सही नहीं	सूर: परिचय		1080
स्वर्ग आकाश के ऊपर किसी पृथक स्थान पर नहीं है	आले इम्रान	134	115
यदि समग्र ब्रह्मांड में स्वर्ग ही फैला हुआ है तो नरक कहाँ है ? हज़रत मुहम्मद सल्ल. का उत्तर	टीका		
अहंकारी स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेंगे	सूर: परिचय		1080
स्वर्ग से निकलने का वास्तविक अर्थ	अल आ'राफ़	41	275,276
स्वर्ग और नरक वासियों का तुलनात्मक वर्णन	सूर: परिचय		266
स्वर्गवासियों के विशेष गुण	सूर: परिचय		1230
स्वर्गवासियों का आलंकारिक वर्णन	सूर: परिचय		1196
स्वर्ग का आलंकारिक वर्णन	सूर: परिचय		1069
अंत्ययुग में स्वर्ग को मुत्तकियों के निकट कर दिया जाएगा	सूर: परिचय		1059
	क्राफ़	32	1024

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
ह			
हज्ज			
समर्थ व्यक्ति के लिए हज्ज की अनिवार्यता	आले इम्रान	98	108
निर्धारित महीना की निर्दिष्ट तिथियों में हज्ज होता है	अल बक्रर:	198	53
हाजी को जिन बातों से बचना चाहिए	अल बक्रर:	198	53
हज्ज के धार्मिक कृत्य			
सफ़ा और मरवा पहाड़ की परिक्रमा	अल बक्रर:	159	41
अरफ़ात से लौटते हुए मशर-ए-हराम में रुकना चाहिए	अल बक्रर:	199	53
जब तक कुर्बानी अपने स्थान तक न पहुँचे सिर न मुंडवाया जाये	अल बक्रर:	197	52
हज्ज से रोके जाने वाले के लिए कुर्बानी	अल बक्रर:	198	53
कुर्बानी के बाद सिर के बाल मुंडवाये भी जा सकते हैं और काटे भी जा सकते हैं	अल फ़तह	28	1011
कुर्बानी देने से पूर्व सिर मुंडवाने पर प्रायश्चित्त उम्रा करना	अल बक्रर:	197	52
हज्ज के साथ उम्रा को मिला कर करना	अल बक्रर:	197	52
हज्जे-अकबर (बड़े हज्ज) से अभिप्राय	अत तौब:	3	334
एहराम की अवस्था में शिकार करना मना है	अल माइद:	96	214
एहराम खोलने के बाद शिकार की अनुमति	अल माइद:	3	187
हत्या			
एक व्यक्ति की हत्या समूची मानवता की हत्या करना है	अल माइद:	33	197
जान-बूझ कर हत्या करने का दंड	अल बक्रर:	179	46
मोमिन के जान-बूझ कर हत्या करने का परकालीन दंड	अन निसा	94	162
मोमिन को भूल से हत्या करने का दंड	अन निसा	93	161
जीविका की कमी के कारण संतान की हत्या न करो	अल अन्आम	152	260
	बनी इस्राईल	32	521
हलाल और हराम			
खाने पीने में हलाल और हराम			
हराम और हलाल का एक स्थायी सिद्धांत	अल बक्रर:	220 टीका	59

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
हज़रत मुहम्मद सल्ल. अपने अनुयायियों के लिए पवित्र वस्तुओं को हलाल और अपवित्र वस्तुओं को हराम ठहराते हैं	अल् आ'राफ़	158	300
चौपाये हलाल हैं	अल माइदः	2	187
	अल हज्ज	31	623
समुद्री शिकार और उसका भोजन करना हलाल है	अल माइदः	97	215
भोजन केवल हलाल ही नहीं पवित्र भी हो	अल माइदः	89	212
सधाये हुए कुत्तों के द्वारा किया गया शिकार हलाल है	अल माइदः	5,6	189
सभी पवित्र वस्तु हलाल हैं	अल माइदः	5	189
मुर्दार, खून, सूअर का मांस और देवताओं के आस्थानों पर ज़िबह होने वाले पशु हराम हैं	अल माइदः	4	188
एहराम की अवस्था में शिकार करना हराम है	अल माइदः	96	214
अहले किताब का बनाया हुआ (पवित्र) भोजन हलाल है	अल माइदः	6	189
हलाल वस्तुओं को हराम न ठहराओ	अल माइदः	88	212
उक्त वस्तुओं के अतिरिक्त रसूल किसी और वस्तु को अपनी ओर से हराम घोषित नहीं कर सकता	अल अन्आम	146	258
खाने-पीने में मध्यमार्ग अपनाने की शिक्षा	अल आ'राफ़	32	273
बनी इस्राईल के लिए हलाल और हराम की शिक्षा	आले इम्रान	94	107
हज़रत याकूब अलै. (इस्राईल) ने अपने लिए कुछ वस्तुओं को हराम ठहराया था	आले इम्रान	94	107
यहूदियों पर दंड स्वरूप कुछ वस्तुओं को हराम ठहराया गया था	अन निसा	161	179
शिष्टाचार संबंधी हलाल और हराम का वर्णन	सूरः परिचय		224
निकाह में हराम			
जिन महिलाओं से निकाह करना मना है	अन निसा	23-25	140-142
हिजरत (देशांतरण)			
हिजरत करने के कारण और बरकतें	सूरः परिचय		313
हिजरत करने वालों का परकालीन प्रतिफल	आले इम्रान	196	130
हिजरत के सांसारिक फलाफल	अन निसा	101	163

नाम सूची

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अ			
हज़रत अबूबकर रज़ि.	सूर: परिचय		312
इमाम अबू हनीफ़ा रहि.	टीका		340
अबू जहल	टीका		1298
अबू लहब			
अबू लहब के मारे जाने की भविष्यवाणी	अल लहब	2	1301
असहाब-उल-फ़ील (हाथी वाले)			
इनका ख़ाना का'बा पर आक्रमण करना और इसमें असफल होना	अल फ़ील		1294
हज़रत अल यसअ अलै.	साद	49	884
	अल अन्आम	87	243
हज़रत अय्यूब अलै.	साद	45	883
	अन निसा	164	180
	साद	42	883
एक महान धैर्यशील नबी	सूर: परिचय		876
दुःख निवारण के लिए अल्लाह के निकट दुआ	अल अम्बिया	84	609
हज़रत अय्यूब अलै. की दुआ स्वीकृत होना और उनकी परीक्षा की घड़ी समाप्त होना	अल अम्बिया	85	609
हज़रत अय्यूब अलै. को हिजरत करने का आदेश	साद	43	883
हज़रत अय्यूब अलै. को एक विशेष पानी से आरोग्य-लाभ	साद	43	883
घर-परिवार का फिर से मिलना और उन पर कृपावतरण	साद	44	883
हज़रत अय्यूब अलै. नूह की संतान में से थे	अल अन्आम	85	243
अब्दुल्लाह बिन उबै बिन सुलूल			
मुनाफ़िक्कों का मुखिया	सूर: परिचय		1122
आ			
हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ि. अन्हा			
आरोप लगाना और आरोपमुक्त होना	अन नूर	12-17	655,656
आद जाति			
आद जाति की ओर हूद अवतरित हुए	अल आ'राफ़	66	281

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
आद जाति के निवास स्थान रेतीले टीलों वाले क्षेत्र में थे	हूद अल अहक्राफ़	51 22	404 990
आद जाति के लोग भवन और दुर्ग निर्माण में निपुण	अश शुअरा	129,130	698
आद और समूद के अवशेष इस्लाम के आरंभ के समय विद्यमान थे	अल अन्कबूत	39	757
आद जाति के लोग मूर्तिपूजक थे	हूद	54	405
रसूलों के अस्वीकारी	अश शुअरा	124	698
उन्होंने अल्लाह के चिह्नों का इनकार किया	हूद	60	406
धरती में अहंकार किया	हामीम अस सजदः	16	930
आद जाति पर तर्क पूरा हो गया	हूद	58	405
हूद अलै. से अज़ाब की माँग	अल आ'राफ़	71	282
प्रचंड आंधियों से उनकी तबाही	अज़ ज़ारियात	42	1032
प्रथम आद जाति की तबाही	अन नज़्म	51	1049
हज़रत आदम अलै.			
आदम का जन्म रहमानिय्यत (अल्लाह की दयाशीलता) के कारण हुआ	सूर: परिचय		575
धरती पर प्रथम उत्तराधिकारी	अल बक्ररः	31	9
अल्लाह ने जब आदम में अपनी रूह फूँकी तो फिर मानव जगत को उसका आज्ञापालन करने का आदेश दिया	सूर: परिचय		265
फ़रिश्तों को आदम के लिए सजदः करने का आदेश	अल बक्ररः अल आ'राफ़ बनी इस्राईल अल कहफ़ ताहा	35 12 62 51 117	10 269 526 548 591
इब्लीस का आदम को सजदः करने से इनकार करना	अल बक्ररः	35	10, 11
हज़रत आदम को अल्लाह ने अपनी शक्ति के दोनों हाथों से पैदा किया	साद	76	887
समग्र सृष्टि पर आदम की संतान की श्रेष्ठता	बनी इस्राईल	71	528
आदम को सिखाये गये नाम	अल बक्ररः	32	10
आदम की शरीयत के चार मौलिक पक्ष	ताहा	119,120	591
आदम से वचन लिया गया था	ताहा	116	591

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
अपने साथी (पत्नी) के साथ स्वर्ग में निवास करने और वृक्षविशेष से दूर रहने का आदेश	अल बक्ररः	36	11
आदम को बताया गया कि शैतान तेरा शत्रु है	अल आ'राफ़	20	270
शैतान का आदम से वार्तालाप	ता हा	118	591
हज़रत आदम से भूल हो गई । पाप का इरादा नहीं था	ता हा	121	591
आदम और उनकी पत्नी का स्वर्ग के पत्तों से अपने आप को ढाँपना	ता हा	116	591
पत्तों के वस्त्र से अभिप्राय तक्रवा का वस्त्र	अल आ'राफ़	23	271
आदम पर उस के रब्ब का दयाशील होना	सूरः परिचय		266
आदम को हिज़रत का आदेश	अल बक्ररः	38	11
	अल बक्ररः	37	11
	अल बक्ररः	39	11
आदम के दो पुत्रों का कलह	अल माइदः	28	196
हाबील की हत्या करने पर क़ाबील को पश्चाताप	अल माइदः	32	196,197
एक ही आदम की संतान के रंगों और भाषा में प्रभेद के चिह्न	सूरः परिचय		834
आदम से हज़रत ईसा अलै. की समानता	अर रूम	23	770
	आले इम्रान	60	99
आसिया	टीका		914
इ			
हज़रत इब्राहीम अलै.			
इब्राहीम हज़रत नूह अलै. के अनुयायियों में से थे	अस साफ़फ़ात	84	867
इब्राहीम न यहूदी थे न ईसाई	आले इम्रान	68	100
इब्राहीम अलै. की हिज़रत	अस साफ़फ़ात	100	868
अल्लाह से मुर्दों को जीवित करने की वास्तविकता समझना	अल बक्ररः	261	75
लोगों में हज्ज की घोषणा करने का ईश्वरीय आदेश	अल हज्ज	28	622
इब्राहीम के ग्रंथों की उत्कृष्ट शिक्षा कुरआन में मौजूद है	अल आ'ला	19, 20	1247
अल्लाह के उपकारों का वर्णन	अश शुअरा	79-83	694-695
इब्राहीम अलै. का दर्जा			
उनका पूरा ध्यान अल्लाह की ओर था	अल अन्आम	80	242
अल्लाह ने इब्राहीम को अपना मित्र घोषित किया है	अन निसा	126	169
उनकी सभी मित्रता और शत्रुता अल्लाह के लिए थीं	अल मुम्तहिनः	5	1108
	सूरः परिचय		1106

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
धरती और आकाश की राजसत्ता आपको दिखाई गई	अल अन्आम	76	241
अल्लाह की ओर अवनत इब्राहीम	अल बक्रर:	136	36
	आले इम्रान	68	100
	आले इम्रान	96	107
अपने-आप में समुदाय होने का अर्थ	अन नहल	121	509,510
	सूर: परिचय		487
इब्राहीम अलै. अच्छे आदर्श के प्रतीक थे	अल मुम्तहिन:	5	1108
	अल बक्रर:	125	33
निष्ठापूर्ण प्रतिज्ञा-पालनकारी	अन नज्म	38	1048
इब्राहीम अत्यंत कोमल-हृदयी और सहनशील थे	अत तौब:	114	362
इब्राहीम निष्कपट-हृदयी	अस साफ़फ़ात	85	867
इब्राहीम के समान अपनी नमाज़ों का दर्जा बनाओ	अल बक्रर:	126	33
इब्राहीमी-धर्म			
इब्राहीम का धर्म कायम रहने वाला धर्म है	अल अन्आम	162	263
इब्राहीमी धर्म के अनुसरण का आदेश	आले इम्रान	96	107
हज़रत मुहम्मद सल्ल. को इब्राहीमी धर्म के	अन निसा	126	169
अनुगमन का आदेश	अन नहल	124	510
इब्राहीम अलै. के साथ निकट संबंध रखने वाले	आले इम्रान	69	101
इब्राहीमी धर्म से विमुख होना मूर्खता है	अल बक्रर:	131	35
अपनी संतान को इब्राहीम अलै. का उपदेश	अल बक्रर:	133	35
इब्राहीम अलै. का धर्मप्रचार			
जाति को अल्लाह की उपासना करने की शिक्षा	अल अन्कबूत	17	753
अल्लाह के अस्तित्व के बारे में एक व्यक्ति का	अल बक्रर:	259	74
बहस करना और उसको मुँह तोड़ जवाब देना			
अपने पिता आज़र के साथ धर्मचर्चा	अल अन्आम	75	240
	मरियम	43-46	566,567
आज़र की नाराज़गी और इब्राहीम को संगसार	मरियम	47	567
करने की धमकी			
आज़र के लिए क्षमा प्रार्थना	मरियम	48	567
आज़र के लिए क्षमा-प्रार्थना एक वादा के कारण था	अत तौब:	114	362
जाति के समक्ष मूर्तियों से विरक्त होने की घोषणा	अज़ जुख़रूफ़	27	960
मूर्तियों को तोड़ना	अल अम्बिया	59	605
इब्राहीम अलै. को आग में डाला जाना	अल अम्बिया	69	606

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
आग का इब्राहीम के लिए सलामती का कारण बन जाना	अस साफ़फ़ात अल अम्बिया	98 70	868 606
जाति की असफलता	अस साफ़फ़ात	99	868
इब्राहीम पर सलामती के लिए ईश्वरीय सुसमाचार	अस साफ़फ़ात	110	870
अल्लाह के दूतों का इब्राहीम के निकट शत्रुओं की तबाही के समाचार लाना	अल अन्कबूत	32	756
फ़रिश्तों का इब्राहीम के निकट मनुष्य के रूप में आना	सूर: परिचय		1028
इब्राहीम का अतिथि-सत्कार	हूद	70	408
लूत अलै. की जाति के लिए सिफ़ारिश करने से इब्राहीम अलै. को मना किया जाना	हूद	77	409
इब्राहीम अलै. की संतान			
नेक संतान प्राप्ति के लिए दुआ	अस साफ़फ़ात	101	868
एक ज्ञानवान पुत्र का शुभ-समाचार	अल हिज़्र	54	478
इसहाक़ का शुभ-समाचार	अस साफ़फ़ात	113	870
इसहाक़ के शुभ-समाचार पर इब्राहीम अलै. की पत्नी का विस्मय	हूद	73	408
बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक़ के प्राप्त होने पर अल्लाह के प्रति कृतज्ञता	इब्राहीम	40	468
इसहाक़ के पश्चात याकूब की शुभ-सूचना	हूद	72	408
एक सहनशील पुत्र का सुसमाचार	अस साफ़फ़ात	102	868
पुत्र को ज़िबह करने के बारे में इब्राहीम का स्वप्न	अस साफ़फ़ात	103	869
इस्माईल अलै. को ज़िबह करने के लिए माथे के बल लिटाना	अस साफ़फ़ात	104	869
‘महान ज़िबह’ की वास्तविकता	सूर: परिचय		859
पुत्र को ज़िबह करने की परीक्षा में इब्राहीम अलै. की सफलता	अस साफ़फ़ात	106	869
इब्राहीम अलै. की संतान को नुबुव्वत, पुस्तक और तत्त्वज्ञान प्रदान किया जाना	अन निसा अल अन्कबूत	55 28	150 755
ख़ाना का’बा का जीर्णोद्धार			
इब्राहीम अलै. का अपनी संतान को अन्न-जल विहीन घाटी में बसाना	इब्राहीम	38	468

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
खाना का'बा की नींव पक्की करना	अल बक्ररः	128	34
खाना का'बा को स्वच्छ और पवित्र रखने का निर्देश	अल बक्ररः	126	33
इब्राहीम अलै. की दुआएँ			
इब्राहीम अलै. की दुआएँ	अश शुअरा	84-88	695
मक्का के शांतिमय नगर बनने की दुआ	इब्राहीम	36	467
	अल बक्ररः	127	33, 34
हज़रत मुहम्मद सल्ल. के आविर्भाव के लिए दुआ	अल बक्ररः	130	34
हज़रत इद्रीस अलै.			
इद्रीस अलै. धैर्यशील थे	अल अम्बिया	86	609
इरम			
आद जाति की एक शाखा	अल फ़ज्र	8	1252
हज़रत इसहाक़ अलै.			
हज़रत इब्राहीम अलै. को संतान का शुभ समाचार	हूद	72	408
	अस साफ़्फ़ात	113	870
	अज़ ज़ारियात	29	1031
इसहाक़ अलै. पराक्रमी और ज्ञानी पुरुष थे	साद	46	884
ऐसे इमाम थे जो अल्लाह के आदेश से हिदायत देते थे	अल अम्बिया	74	607
हज़रत इस्माईल अलै.			
अपने घरवालों को नमाज़ और ज़कात का निर्देश देते थे	मरियम	56	568
इस्माईल अलै. ज़बीह-उल्लाह थे न कि इसहाक़ अलै.	अस साफ़्फ़ात	103-108	869-870
'महान ज़िबह' की वास्तविकता	सूर: परिचय		859
	अस साफ़्फ़ात	108 टीका	870
इब्राहीम अलै. के साथ खाना का'बा का निर्माण	अल बक्ररः	128	34
इस्माईल की विनम्रता एवं संतुष्ट स्वभाव	अस साफ़्फ़ात	103	869
परवर्ती युगीन जातियों में इस्माईल अलै. की कुर्बानी को सदा याद किया जाएगा	अस साफ़्फ़ात	109	870
इस्माईल अलै. की भौतिक और आध्यात्मिक संतान में हज़रत मुहम्मद सल्ल. का जन्मलाभ	सूर: परिचय		472
हज़रत इलयास अलै.	अल अन्आम	86	243
	अस साफ़्फ़ात	124	871

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
हज़रत इक्रमा रज़ि.	टीका		1298
इम्रान (हज़रत मरियम के पिता)	अत तहरीम	13	1141
इम्रान की पत्नी का अल्लाह के समक्ष भेंट प्रस्तुत करना	आले इम्रान	36	93
इम्रान के परिजनो की महत्ता	आले इम्रान	34	92
इआन विल्सन (Ian Wilson)	टीका		387
इब्लीस			
इब्लीस जिनो में से था	अल कहफ़	51	548
आदम को सजदः करने से इनकार	अल बक्रः	35	10
	अल आ'राफ़	12	269
	अल हिज़्र	32	476
	बनी इस्राईल	62	526
	अल कहफ़	51	548
	ता हा	117	591
	साद	75	887
ई			
हज़रत ईसा अलै.			
हज़रत मरियम को ईसा का शुभ-समाचार	आले इम्रान	46	95
ईसा और उनकी माँ को पुरस्कृत किया जाना	अल माइदः	111	219
बिन बाप जन्म	आले इम्रान	48	96
	मरियम	21,22	563
झरनों वाले पहाड़ी क्षेत्र में जन्म	मरियम	25	564
खजूरो के पकने के मौसम में जन्म	मरियम	26	564
पालने में बात करने का तात्पर्य	आले इम्रान	47 टीका	95
ईसा अलै. अल्लाह के रसूल और उसके कलिमा हैं	आले इम्रान	46 टीका	95
	टीका		182
रूह-उल-कुदुस (पवित्र-आत्मा) के द्वारा समर्थित	अल बक्रः	88	23
	अल बक्रः	254	72
	अल माइदः	111	219
इहलोक और परलोक में सम्मानित होना	आले इम्रान	46	95
ईसा अलै. एक सच्चे एकेश्वरवादी रसूल थे	टीका		182
	अल माइदः	117,118	221
ईसा अल्लाह के भक्त और उसके नबी थे	मरियम	31	565

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
नुबुव्वत बचपन में नहीं बल्कि अघेड़ आयु में मिली	आले इम्रान	47 टीका	95
ईसा अलै, केवल बनी इस्राईल के लिए रसूल थे	अस सफ़्फ़	7	1113
बनी इस्राईल के सब नबियों के अंत में ईसा अलै, का आविर्भाव	अल माइदः	47	201
यहूदियों के तेहत्तरवें मुक्तिगामी संप्रदाय की नींव रखी	सूरः परिचय		185
आदम से समानता	आले इम्रान	60	99
तौरात का ज्ञान दिया गया था	आले इम्रान	49	96
	अल माइदः	111	219
तौरात की भविष्यवाणी के पात्र और उसके सत्यापक	आले इम्रान	51	97
पक्षियों का सृजन, श्वेतकुष्ठों और अंधों को आरोग्य प्रदान करना	आले इम्रान	50	96
	अल माइदः	111	219
ईसा अलै, को इंजील (शुभ-समाचार) दिया जाना	अल हदीद	28	1088
अपने बाद 'अहमद' रसूल की शुभ-सूचना देना	अस सफ़्फ़	7	1114
ईसा अलै, की शिक्षा के विशेष पक्ष	मरियम	32,33	565
अल्लाह की ओर से ईसा अलै, को मृत्यु देने, उत्थित करने और पवित्र करने का समाचार	आले इम्रान	56	98
ईसा अलै, से हवारियों का माइदा (नेमतों से पूर्ण थाल) उतारने की माँग	अल माइदः	113-	220
		114	
माइदा उतारने के लिए ईसा अलै, की दुआ	अल माइदः	115	220
हवारियों से ईसा का यह कहना कि "अल्लाह के लिए कौन मेरा सहयोगी है"	आले इम्रान	53	97
	अस सफ़्फ़	15	1116
माँ के साथ एक ऊँचे स्थान की ओर चले जाना	अल मु'मिनून	51	642
शत्रुओं से बचकर कश्मीर घाटी में जाना	सूरः परिचय		635
यहूदियों का दावा कि उन्होंने मरियम के पुत्र ईसा की हत्या कर दी	अन निसा	158	178
अहले किताब के हर समुदाय के लोग ईसा की मृत्यु से पूर्व उन पर ईमान लाएँगे	अन निसा	160	179
अल्लाह के पुत्र होने का खंडन	अत तौबः	30	341
ईसा अलै, के ईश्वरत्व का खंडन	सूरः परिचय		595
ईसा अलै, के विरुद्ध षड्यंत्र में यहूदियों की असफलता	आले इम्रान	55	98

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
फ़िलिस्तीन से प्रस्थान के बाद सेंट पॉल ने ईसा को आराध्य बना दिया	टीका		222
ईसा अलै. की मृत्यु	आले इम्रान	56	98
	अल माइदः	76	209
	अल माइदः	118	221,222
क़यामत के दिन अल्लाह और ईसा अलै. का कथोपकथन	अल माइदः	117,118	221
बनी इस्राईल के काफ़िरों पर ईसा के मुँह से ला'नत	अल माइदः	79	210
ईसा को उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किये जाने पर लोगों का शोर	अज़ जुख़रुफ़	58	964
हज़रत ईसा अलै. का अवतरण	सूरः परिचय		956
	टीका		892
उ			
हज़रत उस्मान रज़ि.	टीका		1101
हज़रत उज़ैर अलै.			
यहूदी उज़ैर को अल्लाह का पुत्र कहते थे	अत तौबः	30	341
हज़रत उमर रज़ि.	टीका		1101
ए			
एलिया (देखें 'इल्य़ास' शीर्षक भी)	टीका		871
क			
क्रारून			
मूसा की जाति का एक विद्रोही व्यक्ति था	अल क़सस	77	745
क्रारून पर भौतिकवादियों का गर्व	अल क़सस	80	746
क्रारून का बुरा अंत	अल क़सस	82	747
अल्लामा कुर्तुबी	टीका		563
कुरैश			
कुरैश की दिलजोई के साधन	कुरैश	2-5	1295
क़ैसर (रोमन सम्राट)			
क़ैसर और किस्सा के साम्राज्यों की तबाही का समाचार	सूरः परिचय		574
क़ैसर का किस्सा से पराजित होना और कुछ वर्षों बाद पुनः विजयी होना	अर रूम	3,4	767

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
किस्रा (ईरानी सम्राट)			
किस्रा और कैसर के साम्राज्यों की तबाही का समाचार	सूर: परिचय		574
कैसर को पराजित करना और कुछ वर्षों बाद उससे पराजित होना	अर रूम	3,4	767
ख			
खिज़्र			
लोगों में मशहूर खिज़्र से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं	सूर: परिचय		536
खोरस (फ़ारस का सम्राट Cyrus)	टीका		555
ग			
ग़ालिब (प्रसिद्ध कवि असदुल्लाह खाँ ग़ालिब)	टीका		855
मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी अलै.			
इल्हाम “मुझे आग से मत डराओ क्योंकि आग हमारी गुलाम बल्कि गुलामों की गुलाम है”	टीका		606
सूर: अज़-ज़ुमर की आयत “अलैसल्लाहु बिकाफ़िन् अब्दहू” (क्या अल्लाह अपने भक्त के लिए पर्याप्त नहीं) का इल्हाम होना	सूर: परिचय		890
ज			
हज़रत ज़करिया अलै.			
मरियम का पालन पोषण करना	आले इम्रान	38	93
ज़करिया की दुआ	अल अम्बिया	90	610
ज़करिया के घर चमत्कारिक पुत्रोत्पत्ति	सूर: परिचय		559
यह्या नामक पुत्र का सुसमाचार	मरियम	8	561
जालूत			
तालूत (अर्थात् हज़रत दाऊद अलै.) की सेना से जालूत का मुकाबला	अल बक्रर:	250	69, 70
जालूत से मुकाबला के समय दाऊद अलै. की सेना की दुआ	अल बक्रर:	251	70
दाऊद का जालूत की हत्या करना	अल बक्रर:	252	70
हज़रत जिब्रील (रूह-उल-अमीन) अलै.	अत तहरीम	5	1139
	अश शुअरा	194	704
	अल बक्रर:	98,99	26

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
जुल क्रनैन			
जुल क्रनैन से अभिप्राय हज़रत मुहम्मद सल्ल. भी हैं	सूर: परिचय		537
जुल क्रनैन से अभिप्राय फ़ारस सम्राट 'खोरस' (Cyrus) भी हो सकता है	टीका		555
जुल क्रनैन की पश्चिम की ओर यात्रा	अल कहफ़	87	554
पूर्व की ओर यात्रा	अल कहफ़	91	555
याजूज और माजूज की रोकथाम के लिए प्राचीर निर्माण	अल कहफ़	95	556
हज़रत जुल किफ़्ल अलै.	साद	49	884
	अल अम्बिया	86	609
जुन नून (देखें 'यूनस' शीर्षक भी)			
'नून' से अभिप्राय जुन नून मछली वाले अर्थात् हज़रत यूनस अलै.	सूर: परिचय		1149
हज़रत यूनस अलै. का गुस्से में जाति को छोड़ कर चले जाना	अल अम्बिया	88	609
हज़रत ज़ैद रज़ि.			
हज़रत जैनब रज़ि. से ज़ैद रज़ि. का अलगाव	अल अहज़ाब	38	809
इमाम ज़ैन-उल-आबिदीन	टीका		1101
त			
तालूत			
तालूत से तात्पर्य दाऊद अलै. ही हैं	टीका		71
तालूत को बनी इस्राईल का राजा बनाया गया	अल बक्रर:	248	69
जालूत पर आक्रमण	अल बक्रर:	250	69, 70
धैर्य और स्थिरता के लिए दुआ	अल बक्रर:	251	70
जालूत को पराजित करना	अल बक्रर:	252	70
तुब्बा (यमन की एक जाति)	क्राफ़	15	1022
	अद दुखान	38	973
द			
हज़रत दाऊद अलै.			
दाऊद अलै. हज़रत नूह अलै. की संतान में से थे	अल अन्आम	85	243
अल्लाह की ओर से धरती में उत्तराधिकारी	साद	27	880
दाऊद अलै. को ज़बूर दी गई	अन निसा	164	180
	बनी इस्राईल	56	525

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
दाऊद अलै. को पक्षियों की भाषा सिखाई गयी	अन नम्ल	17	714
सुलैमान दिया गया	साद	31	881
दाऊद का उत्तराधिकारी सुलैमान हुआ	अन नम्ल	17	714
दाऊद को साम्राज्य प्रदान किया गया	अल बक्रर:	252	70
	साद	21	879
दाऊद को कृपा प्रदान की गई	सबा	11	822
दाऊद बड़े शक्तिशाली थे	साद	18	879
दाऊद के लिए पहाड़ और पक्षी सेवा में लगाये गये थे	सबा	11	822
	सूर: परिचय		818
	अम्बिया	80	608
	साद	19	879
दाऊद के लिए लोहा नरम किये जाने का अर्थ	सबा	11,12	822
युद्ध-कवच बनाने में निपुण	अल अम्बिया	81	608
जालूत को वध करना	अल बक्रर:	252	70
दाऊद के घरवालों को कृतज्ञता प्रकट करने का निर्देश	सबा	14	823
दाऊद अलै. और सुलैमान अलै. का एक खेती के बारे में फैसला करना	अल अम्बिया	79	607
दाऊद के एक 'कश्फ' की वास्तविकता	सूर: परिचय		876
बनी इस्राईल के काफ़िरोँ पर दाऊद के मुँह से ला'नत	अल माइद:	79	210
न			
नबूकद नज़र (Nabuchadnazar)	टीका		517
हज़रत नूह अलै.			
नबियों की प्रतिज्ञा में शामिल	अल अहज़ाब	8	801
इस्लाम धर्म की मौलिक शिक्षाएँ वही हैं जो नूह अलै. को दी गई थीं	अश शूरा	14	945
नूह अलै. की आयु	अल अन्कबूत	15	753
अपनी जाति को धर्म प्रचार	नूह	3-13	1169, 1170
जाति की ओर से झुठलाना	अल आ'राफ़	65	281
नूह की जाति ने दूसरे नबियों को भी झुठलाया	अश शुअरा	106	696
नूह अलै. को विरोधियों की चेतावनी	अश शुअरा	117	697

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
नूह अलै. के मनुष्य होने पर आपत्ति	हूद	28	399
स्वजाति का नूह अलै. को पागल और धुतकारा हुआ कहना	अल क्रमर	10	1052, 1053
विरोधियों का कहना कि तूने हमारे साथ बहुत तर्क-वितर्क किया है	हूद	33	400
मुखियाओं का उपहास करना	हूद	39	401
नूह अलै. के अनुयायियों को विरोधियों की ओर से निकृष्ट कहना	हूद	28	399
जाति की ओर से अज़ाब की माँग	हूद	33	400
नूह अलै. की दुआएँ	हूद	46	403
	हूद	49	403
	अल अम्बिया	77	607
जाति के लिए अज़ाब की दुआ	नूह	22-27	1171, 1172
तूफ़ान (जलप्लावन)			
तूफ़ान आना	हूद	41	402
आवश्यक जानवरों को नौका में सवार करने का आदेश	हूद	41	402
नूह अलै. की नौका तख्तों और कीलों वाली थी	अल क्रमर	14	1053
नूह अलै. का अपने पुत्र को बुलाना	हूद	43	402
नूह अलै. के पुत्र का नौका पर सवार होने से इनकार और उसकी तबाही	हूद	44	402
पुत्र असदाचारी होने के कारण नूह अलै. के परिवार में से नहीं था	हूद	47	403
नूह अलै. और उनके अनुयायियों का तूफ़ान से बच जाना	यूनुस	74	384
तूफ़ान थम जाने के बाद नूह अलै. को सकुशल उतरने का निर्देश	हूद	49	403, 404
नूह अलै. की पत्नी के साथ काफ़िरों का उदाहरण	अत तहरीम	11	1141
नूरुद्दीन			
हज़रत खलीफ़तुल मसीह प्रथम रज़ि.			
क़ुरआन की गहरी समझ	सूर: परिचय		845

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
फ			
फ़िरऔन			
फ़िरऔन की पत्नी का मूसा को पुत्र स्वरूप पालना	अल क़सस	9,10	732
मूसा और हारून अलै. को फ़िरऔन और उसके	यूनुस	76	384
सरदारों की ओर भेजा जाना	अल मु'मिनून	47	642
फ़िरऔन की जाति के लिए मूसा के नौ चिह्न	अन नम्ल	13	713
फ़िरऔन का अहंकार	यूनुस	84	385
जनता में फूट डाल कर शासन करता था	अल क़सस	5	731
रसूल की अवमानना करना	अल मुज़्ज़म्मिल	17	1182
चिह्न माँगना	अल आ'राफ़	107	290
मूसा को 'जादू से प्रभावित' कहना	बनी इस्राईल	102	533
मूसा की हत्या करने का इरादा	अल मु'मिन	27	913
बनी इस्राईल का पीछा करना	यूनुस	91	387
जादुगरों को इकट्ठा करना	अल आ'राफ़	113	291
फ़िरऔन से जादुगरों का बदला माँगना	अल आ'राफ़	114	291
जादुगरों के ईमान लाने पर फ़िरऔन की झिड़की	अल आ'राफ़	124	292
फ़िरऔन और उसकी जाति के लिए मूसा की	यूनुस	89	386
अमंगल प्रार्थना			
फ़िरऔन के परिजनों पर विभिन्न प्रकार के संकट	अल आ'राफ़	131	293
	अल आ'राफ़	134	294
फ़िरऔन के परिजनों से बनी इस्राईल की मुक्ति	अल बक्रर:	50	13
फ़िरऔन की जाति के निर्माण कार्यों की तबाही	अल आ'राफ़	138	295
परलोक में फ़िरऔन के परिजनों के लिए दंड	अल मु'मिन	47	918
फ़िरऔन के परिजनों में मोमिन लोग	अल मु'मिन	29	914
फ़िरऔन के परिजनों का डूबना	अल बक्रर:	51	13
डूबते समय फ़िरऔन का ईमान लाना	यूनुस	91	387
फ़िरऔन के शरीर को बचाने का वादा	यूनुस	93	387
फ़िरऔन के शव को शिक्षा के उद्देश्य से 'ममी'	सूर: परिचय		1212
बना कर सुरक्षित किया जाना			
फ़िरऔन की पत्नी की दुआ	अत तहरीम	12	1141
फ़िरऔन की पत्नी की मोमिनों के साथ समानता	अत तहरीम	12	1141
ब			
बल्अम बाऊर	अल आ'राफ़	177 टीका	306

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
बनू नज़ीर (मदीना का एक यहूदी समुदाय)			
बनू नज़ीर के निर्वासित होने की घटना	अल हथ्र	3 टीका	1099
बनी इस्राईल			
मूसा की पुस्तक केवल बनी इस्राईल के लिए हिदायत थी	बनी इस्राईल	3	515
अल्लाह ने उनसे प्रतिज्ञा ली	अल बक्रर:	84,94	22,25
	अल माइद:	13,14	191,192
उनमें से एक ने अपने समरूप के पक्ष में गवाही दी थी	अल अहक्राफ़	11	986,987
ईश्वरीय पुरस्कार	अल बक्रर:	41,48,	12,13,
		123	32
	यूनुस	94	388
फ़िरऔन से मूसा की माँग कि बनी इस्राईल को उसके साथ मिस्र से भिजवाया जाये	अल आ'राफ़	106	290
बनी इस्राईल को समुद्र पार करवा कर फ़िरऔन से मुक्ति दिलाया जाना	ता हा	48	580
अपमान जनक दंड से मुक्ति	यूनुस	91	387
दो बार धरती में उपद्रव करेंगे	अद दुखान	31	972
उनमें से काफ़िरों पर हज़रत दाऊद अलै. और ईसा अलै. के मुँह से ला'नत	बनी इस्राईल	5	516
रसूलों के संबंध में बनी इस्राईल का आचरण	अल माइद:	79	210
हज़रत मुहम्मद सल्ल. का और कुरआन का इनकार	अल बक्रर:	89	23
बनी इस्राईल का अल्लाह को प्रत्यक्ष रूप से देखने की माँग	अल बक्रर:	88	23
बनी इस्राईल को नमाज़ और ज़कात का निर्देश	अल बक्रर:	90	24
अवज्ञा करने पर नीच बंदर बन जाना	अल बक्रर:	56	14
	अल माइद:	13	191
जिब्रील से उनकी शत्रुता	अल आ'राफ़	167	303
जीवन के प्रति सर्वाधिक लालायित	अल बक्रर:	66	17
बनी इस्राईल को मुबाहल: की चुनौति	अल बक्रर:	98	26
सब्त् के प्रसंग में उनकी परीक्षा	अल बक्रर:	97	25
उनके धार्मिक विद्वानों में बुराई	अल बक्रर:	95	25
उनमें से अधिकतर काफ़िरों को मित्र बनाते हैं	अल आ'राफ़	164	302
	अत तौब:	34	341,342
	अल माइद:	81	210

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
यहूदियों और ईसाइयों का शिर्क करना	अत तौब:	30,31	341
यहूदियों और ईसाइयों को एकेश्वरवाद की शिक्षा	अत तौब:	31	341
बनी इस्राईल से प्रतिज्ञा लिया जाना	अल बक्रर:	94	25
बनी इस्राईल पर अपमान, गरीबी और प्रकोप की मार	अल बक्रर:	62	16
बनी इस्राईल को एक निश्चित गाय ज़िबह करने का आदेश	अल बक्रर:	68	18
बनी इस्राईल के लिए हलाल और हराम की शिक्षा	आले इम्रान	94	107
	अल अन्'आम	147	258
बनी इस्राईल का बारह समुदायों में बँटना	अल आ'राफ़	161	301
उनके बारह सरदार नियुक्त किये गये	अल माइद:	13	191
उनका विभिन्न देशों में फैल जाना	अल आ'राफ़	169	303
हज़रत ईसा केवल बनी इस्राईल की ओर आविर्भूत हुए थे	आले इम्रान	50	96
	अस सफ़्फ़	7	1113, 1114
ईसा अलै. को उनके लिए अनुकरणीय उदाहरण बनाया गया	अज़ जुख़ूफ़	60	964, 965
बनी इस्राईल के एक वर्ग का ईसा मसीह पर ईमान लाना	अस सफ़्फ़	15	1116
म			
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम			
कुरआन में हज़रत मुहम्मद सल्ल. का नाम			
मुहम्मद केवल एक रसूल हैं	आले इम्रान	145	117
मुहम्मद तुम में से किसी पुरुष के पिता नहीं	अल अहज़ाब	41	809
मुहम्मद पर जो कुछ उतारा गया है उस पर ईमान लाओ	मुहम्मद	3	995
मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं	अल फ़तह	30	1011
कुरआन में हज़रत मुहम्मद सल्ल. की उपाधियाँ			
‘ता हा’ (पवित्र और पथ प्रदर्शक)	ता हा	2	576
‘या सीन’ (सरदार)	या सीन	2	847
‘अल मुज़ज़म्मिल’ (चादर में लिपटने वाला)	अल मुज़ज़म्मिल	2	1181
‘अल मुद्स्सिर’ (कपड़ा ओढ़ने वाला)	अल मुद्स्सिर	2	1185
‘अब्दुल्लाह’ (अल्लाह का भक्त)	अल ज़िन्न	20	1177

शीर्षक	संदर्भ	आयत सं.	पृष्ठ
‘अल इन्सान’ (संपूर्ण मानव)	अल अहज़ाब	73	816
हज़रत मुहम्मद सल्ल. की महिमा			
आप सल्ल. का आना अल्लाह का आना था	सूर: परिचय		1003
आप सल्ल. का काम अल्लाह का काम है	अल अन्फ़ाल	18	317
आप सल्ल. की बैअत अल्लाह की बैअत है	अल फ़त्ह	11	1006
आप सल्ल. का आज्ञापालन वस्तुतः अल्लाह का आज्ञापालन है	अन निसा	81	157
आप सल्ल. का निर्मल हृदय अल्लाह का अर्श अर्थात सिंहासन है	सूर: परिचय		907
‘क्वाबा-क़ौसेन’ (दो धनुषों की प्रत्यंचा) का पद	अन नज़्म	10	1045
‘क्वाबा-क़ौसेन’ के पद की वास्तविकता	सूर: परिचय		1043
सिर से पाँव तक प्रकाशमय	अन निसा	175	183
	अल माइद:	16	193
अल्लाह की ज्योति के महान द्योतक	सूर: परिचय		651
	अन नूर	36	661
महान अनुस्मारक	अत तलाक़	11	1134
	सूर: परिचय		1081
‘सिराज-ए-मुनीर’ (प्रकाशकर सूर्य)	अल अहज़ाब	47	810
प्रशंसनीय पद पर प्रतिष्ठित होना	बनी इस्राईल	80	529
प्रशंसनीय पद की वास्तविकता	सूर: परिचय		513
मुहम्मद अल्लाह के रसूल और नबियों के मुहर हैं	अल अहज़ाब	41	809
हज़रत मुहम्मद सल्ल. के बारे में नबियों की प्रतिज्ञा	आले इम्रान	82	103
हज़रत मुहम्मद सल्ल. का आज्ञापालन सालेह (सदाचारी) शहीद, सिद्दीक (सत्यनिष्ठ) और नबी पद दिला सकता है	अन निसा	70	154
हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अनुगमन ईशप्रेम-प्राप्ति का कारण है	आले इम्रान	32	92
अल्लाह की निकटता का माध्यम	अल माइद:	36	198
हज़रत मुहम्मद सल्ल. का व्यक्तित्व लोगों के लिए कवच स्वरूप है	अल अन्फ़ाल	34	320
मुर्दों को जीवित करने का अर्थ	सूर: परिचय		1255
अल्लाह और फ़रिश्तों का हज़रत मुहम्मद सल्ल. पर दुरूद और सलाम भेजना	अल अन्फ़ाल	25	318
	अल अहज़ाब	57	813